

|      | •  | u.    |   |
|------|--|-------|---|
|      |  |       | •   |
|      | ••   | دمرد  |   |
|      |  |       | 6   |
| صفحه | عنوانا سب  | صفحر  | عنوانات   |
| ٥٣   | بحول اور معبولول کی اصلاح کا اسلامی طرنقیه ونهج                                  | 1•    | قسمِ ثالث   |
|      | بحول کوچی باتول کاعادی بنانے کے مسلے میں   | 11    | فصل اول   |
| or   | مربوں کے لیے تعیض شالیں  | ñ     | بيحے كى تربيت يى مؤثر دسائل   |
| ۵۸   | 🕜 وعظونصیمت کے ذرایعہ تربیت کرنا   | ir    | 🛈 اسوهٔ حسنه کے ذرائعہ تربیت  |
|      | قرآن كريم كي مختلف إنداز كى متنوع دعوتول   | اس    | رسولِ أكرم صلى النَّدعلية وكم بني متعدَّى وبيشوابين                     |
| 4,4  | اور پیغامول کے تعض نمونے :<br>ترین درور  | 16    | عبادت میں نبی کریم سلی التّدعلیه وجم کامقتدی مونا                       |
|      | اليس في مُثَنَّ وظمئن كمينه كالدار حس مي نرى وكير                                | 14    | اخلاقِ فاضله  |
| 44   | دونون شامل بيون.   | 14    | <i>הפ</i> ב <i>פ</i> את מ   |
| 44   | بیمول سمے لیے اعلان  | i/A   | ز په دورع   |
| 470  | عورتول کے لیے اعلان  | 19    | تواضع   |
| 45   | قومول <u>کے کیہ</u> املان<br>من  | ۲۰ ا  | علم وبرد باری<br>   |
| ا ۱۳ | متومنین کے لیے اعلان   | F!    | جمانی قرت   |
| 40   | تمام لوگول سمه پیداعلان  | 77    | بها دری وشجاعت  |
| 44   | ۷۔ قصص وداقعات کے انداز میں عبرت وقعیمت<br>مند نیسی میں دورو                     | ا ۱۲۳ | محسنِ مربيرومسياست  |
| 44   | ۳ ـ مواعظ ونصيحت <u>س</u> ے ساتھ قرآنی رمنہائی<br>ن ند                           | 70    | اصول وموقف پر ثابت قدمی   |
| ļ    | وعظ ونفيجت اور دموت دين كے سلسله ميں<br>ندم رصاب لي سيار رو                      |       | مرنی کواچھانموز پیش کرنے کے سلسلہ میں نبی کریم                          |
| 44   | نبى كريم على الشه عليه ولم كاطب ريقيه ؛  | 11    | علیہ الصلاۃ والسلام کی تنبیہ کے چندنمونے                                |
| 41   | الف - قصد کے انداز کو اختیار کرنا<br>۱- برس کے مربیض شمنے اور نابینا شخص کا قصتہ | اسرسو | بچوں کے ساتھ مجست ورحمت نبوی کے بنیڈنموسنے<br>اچھی عادت کے ذرابعہ ترسیت |
| 44   | ا ـ برص کے مربیض تنبیجے اور نابینا عص کا قصتہ<br>                                | ۴.    | (P) الجيمى عادت كے ذرابعية تربيت  |

| صفحه | عنواناست   | صفحه      | عنوانات  |
|------|--|-----------|--|
| 110  | نفسياتى ببلوسي بيحاك دمكيد بعال  | Al        | ٧- ايك عبيب ولكرش كاقصه  |
| 114  | معاشرتی ببلوسے نیچے کی دیکھ بھال   | 14        | ٣٠ مضرت هاجره وتأميل عليها السلام كا واقعه   |
| 114  | روحانى ببلوست بيح ك ديكيد مجال   | 14        | ب - سوال وجواب سے انداز کو اختیار کرنا   |
| יאו  | <ul> <li>عقوبت وسنار کے ذریعہ تربیت</li> </ul>                               | ΔΔ        | جے وعظ ونصیحی <i>ت کوتم کھاکر شروع کرنا</i>  |
| 144  | ا۔ مرتد ہونے کی سزل  | 44        | ۵ - وعظ کو دل ملکی سے سے ملا دینا<br>م   |
| TPP  | ۲ کسسی انسان کوقتل کرنے کی سزا<br>ر  |           | کا ۔ وخطونصیحت میں درمیانہ روی اورتوسط کو  |
| ۱۲۳  | ۳- چوری کی سزا   | <b>19</b> | انتياركرنا   |
| 177  | ه . مدِقذف   | <b>^9</b> | و ـ وعظ کی قوت و تاثیر کے ذراید ما فرن پر جیاجانا  |
| וצוי | ٥- حيزنا   | 91        | ز۔ شرب الاشال کے ذریعہ نصیحت کرنا<br>میں سے  |
| ۱۲۴  | ۷ ۔ زمین میں فساد مجیدلانے کی منالے<br>• • • • • • • • • • • • • • • • • • • | 41        | ح ـ باتم كه اشاريه سه وعظ ونصيب  |
| וארו | 10   | 94        | ط . نقشه وغیره کے ذراید دضاصت اور نصیمت  |
| 170  | تعزیرات  | 91~       | ی - عمل کے ذرایعہ سے نصیحت   |
|      | بچول کومنزا دینے کے سلسلہ میں اسلام کے                                       |           | ك موقعه دمناسبت سے فائدہ المُعاتے بوئے   |
| IYA  | بتلائه بوست طريقي:   | ۹۴        | وعظون في يحت المالية ا |
|      | ا اصل یہ ہے کہ نیجے سے ساتھ نری وہیار کا برناؤ                               | 90        |  |
| 171  | کیا مائے۔<br>آ   | [[<br>    | م ۔ حب حرام چیز سے روکنا ہوا سے سامنے پٹن  |
|      | ۲. نعطا کارنیکے کومنرا دسینے میں اس کی طبیعت کی                              | 90        | کریسکے وعظ ونصیحت رنا  |
| 144  | رعایت رکھنا  | 1-1       | ا و کمید بھال کے ذرایعہ سرمیت<br>سے میال این ساری میں اس نے مات ا  |
| 1300 | ۳ ۔ منرا دسینے میں تدریجے سے کام لیناچا ہیے                                  |           | آپ صلی الله علیه ولم کی دیار سجال وجائے بڑیال  |
|      | وهطر يقية جوعلم اقراني أكرم ملى التُدهلية وتم نه ذكر                         | ما-١      |  |
| 17"  |  | 1.4       | پیچے سے ایمانی بیلو کی دیک <b>ی دیجا</b> ل<br>سین قریباری گالاز  |
| 1111 | ا . رہنائی اور میج بات بتانے کے ذریعہ کمی اصلاح کرا                          | 1-4       | نیجے سے اخلاقی پہلو کی نگرانی<br>بعت علمان کا میں میں ا  |
| 177  |  | l m       |  |
| 1944 | ٣ ـ غلطي کي جانب اڻيارةَ متوجر کرنا  | 117       | جمانی سپلوسسے نیکے کی دیکھ تھال  |

| صفحه   | عنوانات                                       | صفحه    | عنوانات   |
|--------|---|---------|---|
| 144 14 | ج - بهودیت اور ماسونیت کے منصوبے اور برا زمیر | ומו     | ی و دان کرمندگی پرمتنبه کرنا                        |
| 4.     | ۵ - استعاری نصوب اورسازشیں                    | سوسوا   | ۵ ۔ قطع تعلق کے ذراعی اللہ علمی برتبید کرنا         |
| 40     | جھے کی تربیت سے بنیادی قوا عد ا               | المالما | ۲ - مارسیٹ کھلی پرمتنبہ کرنا                        |
| 45     | 🛈 - ارتباط اور ربط وتعلق كااصول               | ١٩٣٢    | ، مؤثرترین مزاکے ذرای ملطی پرمتنبکرنا               |
| 144    | ا۔ اعتقادی رابطہ                              | 124     | مارسیٹ کے لیے شروط                                  |
| 1 144  | ۲۔ روحانی ارتباط:                             | المها   | مرتي صاحبان!  |
| ,      | الف - بیجه کوعبادت سے مربوط رکھنا             | 166     | فصلِ ثانی   |
| 1 164  | ب - بیجے کا قرآن کریم سے ربط پداکرنا          | الملما  | ترسیت کے بنیادی اصول وقواعد                         |
| 4.     | ج ـ نبچے کوالٹر کے محروں کے ساتھ مر بوط کرنا  | 100     | مرنې کې ښيادې صفات واوصاف                           |
| 12     | ۵ - بید کاالله کے ذکر سے دابطہ پیداکرنا       | iro     | ا - انحلاص  |
| 14     | كا - نوافل كم ساتمه شيخه كاربط پداكرنا        | المماا  | مو ـ تقولی  |
| 14     | الف لف ل نمازس ،                              | IFA     | ۳- علم  |
| 1/4    | ۱- چاشت کی نماز                               | 10.     | ه مسلم وبرد باری                                    |
| 100    | ۲- نمازِاوابین                                | 107     | ۵ یمستولیت کااحهاس                                  |
| 144    | ينا- تنجيته المسجد                            | 161     | سازشی منصوب واقعات وبارتخ کے ساتھ:                  |
| IAA    | ۷ ۔ وضور کے بعد کی دور تعتیں                  | 104     | الف يسشيوي سازتين                                   |
| IMA    | ٥-تېجب د                                      | 14.     | ب مليبي سازشين                                      |
| 144    | ۲- نماز ترادیج                                |         | ا وَلَا يه دولت عَمَانيه كَيْسُكُ مِي موجود خلافت ا |
| 1/14   | ، - نماز استخاره                              | 14.     | اسلاميه كوتباه كريج مكومت اسلاميه كوتم كرنا         |
| 19.    | ٨- نمازماجىت                                  | 141     | ثانياً يَوْآنِ كُرِيم كُوْتُم اورنسيت ونابود كريا   |
| 14.    | ب ۔ نفسل دوزسے :                              |         | مَّالتُأَ السَّمَانول مصالاي فكر كانما تمركزا اور   |
| 141    | ا - عرفه کاروزه                               | 147     | نعداسان كيعلق كونقطع كردينا                         |
| 191    | ۲- عاشورار ا ورنومحرم کا دوزه                 | 144     | دابعاً يملانون كى وصدت كوختم كرنا                   |
| 141    | ۳ - شوال سکے مچھ روزے                         | 146     | خامساً پسلمان عورت کوبگاڑنا                         |

| صفحه | عنوانات                                      | صفحه        | عنوا ناست                                     |
|------|--|-------------|---|
| +44  | ٣- حسن نيت واخلاس كا پداكرنا                 | 191         | م ایام بین کے بین روزے                        |
| 400  | شنبه وجوكاكرف كاقاعده                        | .19,        | ۵. پیرا در حمعرات کاروزه                      |
| 7179 | اهم تنبيهات ؛                                | 117         | ۲ - ایک دن روزه رکهنا اور ایک دن افطار کرنا   |
| 414  | ا- روّت مع درا نا اوراس برتنبیه              |             | و- بيكا الله تعالى مل شاذ كم مراقبه سر ربط    |
| 444  | ارتدادكم مظاهر                               | 194         | يباكنا  |
| 701  | ۲۔ الحادیت ڈرانا                             | 194         | •   |
|      | المامده ومرتدي كي سلسله مي اسلام كي مقرركرده | 144         | بچول کی فکری ذہن سازی سےسلسلہ میں جفائق<br>-  |
| 747  | سخت ومشدید منزا کے امباب                     | ۲۰۲         | ۷ - معاشرتی ربطه وارتباط:                     |
| 745  | المحيل كودسه بإلا                            | 7.8         |   |
| 444  | ا۔ نروستے کھیلنا                             | 7.4         | ربانی مرشدین کے بارسے میں علما دیکے اقوال     |
| 440  | ۲۔ گانے بجانے اورموسیقی کا سننا              | 110         | ٧ نيڪ كواچى صحبت اورنيك لوگون سے والبة كرنا   |
| 774  | كاف بجاف سے ألات كاستعال كرااوران كاستاح الم |             | ۳- چیچ کا دعوت دین اور دین کی دعوت دینے والول |
| 774  | ان چیزول کوترام قرار دسینے کی حکمت           | ۲۲۴         | سے ارتباط پیداکرنا                            |
| 74.  | ۴ سینها تعیشراور تیلیورژن کا دیکیینا         |             | وعوت وتبليغ كصلسله مين بيطي كم تياركرني       |
|      | حرمت وگناه بموسنے میں ٹیلیوریژن کے ساتھ      | 770         | يحدامل:                                       |
|      | سیناگھروں فحش پروگراموں اوربیے حیان کی       | 444         | ا ـ نفسیاتی تیاری                             |
| 74.  | مگہوں میں جانا بھی شامل ہے                   | ייזן        | ۲ - ضرب الاشال كابيان كرنا                    |
| 724  | ایک اعتراض اوراس کاجواب                      | 749         | ١٠ ـ دعوت الى التُدكى فضيلت ومرتبه ظاهر كرنا  |
| 744  | م ۔ تمار بازی و جوا                          | 74.         | م - دعوت وتبليغ كه رمنيا اصول كابيان          |
| 724  | اس کے حرام قرار دسینے کی حکمت                | 777         | ٥- رمنانی و توجيه سيم مل تعبيق تک             |
| 766  | مزام وناجائز قمار وبوئے کے بعیض اقسام        | rry         | ۵۔ ورزمشس وریاضیت ا                           |
|      | کھیل کودیے وہ اقسام وانواع جنہیں اسلام نے    | ttr's       | ورزش وریاضت کا طریقه اوراس کی مدود:           |
| 749  | جائز قرار دیاہے:                             | 77-4        | ا. توازن پداکرنا                              |
| 749  | الف - مجعامين ووالسنه مين مقابر              | <b>براب</b> | ۲ - التُدى مقرر كرده صود كاخيال ركهنا         |

| ۲۸۰  ۲۸۰  ۲۸۰  ۳۰۰  ۳۰۰  ۲۸۰  ۲۸۰  ۳۰۰  ۲۸۰  ۲۸   |          |
|---|----------|
| ۲۸۱ اسرون پرسونا ورشیم کا حرام آشیاد :  ۲۸۱ اسرون پرسونا ورشیم کا حرام قراردیا کا ۲۸۱ اسرون پرسونا ورشیم کا حرام قراردیا کا ۲۸۱ اسرون پرسونا ورشیم کا حرام قراردیا کا ۲۸۱ اسرون پرسونا ورشیم کا حرام قراردیا استیار کا ۲۸۱ کرنا و در درسیم کا حرام ترون کا تک کل وصورت کا تک کل   |          |
| المردول پرسونا ورشيم کا حرام قراددیا المردول پرسونا ورشیم کا حرام قراددیا المردول پرسونا ورشیم کا حرام قراددیا المحالات المحالا  |          |
| المرد المراك المرد الم  |          |
| المرد المراك المراك المراك المراك المراك المراك المرد المرك المر  |          |
| اندهی تعلید سے بچانا اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ ا   |          |
| اندمی تعلیدسے بچان اور کا میں میں میں اندمی تعلید سے بچان اور کی کی اور اور کی کی کے لیے کہا ہے۔ اس کی وجوہات اور کی کی میں اور کی کی میں اور کی کی میں اور کی کی میں اور کی کی کی میں اور کی کی کہ کے اور کی کی کی کہ  |          |
| اس کی وجوبات ہماری وہوبات ہمار |          |
| اک سلسلہ کی تعبف اہم نصوص اس منافلہ ہے۔ اللہ کی خلقت کو بدلنے کا مزام ہونا اس اللہ کی خلقت کو بدلنے کا مزام ہونا اس اللہ کی خلقت کو بدلنے کا مزام ہونا اس اللہ کی منافلہ ہے۔ اس منافلہ ہے کہ ہے کہ اس منافلہ ہونا ہے۔ اس منافلہ ہونا اس منافلہ ہونا ہے۔ اس منافلہ ہونا ہونا ہونا ہونا ہونا ہونا ہونا ہون   | _        |
| الماری عورتوں میں اندھی تعلید کے فاص  |          |
| المسلم المسلمول كآوا، المسلم المسلمول  |          |
| ا ۱۹۹ اسونے جاندی کے برتنوں کا موام ہونا ا ۱۹۹ اسونے جاندی کے برتنوں کا موام ہونا ا ۱۹۹ اس سے بچانا ا ۱۹۹ اس سے بچانا الام سے بیانی کا بیانی مورام ہونا الام سے بیانی کے بینے کی بینے والی میں ترام اسٹیا الام سے الام سے بیانی کا بیانی تو مورام ہونا الام سے بیانی کا بیانی کے بینے کی بینے والی میں ترام اسٹیا الام سے بیانی کا بیانی کے بینے کی بینے والی میں ترام اسٹیا الام سے بیانی کی تو بیانی کے بینے کی بینے والی میں ترام اسٹیا الام سے بیانی کی بینے کی بینے والی میں ترام اسٹیا الام سے بیانی کی بینے کی بیانی کے بینے کی بیان کے بیان کی  |          |
| الهم الهم معدرمات: ۲۹۲ الم تصویرون ومورتیون ک ورست ۲۹۷ الهم الهم معدرمات: ۲۹۷ الم الهم الهم معدرمات: ۲۹۷ الم الهم الهم معدرمات: ۲۹۷ الم الهم الله الله المال المال الله الله  | <b>②</b> |
| اهم اهم معدمات: ۲۹۴ ج- زمانه جالمیت سے حرام دناجا نزعقیدے: ۲۹۳ کا جائز عقیدے: ۲۹۳ کا جائز دحرام ہونا ۲۹۳ کا جائز دحرام ہونا ۲۹۳ کا جائز دحرام ہونا ۲۹۳ مردار کی اقسام وانواع: ۲۹۲ ۲۰۰۰ تیروں سے فال نکالئے کی حرمت ۲۹۷ مردار کی اقسام وانواع: ۲۹۷ ۲۰۰۰ حروجا دد کی حرمت ۲۰۰۰ حروجا دد کی حرمت ۲۹۷ ۲۰۰۰ حروجا دد کی حرمت ۲۹۷ ۲۰۰۰ حروجا دد کی حرمت ۲۰۰۰ حروجا دد کی حروجا دد کی حرمت ۲۰۰۰ حروجا در کی حرمت ۲۰۰۰ حروجا دد کی حرمت ۲۰۰۰ حروجا دد کی حرمت ۲۰۰۰ حروجا دد کی حرمت ۲۰۰۰ حروجا در کی حرمت ۲۰۰۰ حروجا در کی حرمت ۲۰۰۰ حروجا در کی حرمت ۲۰۰۰ حروکا در کی حرمت ۲۰۰۰ حروجا در کی حرمت ۲۰۰۰ حروکا در کی حرمت ۲۰۰۰ حروجا در کی حرمت ۲۰۰۰ حروج | $\odot$  |
| کھانے پیننے کی چیزوں میں ترام امشیار ۱۹۳ ا۔ کا ہنول کی تعدیق کا ناجا تزوترام ہونا ۱۹۳ مردار کی اقسام وانواع: ۱۹۹ تیروں سے فال نکالئے کی حربت ۱۹۹ تا ہوں کے خات کے مواد کی حربت ۱۹۷ تا ہوں کے نام پرذیکے کیا ہوا جانور ۱۹۷ تا ہے وجادد کی حربت ۱۹۷ تا ہو جادد کی حربت استان کی سرد تا کی کا میں تا کہ میں تا کہ اور انور انور انور تا کہ ت | ③        |
| مردار کا قدام و انواع: ۲۹۷ تیروں سے فال نکالئے کی حورت<br>ا۔ بتول سے نام پرذیکے کیا ہوا جانور ۲۹۷ ۳۔ سحروجا دو کی حربت  |          |
| ا- بتول کے نام پرذیکے کیا ہوا جانور ۲۹۷ ۳-سحروجا دو کی حرصت   | الف.     |
|   |          |
| ا شهری گرصول اور بها و که ان والے درنول اسلام اللہ اللہ سے نام کے تعوید گندول کی مرست اسلام   |          |
|   |          |
| ا ورہ بنجول سے بھاڑنے والے مرندول ۔ سے کے اور بنجونی کی حرمت  |          |
| گوشت کی حرمت ایس  |          |
| ۱- نیرشری طریقے سے ذبح کیاگیا جا لورا ورخمد اور حد اور حدام چیزوں کی فروخت  |          |
| مجوى يابت پرست كے با تقسيد ذكا كيے اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ الل   |          |
| طانور کا حزام ہوتا ۔ ۱۹۹ سے خبن اور قمیت بڑھانے کی نبیاد پر فروضت ۔ ۱۳۲۲  | 2.32     |

|        |   | 1          |   |
|--------|---|------------|---|
| صفحه   | عنوانات   | صفر        | عنوانات   |
|        | آپ صلی الله علیہ ولم کے حن اخلاق ا درصحا برنی ہٹر             | 777        | ۷- ذنیرواندوزی کی بنیاد برفروشت   |
| 704    | عنهم جمعين كعسائه الاطفت ونرى كاببلو                          | ۳۲۴        | ٥ - دھوكە دىي سىے فرونىت كرنا   |
| مهد    | ٠٠ دن دات تربيتي ننفام كمدمطابق چلناه                         | 775        | ٧- چوري و داكه كه مال كاخريدنا و بيچنا  |
| 744    | الف - صبح كے وقت مرتى كوكون سانظام اپنانا چاہيے ؟             | 220        | ، سُودا ورمجست کے دلستے سے کمانا  |
| سهد    | <i>جاگنے</i> کی وعا   | 777        | اسلام نے کن امور کی وجہ سے سود کو ترام قرار دیا   |
| 746    | بيت الخلاء كے آداب  |            | سُودست پیچنے کے لیے اسل نے کچھ راستے تعین ک   |
| 144    | وصنوء کے آواب   | 772        | كيے اور تعبض طريقے تبلائے بيں   |
| 744    | نمازتهجد  | 774        |   |
| 744    | فجركي نمازمسجديس پڙهنا  | 774        | • • •   |
| اعط    | صبح کے وقت کے افکار ود ما میں<br>میسر کر بر میں میں ا         | FF4        | · · ·   |
| 744    | جننا ہو <u>سکے قرآن کریم</u> کی قلاوت کرنا                    | rr.        | ۳ ـ مرنے والول پرنوحه کرنا  |
| ۳۷۳    | ریامن <i>ت اور ورزکشی</i><br>شفته                             | <b>PP.</b> |   |
| F4,7   | تقافتی مطالعه   | 777        | ۲۰ وه عادات جنهیں اس مل نے حرام قرار دیا<br>تعدید میں اس میں ا |
| 474    | نمازچاشت  | 779        | تىسىرى قىسىل  |
| 748    | ناشتہ کے آداب<br>گ  | 444        |   |
| 143    | گھر <u>ے نکلنے کے آواب</u><br>یہ بیر                          | بهم        |   |
| 744    | رائے کے آداب<br>یہ سروی ت                                     |            | ال موضوع مستعلق قرآن کریم کی چندنصوص اور<br>در بردند میسی سیار  |
| 761    | ب تھی کے حقوق<br>مدوسرے ت                                     | rpr        | 1 4 4 1 - 10  |
| 741    | استاذ کے حقوق<br>مناب اگریت مرکبات میں                        |            | بے کار اور کام کاج میں مشغول نرسیف والول کے   |
| real   | ب-شام بومرنی سس نظام کی آبا <i>ت کرے</i> ؟<br>دری دری دری دری | li .       | بارے میں سلف صالحین کے اقوال<br>سرکی فروس میت برین الدیروں  |
| 144    | ید. دعشارکی نا متحدین ادا کرنا<br>مدر میشارکی نا              | 4 مال      | , ,   |
| -4     | سرسه نے کا ول کو بورا کر                                      | ۳۴۹        |   |
| TAT    | یچے کو حیر تواجی اور نصیحت سے کلمات کہتے رہا                  | 707        | ۷ - گھرمسجداورمدرسه میں ہتمی تعاون پید <i>اکرنا</i>   |
| 1 1740 | ا الما الما الما الما الما الما الما ال                       | 206        | ۵ - مرنی اور نیجے کے در میان رابطہ کو مضبوط کرنا  |

| F====   | <del> </del>  | <del> </del> |   |
|---------|---|--------------|---|
| صفحہ    | عنوانات   | صفحه         | عنوانات   |
| ما مما  | يەشوق كن نقاط ميں منحصر ہے ؟                            | ۳۸۲          | ا ۔اسار ومعارج کا واقعہ ایک یادگا روا بدی مجزہ ہے       |
| 4.4     | و۔ پیچے کواسلام کی دینی ذمہ داریاں محسوس کار،           | ۳۸۳          | ۲ ۔ اسار ومعارج کے عنی کیا ہیں ؟                        |
| سراما   | ۱۰ بی میں جہادی روح کوجاگزین کرنا                       |              | و اس سفریس نی کریم سلی التُدعلیه و لم نے سجومنا طر      |
| سرام    | ال سلسله مين مفيد نقاط:                                 | 747          | ديميدان مي سدايم ابم مناظريا تغير؟                      |
|         | ا- پیمے کویہ احساس دلاناکہ اسلامی شان وشوکت             | 710          | , ,   |
|         | جہاداورا علا کلمۃ النّہ کے لیے کوٹٹش کیے بغیر           | <b>774</b>   | ۵ . فلسطین اورمقبوصند سیر کے سلسلہ میں سلمانوں کا ذہینہ |
| سو اسم  | متعقق نہیں ہوئتی  | 120          | گمرکاماحول نوشگواربنانا                                 |
|         | ۲- پیچے کویہ بات باور کراناکہ جہاد فی سبیل اللہ کی مخلف | ۲۹۲          | اس سلديس كن اموركا فيال ركهنا خررى ب                    |
| 414     | قىمىرىي :   | 796          | ٤- نغي بخش علم وثقافت كهرسباب ووسائل مهياكرنا:          |
| ما إما  | مالى جېاد   | 444          | ا بچوں کے لیے ایک انگ کتب خانہ مرتب کرنا                |
| ما ابما | تبليغي جهاد   | 794          | ۲ سبفته واری با ماجواری رسانون کافعریدار نبنا           |
| 410     | تعلیمی جهابد  | 799          | ٣ ـ تاريخي فلمول كے ذريعيہ فائدہ اٹھا أ                 |
| 414     | سیاسی جہاد  | ا.بم         | م. وضاحت كرف والدوسائل سيداستفاده كرنا                  |
| وام     | جنگی جہاو   | 14.1         | ۵ - دقتاً فوقاً عجائب محمدول كامعائد                    |
| المامي  | نماتب   | ۲.۲          | ۲. جب بمبی فرصت سے عمومی کتب خانوں کامعائز کرنا         |
| ٢٢٦     | المم مراجع ومصادر                                       | ۳۰۳          | ٨- نيع كومطالع كريت رسن كاشوق ولانا                     |
|         |   |              | L   |

بِسُعِداللهِ الرَّحُمُ نِ الرَّحِيمِ د



تد فصلول برشتمل ہے

ا ۔ بیتے کی تربیت میں مؤثر وسائل ۲ ۔ بیتے کی تربیت سے بنیا دی اصول وقوا مر ۳ ۔ تربیت سے علق ضروری ولازمی تجاویز



### بِسُعِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيمُ ،

# فصل اقال

# ﷺ مُوْرُوساً لُل

بیت الا ولاد کقسم نانی میں محترم قارئین کے سامنے بچول کی تربیت سے سلسلہ میں مربیوں پر عائد مونے والی جوہڑی بڑی ذمہ داریاں فراہ جائی ہیں، وہ ذمہ داریاں خواہ ایمانی ہوں یا اخلاقی مقلی موں یاجمانی، نفسیاتی ہوں یا معاشرتی اس میں کوئی شری ذمہ داریاں جن پر گزشتہ صفحات میں کلام ہو چکا ہے اور ان پر تفصیلی بحث کی جاچکی ہے۔ وہ تربیت سے میدال اور بہے کی شخصیت سازی سے سلسلہ می عظیم ترین ذمہ داریاں میں ،اور سفیل میں جب والدین ومرفی ابنی ان کوشستوں اور جد جہد کا تمرہ واسل کریں گے تو دہ اس وقت کہتے خوش نصیب جدوجہد کا تمرہ واسل کریں گے ،اور اپنے لگائے ہوئے باغ سے شاندار سایہ میں بیٹھیں گے تو دہ اس وقت کہتے خوش نصیب

اور نوش وخرم بول گھے۔ اوران کی نفوس اسس وقت کتنی مطمئن اور الکھیں کتنی ٹھنڈی بہول گی جب وہ اپنے حکر گونٹول کومقدک فرشتول کی مدہ دمیں میں میں کمیں سے مدین نے اسس محمد یا کا گل میں میٹرکی قرائز کی ماج میدان سے السب سکھیں سے

طرے زمین پر جاتیا ہوا دیمیس گے، اور اپنے دل کے محوول کولوگوں میں تھوک قرآن کی طرح روال دوال دیمیس گے۔ نیکن کیام رقی کے لیے مرف اتنی بات کافی ہے کہ وہ ان ذمہ دار بول کو بور کر سے اور ان فرائفن کو ممدگ سے اداکر کے سمجھ لے کہ وہ ہری الذمر ہوگیا ، اور اس نے اپنی ذمہ داری بوری کر دی ، اور اپنی پوری قوت صَرف کر دی ؟ یا یہ کہ اس کو مزید انکا بھر ہے تا ہم وہ میں میں میں میں نامال نفغال ، ایک از میں کا کاش میں میں ادار میں د

وسأنل معبى اختیار كرنا چاهیس، اور سمیشه اعلی و نصنل اورا كمل ترین كی تلامش میں رہاچا ہيئے ؟

بلاشبه منعت شجه ارمربی بمیشه مغید ترین و سائل کی تُوه بین نگاریدگا، اور تربیت سے تعلق ایسے قواعد و ضوابط تلکسش کرتا رہے گا جوعقیدہ وانولاقی لحاظ سے بیچے کی تربیت کرنے میں مُوڑا ور بنیا دکی بیٹنیت رکھتے بمول ، اور جن سے بیچ نفسیاتی ومعاست رتی اور عملی تیاری بہوسکے : تاکہ بچہ کمال کی بچوٹی ، اور پختگی کی بلندی کو پہنچ سکے . اور عقل وسمجھ ارک اور محل و مرد باری سے بہترین منطا ہرسے آراستہ ہو۔

کین سویجنے کی بات یہ ہے کہ تربیت سے مفیدوسائل اور بیجے کی شخصیت سازی اور اس سے بہتری فرد بنانے کے

مفيد ومؤثرترين قواعدواصول كيابير،

مير ـــــانداز ـــــــ كـ مطابق وه پانچامورين مجتمع بين:

- اسوه حسند کے ذریعے تربیت <sub>م</sub>

٠٠ الحيى عادات كے ذريعے تربيت .

٣ - وعظ ونصيحت كيد ذرلعية تربيت .

۸ ۔ ویکیو بھال کے ذریعہ تربیت۔

٥ - سزا ديف كے ذراية تربيت ـ

# ا سوہ صنہ کے ذرایعہ تربیت

تربیت کے باب میں پیھے کہ اضافی نفسیاتی اور معاشرتی شخصیت سازی میں بیٹوا اور مقتدی نہایت مؤثرکن وسائل میں سے ہے، اور اس کی وجہ یہ ہے کہ نبیجے کی نظری مربی ایک غلیم نمونداور بہترین مقتدی ہواکر تا ہے، بجہ ہے۔
پال طبن میں اپنے مقتدی کی بیروی کرتا ہے ، اور شعوری وغیر شعوری طور پراخلاقی طور سے اس کی نقل امار تا ہے ، بلکہ اس کی نفس و شعور میں مربی کی قولی وفعلی اور سی ومعنوی صورت منقش ہوجاتی ہے جا ہے اسے بہتہ بہتے یا بہتہ نہ ہے۔
سی بیے پیٹوا اور اسوہ بیھے کی اصل ح یا فساد میں ایک برط اعامل بنتا ہے ، چنائی اگر مربی شیااور امانت اراور الانق اسے شریف و بہا دراور پاکدامنی پرنشوونما پائے گا ، اور اگر مربی بھوٹا ، فائن ، آزاد ، بخیل ، بزدل اور خمیس ہے تو بچے بھوٹ بجانت آزادی بزدلی بخل اور خساست میں بڑ سے بھوٹا ، فائن ، آزاد ، بخیل ، بزدل اور خمیس ہے تو بچے بھوٹ بجانت آزادی بزدلی بخل اور خساست میں بڑ سے بھوٹا ، فائن ، آزاد ، بخیل ، بزدل اور خمیس ہے تو بچے بھوٹ بجانت آزادی بزدلی بخل اور خساست میں ہڑ سے بھوٹا ، فائن ، آزاد ، بخیل ، بزدل اور خمیس ہے تو بچے بھی جھوٹ بجانت آزادی بزدلی بندلی بیس میں بھوٹا ، فائن ، آزاد ، بخیل ، بزدل اور خمیس ہے تو بچے بھی جھوٹ بجانت آزاد کی بزدلی بخل اور خساست میں ہڑ سے بھی گا ،

بھے ہیں نیری نواہ کتنی زبر دست صلاحیت کیول زہوا وراس کی فطرت نواہ کتنی ہی کیم وصاف تھری کیول نہ ہو تب ہم فیر کی بنیا دی باتوں اور بہترین تربیت کے اصولوں پر وہ اس وقت تک لیک نہیں کہے گا جب تک مرتی فولات کی بوتی اور اچھائیوں کی بلندی اور اسوہ و نموز کی معراج پر نہ دیکھے . مرتی کے لیے یہ نہایت آسان ہے کہ تربیت سے طویق کو اپنا تے جب کہ وہ اپنے سے لائی طریقے کو اپنا تے جب کہ وہ اپنے تربیت کرنے والے اور مرتی کو اس طریقے کو اپنا تے ہوئے اور اس کی بنیادی باتوں اور اصولوں پر عل بیرانہ دیکھے لے .

اس کیے عربی شاعر کی شاعر کا اس علم سے بار سے میں درج ذیل اشعار کہنا سخت نبیہ ہے ہے۔ کی کا فعل اس کے قول

#### کے خلاف ہووہ کہاہے:

باأيها الرجل المعسلم غيارة ال ورسون كو تعسيم دين والے معلم تصمن الدواء لذى السقام وذى الفق تصمن الدواء لذى السقام وذى الفق تم بيارول ولاغروں كي يه تودوا وسن كي تي المام عن غيلها المن غيلها المام بي يونود ابنى نفس اللها عن غيلها بي يونود ابنى نفس اللها كال المام اللها عن غيلها فهناك يقبسل ما وعظت ويقدى به ترتم المرام المام وقد كو تول كياب المام الارتم المرام المام كالورتم المرام كالورتم كالو

هدلالنفسك كان ذا التعليم و تعليم نود تمبارات اليف لي كيول نهي ب كيما يصبح بده وأنت سقيم تاكدوه شغاياب بوجائي تكن تم نود بياربو في المرتمباري نفس سي عدد في نت حكيم الرتمباري نفس سي ركي توجيم والي كي بوت بالعلم منك وينسفع التعليب ما بالعلم منك وينسفع التعليب كي بيروي كي جائي اورتعليم وينابعي فائده مندم المرتعليم وينابعي فائده مندم وينابعي فائده مندم المرتعليم وينابعي فائده مندم المرتعليم وينابعي فائده مندم المرتعليم وينابعي فائده مندم وينابعي فينابعي فائده مندم وينابعي فائد وينابعي فائده مندم وينابعي فائده مندم وينابعي فائد وين

التُدجِل شانہ جب ا پنے بندول سے لیے مجرکن آسمانی نظام مقرفراد ہے تھے تواس وقت سے۔اس بات کو طے فرمالیا تھاکہ وہ رسول و پیغام برجیے وہ اپنی طرف سے کسی قوم واست تک آسمانی پیغام بہجانے سے لیے مبعوث فرمائیں گئے اسے اعلی ترین نفسیاتی اخلاقی وعظی کمالات سے متصف ہونا چاہیے۔ تاکہ لوگ اس سے اضافر کریں، اوراس کی اقتدا کریں، اوراس کی بات پر لبیک ہیں، اورا چھائیوں، ممکام اضلاق اورف خاک میں اس کے طریقے کو ایٹائیں۔

اسی لیے نبوت اکتسانی چیز نہیں جسے انسان اپنی جدوجہدا ورمینت سے ماسل کرسکے بلکہ وہ امورِ تکلیفیہ میں سے ہے جو انسان کو خدا کی طرف سے عطالی جاتی ہے۔ اللہ تعالی اس بات سے جو انسان کو خدا کی طرف سے عطالی جاتی ہے۔ اللہ تعالی اس بات سے بخولی واقف ہیں کہ کسے سول بنائی اورالتہ ہی کو اس کو ایس کا زیادہ میں ہے کہ انسانوں ہیں سے سس کو منتقب کرنا چاہیے تاکہ وہ ڈرانے اور نشاریت و بینے والے دسول وپیغام برنیں ر

# رسوك اكرم صلى التّد عليه ولم بن مقتدى وميثوا بن :

اسی وجہ سے اللہ تعالی نے مطرت محمصطفے صلی اللہ علیہ کم کومبوٹ فرایا تاکہ آپ ہمیشہ ہمیشہ مملانوں کے لیے بہترین نمونہ واسوہ بنیں اور تما کا انسانیت سے لیے ہر حگر اور ہمیشہ ہمیشہ ہمیشہ سنے لیے روشنی کا مینار و پر سکون چاند ہوں :
(( لَقَدْ کَانَ لَکُهُ فِیْ دَسُوٰلِ اللّٰهِ اُسْوَۃٌ حَسَنَهُ مُن اللّٰهِ اللّٰهِ اُسْوَۃٌ حَسَنَهُ مُن اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اُسْوَۃٌ حَسَنَهُ مُن اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللللّٰهِ الللللّٰهِ الللللّٰهِ الللللّٰهِ اللللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰ

نيز فرايا:

(ایَا یَٰهَا النَّیِیُ اِنَّا اَرْسَلَنْ شَاهِدًا وَمُبَیِّرًا وَمُبَیِّرًا وَمُبَیِّرًا وَمُبَیِّرًا وَمُبَیِّرًا وَ مَارِیًا اِلْے اللّٰهِ یِاذِیْهِ وَسِرَاجًا

بے شک ہم نے آپ کو بیجا ہے معد محواہ اور بشارت دینے والے اور ٹھانے والے کے اور التدکی طرف اس کے حکم ہے منيبرًا))، الاعزاب ١٥٥٥م بلانے والے كے، اورببور يك دوشن چراغ كے.

ادرالٹدتعالیٰ جل شانہ نے حضرتِ محمصعفی علیہ انصلاۃ وانسلام کی شخصیّست میں اسلامی نظام وطریقے کی کامل وحمل تصویر دکھ دی ہے، تاکہ آئدہ آنے واسے توگول اور قومول سے بہے آپ اپنے کمالِ اخلاق ا ورعظمست کردار میں زندہ و تا بندہ نمونہ رہیں۔

مضرت عائشہ صدلقہ رمنی اللہ عنہا سے رسول اللہ علیہ وسلم سکے اضلاق کے بارے میں پوٹیھاگیا توانہوں نے فرمایا کہ :آپ کا اخلاق قرآن کریم سیے۔

صفرت عائشہ صدافیہ دسنی اللہ خہا کا یہ جواب نہایت مختصرا وردقیق وجامع جواسیے جبس نے قرآن کریم کے میمائیج ادر عمدہ ترین اخلاق کے بنیا دی اصولوں کو یکجا کر لیا ہے، واقعۃ نبی کریم صلی اللہ علیہ ولم قرآنِ کریم سے بیان کردہ محاس و فضائل کے لیے ایک زندہ ترجان ، اور اس کی زندہ وتا بندہ توجیہات ورہنما میوں کی ایک متحرک تصویر یہ تھے، بتلا ہے کوئی ایسا شخص ہے جواسس سے اردگر دع کر دگاسکے بایہ کر اس کے عظیم ترین سمندر سے می نقطہ تک بہنچ سکے۔

نبی کرم علیہ انصلاۃ والسلام سے شرف وا بریت اورفخر کے لیے آئی بات کافی ہے کہ آپ نود اپنے بارے یں یہ املان فرمادی کہ اللہ تعالی سیحانہ نے اپنی نگرانی میں آپ کی نشو ونا فرمائی اورآپ کو تربیت دی ہے اورخوب تربیت دی ہے اورخوب تربیت دی ہے اورخوب تربیت دی ہیں آپ کی ایکیول میں رشن دی آپ بھیشہ ہمیشہ ہمیشہ ہمیشہ میں ایکیول میں رشن و جھی ماند اور سمندر کی تاریکیول میں رشن و جھی دارجاند کی طرح ہمول ہے ہے ماند ہوں ۔

عسکری ا ورابن اسمعانی نبی کریم کی الندعلیه ولم سے دوایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشا وفرایا : (لا اُد بنی رہی ف اُحسن ت کہ بہی ہے .

التٰدتعالی نے آپ کوتربیت دینے اور آپ ملی التٰدعلیہ کیم سے التٰدتعالیٰ کی خاص توجہ کام کرز ہونے کی دلیل آپ کا نبوت سے قبل او اِس سے بعد نبوت کی اساسی صفات سے ساتھ متصف ہونا ہے۔

یہ بات نقینی طور نربعلوم ہے کہ نبی کرم ملی اللہ علیہ وقم نے زمانہ مجاہلیت سے گنا ہول ومعاصی میں سے سی گناہ کاار تسکاب نہیں کیا بلکہ آپ طہارت و پاکدامنی میں مشہور وم عروف تھے۔

ر باآپ کاسچا صادق وامین ہونا، تواک زمانے کے لوگ آپ کوصادق وامین کے لقب سے پکاراکرتے تھے ،اور
یہی بات انہوں نے آپ سے لوگوں کے ایک غلیم مجمع میں کہی تھی کہم نے آپ کوہبی ہی مجموط بولنے والا نہایا۔
رہا آپ کا ذکی و مجمدار ہونا تواس میں توکوئی آپ کا مقالبہ میں کر سکتا، اور نبی کریم سلی اللہ علیہ ہی کے لیے فزوتر افت
اور ہمیٹہ ہمیٹہ زندہ رہنے کے لیے آئی بات کافی ہے کہ آپ نے اپنی سن ترمیر اور حکمت سے فرر لعیہ اپنی قوم سے لیے ہی مدیث کی سندی اور ہمین میں اور کم مند سے فرر لعیہ اپنی قوم سے لیے اور ہمیٹہ ہمیٹہ کی سندی اگر میں مدیث کی سندی اور کھی تھی ہوگاں ہمی ہوں ۔

مجرِاسودلگانے کے وقت ایک مناسب تدبیر بیش کرے قوم کو ایک ایس تباہ کن جنگ سے بچالیا جس کے انجام کوخدا کے سواا در کوئی نہیں جانیا۔

دعوت وتبلیغ کے اعتبار سے آپ کی حالت یمی کہ آپ علیہ الصلاۃ والسلام کو نینداس وقت یک احیم علوم نه بونی اور نه زندگی مین مزاآیا اور مذآب کوسکون نصیب بهوا جب تک آپ نے امت کو دعوتِ اسلام پرلبیک کہتے اور التسكيدين مين دال بوست من ومكيدايا ، قراب كريم كى كتن بن آيات نبى كريم ملى التدعلية ولم براس في نازل بهوئي كراب اینے عم اور حزن و الال میں نحفیف کردیں، اورا پنی وینی جدوجہدا ورتبلیغ ودعوت میں سکون ونرمی <u>سے کام کی</u>ں تاکہ صرت و الل کی بنسا مربرآب اینے کو بلاک مذکر بیتی ، اور آپ کافیم امرات کاشکار نه موجاستے۔ ان آیات میں سے تعیف

> ((فَلَعَلَكَ بَاخِعُ نَفْسَكَ عَلَا اتَارِهِمْ إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهٰذَا الْحَدِ يُثِ ٱسَفًا ﴾ اللهف. و ا ور قرمایا ؛

( إِنَّكَ كَا تَهْدِئُ مَنْ ٱخْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهُ يَهُ إِنَّ مَنْ يَنْكَاءُ ﴾. العصص-٥١

((فَلَا تَنْ هَبُ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرْتِ) فاطر م العرافي العرافي المرافي كركرك كهي آب كامان دَجاتى ري ـ

ميكن ان تمام باتول سے با وجود نبى كريم على الله عليه ولم بيغام البى كى دعوست وتبليغ اوراس ميں ثبات وثابت قدمى صبر و استقلال اور اسس سلسلمیں مصائب و آفات کے برداشت کرنے اور مجام سے ہیں ضرب المثل متھے، اس طرح ا ولوالعزم پیغیبراس وقست یک برابر عبر وجهدا ورمجابده وجها دکیا کرستے تنصے جب تک که وه این قوم کوالٹر کے دین میں فوج در نوج داغل ہو تا ہوا نہ دیک*یے کیں۔* 

ر ہا وہ اسوہ اورنموز جوعبا دیت اوراخلاق کے سلسلہ میں نبی کریم ملی اللہ علیہ وسلم نے تو گول کے لیے بیش کیا تھا تو وہ اپنے مراتب کی مبندبول ا در کمال کی انتہاکو بہنچا ہوا تھا، اور حتنا جتنا زمانہ گزر تاجلے گا ا درصدباں بیتی جا میک گی لوگ نبی کریم صلی اللہ علیہ ولم کی عبا دست اور طلیم الشان اخلاق کواسینے لیے کامل نموز ا ورمبتہرین اسوہ اور برایت کن منارہ پائیں تھے ۔ عبادت سے سلسلہ میں آپ کے اسوہ ونمونہ ہونے کے سلسلہ میں اہم بخاری وسسلم حضرت مغیرہ بن شعبہ منی انتدعن۔ ے روایت کرستے ہیں کہ رسول التعلی التدعلیہ ولم رات کو اتناطویل قیام فرملتے کہ آپ سے یا وُل مبارک پرورم آجا آ، اورجب

سوکہیں آپ گھونٹ لیں محے اپنی جان کو پچیا کچیا کران کے يهيم الروه زه اليل كاس بات كور

حبس كوآب چابى وزيت نهبين كرسكتے البتہ التر بایت دیاہے اسے سے کے لیے اس کی مشیت ہوتی ہے۔

آپ سے عرض کیا گیا کہ کیا التہ تعالی نے آپ سے ا<u>گلے بچھلے</u> سب گناہ معاف نہیں فرط وسیے ہیں؟ تو آپ ارشا د فرط نے بھرکیا میں شکر گزار ہندہ نہ نہوں؟!

ا ورا ما کانحاری و کم محضرت علقمہ سے رو ایرت کرستے ہیں کہ انہول نے فردایا: میں نے حضرت عائشہ دخی اللہ عنہ اسے پوچھا: کیا رول الٹرصلی الٹرعلیہ ولم تعبض دنول ہیں کچیز صوبی عبادت کیا کرستے تھے؟ الینی اور دنول سے زیادہ ان دنول عبادت کرستے ہوں ، توانہول نے فرمایا: جی نہیں! آپ کام کل دائی تھا تھی ہمیشہ عبادت ہیں سگے رسپتے ستے .اورتم ہیں سے کول شخص ہے جو آئی طاقت رکھا ہموجتنی طاقت رسول اکرم صلی الٹرعلیہ ولم رکھا کرستے تھے ۔

ادر اس طرح سے نبی کریم علی التّدعلیہ تولم کا فُلپ اطہرالتّدولُ شاندگی مجتبت سے سرشار اورعبادت واسپینے رہ سے سرگوشی میں مگری میں مون فراتے تھے اور آپ کو میں مقابنانچہ آپ راتول کو کھڑے رہتے ،اور دن کا ایک مصدیمی ای مناجات باری ہیں صرف فراتے تھے اور آپ کو نماز ہیں لذت محسوس ہوتی تھی ، اور عبادت میں آپ کی آنکھول کی مٹھ ڈکٹے تھی ، اور آپ سی التّدینم کوان چیزوں ہیں اینے پیروی سے دو کتے تھے جن چیزوں ہیں وہ آپ کی پیروی کی طاقت نہیں دیکھتے تھے۔

معنون عائشه صدلیت و نشه میراند و نمی التاریخها فرمانی بین که رسول التارسلی التاریک کام کرنا چاہتے تھے سکن کھراس خوف سے اس کو چھوٹر دیا کرتے ہتھے کہ لوگ آپ سلی التدعیہ ولم کواس کوکر آا دیکھے کرخود بھی کرنے لگیں اور مجران پر وہ فرض کر دیا جائے۔

اور حفرت انس رضی الله عذروایت کرستے بیل کنی کریم سلی الله علیہ وہم نے ایک برتیم سلسل روز سے رکھے ، دن رت میں کچھ نکھایا ، دویا تین دان سلسل ایسا ہی کیا ، یہ دمفال سے اخیر کا واقعہ ہے ، آپ کو دکھے کر دوسر حضرات نے بھی کھا ہے ہیں کچھ نکھایا ، دویا تین دان کو نسسلسل روز ہے کھنا تنرع کرویے ، جب نبی کریم سلی الله علیہ وہم کو یہ اطلاع می تو آپ سلی الله علیہ وہم سے ارشاد فرایا ، اگر جا سے یہ مہینہ دراز کردیا جا آت وہم آس طرح ہے ساس روزہ رکھتے کہ ممالغہ تعمق کر مراف والے اسپنے غلو کو چھوٹ بیٹے ۔ میں تم لوگوں کی طب رح نہیں ہوں مجھے تو میرارب کھلا آنھی ہے اور بلا آم بھی ہے ہینی میری مدد فسرا آب اور طاقت وقوت دیا ہے۔

اور مجلانبی کریم سلی النُدعلیہ کی م جا دست سے اس اعلیٰ ترین مرتبہ پرکیون فائز ہوں ۔اس بیے کہ آپ ہی توالتُدتعالے سے ان تمام احکامات کو نا فذکر سنے والے تھے جن کا التُدتعالیٰ نے آپ کو بھم دیا تھامٹلا تہجد وعبا دستِ شب وروز اور تسبیح وذکر ودعا، وغیرہ :

اسے کپڑوں میں لیٹنے واسے رات کو ( مَازیس) کھڑے رہاکیجے پیٹر ہاں تھوڑی داست یعنی آ دھی داست یا اس سے کچھ کم ریکھیے یا اس سے کچھ بڑھا دیجیے ، اور قرآن نوب

﴿ يَنَايَتُهَا الْمُزَّمِّنُ مُقِمِ الْيُلَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿ يَصْفَهُ أَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ﴿ أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَمَرَيْتِلِ الْقُرْانَ تَرْتِيْلًا ﴿ إِنَّا سَنُلِقِيْ

عَلَيْكَ قَوْلًا تُقِيْلًا ؛ إِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ ﴿ هِيَ اَشَدُّ وَطَاً وَ اَقُومُ قِيْلًا أَ ».

((وَ مِنَ الَّبُلِ فَتَهَجَّذَ بِهِ نَافِلَةً لَكَ ۖ عَمَلَى أَن يَّنِعَتُكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ١٠٠٠).

بنی امرائیل ۔ ۹ ،

الوَاذَكُرِ اللَّهَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَ آصِيْلًا ﴾ وَمِنَ الَّيْنِ فَالْسَجُدْ لَهُ وَ سَيِبْحُـهُ لَيْدَّكُونِيلًا ١١٠.

صاف میاف پڑسعیے ہم آپ پرعنقریب ایک بھائ کا ا ڈ <u>اپنے کوہیں، سے شک رات کے وقت بھنے ہیں</u>اور وزبان کا ، فویسل رتباسید ، و ریات فوب ممکیک بهتی ہے۔

وررات میں کھے جاگئے رہیے قرآن سے ساتھ یہ زیادتی ہے " کے لیے قریب ہے کہ سے کو س کارب كفراكردسه سقام محمودي .

ا ور پنے پروردگارکان کم فیٹی دسٹ کم لیستے رہیں۔ اور ۔ دات کے عمیمی مصری اسے سجدہ کر کیمیے . اوراس ک سبع ات ك برسيضة بن كياكيه.

ر ہا اخلاق فاصلہ سے سلسلہ میں آپ کا مقداری واسوہ ہونا تواس سلسلہ میں میرے لیے صرف آنا کا فی ہے کہ میں آپ سلی النّٰدعلیہ وم سے اخلاق تنریفیہ اور آپ کی عمومی عظمت سے گوشول سے علق ایک ایک نموز آپ سے سامنے پیش کردول خواه اس کاتعلق کرم وز بدست بود یا اس کار را تواضع والم وبردباری سے بود یا قوت وشیجا عست سیمتعنق بود یا حسن سیاست اوراصول پرثابت قدم رسیسے سیسعلق ہور

ر إكرم وجود مين آب كاسوه ونمونه بونا تواس سلسله مين بيرا أسب كدنبي كريم عليه النسلاة والسلام الشخص كى طرح دياكرت تحے جے فقرو فاقد کا قطعًا ندلیث مذہو، اور آپ تیز رفتار مواسے ' یادہ سخی تھے . اور آپ سب سے ' یا دہ تخی مضال المبارک

کے مہینے میں مواکر تے تھے۔

ما فظ ابواشیخ حضرت اس بن مالکب ضی التّدعندسے وا بہت کرستے ہیں کہ انہوں سنے فرمایا: مسلمان ہوسنے کے بیسے سول النّه صلی النّه علیہ وسلم سے تھی تھی جینز کا سوال نہیں کیا گیا مگر پر کہ آ<u>پ ن</u>ے وہ ضرفر معط فرمانی . ایک صاحب نے آپ ہے دوبہا میوں سے دیمیان م*گر محرکر بجر*یاں مانگیں ، آپ نے انہیں وہ عطا فرما دیں ، تو وہ اپنی قوم کے پا*س گئے اور*ان سے کہاکہ ہوگومسلمان ہودباؤ اس<u>سی</u>ے کہ محسبہ درصلی اللہ علیہ وسلم ، تو ا*س شخص کی طرح ول کھول کر دیبتے* ہیں جسے فقسسر کا قطعاً

ا و حصرت اس منی النّدونه مصروی ہے کہ رسول النّد ملی اللّه ملیہ وم مسیمی بھی سے کہ پیز کا سوال نہیں کیا گیا اور تھریہ ہے افلاق میں مقدی ہونے کی بحث کا کنز حصنہ ہم ری کتا ہے۔ تعتی عدم منسب سے مجھ تعرف سے سے مقامتول ہے۔ موا ہوكہ آب ہے، س كے جواب ميں بنه ميں فرط يا ہو رفيني آب ہے جوجيز مانگ جاتی تھي آب وہ عطافرط ديتے تھے ،۔

رہا زبدوور عین آپ کا اسوہ و مقتدی ہونا تو حضرت عبدالتہ بن مسعود بنی التہ عنہ سے مروی ہے وہ فراستے ہیں کہ ہیں سول التہ ملی التہ علیہ وکم کی ندمت میں حاضر ہوا ، آپ بڑائی پرتشریف فراستھ ، اوراک کے نشا نات آپ کے پہلو پر بڑھ گئے ، میں نے عرض کیا : اے اللہ کے رسول اگر ہم آپ کے لیے کوئی الیا گذا بنوالیں ہوآپ بڑائی پر بچھالیا کر ہی ہس کی وجہ سے آپ بڑائی (کی منتی ، سے محفوظ رئیں ؟ ؛ آپ نے ارشاد فرایا : میراد نیا ہے کیا واسطہ میری اور دنیا کی مثال تو بائل ای سب آپ بڑائی روئی سوارکی درخت سے سالیے ہیں بھے موائی ہے اور مجر اسے مجھوٹر کرو ہاں سے بھلا جائے . اور آپ ہی وہ ذات ہیں بنہو نے التہ سے یہ دینواست کی کہ اے اللہ آل محد کا رزق ابقد بھر ور رہے مقر کر ویجھے ۔

اورا بن تریر حضرت عائشہ دنی اللہ عنہا ہے وایت کرتے میں کہ انہول نے فروایا: یبول اللہ علیہ ہم حب ہے مدین منورہ تشریف لائے اللہ علیہ ہم حب ہے مدین منورہ تشریف لائے اللہ علیہ ہوئی تن ول نہیں فرائی۔
مدین منورہ تشریف لائے اس وقت سے وفات تک آپ نے مسلسل میں دن بھی پبیٹ مجرکر گیبول کی روئی تن ول نہیں فرائی ۔
اورا مام احمد حضرت اس منی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہول نے فروایا: حضرت فاظمہ منی التہ عنہا نے نبی کرم ملی اللہ عنہ میں معلیہ والدنے میں مناور سے فروایا: یہ وہ پہلی خوراک ہے جو تمہا ہے والدنے میں دن میں کھائی ہے۔
دن میں کھائی ہے۔

اورمجلانبی کریم سی التدعلیہ وہم زہرودنیا سے بے فیتی کے اٹلی مرتبہ پر کمیوں نہ فائز ہوں اس لیے کہ آپ ہی تواس حکم کونافذ کرنے والے بیں جوا بتدنے آپ سے نافذکرا ناچا ہا تھا اوروہ حکم اللّٰہ کا آپ سے یہ فرمانِ مبارک سہے :

پروردگار كاعمىيد كهيل بهترين ورديم اسد.

(( وَلا تَمُدُّنَ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهُ
 اَزُواجًا مِّنْهُ مَ زَهْرَةَ الْحَيْوةِ الدُّنْيَا هُ
 إِلنَهْ تَنِهُ مُ فِيْهِ \* وَرِنْنَ كَيْكَ خَيْرٌ وَ اَبْقَى ﴿).

كلئه اسما

ہمیں یہ بات خوب اچھ طرح سے ذائن سین کرلینا چاہیے کہ نبی کرم صلی التُدملیہ وہم نے جوز بدانتیار فرمایاتھا یہ فقروفاقہ ہمتھ کی تنگی یا کھانے چینے کی اسٹیار کی کمی کی وجہ سے نہیں تھا ،اوراگر رسولِ اکرم صلی التُدملیہ وہم دنیا کی احت کی چیزیں پندکرتے اور دنیا کی نعمتول کی فراوانی چاہتے ،اور دنیا کی آسائٹوں ہے ستنید ہونا چاہتنے ،تو دنیا اوراس کی تمام چیزی بنبی نوشی ڈیل و رسوا ہوکر آ ہے کہ قدمول ہیں ہونیں بکین بات یہ تھی کہ آپ میلی التّدملیہ وہم سے اس اختیاری فقروز دہری بعض مصلحتیں اور بہت تریکمتیں تھیں جن ہیں ہے۔ ہم اور ظام حکمتیں ورج ذیل ہیں :

ی آپ یہ چاہتے تھے کے مسلمان قومول کو اپنے اس بہدہ تعاون اثیار اور مال کے خرجے کرنے کے خاہم کو تمجھا دیں۔ امل بہتی حضرت عائشہ صدیقیہ دخی اللہ عنہا ہے روایت کرتے بیس کہ انہوں نے فرمایا ؛ رسول اللہ مسلی اللہ علیہ ولم نے مسلسل تین دن پیٹ بھرکر کھانا نہیں کھایا ،اوراگریم چاہتے توخوب پیٹے بھرکر کھاسکتے تھے نیکن آپ دو مرول کولینے اور ترجیح دیاکرتے اور ایٹا فرماتے تھے ،اوراس سے قبل ہم یہ بھی ذکر کرسیکے ہیں کہ آپ سلی اللّٰد علیہ وہم اسس منتخص کی طرح دل کھول کر دیتے تھے جے فقر کاخوف نہ ہو .

کو آپ نے یہ پیاہا کہ آنے والی سلم برا و یول کو قناعت بسند ضرفر رہ پراکٹفا کرنے والی زندگی نموز کے طور پر دکھلا دی . تاکہ وہ دنیا کی زیب وزنیت اور شرسا مانیول میں جیس کرا پینے فرلھینۂ دعوت وارشاد واعلاء کلمترالٹادسے محروم نہ بوجا بیک ، اور ایسانہ مہوکہ ال بہر دنیا کی نوب بہتا ہے ہوجا سے اور محیر دنیا ان کو اس سرح بلاک کرد سے جسے ال سے پہلے گزرے مہوئے ہوگؤل کو تباہ و بربا دکیا ہ

ونیت اور دنیای ختم نه بولی اور لوگری کے دلول میں مرض ہے دینی منافقین وکفا اور اعدام اسلام ال پر واضح کردیں کہ آپ بردین کی موت کو ہے کر آئے میں اور لوگول کو بس طرف بلارہ میں اس سے آپ کا مقصد نه ال کا جمع کرناہے اور زدنیا کی فائی زیب وزینت اور دنیا کی ختم نه بونے والی لذت کی چیزیں اور ہذاس کی ختم یں و رسائنیں ، اور نہ آپ وین کے نام سے دنیا کمانا چلہتے میں ۔ بلکہ آپ کا مقصد و حید اللہ تعالیٰ سے اجرو تواب کا ماس کرنا ہے ۔ اور آپ یہ چلہتے ہیں کہ جب آپ اللہ کے دربار میں خام ہول تو دنیا کی فائی چیزول میں سے آپ کے مجمی نہ ہو، اور آپ کا شعار بھی وہی تھا بھا آپ سے قبل دو سرے تمام ابنیا ؛

کرام علیہ اسلام کا تھا:

(رو يُقَوْمِ لا أَسْتَلَكُوْمَ عَكَيْهِ مَا لاً وإن أَجْدِى الرائيس مائكماً.

إِلَّا عَلَى اللهِ )). جود - ٢٩ نبس ميرى مزددى عُرَّانتدرٍ.

اور نبی کرم علیه انصلاة وانسلام تواضع کی اس معارج برکرول نه ترویت جب که نوودانته مبل شانه نیر سی الته علیه و لم اینا پر بیغام کازل فرمایا ہے:

(( وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ مِن اللَّهِ مِن اللَّهُ مِن اللَّهِ اللَّهُ مِن اللَّهِ اللَّهُ اللّ

حلم وبردباری میں آپ کامقتدی ونمونہ ہونا، نبی کریم علیہ انصلاۃ وانسلام علم وبردباری کی اخری منزل کو پہنچے ہوئے تصفحواہ آپ کی بردباری اس وقت ہو حبب بدواع انجانی آپ سے ساتھ دیشتی اور بدسلوکی سے پیش آتے تھے۔ یااس وقت جب نتے وکامیانی نے آپ کے قدم چوہے تواس وقت آپ نے شیمنول کی نود سری اور تکبر سے بدلے میں صلم دبردباری سے کام کیا ۔

اعراب وبروؤل ودیما تیول کی ب نوکی پر آپ کے نام و برد باری کے سلسد میں میرے لیے نسرف اتنی بات کانی ہے کہ میں سیرت کی کمآبول میں مذکور بہت می مثالول میں ہے درج ذیل مثال پٹیں کر دول بینا نجد کھا ہے کہ اما ہجاری کو مجمالت مصرت اس فی اللہ علیہ وقم کے ساتھ جل را مجاری کہ محصرت اس فی اللہ علیہ وقم کے ساتھ جل را مجاری ہوئے ہیں رسول اکرم صلی اللہ علیہ وقم کے ساتھ جل را مجاری ہوئے ہیں اسول اکرم صلی اللہ علیہ وقم کے ساتھ جل را مجاری ہوئے ہیں ہوآپ کے پاس آئے اور آپ کی چا در کھی ہوئے ہیں ہوآپ کے پاس آئے اور آپ کی چا در سے کن رسے آپ کو کھینچ لیا۔ میں نے دیکھا کہ اس اعرابی کے زورسے چا در کھینچ کی وجہ سے آپ سے کا ندھے پر چا در سے کن رسے کا نتال میں سے مجھے میں دینے کا تکم دیے ہوئے گا اللہ علیہ وقم اس کی طرف متوجہ ہوئے مسکل سے اس کو عطیہ دینے کا حکم میں سے مجھے میں دینے کا تکم دیے ہوئے۔ آپ سلی اللہ علیہ وقم اس کی طرف متوجہ ہوئے مسکل ہے اور اس کو عطیہ دینے کا حکم

سأته عفو ود گزرا ودمعا فی کامعا لم کمیا جار إسبط و حالانکر ایسے موقعہ پردوسرے حکام تواہیے مفسدوں وسکٹوں کا علاج سوائے گردن رانے سے اور کوئی نہیں کرتے ہے میکن نبی کرم علیہ الصلاۃ والسائم نے ان سے ساتھ سوائے اس سے اور کھے رکیا کہ انہیں مکجا جمع كيا، انهيں اميد دلانی اورامان ديا، اور ان سے اپناياد گار علمه فرمايا : تبلاؤتمها راكيا فيال ہے ميں تمهارے ساتھ كيابر تاؤكرول گانهو<sup>ل</sup> نے عرصٰ کیا کہ آپ شریف بھائی ہیں .اور شریف بھائی کے بیٹے ہیں ، آپ نے ارشاد فرمایا : جا وُتم سب کے سب آزاد ہو سپ کومعاف کیا جایا ہے۔

ا و زنبی کریم صلی النه علیب و ترم صلم و مرد باری سے اس مبت د ترین مرتبه میں کیول نه ہوں جب که الله تعالی آپ پر يرآيت مازل فراتيك بين :

درگزرکی عاوت کیجیے ، ورکیک کام کرنے کا حکم کیجیے

((خُنْدِ الْعَفْوَ وَأَمُزْبِالْعُزْفِ وَآغِرِضْ عَين اورجاماوں سے کنارہ کیمیے۔

سوناره کیجیے انھی فسسدج ک رو کرنا۔

ر بإجمانی طاقت بی آپ کامقاری مونیا تو آپ لی الله علیه ونم نے شتی کرینے واسے پہلوانوں اوراولوالعزم ہوگوں سے یے قوت بگرفت، اور قوت ِنا فذہ میں اعلیٰ ترین مثال بیشیں کرسے دکھائی ۔

وريه بات كيول نه موحب كه نبي كريم عليه الصلاة والسلام في مبيلوانول كي سرارم كانه كونمين مرتبه بمجها وديا تها. اور تبسری مرتبہ بچھرمنے سے بعدر کا زنے آپ سے وفل کیا : میں گواہی دیتا ہوا ، کہ آپ اللہ کے رسول میں ۔

اورايياكيول زېوجبكآپ وه ذات مېرىب نے جنگ اردىمي انځې نى نىلىن سے سىپنے بېرنىز ە مارا تورە دردسے بھال موکرا پنے گھوٹے سے نیچے گریڑا اور کھنے لگا: اگر محد (صلی الدّعلیہ وقم )میرے اوپرصرف تھوک ہی دیتے تو بھی آپ مجھے قتل کر دیستے ،اورالیاکیول نه ہواک لیے کەصحار کرام ضی النّدعنهم خندنی کھودستے ہوئے جب ایک چِٹان پہینچے توآپ کی فند میں مانے ہوئے تاکہ ایک ہی سخت چٹان کو آپ ریزہ ریزہ کردیج بس پرقوت ِ بازواور کدالیں اثر نے کوسکیں۔

۱ در ایساکیوں نه بهوحبب کەصورىت ِ مال مې پېقى کەتىپ کى قوست جہانی ا وردل کې مضبوطی ا و اِعصاب کی طاقت کود مکيم*و کم*ر صحابكرام ضى التعنهم فمعين آب صلى التعليدوم كى بناه بي آجاياكرت متعد

ا و رنبی کرم مسلی الله علیه و مم قوست و طاقت سے اعلیٰ ترین مرتبه برکیوں نه فائز مول جب که آپ غوصیه ایشاد فرماتے ہیں : طاقتور مؤمن بهترا ورالله تعالى كوريا ومموب ب كمزور وضعيف مؤمن سے ملاحظ مو فيجيم ملم

، و زبی کرم علیه الصلاة والسلم عزم کی نجنگی اوتهم کی قوت میں خود کو دوسر*ول سے سلیے مق*تدی ونمونه ښاکرکیول نرچیس کریں جمکہ التدامالي في آب بردرج ولي آبيت ماحت سينازل فراني ب

له مل حظه موشیخ عبد ارحمن عزام کی کماب طل الأبطال (ص - ۵۵) ـ

ورتبارکرو ن که لوائی سکے وا سیطے ہو کھہ مجع کرمسکو

﴿ وَ اَعِدُوا لَهُمْ مَّا السَّنَصَعْتُمْ مِّنَ قُوَّةٍ ﴾.

ر بإبها دری و تنجاعت میں آپ کا مقتدی ہونا، توانس باب میں آپ کاہم سرکوئی تھا ہی نہیں (یبھیے آپ کو دو وا قعات ایسے تبلا ویا ہول بوسی بہاو کی بہاوری سے لیے اعلی ترین نمونہ ہیں:

الف ، ایب رات الب مدینهی خوفناک چیزے دمشت ردہ موسکتے ، حس طرف ہے اوا یّا فی تھی اس جانب کچھ لوگ جل وسیے راستہ میں انہ ہیں دسولِ اکرم صلی التہ علیہ وہم اس طرف سے واپس آتے ہوستے پہلے ، آپ ان سے پہلے ہی اس جانب بما<u>سے تھے</u> اویر حضرت ابوطلعہ سے ایک بے گھوٹیے پر میار مورکراس خبرگے تقیق کرسے کے ستھے ، ملوا راہپ کی گر د ن میں تنگی ہوئی تھی اورآپ یہ فرمارہے متھے کے گھبراؤنہیں ڈرومت یہ

ب ۔ جنگ ٔ خنین کے موقعہ برنبی کریم صلی التّرعلیہ وہم ا<u>پنے نچر پر کھٹرے ہو گئے</u> ، لوگ اس وقت اِ دھراُ دھر ہوا گ رہے متھے،آپ نے فرمایا:

> أنا ابن عبدالمعلب میں عبدالمطلب کا ہیٹ ہوں

أن النبي لأكذب

یں نبی ہوں جھوٹا نہیں ہوں

اس روزآب سے زیادہ ٹابت قدم اور دشمن میں گھسنے والااور کوئی شخص نہتھا.

طویل ایریخ میں سے میں نے صرف ان دووا قعات کا انتخاب اس بیے میاہے کہ ان میں سے پہلا واقعہ وہ ہے جس يس رسول التُدسى التدعليدولم نطرے كى حكرك جانب اور لوگول سے يہلے چلے گئے ، اور دوسرے واقعے ميں رسول اكرم صلى الله علیہ ولم انتہائی ناک وخطرناک موقعہ پر ایک ایسے وقت حب کہ آپ سے ساتھی آپ کے پاس سے بھاگ چکے ہول تھے تھی سے ٹابت قدم سے جن نوگول کو جنگ کے علم وفن سے علق ہے وہ جانتے ہیں کہ ان دووا قعاب سے بہا دری کاامتحا ن یاجا تا ہے. اور بہاوری کو پہچاناما تا ہے. اس لیے کہ حب خوف غالب آجیکا ہواور رعب طاری ہوگیا ہو اس وقت خطرناک عَكَهُ كَا رَخْ كُرِنَا وَرَمَلِاكُت كَى حَكَمَهُ وُسِتْ رَسِنَالْفُس بِرِيرُا شَاقَ وْنَكِيفِ دِهِ مِوْمَا سِيطُ <sub>﴾ -</sub>

ا ور نبی کریم صلی التّٰدعلیہ ومم نحطرٰیاک مواقع بربها د روا گئے براسے سے والے کیوں نہوں جب کہ اللّٰہ تعالیٰ نے آپ پر ابنایه ارشاد نازل فرمایا ہے:

سوآب انتدک راه میں لڑھیے آپ ذمہ دارنہیں عگرا بی جان کے اور ناکید کیجیے سمانوں کو

( و فَقَا يِن فِي سَبِيْكِ اللهِ ، كَا تُكَلُّفُ إِلَّا نَفْسَكَ النباءيهم

وَحَرِرْضِ الْمُؤْمِنِينَ ١١٠٠

نيز فرمايا ب

ئے نی کریم سی انتدعلیہ وہم کی بہا دری وشی مست کے ان دونوں واقعو کرکھیے عزم ک کتا ہے۔

كيان ہے ڈرتے ، وم كوالله كا ڈرزيادہ چاہيے اگرتم

یمان *ریختے* ہو۔

مسن مسن بہروسیاست بم آپ کامقتری ہونا، اس باب ہیں آپ تمام ہوگول کے لیے فرب المثل تھے چاہیے وہ چھوٹے ہول یا بڑے ، مؤتن ہول یا کافر عوام ہول یا خوانس ، اور ہرموقعہ پر کامیا بی آپ کے قدم چوتی تھی ، اس لیے کہ فطری عورسے آپ میں عمدہ افعلاق رکھ دیے گئے تھے ، اور آپ سلی ابتد ملیہ ولم کوسن تدبیر وسسن سیت اور تمام امورکوان کی عبر پر رکھنے کا خاص ملکہ دباگیا تھا ۔

" ارتئے نے جن بیے شمارمثالول کواپنے نزانے ہیں محفوظ کر رکھا ہے ان ب<u>ی سے ایک ظیم نمونہ آپ کے ساسنے پی</u>ٹ کیا جا آ ہے تاکہ آپ کو وہ حکیمانہ سیاست معلوم ہوجائے ہوآپ کی مجھداری فظیم اخلاق سے دجودیں آرہی تھی ۔

غزوة حنين سيء بعدنبي كريم عليه الصلاة والسسام في حبب قريش ودنگريعرب قبيلول كوانعامات وسيعه اورانصاركو كجهيز دیا تو اس سلماریس انصاریس کھسٹھیسٹر بونے لگی تتی کھین نے کہا: سخدا رسول (مسلی التّٰدعلیہ وہم ) تواہی قوم سے مل گئے ہیں اس موقعه پرنبی کریم میں التدعلیہ ولم نے انصار کوجمع کیا اور فرمایا : اسے انصار کی جماعیت یہ کیا با ت ہے چوجمعے تمہاری طرف ہے پہنچے ہے ؟ اور لیریا چیز ہے جوتمہاری نفوس میں پیامبور ہی ہے ؟ تبلاؤگیاتم گمراہ نہ تھے اور الندنے بہیں برایت دی . كياتم فقرار نته الله في مهيئ بنايا كياتم ايك دوسرے كے وَمن نه تھے مجر لِند في تمهار سے دلول ميں الفت پيدا كى ؟ انہوں نے عرض کیا: اللہ اور اس سے سول کاہم پر مہت بڑا فضل واحسان ہے۔ بھرآپ نے فرمایا: اسے انصار کی جاعت تم لوگ بتلاتے کیول نہیں ہو؟ انہول نے عرض کیا جم کیا بتلایک ؟ اللہ اوراس سے سول کاہم پرفضل واحسان ہے آپ نے ارشاد فرمایا ؛ بخدا اگرتم لوگ چاہتے تور کہ سکتے تھے اور سج کہتے اوراس بات میں تمہاری تصدلی تھی کی جاتی کرتم مجھ سے یہ کہتے: آپ جب ہما سے پاس آئے تواس وقت اور لوگول نے آپ کو حبلایا تھا اور ہم نے آپ کی تصدیق کی ،لوگول نے آپ کوتنِ تنہا چھوڑ دیا تھا ہم نے آپ کی نصرت کی لوگول ہے آپ کوشہر پدر کردیا تھا ہم نے آپ کو حگر دی آپ او بہتے ہم نے آب سے غمنواری کی ،اسے انصار کی جماعت کیاتم دنیا کے اس تھو میسے سے مال ووولت کی وجہسے نا راعن ہو ہو میں نے بعض قومول کو اس لیے دیا ہے تاکہ ان کی تالیف ِ قلب مبوا در دہ مسلمان ہوجائیں، اور مجھے تمہارسے اسلام پر اعتماد وتعبر وسهيتها . كياتم اسسينوش نهيس موكه اورلوگ توا ونث ودينيه بهيش كرجا يُسُ اورتم ايينه كُمرالشه كه رسول کولے کرجاؤ؟ قیم ہے اس ذات کی جسس سے قبعنہ میں محد (صلی اللہ علیہ قیم ) کی جان ہے اگر ہجرت نہ ہوتی توہیں انصار میں کا ایک فرد موتا. ا و راگر دوسرے اور تمام لوگ ایک گھائی میں تاہیں اورانصار و دسری گھائی میں تومیں انصار کی گھائی میں تاپول گا، ا مے الله انصار بردم فرما اور ال کی اولا دیر اور انصب ارکی اولا دکی اولا دیڑھبی دم فرما بیسن کر وہ حضرات اس قدر روئے که ان کی داوصیال آنسوؤل سے تربوگیک ۔ ا ور انہول نے عرض کیا : ہم رسول النّصلی التّدعلیہ۔ وم کی تقتیم اور اسیسے

حصه بر اصنی فوش ہیں ۔

یافلاس سے پُروہ سیح کامات ہیں ہورول اللہ صلی التدعلیہ ولم سے قلب مبارک سے نکلے ، اور آپ کی زبان بے ان کی ترجانی کی اور یک کامت ہیں کھوا کردیا ، اور ان کی ترجانی کی اور یک کامت ہیں کھوا کردیا ، اور ان کی ترجانی کی اور یک کامت ہمیں فقط اکردیا ، یک کامت ہمیں فقد کواک کی موت ماردیا ، اور انصار کی نفوس کو تق سے بہچا نے اور تکمیت سے ہمجھنے سے بیار کردیا ، یک کامت ہمیں بتلارہ ہوگا اللہ علیہ ولم اسلام کی بڑی مصلحت و فائد سے اور اسلام کی نفرت و غلبہ اور تالیف قلب سے سے بیجے علیم سے سے جھے تھے اکم سلانول کو توجید کے سایہ سلے اسلام سے جھنڈ سے سے بیجے علیم وحدت حاصل ہوجا ہے۔

ا دراگرنبی کریم ملی الله علیه ولم النظیم صفات سے متصف نه بهوتے. اورالله تعالیٰ آپ کوییم بھر وذکا وت اورائیسی سیاک سوجہ بوجہ مذوسیتے تولنبی کریم علیہ الصلاۃ والسلام ہرگزیمی مریز منورہ بیں اسلامی حکومت قائم نزکرسکتے تھے، اورتما المبسنریہ ہ عرب آپ کی مجت سے سرشا را وردوستی کاگرویدہ نہ ہوا۔

اورنبی کریم صلی التُدعلیب وسلم سن سیاست اور اچھے معاملے میں مقدی ونموزکیوں کرنہ ہول جب کر آپ ہسس سیاست میں اپنے رہ کے اس امرکے پیروسقے جواس نے آپ کواس سیاست اور اس ممثاز معاملہ کے اس امرکے پیروسقے جواس نے آپ کواس سیاست اور اس ممثاز معاملہ کے التہ میں شاز نے اس سلسلہ میں آپ کوسس طرح خطاب فرمایا۔ اورکس طرح نصیحت فرمائی ارشاد ہے :

الْفَيِمَا رَحْمَةِ قِنَ سَهِ لِلْتَ لَهُمْ وَلَوْكُنْتَ فَظًا غَبِيْظَ الْقَلْبِ لَا نَفَضُوا مِن حَوْلِكَ فَاغْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْلَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي فَاغْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْلَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ، فَإِذَا عَنَمْتَ فَنَوَكَلْ عَلَى اللهِ وَإِنَّ اللهُ يُحِبُ الْهُتَوَكِيلِيْنَ . ».

سوکچ الته بی کی جمست بے کہ آپ ان کونوم وں ف گے
اور گراآپ تند نوسخت ول ہوتے تومنفرق ہوجا ہے آپ
کے پاس سے موآپ ان کومعا ف کیجے ، ور ، ن کے کیے ٹیس کا منگے اور کام میں ن سے شورہ لیجے ہجرجب سپ س

ہے محبت ہے۔

ر إبنے موقف پر ثابت قدم دہنے کے سلسلہ میں آپ کامقد کی ہونا، تویہ بات آپ کی صفات میں سے نہایت کایال صفت تھی، اور اس موضوع پر دلیں پیشیں کرنے کے سیارے کیا ال صفت تھی، اور اس موضوع پر دلیں پیشیں کرنے کے سیارے لیے آئی بات کائی سے کہ ہم آپ کا وہ کھیم موقف پیشیش کردیں ہوآپ نے اپنے جیا کے ساتھ اس وقت افتدیاد کیا تھا جب آپ کویہ گمال ہوا تھا کہ شاید آپ کویٹم نول کے توالے کردیں گے اور آپ سے تعاول سے کنارٹ سہوجا بیس گے ، اور مددسے باتھ کھنچ لیس گے۔ ایسے موقع پر ہم ایک کونٹم نال کھات کوئٹ نالیں لیس گے۔ ایسے موقع پر ہم ایک کوئٹ نالیں اور موقف بر وص جانے ہے تعلق ان کھات کوئٹ نالیں

جودائی وا بری دین اسلام کے پیغامبر کی زبان مِبارک سے پھلتے ہیں تاکہ دنیا کے سامنے اعلان کر دیں کہ دکھیونٹین و ثابت قدمی کیسی ہوتی ہے ،اور قربابی اور جانثاری کیا ہے ۔ اور اللہ کے دین کی دعوت دینے والول کوکیا ہونا چا ہیئے آپ صلی اللہ علیہ ولم نے ارشاد فرمایا :

اسے میرسے پچا بخدااگر بہ لوگ سورج کومیرسے دائیں ہاتھ میں اور چاندکو بائیں ہاتھ میں اس سے دکھ دلی کہ میں اس دین کی دعوت کو میور دول تو میں اسے اس وقت تک میرگرنہ میں مجھڑ سکتا جب بک کہ اللہ تعالی اسے غلبہ عطا ذکر ہے یا بھریں اسس کے بیے اپنی بھان قربان نرکر دول ، اور تھر بنی کریم علیہ العملاۃ والسلام دبال سے کھوسے ہوئے اور روئے یک ، جب آپ سے پچانے آپ کے اس عزم صاول کو دکھے ااور سمجھ لیا کہ آپ اس دین کی دعوت میں ثابت قدم رہیں گے اور کھے اور سمجھ لیا کہ آپ اس دین کی دعوت میں ثابت قدم رہیں گے اور کی شخص یا انسان کی پرواہ کیے بغیراس دعوت سے راستے پر گامزن دہیں گے ، توانہوں نے آپ کو آواز دی اور آپ میں علیم میں میں میں میں میں میں میں میں میں کردل گا، اور میر انہوں نے درج ذبل اشعار بڑھے وا وجوج اسے کہواب میں تہمیں میں میں میں کھولے نہیں کردل گا، اور میر انہوں نے درج ذبل اشعار بڑھے و

ا پنے اصول وموقف پر ثابت قدمی کی اس سے بڑھ سے اور کوئی شال ہوسکتی ہے؛ اور اس امتحال سے بڑھ کرا بیان کا ور کون سا بڑا امتحان ہوسکتا ہے ؛ اگر ہما اسنے بی کریم کی آعلیہ وم کے اس وقف کے علاوہ اور کوئی بھی موقف نے باگر ہما ہے ہے فخر و شرافت و دوام کے لیے کافی ووافی تھا۔ موقف نہ ہوتا توصرون بہی موقف قیامت تک ہمیشہ ہمیشہ سے لیے فخر و شرافت و دوام کے لیے کافی ووافی تھا۔ اور اپنے موقف پر ڈرٹ ہانے اور ثابت قدمی کی اس مماز و نمایال صفت سے ساتھ آپ کی التُدعلیہ ولم کیوں نہ متعسف ہوں جبکہ التُدعلیہ ولم کیوں نہ متعسف ہوں جبکہ التُدعائی آپ پر اپنی و رج ذیل آیات کرمیہ نازل فرملے ہیں :

لا فَاصُبِٰ كَاصَبَ كَا وُلُوالْعَرُمِ مِن الرسل » الاحاذ. ٢٥٠ اور فسرمايا:

ال أَمْرِ حَسِنِتُمْ أَنْ تَذْخُلُوا الْجَنَّةُ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلُوا مِن قَبْلِكُمْ. مَسَّتُهُمْ الْبَاسُلَا؛ وَ الطَّنَاءُ وَ زُلِولُوا حَدٌّ يَقُولَ التَرْسُولُ وَالَّذِينَ أَمَنُوا مَعَةٌ مَنْتَى نَصْرُ

آب سبر كيمي جياك ست والهييمبرول في مبركياتها.

كي تم كوير فيار ب كرجنت بي جله جا وكي والكرم إراث لوگول جیسے مالات بہیں گررے جوتم سے بیلے گزر بھیے کہ ، ن کوسنمتی ورسکلیف پینی اور هجر حجرط نے گئے یہ ان تک كرسول اورحج لنسكر تحايمان لائے وہ كھنے لگے كہ بتد کی مردکب آئے گی سسن کھوکدانندک مدد قریب ہے۔

نبى كريم ملى التدعليه وهم كے عالى اندلاق وصفات كاجوحصد مهم نے بيش كياہے درحقيقت بيراپ لى الترعليه وهم كى عظمت وبڑائی کے ذخیرے میں سے ایک معمولی سام کوا ہے ، اور آپ ملی اللہ علیہ وقم سے کمالات سے مندر میں سے ایک علی سے کی کوئی تھ س عقيم ني سلى الله عليه وم ك فضائل كوشمار كرسكة ب ياان ك شازار امتيازات واوصاف كالعاط كرسكة ب جب ك خود انتدتعائی سجاندان کا وصعف نہایرے عجبیب صفیت سے بیان فرمارسہے بیں۔ اور بسس یادگارا بدی صفیت سے مخصوص فرماتے میں :

اور ب شک آب اخلاق کے اعلی مرتبریر ہیں۔

واحكم بما شئت مدحاً فيه واحتكم اوراتب کی مدح میں اورجوجا بیں کہیں اور فیصد درم وانسب إلى قدره مب شئت منعظم . ورآپ کے مرتب کی طرف میں بڑائی کوچا سے منسوب کردیجیے حدفيع بعنه ناطق بنهم كونى مدنهين بي كرمين كوكونى بني زيان سے بيان كريك وأننه خبير خلق الله كلهم اورسپ ایندکی تم امخلوق میں سب سے بہتر ہیں

((وا نَكَ لَعَلَى خُصَلَقِ عَظِيْمٍ )). القلم - سم التدتعالى بوصيري برحم فرمائ انهول نيفوب كهاسي دع سا، دعته النصبارى فى نبيههم وہ دعوی توجھوٹر دیں جو نصاری نے دینے ابنیا کہ باسے ہوکیا وانسب إلى ذاته ما شئت من شرف آپ کی ذات ک جانر سب شرفت کی پی پیپے سبت کرویجیے ف ن فضل رسول الله الس به اسس سیسے کہ متدسمے رسول کے نفنسسل دکار ک فبسلغ العلسم فيسبد أنندبشر سے ہے ہارسے یں منتہاہے علم یہ ہے کہ آپ کی مبشرہیں

، ورحبب التُد**م**ل شانه نے نووسی اینے نبی کریم صلی انته علیہ ولم کو اس عظیمہ اخلاق سے مالا مال کیا تھا، اور اس اسوہ سن کے ساتھ امتیاز عطا فرمایا تھ تو تو چرفطری بات ہے کہ لوگوں کے دل آپ کی طرف کھنچیں ، اور لوگ آپ کی اقتدا کریں ، اور لوگ

مجبت كرت بهيل ومكيها جومحبت محمد رصلي التدعلية وم استيساتهي محمد اللي التدعلية وم است كرت يل .

صحابرگرام رضی الندعنهم آمجین نے مجبّت، فنانیت وتعلق کے اس وجدانی جذبہ سے رسول التُدصلی التُدعلیہ وسم محمد کی اقتداکی تھی ، اس الله علیہ وسم الله علیہ وسم کی اقتداکی تھی ، اس کے اقتداکی تھی ، اس کے افران ہیں آپ کی ذات ہیں ایک اللی ترین مثال وموزل گیا تھا ،عبادت ہیں بھی اور اخلاق ہیں بھی اور ملاطفت ہیں بھی اور معاملات ہیں بھی ، و کھے لیجنے نموز ومقدی نفوسس پراس طرح اثر کیا کرنا ہے ، اور تربیت اور شخصیت سازی ہیں اتنااچھا اثر ڈالیا ہے ۔

جُونعس یہ چاہیے کوسی ہے میں الٹائنم نے سول الٹائسلی الٹائلیم کی جواقیدار کی تعمی اس کا کچھے حصہ جان سے ،او آب صلی التہ علیہ وہم کا ان کی نفوس برحوا تر تھا اور آب نے ان کی زیگیول میں جوانقلاب برپاکر دیا تھا اسے بہجان سے تواسے سیخ کامطالعہ کرنا چاہیے : تاکدان سے شاندار کا رنامول اوراعلی فضائل برطلع ہو (کیا دنیانے ان سے زیادہ تندلونے ، مقدس ، جمدل شفیق ، برتر و بالا اور زیادہ ترقی یافتہ وعلم والا دیکھا ہے ؟

ان کی شرافت اور فخسسرا وران کانام بهیشه زنده رسینے کے لیے یہ کافی ہے کہ قرآنِ کریم ان سے بارے میں ول گویا۔ ہے:

محسمد النّذ كي يمير بين اور جولوگ ن ك سي توبين وه تيز بين كافرول ك مقابله مين (اور) مهر بان مي ايمين.

رات کوبہت کم سوتے تھے اور اخیرشب بی ہنفار کیاکرتے تھے ( مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللهِ ، وَ الْأَدِينَ مَعَةَ اَيَشَدُ آ اللهِ مَعَلَقَ اَيَشَدُ آ اللهِ مَعَلَقَ اَيَشَدُ آ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ

لاكَانُوْا قَلِيْلًا مَِنَ الْمَيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ۗ وَ بِالْاَسْحَادِهُم يَسْتَغْفِرُوْنَ ١). انذ رايت - ، وه اورفرایا:

(ا تَارِّمُهُمْ أَرْكَعًا سُجَدًا يَبُنَعُونَ فَضَلًا تِمِنَ اللهِ وَرِضُوانًا سِنبَمَاهُمْ فِي وُجُوْهِهِهُ مِنْ أَنْرَ التُنجُودِ )).

الفتح۔ ۲۹

#### نيزفرايا :

( الَّذِينَ تَنَبَوَّوُ الدَّارَ وَ الْإِينَانَ مِنْ قَبْيِهِمْ يُحِبُّنُونَ مَنْ هَاجَدِ إلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي فِي صَدُودِهِمْ حَاجَةً مِّتَا أُوتُوا وَ يُؤْثِرُونَ عَلَمَ نَفْيِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةً " )).

الحنشير. ٩

#### اور فرمایا :

((مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالُ صَدَقَوْا مَا عَاهَدُوا اللهُ عَلَيْهِ وَفَيِنْهُمْ مَنْ قَضَى نَعْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ \* وَمَا بَدَّلُوا تَنْهِ يُلَدً ! )).

الاحزاب بهوم

توانہیں دیکھے گا (اے می طب ) کہ رکبھ کوئا کررہے ہیں (کبھی ) سبحدہ کررسیے ہیں ،التدکے ففس اور دمنا مندی ک جنجویں ملکے ہوئے ہیں ، ان کے آٹا رسجدہ کی تاثیر سے ان کے چہروں پرنمایاں ہیں ۔

اوران نوگوں کا ہمی تق ہے) جود ادالاسلام وا میان میں ان کے بیل سے قرار کچر سے ہوسے ہیں ، مجست کرتے ہیں اس سے جو ان کے پاکس ہجرت کرکے آیا ہے ، ور اپنے دلوں میں کوئی رشک نہیں باتے اس سے جو کچھ نہیں ملیا ہے ، اپنے کوئی رشک نہیں باتے اس سے جو کچھ نہیں ملیا ہے ، اپنے سے مقدم رکھتے ہیں اگر ویڈو د فاقہ میں ہی ہول ۔

ا ہٰ ہِ ہمان میں کچھ توگ ، لیسے بھی پی کرانہوں سنے التہ سے ہومہ ہ کیا متھا اس میں سیسے اترسے ، سوا ن میں سے کچھ الیسے ہی بیں جوابیٰ نذر ہوری کرسے کچھے اور کچھے ان میں سکے راستہ دیکھے

یان کے مکام و مآخر اور تعرب بربانی کے مندر ہے پایاں کنار کے جند قطات ہیں اور الن حفرات کی ہولت ایک ایسان اس معاشرہ حقیقت سے روب میں وجود میں لانا آسان ہوگیا جوایک زبانے سے فکرین کا نواب اور فلاسغہ کی تمناوار دو مقال اور محالات کیوں نہوب کہ ان سے بہاں وودوسال بحث قاضی ان محبس نگا باتھا بکن اس کے باس کوئی مقدم پیش نہیں ہوا تھا ، اور وہ کیوں کر محبکر ہیں بہر قرآن کریم ان کے پاس ہے ؟ اور وہ آپ میں کیوں محبکر ہیں جبہ وہ اپنے جھائیوں کے لیے مجم وہ نووا پنے سے کیون محبکر ہوائے ہے ہے۔ اور وہ آپ میں ایک ووسرے سے کیونکر بنون کھیں جبہ سول اللہ میں ایک ورسرے سے کیونکر بنون کھیں جبہ سول اللہ میں ایک ورسرے سے کیونکر بنون کے بی محبہ سول اللہ ماں ایک علیہ ولم انہیں مجبت و بھائی چا کہ کی کورس ویتے تھے اور ایٹار وجبت کا مکم ویا کرتے تھے ۔

دسیے ہیں ۔

ان حضارت منی التعنهم المبعین سے محاس و فضائل سے شمارکرتے ہوئے اوران سے افعال جمیدہ اورانملاقی کرمیسہ کی پیروی کے دجوب کو بیان کرتے ہوئے مبیل القدر صحابی حضرت عبدالتٰد بن مسعود مینی التٰدعنہ نے حوکمچہ فرایا وہ آپ سامنے بیش کیا جا آ ہے :

اس لیے کہ وہ حضارت دلول کے اعتبارے اس امت سے نیک ترین لوگ تھے ، اورعلم سے اعتبار سے بہت گہرے علم شالے تھے.اور تسکلفات ہے بہبت دور شقعہ،او رسیرت کے اعتبار سے نہایت اعلیٰ اور عالت سے اعتبار سے بہترین تھے.الٹر تعالیٰ نے انہیں اپنے نبی اکرم صلی التّدعلیہ ولم کی صحبت اور اپنے دین سے قائم کرنے سے لیے منتخب فرمایا تھا. لہذا ان کے فضل ومرتبہ کو بہچانو، اور ان کے طریقے کی بیروی کرواس لیے کہ وہ قیمے وسٹیدسھے اِستے پر قائم تھے۔

ا ورمسلمان مبرخگیرا ورمبرزمانیے میں رسول التُدصلی التُدعلیہ وسلم سے صحابہ کوام وننی التُدعنهم کوعبا دکت واخلاق شجاعت وثابت قدمی عزم واقدام ،محبت وایثا دِجهاد اورشها دیت <u>سے ح</u>صول سے شوق میں بہترین نموز تمجھتے رہے ہیں ، اورمسمان نوحوان سرزما نے میں ان سے فضائل کے تیول سے سیارب ہوتے رہے ، اوران سے مکام کے نورسے روشنی حاصل کرتے رہے ، اور تربیت میں ان سے طریقے پر چیلتے رہے اور مجد وٹنرافت سے محل کی تعمیر بیں ان سے راستے بر چیلتے رہے ہیں، اسس ليے كروہ سيرت سے اعتبار سے خيرالقرون اور اسوہ وثقتلى كے امتبار سے نانوں ميں سے بہترين زمانتھے ،

اوررسول التدميلي التدعليه ولم في بالكل سيح فرما ياسيد:

(( أُحيعا بى كالنجى فب أيهم اقت ديت مسمير مير مين ماندين تم ان يمسيحس ك اهتدیتم ». به قی دولیی اقتلاکموگه مریت یا دُگھے یہ

یہ صالح اور عمدہ تمونہ جورسول التہ تعلی التہ علیہ و تم ہے معابہ اور ان کی پیروی کرسنے والول میں مَجسَندموجو دتھا اک کے ذریعے سے اسلام بہبت سے دورد اڑے ملکول اور شرق ومغرب سے وسیع علاقول میں مھیل گیا۔ اور تاریخ برسے تعجب اور فخرسے مکھتی ہے کہ اسلام جنوب مبندو سیلوان ا ور محیط مبندی سے مکدیپ اور مالدیپ نامی بزائرا ورتبت اورچین سے سواحل اور فلیائن اور ابلہ ونیشیا اوّر ملا یا کے حبزا سُرمی کیا، اورا فرلفیہ کے وسل سنغال نائجيراً. صومال تنزانيه ، مدغاشكرا ورزنجبار وغيره شهرون اور مكول تك ينج كيا.

اسلام ان تمام قومول تكسيمان اجرول اوران سيح د ماة كے ذريعيد سے مہنجا جنہول نے اپنی سيرست وكردار، امانت و دیانت او سیانی ا و رو فار مهدسے ذرایعہ سے اسلام کی حی تصویر پیش کی ،اور تھپراکسس سے ساتھ کلمہ طبیتہ اور موعظہ شنہ نے ا بناکام دکھن یا ، ورنوگ دین اس لامیں فوج و فوج وانوں ہونے لگے ،اوراس سنے مذہب پرکامل اعمّاد ونقیمن کیسا تھ خوتی خوش ایمان لانے ملکے .اوراگریہ دائی تاجب رابینے افعلاق کے ذریعیے سے ممتازیہ ہوستے اور دومسری قومول میں اپنی بچائی

له يمعنمون تربية الاولاوفى لرمسوم كتمم اور كے مقدم سے كھے تعرف كے ساتھ لياگ ہے۔

ہے یہ دین گردیرسنداکھ ضعیف ہے عگر ہس ہے عنی بالکل میچے ہیں ہس ہے کہ ملہ سے اتفاق واجماع کے مطابق میحابہ سے سب عادل ہیں اوگ سنمان ن میں سے بس کھی ہیروی کرسے گا ہریت یا ہے گا۔

وں من دس کا مونہ پٹ نرکے اور اجسیوں میں اپنی نرمی بطفٹ ومہر یانی اور حسن معاملہ سے ذریعی*معروف نہ ہو*تے تو لاکھو<sup>ل</sup> نسان اسلام کوقبواں نرکریتے ہور اس کی حمست و ہاریت کو نداینا ہتے۔

اب تک ہم نے ہو کچھ بیان کیا ہے، س کا نعلاصہ نے کلتا ہے کہ ایسا ممتاز اخلاقی نموز ہو عمدہ وصالح مقتدی کی شکل میں وجود میں آیا وہ ولول اور نفوس ہرائر کرنے والے بڑے خوال ہیں ہے ہے، اوراسلام کے دور دراز شہروں اور دنیا کے اطراف میں بیصلنے اورانسانوں کی ایمان اوراسلام کی طرف ہدایت و رہنمانی ماسل کرنے بڑے اسب ہیں سے ہے۔
اگر اف میں بیصلنے اورانسانوں کی ایمان اوراسلام کی طرف ہدایت و رہنمانی ماسل کرنے بڑے اسب کوچا ہیے کہ وہ اسس اس کی معاشرہ مرو ہوں یا عورت ، جوان مہول یا بوڑھے بھوٹے ہول یا برڑسے سب کوچا ہیے کہ وہ اس حقیقت کو تعمین اور دوسرول کے لیے اپنے عمدہ اضلاق اوراجھی شہرت اور مہترین معاملہ اور عظیم اسلامی صفات کا شاندار دسترین نموز بیش کریں آگر جمیشہ میں جارت سے جاند اور ایسان کے سورج ، اور خیروحق کے دامی اور سلام کے ایک اور میں بایت سے جاند اور ایسان کے سورج ، اور خیروحق کے دامی اور اسلام کے ایدی بینام کے جیلا نے اورنشر کرنے کا سبب بنے رہیں ؟ )۔

اس سے تربیت کی کامیابی اورا فرکار سے بھیلانے کے بیے صالح نمونہ کا وجود بہت ننروری ہے ، او ۔ ایسے شاندار واعلی کردا رکا پایا جانا صروری ہے ، او ۔ ایسے شاندار واعلی کردا رکا پایا جانا صروری ہے جس کی طرف نگا ہیں اٹھیں اوراس سے جمال کی وجہ سے فوس اس کی طرف مجنوبیں ۔ اور ایسے فاصل اخلاق کا پایا جانا تھی صروری ہے جن سے معاشرہ نے یرکو واصل کرسے اور حولوگوں میں بہت میں اثر مدر وسکم

اس سے نبی کریم سلی التدعلیہ وہم اس کابہت خیال رکھتے تھے کھمرنی دوسروں سے سامنے ہرجیزیں نہایت بہترین نمو نیجیس کرے تاکہ بچہ شرع ہی سے اچھائی اور خیری نشوہ نما پائے . اور شرع ہی سے شاندارا بھی صفات پر بروش پائے اور یہ جیزی اس کھٹی میں بڑجائی ۔

# مرنی کواچهانموز بیش کرسنه کے سلسلہ بین کریم علیالصلاہ والسلام کی تنبیہ کی جوعاوت تھی اس کے جیڈھنے درج ذیل ہیں :

ابدداؤد وبیقی صفرت عبدالته بن عامرضی الته عند سے روایت کرتے ہیں کہ انہ ول نے فرایا: ایک روزمیری والدہ نے مجھے بلایا، اس وقت رسول الته صلی الته علیہ ولم ہمارے گھریں موجود مقے میری والدہ نے کہا: اسے عبدالله آو تاکہ بی اس وقت رسول الله صلی والدہ نے اللہ علیہ ولم ہمارے گھریں موجود مقے میری والدہ نے کہا: اسے عبدالله آو السلام نے اللہ سے وریافت فرایا کم اسے کیا دینا جاستی ہو؟ انہول نے وض کیا: ہیں اس کو کھر دریا چاستی ہوں، تو آب سلی الته علیہ ولم نے ارشاد فرایا: سن لواگر تم اسے کچھ نه دیتیں تو میرتمہار سے سلے ایک جبور میں جو اللہ اللہ علیہ ولم اللہ علیہ ولم اللہ علیہ ولیا جاست کھر دیا جاتا ۔

له لامظهم بماري كما ب حتى يعلم الشباب " كا دمس - ١١٩) كيرتعرف سيرسسا تحد

ا ورنب کریم علیہ الصلاۃ والسلام ہی سے مروی ہے جے امام احمدو غیرہ نے روایت کیا ہے کہ آپ نے فرمایا پیخے صرکسی بچے سے یہ کہے کہ آ وُلے لو اور بھیراسے نہ دسے تو بھی جموعے شمار ہوگا۔

نبی کریم صلی الته علیہ و کم کی یہ ہواریت کیا اس بات پر والاست نہیں کرتی کر آب صلی اللہ علیہ وکم اس بات سے خواہشمند سے کھ مرتی ان توگوں سے سامنے سچا وصا دق بن کر پیش بہوجن کی تربیت کی ذمرداری اس بر عائد ہوتی ہے تاکہ وہ ان سے لیے اسوہ ومثال بن سکے ۔

اورا فی بخاری وسلم حضرت نعان بنشیر دن النه عنهاست رو ایت کرتے بی که ان کے والدان کورسول النه دسلی النه علیه وسلم کی خدمت میں الے کرما ضربوئے اورعوش کیا: میں نے اپنے اس بیٹے کو اپنا ایک غلام ہویڈ دیا ہے ، سول النه علی النه علی النه علیہ وسلم کی خدمت میں النه ویا ہے ، سول النه علی النه علیہ وکم نے دریافت فروایا کہ کیا تم نے اپنے سب بچول کو اس جیسا ہریہ ویا ہے ؟! انہوں نے عوش کیا جی نہیں ، تو رسول اللہ علیہ ولم نے ارشاد فروایا : بچر تو اس غلام کو واکس سے لو۔

ایک روایت میں ہے کہ رسول اللہ علیہ ولم نے ان سے بوجھا: کیاتم نے اپنے تمام بچوں سے ساتھ الیا ہی کیا ہے؟ انہول نے کہاجی نہیں ، تو آپ نے ارشاد فروایا : اللہ سے ڈرواورائی اولاد سے درمیان مدل وانصاف کرو، چانی ہے میرے والد نے وہ ہربرواہی لے لیا۔

ایک روایت میں ہے کہ رسول الٹھ کی التٰرعلیہ ہی ہے ارشاد فرمایا: اسے شہر ایا اس بچے سے علاوہ تمہاری اور اولاد بھی ہے؛ انہول نے عرض کیا: بی ہاں ، آب نے ارشاد فرمایا: کیا تم نے ان سب کواسی میں ہویہ دیا ہے ؟ انہوں نے عرض کیا: بی نہیں ، تواب نے ارشاد فرمایا: بی ترقیمے اس پرگواہ نہ بنا ورا کی سے عرض کیا: بی نہیں ، تواب نے ارشاد فرمایا: بی ترقیمی اور کواس پرگواہ بنالو بھرآب نے فرمایا کیا تمہیس یہ اجھامعلوم دوسری روایت میں آنا ہے کہ آب نے فرمایا : میرے علاوہ کی اور کواس پرگواہ بنالو بھرآب نے فرمایا کیا تمہیس یہ اجھامعلوم بوگا کہ وہ سب تمہا ہے ساتھ برابر سے سن سلوک کریں؟ اِ انہول نے عسون کیا: کیول نہیں ، تو آب صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا : بھرایسانہ کرو۔

تیانی کریم ملی الله علیہ وکم کا بیکر دارا ورسیرت اس بات پر دلالت نہیں کرتی کرنی کریم ملی الله علیہ وسلم یہ چلہتے تھے کم رقی ان لوگول سے سامنے جن کی تربیت اس کے ذمر ہے عدل وانصاف کا پیکر بن کرپیٹیس ہتاکہ ان کے لیے مٹ ل ونمو یہ ہے۔

م بخاری مولم میں حضرت عائشہ رینی التہ عنہا سے مروی ہے وہ فراتی ہیں کہ سول التہ علی التہ علیہ ولم نے حضرت علی کے بناری مولم میں حضرت علی کے بناری مولم میں حضرت علی کے بیٹے حسن وین کو پوما پیار کیا آپ کے باس وقت اقرع بن حابس میں بنیٹے ہوئے تھے ،انہوں نے یہ دیکھ کرکہا : میرے دس بیٹے ہیں میں نے ان میں ہے کہ کومی مہمی نہیں چوما ، نبی کریم علی التہ علیہ ولم نے ان کی طرف دیکھا اور فرما یا جوشعص دوسروں برجم نہیں کیا جائے گا۔

بنی رقی میں حضرت عائشہ مینی اللہ عنہا ہے مروی ہے کہ نہوں سے فروا: ایک اعربی رسول اکرم میں اللہ مدید وسم کی خدمت میں حضرت عائشہ مینی اللہ عنہا ہے مروی ہے کہ نہوں سے فروا: ایک اعربی جوست ، رسول اکرم نسلی اللہ کی خدمت میں ما صغربی حوست ، رسول اکرم نسلی اللہ میں خدم ہے ارشاد فروایا: اگرا للہ نے تمہارے دل سے رحم کا ما دہ نکال دیا ہو تو بھیری کیا کرسکہا ہوں ؟ .

سیانبی کرمرصکی انتدعلیہ و تم کا پیطریقیہ اس بات پر دلالت نہیں کریاکہ نبی کریمصلی انٹدعلیہ وہم اس بات سے بہبت ترییس استعمار مرتی ان توگول کے سامنے رحمت کا پیکرین کرظا ہر ہوجن کی تربیت اس سے ذمرہے تاکہ وہ ان سے لیے مثال و نمو نہ ہے نے ۔

اوراًگرمرنی کے دل سے یم کاما دہ کال لیاگیا ہو تو تھے کیا تر ہیت ہے کو فائدہ پہنچا سکے گی ؟ا ور کیا اُسی صورت میں تر ہیت سکے مُؤثر طریقے نفع نجش ہول گے؟! اور کیا بچہ ایسی صورت عال میں صیحت پر کان دھرے گااور کیا مکام اخلاق اس میں پیدا ہول گے؟!لیتنی طورسے جواب نفی میں ہی ہوگا۔

اس لیے مربول کوچا ہیے کہ اپنے بچول کے ساتھ رتم کا معامل کریں اور محبّت سے پیٹیں آئیں ،اوران کی روزانہ کی زندگ میں اسے ٹابت کرے وکھائیں ،اپنے دعوت و تربیت کے فرائینہ میں اس کونمایاں کھیں تاکہ نیکے میں بھی یہ انواق پیدا ہول اور اچھائیاں اس کی فطرت بن جائیں ،اوربہا دری و شرافت اس کھٹی میں پڑجائے۔

اورنبی کرم علیہ الصلاۃ والسلم شنے بچول پر گیم کرسنے کی عادمت فوالنے کا جواہم م کے اکسس نے مسلمان قومول کوہ زمانے وہرمجگہ ایک مثال ونموز عطا کر دیا ہے تاکہ دعوت دسینے والیے اوروالدین ومرنی ہرجگہ اورہرزمانے میں اس کی پیروی کرہے ۔

### نبی کریم صلی التّرعلیه و کم بخول سے ساتھ جس طرح مجتت و حِمت ہے بیش آیا کرتے تھے اسس کے جندنمونے ذیل ہیں سیسٹ س کیے جاتے ہیں: کرتے تھے اس کے جندنمونے ذیل ہیں سیسٹ س کیے جاتے ہیں:

الف ۔ امام ترمذی وغیرہ روایت کرتے ہیں کہ حضرت عبداللہ بن یزید نے اپنے والد حضرت بریرہ وہی التہ عنہ سے روایت کیا ہے کہ انہول نے فرایا : میں نے نبی اکرم علی اللہ علیہ ولم کو نمطبہ دیتے ہوئے دیکھا ، اسی اثناد میں حضرت من وحین و ایک انہوں نے اللہ کی مسیس ببنی ہوئی تھی ، وہ چل ہے تھے اور چلتے میں گرتے ہی جا رہے تھے ، نبی کرم سی اللہ اللہ کی مسیس ببنی ہوئی تھی ، وہ چل ہے تھے اور پہلتے میں گرتے ہی جا رہے تھے ، نبی کرم سی اللہ علیہ وہم منہر مرب اترے اور الله وا والا و آز اکسٹس وا بتل میں ، میں علیہ وہم منہر مرب اور الله وا والا و آز اکسٹس وا بتل میں اور وہوں کو وہم کے اس درمیان میں اوھور کی اور الله وہ کی اللہ علیہ اور گر رہے ہیں تو مجھ سے صبر نہ ہوا اور میں نے بات درمیان میں اوھور کی اور الله وہوں کو المحالیا ۔

ب رنائی وحاکم روایت کرسته بین کرایسم تیه رسول الترسلی التر علیه ولم لوگول سے ساتھ نماز برا حدرسے تعے کا ب

کے پاک مفرت میں آگئے ، آپ بحدہ کی تھے ، وہ آپ کی گردن پرسوار ہوگئے ، آپ نے بحدہ طولی کر دیا حتی کہ لوگ یہ گمان کرنے گئے کہ شایرکوئی بات چیش آگئی ہے ۔ چنانچہ جب آپ اپنی نماز پوری کر چکے توصی بہ نے عوش کیا ؛ اے اللہ سکے یسول آپ نے بچہ ہا تنا طول کر دیا کہ بمیں یہ گمان ہونے لگاکہ شاید کوئی بات چیش آگئی ہے ۔ آپ نے فرما یا :میرا بدیا میرے مول آپ نے بیان تا کہ بھی کہ بھی گیا تھا ) اس لیے ہیں نے یہ بند نہ کیا کہ جلری سے کھوا ہو جا وال وروہ اینا دل نوش نہ کرسکے۔

ج ۔ کتاب" الاصاب میں لکھاہے کہ حضرت نبی کریم صلی اللہ علیہ وقی حضرت سن قسین کے ساتھ ول گی کیا کہتے تھے ، ورآپ اپنے ہاتھول اور پاؤول کے بل چلتے تھے اور وہ دونول دونول طرف سے آپ سے بیسط جاتے اور آپ ان دونول کواٹھائے اٹھائے اٹھا اور پر فرما تے : بہترین اونٹ تمہارا اونٹ ہے اور بہترین سواتم دونول سوار مو۔

دونول کواٹھائے اٹھائے اٹھائے اور پر فرما تے : بہترین اونٹ تمہارا اونٹ ہے اور بہترین سواتم دونول سوار مو۔

کے ۔ بخاری وسلم میں حضرت اس دہی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ نبی کریم صلی اللہ علیہ ولم نے ارشاد فرمایا : میں نماز مولی کریے کہ ہوتا ہے لیکن میں سی پھے کے دیے گئے وازس کراس نماز کواس لیے محتمہ کردیا ہول کہ مجھے ملے موری ہے کہ اور سن کراس نماز کواس لیے محتمہ کردیا ہول کہ مجھے علوم ہے کہ اس بیکھائے مال پر کیا اثر موگا ۔

لا - بنی رسی مسلم میں حضرت اسس ضی القدعنہ سے مروزی ہے کہ وہ چند کچوں کے پاس سے گزرے اورانہ ہیں سلام کیا اور فرمایا : سول التُدهلی، لقدعلیہ وم ، بیا کیا کرتے تھے۔

و۔ امام سلم رحمہ التّہ روا یت کرتے ہیں کہ لوگ جب پہلامچل دیجھتے تواسے سول التّہ ملی التہ ملیہ وہم کہ نہ تا میں ہے کر حاصر بہوتے ۔ آپ ملی التّہ ملیہ وہم جب اسے البّہ وہم برکت وسے دیجیے ، اور ہما دسے ہما دسے میں برکت وسے دیجیے ، اور ہما دسے لیے ہما دسے شہریں برکت وسے دیجیے ، اور ہما دسے لیے ہما دسے مُد ایر ہمی ہما ذہ ہے ) ہیں برکت دسے دیجیے ، اور ہما دسے لیے ہما دسے مُد ایر ہمی ہما ذہ ہے ) ہیں برکت وسے دیجیے ، بچر وہال موجود دسب سے جھوٹے نیے کو اسپنے ہاں بلاکروہ کھیل اس کو دسے دیا کرتے تھے ۔

کے بخاری مسلم ہیں حضرت عہدالقد بن عمر فینی القد عنہا سے مروی ہے کہ انہول نے فروایا : میں نے سوں اللہ علیہ ہو ہے اسے مروی ہے کہ انہول نے فروایا : میں نے سے پہلے گزیے ہے بوئے لوگول ہیں ہے ہیں آدمی سفر پر نیکھے، است کوایک غاد سے پہلے گزیے ہوئے لوگول ہیں ہے ہیں آدمی سفر پر نیکھے، است کوایک غاد سکے پاس پہنچے، ور اس بوٹ بوٹ کے بہائے گزیے ہے ایک گری سب بیٹ کہا کہ اس پیٹال سے اس میں کہا کہ اس پیٹال سے ناری میں کہا کہ اس پیٹال سے ناری میں کہا کہ اس پیٹال سے ناری سے دعا مانگیں ۔

ان ہیں سے ایک صاحب نے کہا: اے اللہ میرے مال باب بوڑھے وغمردسیدہ ستھے میری عادت یکھی کہ ان کو دودہ پلا نے سے بل میں اپنے بیری بچوال ہیں سے سی کو دودھ نہیں دیا کرتا تھا، ایک روز درخت کی لاش میں میں کانی دُور 'کل گیا ، حبب شام کوان کے پاس عاصر ہوا تو وہ سو سیکے تھے ، میں نے ان کو بدا رکز مامناسب نیمجھا اور ریمجی احجھا نہ سمجھا کہ ان سے پہلے بیوی بچوں وغیرہ کو دو دو بلاؤل میں پیالہ ہاتھ ہی بچڑے۔ ان کے جلگنے کا انتظاد کرتا رہا تھی کہ ضبح ہوگئی، میرے پچے میرے بیے میرے باس پر اسے باس پڑے۔ اس کے جلگنے کا انتظاد کرتا رہا تھی کہ میرے والدین جاگ گئے میرے باس پڑے۔ میرے والدین جاگ گئے تو انہوں نے دو دھ بی لیا۔ تو انہوں نے دو دھ بی لیا۔

اے اللہ اگر نمیں نے یہ سب کچھ آپ کی بینا مندی کے لیے اہو تو پر چان جس کی وجہ سے ہم پریشانی میں گرفتار ہوگئے میں اس کو دور فرما و بیجیے ، بینانچہ چان اتنی مہدہے گئی جس سے وہ روشنی حاصل کرسکییں سکین با مبرچر بھی نہ کل سکیں ہے کی یہ سیرت نبوی نبی کریم صلی اللہ علیہ ولم کی اس خواہش پر دلالت نہمیں کرتی کہ مربی ان لوگوں کے سامنے جن کی تربیت کا وہ سئول ہے والدین کے سامنے حسن سلوک اور نیجی کرنے والے کی شکل میں جین ہو ۔ تاکہ ان لوگوں کے بیے مثال ونموز بن سکے ہ دیجھیے یہ جو فرمایا کہ پیالہ ان صاحب سے ہاتھ میں تھا اور نیچے بعبلا رہے تھے کیا اس کا مطلب یہ بہیں ہے کہ والد

ام مهم مخرت مبل بن سعدالسا مدی دخی اُنته عند سے دوایت کرتے ہیں کہ سولِ اکرم کا اُنہ علیہ وہم کے ہاں کوئی مشرو الا گیا، آپ نے اسے نوش فرمایا، اس وقت آپ کی دائیں جانب ایک نوجوان اور بائیں جانب کچھ محرصنرات بیٹھے تھے آپ نے ان نوجوان سے فرمایا، کمیا تم مجھے یہ اجازت دو کے کہ میں (اپنا باقی ماندہ مشروب) ان (عمر سیدہ) لوگول کو دے دول ؟! ان صاحب زاد ہے نے کہا؛ بخدا میں ایسا نہیں کرسکتا. میں آپ سے قال ہونے والے اپنے مصد برکسی اور کو ترجیح نہیں دے تا کہ موسنے والے اپنے مصد برکسی اور کو ترجیح نہیں دے سکتا۔

کیا نبی کریم صلی التُدعلیہ ولم کا یہ کرداد اس بات پردلالت نبیبی کر اکه آب سلی التُدعلیہ ولم اسپنے علی سنے تجول کے ساتھ نرمی وطلاطفت اور پیسنے کے اسلامی آداب کا نمونہ پیش کیا کرتے تھے تاکمسٹمان قوم نبی کریم علیہ انصلاۃ والسلام ک پیروی کرے اور آپ کے طریقیہ کے مطابق عمل کرے۔

ا دراس طریقے سے نبی کریم علیالصلاۃ دالسلام ان لوگول کے لیے ہرچیزیس ایک بہترین نم ونہ پیش کیا کرستے تھے جن پرتربیت کی ذمہ داری عائد ہوتی ہے تاکہ وہ آپ سے سکھیں اوراس کے مطابق عمل کریں ، اور بیجے ان کے اچھے افعال اور ان کے مؤثر وعظ اور اچھی تنبیہات اور حکیمانہ تربیت سے متأثر مول.

## سم نے جو کچھ ذکر کیا ہے کس کا خلاصہ یہ ہے کہ اسلام کی نظریاں ترسیت سے دسائل میں سے سب سے بڑا اور مؤثر

کن وسیلهمقتدی واسوه ہے۔

چنانچه بچه عبب اپنے والدین ومرنی میں سرچیز کابهترین نمونه واسوه پائے گاتو ظاہر ہے کہ اچھا ئیاں اس کی گھٹی میں بر میں گی اور اسلامی اخلاق اس کی فطرت بن جائیں گھے۔

اگر والدين به چاہتے ہوں كران كابچه سيانى ،امانت ، پاكدامنى اور رقم جيسے اچھے اوصا ف كامالك ہواو ، باطل ا وربرانی ہے دُور رہے توانہیں چاہیئے کہ وہ خود اپنی ذات ہے ،ان کے سامنے اچھائی کے کرنے ،اور برائی ہے دُور رہنے اور فضائل ہے آداستہ ہونے ، اور برے کامول سے بیجنے ، اور نق کے اتبات . اور باطل سے دور رہنے میں بہتر ن نمونہ بہت کریں ، اور ایچھے کامول کا اقدام کرنے اور میس کامول سے پیھنے ہیں ان سے لیے اپنے آپ کومثال ثابت کریں ۔

جوبچه اسینے والدین کومحبوط بولیا موا دیجھے گا وہ سرگز سیج نہیں سیکھ سکا، اور حوبجہ اسینے والدین کو وصوکہ دیتے اور خیانت کرتے ہوئے دیکھے گاوہ مرگز امانت دارنہ ہیں بن سکتا .اور دوبچہ اسپنے والدین میں انولاق باختگی اور آوا<sub>ر</sub>گی مشاہ<sup>د</sup> كريك وه شرافت نهيس سيكه سكما. اور جوبي اپنے والدين سے كفريه كلمات اور كالم گلوچ سنے گاوہ شيرس زباني مركز نهيں میکھ سکتاً، اور چوبچہ ایپنے والدین بی عصدعصبیت اور ذراس بات سے متأثر موسنے کو دیکھے گا وہ سنجیرگی اور وقار کا نمو زنهیں بن سکتا ، جو بچہ ایپنے والدین میں سخت دلی اور بدمزاجی پائے گاوہ رحمت ومودت بہیں سیکھ سکتار

ببحه احیصائی ا درخبیر کے اوصا ف اسی وقت سیمعتا ہے اور اخلاق وشرافت کا پیکیراسی وقت بنتا ہے حبب وہ اپنے والدین میں بہترین اسوہ اورنمونہ پائے . ورنہ دومسری صورت میں اگر والدین اس سےسامنے برانمویز ا ورخراب اسوہ میں کریں گے تولازمی طورسے بچہ تدریجاً انحراف کی طرف رخ اختیار کرے گا اور کفرونسق اور نا فرمانی کے راستہ پر جیلے گا۔

وهس يرجى لألحف لكسال إذاام تضعوا مشدى الناقصات

ا در کیا ایسے بچوں سے کمال کو اُمپ در کھی جا سکتی ہے جنہیں ناتف عورتوں سے سینے سے دُوو ہو ہو اِگیب ہو

ا ورصرف اتنی بات کافی نہیں ہے کہ والدین نحودا بنی ذات ہی۔۔۔ بیعے سے لیے بہترین اسوہ وہموز پیشیں کرکے يسمه وبيتيس كه انهول نے اپنے فریفید كوا داكر دیاا ورائي ذمر دارى بورى كر دى، بلكه بيضرفررى سبے كه وه اپنے مجول كاتل ورابطه اللسل مقتدی واسوہ نبی کریم علیہ انصلاۃ والب ام سے قائم کریں . اوراس کا طریقیہ یہ ہے کہ بچول کوئی کرم صلی التدعلیہ وسلم کی جنگول، وراتپ کی شانڈ معطرسیریت ا وراعلی اخلاق کیعلیم دیں تاکہ نبی کریم علیہ انصلاۃ والسلام سے اس قول پڑعمل ہوجائے جے طبرانی نے روایت کیا ہے:

> ((أدبوا أولادكم على تلات عصال: منها: حب نبيكم وحب ال بيته...).

اليف بچول كوتمن باتول ك تعليم دو جن ميل سے تهار م نبی نسبی الته علیدولم کی محیت ، اوران کے اہل بیسے محیت کرنا بھی ہے۔ حضرت سعد بن الی وقانس بنی الته عند فرات بین که بم این پچول کو سول الته علی الته علیه ولم کے غزوات وجنکو سے واقعات کی آئی طرح تعلیم دیا کرتے ہے۔ یہ اس لیے صورت کی تعلیم دیا کرتے ہے۔ یہ اس لیے صورت کی تعلیم دیا کرتے ہے۔ یہ اس لیے صورت کی تعلیم دیا کرتے ہے۔ یہ اس لیے صورت کی تعلیم دیا کرتے ہے۔ یہ اس لیے صورت کی تعلیم دیا کر ہے۔ یہ اس کے علیم میں بڑھا ہے تاکہ وہ جب برا ہوا و سیمجداری کی عمر کو پہنچے تو وہ نبی کرم علیہ الصلاق والسلام سے علاوہ سی اور کو وت اند قدوہ و ممونہ ، مربراہ او اعلی ترین مثال نہ سمجھے۔

والدین سے لیے پیمی ننروری ہے کہ وہ اسپنے بچول کا تعلق رسول النّدصلی النّدعلیہ وہم سے پہلے فقارصحاب کرم ضی النّدعنہم اور تابعین وسلفب صالحین رقہم التّدِتعالی سے بھی قائم کریں تاکہ النّدتبارک وتعالیٰ کے اس محکم پڑھل ہو : (اولیّاک اَذَیْنَ هَدَی اللّٰهُ فَبِهُ لُهُ مُهُمُ افْتَتَابِهُ )). یہ وہ لوگ بی تنہیں التّہ نے ہایت دی ہے لہذا تب

انعام . . ۹ ، ن کے طریقے کی بیروی کریں ۔

اورنب كريم عليه العلاة والسلام كے اس ایشا دِ مبارك برتھى على بوجائے جسے بہنتی ودلمي روايت كرستے ہيں آب نے ارشاد فروايا:

(( أصعب الحيب كالنجوم فبأيهم التديتم ميرك ماندين تمان مي كريس ميرك ماندين تمان مي كريس ميرك ماندين تمان مي كري اهتد يتمين.

ا درہم اس نسے قبل حضرت عبداللہ بن مسعود منی اللہ عنہ کا بیمقولہ تھی ذکر کرسچکے ہیں کہ تم میں سے تو تعص کسی کی بیروی کرنا چاہے تواسے چاہیے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وہم سے صحابہ رضی اللہ عنہم کی اقترا کرسے۔

تاکہ بیجے میں ان منتخب پہندیدہ افراد کے اخلاق پیدا ہول جواس امت میں دل کے اعتبار سے سب سے نیک اورعلم سے ایک اورعم سے ایک اورعم ہے اعتبار سے سب سے وسیع علم والے اور کلفات میں کم تکلف ولیے تھے ،اور بیجے واچھے کردارولیے اورعمدہ حالات والے متھے ،اور بیٹ ان کے درم ومکانت کو بہان سے اوران کے نقش قدم پرسپلے اوران کی محبت اس کے دل میں جاگزین موجائے۔

والدین پریم و اراچی جا عت کا انتخاب کریا الدین پریم و این تربیت ایسے ایسے ایسے مدرسے اور نیک ساتھیول اور اچی جاعت کا انتخاب کریا اگر بچرایمانی تربیت ، افعال کر تسکے اس سلیے کداگر بچردای آجی اور نیک فضائیں ہوگا تویہ بات عقل میں نہیں آسکتی کہ وہ عقیدہ کے لحاظ سے خوف یا افواقی لحاظ سے آزاد اور نفسیاتی لحاظ سے افواقی کا شکار موجو استے یا جوائی کی افواقی اور ثقافتی لحاظ سے پیچھے رہ جائے ۔ بلکہ وہ عقیدہ میں رسوخ ، افلاق میں بلندی ، اعصاب کی مضبطی ، بدن کی قوت اور عقل وہم کی نچنگی میں کال کو مینجا ہوا ہوگا۔

سم اس بات میں توباپ سے ہم خیال ہیں کہ معاشرہ فاسد ہے . ماحول جاہمیت والا ہے . ایسے حالات میں بیھے کے

سے ہی نضاء وسازگار۔ ماحول کا پیدا کرنا بہت مشکل ہے۔ یہ باست یہ باسکل درست ہے۔ نیکن اگر باب بنی پوری کوشش صرف کرسٹ اور بہنے کی ایمانی و اخلاقی طور پرشخ صتیت سازی سے پورے اسباب اختیار کرے اور اس کوفکری بغسیاتی اور معاشرتی طور برکال ومکمل بنانے ہیں اپنی پوری جدوجہد صرف کرے تو بھیر بلاشہ ایسے حالات ہیں اگر بچہ جگڑھ جائے ور فستی وقجورا ورگمزی کے راستہ بڑھلی پڑے تو باپ التد کے پہال باسکل معذو سمجھا جائے گا۔

میرے انداز سے کے مطابق نموز واسوہ کے ذرایعہ تربیت دیا، والدین کانمونہ واسوہ، اپھے ساتھیوں کانمونہ، اسا ذکا ہ ، بڑے بھائی کا اسوہ یہ سب سے سب بیجے کی اصلاح وبدایت اوراس کو معاشر سے اور زندگی کا ایک فرد بنانے کے باب بی سے مؤثر ترین سبب ہے۔ والدین یہ تما کچیز ہی ہی ہے کے لیے باسانی پدا کرسکتے ہیں، اسی طرح والدین اگریہ ما جی کہ ان کہ بیا کہ ان کا جگر گوشہ میچے بن جائے اور وہ اس بات کا بختہ اردہ کرلیں کہ ان کا بیٹا زمین پرسے لینے والے فرشتے کی ما ند ہوتو ایسا نہ وہ الدین کے لیے اتھی فضا مہیا کردیں۔ اسے آسان مہوجائے گاکہ وہ اس کے لیے اتھی فضا مہیا کردیں۔

والدین کے ذرک میں یہ ابت بھی رہ اُبِجا ہیں کہ بڑے ہیں گی اصلاح پر تُوحبر کرنا باقی اولاد کی اصلاح کے مؤثر ترین ساب میں سے ہے ، ال لیے کہ حجوظ بچہ بڑے کی نقل آنا راہے ، بلکہ برمعلطے میں اس کی طرف یہ بھے کر د کی حقاہے کہ وہ علی ترین نمونہ ہے ، اور اس کے اصلاقی اوصا ف اور مہ شرقی عادات میں سے بہت کچھ ماصل کر بیتا ہے۔ اور بھراس وقت بڑی مصیبت ہیڑتی ہے جب اس کو اپنے سے بڑا بھائی ایسا مل جائے ہو آزدی ویسے راہ وی کا شرکا رہو ، اور جب بچہ یہ د کی صاب ہے کہ اس سے بڑا بھائی براضل قی اور برانیول میں گرفتا ہے تو تھے رائری طور سے اس کا نتیجہ یہ کلتا ہے کہ حجو طے نیچے س سے مناثر ہوتے ہیں اور انہی کے نفش قدم برسیطتے اور انہ ہیں کی عادات واطوار کوسی کھتے ہیں ۔

اک لیے والدین برن زم ہے کہ وہ بڑے بیجے پر بوری محنت وتوج کریں بچراس پر جواس سے چوٹا ہو تاکہ وہ بعد والول کے لیے بمونہ ومثال منبی ،التد تعالی صالحین ونیک علی کرنے والوں کو دوست رکھتا ہے۔

اس بحث سے خاتمے پر سم وہ آیات سپتیں کرستے ہیں جن میں ان لوگول پڑکیر کی گئی ہے جن کافعل ان کے قول کے خلاف ہے ،اوراس میں باپ میاں اور تمام می اور وہ افراد دخل ہیں جن کے ذمید دوسروں کی تربیت کا فریعنہ عب اگر مہو ہا ہے ؛

( يَائِهُا الَّذِينَ الْمُنُوالِمُ تَقُولُونَ مَا لَا يَائِهُا الَّذِينَ الْمُنُوالِمُ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ كَبُرُ مُقَتَّاعِنْدَ اللهِ أَنْ تَقْولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ )). الصف عوم مَا لَا تَفْعَلُونَ )). الصف عوم الرفرايل :

(( أَنَّ أَمُرُوْنَ النَّ اللَّ إِلَى بِالْبِيرِ وَتَنْسَوْنَ ٱلْفُسَكُمُ

ے میان وا وسیسی بات کیوں کہتے ہوجو کرستے نہیں ہو استہ کے نزد کیا یہ بات بہت ناراضی کی ہے کہ سی بات کہو دو کر دنہیں

كياحكم كرت مولوگول كونيك كام كاا ورمجوست بو بيت

وَأَنْتُهُ تَتَنَكُونَ الْكِنْبُ وَأَفَلَا تَعْقِلُونَ - "البقروريه، " " " كوا ورتم تو بير عظة بوكماب مجركيو والبير سوجية بور

کیاآپ نے قرآن کریم کی آیات میں کہیں پراک سے بھی زیادہ سخت کمیر و نبید دکھی ہے؛ اوریہ نبیہ و نکیرس پرہے؛ ان توگوں پرہے جو دو مرول سے بیے برانمونہ و شال قائم کرتے ہیں۔

((حضرت عمرونی اکته عنه جب این گھروالول کو جمع کر سے مندرجہ ذیل جملے فرمایا کر ستے تھے تواس وقت ال کا پیمو کتناعظیم ہوتا تھا :

حمدوں لاۃ کے بعد! یادیکو میں بوگول کو فلال فلال چیز کی دعوت چینے والاہوں اور فلال فلال کام سے ان کومنع کرنے کا ارادہ رکھتا ہوں اور میں خدائے برتر وبالا کی سم کھاکر کہا ہول کہ میں نے اگرتم کے سے کوبھی وہ کا گرتے دیکھے لیات سے میں نے روکا ہے یا اگرتم میں سے سے نے بھی اس حکم کی تعمیل نہ کی جس کا میں نے حکم دیا ہے تو میں اس کو سخت ترین سزا دول گا پھر حضرت عمر فینی اللہ عنہ و ہال سے بطلے جاتے اور لوگول کو مجالائی و انہی باتول کا حکم دیتے تو کو ٹی شخص بھی اطاعت و فرانبرالوک سے بیچھے نہیں رشیا تھا ،اس لیے کہ ان حشارت نے لوگول کے لیے خود اپنے قول سے پہلے اپنے فعل سے اس کی مثال و نمون و انکو کردا تھا

ا ہے۔ ایسے نص کو قیامت ہیں بہت خت اور درد ناک مزادی جائے گی جودوسرزل کواچھے کام کاتکم دسے کن حود نہ کریے ، اس بیے تمام لوگول سے سلسنے جہنم کی یہ رسوائی نہا بیت رسواکن مبوگ ۔

امام بخاری وسلم میمهاالله حضرت اسامه بن زید ضی الله عنبها سے روایت کرتے ہیں کہ انہ ول نے رسول الله الله علیہ والم بخاری وسلم سے ساآب نے ایشاد فرمایا کہ : قیامت کے روز ایشی خس کولایا جائے گا اور اس کو جہنم کی آگ ہیں وال دیا جائے گا ، اس کی آئیس بیدے سے باسر بحل آئیں گی . وہ ان کو لے کراس طرح چکر رنگائے گا جس طرح گدھا جگی کو لے کر گھومت ہے ، دوز خی اس سے باس جمع ہوکراس سے کہیں گے فعل نے تہدیں کیا ہموگی تم اچھی باتوں کا حکم نہ دیا کرتے تھے اور بری باتوں سے نہیں روکتے تھے ؟ ؛ وہ کہے گا کہ میں تم لوگوں کو اچھی بات کا حکم دیا کرتا تھا سکین خو د نہیں کرتا تھا، او میں تہدیں بری باتوں سے دکا کرتا تھا ایکن خود برے کا کہی کرتا تھا۔

رادی کہتے ہیں کئیں نے نبی کریم میں القدعلیہ وہلم کو یہ فرماتے سناکے جس رات مجھے اسمار ومعراج پر سے جایا گیا اسس رات میراگزر ایسے توگول کے پاس سے ہوا جن کے ہوزہ آگ کی قینچی سے کائے جا رستے ہتھے ، میں نے حضرت جبرئیل سے بد جیا یہ کون لوگ ہیں ؟ انہول نے فرمایا یہ آپ کی اقست کے وہ خطباء ہیں جوالیمی با تیس کہا کر ستے تھے جن پر نوودان کاعمل نہیں تھا۔

رہی سب نوگول کے سامنے رسوائی توا مام) احمد وہ بھی منصورین زا ذان سے روابیت کرستے ہیں کہ انہول نے فرمایا لہ مجھے ینجبر دی گئی ہے کیعض وہ لوگر جنہیں آگ میں ڈال دیا جائے گاان کی بدنوسے دوزخیول کوبھی ایزا ہوگی . تواس سے كها بائے گا: تير سے ليے بلاكت بمو تبلا توكياكر تاتھا؟ تيم بس عذاب و تحليف بي گرفيار بيكيا وہ مبمارے ليے كافي رتعي يميں تیری اورتیری بربوکے عذاب میں بھی مسلا کردیاگیا؟ وہ کہے گا: میں عالم تھا نیکن میں نے اپنے علم سے فائدہ نہیں اٹھایا )۔ اب لیے والدن ماؤل اور تمام مربیول کویہ بات زائن شین کربینا چاہیے کہ اچھے اسوہ ونموز کے ذیعیہ تربیت کر ایسے کی کچی کودرست کرنے کے لیے متون ہے ۔ بلکہ یہ بہے سے اٹھی باتول اور فضائل وحسالت اوجمدہ معاشرتی آداب میں ترقی کے بیے بنیادی میٹیت رکھانے۔

س اسوه ونموز کے بغیرآپ کی اولاد سمونہ توا د بسکھانا فائدہ پہنچا نے گا اور نہ ان پرکسی وعظ ونصبے ہے کا اثر موگا۔ اس کے اسے مربو اپنے بچول کے بارے میں القدے ڈیاکرو ، افران کے ساتھ اپنی مسئولیت کے معیار مربورے اترو ہاکا پ ہوگ اینے مگرگوشول کواصلاح کا سورج ا وربرایت کا دمکتا ہوا ایساج ندد کمیصیں جن کے نورسے معاشرے کے افرا دمنور موں اوس جن کے اخلاق کی وہ ہیروی کریں ،اوران کے آدا ب سے پیشے سے سیراب ہوں ،اوران پرائٹہ تبارک وتعالیٰ کا درج ذیل فرمان

یہ وہ اوگ تھے جن کو ہوا بہت کی استد سنے سوائپ پیلیے

((أُولَمِكَ الَّذِينَ هَدَى اللهُ فَيِهْدِيهُ اقْتَدِهُ . ).

انعام - او

ا و اسب ان سے کمہ دیجیے کہ تم لوگ عمل کرستے رمو ، النداوراس کا رسول اور مؤمن تمہار سے مل کو د کمیریس گے .

# القي عادت كے ذرابية تربيت

شربعیت اس میں مطے شدہ امور میں سے بیھی سبے کہ بچے۔فطرةً مبی نھائٹس توحیدا وروین فیم اورا مان بالتّدیر بیا كياكياب بياكرانته تعالى كے درج ذبل فرمان مبارك ميں وارو مواسع:

> الفِصرَتَ المَدِ النَّتِي فَصَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تُبَدِيْنَ لِخَينَ اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَلِيمُ ﴿ وَلَكِنَ ٱكُثَرُ النَّاسِ لَا يَعَلَّمُونَ ﴾.

امتدک کسس فعرے کا آباع کروٹس پراس نے اٹسان کو يداكياسي، التدكى بذائى فطرت مين كونى تبدي نبيس. يهى بيرسيدها دين سكين اكتراباك داس حقيقت كالجي تهم

نہیں رکھتے

ورنبی کریدسس الله مدید و مسک اس فروان مبارک کے مطابی جسے امام بخاری نے روایت کیا ہے: بربحيه فطرت اسام ريدا بوأبيد ۱۱ كل مولوديولدعلى الفطوة ...

نه لاحظه موسماري كه ب سحتي يعلم شباب "ك بحث" اخلاق مين ممتازمونا" اص ١٥٠٠ و١٠٠٠ م

لعنى توحيدوا يماك بالتدكى فطرت پرييداكيا جا ماسے.

یہاں ہے میعلوم ہوتا ہے کہ بیچے کی ابتدائی عمراور مجین ہی سے اسے مقین وّیا دیب اور عادت کے ذریعیہ توحید خالص اوس م کام اخلاق اورنفسیانی فضائل اورشریعیت سے شاندار آواب کاعادی بنا باچاہیے۔

مسمونی بھی دوآ دمی اس بیں انعتلاف نہیں *کریں گئے کہ اگر* دو عامل بیسے سے لیے میسرا جامیں ایب شاندارا سلامی رہیت کا ور دوسرانیک وا چھا ماحول، تو بلاشبر بچه شروع ہی سے ذات باری پرایمان اوراسلامی اخلاق سے آراستہ ہوگا اور نفسياتى ففنائل اورذاني مكام كي حوث برا بنيخ جائے كار

ر إشاندا راسلامی تربیت کا عال تواس کی تاکیدرسول اکرم صلی التّدعلیرو لم نے بہت سی احادیث ہیں فرمانی ہے ارشاد فرمایا :

(( لاُن يؤدب الرجل وليد كاختيادهن اُن كدايك صاع صدقد كرسه يتصدق بصاع)). ترمندی

اور فرمایا :

«مانعلوالدولدًاأفضل صن أدب حسن). ترمذي اور فرمایا :

((علموا أولادكم وأهليكم الخدير وأدبوهم). عبدارزاق وسعيدبن منعو ا و رفرمایا :

ررأدبوا أولا دكم على ثلاث مصال: حب نبيكم . وحب آل بيته وتلاوة القول ». عبرني

( كل صولود يولدعلى الفطرة فس بواء والدين است يا پهودي بن سق يي يا عيس ني يامجوسي. يهودانه أوينصرات أويمحسانه». بخاري اس مدیث سے میعلوم ہوتا ہے کہ اگر بیچے کو نیک صالح مال باپ میسرآجا بیس اوروہ اس کوامیان واسلام کی بب دی بایس سکھلا دیں تو بچہ ایمان واسل کے عقیدہ پرنشوونما یائے گا،اوراس کامطلب ہے گھریلوماحول کاعال م

انسان اینے بیٹے کو ادب کھائے یہ اس سے بہترے

كسى والدني اين بين كوليق دب كعطيدس بهتر

اپنی اولاد ، وربیوی بچول کوخییرکی باتیں سکھ وُ ور ادب کی تعلیم دو .

ىنى دولا دكوتين نحصلتوب كاعادى بنا ؤ: پنى نې مىسى ئىتە علیہ وہم کی مجست ، وران کے اہلِ بیبت ک ممبت، ور ر قران کریم کی تلاوی۔

ر بإ ا پیصے ماحول کا عامل تورسولِ اکرم صلی التّٰد علیہ وقم نے اس کی جانب بہت ہے مواقع پریہنمائی فرمائی ہے فرمایا : بربحیہ فطرت اس م پر پیدا ہوتا ہے ، میراس کے

نسان پنے دوست کے ندسبب پر ہوتا ہے س سے مم

((الموأعلى دين خليله فىيىنظىر أحدكم من يحف لل ... جامع ترمذى

کررہا ہے۔

اس صدیث کامنعہوم یہ ہے کہ اگر کسٹی خص کا دوست نیک معالَے متّقی مبوتو وہ اس سے بیکی وتقوٰی کا وصف حاصل کرے گا۔ا دراس کامطلب ہے معاشرتی ما حول کا عامل چاہیے وہ مدرسہ کاما حول مبویا علاقہ کا۔

ایچھے ماحول کامسلمان سکے صلاح وتقوٰی کی صفت پیدا کرنے میں بڑا عامل موسنے اورا میان وعقیدہ اورا فلا قِ فاضلہ پرنشو و نما پانے میں بڑا مؤثر ذیلیہ بونے کی تاکید سنے صلی صدیت سے بوتی ہے جسس نے ننا نوسے آ دمیوں کو قبل کرد ب تھا جبیا کہ اسے بخاری وسلم روایت کرتے ہیں، پوری حدمیت مبارک درج ذیل ہے ؛

حضرت ابوسعید سعد بن مالک بن سنان فدی فی الندعند روایت کرتے ہیں کہ نبی کریم ملی الله علیہ وہم نے ارشاد فرایا : تم سے پہلے گزرہے ہوئے لوگول ہیں ایک شخص تھا جس نے نناو سے آدمیوں کو قبل کررکھا تھا اللہ نے اس زطنے کے برط ہے عالم کے بارسے ہیں بوگل سے دیافت کیا ۔ لوگوں نے اس کی رنہائی ایک راہب کی جانب کی ۔ وہ شخص اس اس ابہ ہیں ہے ؟ اس نے اس ابہ ہیں ہیں ہوسکتی ہے ؟ اس نے کہا : نہیں ، اس نے اس ابب کوجی قبل کر دیا اور اس نے اس فیال سے ہوا کہ تو بوری کو گور اور اس کے بعدا کر نے بسر کہا ، اس نے اس ابب کوجی قبل کر دیا اور اس نے اس فی رنہائی ، یک عالم کی جانب کی گئی ، وہ اس سے باس گیا اور اس کو تبلایا کہ اس نے سوآ دیمول کو قبل کر کھا ہے کیاس کی تو بوت کا کوئی استہ ہے ؟ اس اللہ اس کو تبلایا کہ اس نے سوآ دیمول کوقل کر رکھا ہے کیاس کی تو بوت کا کوئی استہ ہے ؟ اس عالم نے کہا : جی ہاں اللہ اور تو بسے درمیان کون حائل ہوسک کی جانب کی عبادت کرتے ہوئے چند اور تو بسے درمیان کون حائل ہوسک کی جانب کو عبادت کرتے ہوئے جند لوگ لمیں گئی ۔ وہاں اللہ کی عبادت کرتے ہوئے جند لوگ لمیں گئی ہی جانب کو شنول اور حب آدمیوں ایک تو بستان کی جانب کو گئی اور اس سے دوانہ ہوا ور حب آدمیوں بی جانب کو اس کو گیا اور اس کے لیے کہ وہ بری جگر ہے تو اس کی خوشتوں میں حبی گار ہونے لگا۔

رحمت سے فرشتوں نے کہا کہ وہ تو برکر کے بھی اری اورائٹد کی طرف رجوع کرکے آیا تھا، اور عذا ہے فرشتوں نے کہا کہ اس کے باس ایک فرشتہ انسان کی شکل میں آیا ، انہوں نے اس کو اپنے درمیان مَکم بنالیا، تواس نے کہا کہ دونوں جانب کی زمین کو نا ب لو جس طرف کی زمین کے زیادہ قریب ہوا کی طرف کا شار موگا، چنا نچہ زمین نا بی گئی تو وہ اس سرز مین کے زیادہ قریب پایا گیا جس کی طرف وہ تو ہرکرے جارہا تھا، چنا نچہ طرف کا شار موگا، چنا نچہ زمین نا بی گئی تو وہ اس سرز مین کے زیادہ قریب پایا گیا جس کی طرف وہ تو ہرکرے جارہا تھا، چنا نچہ رحمت سے فرشتول نے اسے اپنے قبضتیں ہے لیا ا

ايك روايت مين آيا ہے كه الله تعالى نے اس سرر مين سے كہاكہ دور موجا ؤا وراس سرز مين سے كہاكہ تم قريب

موجا وَاور فرمایا : دونول کے دیمیان سے فاصلہ کو 'ابو، چنانجہ انہول نے استے دوسری زمین سے ایک بانشت 'ریادہ قریب پایا اور اس کی مغفرت کردگ گئی۔

ینصوص نبیس ہم ذکرکریکے ہیں ان سے تیجہ نیکا ہے کہ اگر بیکے کو نیک والدین اورخلص اسا تذہ کی جانب سے ایمی ترمبیت میسرآجائے، اوراس کو نیک ساتھیول اورمؤمن فلص رفقا دسے اچھا ما حول مل جائے ۔ توالیسی سورت ہیں بچہ بلاشک وسٹ بہ تقوی . ایمان واضل قب فاضلہ کی تربیت پائے گا اور سراچھے کام اور بہترین اضلاق واجھی عادت کا عادی بنے گا۔

ان ہی بنیا دول اور ان ہی بنیادی امور سے مطابق سلف صالحین اپنے بجول کے لیے مرفی منتخب کیا کرتے تھے، ادر ان کواچی بائیں سکھانے اور اعلی اضلاق سے آرات کرنے اور ہجبرین صفات کا عادی بنانے کے لیے انھی فیفا، مہبا کیا کرتے تھے۔ ان کواچی بائیں سکھانے اور ایک کہ حجب عقبہ بن ابی سفیان نے اپنے بیٹے کواستاذ کے توالے کیا توان سے کہا: میر بن بجول کی اصلاح کے لیے سب سے بہلاکا کہ آپ یر کری کہ نحودا بنی اصلاح کریں، اس لیے کہ ان کی نگا ایک نگا ہے ساتھ بندھی ہوگئی بیسے آپ اچھا تھے ہیں گے اسے وہ بھی اچھا تھے ہیں گے اسے وہ بھی اچھا تھے ہیں گے اسے وہ بھی اچھا تھے ہیں گے اور جسے آپ براسمجھیں گے اسے وہ بھی براسمجھیں سے ان کو محالات وواقعات اور ادباء کے انحلاق وعادات کی تعلیم دیں، اور ان کو مجھ سے ڈراتے رہیں اور میری غیرموجودگی میں ان کو مخر اسے بہا ہے۔ سے قبل دوار بختے موجود کی میں ان کو مخر اس کے بہا ہے سے قبل دوار بختی میں میری جانب سے کسی غیرموجود گریں اس لیے کہ میں نے آپ کی قابلیت وصلاحیت میں میری نہا ہے۔ سے معالی عدر میری ہوا ہے۔ سے تب کہ میں نے آپ کی قابلیت وصلاحیت میں میری کہا ہیں۔

ی اغب اصفهانی تکھتے ہیں کہ خلیفہ منصور نے بنوا میہ کے مقید لوگول کے پاس پر پیغام بھیجا اوران سے پوٹھا کہ قیب د کے ایام میں سب سے زیادہ تکلیف آپ لوگول کوکس چیز سے ہوئی ؟ انہول سنے کہا: اس سے کہم اپنے بچول ک تربیت کرنے سے محروم رہ گئے۔

وہ بچوں کی ترسیت سے سلسلہ میں ابن سینا کی وصیت یہ ہے کہ بچھے کے ساتھ مکتب میں ایسے بچے ہونا چاہیے جو اچاہیے جو جو اچھے آواب واخلاق کے مالک ہول ، جن کی عا دات بہندیدہ وقمود ہول ، اس لیے کہ بچے۔ بچے کو د کمچھ کر ہم سکھتا اور اس سے لیتا اوراس سے مانوس ہوتا ہے۔

سلف ملین سے اپنے بچول کی تربیت اوران کیلیے اچھ سازگا رفضامہا کرسنے کے سلسلہ ہیں بخوخص مزیر شوا برجا ہا ہوا سے چا جیے کہ تربیت اولا دکی شم ٹانی کی تمہید میں ہم نے جو مثالیں اوروا قعامت ذکر کیے بیں ان ک طرف رجوع کرے انشادت تشفی ہوجا ئے گی اوکسی اورکتاب کی فیرورت نہ ہڑیے ہے ۔

. بعض لوگ یا گمان کریتے ہیں کہ لوگ یا توفطرۃً اچھے اور نیک ہوتے ہیں یا برے اور برترز جیسے کہ جھیٹر خاموسٹ ں وسیدسے سادسے بیچے کو اور میتیا بچیاڑ کھانے والے کو ہی تبنم دیتا۔ ہے، اور برکدانسان میں بولوپشسیدہ برائی ہے اس کا برلنانامکن ہے جیسے کہ انسان میں بوفطری نحیرہے اس کو برنیا دشوارسیے ، یہ خیال خام اور بہت بردی غلطی ہیے ہ

یه باطل دعوی شریعیت سیمیمی خلاف به او دققل اور تجب ربه سیمیمی رشهریعیت کے خلاف اس بیے ہے کہ یہ اللہ تعالیٰ کے فرمان :

( و كَ لَذَ يُنَاكُ النَّجُديْنَ ). البدر . البدر . المرام بي نه اسے دونوں رستے بها دسید

ك نعلاف ب جبس كامطلب يدب كريم في انسان كونيروشرك راست بالا ويهاي.

اسى طرح ورج ولي فران مبارك كي على ف بيد:

الوَنَفْسِ وَمَاسَوْنِهَا ﴾ فَالْهَمَهَا فَجُوْرَهَا وَتَقُونُهَا

قَدْ اَقْلُكُمُ مَنْ زُكُّنَّهَا وَقَدْخَابَ مَنْ دَشِّهَا ...

نشمس - ۱۰۰

ا ور فرمان اللی ویل سے تھی مخالف ہے:

النَّاهَدَيْنَهُ السِّبِيْلَ لِمَّاشَاكِرًا وَالِمَّ كَفُورًا).

البرحرسا

ہم ہی نے اس کوراستہ تبایا دسمیر؛ یا تووہ سنگر گزار امو ، اور یا کا فر ( موگلیا کہ

اورجان کی اوراس کی جس نے اسے درست بنایا بھر

سس کی برکرد یک ورس کی پرمیزگاری (دونور) کاسے

القاركيا ، كروه يقيناً إمراد موكياتس في ابى جان كورك

كرليا، وروه يقينًا إمر ومواحبس في اس كود باديا.

اورنى كريم الله عليه ولم كے اس فران مبارك كى وجر سے بھى حبس كا كھى كھە بيہلے ذكر ہو چكاسپے كە :

((كل مولود يولدعلى الفطرة، فأبسواه بريب نطرت اسلم پر پير بوا به على الفطرة، فأبسواه

سے ایمودی بنادیتے میں انطافی امجوں و۔

يهودانه أوينصراشه اكويجسسانيه ».

یہ اِنے عقل کے خلاف، س لیے ہے کہ اللہ تعالی نے جب کہ بوں کون اِن فرمایا ور سولول کو بھیجاتو آخرکیول اور کسس سے بیے ؟ کیا یہ سب کچھ اند، ان کی اصلاح اور دین و دنیا کی کا میا بی وسعا دت کے مصول کے لیے نہیں ہے ؟ اور بھی سر محت نے محت میں مختلف قوانین اور نظام وضع کرنے کا کیول استہام کرتی میں ؟ اور مدارس معا بداور جامعات کی محراتی کیوں کرتی میں ؟ اور علما برتر میں یہ اور ادب و اخلاق میں ؟ اور علما برتر میں کے اور اور ما مرحلین کو مقر کرنے کا اہمام کیول کرتی میں ؟ کیا یہ سب تعلیم اور ادب و اخلاق سکھا نے اور برائمول کی بیخ کنی اور اچھے معاشرہ سے قائم کرنے اور کی کی اصلاح نے لیے نہیں ہے ؟ ورز مجری کی اور اور میں اور کھر مربول اور عمر میں کا در اور کی کئیں ؟ اور کھر مربول اور عمر میں کا در اور کی کئیں ؟ اور کھر مربول اور عمر میں کا در اور کی کئیں ؟ اور کھر مربول اور عمر میں کا در اور کھر میں کا در اور کی کئیں کا در اور کی کئیں ؟ اور کھر مربول اور عمر میں کا در اور کی کئیں ؟ اور کھر میں کا در اور کی کہا تھی کا در اور کی کئیں کا در اور کھر میں کا در اور کھر میں کا در اور کی کئیں کا در کا در سربولول کا کا جو کی کا در اور کی کی کا در اور کا در اور کا کا کھر کی کا در اور کی کھر کی کھر کی کا در اور کی کھر کی کا در اور کا کھر کی کا در اور کی کی کا در اور کی کھر کا در اور کی کھر کی کا در اور کی کھر کی کو کر کی کی کا در کا در اور کی کی کا در اور کا کا در اور کا کا در اور کی کھر کی کا در اور کی کھر کو کی کھر کی کا در کی کھر کر کی کی کی کی سربول کی کھر کی کی کور کی کھر کی کے در کا دور کی کی کی کی کھر کی کھر کی کے در کا دور کی کھر کی کی کی کے در کی کھر کی کے در کی کھر کی کھر کی کے در کر کی کھر کی کھر کی کے در کی کھر کی کی کھر کی کھر کی کھر کی کے در کر کی کھر کے کھر کی کھر کی کھر کے کھر کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کے کھر کے کہر کی کھر کی کھر کی کھ

به په مغربی نلسفی شوبهها یسبینوزاور فرانسیسی فلسفی بیغی برل کی اسے ہے بیکن مشیرق دمغرب سے بعلق رکھنے واسے اکنز ماہری فلسفۂ اخلاق س رہے کی تردید کرسے میں اور اس رہے کورٹ زوذ سے تعبیر کرتے ہیں ۔ واساتذه كالممل كيول اوركس ليسيمتها اورآئنده كس ليسه بهوگا ؟ كيابيرسب محنت ومشقت بلا فائده كى تكليف نه بهوگى ؟ كيااخلاقيا كاديس دينالغووعبث نه بوگا ؟

ان سوالات اوعقلی محاکمات کے بعد ہم یہ نتیجہ کا لیتے میں کہ انسان کو اسس طرح پیداکیا گیا ہے کہ اس میں خیروشر دونوں ک استعداد کھی گئی ہے بچھراگراس کے لیے اچھی تربیت مہیا ہوجائے ، اوراسے اچھا ماحول لل جائے تووہ ایمال نوانس اوراخلاقی فاضلہ اوراچھائی وخیر سے مجست کرنے میں بہترین نشود نما پائے گا اوروہ می شرہ میں مؤمن بشریعیت اور بااخلاق انسان بن جائے گا۔

### ال رائے کا تجربہ ومشاہرہ کے خلاف ہونا مندر جرذیل امورکی و جرسے ،

ا۔ عالم دنیا بیں یہ بات مشاہرہ کی گئے۔ کرنوانسان جم کسی فاسدوگندے وآزاد ما حول میں ایک بلول عرصے رہا ہو، اورجرم وشقاقو اس میں انتہاکو پہنچ گئی ہو، اور اس نے معاشرہ کو اپنے شرو فساد و مجروانہ 'زندگی سے خوب نقصانات پہنچاہئے ہوں۔ اوروہ خودا بنی مجرمانہ 'زندگی و شقاوت کی و مرہستے تنگ و مرپیتان ہوگیا ہوا و رمچراچا نک جب اس کی کسی نیک ساتھی یا پُرتا تیرمرنی یا مخلص دائی سے ملاقات ہوجا سے خواسے بہنچی کے گرط ہے سے سعا دت و نیک بختی کے باغ میں پہنچا دسے ،اور مجرمانہ 'رندگ سے شرفیانہ و پاکسیزہ ما حول میں سے جائے ہیں جائے ہیں جاتا ہے اور نیکول اور مالئین میں سے موجا آ ہے۔

ایسا بکٹریت موتا ہے اور مہار سے آج کے اس ماحول میں بھی ایسا بہت کٹرت سے ہوتا ہے جب میں فتنے ٹھاٹھیں کئے میں ، اور گذا ہوں کا بچوم ہے اوٹیق وفجور میں لوگ مست ہیں ، اس کا انکار صرف وہی ٹھس کر سکتا ہے جوم ہٹ دھرم ہویا اسس کی آنھول پر برائے پڑھے ہول۔

۲- نالم خوانات بی بھی پر بات مشاہرہے کہ انسان ہر دور میں حیوانوں کوان کی فطری وحشت و بدکتے ہے مانوس بنانے اور ساتھ رہنے کے مسلامیت کی طاقت دکھتا ہے ،اور حیوانات کو ختی اوراؤیل ہے کے بجائے فرمانبڑا کی داخلا عدت شعاری سکھا دیتا ہے۔ اور جال ہیں ہے وہ میں اوراؤ کھڑا ہدف کے بجائے احتدال وہی حوطریقے سے جہا اسکھا دیتا ہے جتی کہ انسان گھوٹے سے قیص کر واتا اور پر ندول سے کھیل کودکرا آبا اور در ندول کو تربیت یافتہ بنا دیتا ہے ، تو جب بے زبانوں کی فطرت اور طبیعت کی میات اور کیفیت ہے تو تھ اس ان مزاج وطبیعت کا کیا حال ہوگا تسب کے بارے میں تعابی علم نفس نے یہ ثابت کر دیا ہے کہ انسانی طبیعت بہت زیا دہ فرمانبردارا ور توج و مختلف المزاج ہوئے کی وجہ سے بہت نیا دہ و فرمانبردارا ور توج و مختلف المزاج ہوئے کی وجہ سے بہت نیا دہ ورکھا د اور یائی وغیرہ دیتا رہتا کی وجہ سے بہت میل کی رہید کہ دیا ہے۔ ماشکا رہے کو مرسز میگر میں بوتا ہے اور کھا د اور یائی وغیرہ دیتا رہتا ہے۔ مار با آت میں یہ دیکھا گیا ہے کہ جب کاشکا رہے کو مرسز میگر میں بوتا ہے اور کھا د اور یائی وغیرہ دیتا رہتا

ے اور کیرائے سے وڑوں اور شرات الارمن سے اس کو بچاتا ہے اور تھراس سے کانٹول کو چیانٹیآ اور ٹہنیوں کو درست کر تا رہا ہے تو تھ ترجی الٹر کے حکم سے علی و تیاہیے ، اور انسان اس کے عیل سے فائدہ اٹھا آباوراس کے سائے میں آدام کر تا ہے ، اور مہبیٹہ ہم بیشہ اس سے منتفع ہو تارتبا ہے۔

سین اگراس بیجی قسمت میں اس سے ساتھ کوتا ہی اور لا ہروا ہی لکھ دی گئی ہوتو نہ اسے شی سے غذاہے گا اور زیانی ہوتو نہ اسے شی سے غذاہے گا اور نہ پالی سے کا نئے بٹا ئے جا بیک گئے ، نہ اس کی شہنیاں درست کی جائیں، تو بھیر نہ وہ جل دے کا زمیول ، اور زکوئی اور قابل منفعت جین ، بکہ بہت جلد ہی وہ ریزہ ریزہ ہوکر ہواؤں کی نذر ہوجائے گا۔ اور آندھیاں اسے ادھر سے ادھر جینے گئی رہیں گی۔

یہی صورت حاک انسانی نفس اور آس میں جو قابلیت واستعدا د اورطبعیت و ما دت رکمی گئے ہے اس کی ہے کہ حب اس کی اچھے اخلاق کے ساتھ دیکی بھال کی جاتی ہے ، اور علوم ومعا رف کے پانی سے اس کی آبیا رکی ہوتی ہے ، اور علم عمالے اس کی معا وزت کرسے اور اسے سہارا دسے تووہ اچھائی وخیر میں نشوونما پا آہے اور کمال کے مدارج ملے کرتا ہے اور کھر ایسانخص انسانوں میں چلنے والے فوشنے کی مانندین جاتا ہے۔

کیکن اگر اسے مہل جھوڑ دیا جائے او حوا دُن ِ زمانہ کی ندر کر دیا جائے حتی کہ اس پرجہالت کا نیک چڑھ جائے۔
اور برے ساتھیول کی عا دات اس پراٹرانداز ہوجا بئی اور بری عا دتول کا اسس پر غلبہ ہوجائے تو بلاشہ وہ ٹنرو فسا د
میں نشوونما پائے گا اور آزادی و بے راہ وی کے جو ہڑیں ہاتھ یا وُل مارے گا ،اور مجر شخص اس وحتی در ندسے کی
ما نند ہو گا جو انسانوں سے دمیان چلتا بھرتا ہوا ور اپنے آپ کواچھ لوگوں میں شمار کرتا ہو۔

ہم نے جو کھیے بیان کیا ہے اکس کا خلاصہ یہ ہے کہ جولوگ یہ دعوٰی کرتے ہیں کہ انسانی فطرت و فبیعیت نواہ نیر ک ہو یا شرکی اسس کو تبدیل کرنا ناممکن ہے اور نہی اکس کی اصلاح ہوسکتی ہے یہ ایک ایسا باطل وعوٰی ہے ہو شہر بعیت ،عقل تہجر یہ ومشاہرہ سب سے خلاف ہے ،اور علما یفسس و تربیت واخلاق کی اکٹریٹ بھی اس کو باطل قرار دیتی ہے۔

اس موقعہ پرہم ام غزائی کی اس تحریر پراکتفاکرتے ہیں ہوانہوں نے اپنی تحاب" احیار العلوم " میں بہے کوال کی قابیت وصلاحیت اور فطرت کے اعتبارے احیی تصلتوں یا بری عادتوں کا عادی بنانے کے سلسلمیں تکھی ہے وہ فراتے ہیں کہ بچہ اپنے والدین کے اعتبارے ایک ایک امانت ہو آہے۔ بہے کا پاک دل ایک نفیس جو ہر ہے۔ اس لیے اگر اسے برائی کا عادی بنادیا گیا اور اسے حیوا نات کی طرح آزاد وشتر ہے مہار جپوڑد یا گیا تو وہ برنجنت بنے گا اور بلاک ہوجائے گا۔ اس کی حفاظ من من کا طرافیہ بر ہے کہ اسے ادب کھا یا جائیں۔ اس کی حفاظ من من کا طرافیہ بر ہے کہ اسے ادب کھا یا جائے اس کی تربیت کی جائے اور اسے اچھے اخلاق سکھائے جائیں۔ من مدر ابن خلدون نے کہ اسے دوراس کے خلاب ہونے کے مدر ابن خلدون سے اپنی کتاب مقدم ابن خلدون " میں بہلے کی قابلیت واست مداداور اس کے خلاب ہونے کے مدر ابن خلدون سے اپنی کتاب مقدم ابن خلدون " میں بہلے کی قابلیت واست مداداور اس کے خلاب ہونے کے مدر ابن خلدون سے اپنی کتاب مقدم ابن خلدون " میں بہلے کی قابلیت واست مداداور اس کے خلاب ہونے کے مدر ابن خلدون سے اپنی کتاب مقدم ابن خلاوں " میں بہلے کی قابلیت واست مداداور اس کے خلاب ہونے کے مدر ابن خلاوں کی کتاب مقدم ابن خلاوں " میں بہلے کی قابلیت واست مداداور اسے اپنی کتاب اسے اپنی کتاب اسے دیں خلاوں اس کا مدر ابن خلاوں کی مدر ابن خلاوں کی مدر ابن خلاوں کی کتاب اسے دیں میں بہلے کی کتاب اس کتاب کی کتاب کی کتاب کر ابن خلاوں کی مدر ابن خلاوں کی کتاب کا مدر ابن خلاوں کیا گیا کی کتاب کی کتاب کی کتاب کر ابن خلاوں کی کتاب کو کتاب کی کتاب کی کتاب کی کتاب کو کتاب کر ابن خلاوں کی کتاب کا مدر ابن خلاوں کی کتاب کی کتاب کی کتاب کو کتاب کی کتاب کر ابن خلال کے کتاب کی کتاب کے کتاب کی کتاب کی کتاب کر ابن خلالے کی کتاب کی کتاب کر ابن خلالے کی کتاب کر ابن خلالے کی کتاب کر ابن خلالے کر ابن کتاب کر ابن خلالے کا کتاب کر ابن خلال کی کتاب کی کتاب کی کتاب کی کتاب کر ابن خلال کی کتاب کر ابن خلال کر ابن خلالے کی کتاب کر ابن خلال کی کتاب کی کتاب کی کتاب کی کتاب کر ابن خلال کی کتاب کر ابن خلالے کی کتاب کر ابن خلال کی کتاب کر ابن کر

بدس ک اصلاح سے ممکن ہونے سے سلسلہ میں اماعزالی سے ذہب کوافتیا رکیا ہے، بلکمغرب ومشرق سے بہت سے فلاسفہ معی اس ا فلاسفہ معی اس اسے سے قائل ہیں اور بہی قول لیسند کرتے ہیں۔

و التدتعالى رم فوائے اس شاعر برسس نے درجے ذلی اشعا سے میں:

علی مساکان عسقَده اُسبسوه من کا انکے والدین نے ان کو عادی بنایہ سایات ورائدین نے ان کو عادی بنایہ سے سعدود السند بین اُ قدر ہوہ وین دری کا عادی اس کو اس کے رشتہ دار بناتے ہیں۔

وینشاً ناشی الفتیان فینا بم سے پیے ونوجوان انبی تعلول میں نشود نمایاتیں ومادان الفتی ہے جے ولکن

کوئی نوجوا ن این عقل سے دین تبول بہسیں کر الملکہ

مرنی کوچاہیے کہ فرد کی اصلاح کرینے اور اس کی کمی وور کرینے میں ہوگوں کی عمر سے درمیان امتیاز کریے اور تھائی کا عادی بنانے اور تربیت میں عمر سے فرق کا خیال رکھے ؛

بروں سے لیے ان سے مناسب مال طریقہ اپنا ہے۔

اور بچول کے لیے وہ طریقیہ واسلوب اپنائے جوان سے مناسب ہو۔

براوں ربینی وہ لوگ جو ہائغ ہوسے مہو آن) کی اصلاح کے لیے اسلام کے نظام تربیت میں تمین بنیا دی امور پر اعتما دکیاگیا :

ا ـ عقيده ـــــربط وتعلق ـ

م به برانی اور *تمر کو کھول کر* بیان کر دینا به

۳۔ماحول کا بدلنا۔

عقیدہ سے ربط وتعلق ایک مؤمن کے اللہ کو ما ضروناظر جاننے ۔ اس کے مراقبہ، اور ہر مالت اور ہر موقعہ پر اس کی مغلمت کا خیال رکھنے اسس کے خوف کو سامنے رکھنے کے لیے ایک عظیم ترین اسک س سے۔ اور اس کا اثر ہی یہ ہوگا کہ قوب نفسانی اور خصی ارا دہ طاقت و رہوگا۔ چنانچہ بھروہ نشہوت کا علام سنے گاا ور ندائنی نوامِ شات و آرزوئ کا قیدی ہوگا، بلکہ کلی طور پر بلاکسی ترود اور لیس پیش کے وہ ربانی ننظام کو اس طرح نافذ کرنے کی جانب متوجہ ہوگا جس طب ح اللہ تعالیٰ نظام کے وہ ربانی ننظام کو اس طرح نافذ کر نے کہ جانب متوجہ ہوگا جس طب ح اللہ تعالیٰ نظام کے دور اسلام پر اس کی وی بھیج ہے۔ اور اس سلسلہ میں اس کا شعار اللہ تبارک و تعالیٰ کا درج ذیل فران مبارک ہوگا:

ا وركون التدسي ببتركم كرسف والاسب بيتين كرسف

﴿ وَمَنْ آخْسَنُ مِنَ اللَّهِ مُحَلِّمًا لِلْقَوْمِ اللهِ مُحَلِّمًا لِلْقَوْمِ اللهِ مُحَلِّمًا لِلْقَوْمِ ا

والول كے دا سطے

يُوقِينُونَ فِي المارَه . . ٥

ادراس سلسله می اس کی میزان و ترازدیه آیت ہوگی:

الْ وَصَّا الْتُكُمُ الرَّسُولُ فَخَذُونُهُ ﴿ وَ صَا لَيْكُمُ الرَّسُولُ فَخَذُونُهُ ﴿ وَ صَا لَيْكُمُ

عَنْهُ فَانْتُهُواء)) . الحشر ، ي

وهمبیں روک دیں رک جاپاکرو ۔ اس الے کراس ایمان کا تعاصدی ہے ہے کہ بلائس کلیف محس کے شراعیت پرعل بیرا موا و راسلامی تعلیات کے سامنے مکمل طور سے سرحم کا دے :

> ا(فَلَا وَ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّے يُعَكِّمُوكَ فِينًا شَجَوَ بَنْيَنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِلُدُوا فِي ٓ اَنْفُسِهِمُ حَرَجًا مِّمَنَا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْبِيْمًا. )).

سوقسم ہے آپ سے رب کی وہ اس وقت تک مؤمن : بول کے جب یک کہ آپ کوئي منصف نہ بانیں اکس جگراے بیں بوان میں مطے مھرز بائن آپ کے فیسلہ ہے اپنے می می منگی اور خوش سے قبول کریں ۔

تورسوں جو کھیمہیں اے دیاریں وہ سے یا کروا درسیسے

بلاشبه تماً عبادات اورسارے اذ کاروا وراد ، قرآن کرم کی تلاوت ، اس کی آیات پر رات کی گھڑ بول اور دن کے حصول میں غور دفکر کرنا ، تمام حالات وظروف میں التدی عظمت کا حساس کرنا، اور موت اور اک کے بعدہ بیس آنے والى چېزول پرقيمين ركھنا. اور مذاب قبراومئكرونگرير كيرسكيسوال پرا ميان لا يا اور مالم آخرىت ا ورقيامىت كى مولئاك چېزول كا اعتقاد رکھنا ، یہ تمام چیز رسے موت میں انتد جل شانہ سے مراقبہ کی کیغیبت کو پیلے کرنی ہیں ۔ اوراس کو ایک ایسامستقیم متواز ل انسان بنادیتی ہیں جوروح اورمبم کے مطالب و ضوریات سے درمیان دنیا وی زندگی میں توازن قائم رکھا۔ ہے. اور دنیا کے لیے کام کا جے، اور آخرت سے لیے مل کرنے میں توازن کا دان ابتھ سے نہیں چیوٹر تا ، چنانچہ وہ بلاکسی کمی وکو تا ہی کے ہر صاحب حق کے حق کوا داکر ہاہیے ،اور اس سلسلہ میں اس کا شعار نبی کریم صلی اللّٰہ علیہ وسم کا درج ذیل فروانِ مبارک

> ((إن مله عليك حقًا. ولنفسك عليك حقًّا ، ولأهلك عليك حقًّ ... فُعط کل ذی حق حقه)..

تم برالتدى كلى عق ب ، ورتمبارى نفس كالمى تم يتق ، ا در تمهارے ابل وعیال کائمبی توہے .. اس ہے سبر صاحب حل کواس کا بق د کرو.

میسلم شده امومی سے ہے کہ حب ایک مؤمن اپنے اندراللہ کے مراقبہ کے ہیلوکو قوی کرلیا ہے . اور جب اس مینفس اماره اورخوامشات نفس برغالب بهونه کا ذاتی ارا ده وخواسش پیابهوجائے توالیی صورت میں ایساانسان ندر سے درست وٹھیک ہوجا یا ہے،اوراپنے تمام معاملات کے لیے اپنے عقیدہ وہمیری ایک ترازومقررکر تاہیے،اور میجر نہ وہ اوارست سے مشکتاہے ، زفسق وفجور میں گر فیار موباہے۔ نہ اس میں انحاف پیدا ہوباہیے. اور نہ وہ بخبی کے دم میں گرفتار مبو تاہیے، اس لیے کہ اسے اس بات کا لیکانقیمین ہوتاہیے کہ اللہ تعالیٰ اسے دیجے رسبے ہیں . اوراس کے باطن و

ظاہر کے جاہے ویے ہیں . اور آنکھول کی خیانت اور دلو*ں کی پویٹ بی*رہ باتو*ل پرمطلع اور خبردا رہیں ۔* 

رہی رازتھا اس عظیم موقف میں جوسی ایر کوام رضی التہ عنہے نے اس وقت افتیار کیا تھا جب شراب کی ترمت کا سمی میں رازتھا اس عظیم موقف میں جوسی ایر کوام رضی التہ عنہے نے اس وقت افتیار کیا تھا جب شراب کی ترمت کا سمی نال ہوا۔ تو ان سب نے بیک آواز کہا: اے ہمارے دب اب ہم اس سے دک گئے ہیں ،اور تھے راس قول کے ساتھ فعل سے بھی یہ کر دکھایا اور شراب سے مشکے وسٹ کیزے مدینہ منورہ کی گئی کو چول میں بہا دیے۔

ر باشر دبرائی کوکھول کربیان کردیا، توریمی برگول کومظمئن کرنے اور رائی کے بھیوٹر نے اورگناہ وفسا دسے نفرت لانے کے لیے بہت اہم طریقیہ اور عظیم قرسسیا۔ ہے۔

ٹسرکی برائی کو کھول کر بیان کرنا ،اور بالل کونٹگا کردینا یہ وہ طریقہ ہے جسے قرآن کرم نے زمانہ ُ بالمبیت سے لوگول کو ان کی غلط عادات وطورطریقول سے چھپوٹی نے اورگنا ہول اور برایئول سے بچانے کے لیے اختیار کیا تھا ، اور سم اس کو ایک مثال سے سمجھا ئے دیتے ہیں ؛

اسلام نے حبب شارب کو مرام قرار دیا تو مرمت کا حکم قرآن کریم کی آیات میں وقتاً فوقتاً نازل ہوتا رہا، ان آیات میں کہمیں شراب کو مرام قرار دیا تو مرمت کا حکم قرآن کریم کی آیات میں وقتاً فوقتاً نازل ہوتا رہا، ان آیات میں کہمیں شراب کی برائیوں اور مفاسدا و ران برسے انزات کو بیان کیا گیا جوانسان کریڑےتے ہیں، اور کہمیں اخلاقی معاشرتی و دینی نقصانا کو بیان کیا گیا، چنانچہ سب سے پہلے التہ تعالی کا درجے ذیل فرمانِ مبارک نا اللہ ہوا:

سمجيد مين. محصيد بيل.

ا ورکھجورا در نگورکے میں سے بناتے ہونٹ داور روزی خانمی ، اسس میں نشانی سبے ان بوگوں کے واسسے ہو ((وَمِنْ ثُمَرُتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّغِذُونَ مِنْهُ سَكَّرًا وَ رِزْقًا حَسَنَّا مِانَ فِي ذَلِكَ لَايَةً لِقَوْمِ يَعْقِلُونَ . )). النمل منه س آبیت میں نشہ اورا چھے مارق کے درمیان مقابلہ کیاگیا ہے تاکہ مجعدارلوگ میں مجدلیں کہ ٹیرا ب اور حیز ہے ، ور رزق صن اورجیز ہے . تاکہ بعد میں جب نمار ہے کی حرمت کا حکم نازل ہو تولوگول کو میموس ہوجا ہے۔

، سے بعد درج ذیل آیت نازل ہوئی و

﴿ يَسْنَلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِيرِ ، قُلْ فِيْهِمَّا إَنْهُ كَبِينِرٌ وْمَنَا فِعُ لِلنَّاسِ وَإِنْهُ هُمَّا أَكْبَرُ مِن نَفْعِهِمَا . ﴾ .

آب سے تمراب اور ہوئے کا حکم پیر چیتے ہیں سے كبرد يحيان دونوب مين براكناهس اورلوگول سيك فائدے میں ہیں۔ اور ان کا گناہ ان کے فائدہ سے بہت

اس آبیت می*ں تجارتی فائدہ پرگناہ سے پہلو کو راج* قرار دیاگیا. تاکہ شراب کی وہ محبت راسس جوان سے دلول ہیں ہیٹھا ہوا تھا وہ دور موا وراس کی مادستعم برجائے۔

يھريەاتىت نازل ہوئى :

ا ــايان والونزويك نه بموجاد نمازكه مست كرتم نشة مين بويهان تك كرسم من نكو جو كيت مور

النَّايُهُا الَّذِينَ أَمُنُوالَا تَقْرَبُوا لَصَّاوَةً وَأَنْتُمُ سُكُرِي حَسَثَى تَعْلَمُوا مَا تَقْوَلُونَ ﴾ الساريه

چنانچہ اس آیت کے ذریعہ تراب کے اس برسے اٹر کو ذکر کیا گیا ہوعقل پر برط ماہے۔ اور شراب کے استعال کے روکنے اور نماز کے اوقات میں اس کے استعمال سے بیچنے سے قبل اس کے ان نقصانات کو تبلایاگیا جو تشویش وانقلاط کی شکل میں بيش آيي بي

> ﴿ يَاكِنُهَا الَّذِينَ امْنُواَ إِنَّمَا الْخَمْرُوَ الْمُيُسِرُوَ الْأَنْصَابُ وَالْأَزُلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطِن فَاجْتَنِبُولُهُ لَعَلَّكُمُ تُفْدِحُونَ ﴿ إِنَّهَا يُرِيْدُ الشَّيْطِنُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ البغضاء فيالخنروالكيسروكيصككمعن

اسے ایمان والو یہ جوہے شمراب اور مواا وربت اور بانسے مب تبیعان کے گندے کا ایس سوان سے نکھتے يهو. تاكه تم نجات ياؤ . شييعان توميمي چاستا ہے كتم ميں دشمنی اور مبرز<sup>و</sup>ایے بذریعہ شرب اور حو ئے کے ، در تم كوروك التدك يا وسے اور نمازے سواب مجى تم

ذِكْرِ اللهِ وَعَنِ الصَّلُوقِ، فَهَلَ أَنْتُمُ مُنْتَهُونَ ﴾ ١٠٠٠ تلائيه اس كامطلب كياب كرقرآن كريم نے شراب كو بتول اور جوئے وقمار كے ساتھ شامل كرديا اور يعيريہ تبلايا كه تراب گندی چیزے ، بھراس برمتنہ فرمایا کہ تراب شیطان کے کامول میں سے ہے ، بھراس کے افلانی نقصا اکت بتلائے کہ یہ توگول میں عداوت و تعفن کا بیج بودتی ہے ، اور مجراس سے دینی نقصانات تبلائے کہ بیشراب اللہ کے ذکر ونمازے مرک دیتی ہے ؟ تلائيداس سب كاكيامطلب بيد؟ كياس كايمطلب نهيس به كوشراب ابن اللي حقيقت يركس كرسل من آمكى اورارباب عقل

وداش کے سامنے اس کے نقصانات برائیاں ومفاسد فل ہر ہوگئے ؟ کیااس وسناست اور کھول کر بیان کرنے کے بعد می کوئی شخص اس کے عزام ہونے یاس سے دور ہونے میں کوئی اک بھول چڑھائے گا؟ بلاشہ ایک عظمند منصف مؤمن توہی کھے گا کہ اے رب آپ نے اتنی تفصیل و توہیج کے ساتھ ہو بیان فرطیا اور حرصت نازل کی اس کے بعد میں بھول اس سے کیول نرک جا وک ، اور صحابہ رضی التہ عنہم جمین کے سلسنے جب شراب کی حقیقت کھل کرسا ہے گئی اور حرصت شراب کی آئیت نازل ہموئی توانہ ہول نے باکل ہی کیا ۔

ای پرآب قرآن کریم کے حرام کردہ عام جانلی عقائدا ورمعاشرتی برائیوں کو قیاس کر لیجھے جھیے کہ التد کے ساتھ کسی کو شرکے گردانتا ، زنا ، حجار ، سود ، قبل ، لوکیوں کو زندہ درگور کرنا ، اور پتیم کے مال کو کھانا ، کہ ان چیزوں کو قرآن کریم نے اس وقت تک حرام قراز نہیں دیا جب تک ان کی حقیقت کھول کھول کرنہ بیان کردی ، اور اس کی بہت ہی برائیوں کا تذکر ہٰ نہیں کردیا ، اور مجھدار وعقلمندول کواس سے تنظر نزکرایا ، اور انہیں اس سے دُور رہینے کا حکم مذویا ، اس لیے کہ یہ چیزی فرد اور معاشرہ دونوں کو برترین نیائج اور خطرناک حالات تک بہنچلنے والی ہیں ،

ر بإ ما حول كا بدن اتوبیجی فرد كی اصلاً ح اوراس كی رسنهانی اور ترسیت و خصیت سازی میں دوسری اور بنیا دی چیزوں

مے کی کم ہمیت نہیں رکھا بلکہ ہمی بہت اہم وبنیا دی چیزہے۔

ورنه التدتعالى نے اپنے رسول التّدملی التّدعلیہ ولم کو مدینہ منورہ ہجرت کیسنے کی اجازت کیول کر دی اوزی کرم ملی الته علیہ وم نے اپنے صحابہ کو ہجرت کا حکم کیول کردیا ؟

می اس کامقصد نیبین تماکه ایسے اچھے ماول میں افراد کو تیا رکیا جائے ہی مجانس میں منکرات وسبے حیاتی کی باتیں مام نہ ہوں اوراس کی سنر میں پرگنا ہوں اور محرمات کا اڑ کا ب نہ کیا جاتا ہو؟

کیسا اس کامقصد بینهیں تھاکہ، زُل سندہ آسانی قانون کے سایے اورایک عظیم ومحیط صدت کے حجانگہ ہے تلے ایک حکومت کو قائم کیا جائے ؟

تیاس کامقصدیهٔ نبیس تفاکه سلم فردگ اصلاح ایک ایسے معاشرہ میں کی جائے بیسی اسلام کی حکومت ہوا درب پرقرآن نازل ہورہا ہو؟

بہ رف بہ بہ بہ ہم اس سے قبل اس شخص کی مدیث بھی بیان کریے ہیں جس نے سوآدمیول کوفتل کردیا تھا، اور بھر روے زمین کے ہم اس سے بڑسے عالم سے بارے میں بوجھا اکداس سے یہ دریا فت کرے کہاں کی بھی تو بہ قبول بہو کتی ہے؛ تواس نے اس سائل سے جواب میں کہا تھاکہ فلال فلال جگہ چلے جا ؤ وہال کچھ لوگ التٰہ کی عبادت کرتے ہوئے میں گے، تم بھی ان کے ساتھ وہال التٰہ کی عبادت کرنا اور اپنی قوم کی سرزمین کی طرف ہرگز نہ جانا اس سے کہ وہ برترین حگہ ہے۔
ساتھ وہال اللہ کی عبادت کرنا اور اپنی قوم کی سرزمین کی طرف ہرگز نہ جانا اس سے کہ وہ برترین حگہ ہے۔
کیا یہ حدیث اس بات بردلالت نہیں کرتی کہ فردگ اصلاح اور اس کی کچی دور کرنے اور اس کو بری عاد تول سے

بچلنے اورگندے اوصاف سے کات دلانے میں اچھے ما حول کا بہت بڑا وضل واثر مو بلہے ؟

اسے قبل بم صفوراکم ملی الته علیہ وم کی وہ صدیت مبارک اس باب میں ذکرکر پیلے بیں کہ سجت کا ساتھ دہنے والے ساتھی پرا جھایا برا اثر بڑتا ہے اس لیے کہ انسان اپنے دوست کے مذہب پر ہوتا ہے۔ اوراس لیے کہ صحبت کا اصلاح و فیا دمیں بہت بڑا اثر ہواکر تاہے۔

یهاں ہے بہیں بربات تھی علوم ہوتی ہے کہ فرد (خواہ وہ بڑاکیوں نہ ہو)اس کی اصلاح کا نقطۂ اساسی اس خراب ماتول ومعاشہ وکو بدلنا ہے جو ہے لگام، آزادی پرست ،گندے ساتھیوں اور جابل دوستوں میشتمل ہو۔

اب کستم نے جوکھ بیان کیا ہے اس کا ملاصہ نہ کلتا ہے کہ بڑوں کی اصلاح میں اسلام نے سس طریقے کواپنایا ہے اس کی بنیاد تمین اسی جیزول پر ہے جن کا افعال تھے درست کرنے اور کمی کو دورکرنے میں بڑا اثر وخل ہے :

چنانچہ جب عقیدہ سے ارتباط موگاتو آدمی میں مراقبہ الہیہ کا شعورا ورنا ہر و باطن میں اللہ سے خشیت و نوف بیا ہوگا اور اسس کی وجہ سے اس میں ایسی قوت ارادی پیا ہوگی جواسے محرفات سے روسکے گی اور وہ اعلیٰ ترین اخلاق اور ہہرن صفات سے متصف ہوجائے گا۔

ا ورحب برائی اور شکول کرسا منے آجائے گا توانسان برائیول کوچھوٹر دسے گا اور تمام برائیول سے پہنے کا پوداع م کرے گا بلکہ ہرگنا ہ وہرائی سے چھوٹی نے میں اسے قلبی ونفسیاتی سکون وطمانینٹ مامل ہوگی۔

ا ورمعا تنگرتی ماحول کے بدلنے سے انسال کے لیے نیرو بھلائی کااختیار کرناآ سان اوراک سے لیے فضاسازگار بوگ اورعزت وشارفت کی زندگی مہیا ہوگی . ملکہ اس کے حالات وقت سے گزرنے سے ساتھ ساتھ درست موسقے جائیں گے اورم و برایی سے ساتھ اکس کے افعال واخلاق سنویتے جائیں گئے .

اس لیے معاشرہ کی اصلاح کے خیرخوا ہول اور مربیول کوچاہیے کہ اگر وہ امست سے افراد کے لیے بھلائی وخیراو اک ورمعاشرہ کے افراد وابناد کے لیے سادمتی واستحکام چاہیتے میں تو بڑوں کی اصلاح کے لیے اس راستے وطریقے کو اضتیار مرب جواس م منے مقرر کیا ہے۔

(( قُلَ هَٰذِهٖ سَبِنِيلِ آدُغُوۤا إِلَى اللهِ عَظَ اللهِ اللهِ عَظَ اللهِ اللهِ عَظ بَصِيْرَةٍ اَنَا وَصَنِ النَّبَعَنِيْ \* وَسُبْحُنَ اللهِ وَمَا اَنَا وَصَنِ النَّبَعَنِيْ \* )). يوسف ما اللهُ وَمَا اَنَا هِنَ اللهُ يُكِيْنَ \* )). يوسف ما المُنْدِكِيْنَ \* )). يوسف ما المُنْدِكِيْنَ \* )).

آب که و یجیے که رمیری راه ہے، بلآ یا بول الله کی طوف میں اور جومیرے سے مقدید و مدالت مقدید و رسال مقدید و اور میں نہیں شرکی بتائے والول میں .



#### اسسلام نے بچول اور حیوٹول کی اصلاح کے لیے بوطر بقرد ہے اختیار کیا ہے اس کامدار دو بنیا دی جیزول برسے:

التلقين به

۲ ـ عادت دلوانا ـ

لتلقين سهمارى مرادسيه اصلاح وترسبيت كانظرى بيلور

اور عادت ولولنے سے مراد ہے اس کے بنانے اور تیار کرنے کاعملی بہلو۔

چونکہ بیصے میں انفذ وسیکھنے کی عادت وصلاحیت اور عمر و زندگ سے دیگرمراصل میں سب سے زیادہ ہوتی ہے، اس لیے والدین معلمین و مربروں پر لازم ہے کہ بیکے کواٹھی باتیں سکھائیں۔ اور خیر کی تنقین کریں ، اور حبب سے وہ تعور کی عمر کو بیہنچے اور زندگی کی مقیقت کو میمنے یکے اسی وقت سے اسے ان امور کا عادی بنائیں۔

اس سے بل ہم امام غزالی کا وہ قول نقل کر میکے ہیں کہ بچہ اپنے والدین سے پاس ایک امانت خدا وندی ہوتا ہے ، اور پاک معاف ول ایک نفیس موتی ہے للہٰ ااگرا سے خیر کاعادی بنایا جائے اور اتھی باتیں سکھائی بما بیُں تو وہ انہی میں نشو ونما پائے گاا ور دنیا قرآخرت میں سعیدونیک بخت بنے گا۔

اس موقعہ پرمیراخیال ہے کہ میں مربول سے لینے چول کو بلفتین اوراضی باتول کے عب ادی بنانے کے سیسے کہ میں مربول سے لینے چول کو بلفتین اوراضی باتول کے عب کا سامان بنانے کے سیسے میں بعض مثالیں بیٹی کردول ٹاکہ وہ ان سے لیے بصیرت کا سامان اور جرائے راہ بن جب میں ،

رسول اکرم ملی الته علیه ولم نے مربول کو میکم دیا ہے کہ وہ اپنے بچول کو کلمہ لاإله الاالته سکھا بیک چنانچہ عاکم حفرت ابن عباس رضی الته عنہا سے روامیت کرستے ہیں کہ نبی کریم ملی الته علیہ ولم نے ارشا و فرمایا ہے: اپنے بچول کو سب سے پہلے کلمہ لاالہ الاالته سکھاؤ. یہ تونظری پہلو ہے۔

اس تلقین کاعملی پہلویہ ہے کہ نیکے کواکس بات کا عادی بنایا جائے اور اسے اس بات کے لیے تیار کیا جائے کہ وہ دل کی گہرائیوں اور اپنے وجدان کی ترسے کس بات برتین وا بیان دیکھے کہ اللہ تعالیٰ کے سوائرکوئی خانق ہے معبود نا بجاد کھنے اور بنانے والا، اور بیان نشانیوں اور چیزوں کے ذریعے سے موگا جن کا مشاہدہ بچہ اپنی آئکھوں سے کرتاہے مشل بھول، آمان زمین بسے مندرا ور انسان وغیرہ تمام مخلوقات تاکہ وہ یہ تیج کا ہے اور عظی طور سے استدلال کرے کہ درحقیقت مؤثر ذاست

التدحل شانه مهی کی ہے۔

مرنی کو پیچے کے سامنے جوحقیقت بیان کرنا چاہئے وہ یہ ہے کہ یہ سا اعلم تما کان ، سفیا ہے بھرا ہولہ ہے ہوا نسان کے سننے دیکھنے کے دائرہ میں ہی بیں اور یہ تمام اسٹیا خود بخود وجو دمین نہیں آسکتیں اسس لیے کہ یہ جامد ہیں ، اوران میں عقل و تربیر کاملکہ نہیں ہے ، اور نہ ال میں علم اورا یا وہ کی قوت ہے ۔ اس لیے ان کا کوئی موجد و بنانے والا صرفر رمونا چاہیے ، اور وہ التٰہ تعالیٰ حبل شانہ بی ہیں ۔

ایمان لانے تک پہنچا سکتا ہے جو وحدہ لاشر کے بنانے ہیں غور وفکر اور تا مل کے ذریعے مربی بیچے کواکس التہ میں شانہ کی ذات پر ایمان لانے تک پہنچا سکتا ہے جو وحدہ لاشر کے لہے، زاکس کاکوئی شر کے ہے زب تھی، اور وہی اس سب کاپیلاکرنے والا ہے اس سلمین مدیحی عور سے کام لینا چاہتے ہیں جمیس اشیار سے بھر بوعقل کے دائر ہے ہیں آتی ہیں ان سے ،اور حزئی سے کی ورلسیط سے مرکب کی طرف ترقی کرنا چا ہیں تاکہ بچہ وجدانی اور عقلی طور سے حجت ولیل اور اطمینان قلب سے ساتھ التہ مل شانہ یر کیان لے آئے۔

می سول الترسلی التدعلیه و هم نے مزیول کو یکم دیاہیے کہ وہ اپنے بچول کو سات سال کی مرک بی بیانی تقین کریں جن بچ ماکم وابوداؤد دحضرت عبداللہ بن عمروبن اعاص رضی التہ عنہا ہے روایت کرتے ہیں کہ سول الته صلی اللہ علیہ وقم نے ایشاد فرویا: اینے بچول کونماز کا تکم دو حب کہ وہ سات سال سے مہول ، اورنماز کے لیے ان کوما رو حب وہ دس سال کے موجا میں ، اوران کے بتروں کو انگ الگ کردو، نیزهری میں ہوہ ۔

عمل پہلو بیسبے کہ بیچے کو نماز کے احکام، اسٹ کی رکعات کی تعدا د ،اوراس کا طریقہ سکھایا جائے ،اور بازیر وگرانی کے ذریعیہ اسے نماز کا عاد کی بنایا جائے ، اور مسجد میں جماعت سے نماز پڑسنے کا حکم دیا جائے تاکہ نماز اس عادت وطبعیت بن جائے ۔

کی رسول اکرم صلی الته علیه وسم نے مزیول کو پی حکم دیاہے کہ وہ اپنے بچول کو صلال و سرم کے احکام سکھائیں. اس لیے کہ ابن بریر وا بن المنذر حضرت عبدالته بن عباسس رضی التہ عنہا سے روایت کرتے ہیں کہ سول التہ صلی التہ علیہ ہم نے ارشاد فرایا: اپنے بچول کو احرکام وا وا مرکے بجالانے اور ممنوع و سرام جیزول سے بیجنے کا حکم دو، یہ ممہارے اوران کے لیے اللہ میں کے لیے اگر سے بیجنے کا در لیعیہ سبے ، یہ نظری بہلوہے۔

عملی پہلویہ جے کہ بیچے کوانتد تعالی کے احکامات ماننے اوران پرعمل کرنے اور حن چیزول سے روکا گیا ہے ان سے رکنے کی عادت ڈلوائی جائے اوراس کی شش کرائی جائے ، اور اگر مربی یہ دیچھے کہ بیچے نے کوئی براکا کیا ہے

کے سس سے قبل ہم تربیۃ لاولاد فی ارسس م کی تسم ٹانی ہیں ، یمانی تربیت کی ذمہ دری کی بحث سے من میں ابتدعی شانہ پرامیا ل کے مسر سے بارسے میں تفصیلی بحث کرسکھے ہیں لہذا اس کا معامعہ کیجیے۔ یاگناہ کا ارکاب کیا ہے مشلاً چوری یا گام گلوج تواہے اس سے ڈرانے اور یہ تبلائے کہ یہ براا ورحرام و ناجائز کا کہے۔ اوراگر مرتی یہ ویکھے کہ بچہ اجھاکا کر رہا ہے یا تک میں مشغول ہے ،یا صدقہ وخیرات یا کسی کی اما وہیں لگا ہوا ہے، تو اسے مزید ترخیب دے۔ اور اس سے یہ تبلائے کہ یہ ہت اچھاا ورجائز کا کہے اور اس طرح سے اس کی گڑائی و دیکھ کھال رکھے تاکہ خیرو مجلائی اس کی فطرت وعا دست بن جائے۔

وران سے دسول انور علیہ العدلاۃ وانسازی نے مربیول کو بیٹم دیا ہے کہ وہ اپنی اولاد کو اپنے نبی کریم سلی اللہ علیہ وہ میں اور ان سے ازلی ہیں ہوئی میں اللہ عنہم آمھیں سے محبت اور قرآن کریم کی ملاوت کی ملقین کریں ، اس لیے کہ طبرانی حصرت علی کرم اللہ وجہدے وابیت کرتے ہیں کہ نبی کریم سلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی اللہ وسلی محبت ، اور قرآن کریم کی ملا وست ، ین طری پہلوہ ہے ۔

اس سے پہلے ہم وہ واقع نقل کر پیکے ہیں جسے ادب قراریخ کی گابول نے نقل کیا ہے کہ فضل بن زید نے ایک مرتبہ ایک دیہائی عورت سے ال نہوں نے اس عورت سے ال نہوں ہے۔ اس اس نے بارے ہیں وہ بہت نوش منظم علوم ہوا، انہول نے اس عورت سے ال نہو کے بارے ہیں دریافت کیا، تواس نے کہا کہ: جب وہ پانچ سال کا ہوگیا تو ہیں نے اسے اسا ذکے توالے کر دیا، جنانچ ہوا اس نے قران کریم حفظ کیا اور قاری بن گیا، اوراس کواس کے اس فرک انسان کی اوراس کواس کے اس خور کے دریا ہوگیا تو ہو کی ناموں میں رغبت ولائی گئی، اوراس کے آبار واجدا دسے قابی فخر کا زامے تبلائے گئے بھر جب یہ بوغ کی تمر کو بہنے گیا تو میں نے اسے شدہ مواری سکھائی، یواس بی اسر ہوگیا اور شرہ سوار بن گیا، اور متبھیا رسے ہیں ہوکر ہے گھڑل کو بہت سے جلنے لگا، اور تیمن ومدو کے طالب کی آواز برکان دھرنے لگا.

تمقین و عادی بنانے کی میعف صوری او نمونے ہیں جن شے اصول اور بمیادی کات کورسول اللہ مسلی اللہ علیہ فلم نے مقدر کیا ہے۔ اور یہ سے اور ایمان سے کھا فلہ سے نے مقرر کیا ہے۔ اور یہ سن ہج اور واقعال سے دائر ہے ہیں وافل بیل جے اسلام نے بیجے کے عقیدے اور ایمان سے کھا فلہ سے تیار کرنے سے لیے مقرر کیا ہے۔ اور واقعی جب مربی ابنی کی دی ممنت اور بیجے کی تربیت واصلاح اور عادی بنانے اور تقدیمن کرنے میں ابنی بوری جدوجہ دور در سے گا تو غالب گمان یہ ہے کہ ایسا ہے اسلام کے شکر کا سیا ہی اور مفہوط عقید سے جماؤا ور

اخلاق وكردارك وحبر يصمعاشره نوش وخرم ورسعيد موكار

وہ صنرو ری امور جن کامر بیول کوال کیے جانیا ضروری ہے تاکہ بیچے کواٹی عاد تول اور مکارمِ اخلاق کا عادی بنائیں میں ہے یہ ہے کہ :

مسی موقعہ پر بیجے کوشا بائٹس دی جائے اور تعریفی کلمات کہتے جائیں، اور کھی ال کوکوئی انعام ایک کفہ دیا جائے اور کہی ترفیب دینے سے اسلوب کواپنا یا جائے ، اور کھی فرانے کے طریقے کواپنا یا جائے ، اور ہمی کھی بعض حالات ہمی مرنی اس بات برجی مجبور ہم جاتا ہے کہ سخت سزا دسے بشرط مکیہ اگروہ سیمجھے کہ بیچے سے انحاف اور کمی کو دور کرنے کے لیے اس کی ضرورت ہے ۔

یہ تمام اسلوب بیجے کونفسیاتی فضائل اورمکام اضلاق سکھانے اورمعا تنرقی آ داب کاعادی بنانے میں فسائدہ پہنچا تے ہیں، اوراس کوایک ایسانی فضائل اورمکام اضلاق سکھانے اورمعا تنرقی آ داب کاعادی بناسے میں فسائدہ پہنچا تے ہیں، اوراس کوایک ایسافانسل بنسریوں ہے۔ اور ان کی نفومس میں اس کا احترام وعظمت ہوتی ہے .

#### 

افیری میں یکون گاکہ مربی مضارت اپنے مالات اور سکل ومورت سے افتلاف سے باوبود اگر نیجے گی تربیت اور نیک کا عادی بنانے میں اسلام سے طرفیے و ندار کو اپنالیں اور اس سے عقید ہے کا صلاح اور افتلاق کے سنوار نے میں اسلامی اسلوب افتیار کرلیں تو عام طور ہے یہ ہوگا کہ بیجے راسخ اسلامی عقید ہے اور بلند ترین قرآن افعلاق پرنشوونم پائیں گے۔ بکہ وہ اپنے اعلیٰ کا نامول اور اچھے اوصاف میں دوسرول سے لیے عمدہ وہم ترین موز نہیں گے۔ اس سے مربیول کو نوب کو شخص و مونت کرنا چاہیے ، اور اپنے بچول کی تربیت و کھین اور عادت و لوالے ور اصلاح دونہ نہ بانے کائی اور کرتے رہنا چاہیے ،اگروہ الیا کرلیں گے تو وہ اپنی ذمہ داریوں کو تمجہ سکتے ہول کے اور اپنے فرائد کر بائد کی مور کی گاڑی کو آگے کی اپنے فرائد کی گاڑی کو آگے کی طرف بڑھا چکے ہول گے ،اور اس طرح ہے وہ معاشر ہے میں امن واستقرار کی بنیا دیں مفہ واکم کرسنے والے بن جائی طرف بڑھا چکے ہول گے ،اور اس مانول اور صالح قوم کو دیم کو کرمومنول سے دل فوش ہول گے ،اور یہ بنیا نہ کہ مور کھی کرمومنول سے دل فوش ہول گے ،اور یہ بنیا نہ کہ سے ، اور یہ بنیا کہ سے ۔ اور یہ بنیا کہ کہ کھی مشکل نہیں ہے ۔

میرے خیال میں عادت وادب سکھانے کے ذریعہ تربیت کرنا تربیت سے ستونول میں سے ضبوط ترین ستونول میں سے ضبوط ترین ستو ہے۔ اور بیچے کی ایمانی نشو ونماا وراخل قی سدھارسے لیے مضبوط ترین وسیلہ ہے۔ اوراس کی وجہ یہ ہے کہ آس تربیت کا دار دیجے بھال وروک کوک اور ڈرانے اور رغبت دلانے اور ارشا دو توجیہ وینہائی پر ہوتا ہے ،اس لیے جمیں ایسے مزول کی شدیونرورت ہے جومکل طربیتے سے اپنی ذمہ داری پوری کریں ،اوراس لامی تربیت کو اس کا پوراحت دیں اس کا اہتمام کرنے کے اعتبار سے مجاوز کل کے اعتبار سے محمد اور اس کے دہنے ، ال کے لسلہ ی کلیف برداشت کرنے ، مقین کرنے اور من رمنمانی کرنے کے لیا کا سے مجی ، تاکر ستقبل قریب میں وہ اپنے بچر گوشول کو اس بیغام کا مال ودامی اور مصلح ، اور دعوت و ارشاد کی پردومسلہ جاعبت اور جہا دیے غیم مشکر کی شکل میں تجھییں ۔

بلات به بنجی کواوپ سکهاناا ورکمین سے بن اس کی دیکی دیمال رکھنا ہی ایس تدبیر ہے۔ سے بہترن نیا نج اور شاندار ٹمرات مامل ہوتے ہیں، حب کہ بڑی عمری ادب کھاناا ورتربیت کرناا در کمال کہ بہنچانا بہت کل دھن کا موت ایس الاس سے بعد ہیں۔ جسید نرس

بدالله تعالى وم كرساس شاعرتيس في كماب،

ولیس بنفعہ من بعد کا دب اور اس کے بعد ان کو اوب کھانے کا کھوٹا کر فہر ہم بوت ولا ملین و العالم ان کو اوب کھانے کا کھوٹا کر کھوٹا کی العالم میں میں میں کو مان کو م

قد ينفع الأدب الأولاد فى صغر تحقق كول كوي من ادب مكمانا فائد ينش بولب إن الغصون إذا عد لتها اعتدلت الرآب بهنيول كوسيدها كرنا چابي توسيها كريكة بي



# وعظ وصیحت کے ذریعہ تربیت کرنا

میں ان میں سے تعطن نمونے درجے ذیل ہیں:

ال وَاذَ قَالَ لُقَلْنَ لِا بَنِهُ وَهُو يَعِظُهُ يَابُنَى لَا تَشْرِكُ إِلَّهُ إِنَّ الِشَرْكُ لَظُلُمُ عَظِيْمٌ وَوَصَيْنَا الْإِنْمَانَ يَوَالِدَيهِ حَمَلَتُهُ أُمّنُهُ وَوَصَيْنَا الْإِنْمَانَ يَوَالِدَيهِ حَمَلَتُهُ أُمّنُهُ أُمّنُهُ وَهُنّا عَلْهُ وَهُنِ وَقِطله فِي عَامَيْنِ ان وَهُنّا عَلْهُ وَهُنِ وَقِطله فِي عَامَيْنِ ان وَهُنّا عَلْهُ وَهُنِ وَقِطله فِي عَامَيْنِ ان وَلَا الشَّمْولِي اللهِ اللهُ عَلَى المَصِيرِ وَلِن وَلِوَالِدَيكَ وَلِي اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ ال

خَبِيْزُ يُنْبُنَى ۚ أَفِيمِ الصَّلَوٰةُ وَأَهُر بِالْمَعَدُوْفِ وَانَّهُ عَنِ الْمُنْكِرِ وَاصْبِرْ عَلَىٰ مِّنَّاصَابُكَ \* إِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَنْرِهِرِ الْأُمُورِ \* ).

تقمال ۱۲۰۰ ما ۱۷

ا ور التُدتَّعالَى سورَهُ سباً ميں انبياعليهم السلام كى زبانی ارشا د فرماتے ہيں ؛

الْ قُلْ إِنَّكُمْ آعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ﴿ أَنْ تَقُومُوا بِلَّهِ مَثْنَىٰ وَفُوا ذِي ثُمَّ نَتَفَكَّرُوا - مَا بِصَاحِبِكُمْ مِنْ جَّنَةٍ ﴿إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيْرُ لَكُمْ بَايِنَ يَدَى عَذَابِ شَرِينِدِن قُلْ مَاسَانَتُكُمْ مِنْ اَجْدِ فَهُو لَكُهُ مُ إِنْ اَخِرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّلِ شَىٰ ۚ إِنَّا هِنْهِ فِيكُ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْدِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿ قُلْ جَاءُ الْحُقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ )).

سيا ـ وم تا وم

اورسورهٔ هوديس التُدتعالى حضرت نوح عليه السلام كى زبانى ارشا د فرمات بين :

(( قَالُوا لِنُورُمُ قَلْ جِلَالْتَنَا فَأَكُثُرَتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتُ مِنَ الصَّدِقِينَ قَالَ إِنَّمَا يَأْتِنِكُمْ بِلِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءَ وَمَا ا آنْتُمُ بِمُغِينِنَ ﴿ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نَضْعِيَّ إِنَّ اَرُدْتُ اَنْ اَنْحُكُمُ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيْدُ

كيم تم كرت رية تحيي تهين سب بتلادول كا اے بٹیااگر کوئی عمل رئی کے دانے کے برابر موتھیری پتھرسے اندر مویا سمانوں میں یا زمین کے اندر ہو التداسے ہے ی سے گا، ہے شک اللہ بڑا ہر یک بن ہے بڑا یا خبرے اسے میرے بیٹے مار کوقائم رکھ اور ایھے کاموں کی نعیبمت کیا کرا وربرے کام سے سنع کیا کر اور حوکھ میٹیں سے اس برسبر کیا کر اے شک یا نہیں ہمت کے کامول میں سے ہے.

آب يركبيي ين تمكوايك بات مجعالاً بول، وه يركرتم لنَّه ك داسته كمرمه مروبا يأكرو دو دو اور إيك ايك بھرسوجو كەتمهارسىدان ساتھى كوجنون تونهيں ہے، يە توتم كوسس ايك ورف واسعين مذب شديدكي الد سے پہنے ، آپ کہ دیکھے کہ ہیں نے تم سے جو کھے مع دونہ مانگا مروده تمهاريس رو ميرامعا وضه توليس الله س ك فمرسب اوروه سرجيز بريورى اطدع كيفض والسب آب كب ديجيد كرمرا برورد كارح كوعالب كرياسي ووغيوب كا بعانف والسبيد أنب كه ويجيك كان الله باهل يد

كرسف كا ورن دحرسف كا.

بولے اے نوح تونے ہم سے معگراکیا اور مہست جعگرہ چكا، اب كي توتوونده كرياب يم سي اگرتوسچاب، كهاكدل سي كاتواك كوالتدبي أكرج بسط كا وتم ذ تمك سکو همه بعاگ مر ۱۰ و په کارگر بوگی تم کومیری نصیحت جو بابور كرتم كونفيحت كرور جمر لتدجاتها بوكاكرتم كوكمره کرے وہی ہے مسارا رب اور مسی کی طرف و<u>ہ</u>

أَنْ يُغِوبَكُمُ مُ هُوَ رَبُّكُمُ إِن إِلَيْهِ تُرْجُعُونَ ﴾. 14 C+1- 397

اورسورهٔ اعراف بین حضرت مهودعلیه السلام کی زبانی ار ثبا و فراست مین :

اورقوم نادك طرف بهيجاان كيربهاني مبودكو بوسع اسه میری قوم الله کی بندگ کرواس سے سوتمهارا معبود کونی نبين. سوكياتم ورشيهس بوسع مردار حوكا فرتعان ك قوم مين بم دي كفت بين تجد كوعقل نهين، وريم توتج كو جعوا اگان كرست بين و ب سيميرى قومين كيد بي قانبين میکن میں مجیجا ہو ہول پروردگارعام کا بہنچا یا ہوں م کوپیا

الأوَ اللَّهُ عَايِدَ آخَاهُمُ هُودًا وَقَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللهَ مَا لَكُمُ مِّنْ إِلَا غَيْرُةَ أَفَلَا تُتَّقُونَ ﴿ قَالَ الْمَلَا الَّذِينَ كَغُرُوا مِنْ قَوْمِهَ إِنَّا لَنُولِكَ فِي سَفًا هَ فِي وَالَّا لَنُظُنُّكَ مِنَ الْكَذِيدِينَ ﴿ قَالَ لِقَوْمِ لِيْسَ إِنْ سَفَاهَهُ ۗ وَّ لَكِ نِينَ مَر سُولٌ مِّنَ مَّ بِ الْعَلَمِينِ ﴿ الْكِفْكُمُ رِسْلْتِ رُبِيْ وَ أَنَا لَكُمْ نَاصِحُ آمِنُيُ الاعراف داتامه

این رب کے اوریس تمہارا اطمینان کے لائق خیرخواہ ہوں۔

دعوت الی النّدا ورالتُهسے ڈرانے اور وعظ ونصیحت کرنے میں قرآن کریم کاسلوب وطرزمتنوع قسم کاہے ۔ چنانچہ برسب انبیار کرام علیم انصلاة وانسام کی زبانی جاری بیوا، اوران سے پیرو وجاعت سے داعیون اورا فراد کی زبانی بار بارات

کااْلمهار برقبار ہا۔ ''کونی مجمی دوخص اس بیں اختلاف نہیں *کریں گئے کہ ف*لصانہ وعظ اور مؤثر نصیحت اگریاک صاف نفوس اور <u>کھلے</u> نیریں ہو ہوئے سینے او بخوروفکر کرنے والی سمجہ واروکیم عفل کو بالے تواس وعظ پرلدیک میں صاری کہا جا تأسید اوراس کا اٹر بھی بہت زباده ببوبآسيهه

اس مفہوم کی ماکید قران کریم نے بہت سی آیات میں کے بہے ،ا ور وعظ سے فائدہ اٹھانے اوراجھی بات کا ثر قبول كرف اورنصيحت يرحمل كرف كى مار باز كحراركى سيد :

اس (ابلک) میں اسس سے بھے ہومی عبرت ہے ہے۔ ا یاس دل سے یا وہ متوجہ جوکر کان می سگا دیا ہے۔ الرَانَ فِي ذَٰلِكُ لَذِكُوكِ لِمُن كَانَ لَكُ قُلْبُ أَوْ ٱلْقُ النَّمْهُ وَهُوَشِّهِيْدٌ ﴾. ق س ٢٠ اورفرمایا ،

ا وَ ذَكِرْ فَإِنَّ اللَّهِ كُلْكِ تَنْفَعُ اللَّهُ فِمِيْبِينَ ١٠١٠.

الذاربات . د و

نييز فرمايا : ((وَمَا يُذْدِيْكَ لَعَلَّهُ ۚ يُزَكِّ ۗ أَوْيَذُكُو ۖ فَتَنْفَعَهُ

ورا انهين سمعات ريكيونكهمما أنفع وبلب مان والولكور

ورسي كوكيا خبرت يدوه سنورسي بما أيا نعيمت قبول كرساً.

اوراس كونصيصت كرنا فائده بي بينجايا .

الدِّكْرِك ». عبس - ٣ وم

اورفرمايا .

جو ذریعید سے بن کی اور دا ان کی مربیجوع بوسف واسے

(ا تَبْصِرَةً وَ ذِكْرِك رِلكُلِ عَبْدٍ مُنِيْدٍ ).

یه یادگاری سیمیاد کیفنے والور کور

بندے کے لیے۔

(( ذٰلِكَ فِي صُلِينَ ٱلْمِرْمُينَ ». بمود ربمال

نيز فرايا ؛

ہی (مفہون) سیے اسٹی خص کونصیمیت کی جاتی ہے جو لتہ

((ذَٰلِكُمْ يُوْعَفُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ

در دوراخرست برایبان رکھیاہیے۔

بِأَنلُٰهِ وَالْبِيَوْمِرِ الْلَاخِـرِ هُ».

تیم قرآن کریم ان ایات سے ٹیرسپے جو وعظ ونصیحت سے انداز کو دعوت وا رشاد *سے طریقی*ہ کی بنیا دا ورا فرا د کی اصلاح اور ماعتول كى بدايت مك بهنين كاراسته تبلاتي مين ، جو تخص قرآن كريم كامطالعه كرسه كا وه وعظ ونصيحت سے إسلوب كو قرآن کی بهت سی آیات میں ایک مشا مرحقیقت یائے گا، قرآن کریم مجی تقوی اختیار کرینے کی نصیبے نے کریا ہے اوکیھی نصیحت كرسفا ورياد وإنى كراسف كمه اجروثواب اورشان كوبيان كرتاب كيمى وعظ ونقيحت سيعبرت عاس كرسفى ترغيب دیا ہے ،اور پھرنصبیت وخیرخواہی پرامھار آا ورسیدھے راستے کی ہیروی اختیار کرنے کا تکم دیا ہے ،اور تھیر ترغیب کے ذراعیہ متوج كرتا ہے، اور انجيري فرانے ووحمكانے ہے اس اوبكو اختيا كرتا ہے . اوراس طرح سے قرآن كريم كا برط صنے وال اس سے الفاظ ومعانی میں وعظ ونصبیت کومتعدد سانچول اور منتف اسلوب میں موجود پلئے گاجو ہرزی نفروصا حب بصیرت کے ہے اس بات کی تاکید کر آہے کہ قرآن کرمیم میں و عظ کو نفو کسس کوخیر کی تربیت دینے اور حق پر آما دہ کرنے اور ہداریت سے قبول کرنے کے سلسلہ میں نہایت اہمیت دکی گئی ہے۔

اس سے قبل مم قرآن كريم سے اس بات كى كئى واضع وصر سے شہا دات بيان كريكے ہيك كدياك صاف نفوس اور كھلے بوستے سینے اوسمجھدا روغوروفکر کرنے والی عقلول سے سامنے اگر مؤثرا ندازا ور بینے وعظ وارشا د، اورعمدہ تصیحت اومخلصانہ بندوموعظت سے ذرابعہ می کو پیش کیا جائے تو وہ بلا ترو د فورًا اس کو قبول کرلتی ہیں،اورا دل لمحد میں اس سے متأثر ہوتی ہی بلکہ فورً احق کے سامنے گرون جھ کا دیتی ہیں، اور البّدی اس ھدایت کو قبول کریبتی ہیں جوالتہ نے نازل فرمائی ہے۔

یہ تو برنسے نوکوں وآ دمیول سے لیے ہیں بھر بھلاان چھوٹے بچول کا کیا کہنا جو فطرت اسلام پر پیدا ہوتے ہیں ،اوران کے قلوب پاک صاف بوستے ہیں ،ان میر کسی قسم کا تعوث و آلودگی نہیں ہوتی ، اوران کے نفوس سی قسم کی جامل خوالی میں مل<sup>ٹ</sup> نہیں ہوستے، اوراب یک وہ گناہ دعدوان کی منزل یک نہیں پہنچے ہوستے ہیں، ی ہرہے ایسے پیچے وغط ولصیحت ے اور زیادہ متأثر مول کے اوران کا نصیحت کو قبول کرنا اور زیا دہ قوی ہوگا۔

اس لیے مزیوں کو پیر تقیقت میں چاہیے کہ اگروہ اپنے بچوں سے لیے مجلائی و کمال، اور عقلی و انحلاقی پخنگی و درسگی چاہتے ہیں توانہیں وہ طریقیہ انعتیار کرنا چاہیے ہو قرآن کرمہنے وعظ ونصیمت ورہنمائی کہنے میں انعتیار کیا ہے۔ وہ عور کی عمریں ہول یا اس سے قبل کی تاکہ ان کو ایمانی واضلاقی طور برتیار کیا جاسکے اور ان کی نفیاتی ومعاتم رہی تعمیر ہوسکے۔

ال موقعہ پر برصروری معلوم ہو آ ہے کہ ہم اس طریقہ کو بایان کر دیں جسے قرآن کریم نے وعظ ونصیحت سے سلسد میں اضیار کیا ہے۔ تاکہ وہ لوگ اس کوافتیار کرلیں جن کے ذمہ تربیت کی ذمہ دا سی عائد ہوتی ہے۔ اورابنی اولادیا شاگردو کو تیار کرنے اور سنوار نے اورتعلیم دسینے و مہذب بنانے میں منزل مِقصود تک پہنچ سکیں۔

میراندازہ یہ ہے کہ قرآن کریم نے وعظ ونصیحت کے سلسلہ میں جوطریقید انتقبار کیا ہے وہ مندر حبرذیل اسلوب واندازمیں نیاز وُنتفرد ہے :

ا تسکی بخش و طمئن کرنے کا نداز جس سے ساتھ نرمی ذکیر دونول شال ہوں۔ س انداز کا انسان کے احساسات بربہترین اثر بٹر آسیے اور دلول پرزبر دست تاثیر ہوتی ہے۔ اور طمئن کرنے کا یا نرمی و کیروالاانداز قرآن کریم سے خطاب میں بہت واضح پایا بیا تا ہے جہال لوگول کے قلوب و تقول سے انبیا جلیہم السلام اور دعا قری زبانی خطاب کیا گیاہے قطعے نظراس سے کہ وہ کسی بھی بنس یا قبلیہ سے ہول پاکسی ہی شکل و صورت سے مالک ہول ۔

ان مختلف انداز کی متنوع دعوتوں اور پیغیاموں میں تعیمی نمونے درہے ذیل ہیں :

بیخوں کے لیے جواعلان کیا گیا ان میں سے:

(( وَإِذْ قَالَ لُقَنْنُ لِا بُنِهِ وَهُو يَعِظُهُ لِنُبُنَى اللهِ الرائس وقت كاذكر كيج عبد لقان نے اپنے بيٹے و كا تَشْرِكُ بِاللّٰهِ ﴾ . لقان ١٦ نعيمت كرتے بوئے كہاكہ اسے بٹيا الله كاشرك معمراً۔

سے بیٹے سوار ہوجا ہم رسے ساتھ اور کافروں سکے ساتھ مست رہ۔ لَا تَشْرِكُ بِاللَّهُ ﴾. تقان ١٣ اور حضرت نوح عليه السلام كرباني ارشاوست: (اينُّ بُنَّىَ اذْكَبُ مَّعَنَا وَلَا تَكُنُ مُّعَ الْكُفِرِ بُنَى ﴿ )). مود ٢٠٠ اور حضرت بعقوب عليه السلام كى زبانى اعلان موتاب : (افالَ ينبُنَى لَا تَفْصُض دُنْ يَاكَ عَلَا

ا ہے بیٹے اپنانواب اپنے بھائیوں کے سامنے مت بایا

اِخْوَتِ عَنَى فَيَكِيْدُوْ لَكَ كَيْدًا وَإِنَّ اللَّشَيْطُنَ كُرْنَا بِهِرُوهُ تَهَا سِهِ وَسَطَى كَهِ فَرَيِب بِنَا مِن سَمَّ البَّهِ اِلْإِنْسَانِ عَنْ وُ مُّبِينِ . )). يوسف ه شيعان انسان كاصرَحَ وَمَن سِه ـ البَّهِ اللهِ السَّانِ عَنْ وُ مُّب

اور حصرت ابراميم وحضرت بعقوب عليهااك لام كي رباني ارشاديه:

لَا يُنَبِينَ إِنَّ اللهَ اصْطَفِي لَكُهُ الدِّينَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اللهِ مِن فَلَا تَمُوْتُنَّ اللهِ وَ النَّهُ وَلَا تَمُوْتُنَّ اللهِ وَ النَّهُ وَ اللهِ وَ النَّهُ وَلَا تَمُوْتُ مِنْ اللهِ وَ النَّامُ وَلَا اللهِ وَ النَّامُ وَلَا اللهِ وَ النَّامُ وَلَا اللهِ وَ النَّامُ وَ لَا اللهِ وَ اللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللّهُ ولَا اللّهُ وَاللّهُ ولَا لِمُلّمُ وَاللّهُ وَاللّ

، اے بیٹو بے شک القدنے جن کر دیا ہے تم کو دین سوتم ہرگز ندمرنا مگرمسلمان ب

مع مريم التدفي تحد كوب ندكي اوستقر بنايا اورب ندكي

تجو کوسے جہاں ک عور واپر ، ۔۔۔ مریم بندگ کر اپنے

رب کی اور سجدہ کر اور کوئ کرساتھ کوئ کرنے والول کے۔

### عورتول کے لیے جواعلان کیے گئے:

فرشتول کی زبانی حضرت مریم علیها انسلام سے یہے اعلان ہو آہے:

(ايهَ رَبَهُ إِنَّ اللهُ اصْطَفَىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْصَفَىكِ عَلَىٰ نِسَ مِ الْعَلْمِينَ لِيهُ رِيهُ افْتُنْتِي لِرَبِكِ وَ الْمَجْدِي وَ الْرَكِعِي مَعَ الرُّحِينَ ) الْمُراكِدِينَ مَهُ الرُّحِينَ ) الْمُراكِدِينَ مِهِ الرُّحِينَ اور فرما ا

> ( النِيسَاءُ النَّبِيِّ كَسْنُنَ كَاحَدٍ مِّنَ النِّسَاءِ إِنِ اتَّقَيْنُنَ فَلَا تَخْضُغْنَ بِالْقَوْلِ فَيُطْمَعُ الَّذِي فَ فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعُرُوفًا \* )).

ا سے نبی کی بیویوتم عام عویتوں کی طرح نہیں ہوجب کے ترتقوی افتیار کر کھو ، توتم ہولی میں نزاکت مت افتیار کروکہ اکسس سے )، میشے مفس کو خیال (فاسد، پید مہونے مگاہیے جسس سے قلب میں نزانی ہے اور قاعدے کے موفق بات کماکر و۔

الاحزاب.٣٢

### و قومول کے لیے اعلان:

عضرت موسى عليه السلام كن ربانى اعلان بهو بالمنه و البقة و إن كُفْر ظَلَمُ تُمُو الْفِعْبُلَ (البقة و إن كُفْر ظَلَمُ تُمُو أَفْسَكُفُو يَا يُّغْبُلُو الْفِعْبُلُ فَتُونُو آلِلَ بَارِبِكُو فَا قَتُلُوْ آ اَنْفُسَكُفُو ذُلِكُمْ خَدْرٌ لَكُوْ عِنْدَ بَارِبِكُوْ فَتَنَابَ عَدَيْكُوْ النَّهُ الْفَصَدَ فَالْتَهُ النَّمَ النَّهُ اللَّهُ النَّهُ النَّهُ اللَّهُ اللَّه

اسقره ۱۴۰

ا سے قوم تم نے اپنا نقصان کیا یہ بچیوا بناکر ، سواب توب کروا پنے پیدا کرنے والے کی طرف ، در اپنی اپنی جال کو مار ڈالو یہ تمہارے نوس کے نزد کیا۔ تمہارے لیے بہتر ہے ، بھرمتوج ہوا تم پر بے شک وہی ہے معاف کرسنے وال نہایت مہر ہان ، اسی طرح مضرت موتی علیدانسان می کی زبان مبارک سے اعلان ہو آسہے:

اللِقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ ٱلْبِيَاءَ وَجَعَلَكُمْ مُمُوْكًا وَاضْكُمْ مَالَهُ يُؤْتِ احَدًا مِنَ الْعَلْمِينَ ﴿)). الدَّهُ ...

تم بیں نبی اورتم کو باد شاہ کردیاا ور دیاتم کو جزمہیں دیاتی جہاں میں سی کو ۔

ا ورحضرت موسی علیه السلام کی قوم کا وہ داعی جومسلمان بوگیا تھا اسس کی زبانی ارشاد ہو آہے:

((يُقَوْمِ اللَّبِعُوْنِ اَهْدِكُ سَبِيْلَ الرَّشَادِ أَ يُقَوْمِ النَّكَاهُ لِهِ الْمَخْوَةُ اللَّهُ فَيَا مَتَاعٌ وَ إِنَّ الْاَخِرَةُ النَّامُ اللَّاعُ وَ إِنَّ الْاَخِرَةُ اللَّهُ فَيَامَتَاعٌ وَ إِنَّ الْاَخِرَةُ وَكَامُ اللَّهُ الللْمُ اللَّهُ الللْمُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُ اللَّهُ الللللْمُ اللَّهُ اللللْمُ الللْمُ اللَّهُ الللْمُ اللَّهُ اللللْمُ الللْمُ اللَّ

المؤمن ريراثاله

اوردای جنول کے ذرابعدارشاد ہے:

(الفَّوْمَنَا اِنَّ سَمِعْتَ كِتبًا أُنْوَلَ مِنْ بَعْدِ مُوْسُے مُصَدِقًا لِمَا بَنِنَ يَدَيْهِ يَهْدِئَ إِلَى انْجِقَ وَرالى طَرِيْقٍ مُسْتَقِيْمٍ لِقَوْمَنَا آجِيبُوا دَاعِيَ اللهِ وَ المِنُوا بِهِ يَغْفِرْلَكُمْ قِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُجِزَكُمْ قِنْ عَذَابِ النِّيمِ مَا.

لأحقاف. ١٩٤٠

معرس بهانیون میری بردی کردی تمهین تعیک راسته بتار با بول. است میرس بهانیوی و نیوی زندگی مفن چندروزه سهد اور شعبر نے کا تھکا اتوا فرت ہی ہے۔ اور شعبر نے کا تھکا اتوا فرت ہی ہے۔ اور معلی میں کے میں تو تمہین نجات کی طرف بلاتے ہوں اور تم مجھے دوز شے کی طرف بلاتے ہوں۔

اسے قوم یاد کرواینے اوپرالتہ کا صال جب پیدا کیے

ا سے ہماری قوم والوہم ایک کتاب کرآئے ہیں جو موٹی کے بعد نازل کی گئے ہے۔ جوا ہے سے بیلی دکتابول کا تصدیق کرتی ہے۔ اور حق اور راہ راست کی طرف رہا کی کرتی ہے۔ اور حق اور راہ راست کی طرف رہا کی کرتی ہے۔ اسے ہماری قوم والوک ہا ما نوالتہ کی طرف بلانے والوں کا اور اس برا بیال سے آؤ ۔ التہ تمہ رہے گناہ معاف کر دے گا اور اس برا بیال سے آؤ ۔ التہ تمہ رہے گناہ معاف کر دے گا اور تمہیں محفوظ رکھے گا عذاب ورو ناک ہے۔

### مونین کے لیے قرآن کریم نے جواعلانا کیے بی ان بے:

( يَا يَهُمَا الَّذِيْنَ اَمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّنْرِ وَالصَّلُوةِ إِنَّ اللَّهُ مَعَ الطَّيْرِيْنَ ». البقره-١٥٣ اور فرمايا:

((يَالِيْهَ) الَّذِينَ امَنُوا الثَّقُوا اللَّهَ حَتَى تُقْتِيهِ وَلاَ تَلُوْثُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ » ِٱلرَّمِرُكِ. «ا نيزارشاد فرمايا ؛

اے سے مانو مدولو ساتھ صبرا ورنمازست سے شک اللہ میرکرنے والوں سے ساتھ سیے۔

اسدایان والوور تے رہواللہ سے جیسا اسس سے دُراً چاہنے ، اور دمروم حرمسلمان ،

((يَا يَتُهَا الَّذِيْنَ المَنُوااسُتِجَيْبُوايِسَهِ وَ لِلرَّسُولِ
اذَا دَعَا كُمُ لِمَا يُخِينِكُمْ ، )). الانفال به،
الإكاب كوحوا وازلكا في به .

رَ يَاهُ لَ الْكِتْفِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَّةٍ بَيْنَكُا وَبَيْنَكُمُ اللَّهُ نَعْبُدُ اللَّهُ اللَّهُ وَلَا نُشْرِكَ بَيْنَكُمُ اللَّهُ نَعْبُدُ اللَّهُ اللَّهُ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْعٌ وَكَلَ يَتَخِفَنَا بَعْضَا الرَبَابًا فِي شَيْعٌ وَكَلَ يَتَخِفُنَا بَعْضَا الرَبَابًا فِي فَلْوَا فَقُولُوا اللَّهِ وَإِلَى تَوَلّوْا فَقُولُوا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللْمُوالِقُولِمُ اللْهُ وَلِلْمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ الللَّهُ اللللْهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللللْمُ اللللْ

((يَاهَلُ الْكِتْبِ قَدْ جَاءَكُهُ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُهُ كَثِيْرًا مِّمَاكُنْ تَغْنَفُوْنَ مِنَ الْكِتْبِ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيْرٍ مُ قَدْ جَاءَكُمْ مِّنَ اللهِ نُؤرُّ وَكِتْبُ مُنْبِينُنُ ( )).

المائده - 10

#### نيزفرمايان

، سے ایمان والوحکم ما نواللہ کا اور رسول کامیس وقت بلائے تم کو اس کام کی طرف میں ہیں تمہاری زندگ ہے۔

ے ابل کتاب و ایک بات کی طرف جو بربرہے ہم میں ورثم میں کہ بندگی ذکریں ہم سکرالتدی، اور شریب زم میں اس کاس کو رب سوااللہ سے اس کاس کو رب سوااللہ سے ہم اگر وہ قبوں نہ کریں تو کہ ودگواہ میوکہ ہم تو حکم سے تابع ہیں۔

اے کتاب والو تحقیق آیا ہے تمہا ہے پاس سوں ہما۔ ا نا سرکر آسے تم پربہت ی چیزی جن کو تم چیا ہے تعے کتاب میں سے ، اور بہت سی چیزوں سے درگز رکر الہے : بے شک تمہارے پاکس اللہ کی حرف سے روشن اور فام کرنے والی کتاب آئی ہے۔

اے کتاب والوتم کسی ۔ ویرنہیں جب یک نہ قائم کو قو رات اور انجیل کوا ورج تم پر، ترا تمہا رسے رب کی طرف سے ، اوران میں بہتوں کو بڑھے گی شرا دت اور کفرسس کام سے جو آپ برا ترا آپ سے رب کاطرف سے سوآپ اس قوم کفار برا فسکوس زکریں ،

#### مَمُ الوَّول كُوحُوا وازلگائی ہے ال اسے:

((يَ يَنْهَا النَّاسُ اغْبُدُوا رَبَّكُهُ الَّذِي خَلَقَكُهُ وَالَّذِيْنَ صِنْ قَبْدِكُهُ لِعَلَّكُهُ تَتَّقُونَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالتَّمَاءُ بِنَا آءٍ وَ

اے توگویندگی کروا بنے رب کی سب نے تم کو پیدا کیا ، ور ان کو حوتم سے پیلے تھے ، کر تر پر سبز گار بن جا ذہب نے تہا رہے واسطے زمین کو کچھٹ بنا یا و آسسان کو عہت

أَنْزَلَ مِنَ التَّمَاءِ مَاءً فَأَخْوَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرُتِ رِزْقًا لَكُنْهِ ،فَلَا تَجْعَلْوا يِنْهِ أَنْدَادًا وَ آئَاتُهُ نَعْلَمُوْنَ - )). البقرو- ٢١ و٢٦ نيز فرما يا :

ا (يَا يَنْهَا النَّاسُ قَلْ جَاءَكُهُ بُرْهَانُ مِّنَ رَيْكُمْ وَ انْزَلْنَا لِلنِّكُمْ نُوْرًا مُبِينًا » النساريه، اور فرايا:

13.164

اس قسم کے اعلانات وکلمات پندوموغ طست قرآن کریم میں بہت کنٹرت سے پائے جلتے ہیں۔ ۷۔ قصص وواقعات کے انداز میں عبرت ونصیحت۔

یہ ایک ایسا اسلوب ہے جس سے اٹرات نفس پر پڑتے ہیں اور سے ذہن کو متا ٹرکر آہے ، اور اس کی دلیب عقل و منطق طرزی موق ہیں ، اس اسلوب کو قرآن کریم نے بہت ۔ سے مواقع پر استعال کیا ہے خصوصًا رسولول سے اپنی قومول کے ساتہ جو داقعات بیش آئے ہیں ان میں ، اور اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول صلی اللہ علیہ وقم پر نیے صوصی انعام فرایا کہ ان سے سامنے بہترین قصد میان فرمایا ، اور ان پر بہترین کلام از فرمایا ، تاکہ وہ لوگول سے لیے نشانی و عبرت کا اور یسول اکرم ملی اللہ علیہ ولم سے لیے نشانی و عبرت کا اور یسول اکرم ملی اللہ علیہ ولم سے لیے نشانی و عبرت کا اور یسول اکرم ملی اللہ علیہ ولم سے لیے نیات اور ثابت قدمی و پھٹی کا فرلعہ سبنے ، ارشا دہے :

((نَحْنُ نَقْصُ عَلَيْكَ آخْسَنَ الْفَصَصِ بِمَأَ الْاحَيْثُ الِيْكَ هَلْنَا الْقُدْانَ) لِيسف-٣-اورفرايا:

( تِلْكَ القُّرِٰكَ نَقُصُّ عَدَيْكَ مِنْ أَنْبَا يِهَا )) الاتراء ١٥٠ نيز فرايا:

، ورآسمان سے پانی آنادا بھیراس سے مہادے کھلنے کے داسطے میوسٹ کالے ، سونٹھ پاؤکسی کوالٹہ کے مقابل اورتم توجانتے ہو۔

سے لوگوتمہا سے پاکس تمہا سے رب کی حرف سے مند پہنچ کی اور آباری ہم نے تم پروانے روشنی ۔

ا سے لوگوا پنے پروردگا رہے ڈرو (کہوں کہ) قیامت اکے دن کا زلزلہ بڑی مجاری چیز ہے جسب روزتم اسے دکھیو گے ہر دووہ پلانے والی اپنے دودہ پیتے نبچے کو مجھول جائے گی اور ہر ممل والی اپنا عمل ڈال دے گی اور لوگ شجھے لیے میں دکھائی دیں گے مالا کہ وہنشہ میں نہوں گے جکہ التہ کا عذاب ہے می سخت چیز۔

ہم آپ سے سا منے بہت اچھا بیان باین کرتے ہیں اس واسطے کہ ہم نے آپ کی طرف یہ قرآن تھیجا۔

يبستيان بي كديم ان كے كيد طالات آپ كوساتے بير.

ا ورسب جین بیان کرستے ہیں آپ سے سامنے رسولول سے ہوال سے س سے آپ سے دل کوسٹی دیں ۔

سوباين كيمي يه الوال ماكه وه دهان كرير.

آپ کوموٹسی کابھی قصہ پہنچا ہے ؟

كياآب مك ابراسم كے معززمہانوں كى حكايت بني ہے۔

ال کیا آپ کو ان کست کریوں کا قصد پہنچا ہے ( دہی) فڑون دو شو بری ﴿ وَكُلَّا نَّفُصُ عَلَيْكَ مِنْ اَنْبَا إِالرَّسُلِ مَا نُثَنِّبَتُ بِهِ فُؤَادَكَ ﴾ . مَا نُثَنِّبَتُ بِهِ فُؤَادَكَ ﴾ . مرد ١٢٠٠ اورفرالي :

((فَأَ قُصُصِ الْقَصَصَ لَعَنَّهُمْ يَتَقَكَّرُوْنَ)) الاع*راف* المَّا اور فرايا:

الهَلْ اَتَّكَ حَدِيْثُ مُوْسِكَ ». النازعات الدانز المَّلْ اللهُ المُوْسِكَ ». النازعات الدانز فرايا :

الهَلْ أَتَنَكَ حَدِيْتُ ضَيْفِ إِبْرَهِيْمُ الْمُكْرَمِينَ) السَّوَيَّةُ الْمُكْرَمِينَ) السَّوَيَّةُ المُكْرَمِينَ

العَلْ اَتَنْكَ حَلِينِتُ الْجُنُودِيِّ فِرْعَوْنَ وَتُمُودَدِ إِلَى

قرآن کریم ان داقعات سے پُرسے جوا نبیا علیم الصلاۃ والسلام کے اپنی قوموں سے ساتھ نبین آسے ہیں، اور بعبن اوقا توایک ہی قصد قرآن کریم کی متعدوسور تول میں محرر ذکر کمیا گیا ہے ، تاکہ ہر مرتبد اور مرطبداس قصے کو نئے الیسے انداز سے ساتھ بیّ کیا جائے جو سابق اسلوب وطرز سسے مختلف ہو ، تاکدایک جانب قرآن کا معجزانہ شاندا راسلوب اور کمیّا انداز بیان کا نقت م ساسنے آجائے اور دوسری جانب اس عبرت کا اطہار ہوجائے جوان آیات میں پوشیدہ اور الن الفاظ و معانی سے طام ہوتی ہے جس کا دراک رانحین فی العلم اور قرآنِ کرم کی بلاغت سمجھنے والے ہی کرسکتے ہیں ۔

اس بات کویم مثال سے سمجھاتے ہیں ؟ مصرے مولی علیہ اسلام وفرعون کا قصد قرآنِ کریم ہیں مختلف جگہول پر مذکور ہے ، ان واقعات قصص ہیں سے م ہون دو قصے لیے لیتے ہیں اور کھران سمے درمیان مقابلہ کرتے ہیں ۔ تاکہ پڑھنے والے کو اس بحرار کا رازمعنوم ہوجائے : پہلا قصہ سورۂ اعراف ہیں (۱۰۲۱ ۔ ۱۳۹) میں مذکور ہے :

((وَقَالَ مُوسَى يَفِرَعَوْنُ (نِيْ رَسُولُ مِنْ رَبَّ وَالْعَلَى اللهِ الْعَلَمِينَ أَ حَقِيْقُ عَلَى ان لَا الْعَلَى اللهِ الْكَالَّ وَقُولَ عَلَى اللهِ الْكَالَّ وَقُولَ عَلَى اللهِ الْكَالَّ وَقُلْ جِنْقُلُمْ بِبَيِّنَهُ مِنْ رَبِّكُمْ اللهِ فَازْسِلْ مَعِى بَنِيْ إِسْرَآءِ يْنَى أَ قَالَ إِنْ كُنْتَ مِنَ فَازْسِلْ مَعِى بَنِيْ إِسْرَآءِ يْنَى أَ قَالَ إِنْ كُنْتَ مِنَ وَمِنَ جِنْتَ بِهَا إِنْ كُنْتَ مِنَ عَنْ أَنْ كُنْتَ مِنَ مَنَ عَنْ مِنَ اللهِ مَنْ اللهِ فَاتِ بِهَا إِنْ كُنْتَ مِنَ مَنَ عَنْ اللهِ فَاتِ بِهَا إِنْ كُنْتَ مِنَ مِنَ

اور کہاموسی نے اے فرعون میں رسول ہوں پرودگار مالم کا، قائم ہوں اس بات پر کہ نہ کہوں اللہ کی طرف سے مگر بج ہے۔ لایا موں تہا رہے پاس نشانی تمہارے رب کی موجعیج دسے میرے ساتھ بی اصرائیں کو بول الرقولایا ہے کوئی نشانی قول اس کواگر توسیا ہے۔ تب

الصِّدِقِينَ فَ لَقِ عَصَاءُ فَا ذَاهِي تُغْيَانُ

دومسرا قصه سورهٔ نازعات ( ۱۵ - ۲۷) می مذکورسید: الهَلُ أَتُكَ حَدِيْثُ مُوسِعَ إِذْ نَادِيهُ رَيُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّى سِ صُوِّت إِلَا هُبِ إِلَى فِرْعَلُونَ انَّهُ أَصْغَىٰ ۗ فَقُلْ هَلَ لَكَ إِلَىٰ اَنْ تَزَكُّ ۚ ﴿ وَ آهْدِيَتُ إِلَى رَبِّكَ فَتَخْتَىٰ ۚ فَأَرْمُهُ الْأَيْمَ ۗ الكَبْرِكُ مِنْ قُلُدُبُ وَعَضِي مَا تُوْرَادُبُرَ كِسْعَى مِنْ فَحَشَرَ فَنَادَى ﴿ فَقَالَ أَنَ رَبُّكُو الْأَعْكِ ۗ \* فَأَخَذُهُ اللَّهُ نَكُولَ الْأَخِرَةِ وَالْأُولِي \* إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرُةً لِلْمَنْ يَخْشَى \* أَ ﴾.

ن دونول قصول میں موازینکر <u>نے سے مندر حی</u>د ذیل امورکھیل کر سا<u>منے آتے ہیں</u> ا ا- يهلا قصيمفصل وطويل بيداور دوسامخقر ومجل ب.

٢ ـ دونول قصول سے سلوب وانداز میں بہت بڑافرق بے خواہ اس کا تعلق آیات و فواسل سے لمیے اور میوٹے بونے کے لیاظ سے ہو ، یاان کی ترکیب و معنی سے اعتبار سے یا امرونہی کے سیفول سے لیاظ سے۔

٣- سورة اعراف مي عبرت كامحورمن درجه ذيل امورسي تل ہے:

الف به فرغون برحبت ودليل قائم كرنايه

ب مصرت موسی علیدات م کی سیان بردلالت کرسنے واسے جزول کا فل سرکرنا ۔

ہے ۔ وہ گفتگو جو حضرت موسی علیہ اسلام اور جادو گرواں سے درمیان موئی.

حبت ودليل قائم بهوسف يرجادو ترول كاايان قبول كرنا.

لا مه فرعون كا دُرانًا دهمكا بااور وعدوعيد.

ا ڈاپ دیا نہوں نے اپنا عصاتو مسی وقت ہوگئی ۔ نهُ د ها صریح.

آپ كوموسى كائمى قند بنجاسيد؟ ١ يا دكرود ، وقت ، جب، نہیں ان کے پروروگارنے ایک پاک میدان الينى الكوى يس يكاراكم آب فرعون كے ياس جائي س نے کرشی افتیار کی ہے ،سو ،س سے کہیے کو تو جاسا ہے کہ تودرمست بوجان اورس تیری رہنانی تیرے پردردگار ک طرف کردوں جس سے تو خشیت نتی رکر ہے بھر سم نے اسے بڑی نشانی و کھائی سیکن سس نے جملایا، ور كنانهانا بميروه جدا بوكر توشش كرني لكاا وراوكول كوم جمع كيا مجر البناوا زست تقريركي وركباكه مي بول تمهارب اعلی بس پر بندنے اسے کوالیا آخرت اور دنیا کے مذا یں ہے شک اس (واقعہ) میں مری عبرت ہے اس

مے دے بوخشیت کھا ہو۔

و ۔ جا دوگرول کے دلول میں جسب ایمان کی روشنی دانل ہوگئی توان کا فرعون کی وحمکی وغیرہ کی پروا ہ نیکنا۔ نہ ۔ فرعون کے متبعین وآل اولا دکو قبط سالی و تھالول میں کمی سے منزا دینا۔

ے ۔ الله تعالی کی طرف سے ال کوغرق کرے انتقام لینا۔

سورهٔ نازعات میں جن جیزوں برزور دیاگیا وہ درج ذیل ہیں : الف ۔ خدائی کا دعوٰی کرنے برِ فرعون کی گرفت ا و راس کو ہلاک کرنا .

ب مجواک سے نصیحت وعبرت حال کرنا چاہیے ال سے لیے عبرت کاسامان۔

اس تفصیل کے بعد آپ کے سامنے وہ علیم فرقی کھنل کرا گیا ہوگا ہواں دونوں قصوں میں مذکور ہے جاس کا تعلق بلاغی ذوق سے ہویا عبرت ونصیحت حاصل کرنے کے لحاظ سے ،ال لیے یہ قطعًا درست نہیں ہے کہ سم یہ سمھیں کہ ان بار بار دہرائے جانے والے قصول میں صرف تحار ہے ،اس لیے کہ جن قصول کو قرآن کرمم نے مکر ذکر کیا ہے دہ اس طرح کے نہیں ہیں جیسا کہ ان دونول قصول کو پیش کرنے ہے آپ سے سامنے یہ فرق واضح ہو جہا ہوگا ۔ ہے۔ مواعظ ونصیحت سے ساتھ قرآنی رہنجائی ۔

قرآن کریم ان آیات سے پُرہے جن میں نصائے ومواعظ مذکور ہیں ،اوراس بی کسی نصوص وآیات بکٹرت ہیں جن میں قاری وبڑ سفنے والے کے لیے کسی پندونصیرت سے کا کیا گیا ہے جو اسے دمین و دنیا اور آخرت میں فائدہ پہلے گئ اور اس کی روح عقل وہم کی آبیاری و تیاری کرے ،اوراس خص کو اس قابل بنایا جاسکے سب سے وربیعے وہ وعوت سے میدان کاسیا ہی اور جہا دیے میدان کا غازی بن سکے ۔

قرآن کریم کارواح وقلوب بربهبت عظیم اثر مہر آئے۔ بینانچہ حبب ایک کمان شخص اللہ تعالی کی آیات کی تلاوت سنتا ہے توال سے دل بی خشوع بیدا ہو تاہے۔ اوراس کانفس اس کامشاق ہوتا ہے، اوراس کی آفاز براسکی روح حرکت میں آجائی ہے، اور وہ اللہ تعالی سے یہ عہد کرتا ہے کہ وہ اس کی نصیحت برطل بیا اوراس کی وصیت برلبیک کے گا۔ اور اوکامات کو بجالائے گا اور ممنوع اشیار سے بچھگا۔ اس لیے کہ یاس ذات کا نازل کردہ کلام ہے جو حکمتول اور بزرگی والا ہے۔ اس میں انسان کی تمام بیماریول کاشافی علاج اور حبمانی امراض اور قلوب کی بیماریول سے بچاؤگی تدہیر وعلاج مذکور ہے۔

## 

الف . سوره لقمان ميں ارشاد ہے:

((وَإِذْ قَالَ لُقَلْنُ لِإِنْبِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ لِلْبُنَيَّ

ا وراس وقت کا ذکر کیجیے جب نقمان نے ، پنے بیٹے کونفیوت

كريت بوسف كهاكرتم التدك ساتوكسي كوشركيب مت ثبر نا.

ا ور خدائے رحمان سے (خاص) بندے وہ بیں جوز مین پر فروتني كے ساتھ چلتے ہيں۔ اور حبب ان سے جالت والے لوگ بات چیپت کرتے ہیں تودہ کہ دیستے ہیں خیر، اور حجرا تول کو، پنے پروردگا سے سامنے سجدہ و قیام میں ملکے رہتے ہیں۔ وروہ جود عائی مانگتے ہیں کہ اے ہما سے برور وگارہم سے جہنم سے منزاب کو دور رکھیو،کہ ہے شک اس کا مذاب پوری تبامی ہے،اور ب شک وه در بنهم برنهمکانا ب اور در بر مقام ب ر اوروه لوگ جب خرج كرف كلتے بيل تول فضول خسرج کرتے ہیں اور نہ نگی کرتے ہیں اوراسی سے ورمیان داز کا خرجے) عندال پر رتباہیے۔ اور حو لٹد کے ساتھ کسی اورکومعبو دنهبیں یکارسے اور جس ( انسان کی)جان کو التدني محفوظ قرار دے دیا ہے اسے قبل نہیں كرتے مگردان حق پر . اور نه زما کرتے ہیں اور یوکوئی ایس كرے گاك كوسز سے سابقہ يراسے گا قيامت كے دك ، س كاعذاب مرصا جائے كا وہ س ميں ( مميشر) ذلیل بوكرير رہے كا بكر باب جو توبركرہ، وريمان ہے آئے اور نیک کا کرتا ہے۔ سوالیے توگول کوالنہ ن کی برلیرس کی ممکہ نیکیاں عنامیت کرسے گا اورا بتد تو مصيى بر مغفرت والربرا رهمت والا. ١ وربوكوني توب كرما ہے اورنيك كام كريا ہے تو وہ بھى بتدكى طرف خاص طور پر رہوع کررہا ہے ۔ اور وہ ایسے دلگ ہیں کہ بیہودہ باتوں میں شام*ن نہیں ہوستے اور حیب و*لغوشناں

كا تُشْرِكُ بِاللَّهِ عِلْمَ اللَّهِ مِنْ ب مورهٔ فردن می ارشا دیسے: ﴿ وَعِبَادُ الرَّحْمَانِ الَّذِيْنَ يَبْشُونَ عَكَمَ الْأَرْضِ هُونًا وَّمَا ذَا خَاصَبُهُمْ الْجِهِنُونَ قَالُوا سَلْمًا . وَ الَّذِيْنَ يَبِينَتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا قَوْقِيَامًا يَ وَ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبُّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۗ إِنَّ عَدَابِهَا كَانَ غَرَامًا يَّ إِنَّهَا سَارَتُ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا . وَ الَّذِينَ إِذًا ٱلْفَقُوالَهُ لِيُسْرِفُوا وَلَهُر كَفَتْرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذَٰلِكَ قَوَامًا . وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا أَخَرَ وَكَا يَفْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِيٰ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَن يَفْعَل ا ذلك يَلْقَ أَثَامًا \* يُضْعُف لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَر القيمة وَيَخْسُدُ فِيهُ مُهَانًا "الرَّاصَ تَابَ وَامَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَيِكَ بُبَيِّلُ اللَّهُ سَبِياْ نِهُمْ حَسَنْتِ ﴿ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِنِيًّا وَمَنْ تَاكِ وَعِلَ صَاعِمًا فَإِنَّهُ يَتُونُ إِلَى اللَّهِ مَتَنَابًا مِوَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُ وَنَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغِومَتُرُواكِرَامًا عَ وَالْكِذِينَ إِذَا ذُكِّرُوْا بِالبِّتِ كِتِهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَكِيْهَا صُمَّا وَّعُمْيَانًا وَ الَّذِينَ يَقُوْلُوْنَ رَبِّنَا هَبْكَنَامِنَ أَذُوَاجِنَا وَ ذُرِّيْتِنِنَا قَتَرَةَ آغَبُنٍ وَ اجْعَلْنَا رِلْمُتَّقِيْنَ إِمَامًا اوللِّكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ رَمَاصَبُرُوْا وَيُكَتَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّنَهُ وَسُلْمًا أَ خُلِدِيْنَ فِيْهَا. حَسُنَتُ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا .. قُلْمَا يَغَبُوُا بِكُمْ رَبِّ لَوْكَ دُعَآ وَٰكُمْ، فَقَدْ

#### كَذَّ نِكُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا أَمَّ ﴾.

#### الفرقان يهووتا الماء

÷ ÷ ÷

÷ ÷

**.** .

÷ ?

ہے۔سورۂ نسار میں ہیے:

الوَاغِبُدُوا اللهَ وَلاَ تَشْرِكُوا بِهِ شَنِيًّا وَ بِالْوَالِدَيْنِ الْحَسَانًا وَبِدِ الْقُرْبِ الْمُنْ الْمَالِ الْمُنْ الله وَيَنْ الله وَيَنْ الله وَيَنْ الله وَيُمْ الله وَيَنْ الله وَيُمْ الله وَيُمْ الله وَيَنْ الله وَيُمْ الله وَيْ الله وَيَنْ الله وَيَنْ الله وَيَنْ الله وَيَنْ الله وَيَنْ الله وَيَنْ الله وَيْ الله وَيَنْ الله وَيَنْ الله وَيْ الله وَيُو الله وَيْ الله وَيْ الله وَيْ الله وَيْ الله وَيْ الله وَيْ الله وَيُو الله وَيْ الله وَيْ الله وَيْ الله وَيُو الله وَيْ الله والله و

کے پاس سے گزرتے ہیں توشافت کے ساتھ گزر ماتے ہیں اوروہ لوگ ایسے ہیں کہ جب انہیں نعیت کی جاتی ہے ان سے پروردگاری آیات کے وریعے تویان پر اندھے ہمرے ہوکرنہیں گرستے ،اوریدہ لوگ ہیں ہو دھاکرتے رہتے ہیں کہ اے ہما رے پرورگار کا مواری اولادی طرف سے انکول ہم کو ہماری ہیولی اور ہماری اولادی طرف سے انکول کی شوندک علا فرما ،او، ہم کو پر ہمیزگا ول کا موار بالف کی شوندک علا فرما ،او، ہم کو پر ہمیزگا ول کا موار بالف کو سے توجوان کی تابت قبی کی شوندک علا فرما ، او، ہم کو پر ہمیزگا ول کا موار بالف کے ایک ہیں وہ بیش میں وہ بیش کے بوجوان کی تابت قبی کے بوجوان کی تابت قبی وہ بیش میں وہ بیش میں وہ بیش میں وہ بیش کے بوجوان کی تابت قبی وہ بیش میں وہ بیش میں وہ بیش میں ہوتا ہے کہ دیجے کا ، آپ کہ دیجے عموان کی تاب کہ دیجے کو میاری پرواہ ذرائجی نہ کر سے گا اگر تم عباد ت ذکر دیکے سوتم خوب میسلا ہے کہ موعنقریب عباد ت ذکر دیکے سوتم خوب میسلا ہے کہ موعنقریب یا بال بن کر دیسے گا ،

اور بندگی کروار الله کی اور شرکی ذکر وکسسی کواس کے ساتھ۔ اور مال باب سے ساتھ نگی کروا ورقرابت الول سے ساتھ نگی کروا ورقرابت الول سے ساتھ اور پیشیوں اور فقیروں اور بمسابی قریب اور بمسابی اور پاس بیٹے والے اور مسافر کے ساتھ۔ والے بہتے ہاتھ کے مال بعنی غلام با ہوں کے ساتھ۔ بات کہ کوپ ندنہ بی آ اترا نے والا بڑا آئی کرنے والا بچر کہ اللہ جو کہ کی کرتے ہیں اور سکھا تے ہیں لوگوں کو بخل او چھپاتے ہیں جوان کو دیا اللہ نے ایسے فضل سے ، اور تیا کررکھا جو بھی جوان کو دیا اللہ نے اللہ فول سے لیے فالے کا عذاب اور وہ لوگ کو کو کی اے بی فول کے دی کا فرول سے لیے فالے کا کو دی اے کے دن کا خول کو دی ایسے مال لوگوں کو دی اے کے دن کو دی کے دن کے دن کے دن کے دن کو دی کے دن کے دن

يكن الشَّيْطُنُ لَهُ قَرِينٌ فَسَاءَ قَرِينًا) النسارة ١٩٥٣ يَكنِ الشَّيْطُنُ لَهُ قَرِينًا) النسارة ١٩٥٣ عن الشاويع

النيس البير أن تُونُوا وُجُوهَكُمْ قِبِسَ الْمَشْرِقِ
وَ الْهَغِرِبِ وَلِكِنَ لِبِرَّصَنْ الْمَنْ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْهُخِرِ وَالْمَسَيِّكَةِ وَالْكِتْبِ وَالنَّيبِيِّنَ وَالْيَالِي الْهُلِكَ عَلَى حُبِّهِ ذَوِى الْقُرُلِي وَالْيَالِي وَالْيَالِي وَالْمَالَ عَلَى حُبِّهِ ذَوِى الْقُرُلِي وَالْيَالِي وَالْيَالِي وَالْمَالِي وَالْيَالِي وَالْيَالِي وَالْمَالِي وَلِي وَلِي الْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمِلِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمُؤْلِقُولُ وَالْمَالِي وَالْمِلِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمِلِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمِلْمِي وَالْمِلِي وَالْمَالِي وَالْمِلِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمِلِي وَالْمَالِي وَالْمَالِي وَالْمِلْمِي وَالْمَالِي وَالْمِلِي وَالْمَالِي وَالْمِلِي وَالْمِلْمِي وَالْمِلْمِي وَالْمِلْمِي وَالْمُلْمِي وَالْمُلْمِي وَالْمُولِي وَالْمُلْمِي وَالْمُولِي وَالْمُلْمِي وَالْمُولِي وَالْمُلْمُولُولُولِي وَالْمُلْمُولُولِي وَالْمُولِي وَالْمُولِي وَالْمُلِي وَالْمُلْمِي وَالْمُلِي وَالْمُلْمُولُولِي وَالْمُلْمُولِي وَالْمُلْمُولُولِي وَالْمُلْمُولِي وَالْمُلْمُولُولِي وَالْمُلِمِي وَالْمُولِي وَالْمُلْمُولُولِي وَالْمُلْمُولُولُولُولُولُولُولِي وَالْمُلْمُولُولُولُولُولُول

الا وَقَطَّى رَبُّكُ الْا تَعْبُدُ وَاللَّمْ اللَّهُ وَالْوَالِدَيْنِ الْمُسَانَةِ الْمُلِبَرَ اَحْتُهُمَا الْمُكِلَّهُمَا الْمُلِكِمْ الْمُلَكِلَّ الْمُلْكِمْ اللَّهُ اللْمُعَالِلَهُ اللَّهُ ا

یه .. در سبل کاساتھی شیط ن ہو تو وہ بہت بر ساتھی ہے

نیک کچی بہتی بہیں کہ اپنا مذمشرق کی طرف یا مغرب کی طرف کرو ، میکن بڑی تویہ ہے کہ بوکوئی انڈ پراور قیامت کے دن پر اور فرمشتوں پر ورسب کی بول پر، ورپیٹی برل پرایان کے دن پر اور فرمشتوں پر ورسب کی بول پر، ورپیٹی برل پرایان کا ہے ،، وراس کی مجست پر مال دے رشتہ دروں کو اور مانگئے کو اور مانگئے واول کو اور کر ذمیں چھڑا نے میں ،، ورق مم رکھے نماز دور دیا کہ دیا کہ دیا تھے ہوگری تواہی تر رکو پور کرنے دیا کہ سے بہرکری تواہی تر رکو پور کرنے والے ، ورسمتی اور مکلیف میں ، وراؤائی کے وقت نہر کے وقت نہر کھے اور مہی ہیں پر مہیزگا۔ ورسے بہی بوگ ہیں چے اور مہی ہیں پر مہیزگا۔

در آپ کارب علم کرمیاکہ س کے سوائے کسی کوز ہوج اور ماں باپ سے ساتھ مجھلائی گرو، اگر پہنچ جائے بڑھ پے وتمہ رسے ساسنے ان ہیں سے ایک یا دونوں و ذکہو ن کو موں اور خدان کو جھڑکو، ورکہوان سے اوب ک بت، اور نیازمندی سے عاجری کرکے ان کے ساسنے مندھے جھکا دو، ورہہوا سے رب ان پر چم کیمیے جیسا کہ نہوں نے مجھ کو تھوٹا ساباں، تمہارا رب خوب جانبا ہے جو تمہ رسے جی ہیں ہے۔ اگرتم نیک ہوگے تودہ رجوع کرنے والوں کو نجشاہے ۔ اور دوقرابت والے کوس کا حق ور مقاجے کوا ورم می فرکو، ویمت اٹرا ئو بیجا ، ہے شک اٹرانے و سے شیدھانوں سے بھائی ہیں ، اورشیدھان اپنے رب کا مشکر ہے ، اور گرمیمی اپنے رب کی مہرانی کے انتظار میں جس کی تم کو تو تع ہے تم ان کی طرف سے نعافل کرو تو میں جس کی تم کو تو تع ہے تم ان کی طرف سے نعافل کرو تو

وَلَا تُنْسُطُهَا كُلُ الْبُسُطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُوْرًا ﴿ إِنَّ رَبِّكَ يَنْسُطُ الِرِّزْقَ لِمَنْ يَبْشَاءُ وَ يَقْدِرُهُ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيْرًا بَصِيْرًا أَكُولًا تَقْتُلُوٓٳۤٲۉڵڒڲڬؙمْ خَشْيَةَ إمْلَاقٍ ۗ نَحْنُ نَزُوْقَهُمْ وَإِنَّاكُهُ مِإِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْأًكُمِيْرًا ﴿ وَلَا تَقَرَبُوا الزِّنَّ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةٌ وَسَاءَ سَبِيُلًا وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّذِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّيُّ \* وَمَنْ قُتِلَ مُظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهِ سُلَطْنًا فَلَا يُسْرِفُ فِي الْقَتْلِ ﴿ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُوْرًا ۞ وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَنِيمِ إِلَّا بِالَّذِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّى يَبْلُغُ الشُّدُّةُ سُواَوْفُوْا بِالْعَهْدِ النَّ الْعَهْدَ كَانَ مَنْتُؤلًا ﴿ وَاوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنْوًا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ وَلِكَ خَنِرٌ وَآخْسَنُ تَأُونِيلا وَوَلا تَقْفُمَا كَنِسَ لَكَ بِهِ عِلْمُ إِنَّ السَّمُعَ وَالْبَعَرَوَالْفُوَادَكُلُّ أَوْلِيُكُ كَانَ عَنْهُ مُسُولًا ۗ وَلاَ تَسْهُ لِهِ عَنْهُ مُسُولًا ۗ وَلاَ تَسْهُ فِي فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ، إِنَّكَ لَنْ تَغْيِرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغُ الْجِبَالُ طُوْلًا ﴿ كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَبِّبُ ثُمُّ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهُمَا ﴾.

کبہ دوان کوٹرمی کی بات ، اورا پٹا باتھ اپنی گرم ٹ کے ساتھ بدحابوا مست رکھو ورنزاس کوکھول دو بالکل کھولنا ک بھرتم بنٹیے رہوا دام کی نے موسے ہا۔۔۔ ہوار رب سب کے لیے جاہدے روزی کھول دیا ہے اور نگ معی وی کر، سیے ، وسی سینے بندول کو جا سننے والا دیکھینے والهسيعدا ومفلسى سميغوف سيعاني اولا وكويذماروالو سم روزی دیستے ہیں ان کو اور تم کو ، بیے شک ان کا ایا بری خط ہے ، ورز ناکے یکس نہ جاؤ وہ ہے بیعیا کی اوربری راه بعید. اوراس جان کوند ماردسس کوالتد ف منع كر ديا بيع تمرحق پر، وينوسم يعدم رنگيا توسم نے س مے وارث کورور دیاہے سوفیل کرنے میں صدمے ن بکل جائے اس کومددمنٹی ہے ، اوریٹیم کے مال سمے قریب نه جا و مگرحس طرح کههنر بهوجیب تک که وه اینی بوانی کویمنے، اور مهدکو پورا کروب شک عهدک پوچو بوگ اورجب م پ کر وییے گوتو ماپ پر، مجردو ورمسیچی تزاروست تولويه بهتريت اوراكس كانجاكا جعاب اور مبس بات کی تم کوخبر نہیں اس سے بیجھے مزیر و سے شک کان اورانکھ اور دل ان سب کی اسسے بیچے ہوگی . اور ر مین بر اتراتے موسے ناملو تم رمین کو بھاڑنہ والو کے ال نہ لمبا ہوکر پہاڑوں کے پہنچو گے سے سے بی بی بی ان سب میں بری چیزے تما ہے رب کی بیزاری ۔

السلامه تابه

بس کے علاوہ اور دومری نصیحتیں ، وعظ ، رہنمائیاں ، احکامات اور منہایت وغیرہ جن کو قرآنِ کریم کی آبات نے خوب کھول کر ببان کیا ہے ، اور قرآنِ کریم ان کی طرف دعوت دیباہے۔ اس کا خلاصہ یہ کاتا ہے کہ قرآنِ کریم نے اپنی توجیہات ور منہائیوں ہیں مختلف انداز اختیار سے بیل جن ہیں سے تعفن

الف . قرآن كريم كى وه رسمائى جوحروف تاكيد كے سامتھ وارد ببوئى ہے جيسے كه فرمات الهي : الإِلنَّ فِي دُلِثَ لاَ يَاتٍ لِتَقَوْمٍ لَيَعْقِلُونَ » الرمد بم ان چیپزوں ہیں . ن پوگوں کے لیے نشانیاں ہیں بوفورکرتے ہیں ۔

> الإإِنَّ فِي دُلِكَ لَا يَأْتِ لِقَنَّوْمِ يَشَفَكُرُ وُكَ ﴾.الرمدي ا *درارشادِ ر*َمانی :

لا إِنَّ فِي ذَٰ لِكَ لَا يَاتٍ لِّقَاوُمٍ لَّيْهُ عَوْنَ ﴾ يَرْس. ، • اورارتنادِ رَيَاتِي :

المَانَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرُكَ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبُ أَوْ أَ لَقُمُ السَّمْهُ وَهُوَشِّهِيْدٌ . ». ق. يه ب - قرآن كريم كى وه رمنمانى جو حروف استفهام الكاريه كے ساتھ وارد ہوئى ہے جیسے ارشا دِر یانی ہے :

ا (اَهْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَتَرَبُّصُ بِهِ رَيْبَ الْمُنُونِ ، قُلْ تَرَبُّصُوا فَيَا نِيْ مَعَكُمْ مِنَ الْمُتَّرَيِّصِيْنَ يُ أَمْرَتَأْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهَٰنَآ أَمْرَهُمْ قَوْمُ طَاعُونَ ﴿ أَمْرِ كَيْقُولُونَ تَقَوَّلُهُ } بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿ فَلْيَأْنُوا بِعَدِيثٍ مِثْلِهِ إِنْ كَانُوْا صْدِقِانِتَ۞ ٱلْمَرْخُلِقُوْامِنَ غَايِرِ شَنِّيءِ ٱلْمَرِ هُمُ الْخُلِقُونَ ﴿ أَمْرَخَكَقُوا السَّمَوْتِ وَالْأَرْضَ \* يَلُ لَا يُوقِئُونَ ﴿ أَمْرِعِنْدُهُمْ خَزَّايِنَ رَبِّكَ أَمْرَهُمُ الْمُصَّيْطِرُونَ ﴿ أَمْرَكُهُمْ سُلَّمُ يَّسْتَمِّعُونَ فِيهِ، فَلْيَأْتِ مُسْتَمِّعُهُمْ بِسُلْطِين مُبِينِ ١٥ مَلَهُ الْبَنْتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ٥ آهُرَتَنْ عَلَهُمْ آجُرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرَمٍ مُثْقَلُونَ ﴿ آمُرُ عِنْدُهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكُنَّبُونَ ﴿ أَمْرِ يْرِنْيُدُونَ كَيْنُدَاء فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمُكِينِدُونَ \* أَمْرَ لَهُمْ إِنَّهُ غَيْرُ اللهِ \*

اسمیں ان کے واسط نشانیاں میں جوکہ وصیان کرے تے ہیں۔

ہے شکد اس میں ان توگوں کے لیے شانی بہیں جوشتے ہیں

اس میں موجینے کی جگہ ہے اس کے لیے بس کے اندر ول بعيم بالكائي كان ول تكاكمية

ک کہتے ہیں یہ شاعرہے ہم اس پر گردس زمانہ کے منتقد یں ہے کہ دیجے تم منتظر مومل مجی تمہ رے ساتھ منتظ بوں.کیاان کی تعلیں ان کومپی سکھائی پیں ۔یا یہ لوگ ٹھڑیت یر ہیں ، پاکہتے ہیں کہ منوو د قرآن بالا نے ہیں اسل یہ ہے كه ان ميں ايمان جي نہيں بھير جا جير کوئی اس طرح کی بت سے ایس اگروہ سے بیں کیا وہ آپ ہی آپ بن سکے بی یا وی بنانے والے ہیں یا نہوں نے آس کول کو اور زمین کونایا ہے جل پر ہے کہ ان میں تقین می نہیں کیہ ان نوگول کے پاکس آپ کے پروردگا رسکے خزانے ہیں ایوگ حاكم (مجاز) ہيں . كيان كے ياس كونى سيوسى سيدك اس كے ذيعي سے بالیں من دیا کرتے ہیں توان میں سے بوکسن المجودہ بات (اپینے دعوی پر) کوئی کھلی دس کیا التد کے لیے تو بیٹیاں موں اور تمہارے سے بیٹے ؟ یاب ان سے مجدمعا دان طب كريتے ميں، سووہ اس باوان كے بوج سے و ب جاتے بی کیال کے پاس غیب اکاعلم ) سے کہ وہ اسے

سَبْحُنَ اللهِ عَمَّا يُثْرِكُونَ ﴿) .

طور۔ ۳۰ با ۲۳

لا ۔ قرآن کریم کی وہ رسنمائی جوعفل ادلہ کے ساتھ وار دہوئی ہے جیسے کہ ارشادِ باری ہے :

لا إِنَّ فِي خَـٰ لِمَقَ السَّلْمُوٰتِ وَ الْأَثْرُضِ وَ خَتِلَاتِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلُكِ الَّتِيٰ تَجْدِرَىٰ فِي الْبَحْدِرِبِهَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّا إِفَاحْيَا بِهِ لأرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَاةٍ مَ وَتَصْرِيْفِ الرِّرْيِجِ وَ السَّحَا بِ الْمُسَخِّوبَيْنَ السَّمَاءِ وَ الْأَمْرِضِ لَا يُتِ يَقَوْدِرنَيْغَقِلُونَ ». البقسره - ١٩٨٨ اور قرمایا :

اللوكان فنيهما الهه ألا الله كفسكا فَسُبُحْنَ اللهِ رَبِ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ». الأعبار ٢٢

بيز فرمايا :

رّمانی ہے ،

ال أَمْرِخُلِقَوُامِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْرُهُمُ الْخُلِقُونَ اللهُ الْخُلِقُونَ اللهُ الْمُ الطور - ۲۵

الوَفِي الْأَرْضِ الْمِتُ لِلْمُوقِينِينَ ' وَفِيَّ ٱلْفُسِكُهُ، أَفَكَ تُبْصِرُونَ ﴿) الذاريات ١٥٢٠

( النِسَ الْبِرَ أَن تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمُشْرِقِ و الْمَغْيِرِبِ وَلَنِكِنَّ الْبِرْصَنْ أَمَنَ بِأَلَّنَّهِ وَالْبَوْمِرِ

لکھ لیا کرتے ہیں ؟ کمایہ لوگ برائی کا درادہ دیکھتے ہیں ؟ سو یر کافر نود می برانی می گرفتار مول کے کیاان کا استد کے سواکوئی اور خداہے ؟ یاک سے اللہ ان کے شرک سے۔

بے شک آسمان اور زمین کے پیدا کرنے میں اور رات ا وردن کے بدیتے سینے میں اورشتیوں میں جو کہ دریا میں نے کر صبتی ہیں لوگول کے کام کی چیزی اور یا فی میں حبس كوكه التدف آسمان عيمالايوم بلاياس سے زمين كواس كے مرفے كے بعد اوراك ميں سب قسم كے جانور تھیلائے، اور موا وک سے بدلنے میں اور بادل میں جوکہ العداري ال ك حكم كاسمان ورمين ك ورميان . يد شكسان سي جيزون مي تقلمندون كيلي نشانيا بي .

ا گران دونول (مگهول) میں علاوہ اللہ کے کوئی معبود مور تویہ دونوں درہم برہم ہو گئے ہوتے اللہ مانکب عرش یاک سیےان امورسے بور لوگ بیان کرتے ہیں ۔

یانهول نے اسمانوں ورزمین کویدا کرلیا ہے؟ پاید کہ خود (اپنے) خانق میں ؟

ا ورزمین میں دہبت سی نشانیاں میں تقین لانے والول سے ليدا وخود تمهاري ذات مي مبي ، توكماتمهين وكماني نهيس ديا؟ د قرآن کریم کی وہ توجیہ ورمنمائی جواسلام سے عمومی و محیط ہونے کے بیان کے ساتھ مذکورہے ، جیسے کہ ارمث ا د

نیکی بیمی کونهبی کراینامند کرومشسرق کی طرف یامغرب کی طرف بکین بڑی تویہ ہے کہ جرکوئی، یمان رائے التدریہ

ا حجْدِ وَ لَمُعَيْكُةِ وَالكِتَبِ وَالنَّبِينَ وَالنَّبِينَ وَالنَّا الْهَالُ عَلَى خَبِهِ ذَوِي القُرْبِي وَالْيَتْهِي و الْمَسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْنِ وَالسَّآبِيِينَ وفي الرقاب وَأَقَامَ الصَّلُولَةُ وَ إِنَّى الزُّكُولَةُ وَالْمُوْفُونَ بِعَهْدِهِمْ مِذَاعِهَدُ وَاوَ الصَّيرِيْنَ فِي الْبَاسَاءِ وَالصَّرَّاءِ وَحِيْنَ الْبَاسِ وَلِهِاكَ الَّذِينَ صَدَقُواهِ وَأُولَيِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ١١٠٠ بِعَوِيهِ اورسورهٔ تحل میں ارشا دہیے:

الوَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِثْبَ تِبْيَانًا لِكُلِّلْشَىٰ عِ وَّ هُدًّ مُ وَرَحْهُ اللَّهُ وَ بُشْرِكِ لِلْمُسْلِمِينَ )) الْمُسْلِمِينَ )) الْمُسْلِمِينَ )) اللَّهُ 10. سورة ألعاً على سع :

«ما فرَيْفُ فِي أَلْكِتَابِ مِن شَيْعِي» . المانعلم ـ ١٩

باری ہے ؛

(رو إذًا حَكَمْتُهُمْ بَايْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ مِإِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ، إِنَّ اللَّهُ كَانَ سَمِيعًا بَصِيْرًا ﴾ النساء ٥٥٠ منوره کی اہمیت وشورائی نظام کے مقطعت ارشاد ہے

الفَّاعَفْ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْلَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ، فَإِذَا عَنَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ ﴿ إِنَّ

اللهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ... أَرَّمُرنَ ١٥٩

ورفیامت کے دن برا ورفرشتوں برا ورسب کر ہوں ، ورپیغمبرول ہیں، اور اس کی مجست ہرمال دسے یشتہ د ہے ۔ كواوريتميوركو ورمى جول كو ويسافرول كو، ورمائلي والول كو، وركر ديس جيم إن ميس ،، ورقائم ركھ ممارا ور دياكرسي زكوة اورحب عهدكري توسيض قراركو يوراكري واسے ،اورمبرکرسے والے نعتی میں اور کلیف او پڑائی کے وقت بيبي وگ بي سيحداويي پر بيز گار بي.

الريم فے آپ پرک ب آباری کھن بيان مرميز کا الدر برایت ا و رحمت اور نوشخبری مکم ماننے والوں کے لیے

بم نے نہیں جھوری کصفیر کوئی چیز . کا ۔ قرآن کریم کی وہ رہنمانی حبس میں تنبریعیت کیے قوا مدمزکور ہمں۔ جیسے کہ قضار وفیصلہ میں عدل ہیے متعلق ارشیا د

ورجب بوگوریں فیصلہ کرنے نگوتو نصاف ہےفیصر كروا بتدتم كواليمي نفيحيت كرت ہے ہے شك الته يننے و ، ورديكيف ولاسبع

سوآپ ان کومعاف کر دیجیے ، وران کے لیے بتش مدیکے اوركا كمين النسي شوره ليجيه بميرجب س كام كاقصيد كلىي توائدىرىم وسركرى التدكوتوك والور عمبت ب

ال کا (یہ اہم) کام باہمی مشورہ سے موتا ہے۔

اسے توگومم نے تم (سىب، كوايك مرد ا درايك عورت

((وَأَمُوهُ نُوشُونِ كَابَيْتَ الْمُمُ) النورى ١٣٨ انسانی مساوات کے ہارہے میں ارشاد با رک ہے: ((يَايَّهُا اتَّ سُ إِنَّ خَلَقْنَكُمْ صِن ذَكِر وَ أَنْتَيْ سے پیاکیا ہے، اور تم کو مخلف قومیں اور خاندان بنادیا ہے کدایک دومرے کو پہچان سکو، ہے شک تم میں سے پرمیز گارترانلہ کے نزد کے معزز ترسے۔

وَجَعَىٰنَكُمْ شُعُوبًا وَ قَبَا بِلَ لِتَعَارَفُوا . إِنَّ اَكْرَمَاكُمُ عِنْدَ اللهِ اَثْقِيكُمْ . ».

الجب زنت به ۱۳

یه ده ایم اندازداس دوب بین جنبین قرآن کریم نے اپنی نصیمتوں اور و خطوں میں اختیا کیا ہے، اور یہ مخلف قیم کے اسلوب و انداز ہیں جن میں سے ہرایک کا بنا الگ الگ اثر ہواکر تاہے ،اور دلوں میں ایک خال فتم کا ٹروکیفدیت پیا ہوتی ہے اور یہ ایک بانکل برہم سے کراگر تما کم مرتب ایسے کول کی تربیت اور طبر گوشوں کی اصلاح اوران کومہذب بنانے میں ان اسالیب وانداز کواختیار کریں جنہیں قرآن کریم نے اختیار کیا ہے تو بیجے بلکسی شک وشبہ کے بہترین تربیت اور اخلاق حمیدہ اور شاندار انسانی کردار اور عظیم اسلامی تہذیب میں نشوون کا یا میک گئے۔

---

رسول اکرم صلی اللہ علیہ وکم نے نصیحت کابہت اسمام کیا ہے ، اور دعاۃ اور مربول کوسین دیا ہے کہ وہ وعظ و نصیحت سے کا لیس ، اور دنیا وی زندگی میں مبرک لمال کورچکم دیا ہے کہ وہ بست کہ تھی ہوا وجس معاشرے ہیں رہا ہو ہر جگہ دای اللہ بن کررہے تاکہ وہال کے وہ باشندے اس کی رہائی اور وعظ ونصیحت سے انٹر قبول کر لیس جن میں دھڑکنے والا دل ہویا جو توجہ واسمام سے کان گاکر بات سنتے ہول ، اور تاکہ دعوت وارشا دا ور وعظ ونصیحت کے ذریعے سے ن کول کو بی نے کہ فرمہ داری پوری کرسکے جو جہالت کی دلدل میں مین سر چکے ہیں ، اور ا باحیت و آزادی کی وادی میں برطھڑا ہے ہیں ، اور ا باحیت و آزادی کی وادی میں برطھڑا ہے ہیں ، اور زینے وضلال اور گراہی کے بریا بانول میں استہ کم کر بیٹھے ہیں ، اور ا باحیت و آزادی کی وادی میں برطھڑا ہے ہیں ، اور زینے وضلال اور گراہی کے بریا بانول میں استہ کم کر بیٹھے ہیں ۔

وعظون میست اورالله کی طرف بلاند اور دین کی دعوت دینے کے سلسلہ میں نبی کرم علیب رائصلاۃ والسلام نیج احکامات دیداور رسنمائی کی ہے ان میں

#### مصح چندام مام درج ذیل مین:

ا ما کستم رحمدالتٰد حضرت تمیم بن اوس داری رضی التدعنه سے رہ ایت کرتے ہیں کہ بی کرم مسلی التدعلیہ و مم نے ارشاد فرمایا: دین نصیحت وخیزخوا بی کانا کہ ہے، ہم نے عوض کی بسس کے لیے خیرخوا ہی ونصیحت کی جائے ؟ تو آب نے ارشا د فرمایا: التٰدا وراس کی کتاب اور اس کے بیول اور سلمانوں کے ائمہ و حکام اورعوام کے لیے .

 اورا ان مستحضرت ابوسعود انصاری مین الترعنه سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرمایا: رسول التُدصلی الترعلیہ وسم نے ارشاد فرمایا جسب شخص سنے کسی تجلائی وخیر کی طرف رہائی کی تواس کو تھی دلیا ہی اجر ملے گا جدیا اجراس کی کرسنے والے کو ہے گا۔

اورا مائم سلم حضرت ابوہر بریرہ دشی النّہ عنہ سے رقابت کرتے ہیں کہ رسول النّہ سلی النّہ علیہ وقم نے ارشاد فرمایا جبنے ہیں کہ رسول النّہ سلی حضرت ابوہر بریرہ دشی النّہ علیہ وقات کے میں اللّٰہ بھی اللّٰہ علیہ ہوگئی۔ نے آجی بات کی طرف دعوت دی تو اس کو تھی اتنا ہی اجر ملے گا جمناان بوگول کو ملے گا جنہوں نے اس کی اس نی ہیں برو اور اس کی وجہ سے ان مل کرنے والوں کے اجر ہیں سسی قسم کی کمی تعبی زہوگی۔

اور بخاری وسلم مصرت بهل بن سعد سامدی رئی الله عند سے روایت کرتے بی کہ بنی کریم صلی الله علیہ وہم نے معرت میں رئی الله عند کو جب خیبر فتح کرنے کے لیے بھیجا توان سے فرایا ہم آرم سے جانا حتاکہ وہاں بہنچے جاؤتو بھران لوگول کواسلام کی دعوت دینا اور بر بتلا اگران پر الله تعالی کاکیا تق واجب ہوتا ہے . آل لیے کہ بخدااگر الله تعالی تمہاری وجہ سے ایک اومی کو بھی ہوتر ہے (سرخ اونرف عربول کے یہال نہایت اومی کو بھی ہوتر ہے اونرف سے بھی بہتر ہے (سرخ اونرف عربول کے یہال نہایت قیمتی اونرف شمار مہوتے ہے تھے تہیں یہ اونرف سل جائیں اس سے بہتر یہ ہے کہ الله تعالی تمہاری وجہ سے ایک آدمی کو میں است بردگا دے ،۔

راہ داست بردگا دے ،۔

اک سلسله میں بے شماراحا دمیث دار دمہوئی ہیں اس لیے مربوں کوچاہیے کہ ان ارشا دات ورمنہا ٹیول بڑھل کریں: اور حوکچھال احادیث میں دار دمجواسہے اس کوعملی جامہ پہنا میں ، اور خاص طور سسے وہ امور حوال کی اولا داور شاگرد دل اور مربدوں تے علق رکھتے ہیں ۔

ہمارے علم اقل نبی کریم علیہ الصلاۃ والسلام نے وعظ ونصیحت میں نہایت اعلیٰ ترین منہج وطرلیقہ افتیار کیا تھا،اور اس سلسلہ میں آپ کا اندازا ورطرلقیہ ایک مثالی طرلقیہ تھا جومخلف اسلوب واندازا ورمتنوع طرلقوں میٹ تمل تھا: آپ کے اس طریقے ومنہج میں سے اہم اہم چندنمونے درج ذبل ہیں۔

الف وقصة كاندازكوا حيار كرناجس كي جدمتاي يين

ا - برص سے مرکفی ، گنجے اور نا بنیا تخص کا قصہ : اما ) بخاری ولم رحمہااللہ حضرت ابوہر برہ وضی اللہ عندسے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے نبی کریم ملی اللہ علیہ ولم

ئے میں نے اس بحث میں ۔۔ اس تحریر ۔۔ زیادہ مدد ں ہے جوشیخ عبدالفتاح اُبُوغدہ کے مقالے "ارسول اُعلم "جوملایس و کالجول کے می مزات موسم انتقافی العاشر " کے اص ۔ ۳ ) برچھیے تھی ۔

كويه فرمات سنا؛ كربى اسرائيل مين تيتنفص تتص ايك برص كامريين، دوسراكنجا، اورتميسرا نابنيا، التدتعالي في ان مينول كالمتحان لیناچا ا چنانچان کے یاس ایک فرشہ بھیجااور وہ فرشہ ارمس سے پاس آیا: فرشة :تم کوسب سے زیا دہ کیاچیز ممبوب وسپ ندیدہ ہے ؟ ابرس: اجھازیگ اوراجھی عبلد، اور ہیکہ مجھ سے یہ بمیاری ختم ہوجائے سب کی وجہ سے لوگ مجھ سے گھن کرتے ہیں فرشتے نے فرشتے نے اس کے ہم بر ہاتھ بھیلا اور اس کی برص کی بیماری ختم ہوگئی اور اسے بہترین رنگ مل گیا۔ فرشتہ تمہیم کر ان المال میں محد فرشة : تمهین کون سامال زیاده محبوب بے و ابرس: اونرف، چنانچه اس کوایک ساله اونٹنی دے وی گئی۔ فرشة : التُدتمهارے لیے اس میں برکت عطافرمائے۔ مجمروہ فرشتہ گنبے کے یاس گیا: فرشة : تهبیں سب سے زیادہ کیا چیز محبوب ہے ؟ گنجا: اچھے بال اور بیکر مجھ سے بیمیاری دور بہوجائے سس کی دحبے لوگ مجھ سے گھن کرتے ہیں فرشتہ نے اس سے سربر ہا تھ مجیرا وہ بیماری ختم برگئی اور اللہ نے اس کوبہترین بال عطا فرما وسیے۔ فرشتہ: تہمیں کون سامال سب سے زیادہ محبوب ہے؟ گنجا: گائے. چنانچہ ا<u>سے ایک حامل گل</u>ئے دے وی کئی۔ فرشته: التُدتعالى إس مين بركست وسه میروہ فرشتہ نابنیا کے پاس آیا ہے: فرشة بمہیں کوئسی مپیزسب سے زیادہ محبوب ہے ؟ قرسه : مهیں توسی چیرسب سے ربیرہ برب ب نابنیا : یک الله تعالی مجھے نگاہ عطا کر دے اور ہی لوگول کو دیکھ سکول ، چنانچہ اس فرشتے نے اس کی انکھول ہر بته مهیلااور الله تعالی نے اس کی نگاہ ہمال کر دی ۔ فرشة بمہیں کون سامال زیادہ مبوب ہے ؟ نبنیا: تجری ، چنانچه اس کوایک حامله کبری دے دی گئی۔ ہجا ہے۔ ہرن ہب چرہ کا رایا ہے۔ یہ برت ہے۔ ۔ پنانچہ بینولِ جانورول نے بیچے وسیے اور ابرص سے افٹول سے ایک دادی بھرگئی اور گنچے کی گائیول سے ایک وادى محركى اور نابنياكى بحربول مصايك وادى محركى ـ

بچرو ہی فرشتہ اسی شکل وصورت میں ابرص سے پاس آیا ۔ فرشتہ : ایک کین آ دمی ہوں ، سامان سفر کھیے نہیں سہے ، آج اللہ کی مدد اور تمہاری امداد کے بغیریں اپنی منزل ِ قصود السنائيس بهنچ سکا، بن تم سے ال اللہ کے واسطے سے سوال کریا ہمول حس نے تمہیں بہترین رنگ اور عمدہ جلدا و مال ودولت عطاکی ایک اونٹ مانگیا ہول حسس کے ذرایعہ سے اپنے سفرکولوراکر سکول ۔

برص : (میرے اوپر) بہت ہے۔ فقوق و ذمہ داریاں ہیں۔

فرشۃ :ابیامعلوم ہو آبہے کہ میں تم کوخوب بہجانا ہول، کیاتم ابرس نہیں تھے جسے دیکھ کر روگھن کھاتے تھے ؟ کیاتم فقیر نہیں تھے تھیرالٹہ نے تمہیں یہ مال و دولت عطاکی ؟

ابرص : یه مال تو مجھے سپت ورنسپت سے ملتا چلا آر ہا ہے۔

فرشته :اگرم حبوث بوتو التدتعالي مهيل دوباره وليا بي بنا دسے جيسے تم پہلے تھے۔

وہی فرشتہ بھیرانی اسی صورت وسکل میں گنجے کے یکس آیا ۔

فرشتہ :ایکسکٹین آومی بول، وسائل سفرختم ہوگئے ہیں آئے ہیں اپنی منزل مقصود تک القہ کے ففس ور آپ کی مدا دسے ہی بہنچ سکتا بول اس لیے میں آپ سے اس ذات کے نام پرسوال کرتا ہول حس نے آپ کو مہتری بال اور امیعار نگ روپ دیا ، اور مال عطاکیا ، آپ سے صرف ایک کا نے کاسؤال ہے سب کے ذریعے سے میں اپنے سف رکو جا ہی رکھسکول ،

كنجا :مجهرير زمه داريال او حقوق بهبت رياده مبيل ـ

فرشة :ابیامعلوم برقاہیے کہ میں آپ کو بہجاتیا ہول . تبلاد کیاتم وہ گنجے نہیں تھے جسے لوگ دہکھ کرگھن کیا کرتے تھے ؛ کیاتم غریب و کمین نہیں تھے بچرالٹہ نے تہہیں مال عطاکیا ؟

گنب : يه مال تومجه اسپنے داد ابردا داسے وراثت ميل ملاسب.

وشة الرتم معوسة بهوتوالله تعالى تهين وليابى بنا دس جيستم پهلے تھے۔

محروہ فرشتہ نابینا کے پاس ای شکل وصورت میں آیا:

فرشۃ : ایکٹ کین آدمی ہول ،سفرسے تمام وسائل ختم ہو گئے ہیں ، ہیں اپنی منزلِ مقصود تک اللہ کے فضل وآپ ک مدد کے بغیرِ بہیں پہنچ سکتا ،اس لیے ہیں آپ سے اس اللہ سے نام پرسؤال کر اہول سب نے تمہیں ۔ دوبارہ نگاہ عطا ک ، ایک بجری کاسؤال ہے جس کے ذریعہ سے میں اپنے سفرکو جاری رکھ سکول.

، بن : میں واقعی نابیا تھا، التدنے مجھے نگاہ واپس دی ،اس لیے تم بوچا ہولے لوا ور بوجا ہے جھوٹر دو ، بخداتم الت کے نام پر بونبیز بھی لیناچا ہوگے میں اس میں تمہارے لیے ہرگزر کا وسٹے نہیں بنول گا،لنڈا جوجا ہولے لو

و نهارے دونوں ساتھیوں سے نارافن ہوگیا۔ ور مہارے دونوں ساتھیوں سے نارافن ہوگیا۔

### ۲- ایک عجیب وغریب لکڑی کا قصہ:

ما کاری دحمہ اللہ حضرت ابوہ بربرہ وضی التہ عنہ سے رو ایت کرتے ہیں کہ سول اللہ مسلی اللہ علیہ وسم نے بی کا کہا سے ایک آ دمی کا پذکرہ فروایا جس نے بنی امبرائیل کے سی آدمی سے ایک ہزار دینار قرض مال گاتھا۔

قرمن خواه بگوامول كوسه و تاكيس انهيس كواه بنالول.

قرض دار: الله تعالی کی شهاوت ہی کافی ہے۔

قرض خواه : كوئى صمانت ديين والالايك ؟

قرض دار: الله مي ضمانت سم يد كافي سه

قرض نواہ: تم نے بالک بیج کہا، اور تھراس نے ایک وقت مقررہ کہ کے لیے اسے پینے وے ویے، وہ قرض خواہ کو پیے ہے کرسمندی سفر پردواز ہوا اور اپنی ضورت پوری کرلی بھر دہ کی سواری کی اکاش میں سکلا باکہ اس پر سوار ہوکر قرض خواہ کو وقت مقررہ پراس کے پینے دے سے بہتے دیے سکے بہتی اسے کوئی سواری نہ کلی ، تواس نے ایک بکڑی لی اس میں سواخ کیا اور اس میں برار دینار دائل کر دیے اور ان سے ساتھ اپنی طرف سے ایک خط اس قرض نواہ کو لکھ دیا ، اور مجراس سوراخ کو بدکردیا اور اس لکڑی کوسمند کے اس کے اس کا یا ۔ اور اس کوئی کو مند کردیا ، اور کی اس کا یا ۔

قرضدار: اسے التہ آپ بخوبی جانے جی کہ میں نے فلا تشخص سے ایک بڑار دریم قرض لیے تھے، اس نے مجھ کوئی کنیل وضامن طلب کیا تھا، توہیں نے اس سے کہ دیا تھا کہ التہ کی ضمانت بہت کائی ہے وہ اس پرتیار ہوگیا تھا، اوراس نے مجھ سے کوئی گوا ہ علب کیا تھا، توہیں نے کہا کہ التہ کی گوا ہی ہی کافی ہے تووہ آپ کی شہادت پر اضی ہوگیا تھا، سواری ماسل کرنے کے لیے میں نے اپنی پوری کوشش صرف کردی تاکہ اس قرض خواہ کواس کا قرضہ والیس کردول بیکن مجھے کوئی ہوائی مرائی ۔ نہ بازی استخص نے وہ کوئی موائی ۔ نہ بازی اس بھر التہ اس تکوئی ہوائی کو آپ کی قوم ، دمی وہاں سے واپ ہواا ورا بیٹ شہر جانے کے سمند میں بھینے سے وہ کوئی سواری تلاش کرنے تاکہ اور وہ قرض خواہ جس نے اسے قرض دیا تھا وہ اس امید پر وہال آیا کہ شایک تا فائم سے ساتھ قرض دارنے اس کے بیسے بھیجے جول ، انہائک اس نے ایک تکوئی کو پانی پر تیرتے دکھا تو اس نے اسے پڑھ لیا گاگھریں جلانے سے میں جلانے سے بھیجے جول ، انہائک اس نے ایک تکوئی کو پانی پر تیرتے دکھا تو اس نے اسے بچھ لیا گاگھریں جلانے سے میں جلانے سے بھیجے جول ، انہائک اس نے ایک تکوئی کو پانی پر تیرتے دکھیا تو اس نے اسے بچھ

گھر پہنچ کر جب اس نے اس لکڑی کو حیراِ توکیا دیکھتا ہے کہ اس ہیں اس کے دینا را درا بیب خط رکھا ہولہے کچھ وقت سے بعد وہ خص بھی آگیا جس نے اس سے قرض لیا تھا اور ساتھ ہیں ایک ہزار دیٹا ربھی لے کرآیا۔ قرضدار: بخدا ہیں مسلسل کوشش کرتا رہاکہ کوئی سواری مل جائے اور آپ کو قرضہ اداکر دول لیکن آج سے قبل مجھے

کوئی سواری مبی نه ملی

قرضخواه : کیاتم نےمیری جانب کوئی جیز ہیج تھی ؟

قر *صندا ر* امیں تو آپ کو تبلار الم ہو ل کہ میں نے آج سے قبل کوئی سواری ہی نہائی.

قرضخواہ ؛ التدنے اُسس قِم کومموریک بہنچا دیا جوتم نے لکڑی میں رکھ کر بھیجی تھی ۔ چنانچے۔ قرمن دارا پنے نہا ۔ دینا ۔لے کر والیں جلاگیا

### ۳ حضرت هاجرواسماعیل علیهاالسلام کا واقعه

مام بخاری رمدالتہ حضرت عبداللہ بن عباس منی التہ عنداسے رقابت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرایا: حفرت برہم علیہ السلام حضرت اسماعیل کوسے کر آسے اور مسجدتر مرک علیہ السلام حضرت اسماعیل کوسے کر آسے اور مسجدتر مرک علیہ السلام حضرت اسماعیل کوسے کر آسے اور مسجدتر مرک و کرک جانب زمزم کے کنویل کے اوپر بیت اللہ کے پاکس انہیں ایک و زخست کے پاک جیوٹر دیا ، ان ونول مکر ہیں نہ کو کی ادم یا آدم زادتھا اور نہ وہاں پانی کانام ونشان تھ ، حضرت ابرا ہیم عید السلام نے ان دونول (مال بھیٹے ، کو د بال جیوٹر دیا وال کا کہتے ہوں اور یانی کا ایکٹ کینرہ رکھ دیا ۔

اور خود و لا سے واپس مبوسلیے ، تو حضرت اسمائیل کی والدہ ان کے جیجے جیجیے آبنی اور عض کیا ؛ ا سے ابر نہم آپ مہیں ایک ایس وادی میں چیو گرکہاں جا رہے ہیں جہال نہ کوئی منوسس ومگسار ہے اور نہ کوئی اور حیزر ۔ مہیں ایک ایس کی وادی میں چیو گرکہاں جا رہے ہیں جہال نہ کوئی منوسس ومگسار ہے اور نہ کوئی اور حیزر ۔

به بات انهول نے حضرت ابراہیم علیہ اس لام سے کئی مرتبہ کھی لیکن انہول نے ان کی طرف کوئی توجہ نہ کی ۔ حضرت باجر : کمیاا لند نے آپ کو میٹکم دیا ہے ؟

حضرت ابراميم : جي الال ـ حضرت ابراميم : جي الال ـ

حضرت بإجر بمجير توالته تعالى تهيين مركز ضالع نهين فرمائے گا۔

یکه کروه واپس آگین اور مضرت ابرا میم علیه اسلام تشریف ہے گئے۔ اور جب وه مکویس ثنیه نامی جگہ پر پہنچے ہما سے وہ لوگ انہیں دیکھ نہیں سکتے تھے تو وہال کھوسے ہوکر سبت الٹد کا رخ کیا اور ہاتھ اٹھاکر درج ذیل کلمات کے ساتھ الٹد سے دعا مانگی فرمایا :

> ((رَيَّنَا لِنِ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِيَّتِي بِوَادٍ غَنْدِ ذِى زَمْءٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ، رَبَّبَنَا ذِى زَمْءٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ، رَبَّبَنَا لِيُقِيْمُوا الصَّاوَةَ فَاجْعَلَ افْيِدَةً فِينَ النَّاسِ تَهْوِيْ النَهِمْ وَازْرُقْهُمْ مِينَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ تَهْوِيْ النَهِمْ وَازْرُقْهُمْ مِينَ الثَّمَراتِ لَعَلَّهُمْ

اے رب میں نے بیا ہے اپنی ایک اولاد کوالیے مید ن میں کہ جہال کھیتی نہیں آب سے محترم گھرکے پکس ، اسے بہ کہ رب تاکہ ق تم رکھیں نماز کو ، سومعین لوگوں سے ول ان ک طرف مائل کر دیکھیے اور ان کومیووں سے روزی دیکھیے يَضْكُرُونَ ۞ ﴾ ابرابيم ١٠٠٠ شايد وي شكركري ر

ادھ حضرت اسمایل کی والدہ نے حضرت اسمایل کو دو دو پانا شرقرع کردیا ،اور وہ نود وہ پانی پیتی رہیں بہت بوت کا پون ختم ہوگیا اور وہ خود ہی بیاسی ہوئی اور ان کا ہیں ہوئی اور وہ ان سے سامنے پاس سے لوٹ بوٹ ہونے لگاتو وہ اس خاطر کہ بی جو برنظر نربڑ سے وہال سے مسط میں ،انہول نے دیکھاکہ صفابہاڑ ان کے قریب ترین بہاڑ ہے جانچہ وہ اس برج برخ میں ،انہول نے دیکھاکہ صفابہاڑ ان کے قریب ترین بہاڑ ہے جانچہ وہ اس برج برخ میں اور وہال سے وادی کا درخ کیا کہ شاید کوئی آدمی نظر آجا ہے بہاں انہیں وہال کوئی آدمی نظر آبا، لہذا وہ صفابہاڑ سے جانچہ اور کی کا درخ کیا کہ شاید کوئی آدمی نظر آبا ہے بہار کے باس سے جانچہ اور کی ہیں ہوئی ما ندی دوڑ سنے سکیں ،اور حب وادی پار کرلی اور مروہ و بہار کے باس آئیس تواس پر تربط ہی کرا و ھرا کہ صفا سے مروہ مروہ سے ایک تواس پر تربط ہی کرا و ھرا کہ حدا کہ اور کی کہ کہ کہ کہ کہ کہ کہ سے مروہ مروہ سے صفا پر سامت مرتبہ کی ہی۔

حضرت ابن عباس رضی التُدعنها فرط تے ہیں کہ رسولِ اکرم صلی التُدعلیہ وہم نے ارشا د فرطیا : کسسی وحبہ سے لوگوں کوصفا و مروہ سے درمیان سمی کا تکم دیا گیا ہے۔

پھرجب وہ مروہ ٰپہاڑ پرمڑھیں توانہیں کسی کا واڑائی ، انہول نے ایپنے آپ کو نوطاب کرسے کہاکہ سس کرو بھیسر کان لگاکرسٹا ، مجرآ واڑائی توانہول نے فرمایا : آواز توسًا دی اگرتم کچہ مدد کرسکتے ہو تومدد کرو۔

ا چانک کیا دہمیتی ہیں کہ زمزم سے کنوی کی مگہ پر ایک فرشتہ کھٹر اسبے، اس نے اپنی ایٹرھی یا یہ فرمایا کہ اپنے پُرسے ال مگر کو پیال تک کر پراکہ وہاں سے پانی کل آیا ، تو صفرت ہاجر نے صلدی ملدی اس سے ارد گر دمنڈ پر بنا نا شروع کردی ناکہ دون بن جائے ، اور اس سے اپنے مٹ کیزے کو تھر لیا وہ جیسے ہی اپنے مشکیزے کو تھر کر وہاں سے اٹھایی تو پانی وہاں سے اور ہوش مادکر بھنے گئتا، چنا بجہ انہوں نے خود یانی پیا اور نیھے کو دووھ پلایا۔

مضرت ابن عباس رضی التُدعنها فرانتے ہیں ؛ نبی کریم صلی التُدعلیہ ولم نے ارشا دفرمایا کہ ؛ التُدتعالی حضرت آمکیل کی والدہ پر رم کرے کاش کہ وہ زمز کو بہتیا ہوا چشمہ حپوم رویتیں ۔

مچراس فرشتے نے ان سے کہا:تم لوگ ہلاکت وضیاع کاخوف نہ کرواس لیے کہ اس مگر اللہ کا ایک گھرہے جے پرلوکا اور اس سے والد تعمیر کریں گے اور اللہ تعالی ان سے اہل وعیال کوضائع نہیں کرے گا۔

بیت الله زمین سے میلے کی طرح بندتھا، و ہال سیلاً بہ آتے تھے اور اس سے دائیں بائیں سے کل کرسیلے بماتے تھے۔

حضرت ہاجراس طرح وہال رہتی رہیں ۔ یہال تک کہ ان سے پاس سے قبیلہ جریم کے کچولوگ گزرسے بوکدا، نامی عگر سے آرہے تھے ،اورمکدی کجلی جانب ہمی مقیم ہو سکئے ، وہال انہول نے ایک پرند سے کو برواز کرتے دیکھے کرکہا کہ بیہ پرندہ تو پانی کے اوبر حکبر نگارہا ہے ۔ ہم تو اس وادی سے ہارہار گزرے ہیں دیکن یہاں تو پانی نہ تھا، چنانچہ انہوں نے ایک آ دمی کونفیشِ احوال کے لیے بھیجاتو بیتہ میلاکہ پانی موجود ہے اس نے آکرا ہے ساتھیول کو خبردی . وہ سب حب پانی کے پا آسے تو دمال پانی کے پاس انہول نے حضرت اسماعیل کی والدہ کو د کھیا۔

> جرہم : کیا آپ نمبیں یہ اجازت دیں گی کہ ہم آپ سے پاک قیام کریس ؟ حضرت حاجر : جی ہاں بسکین پانی پر آپ کو کوئی تق نہ ہو گاد

> > جرهم : طهیک ہے۔

حضرت ابن عباس طنی الله عنها فرماستے ہیں ؛ رسولِ اکرم صلی الله علیہ وہم نے ارشاد فرمایا کہ حضرت اسمالیل کی والدہ کو اس قبیلے کے آسنے سیے عشی ہوئی اوروہ چاستی بھی تیعیب کہ ممانوٹسس ہول .

برصم واسے وہیں آکر تھہریسکے اور انہے گھرالول کو بھی بلاکرا پنے ساتھ تھہ الیا، اور جب اس حگہ یہ چند گھرانے آباد ہو گئے اور حصفرت اسماعیل جوال ہو گئے اور انہول نے برصم والول سے عربی سیکھ لی، اوراس میں ان سے بھی گئے بڑھ صمئے ، اور وہ ان کو دکھے کر بہت متأثر ہو نے لگے جب شادی کی ٹمر برگئی تو برصم والول نے اپنی ایک لوگ سے ان کی شادی کردی اوراس آنندیں حصفرت اسماعیل کی والدہ کا انتقال ہوگیا۔

حضرت المعیل کی شا دی سے بعد حضریت ابرامہم علیہ السلام ایسے نما ندان کو آلاکٹس کرتے ہوئے وہال پہنچے سکین ختر اسماعیل کوگھر برپرہ دورنہ یا یا توان کی بیوی سے ان سے بارے ہیں دریافت کیا ۔

خاتون خانہ: وہ ہمارے لیے شکار کرنے گئے ہیں بھیر حضرت ابراہیم علیہ السام نے اس عورت سے انک زندگی وحالات کے بارے میں بیر جیا۔

ناتونِ نوانہ : ہم بہت کلیف میں ہیں بہت بری حالت ہے اوراک نے ان سے خوب شکایت کی . حضرت ابراہم علیہ اسلام : جب تمہارا شوہر آجائے توان کوسلام کے بعد میکہ دیناکہ وہ اپنے گھری چوکھٹ بدل سے دان کی مراد تھی کہ اپنی بیری کوطلاق و یہ ہے ،۔

حضرت المعيل: كياتمهارس إس كونى آياتها؟

ن الن خانہ : جی ہاں اس تھیے ہے ایک تھے اسے تھے اور انہوں نے ہم سے آپ سے ہارے میں دریافت کیا توہم نے تبلادیا بچوانہوں نے مجھ سے پوچھاکہ ہماری زندگی کیسی گزریب ہے ؟ تو میں نے انہیں تبلادیا کہ ہم نگی و پرٹ انی کاشکا رہیں .

مستریت اسماعیل :کیاانہول نے تمہیں کوئی وصیت کی تھی یا پیغام چھوڑا ہے ؟ خاتونِ خانہ : جی ہاں ! انہول نے مجھے بیٹکم دیا تھاکہ ہیں آپ کوان کاسلام پنجا کران کا یہ بیغیام آپ کو دے دول کہ سینے گھر کی بچوکھ ہے بدل ہیں۔ حضرت اسماعیل ؛ وہ بزرگ تومیرے والدماجد تھے اورانہول نے مجھے پریکم دیا ہے کہ تمہیں مجھوڑ دول الندائم اپنے گھر حلی جاؤ، اور پر کہرکرانہول نے اس عودت کوطلاق دے دی اور بھراسی قوم کی ایک اور لوکی سے حضرت اسماعیل نے شادی کرلی . حضرت ابراہیم علیہ السلام ان کے پاس ایک زمانے کا شہیں آئے بھر جب وہ ان کے گو آہے تو وہاں حضرت اسماعیل کوموجودنہ پایا۔ ان کی بیوی سے ان کے بارے بوجھا۔

حضرت ابرامهم : اسماعیل کهال بین ؟ اورتم لوگ کیسے ہو۔

خاتون خانہ : وہ ہمارے لیے شکار کی تلاسٹس میں گئے ہیں اور ہم خیر رہت و خوشحالی میں ہیں ،آپ ہمارے مہان بنیے کھائیے بیمیے ۔

حضرت ابراہیم: تمہار کھا یا پیاکیاہے؟

خاتون خانہ: ہما الکھا نا گوشت ہے اور بیٹا انی ہے۔

حفرت ابراہیم : اسے اللہ ال کے لیے ان کے کھانے اورسینے میں برکت عطا فرما

نبى كريم الوالقاسم سلى الشرعليه وسلم في فرمايا:

یرسب کچو حضرت ابراتبیم علیه انسلام کی دعا کی برکت ہے۔

صرت ابراہیم : حبب تمہارسے شوہرانجا میں توان سے سلام کہ برینااوران کوکہ دیناکہ اپنے گھرکی جو کھ سے کو منبوط کریں ۔

جب حضرت اسماعیل آسے تو انہول نے فرمایا ؛ کیا تمہارسے پاکس کوئی صاحب آئے تھے ؟ نواتون فانہ : جی ہاں ہمارسے پاک نہایت انھی شکل وصورت والے ایک بزرگ آئے تھے (اور بیوی نے ان لی نوب تعربین کی اور انہول نے مجھ سے آپ سے بارے ہیں بوجھا ، ہیں نے ان کو تبلایا کہ ہم خیر مریت سے ہیں ۔ حضرت اسماعیل ؛ کیا انہوں نے تمہیں کوئی پہنیام و ہاتھا ؟

خاتون نحب نہ جی بال ! آپ کوسلام کہ رہے تھے اور حکم دے رہے تھے کہ اپنے گھر کی چوکھٹ کوم صنبوط رکھیں ۔

حضرت اسماعیل: وہ میرے والدبزرگوارتھے اور حوکھ ملے سے مرا دتم ہو. انہوں نے مجھے بیکم دیا ہے کہ میں تمہیں، پنے نکاح میں برقرار رکھول ہ

میصر حضرت ابراہیم وہاں ایک زمانے تک ان کے پاس نہیں آئے،اور حب وہ ان کے پہال تشریف لائے تو د کیماکہ حضرت اسماعیل زمزم کے کنویں کے قریب بیٹھے ہوئے کمان بنا سے ہیں۔ نبیا کہ حضرت اسماعی کو رہے کہ نویں کے قریب بیٹھے ہوئے کمان بنا سے ہیں۔

جب حضرت اسماً لِل في انهيس ديكها توان كے انتقبال كے ليے كھڑے ہوگئے اوران سے معانقہ كيب

(سکھے ہے)

حضرت ابراہیم: اے اہمائیل اللہ تعالی نے مجھے ایک کام کم دیا ہے۔ مضرت ابراہیم: اے اہمائیل اللہ تعالی نے مجھے ایک کام کم دیا ہے۔ مضرت اسمائیل: آپ کے رب نے آپ کوجو حکم دیا ہے آپ اسے کرگزریے۔ مضرت ابراہیم: کیاتم میری اس سلسلہ میں مدد کرو کھے ؟ مضرت ابراہیم: کیاتم میری اس سلسلہ میں مدد کرو گھے ؟ مضرت اسمائیل: میں آپ کی ضرور مدد کرول گا۔

حضرت ابراہیم:الٹدنے مجھے بیتکم دیا ہے کہ میں اس جگدا کیا۔گھر بنا وُل اور سیکہ کرانہوں نے وہاں موجود ایک بلند حبگہ (شیعے ¿کی جانب اثنا رہ کیا ۔

ور چربیت الله کی بنیادی رکاد دی گین عضرت اسمانیل تجھلاتے تھے اور حضرت ابراہیم بناتے جاتے تھے بیال کا کہ حب عمارت ابراہیم کے لیے رکادی ور کا کہ حب عمارت بند ہوگئی، تو اس پچھرکو لاے بسے مقام ابراہیم کہتے ہیں اور وہ حضرت ابراہیم کے لیے رکا دیا، ور انہول نے اس برکھڑ ہے ہوگئی اور دونول باب بیٹے یہ انہول نے اور دونول باب بیٹے یہ کہنے لگے :

ا ور د ماکرتے تھے کہ اسے ہمارسے پروردگا ہم ہے آب فرمد ہے شک آپ ہی سننے واسے جانئے واسے ہیں . «ربب تقبّ مِنْ إِنْك أنت التَّميُعُ الْعِبِيمُ». الْعِبِيمُ».

اس کے علاوہ اسی طرح کے اور بہت سے قصے بیں۔

لهذا الجصے داغط اور ممبدا مرنی اور با توفیق دائی یہ کرسکتے ہیں کہ قصد کوالیے مناسب استوب وانداز سے بیش کریں جو می طب بوگول کی قبل کے موافق ہو جیسے کہ وہ یہ بھی کرسکتے ہیں کہ قصد سے عبرت ونصیحت کے اہم لقاط کا ستخراج کری "ماکہ اور زیادہ تا تیر، دراس پر نوب بدیک ہو۔

اس بیے م فی کا کام بر جے کہ وہ قصد بیان کرتے وقت جذبات سامعین، وران براس ولقے کے اثرات مبترت میں میں اوران کا ذہان کھر بنے میں اوران کا ذہان کھر بنے میں اوران کا ذہان کھر بنے اوران کے اوران کے اوران کے دھا سے بہادے نوان کے اوران کی دل کی گہر بنول میں عبرت کے جشمے اور نصیحت کی نہر کے دھا سے بہادے نوان کے اس کانتیجہ یہ بنکے گاکہ وہ سننے والا شخص اس کی نصیحت پر کان دھرنے جمل کرنے ،اوراللہ رہ العالمین کے سامنے گردن جسک کانتیجہ یہ بناور ہو وقت اور موقعہ بوتا ہے اس بات کا کیمر فی سامعین سے عہدو ہمان کے سامنی مول کے دو اس مول کے بنیادی صول کی دو اس میں اس دین کے بنیادی صول کو اپنی عادت بنائیں ۔

اوراک طریقے سے ایک واعظ ومرنی اپنے بیار سے اندازا ورعبرت وموعظت آمیزنقاط کھول کر بیان کر کے

قصے دواقعے کی عظمت ومرتبت اورنفوس براس کے اثر کو حیوار سکتا ہے اور بھیروہ سائنین کو طہارت، روحانیت اور بخشوع کی فضا کی طرف منتقل کریسکتا ہے۔

### ب - سوال جواب کے انداز کو اختیار کرنا:

اوراس کاطرلقہ یہ ہے کہا پہنے ساتھیول کے سامنے سوالات بہیں کرسے ٹاکہ ان کی توجہ و تبیقظ کو بڑھائے اورا ل کی ذکاوت کومتحرک کرے اوران کی سمحد کوجلا بختنے اور مؤثر کن نصائح اور عبرت کی بایب مدل طریقے سیطمئن کن اندازیں ن کے ذہن شین کرسکے۔

اس موضوع کی چندمثالیں پیش کی جاتی ہیں:

ا۔ اما احمدابی کتامیسسند میں حضرت عبداللہ بن عمرو بن العامل میں اللہ عنبھاسے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرط یا : میں نے سول اللہ ملی اللہ علیہ ولم سے سلاہے آپ نے ارشاد فرط یا : کیاتم جانستے ;وکرمسلمان کو ن شخص ہے ؟ صحابہ کرام منمی اللہ منہ نے عوض کیا : اللہ وال کے سول زیادہ جائتے ہیں ۔

آب نے دریافت فرمایا ، کیاتم جائے ہوکہ مومن کوان ہے ؟

انهول نے عرض کیا: اللہ واب کے رسول سادہ جانتے ہیں.

آتپ نے ارشا د فرمایا : مئومن و مخص ہے جسس ہے لوگ اپنی جانوں اور مال ہر مامون رہیں۔

عيمرآب في مهاجر كا مذكره كيا اور فرمايا: اور مهاجروة عس ب جوبراني كوفيور وسه اور اس بيه.

۲- امام سلم رحمه التدانپی تحاب صبیح میں حصرت الومبر سرے ضی التُدعنہ سے روایت کریتے ہیں کہ انہوں نے فرمایا : رسول اکرم صلی التدعلیہ ولم نے ارشاد فرمایا : کہ تبلاؤاگر تم ہیں سے سی خص کے درواز سے پرکوئی نہر ہو۔ اوروہ ص اس میں روزانہ پانچ مرتبہ سل کر تا ہوتو کیا اس کے اجبم پر) کوئی میل کچیل اِقی رہے گا ؛

صحابه ن عض كيا بكير من الكيل باقى نهيل يسبط كار

آپ صلی الله علیه و تم نے ارش د فرمایا جیبی مثال سجے پانچے وقت کی نمازوں کی کالندتعالی ان کے ذریعے سے غلطیوں کومعاف فرما دیتے ہیں۔

۳ - امام بخاری وسم میمهاالته حضرت ابوبریره رضی الته عندست روا بیت کرتے بیں کہ انہول نے فرمایا رسول التصافیۃ علیہ ولم نے ارشا د فرمایا ہے کہم جانتے بموفلس کول ہے ؟

صحابہ نے عرض کیا : سم میں مفلس و ہ کہلا ہا ہے حسب سے پاس نہ دیم ہونہ اور سازو سامان ۔

آپ نے ارشاد فرایا : میری امت میں سے فلس شخص ہوگا جو قیامت کے روز نماز روزہ وزکاۃ کے ساتھ آئے گا ورساتھ ہی اس نے اس کو گالی دی ہوگی اور اس پرتہمت رگائی ہوگی ، اور اس کا مال کھایا ہوگا ، اور اس کا خون بہایا ہوگا ، اور اس کو مارا ہوگا ، قواس کو اس کی نیکیول میں سے دے دیا جائے گا اور اس کو اس کی نیکیول میں سے دے دیا جائے گا ہول اور خطایا کا بدلہ دیا جائے ہوا س دیاجا ہے ہوا س کے جو اس برایاں ، تو دوسرول (مظلومول ) کے گناہ لے کر اس برلاد دیے جائی گے مجر اس کو آگ میں ڈال دیاجا ہے گا۔ برایاں ، تو دوسرول (مظلومول ) کے گناہ لے کر اس برلاد دیے جائی گے مجر اس کو آگ میں ڈال دیاجا ہے گا۔

### سے ۔ وعظ ونصیمت کوالٹرتعالی کے نام کقیم کھاکر شرع کرنا:

یران لیے ناکہ سامع کو اس بات کی اہمیت کا زیرازہ مہوجائے سسے لیے تسم کھائی جارہی ہے تاکہ وہ تھی اس پرعمل -کرے یا اس سے اجتناب کرے۔

ا مامهمهم رحمدالتٰد ابنی صبحے میں نبی کریم علیہ الصلاۃ والسلام سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشاد فرمایا ،قتم ہے

اس ذات کی سس کے قبضہ میں میری جان ہے تم لوگ اس وقت تک جنت میں وائل نہ ہو گے جب نک کہ مؤمل نہ

بن جاؤ۔ اور مُومُون اس وقت تک نہ بنو گے جب تک کہ آپ میں ایک دوسرے سے مجبّت نہ کرنے لگو… کیا میں

تہ ہیں اسی چیز نہ بناؤل کہ اگرتم اس کوکروتو آپ میں مجبت کرنے لگ جائے گے آپس میں سلام کو بھیلاؤر

امام بخاری رحمہ التہ حضرت الوشری وضی التہ عنہ کی صریف روایت کرتے ہیں کہ دسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

نے ادشاد فرمایا : بخدا و شخص مؤمن نہیں ، بخدا و شخص مؤمن نہیں ، بوچھاگیا کون شخص اے اللہ کے ارشاد فرمایا : بخدا و شخص مؤمن ہیں ، بحدارت کی مشالیں کشرت سے ملتی ہیں ۔

رسول ؟ آپ نے ارشاد فرمایا : و شخص میں کے بڑوی اس کے شرسے معفوظ ومامون نہ ہول۔ اور نبی کریم صلی التہ علیہ و م

### د ۔ وغط کو دل لگی کے ساتھ ملا دینا:

اس کامقصدیہ ہوتاہیے کہ ذہن کو حرکت دی جائے ، اور ستی دور کی جائے ، اور نفس کوشوق دلایا جائے ، اس سلسلہ کی مثال :

وہ حدیث ہے ہو حضرت انس رضی التٰدعنہ سے مروی ہے جسے ابوداؤد و ترمندی رو ایت کرتے ہیں کہ انہول نے فرمایا: ایک صاحب رسول التٰدصلی التٰدعلیہ والم کی خدمت ہیں حاضر ہوئے اور آپ سے صدقہ کے اور تول ہیں سے ایک مانگا، تاکہ اس پر سامان لا دھ کر گھر لے جاسکیں . تورسول التٰدصلی التٰدعلیہ ولم نے ارشاد فرمایا ، بنم ہیں اور شینی کے بیچے پر سوار کردیں گئے ، ان صاحب نے عرض کیا : اے التٰدیکے رسول ہیں اور شینی کے نیچے کا کیا کروں گا؟

تورسول اکرم صلی الله علیہ ولم نے ارشاد فرایا کہ اوزش کومی تو اونٹنی ہی جنتی ہے۔ نبی کریم صلی اللہ علیہ ولم نے ول لگی سے اس انداز سے ان صاصب کوریا ہت ذبن شین کرادی کہ اوز فرخواہ کتنا ہی عمر سیدہ اور بار برداری سے لائق کیول نہ مجوم جائے ترسیم ہی وہ اوٹننی کا بچہ ہی رتبا ہے۔ نبی کریم صلی اللہ علیہ ولم کے اقوال مبارکہ میں اس طرح سے ول لگی کے بے شمار واقعاب صلتے ہیں۔

### لا - وعظونصيحت من دمياندروى اورتوسط كواختيار كرنا ماكه باعث الأل نهو:

المامهم مضرت جابرین سمرہ رضی اللہ عنہ سے رقوا بہت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرمایا ، میں نبی کریم ملی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ نماز بڑھا کرتا تھا توات کی نماز درمیانی ہوا کرتی تھی۔

اور ابو دافر درصدالته حضرت جابر بن سمره رضی الته عندسے روابت کرتے ہیں که رسول اکرم سلی الته علیہ ولم جعبہ کے روز وعظ ونصیحت کو طولی نہیں کرتے تھے، وہ توجینہ مختصر سے حملے ہوا کرتے تھے۔

اورنبی کریم علیه الصلاة والسلام سے بارسے میں مروی ہے کہ جب تقریر فرماتے تو نہ آئنی مختصر ہوتی تھی کہ السل ہے اورمقصد سمجہ میں نہ آسکے اور نہ آئی ہولی ہوتی تھی کہ نگ دل و آزروہ خاطر کر دسے ،اور بیھی مروی ہے کہ رسول الٹندائ علیہ ولم پندوموعظت میں ہما راخیال دکھا کرتے تھے تاکہ ہم نگ دل نہ ہوجائیں .

## و . وعظ کی قوت تا شیر کے ذریعہ حاضری پرجیا جانا:

امام ترمذی مضرت عرباض بن ساریه رضی الله عندسد روایت کرتے ہیں کہ انہول نے فرایا و سول الله ملی الله علیہ ولم نے ہمیں کے اور آنکھول سے آنسو جاری ہوگئے اور دل علیہ ولم نے ہمیں کیے اور آنکھول سے آنسو جاری ہوگئے اور دل لرزنے نگے ، توجم نے عرض کیا: اے اللہ کے رسول الیامعلوم ہو تلہے کہ یہ ایسے خص کی پندوموعظمت ہے جوزخصمت کرنا چاہتے ہیں ؟! آتب نے ارشا و فرایا: اللہ سے ڈرو کرسنے اور الود اع کہنے والا ہو، لہذا آب ہمیں کیانصیحت کرنا چاہتے ہیں ؟! آتب نے ارشا و فرایا: اللہ سے ڈرو اور میری سنت اور میرے بعد میرے فلفاد کی ہوایت یا فتہ و جاریت وینے والی سنت کی پروی کرو، اور اس کومفرولی تھا کہ اواس لیے کہ ہر بیوست گراہی ہے۔

مسندالم احمدومچیمسکمی مصرت ابن عمرضی النّدعنها سے مروی سبے کدانهول نے فرایا : ایک روز سول تلّه صلی النّدعلیہ وم نے منبر پریہ آیت تلاوت فرائی :

اوران نوگوں نے التدکی خطمیت نرکی جسیں عظمیت کرنا چا ہیئے تھی ، اورحال پر ہے کرسیاری زمین اس کی مثعی ((وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَتَى قَدْرِهِ \* وَالْاَرْضُ جَيِيعًا قَبْضَتُهٔ يَوْمَ الْقِلْيَمَةِ وَالسَّمَا وَتُ مَطِولِيْتُ بِيَمِيْنِهِ

سُبِعْنَهُ وَتَعْلَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ١٠.

بی بوگی قیامت کے دن اور آسمان اسس کے داہنے ہاتھ میں بیسطے ہول گے، وہ پاک ہے اور برترسینے ان لوگوں کے شرک سے۔

ر- ۲۰ لوگوں کے شہرک

اور رسول التُرصلی التُدعلیه ولم اینے دستِ مبادک کوآگے بیچے کی جانب حرکت دسے رسبے تقے ،اپنے رب کی بزرگی بیان فرما رہبے تھے کہ اینے رب کی بزرگی بیان فرما رہبے تھے کہ رب فرما آسے : میں جبّا رمول ،میں مشکبر بمول ،میں بادشاہ مہول ،میں عزیز مول ،میں کریم میول ،اور اس وقت اسبی کیفیدت طاری بمولی گدمنبر تھوانے دگائی کہ ہم یہ کہنے نگے کہ وہ گرم پرسے گااور رسول الترصمی الله علیہ دیم کوئے کرگر جائے گا۔

واعظ ودامی لوگول پراس قوت ِ ماثیر و حیجا جانبے سے اس وقت تک متصف نیہ بی ہوسکتا جب یک کاس پین خلوص نیت ، رقت ِ قلب بختوع ِ نفس ، صفائی باطن اور روح کی پاکیزگی نه ہو . ورندیہ یا در کھنا چاہیے کہ اللہ را سے یہ ال مسئولیت وذمہ دا بی بہت بڑی ہے۔

ابن أبى الدنیا اوربیقی سند جدید سے ساتھ مرسلاً مالک بن دنیادسے اور وہ معنبت من رضی النہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فوایا : رسولِ اکرم صلی اللہ علیہ وکم نے ارشا د فرایا ہے ، کوکی شخص ایسانہ میں کہ وہ کوئی خطب دسے (وعظ کرے) مگر ہے کہ روز قیامت اس سے اللہ جل شانہ یہ بچھے گاکہ اس کا وعظ سے کیا مقصد تھا ؟ چنانچہ مالک بن وینارکی حالت یہ تھی کہ وہ جب اس حدیث کو بیان کیا کہتے تھے تو رونے لگتے بھرید فراتے : تم لوگ یہ بھتے موکم میں اللہ عنوں کوئے نہ ہوکہ میں تم سے جوگفتگو کرتا موں اس سے میری آنھوں کو ٹھنڈک ماصل موتی ہے ، اور میں یہ بخول سمحتا ہوں کہ اللہ عَرْق بھر سے اس کے بارے میں یہ بوچھے گاکہ میں نے اس سے کیا چا با تھا ؟ تو میں یہ عض کرول گا : اسے اللہ آپ میں سے دوآ دمیول میں نے اس میں موجوب تھی تو میں کھی ہی اسے دوآ دمیول میں سے میں نہ کہا ۔

اوروہ دائی بوصرف زبان سے کہنے والا ہوا ورتصنعاً باتیں کرتا ہوتا کہ اس کے ذریعہ سے لوگول کے دلول کوگرویڈ بنائے س کے اور اس دائی کے درمیان بہبت فرق ہے جو مخلص موا وراسالی کی خاطراس کا دل مجروح ہو، دل کی دھڑکن اورغم وملال کی سؤرش کے ساتھ اس کی زبان سے بات کلتی ہو، اس لیے کہ سلمانوں کی تکلیف وہ اور مُلکین کن حالت اس کے سامنے ہے: طاہر بات ہے کہ دوسرے دائی کی بات میں بہبت زیادہ اثر موگا، اور اس کی بات برلوگ زیادہ لبیک کہیں گے، اور اس کے کلام سے زیادہ متأثر مہول گے اور خوب نصیحت حاصل کریں گے۔

مضرت عمزین ذرسنے آپنے والدسے عض کیا : اسے میرسے اباجان ! کیا وسے ہے کہ آپ جب لوگول سے مخاطب موستے ہیں تولوگول کو رلا ڈالیتے ہیں ، ا ورحب آپ سے علاوہ کوئی اور شخص ان سے مخاطب ہوتا ہے تو یہ بات نہسیں ہوتی ؟! انہول نے کہا :میرے بیٹے ہات یہ ہے کہ وہ عورت جومصیبت زوہ ہونے کی وجہ سے نوحہ کرری ہو(رو ری ہو<sub>)</sub> وہ کرایہ پررونے والی عورت کی طرح ہرگزنہ میں ہوسکتی ۔

ابوداؤد رحمدالتٰد مصرت ابوہر مریہ وضی التٰدعنہ سے دوایت کرستے ہیں کہ انہوں نے فرمایا رسول التہ ملی التٰہ علیہ ت علیہ ولم نے فرمایا ہے : جوشخص بات کرنے کا طرز واندازاس لیے پیکھے تاکہ اس سے لوگوں سے دلول برقبعنہ کرسے توقیا سے روز التٰہ تعب اللے زاس سے نفل کو قبول فرما بیُں سے اور نہ فرض کو (یا نہ توبہ قبول ہوگی نہ فدیہ و برلہ )۔

### ز\_ مضرب الامثال سمے ذریعہ نصیحت کرنا:

نبی کریم ملی الته علیه ولم کی عادت مبارکه تیمی که آپ اپنی نصیحت ووعظ کی وضاحت سے لیے اسی شالیں پُن کیا کرتے تھے جولوگ نودا پنی آنکھول سے مشا ہرہ کیا کرتے تھے، اور خودان کے اختیارا ورخیال کے دائرہ میں آتی ہول اور آپ کا مقصداس سے یہ ہوتا تھا کہ نفسس پراس ومعظ کا اثر زیادہ سے زیادہ ہمدا ور ذہن میں وہ چیسے نور سے اسن میں ہا

ن انی اپنی سن " میں مصرت انس رضی الله عند سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرایا رسول اکرم ملی اللہ علیہ فرم نے ارشاد فرمایا ہے کہ اس مؤمن کی مثال ہو قرآن کریم کی الادت کرتا ہو ترنج بین لایک مجبل ہے ہومومی کی طرح کا ہو تاہیے ) کی طرح ہے جس کی خوشومی ہیاری ہوتی ہے اوراس کا مزام بی عمدہ ہوتا ہے ، اوراس مؤمن کی مثال ہو قرآن کریم کی تلاوت نہیں کرتا اس مومن کی مثال ہو قرآن کریم نہیں براحت اس کی مثال ہو قرآن کریم نہیں براحت اس علیہ کے سے س کا مزام دو ہوتا ہے اوراس میں نوشبو کوئی نہیں ، اور بر سے ساتھی کی مثال ہو قرآن کریم نہیں براحت اس میں عضول کی سے بی کی مثال ہو قرآن کریم نہیں براحت اس میں عضول کی سے بی کہ اگر اس کی جبی کی سیاہی خرجی گئے تو دھوال صور پہنچے گا۔

کی مثال ای ہے جسے کہ لو ہار سے باس میں ایسے نہایت واضح انداز سے خیر کی جانب ترغیب دی گئی ہے اورانی سے رو کا گیا ہے کہ ہو مناطبین سے وائر واقتیار میں ہے۔

### ے ۔ ہاتھ کے اشارے سے وغطول فیسے:

نبی کریم سلی اللہ علیہ وہم جب سی اہم بات کی تاکید کرنا پیا ہت<u>ہ تھے</u> تو دونول باتھول سے اس اہم کام ک جانب اشارہ کیا کرتے تھے بس کا اہمام اور بس پرعل کرنا لوگول کے لیے صنوری تھا۔

ا مام بخاری مسلم رحمہاالتٰہ مصنوت ابوموشی اشعری دضی التٰہ عَنہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرایا : سول اکرم صلی التٰہ علیہ ولم نے ارشا دفرالیا ہے کہ : ایک مون دوسرے مؤمن سے لیے عمارت کی طرح ہے کہ اس کا ایک حصہ دوسرے کو قوت بہنچا یا ومضبو لوکر تا ہے ، یہ فرماکر رسول التّصلی التّدعلیہ وقم نے ابنی انگلیب ال ایک دوسرے میں داخل فرما دیں ۔

ا ما بخاری رحمه انته حضرت بهل بن سعد ساعدی رضی الته عنه سنے روایت کرستے ہیں کدانہوں نے فروایا : سولِ اکرم صلی الته علیہ ولم نے ارشاد فرمایا ہے : میں اور یتیم کی پروسٹ کرنے والا جنت میں اس طرح ہول کے اور آنے اگشت شہا دت اور اسکے برابر والی انگلی کی جانب اشارہ کیا ۔

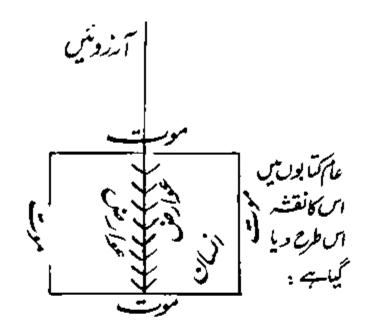
الم ترمذی رسمالته ابنی سنن بیس حضرت سفیان بن عبدالته بجلی رضی الته عندسے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرمایا میں نے عرض کیا اے اللہ کے دس کوئی ایسی بات بالا دیجے جب کوئی مضبوطی سے تھا کول ، آپ نے ارشاد فرمایا کہ تم یک ہومیرارب اللہ سے اور تعجراس براستهامت اختیار کرو بیس نے عرض کیا اے اللہ کے رسول سب سے زیادہ وہ توفاک چیز کیا ہے اللہ کو مجھ سے خطرہ جو ؟ ا آب نے اپنی زبان مبارک بچرو کرفرمایا : یہ اسلامی کو مجھ سے خطرہ جو ؟ ا آب نے اپنی زبان مبارک بچرو کرفرمایا : یہ ا

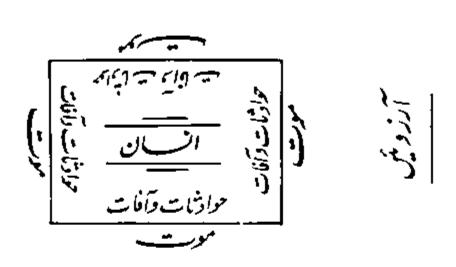
#### ط - كيرول ورخطوط كي ذيعيه وضاحت اورصيحت كرنا:

نبی کریم سلی التُدعلیہ وہم معبض اہم باتوں کی وضاحت اور بعبض مفید تصورات کو لوگوں کے زبن کے قریب کینے کے بیے اپنے صحابہ کے سامنے خطوط و مکیریں کھینچ کر سمجھا یا کرتے تھے۔

الم بخاری اپنی کتاب صیح " میں حضرت عبداللہ بن مسعود ضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہول نے ارشاد فرطایا: رسول اکرم صلی اللہ علیہ ولئم نے ہمارے سامنے ایک مربع دائرہ بنایا، اور معیراس سے باہر نکلنے والی ایک لکہ تھینچی اور مجربہت می چھوٹی چھوٹی میرسی اس طرف سے تھینچیں جو درمیان میں تھی اور ان کارخ اس جانب تھا جو درمیان ہیں تھی اور بیار شاد فرطایا: بیرانسان سبے اور بیرامربع دائرہ ،اس کا وقت مقررہ سبے جو اسے جارول طرف سے تھیرے ہوئے ورمیان کی امیدی و آر دہئی ہیں اور چھوٹی میرسے ہوئے سبے اور یہ انسان کی امیدی و آر دہئی ہیں اور چھوٹی میرسی ہوں ماد تا ہے وافات ہیں جو ابھائی سب سے تھی جائے تو دوسری کا دوائر اس سب سے تھی جائے تو میرسی کا اور اگران سب سے تھی جائے تو میرسی اللہ علیہ والے انہ تا تہ تائہ ہوئی کو میرسی کا دوائر اس سب سے تھی جائے تو میرسی کی اور اگران سب سے تھی جائے تو میرسی کی میرسی کی اور اگران سب سے تھی جائے تو میرسی کی میرسی کی اور اگران سب سے تھی جائے تو میرسی کی میرسی کی میرسی کی اور اگران سب سے تھی جائے تو میرسی کی میرسی کی میرسی کی اور اگران سب سے تھی جائے تو میرسی کی میرسی کی میں کی کر میرسی کی اور اگران سب سے تھی جائے تو میرسی کی کر میرسی کی اللہ علیہ ولئے میں کر میں کی اور اگران سب سے تھی جائے تو میں کر میں کی کر میں کی اور اگران سب سے تھی جائے تو میں کر میرسی کی کر میں کی اور اگران سب سے تھی جائے تو میردی کی دور اور در اس سے تھی جائے تو میردی جائے تو میردی کر میاں کی کر میں کی کر میں کی کا دور اگران سب سے تھی جائے تو میردی کی کر میں کر میں کر میں کر میاں کر کر میں کر کر میں کر میں کر میں کر میں کر میں کر میں کر کر میں کر میں کر میروں کی کر میں کر



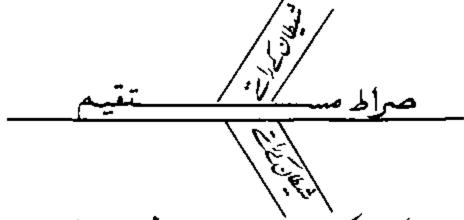




نبی کریم مسلی التدعلیہ ولم نے زمین پر جو کلیر کی تعییں ان سے ذرایعہ آپ نے یہ بیان فرمایا کہ انسان اور اس کی طول ولمبی چودی آرزوؤں وامیدول کے درمیان اچانک موت یا آفات ومصائب کس طرح مائل ہوجائے ہیں ،یا بھرختم کرنے والا بڑھا یا آجا آ ہے معلم اقران بی کریم ملی اللہ علیہ ولم کی طون سے بینہ ایت عمدہ وشاندار وضاحت تھی ۔

درمیان کی تکبیر پرر که کرمندرجه ذیل آیټ کریمیه نلاوت کی:

ا ورحکم کیا کہ یمیری سیعی را ہے سوسس پرجپوا و۔ اور رستوں پرمست میوکہ وہ تم کوجہ کردیں گے اللہ کے النے سے یتم کوحکم کردیا ہے تاکہ تم بچتے رہو (( وَ أَنَّ هٰ لَمُا صِرَاطِى مُسَتَقِينَمُ أَفَا تَبِعُوهُ ، وَ أَنَّ هٰ لَمُا صَرَاطِى مُسَتَقِينِمُ أَفَا تَبِعُوهُ ، وَلَا تَتَبِعُوا السُّبُلُ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ، وَلَا تَتَبَعُوا السُّبُلُ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ، وَلَا تَتَبَعُوا السُّبُلُ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ تَتَقُونَ )، والعام ١٥٠ ذليكم وصليكم به لعَلَّكُمْ تَتَقُونَ )، والعام ١٥٠ أن الما ما ١٥٠ أن الما من العام ١٩٠ أن العام العام ١٩٠ أن العام العام ١٩٠ أن العام العام العام العام العام ال



نبی کریم علی التدعلیہ ولم نے زمین پرنکیر سے کو ان کے سامنے یہ واضح فسرمادیاکہ سلام کا منہج وطریقیہ وہ ساؤمتنعتم (سیدھاراستہ) ہے جوعزیت و مبنت بیک بہنچانے والا ہے اور اس کے علاوہ اور جوافیارات خیالات اصول وننظام ہیں

#### وہ سب سے سب شیطان سے استے اور اس سے وہ طریقے میں جو الاکت \_\_\_ وتباہی وہنم کاسپہنما نے والے ہیں

### ی ۔ عل کے ذریعے سے نصیحت کرنا:

نبی کریم صلی الله علیت لیم اسپنے صما بر کرام رضی الله عنهم المجمعیان کی تعلیم و تربیت اور معاشرہ کی تعمیر کے لیے زندہ نمونہ پیش کیا کرستے شعے حس کی تعبیس مثالیس ورج ذبل ہیں:

ابو داؤدنسانی اورا بن ماجه حفزت عبدالترب عمروب العاص ضی الته عنها سے روایت کریتے ہیں کہ ایک صاحب نبی کریم ملی الته علیہ ہم کی خدمت میں حاضر ہوئے ، اورا نہول نے عرض کیا : اسے اللہ کے رسول وضور کا کیا طریقے ہے ؟ سول اکرم ملی اللہ علیہ ہم کی خدمت میں بانی منگوا یا اور اپنے دونول باتھ یمین مرتبہ وصوئے منٹی کہ بورا وضو کرسے وکھلادیا ہم فرمایا : میخفص اس برزیادتی کرسے کا یاس میں کمی کرسے گاتو اس نے زیادتی اور ظلم کیا .

الم مبخاری ابنی صبیح میں روایت کرتے ہیں کہ سول اللہ ملی اللہ علیہ وسلم نے لوگوں کے ایک مجمع کے سامنے وضوکیا بھرفر مایا جسب شخص نے میرے اس وضور کی طرح وضوکی اور بھیر دو ریعتیں اس طرح پڑھیں کہ ان کے دوران اس کے دل میں دنیا کی سی چبر کا خیال نرائے تواس کے تمام بچھلے گناہ معہ ف کر دیسے جائیں گئے۔

اوراہ) بخاری نے ایک مدین روایت کی سیم بن پی یہ ذکرہ آتا ہے کہ ایک مزیب کریم ملی اللہ علیہ وہم نے لوگول کو اس مالت بیں نماز بڑھائی کہ آپ منبر برخصے اکہ سب سے سب آپ کی نماز کامشا برہ کرلیں اوراس مشا برہ کے ذریع آپ سال میں اوراس مشا برہ کے ذریع آپ سے نماز سے افعال سیر لیس بھیر جب آپ میل اللہ علیہ وہم نماز سے فارغ بروئے تولوگول کی طرف متوجہ میرکر آپ نے راشا د فرایا: اے لوگویں نے یہ اس لیے کیا اگرتم میری اقتدار کرواور میری نماز کوسکیر لو۔

#### ك - موقعه ومناسبت سي فائده المحات بوئ وعظ ونفيه تكرنا:

بها اوقات الیها ہوتا تھاکہ نبی کریم ملی التُہ علیہ ولم بن لوگول کو وغط ونصیحت اور بنہائی کرنا چاہتے تھے ان کے سلمنے سی موقعہ ومناسبت سے فائدہ اٹھالیا کریے تھے تاکہ اسس کا زیادہ اثر مور، اور مجھنے سمجھ سنے ہیں آسانی بھی موجائے ان مناسبات ہیں سے بین درج ذیل ہیں :

الم مسلم حضرت جابر ضی اَلتُ عندست را بیت کرتے ہیں کہ سول النہ مسلی النہ علیہ وہم عوالی ا کیب علاقہ کا نام ہے ) کی جانب سے بازا رہیں والل ہوئے لوگ آئے اردگرد تھے آپ کا ایک م وار بجیر لرکے بچے کے پاس سے گزر ہوانس کے کان جھوٹے بھوٹے تھے ۔ چنانچہ آپ نے اس کا کان پڑو کر فرط یا : تم ہیں سے کو نشخص پرپندکر آ ہے کہ بیر موا راسے ایک در ہم میں مل جائے ؟ معابہ نے عرض کیا : ہم تو اسے سی قیرت بر بھی نہیں لین چاہتے ، یا یہ فرط یا کہ ہم اس کا کیا کریں گے ؟ تو سپسلی الله علیه و مساور شاد فرای کیاتم برب ند کرتے ہوکہ و قہمیں ال جائے اسی بانے عوش کیا : بخدا اگر برزندہ بھی

ہوتا تب بھی کان کا جھوٹا ہونا اس کے لیے عیب بھا، اور اب جب وہ مردار ہوگیا تو بھر تواور زیا دہ عیب دار بہ گیا۔ تو

ان سلی الله علیہ و کم نے ارشاد فرایا : بخدا جننا یہ مردار تمہاری نظرول ہیں تقیر ہے دنیا اندی بہاں اس سے بھی زیادہ تقیہ سے

ام بخاری و سلم جمہاا للہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہول نے فرایا : یول اللہ صلی الله علیہ و کم بہاں تو وہ ہے سے

ملی اللہ علیہ و کم کے باس قیدی عومی لائی گئیں ، ان عور تو ل میں ایک عورت اسی تھی کہ اس کے بہتان دود ہ سے

مرے ہوئے تھے وہ جب بھی کی قیدی تھوٹے ہے کو دکھتی اسے بچو کر اپنے سے سے ساگار دود ھ پلانا تروع کو کردتی ،

رسول اکرم سلی اللہ علیہ و کم نے ارشا د فرایا ؛ کیا تم یہ میں تھوٹ ہو کہ یعورت اپنے نے کو کا گریں جبونک دے گی ہوآپ بہت کہ اور اپنی موال کرم سے اللہ بھی محلوق ہوائی سے نے عوش کیا ؛ جی نہیں ؛ نداکی مسم وہ ایسا ہر گرز نہیں کرسے گی ہوآپ بے ارشا د فرایا ؛ اللہ تعالی ابنی مخلوق ہوائی سے زیادہ جم کرنے والے ہیں جو اس عورت کو اپنے بھے بہدے۔

نے ارشا د فرایا : اللہ تعالی ابنی مخلوق ہوائی سے زیادہ جم کرنے والے ہیں جو اس عورت کو اپنے بھے بہدے۔

## ل - الم چيزي طرف متوجه كرك نصيحت كريا؛

نبی کریم صلی التدعلیہ ولم سوال کواک سے اہم سوال کی جانب بھیردیا کرہتے تھے بس کی مثال درج ذیل ہے :
الم بناری وسلم حضرت انس دشی التدعیہ سے روایت کرتے ہیں کدایک اعربی نے سول اکرم سی التدعیہ ولم سے یہ سوال کیا کہ: اسے التہ سے رسول التدعیہ وسلم نے آل سے دیافت فرمایا: تم نے بسس سوال کیا کہ: اسے التہ سے دیافت فرمایا: تم نے بسس سے کیا تیاری کی ہے ، آپ نے ارشاد فرمایا: تم ای کے ساتھ ہوگے بس سے بہیں محبت ہے ۔

اس موقعہ پرنبی کریم صلی اللہ علیہ وہم نے ان صاحب کو قیامت کے قائم ہونے سے وقت کے بارسے یں سوال سے رہام مالئہ کے مارک میں موقعہ پرنبی کریم صلی اور کونہ ہیں ہے ) ایک اور جانب متوجہ کردیا خسس کی سب سے زیادہ صرورت تھی ،اؤ وہ سبے اسس روز سے اعمال صالحہ کی تیاری جس روز تما کوگ اللہ رب العالمین سے دربار ہیں بیش ہول گے۔

### م - حبس مرام چیزے روک ہے اسے سامنے بیش کرکے وعظ ونقیحت کرنا:

السائھی بتوا تھاک بعض او قات نبی کریم صلی اللہ علیہ ولم اپنے دست مبارک بیں وہ حرام چیز تھا کہ لیتے تھے بی سے د روک مقصود ہو تاتھا، اوراس چیز کو مخاطبین سے سامنے کر دیا کرتے تھے اگدان کو زبانی قول اور آٹھوں کے مشاہدہ سے وہ حرام چیز معلوم ہو جائے، اور نفوس کے لیے روکنے کا زیادہ قوی ذریعہ بنے اور حرام ہونے پرزیادہ صریح رہنمائی ہوجائے اور اس کی مثال یہ ہے ؛ ابو داؤد نسانی وابن ماجرانی ابنی سنن میں حضرت علی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ سے روایت کوستے ہیں کہ انہوں سنے ارشاد فرایا : رسول اللہ سلی اللہ علیہ وم سنے اپنے دائیں ہاتھ میں رشم اور بائیں ہاتھ میں سوناتھا ما، اور مجران دونول کو ہاتھ ول میں سے کر بند کرکے فرمایا ہے دونوں چیزیں میری امست سے مردول برحرام اورعور تول برحلال ہیں ۔

ان اسالیب وانداز کے بدلنے سے مخاطب اور نجول میں معلومات اسٹے کرنے اور فہم وسمجھ کے تیزکر نے اور ذکا دت سے حکرت دسینے اور وعظ ونصیحت سے قبول کرنے اور تیقظ و ذکا دت کے بیدار کرنے میں جوعظیم اثر بڑیا ہے وہ سی پرکھی مخفی نہیں ہے۔

لہٰذا جب مرنی ان لوگول سے سامنے جن کی تیاری وتربیت کی ذمہ داری اس پرعائد ہوتی ہے خواہ وہ اہل و عیال ہوں یا اولا دوشاگرد ان سے سامنے اپنی نصیحتول اور رہنمائیول میں ان اسالیب وانداز کوعمد گی سے پیش کرے گا تو بلاکس شک وشبہ وہ انہیں سکھیں گے تھی اور ان کو اپنے اوپر نافذ بھی کریں گے . ملکہ شاندار معاشرے کی تعمیر اور سامی مکومت کے قیام میں مضبوط و تھوسس نبیا د ثابت ہول گے ۔

البندا مربیول کوجا جیے کرادشاد ور مہائی میں دسولِ اکرم سلی التہ علیہ وہم کے طریقوں اور وعظ وارشاد میں آپ کے اسلوب کو اختیار کریں۔ اسلوب کو اسلوب ہیں، اس لیے کہ سول التہ سلیہ وہم اپنی نوائر نفس سے کچھ نظر اسے تھے اور آپ کی تربیت آپ کے رب نے کہ تھی اور خوب کھی ، اور آپ کی تیار کی التہ مال شانہ کے سامنے ہوئی اور مہیشہ التہ تعالی کی عابیت و گرانی آپ سے شامل حال رہی ہے۔ اور حب بات یہ ہے تو جو اقوال ، افعال تقریرات کو کام کو مورا و کھے کراس برخاموثی اختیار کرنا اسے عربی میں تقریر کہا جاتا ہے ہمی آپ سے صادر مول گی وہ سب کی سب قیامت بھی کے بیے مرور ایم وزمانے کے ساتھ ساتھ انسانیت کے لیے تشریع اور ہوایت کا ذریعہ ہیں۔

سی کریم ملی التدعلیہ ولم سے فخروشرف اورا بدیت کے لیے یہ بات بہت کافی ہے کہ النّد اللّٰ آپ کے بارے میں بیرارشاد فرمائیں :

رسول الله کالیک عمده نمورد موجود ہے تمہارے میے یعنی ہی کے بیے تبوڈر یا ہواللہ اور روز آخرت سے اور ذکر البی کشرت سے کر یا ہو۔

النَّقَدُ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللهِ سُوَلَا حَسَنَكُ لَمُنَ كَانَ يَرْجُوا اللهُ وَ بِيَوْمُ الْإِخَارُودُكُو بَنْهَ كَثِنْهُوا \* \*). كَثِنْهُوا \* \*).

او مزیدیه ارشاد فسایا ہے:

جس نے رسول کا حکم ماناس نے اللہ کا حکم مانا۔

العَنَ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَذْ أَلِمَا عَاللَّهُ ١١٠٠١١١١١١

سبیس یہ مجدلینا چاہیے کہ مرنی اُرا نِی باتول کوعملی جامز ہیں پہنائے گا اوٹیس چیزی دوسروں کو نصیہ ہے کر رہے اس کو ملی تطبیق نہیں وے گا تو کوئی شخص ہی ہے کام کو قبول نہیں کرنے گا ، اور زکوئی انسان اس کی نصیحت سے متأثر ہوگا، اور نہ کوئی مخاطب اس کی بات پر لہیک کہے گا، ملکروہ عوام کی تنقیدا و ینوانس کے مناق کی انشانہ اور تم کوگول کے اس کے مفالف ہونے کا ذریعے ہے گا،

اک لیے کہ جو بات ول سے ذکلے وہ دل تک ہرگز نہیں پنجتی ،ادر سل وعظ ونصیحت میں روحانیت کا اثر ذہو وہ دل کہ مرکز نہیں پنجتی ،ادر سل وعظ ونصیحت میں روحانیت کا اثر ذہو وہ دلول پر سمی اثر نہیں کرتی ،کچھ صفحات قبل آپ نے پڑھ لیا ہے کہ جب باب سے بیٹے نے یہ سوال کیا کہ یہ کیا بات ہے کہ جب آپ بات کرتے ہیں تو لوگول کو رلا دیتے ہیں اور حب آپ کے علاوہ کو کی دوسرا بات کرتا ہے تولوگ روتے نہیں ہیں ، باب نے جواب دیا ،ا سے میر سے بیٹے مصیب نے دہ ہ دو نے والی عورت اجرت پر رونے والی عورت کی طرح نہیں موقی ،ان کی مراد بیتھی کہ وہ داعی جواسلام کا درد رکھنے والا مواور سی میں ایمان جاگزین ; دوہ منافق واعظ اور سنسانے اور خوش کرنے والے داعی کی طرح نہیں ہوسکا۔

اس سے بل نمونہ ومقتائی سے ذریعیۃ تربیت کی مجمنٹ میں ہم ان توگول سے بارسے میں تفصیلی کلام کریے ہیں جن کے قوال افعال سے خلام کریے ہیں جن کے قوال افعال سے خلافت کو عظوان سے عمل سے برخلاف ہوتے ہیں ۔ لنہذا قار نمین کرام اگراسس مومنوع برشفی نخبش ہوشہ مطالعہ کرلیس انشار اللہ سیرانی کا بوا سامان و ہاں موجود یا ئیں صے ۔ بحث مطالعہ کرلیس انشار اللہ سیرانی کا بوا سامان و ہاں موجود یا ئیں صے ۔

----

اسىمرنى صاحبال آخرى بات يەسەكە:

جب آپ اسلام کے اس نظام ومنبع پرمطلع ہو گئے ہیں جو قرآن کریم اور احادیث ِ نسریفیِ میں وعظ کے مختلف طریقوں او صحت کے اسلوب اور وعظوا یشا د کے وسائل کی شکل میں موجود ہے۔ تو پھرآپ کی یہ ذمہ داری ہے کہ آپ اپنی ہمت تیز کریں اور عزم کو دوجیندگریں آکہ آپ نے ہومنہ اورطربقے سیسے ہیں انہیں نا فذکر سکیں اوران کی ملی طبیق ہیں گئیں اور پھرآپ ایسنے بیچے یا شاگر دیدمر پرکوائیں حالت ہیں ہا ہیں گے کہ اس کا دل آپ کی نعید سے سننے سے لیے تیار ہوگا اور کلی طور پر ہاریت ور منہائی کے طریقول سے سلسنے گرون جھکائی ہوئی موگ اور حق واسلام کے لیے ہروقت لبیک کہنے والا ہوگا۔

مرنی باپ یامرنی مال اس وقت کتنے قابل تعربیت بوتے ہیں جب دہ شام کواپنے کول کے ساتھ س بیٹے ہیں۔

دران کے سامنے کوئی فقد بیان کر دیا، او کھی کوئی نقیمت کی بات کر دی کھی کوئی شعر سادیا ہی قرآن کرم کی طاوت کھی کوئی لطفہ
ان کے سامنے کوئی فقد بیان کر دیا، او کھی کوئی نقیمت کی بات کر دی کھی کوئی شعر سادیا ہی قرآن کرم کی طاوت کھی کوئی لطفہ
کھی آبی ہیں بان می مقابلہ ۔۔ کرادیا، اوراس طرح سے وہ انداز واسالیب بدلتے رہتے ہیں اور وضوعات کوئنٹوع کرتے رہتے
ہیں تاکہ جاگنے اور وقت گزار نے سے ان کی فرحانی کمیں اور نفیاتی واضل تی تعمیر ہوسکے بسین کھی یادر کھنا چا ہیئے کہ ان کے
میں تاکہ جاگئے اور ان کے روزانہ کے سونیے جو سے کام بیس کوئی رکاوٹ پیلائے ہوراوراس طریقے سے مرقب اس بات پر قادم
ہوگاکہ حقیقت ودل لگی اور وعظ ونصیحت اور بھیفول کو جمع کر دے اور حقیقت اور بی کے اساب میں توازان قام کرنے
تاکہ وہ قابی طور سے اس بات بیٹھ مکن اور وجدانی طور سے قناعت کر سے کہ بجول نے اپنا بڑا وقت نفتی بخشس کامول اور نفید
چیزول میں صرف کیا ہے۔۔

اگرمرنی روزانداس نظام پرئول کردے توکوئی زیادہ طویل وقت دگزرے گاکہ وہ اپنے ان بجول کو جن ک تربیت کا آ نے اہتمام کیا ہے اوران کی گرانی کی ہے انہیں وہ بدایت یافتہ وہارت دینے والول اوراللہ کے ان نیب بدول ک فہرست میں پائے گاجن سے آرزوئی والبتہ ہوتی ہیں اور جن کے دیعہ سے اسلام کو فتح و نصرت مسل ہوتی ہے۔ مربی اس وقت کتنامُوفق ہوتا ہے جب وہ اپنے بچول کے ساتھ قرآن کریم کے واعظ نہ اسلوب کو انتہا کرتاہے، چنانچہ وکہ بھی تو انہیں تقوی اختیا کرنے ترغیب ویتا ہے ، او کہ بھی وعظ ونصیحت کرتا ہے کہ بھی انہیں خیر خواس برا بھا ۔ ہے ، او کہ بھی ترغیب سے کام لیتا ہے ، اور کسی موقع بر مرزش کے اسلوب کو بھی اختیا رکر لیتا ہے ، اور اس طرح سے مالات ومواقع کی مناسبت سے اسلوب کا انداز نو بنو بداتا رہتا ہے ۔

یسب کچھ بار بارکے ان الفا فلسے بکا رہنے اور آ واز و بینے کے علاوہ ہے بن کی ابتدا ہرف ندار سے ہوتی ہے جیسے مربی کا یہ کہاکہ : اسے میرے بیٹے .اسے میرے لڑے اس لیے کہ اس قسم کے الفا فلو فبذبات ابھا رہنے اور شعور کے ہید رہنے کا براوا ذراحیہ میں اور قرآن کریم نے کتنے ہی مقامات پر انہی کلما ہت سے ابتدار کی ہے ۔

ا وریسب قصدکهانی کے اُس اسلوب کے علاوہ ہے جو عبرت ونصیحت کے مواقع سے مرتبط ہو۔ قرآن کریم ہمل یہ اند یہ سی بہت سی حگہ وارد ہمواہیے ا در اس اسلامی توجیہ سے علاوہ ہے جس کی ابتدار سرو ف باکید ہے ہوئی ہے جیسے کتنے ہی مواقع پر قرآن کریم نے ارکا سر

ا دراس معاشرتی رسنهائی کے علاوہ ہے جو حروف ِاستفہام انکاری۔۔۔شروع ہوتی ہے جو قرآن کریم میں متعد د مگیہ

ا ورائل مطمئن کرینے والی توجیہ ورمنہائی کے علاوہ ہے جوا دلۂ عقلیہ کے ساتھ آیاستہ ہو ،اور یکتنی ہی حگہ قرآنِ کریم '

اوراس محیط تصوالی رمنبانک سے علاوہ ہے جوشوا ہر کے ساتھ مقرون ہوسب کی قرآن کریم نے متعدد مقامات پرتعریف کی ہے اور سشرعی اصول وصوابط سے ساتھ مدلل اس رمنبائی کے نظام کے علاوہ ہے جس کا قرآن کریم نے کتنی ہی جگہ نذکر ہ کیا ہ

اس سے علاوہ اور متنوع قسم کی توجیہات اور رسنا کیاں اور نو بنواسلوب جوسب سے سب قرآن کریم سے صال كي كير عني -

ا در اسی طسسرے مربی اس وقت کتنا مُموفَق ہوگا جب وہ نبی کریم مللی التّٰدعلیہ وہم سے وعظ سے طربیقول ۔ اور نصامح اورارشادات میں آپ کے اسلوب کو اختیار کرسے گا۔

ا دراس وقت کتناموفق ہوگا جیسے قصہ کو بیان کرنے سے بعداس سے عبرت کے پہلو واضح کرے گا اوراس میں نصیحت حال کرنے کے مواضع ک نشاندہی کرے گا۔

ی صیحت ما سرمے ہے و س س مرہ برسے ہو۔ اور مرنی اسس وقت کتناموفق ہوگا جب وہ اپنے بچول کے ساتھ سوال جواب سے طریقے کو افتیار کرسے گا، شنل ان سے ساسنے کوئی سوال پیش کر دیا یا ان سے کچے ہو جہ لیا۔ اگر وہ طمئن کن ومدلل رہنمائی کے چشمے سے سیراب ہول ۔ اور وہ اس وقت کتناموفق ہوگا جب وہ اپنی موفظت ونصیحت میں درمیانہ روی سے کام لیتا ہوگا اور تنگ دل و

آزروه خاطر ہونے کے نعوف سے اہم ترمراکتفاکرے گا۔

ا دروہ اس وقت کتناموفق ہوگا جب اپنی پندوموغطت کی ابتدار اکیدسے واسطے تسسم سے ساتھ کرسے گاا ویٹوق ولا نے اور اس سے لگن پیدا کرنے سے لیے اس میں دل لگی کا بہلوث ال کرنے گا۔

ا دروه اس وقت کتناموفق موگاجب وه این پوری کوشش اس بات پرصرف کر دے گاکہ وہ اپنے بچول کو دعظ ولفسیت كرت وقت ال برجهاجائ تأكه وه سب اس ك كلام سے متأثر بول.

اوروہ اس دفت کتنامونق ہوگا جب وہ نصیحت اور وعظ کی وضا حت سے لیے متالول کیرول کے کھینچنے اور مرب لامثال بیان کرنے اوران کا م چیزول سے مدرسلے گاجنہیں لوگ اپنی آنکھول سے دیجھتے ہیں،اور حوال سے خیال

کے دان میں سماسکتی ہیں، اکر خوب وضاحت ہوجائے اور ذہن میں انھی طرح سے راسنے ہوجائے۔

، اوروہ اس وقت کتناموفق ہوگا جب ان کے سامنے وہ تعلیم سے میدان میں اپنی ذات سے عملی نمونہ اور طبیق کے میدان میں فعلی شہادت بیشیں کرے گا ۔ میدان میں فعلی شہادت بیشیں کرے گا ۔

اوروہ اس وقت کتناموفق ہوگا حبب وہ سی حادثہ سے پیش آنے پر وعظ کے لیے اِستہ ہموا کرے یا نصیرت کے لیے کوئی مناسبت یا لیے۔ اِستہ ہموا کرے یا نصیرت کے لیے کوئی مناسبت یا لیے۔ اُٹر ہموا و راس کی بات ہر بوری طرح سے لبیک کہی جاسکے۔

اس کے علاوہ وعظ ونصیحت کے دوسرے وہ انداز جنہ بیں مرتی افتیار کریے گااور رہنائی کے وہ طریعے جنہیں وہ وقاً فوقاً سیکھا ہے گا۔

ال کے کے مرتب کو قرآن کریم کے لبلہاتے باغ ہیں یہ جا بجامنت شرمیں گے اور صدیث تمریف کے مسربز با بنیجہ میں وہ انہیں موجود پائے گا۔

للب نوامزیوں کو چاہیے کہ وہ لوگول سے خطاب کرنے اور نہیں خیر کی طرف دعوت دینے میں قرآن کریم کے عظیم اسلوب کو اختیا کریں ۔ اس لیے کہ قرآن شربون اس عظیم اسلوب کو اختیا کریں ۔ اس لیے کہ قرآن شربون اس عظیم اسلوب کو اختیا کریں ۔ اس طرح مربول کو وعظ و سے اسکتا ہے اور خداس کے بیاں کو وعظ و سے اسکتا ہے اور خداس کے بیاں کو وعظ و نصیحت سے طربی ول اور منائی کے اسالیب میں رسول کرم سلی الشرطیعہ وسم کی پسیروی کرنا جب ہیے ۔ اس لیے کہ وہ ایسے معصوم نبی جوانی نتوائی نفس سے نبید ہیں فرماتے ۔ اوران سے کمالات کا کوئی بیشراوران سے مرتبہ کو کوئی انسان نہیں بہنچ سک ۔

۱ و نبی کریم ملی الته علیه و کم سے سارے زمانوں اور تمام عالم میں فخر کے لیے اتنی بات کافی ہے کہ التہ تعالیٰ ہجا نہ ان کو اس نعطاب ابدی سے مخاطب کریں اوراس شاندا روصف سے ساتھ متصف فرمائیں ارشا دہہے :

ا ورب شک آپ اخلاق کے اعلی مرتب پر ہیں ۔

لِا وَإِنَّاكَ لَعَلَى نُعَلِّي عَظِيمٍ ﴾. القلم يه

ورہم نے آپ کوہ نیاجہان پر داپنی، رحمت بی سکے لیے سہ

الانبیار ہے ، ، ، ہمیجا ہے۔ اور نمی کریم علیہ الصلاۃ والسلام کی تحریم وع ، ت سے لیے یہ کافی ہے کہ خود آب نے اپنے بارے ہیں ارشاد فرا ہے : (( اُ کہ بنی دبی ف محسن تُ دیبی ، . میرے رب نے مجھے تربیت دی ، ویڑوب اچھی

ترىبىت دى ـ

#### $\odot$

# و کیم محال کے ذریعہ تربیت

دیمہ عمال کے فرلعہ تربیت سے مرادیہ ہے کہ بچے برنظر کھی جائے، اور اس کے عقیدے وانعلاق کے بنانے میں اس کی نگرانی ہو، اوراس کی نفیاتی اور معاشر کی شخصیت سازی میں اس کو نظرول کے سامنے رکھا جائے اور اس میں اس کی نگرانی ہو، اوراس کی جمانی تربیت اور علم سے حصول کی کیفیت کے بارے میں برا برخقیق کرتے رہا جائے ہے اس میں کوئی شکسہ میں کہ ہر تربیت ایسا کالل و متوازی انسان تیار کرنے کے لیے قوی تربی اساس ہے جو دنیا کی زنہ گی میں ہرصا حب حق کو اس کا حق دے، اور جو اسے اس بات برجبور کر دے کہ وہ اپنی ذمردا یوں کو لو آگرے، اور محسل کی زنہ گی میں ہرصا حب حق کو اس کا حق دے، اور جو اسے اس بات برجبور کر دے کہ وہ اپنی فرمرا ایوں کو لو آگرے، اور اسے ایک ایسا حقیقی سلمان بناو سے بومضہ و اسلامی حکومت کی شھوس بنیا دکے لیے اساسی و بنیا دی تچھر کا کام دے بس سے اسلام کو سرطبندی ماس مواور مسلم کو سرطبندی ماس میں تمام قومول ، حب س براح ماد کرکے اسلامی حکومت آہی طاقتورہ سکھم بن کرا بھرے نے بوابی نقافت و مرتبرا و ترشوص میں تمام قومول ، اسلامی کا مقابلہ کرسکے یہ اسلامی حکومت آہی طاقتورہ سکھم بن کرا بھرے نے بوابی نقافت و مرتبرا و ترشوص میں تمام قومول ، اسلامی کا مقابلہ کرسے ہے ۔

اسلام نے اینے محیط بنیادی اصولول اور ابدی منطام کے ذریعے والدین اور مزیول سب کو اس بات پرابھا اِبتہ کہ دہ سب کے سب زندگی سے مرگو شنے اور محیط تربیت کی ہرجہبت میں اپنی اولاد کی دیکھ مجال اور ایسے عگر گوشول پر نظر رکھنے میں کوئی کسپرز محیومیں ۔

ر میں معترم مربی صاحبان کے سامنے اس دکیرہ بھال ونظ۔ رکھنے سے سلسلہ میں دارد ہونے والی ایم نصوص ذیل میں میشیں کی جاتی ہیں: میں میشیں کی جاتی ہیں:

الله تعالى ارشاد فرمات مين:

الْ يَاكَيُّهُ الَّذِينَ الْمَنُوا قُوْا اَنْفُتَكُهُ وَ
الْفِيكُمُ ثَارًا وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ
عَلَيْهَا مَلِيْكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا
عَلَيْهَا مَلَلِّكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا
يَعْصُونَ اللهُ مَنَا اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا
يُعْصُونَ اللهُ مَنَا اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا
يُؤْمَرُونَ وَ ). التربم ، ال

اے ایمان والوبچاؤ ا بینے آپ کوا درا بنے گروالوں کو آگ سے بس کا ایندہن انسان اور تیمری کسس پر تندفو برسے عنبوط فرشتے (مقر ایس، وہ التدکی نافرائی نہیں کرتے سی بات میں جودہ ان کو حکم دیا ہے ، اور بو کھم دیا جا آہے ، اور بو

اوراگرمرنی اینے اہل وعیال اور اولاد کو انھی باتول کا عکم نہ دیے اور برائیول سے نہ روکے اوران کی دیکھ مجال اور من پر نظرنہ رکھے تو مھیرمرنی ان کو جنہم کی آگ سے س طرح بچا کے گا ؟ لله تعالی سے مراك مبایک: ((قُو اَنْفُسَكُمْ ...) سے بارے ہیں حضرت علی ضی الته عنه فراتے ہیں کہ اس کامطلب یا سے در اور حضرت عمرضی التہ عنه فرماتے ہیں : تم ال کواس چیز سے روکو حس سے یہ سبے کہ ال کی تربیت کروا وزال کوتعلیم دو ۔ اور حضرت عمرضی التہ عنه فرماتے ہیں : تم ال کواس چیز سے روکو حسے ال کے لئد نے تمہیں حکم دیا ہے ، اور اس طرح سے ال کے اقد منے تمہیں حکم دیا ہے ، اور اس طرح سے ال کے اور جہنم کی آگ سے درمیان آرا ورکا وسط ہوجائے گی ۔

اور الله على شانه فرمايتي مين :

۱ وراسینے گھرولول کونما زکامکم د سیتے رسیسے ا ورخود بھی

((وَأَمُرُ اَهُ لَكَ بِالصَّاوَةِ وَاصْطَبِرْعَكَيْهَا مِ).

اس کے یابندرہیے

اورنماز کائکم کس وقت بوسکتا ہے جب اللہ سے حق داکر نے میں کو تا ہی ولا پرواہی ہورہی ہو۔ اور اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں ؛

، در رطسیے والے تعنی باب برہے کھانا ورکیران عورتوں

ا وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسُوتُهُنَّ

كادستورسيموافق

بِالْمَعْرُوفِ مِن البقرهِ ٢٣٣

، ورباپ الل وعیال کے کھانے پینے اور رباس پوشاک کے فریفید کوکس طرح ا داکرے کا حب کہ وہ ان کی عبمانی و صحت کے پہلو سے ان کے حالات کی دیکھیے مجال نرکرے ؟

وه احادیث جو دنگیه بهال اورنظر کیف برآماده کرنے والی اور ایجار نے والی بیں وہ ہے شما ہیں:

ان احادیث میں سے وہ مدیث بھی ہے جے اہم بخاری وسلم جمہاالتہ حضرت ابن عمرینی التہ عنہا سے روایت کرتے بیں کہ: ...مرد ا پنے اہل وعیال کا کھوالاہے او راک سے اس کی رعیت سے ہارسے میں پوجھا جائے گا۔ا و یعورت شوہر کے گھ کی رکھوالی ہے اور اس سے اس کی رعایا کے ہارہے میں بازیر آن ہوگی ..

ان احادیث میں سے وہ حدیث میں ہے جسے ابودا ؤر و ترمذی رحمہا اللہ نے ابوسبرہ ضی اللہ عنہ سے روایت پلسپے انہول نے فرایا: سول اللہ صلی اللہ علیہ فرم نے ارشاد فرمایا ہے کہ حب بچہ سات سال کا ہوتوا سے نماز کی تعلیم دو اور جب دس سال کا ہودائے تواس پراس کی بڑائی کرو .

ان احادیث میں سے وہ مدمیث بھی ہے جے اہ م ترمندی رحمہ التد نے نبی کریم علیہ انصلوۃ والسلام سے روایت کیا ہے کہ انسان کا اپنے بیچے کو نربیت دیناس سے ہتر ہے کہ وہ ایک صاع صدقہ کرسے ۔

ان ا ما دمیث بیں سے وہ مدیث بھی ہے جسے طبرانی نے مفرت علی کرم اللہ وجہبر سے روایت کیاہے کہ دسولِ اکرم علی اللہ علیہ وقم نے ارشا و فرمایا: اپنے بچول کوتمین باتول کی تربہیت دو اسپنے نبی (مسلی اللہ علیہ وقم ) کی محبت' اوران ال بہت کی محبت، اورقرآن کریم کی تلاوت کی . اوران احادیث میں سے وہ حدیث بھی ہے جے اہا مجاری رحمہ التہ نے اپی تحاب "الاوب المفرد" میں الوسیمان مالک بن الحویر شدہ نوع التحدید میں اللہ بن الحویر شدہ نوع التحدید اللہ بن الحویر شدہ نوع النہ بن کریم ملی التہ علیہ وقع کی خدمت میں حاضر ہوئے اور ہم ہم عمر شم سے نوع وال تھے ہم آب ہے ہاس ہیں رات مخصر سے رہے ، تو آب کو یہ خیال ہمواکہ ہمیں اپنے گھر والول سے ملنے کی خواہش ہوگ ، آپ نے ہم سے بوجھا کہ ہم اپنے الل وعیال میں سے کو وی مور گرائے ہیں؟ ہم سے ایک اللہ عالی میں سے کس کو پیچھے ہوگر کرائے ہیں؟ ہم سے آپ کو اس کی اطلاع دے وی ، آپ لی التہ علیہ وہ مراسے نرم ورحمدل سے آپ نوارشا و فروایا کہ : اپنے اہل و عیال کے باس جا دُا و را نہیں تعلیم دو اور البھی باقوں کا) علم دو . اور اس طرح سے نماز برط صوحب طرح تم نے مجھے نسانہ عمل سے دی ہو جب نماز کا وقت آجائے تو تم میں سے ایک آدی اذان دے دے اور تم میں جو بڑا ہو وہ اد مت کہ سے دی ہو ہے۔

انسان سے سئول ہونے کے کیاعنی ہیں؟ اورعورت سے سئول ہونے کاکیامطلب ہیں؟ اوران بچول کوتعلیم ہیے اورمارنے کے کیامفنی ہیں؟اور دونول حدیثول ہیں آ کو بیب (ا دب سکھاؤ) کے کیاعنی ہیں؟ اوراس کا کیامطلب ہے کہ اپنے اہل وعیال کے پاس ہے جا وُا دران کوتعلیم دواوران کو (اچھائیول کا) حکم دو؟

کیااس سنب کا پیمطلب بہیں ہے کہ آئی بیجے کی دیکھ تجال اوراس پرنظر سکھے۔ اوراس کوا و بسکھلئے اوراس کی حرکات وسکنات پرنظر سکھے، اوراگر دوسے می فریقے میں حرکات وسکنات پرنظر سکھے، اوراگر دوسے تی کو چھوڑ دیے تواس کی جانب اس کی رہنمائی کرسے اوراگر وہ سے فریقے میں کوتا ہی کرے تواس کواس سے روسے، اور جب کی قابلِ اعتراض بات یا منکر کو دیکھے تواس کواس سے روسے، اور جب وہ کوئی اچھاکام کرسے تواس کی تعربین کرسے ۔

وہ امور میں میں کسی دوآ دمیول کا ہی انتقال ف نہیں بیمجی ہے کہ نیچے کی دیمچہ بحال اوراس کی نگرانی تربیت کی اعلی وظاہر ترین بنیا دول ہیں سے ہے۔ اس لیے کہ اسی صورت ہیں بچہ ہمیشہ مرنی کی نظروں ہیں رہے گا اور وہ اس کی تا کی تا کی حکات وسکنات اور گفت شنیدا ور چال و طال کی بھڑائی کر تا ہے گا رائد ااگر وہ اسے خبر واجھائی ہیں دیمچے گا تواس کا اگرا کر سے گا۔ اور اس ہے گا۔ اور اس سے می برائی کوصاد مرجے گا تو اسے اس سے روکے گا اور اس سے دولے گا۔ اور اس سے دُرائے گا اور اس کو اس سے بی اور اس سے دُرائے گا اور اس کو اس کے برسے انجام اور خطرناک نمائے سے آگاہ کرسے گا، اور مرتی کی غفلت یا بیکے کی جانب سے تغافل کی وجہ سے بچہ لامحالہ ہم اف کی طرف مائل ہوگا۔ اور براشہ وہ آزادی و گرائی کا شکار ہوگا۔ جس سے بعداس کی باکت یعنی اور اس کی تباہی لازمی ہوگی۔

#### ~~~~~~~~~~

ہمارے علم اول اور ہا دی اکرم ملی اللہ علیہ ولم است صحابہ نئی اللہ علیم کی بہترین دیکی محال اور ان سے بارے میں بازر ہس اور سوال جواب اور ان سے مالات کی جانبے بڑا گی ،اور تقصیر کرنے والے کو عمل اللہ اور ایسے کام کرنے والے کو

شابائش دینے اوران میں سے فقرار ومساکین پرشفقت کرنے اور تھپوٹول کو تربیت دینے ۔۔۔۔ اور نا واقفول کوللیم دینے میں اپنی امت کے بیے بہترین نمونہ جھوٹر گئے ہیں ۔

### سي التدعلية ولم ك و كميه مهال وجائي براً ال كے جند نمونے درج ذيل بن :

معاشرتی تربیت کے سلسلمی آپ کی دیکھ مجال وگرانی کے سلسلمی وہ روایت ہے ہوبخاری وہم مضرت الرسعید ضدری رضی التہ عندسے روایت کرتے ہیں کہ نبی اکرم علی التہ علیہ وہم نے ارشاد فرمایا : تم راستول میں بیٹھنے سے بچو ، صحابہ نے عرض کیا : اے التہ کے رسول ہمارے لیے تو وہاں بیٹھنے سے سواکوئی چارہ کا زنہیں ، ہم وہاں بیٹھنے کو ، صحابہ نے عرض کیا : اے التہ علیہ وہم نے ارشاد فرمایا : حب تم راستے میں بیٹھنا ہی چاہتے ہوتو مجر راستے کا حق اداکرون صحابہ نے بوجھا : اے التہ کے رسول راستے کا حق کیا ہے ؟ اِ آپ نے ارشاد فرمایا : لگاہ کا بست رکھنا ، اور اذبیت وینے سے رکنا ، اور سلام کا جواب دینا اور آجی بات کا تھکم دینا اور بری بات سے روکنا ۔

و جہونوں کو تربیت وینے کے سلسلے ہیں آپ کی جانچے پڑتال کی مثال وہ ہے جسے اما ہخاری و تم حضرت عمرنِ الی سلم خیری التہ علیہ وسلم کی زیر کے فالت ایک جھوٹا سا الی سلم خیری التہ علیہ وسلم کی زیر کے فالت ایک جھوٹا سا الی سلم خیری التہ علیہ وسلم کی زیر کے فالت ایک جھوٹا سا بہت تھا بھا کے متاب کے اللہ التہ علیہ وسلم نے مجھ سے فرایا اے لڑکے اللہ کا نام اور اپنے دائیں ہاتھ سے کھا و ، اور اپنے قریب سے کھا ؤ۔

مرونی رمنهائی کے سلسلہ میں آپ کی دیمیؤ بھال کی مثال وہ روایت ہے جسے ابودا فرد وہیقی مضرت عبداللہ ابن عامرینی اللہ عند سے روایت کرتے ہیں کہ انہول نے فرمایا: ایک روزمیری والدہ نے مجھے بلایا، اور رسول اللہ علی ولئہ ملیہ ولم مہمارے گھرمیں تشریف فرمایا تھے، والدہ نے فرمایا آجا و ماکتمہیں وے دول ، سول اللہ علیہ ولم سمارت کھرمیں تشریف فرمایا تھا؛! انہول نے کہا میرا را دہ تھاکہ اسے مجور دسے دول ، سول تا مسلی اللہ علیہ ولم منے ان سے فرمایا ہے۔ والدہ ہے ہے مجور دیے دول ، سول تا مسلی اللہ علیہ ولم نے این سے فرمایا ہے۔ والدہ ہے ہے مجور دیے دول ، سول تا مسلی اللہ علیہ ولم نے این سے فرمایا ہے۔ والدہ ہے ہے ہے میں ایک جمور میں ایک جمیر میں ایک جمور میں ایک دیا جمال ایک میں ایک جمور میں ایک جمال ایک جمور میں ایک جمور میں ایک جمور میں میں ایک جمور میں ایک جمور میں ایک جمور میں میں ایک جمال کیا تھا کہ ایک جمال کی میں ایک جمال کیا تھا کہ جمال کی میں ایک جمال کی جمال کی جمال کیا تھا کہ کو میں ایک جمال کی جمال کی جمال کی کو ایک جمال کی جمال ک

اخلاقی تربیت کے سلسلہ میں آپ کی دیجے جوال کی شال وہ صریف ہے جی بخاری وہم نے حضرت ابو کرہ فی التہ عنہ سے روایت کیا ہے کہ رسول الته صلی الله علیہ وہم کے سامنے ایک صاحب کا ندکرہ کیا گیا، توایک صاحب نے انکی تعریف کی ۔ نبی کریم علی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرایا ؛ براموتمہا رسے لیے تم نے توابینے سامھی کی گردن کا مے والی، یہات آپ نے کئی بار فرمانی ، فرمایا اگرتم میں سے کوئی شخص تعریف کرنا ہی چاہے تواکروہ واقعۃ اسے اسی طرح سمجھا ہوتوا ہے جہئے یہ کہے ؛ میں اسے اس اس طرح کا دمی سمجھا ہوتوا اور اللہ اس کا حساب لیسنے والا ہے ، اور اللہ کے سامنے سسی کا ترکیبہ برکرے کے ا

کی نفسیاتی تربیت کے سلسلہ میں آپ کی دیمیہ جمال کی مثال وہ روایت ہے جے حضرت نعمان بن بشیر ضی التہ عنہا روایت ہے جے حضرت نعمان بن بشیر ضی التہ عنہا روایت کر حاضر ہوئے اور فرمایا: میں نے اپنے اس بیطے کو ایک غلام ہریہ کر دیا ہے ، رسول التہ صلی التہ علیہ وہم نے ارشاد فرمایا کہ: کیا تم نے اپنے تمام بچول کو اس جیسا ہریہ و وایس نے دارت و فرمایا: کیا تم نے ارشاد فرمایا: کیا تم نے ایسا ایسے تمام بچول کے ساتھ کیا ہے؟ انہوں نے میں آیا ہے کہ رسول التہ علیہ ولم نے ارشاد فرمایا: کیا تم نے ایسا ایسے تمام بچول کے ساتھ کیا ہے؟ انہوں نے عرض کیا: حجن بہ سیس، تو آپ نے ارشاد فرمایا: اللہ سے ڈرواورا بنی اولا دے درمیان عدل و برابری سے کام اور چنا بچہ میرے والد نے رجوع کرکے وہ مریہ واپس نے لیا۔ ایک اور روایت میں ہے کہ نبی کریم علیہ العمل قوال ایم نہیں وہے سکتا.

جہانی تربیت سے سلد میں آپٹی و کمیون ہال کی مثال وہ ہے کہ نبی کرم ملی انتدعالیہ وہم نے ایک صاحب کو دیکھا کہ وہ اون سے کہ نبی کرم ملی انتدعالیہ وہم نے ایک صاحب کو دیکھا کہ وہ اون طب کی طرح ایک ہم سانس میں بانی ہی رہے ہیں تو آپ نے ان سے فرمایا (عبیا کہ امام کرمذی نے روایت کیا ہے ) ایک ہی سانسس میں اون طب کی طرح مت ہیو بکہ دو آیین سانس میں ہیوا ورجب ہیو تو اللہ کا نام لے لیا کر وہ اور حب بی تو اللہ کی تعرب داکھا کرو۔

 ساتھ پل رہا تھا آپ نے موقی کماری والی این نجائی چادراوٹرھ کھی تھی ، ایک اعرابی آپ کو مل گیا اور اس نے آپ کی جاد

کواس زور سے پڑھ کر کھینچا کہ اس کے تق سے کھینچنے کی وجہ سے ہیں نے رسول النہ صلی النہ کا ہومال آپ کے باس ہے اس ایس سے

کانٹ ان بڑا ہوا دیکھا بھیراس اعرابی نے آپ سے کہا ؛ اس خہر (صلی النہ علیہ ولم) النہ کا ہومال آپ کے باس ہے اس ایس سے

مجھے جی دینے کا تکم دیجے ، بنی کریم صلی النہ علیہ ولم اس کی طرف متوجہ ہوئے مسکوائے اور اس کو کچھ دینے کا تکم دے دیا۔

نبی کریم سلی النہ علیہ وحم بس معاشرہ کی ہوایت واصلاح کا کام انجام دے رہے تھے اس کے افراد کی دیمہ مجال اور ان

پرنظر رکھنے کے یہ پندنمونے بیں ۔ اور یہ زندہ حقیقی اور واقعی مونے بیل ہواس بات کی تک کرمے تیں کہ رسول النہ صلی النہ علیہ

ولم اور ل کی تربیت اور ان کے معاملات کی ورسٹگی اور ان کے معالات کی اصلاح اور ان کے معیارہ سوی کو مبند کرنے کے

سکس قدر تربیص شفے ۔

محترم قاریئن کرام!آپ نے دکھولیا ہوگا کریہ توجیہات و ملاحظات تبنیہات وارشادات صرف بڑول تک مم محدود نہیں تھے ملکہ ان کا دائرہ مجھوٹول تک بھیلا ہوا تھا.اور پرنفس انسانی کی اصلاح میں کسی ایک تعین جہت و جانب کیسات منصوص نہیں تھے بلکہ اس کے تمام جوانب کو محیط تھے.ایانی ، علمی ، نفسیاتی ، معاشرتی اور حبمانی تمام بہر سلوول کو شامل تھے۔

عورتوال سے معیا رکو ملند کرنے اوران کوان سے حقوق وینے سے مسلسلہ میں نبی کریم علی اللہ علیہ وقم نے جوارشا داست فرہ کے اور رنبال کی ہے اس کے چندنموٹ میٹیس ندمت ہیں :

اس نے عرض کیا: میرے والد نے میرانکاتی ا پنے بھانے ہے کردیا ہے۔ تاکہ میرے ذریعہ سے اس سے عیب ولقص پریردہ اس نے عرض کی ندمت میں ماہر بوتی اور اس نے عرض کیا ۔ اس نے عرض کیا ہے اس سے عیب ولقص پریردہ ڈال سکے اور میں اسے نابست کرتی ہوں ، نبی کریم صلی اللہ علیہ ولم نے اس لوگی کے باب کے باس پنیام بھیجا اور انہیں یہ کم دیا داس لوگی کو اختیا روے دیں ، تواس لوگی نے کہا ؛ میں اپنے والد کے فیصلہ کو ہر قرار رکھتی ہول ، میراا اور مرف یہ تھاکہ عور قول کو میعلوم ہوجا کے کہ والدین کو کلی اختیا رحاصل نہیں ہے۔

۲-۱۵ م بخاری روایت کرست بی که حضرت نابت بن قیس رضی النه عند (بونیک صالح مسلال تھے مگر بوصورت اور کا لے زئیس کے تھے ) کی بیوی سول النه علی النه علیہ ولم کی خدمت میں عاضر ہمو مین اور آپ سے عرض کیا کہ مجھے ثابت ابن سے دین یا افعاق پر کوئی اعتراض نہیں ہے۔ البتہ ہیں مسلمان ہوکر گفر کو ناپ ندکرتی ہول بنبی کریم ملی الله علیہ ولم نے ابن سے دیا ہوئی الله علیہ ولم نے ارشا و فرایا : بیاتم ال کوال کا باغ واپس کردوگ ؛ (لین وہ باغ جوانہ ول نے مہر پیس تم کو دیا تھا) انہول نے عرض کیا : میں الله علی الله علیہ ولی بینی م بینی مہم کو دیا تھا) انہول نے عرض کیا : جی بال ۱۱ رسول الله علی الله علیہ وسلم نے ال سے شوسر کو بینیام مجھیجا کہ ال کو ایک علی قل و سے دو ، جیانجے حضرت کی بال یہ بینی شوسر کی نعمت کی مشکری دراس سے بنفن کی دیہ سے اس کا حق ادار کرنے کونا پندگرتی ہوں ۔

ہے۔ تابیت نے انہیں ملاق دے دی۔

۳- بزار وطبرانی روایت کرتے ہیں کہ ایک عورت (جن کا نام زینب اور لقب خطیبۃ النسارتھا) نب کریم سلی التہ علیہ وسلم کی خدمت میں عورتوں کی طرف حاضہ ہوئی ہوں، اللہ نے مردول پرجہا دفرض کیا ہے۔ اس میں اگرانہیں کوئی زخم وغیرہ پہنچ جائے توان کو اجرملت ہے، اور اگران کوتس کر دیا جلئے تووہ اللہ کے بورہ اللہ کے اور انہیں رزق ملتارہے گا، اور ہم عور تول کی جماعت ان کی دیا ہوئی لا کرتے ہوں تواس اجرد فواب ہم ہوں کے اور انہیں رزق ملتارہے گا، اور ہم عور تول کی جماعت ان کی دیا ہوئی لا کرتے ہیں تواس اجرد فواب ہم ہوں کیا ملے گا؟ نبی کریم سی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرایا: تمباری جن عورتول کے راستہ میں بر بینیام پہنچا دوکہ شوہر کی اطاعت اور اس سے حق کا اعتراف اس سے برابر ہے تینی ال پرجی اللہ کے راستہ میں جہاد کرنے والول سے برابر اجرملتا ہے کئی تھیں سے بہت کم ای عور ہم ہیں جوالیا کرتی ہول.

کی پوری فکرکریں ۔

اورجب دیمید عبال و توجرکرنے کی عادت بروں کے تق میں فائدہ مندونفع نجش ہے اجساکہ ہم نے اجم بیان کیا تو چیز بچول کے تن میں تو اور زیادہ سودمندا ور نفع نجش ہوگی، اس لیے کھید نے بیے میں خیر کی صلاحیت پر فطری استعدادا در نفس کی صفائی اور وہ معصومیت ہوتی ہے جو بڑے میں نہیں ہوتی ، اس لیے بیے کی اصلاح بہت آسان ہے، اور اگر شیعے کو اچھا ماحول شاندار تربیت میں آجائے چاہے وہ داخلی اور گھر پوقسم کی ہویا سکول و مدرسہ یا معاشرے میں تو اسی صورت میں اس کی اصلاح اور اس کا اخلاقی نفسیاتی اور ایمانی طور برصیح طریقے سے نشوونما بہت معاشرے میں تو اسی صورت میں اس کی اصلاح کرنے ہیں اس کا عمل میں بڑا ہوا ہو، اور شاعر نے اسینے مندر جر ذیل شعری میں مرادی ہے:

وليس ينفع عند الشيبة الأدب اوربوط هول كوتربيت وادب كهدف المؤلمين ديب ولن يلب الخدشب ولان على الخدشب الخاق قومتها الخدشب لين الركوي كوربيره كروتو وه سيرم نهين أوتى

وينفع الأدب الأحداث فحف صغر بچين من بچول كوتربيت دينا فائده پېنچاتب إن الغصون إذا قسومتها اعتدلت اگرهنيول كوتمسيعاكرو تووهسيعى بوماتي

ئے کوفلع کہاجا تاہے تینی عورت، سپنے شوہرسے والاق وامس کرسنے کے لیے کچھ روپہیپیر دیتی ہے اور بیعرفین کی یضامندی سے ہی ہو تہہے۔

نبی کریم میں التدعامیہ و تم سے معاشرے میں افراد ، اور امت ہیں عورت ، اور خاندان میں بیسے کی دیکھ مجال ونگانی کے جو اصول مقررکیے ہیں الن کی وحبہ سے مربیوں پر خواہ وہ مال باپ ہول یا ساتذہ معلمین پرید فرلیفید عائم ہو آہے کہ وہ اپنی جہت تیز کریں اور عزم کومضبوط اور کوشش و محنت کو بڑھا ہیں تکرم کمان معاشرے کی تیاری اور شاندا رقوم کے بنانے اور مسلمان حکومت وجود ہیں لانے کے لیے ان سے ذمہ جو فرلیفید عائد ہو آہے اس کو پو اگر سکیس ۔
وہ اہم امور جن کامر تی کو جانیا ضروری ہے ان میں سے ریم ہی ہے کہ دیکھ مجال کے ذراعی تربیت نفس انسانی کنعمیر کے مہلوؤل ہیں ہے میا ہو ناچا ہیں جان میں سے میا ہو ناچا ہیں جانے ہیں اور مہلووں کے ساتھ مخصوص نہیں ہے بلکہ اسے تم میں ہووں کو محیط ہو ناچا ہیں جانے ہو ایک کا میں ایک کا میں کہ میں ایک یا دو مہلود ل کے ساتھ مخصوص نہیں ہے بلکہ اسے تم میں ہواں فرد کی تیاری کا مجل ایک نازن کہ اور کی تیاری کا مجل اور کی تیاری کا مجل ایک کا میں ناز کی تھا وال کو ان کا حق درہ ہے ہے۔

### بی کے کے ایمانی پہلوکی دیکھ بھال یہ ہے کہ:

٭ مرنی ان چیزول پرنظر کھے جو ہے کوانوکاروعقا کہ اور بنیادی اصولول کے سلسلہ میں ان مصارت سے ملتے ہیں جو اس کی تعلیم و تدرسیس ور منہائی کے ذمہ دار ہی خواہ مدرسہ واسکول میں ہویا اس کے باہر بر بھیراگر وہ خیراور مجلائی کی حالت دیکھے توالٹہ کی تعربیت وشکرا داکر ہے ،اوراگر صورت حال اس کے برخلاف ہو تو توحید کے بنیا دی عقا کہ اوا یاان کی بنیا دی عقا کہ اوا یاان کی بنیا دی باتوں کو ہے میں راسنے کرنے کے تسلہ میں اپنی برطری ذمہ داری کو بوراکر ہے تاکہ بچہ جم مانہ الحادی تعلیمات اور طرباک لادین نظر ایت وافرکار ہے بی سیکے ہے۔

افرظیم اسلام کونراب کرنی والی تا بین بین ۔

\* مرنی کو یہ بھی فیال رکھنا چا ہیے کہ بچر کس قسم کے ساتھیوں اور دوستوں سے ملی اور ان کے ساتھ اٹھیا جیٹھیا ہے ،
بھراگر وہ یہ دیکھے کہ وہ جن ساتھ اور کس ساتھ اٹھیا جیٹھیا ہے وہ غلط نظرایت اور طور لنہ فیالات کے مالک اور مرہ و بر
عقیدہ بین توم نی کو چاہیے کہ ایسے لوگول سے جیچے کا بیل بول بند کوا دیے ،اور اس کے لیے اچھے ساتھی اور تی بہر نشین مہایکر سے بن کے ساتھ اٹھنے بیٹھنے سے اس کی اصلاح ہوا ور دین میں نیٹ کی پیار ہوا در آخرت کی کامیا بی وسرخرو کئے فیصل ہوں۔
مہایکر سے جن کے ساتھ اٹھنے بیٹھنے سے اس کی اصلاح ہوا ور دین میں نیٹ کی پیار ہوا در آخرت کی کامیا بی وسرخرو گئے۔
نصیب ہو۔

\* مرنی کواک پرمبی نظر کھنا چاہیے کہ ہے کا کن جماعتول اور کن پارٹیول سے تعلق ہے،اگروہ یہ دیکھے کہ وہ پار کی

ا پنے قواعد ونظر بایت کے امتبار سے الحادی تعامت ہے اور وہ جاعت جب سے پیے کا تعلق ہے اپنے اغراض دمقانعد میں لاد پنی ہے تومر نی کو نیچے کوئل سے روکنے ہیں نہایت تمجھداری سے کا کینا چاہیے ، اور اسے چاہیے کہ نیچے کی نوب مگرانی رکھے، اور پر کوشش آس وقت تک جب رک محتای کی منتظریہ ، اور پر کوشش آس وقت تک جب رک محتای رکھے جب تک اس اور ھدایت کی طرف رجوع کرنے والا اور صرا طِستقیم ہر سیلنے والا نہ و کہ کے دی کی طب رف مائل اور ھدایت کی طرف رجوع کرنے والا اور صرا طِستقیم ہر سیلنے والا نہ و کہ کی ہے۔

### نے کے اخلاقی پیلوکی گرانی یہ ہے کہ:

\* مرنی بیچے میں سیج بولنے کی عادت پرنظرر کھے،اگروہ یہ دیکھے کہ بیب و عدہ کرنے یا بات سیبیت میں جھوٹ سے کام کیتا ہے اور الفا کو وکلات سے کھیلتا ہے اور معاشرے میں منافقول وجھوٹوں کے ویب میں آیا ہے تواہے جانے کہ بچہ جیسے ہی پہلا بھوٹ بولے اس وقت اس کی اصلات کرسے ،اوراس کونیچے وسیانی کا اِستدد کھلا دے ،اوراس سے سلہ منے حجوث اور ممبولول اور نفاق اور منافقول کی خوب انھیں طرح سے مذمت کرے ، اوراس کی قباحت مرانی کو واضح کرے تاکہ بچہ وہ حرکت دوبارہ نذکرے۔ بیکن اگرمرنی نے بیکے کوآزاد حجور دیاا وراک کی نگرانی و دیکیھ مھال نہسیں کی توالیی صورت میں وہ لیتیناً حبوط کا عادی بینے گا اور نعدا اور اس سے بندول دونوں کے بیمال حجوثا شما یوگار ٭ اس طرح مربی کو بچے میں امانت داری سے وصف کاجی خیال رکھنا چاہیے۔ اگر مربی یہ دیجھے کہ بچہ جوری سے راستے برحل رہاہے ( چاہے مولی چیزی جوری کیول نہومٹنلا ہے بہن بھائی کے جید آنے یا رہید یاکس ساتھی کے قلم می کا چوری کرلینیا) تواس کی فرمرداری بر ہے کہ وہ فورااس کی طرف توجبہ کرسے،اوراس مرض کاعلاج کرسے،اور نیچے کو یہ تبلایے کہ بیر ناجا بڑنہہے اور بیر بلاحق کسی کا مال بیلنے میں وال ہے۔ اسی طرح مرتی پر سیمبی لازم کہ وہ بیسے کے ول میں التٰدے مرا قبہ اور حاضرو ناظر بونے کالقین اوراس کاخوف پیرا کروہے تاکہ وہ اس حرکت سے بازرہے ،اوراس کی حالت بنورجاسے اور اس كے انعلاق درست موجائيں، ورند بجيدلازي طور سے خيانت كى طرف قدم بارھائے كا. اور حورى ووھوك دىپى كا عادی ہے گا۔ جکہ ایسا مجسم ونمائن اور بریخت ہے گاجس کی گندی حرکتوں سے لوگ اور تما کمعاشرہ نیاہ مانگے گا۔ \* مربی کوچا ہیے کہ بیچے میں آبان کی حفاظیت کی عادت کا حق نیال رکھے ، اوراگر وہ یہ دیکھے کہ بیچہ گالی بکتا ہے اور بان سے بہے کامات اداکر تاہے اور اس سے منہ سے فیش کامات وگندے الفا لم بھلتے ہیں تواس کو حکمت و دا ان سے اس عادت كاعلاج كرنا چاہيئے اور شيھے كى اصلاح كانوب خيال ركھنا اور امتما كرنا چاہيئے. اوران اسباب برغوركرنا چا جیئے جو بیچے کو ہدر بال فنش گونبانے کا ذراعہ جنے ہیں. تاکہ بیچے اور الن اسبا ب کے درمیان رکا وہ پیدا کرسکے ، او مچرنها بیت عمده اسلوب و پیارسے انداز سے بیچے سے سامنے با اخلاق بیچے سے ادصا فٹ وصفات اور باادب انسان

کی خصوصیات بیان کرسے تاکہ وہ اچھے انعلاق اور عمدہ افعال کی طرف مال ہوجائے۔

يتے كى زبان درست ركھنے سے ليے مرنى كواك بات كاست كى سات كى الى اتبام كر ابوا سے كر بچے كوبرے ساتھ يول سے دور یکھیے اس لیے کہ بحیرانہی سے لیآا ورا خذکر یا اورانہی کی عاد توں سے متما ترمہو تا ہے۔

\* مرنی کو شیکے کی نفسیانی وارا دی عادابت واخلاق کانعی خیال و دیکید مجال بر کھناچا سید، لبذا اگروه یه دیکید کرنجه دومرال کی اندهی تقلید کر باہیے اور ناز ونعمہ ہے۔ وآسائشش کا دلدا د ہ ہے ، اورگند کے ش گانوں ا ورموسقی ہے کاشوقین ہے ، اورعال ڈھال میں نی*ک ہے، اور* قابلِ اعتراض حگہوں ہر ہا آبہے، اور نامحرم عورتول سے ملیا .اور فمش وگندہے مناظر سے بیے تیلی ویڑن ووی سی آر دیکھیا ہے۔ سینما جا یا ہے، اور فیش سالے بیڑھیا ہے، اور مبنی تصویری اور عشقیہ کمالیال جمع كريا ہے، اگر مرنی بیچے كوان میں ہے ہے ہيز میں مبتلا دیجھے تو اس كوچا ہیے كہ اس كی آزادی وبے اور روك اور بالفلاقی کا خوش اسلونی وحکمت سے مارک کیے، لہذا کہی نرمی اختیار کرسے او کمجی ختی سے کا سے بھی ڈرانے وحم کانے سے او کہمی لالج و رغیب دے، اور پیچے کو اس دلدل وگندگی سے زکالنے اور اس کی اصلاح کے لیے ہرطریقے کو کام میں لے، تاکہ اپنے يحے کونیک متفنول کی صفت اورصافین واجھے لوگول میں پائے۔

الیها والدکتناحکیم اور بیچے بزنظر کھنے والا ہو آہے جونیھے کی بیے خبری میں اجانک بلااطلاع اس کے کمرے میں یہ د <u>یمض</u>یمبلاجا با ہے کہ وہ کیا ہوط صااور کیا تکھیا ہے اور کن جیزول کا مطالعہ کرتا ہے ۔ اور یا پر کہ ایجانک اس سے یا س جانے بر اس کے سامنے کیا منظر پیش آیا ہے ؟ ہوسکتا ہے کہ وہ بچے کے یاس جائے اور یہ دیجھے کہ بچہ نگی تصاویر کے دیکھنے ہیں مشغول ہے۔ یافحش محبلات ورسابول کی ورق گر<sup>د</sup>انی کررہاہیے، یا ہنچال خیز رہذبات بھطر کا نبے والا ڈائحسٹ یاکہانی بڑھ *ر*ہا ہے ایا نیک سی محبور کوخط مکھنے میں مشغول ہے۔ یااس کے علاوہ اور وہ امور حبراہا نکب داخل ہونے پرسپ سنے رسکتے ہیں م

، درباب اس وقت کتناحکیم واستمام کرنے والاشما رہوگا جب وہ اپنی بیٹی کے واقعةً مد<u>سے جانے اور وہال</u> ے داہر آنے کا بقین کرلتیا ہو،اس کیے کہ ایسانھی ہوسکتاہے کہ اس جبنوا و کفتیق سے بنتیجہ میں اس کو میعلوم کہ اس کی بیٹی الی*ی گندی حکمه جا*نی مبوجها*ل عزیت بو*لی جانی بهو اورشیرافت برباد بهونی بهو، یاا*س سیسسی آزا دیسه را ه دو نوحوال کے* ساتھ غیرشریفانہ تعلقات ہواں۔

اورتم نے کتنے ہی ایسے درد ناکقیم سے بداخلاقی کے واقعات اور تکلیف دہ گندے تعلقات کے حادثات

سے بیں جن سے بیٹیائی لیسے بنہ الو داوردل صدمات و آبول سے ٹھرھال مبوجا ماہے۔ اس لیے دکھ یو بھال کی عادت بھے کی مخفی عادتوں وکیفیتوں پرمطلع ہونے سے لیے عظیم ترین عادیت ہے ں سے بیے سے و مخفی از معلوم ہوجا نتے ہیں جن کاوہ ارتکاب کرتا ہے اوران برائیول برسے بررہ اعظم جا آ ہے جن

یک وہ مبتلا ہو آہے، بلکہ اسس دیکیو ہوال سے بیچے سے اخلاق و کر دار کی اسسی و حقیقی صورست مرنی سے سامنے آجاتی ہے۔

ال تما اتر کاوش وجدوجہدے بعد فرنی اس لائق ہوجائے گاکہ مناسب طریقے اور فائدہ منداسلوب سے بیکے میں موجود آنحان کاعلاج کرسکے، اوم فی ووالدا بنی اس جدوجہد میں لقینی طورے ایسے تربیتی حل کے بہنچ جائے گا جو بیکے کی اصلاح کا ذریعیہ بنے گا، اور اس کی وجہدے وہ گندگی کی دلدل سے بی جائے گا اور متوازل شخص وہارت یا فتہ انسان بن جائے گا۔

### عظی علی علمی ہلوگی دیکھ مجھال ہے مرادیہ ہے کہ:

\* مرنی بچے کے علم حال کرنے کی رفتارا ورثقافتی لحاظ سے ان کی شخصیت سازی پرنظر رکھے ، آیٹلیم ننواہ بھے کے حق میں فرض عین ہویا فرض کفایہ ۔

مرنی ان دسائل کو جمیشه موجود پائے گا ہو پہنے کی شری لحا الحسے تعمیر وکمیل اوراسلامی طور شخصیت سائک می مرد گار ثابت ہول گے۔

ا دراگر بچہ ایساملم عاسل کر ۔ با بیو جو فرض کفایہ سے قبیل سے بوشل یہ کہ وہ علم طب یا انجیئر نگ و غیرہ کی تعلیم عاسل کر رہا ہوتو تھے مرتی کا فرلینہ یہ ہے کہ وہ یہ دیکھے کہ بچہ اس ملم میں کتنی دل تمعی جمنت ، ذو ق وشوق اور لگن سے کام بے رہا ہے تاکہ حبب وہ فارغ ہو کرنے بچلے تو ابنی اس خصوصی تعلیم سے امریت سلمہ کو فائدہ پہنچا سکے اور اپنے علم اور خداد او

مرنی ایسے دسائل تھی کم نہ بائے گا جواسس کوعلم ، مہارت بکال اور تفوق میں نمونہ بناویں .اس مسلمیں مرنی کی توجہم اس طرف مبدول کرانا چا ہیئے ہیں کہ وہ فرض کفالیے کی وجہ سے فرض بن سے مسلمہ ہیں ستی نہ کرے مبکہ اس کو چاہیے کہ پہلے نمبراکیب ہر توجہ ویسے پھیرنمبر دو ہر ، یا کم از کم دونول (مینی فرض مین وفرض کفایہ دونول) پر مزامر کی توجہ ہے "باله : په دوبول لوسيله ورز تھيريا ورڪنا چا - بي*ڪ کريپ* بوليت اور ذمه داري بهت بري ہے۔

\* ای طرح مرقی کونیجے کی فکری شمجہ لوتھ براس کی فاسے نظر کھنا جا سے کہ اس کا اسلام سے دین و دنیا کے امتبا سے ، ورقر آن کریم سے دین و تشریع (قانون ) کے لحافاسے ، اور اسلامی الله علیہ وم سے اما و مقالی موسے کہ لوا کے اور دوس سے ، اور اسلامی الله علیہ وم سے اما و مقالی موسے ، اور دوس سے ، اور اسلامی الله علیہ وم افری ہے ہوئے ہے ، اور دوس و تبیغ سے گئن ، جذب و صور و جہد کے لحافل سے سے سے ، اور سے ، اور سے بات اس وقت کا متحقق نہیں ہو کئی جب قرار کی سے بالا کی تعلق نہیں ہو گئی جب کا سے بیچے کے ساتھ مسلسل رگا نہ جائے اور وقیاً فوق افریکا محل کے بیٹے سے اور دوس و تبیغ بیش کی رسالول اور اسلامی مشورات کی طرف اس کی بیٹا کہ نہائی کی جانوی اس میں پیلا نکیا جائے ، اور ساتھ ہی مفیدا سلامی تقاریرا ور مؤثر بہا درانہ وظول او نی طبول کے سننے کی طرف مینائی کی جانے ، اور اس سید میں مرتی کو بیجے کے ایسا کتب نوا نہ مہاکر ناچا ہے جس میں اسلامی کتابیں ، اسلامی کی طرف سے معافوت برمضا میں ، اور اعدار اسلام سے شکوک و مشسبہ ہت کا جواب موجو

بلاشبہ یمام وسائل پیچے کوایک ایسے مضبوط قلعہ میں لے لیں گے ہجوا سے عیب ئیول اور کفروا کوا دیرہست جاعتول کی سموم وفقندا نگیز کو برات سے دم سے بچاہے گا، بلکہ اس کو اس بات پرمجبورکر سے گاکہ وہ نہا بیت بہا دری وایان اور جزارت و شجاعت سے اسلا کے لیے گام کرے تاکہ وہ کم معاشرہ کی تعمیرا وراسلامی سکومت سے قیام میں ایک فائدہ مند ممید کا کام وہ سے

بروبہ ہم سے اس وقت مرنی کاول رنج فیم سے س قدر پارہ پارہ بہوجا آہے جب وہ دیکھیا ہے کہ اس کا بچہ اسکول میں مغرنی فلا سے حالات یا دکرتا ہے۔ اور وہ شرق سے وابستہ بڑی بہت تشخصیات سے حالات ، افکار،آراراورنظریات کے باہے میں توبہہت کچھ جانا ہے لیکن اسٹے سکانوں کی باریخ عظیم سلمان شخصیات کی زندگی فانحین اسلام کے حالات اور ماسر عمارہ اسن مے بارے میں سوائے چند باتوں کے اور کھی علوم نہیں .

مرنی کواس وقت کے سن قدر نئیج وغم بیوگا جب وہ بیچے کو فراغت سے پہلے اور فراغت کے بعدالی حالت میں پائے کہاں کوغیرول کی تہذیب وٹھا فت، اور مغربی یامشرتی افکار، اورالحا دی ودنیاوی ندامہب نے مسنح کرکھے رکھ دیا ہو اوراک کواس درجے تک پہنچا دیا ہو کہ وہ اپنے دین، اپنی تاریخ، اور بزرگول کافکمن بن گیا ہو۔

اس لیے فکری سوجہ بوجہ بہا کرنے کی بہت ہمیت ہے، اور پہلے میں اسلامی عقیدہ سے راسخ کرنے اورائ کو سیمی سے کہ اسلام کا یہ کا بل اور سیمی تصویب کی بہت ہے۔ اور پہلے میں اسلام کا یہ کا بل اور سیمی تصویب کی بہت ایک کا بہت ایک فیصلہ کن سیمی کے اسلام کا یہ کا بل اور سیمی تعلیم کا بیار سے کہ اسلام کا یک فیصلہ کن کہ باعث اور فوت و مجد کا فرایعہ ہے۔ کنوں ماور دیا ہے کہ کا فراہ کی کہ کہ کا بیار ہو ایک کا باعث اور فوت و مجد کا فراہ ہے۔ مرتی کو بیر جو بیرے کی مقل کی درستگل و توانی کی کا می خیال رکھنا جا ہیئے ، اور سروہ جیز جو بیرے کی مقل کی درستگل و توانی کی کا می خیال رکھنا جا ہیئے ، اور سروہ جیز جو بیرے کی مقل کی درستگل و توانی کی کا می خیال رکھنا جا ہیئے ، اور سروہ جیز جو بیرے کی مقل ، ما فظراہ و حدم و برد ، سی برد

' ٹرانداز ہو گئی ہو بیکے کوائ سے بچاما اور روکنا چاہیے ، او س کے سامنے اس کے وہ نفصامات بیان کردیا چاہیے س حسم وعل اونفس بربڑستے ہیں ۔

للہٰذامرنی کو یہ نومٹ کریتے رہا ہا ہیے کہ ہیں ہجہ ٹساب نوشی یا منشیات وغیرہ کے مکریں تونہ ہیں بڑگیا ہے اس لیے ک یہ چیز میں ہے کو تباہ کر دیتی ہیں اور جنوان او یہ سٹر یا کا مرض پداکرنی ہیں۔

بری مرنی کو بیمبی خیال رکمنا چاہیے کہ بچہ حبلق (مشیت 'رنی ) سے مرض میں گرفتا رنہ ہوجائے اس سے کہ اس سے دق و س کی بیماری پیلیا ہونی ہے اور حافظہ کمزور ہوجاتا ہے ، ذہن بجھ جاتا ہے عقل وافرکار میں برآگندگی اور ہے بینی اور طبیعت میں نحوف وڈراور دومبرول کا سامنا کرنے ہے سے کترانے کا مرض پیلا ہوجاتا ہے ۔

ای طرح تمباکونوشی کے مرض کاتھی خیال رکھنا چا ہیے۔اس لیے کہ \_\_\_\_اس سے اعصاب میں ہیجان پیا ہوتا ہے ا در سافظہ پراٹر میرٹا کے ہے ،اور صاصر سواسی اورغور و فکر کا ملکہ کمرز ور برٹر ہاتا ہے۔

اور آخری بات یہ ہے کہ مرکی کوال بات بر کھی نظر کھنا چاہیے کہ بچہ ہے دیائی کی چیزول سینما ڈرامے اور نسسگی تصویرول سے دیجھنے کاعادی نہ بنے ،اس لیے کہ ۔۔۔ اس کی وجہ سے عقل کاکام معطل ہوجا آہے ، اور آہستہ آہمتہ ما فظہ ذمن اور آہستہ آہمتہ ما فظہ ذمن اور آہستہ آہمتہ ما فظہ ذمن اور آہستہ آہمتہ ما فظہ اور اس کے مقبل سے سیاری میں میں میں ہوجاتی ہے ، اور اس کے صحیح اور بورات میں میں ہوجاتی ہوجاتی ہے ، اور اس کے صحیح ومتوازات میں ایس میں میں ہوجاتی ہے۔ اس اس میں از ہوتا ہے ، اور میں ان ای کی دیا ہے گاہ کہ میں اتنا ہی وقار اور عقل وسم میراری ہیں ہوگی۔ گی اور استمام کی جائے گا بھری چیز ہیں جن سے انسان میں از ہوتا ہے ، اور میں اتنا ہی وقار اور عقل وسم میراری ہیں ہوگی۔

### ع بیچے کی جہانی و کیھ بھال یہ ہے کہ:

٭ مرنی بیچے کے سلسلہ میں اپنے اوپر واجب ضرفرری لوا زمانت وحاجات شالًا انھی غذا ،صاف ستھے ہے مرکان اولیاس پوشاک کاخیال رکھے ، تاکہ بچول کو ہمیا ری لاحق نہ ہوا و رامراعن ووبا وَل کی وحب سے ان کے قسم لاغرونحیون نہ ہوجائیں ۔

\* اور کھانے ہینے اور سوسنے ہیں حفظان صحت سے ان اصوبول کا خیال رکھے جن کا اسلام سنے کم دیا ہے ۔ کھانے سے سلسلہ میں مرتی کوریخیال دکھنا چاہیے کہ بچے کو بہنمی سے بچائے، اور کھانے بینے میں ضورت وعا و سے زیادہ کھانے سے دیے، اور کھانا ہفتم ہونے سے قبل کھانا کھانے سے منع کہے۔

یینے سے سلے میں مرقی کوریخیال کمھنا جا ہیئے کہ اسے دویا تین سانس میں پیننے کی تعلیم دے، اور ترین میں سان پینے سے منع کرے، اور کھر طیسے ہوکر سپینے سے روکے۔ سونے کے سلسلہ بیں پیھے کو داہیں کروٹ پر لیٹنے کا تکم دے اور کھانا کھا کرفورًا سونے سے منع کرے۔ \* مربی اورخاص کر ال کو میخیال رکھنا چاہیے کہ متعدی امراض سے بچاؤکی احتیاطی تا بیراضیار کی جائیرضعوصاً جب مسی ایک بیکھے کوکوئی ایسا مرض لائق ہوجائے تو دوسرے بچول کواسسے دور رکھے ، ٹاکھرض پیھیلنے اور وہا کے بڑھنے سے روکا جاسکے ۔

اور مفاطق ترابی کونیچے کی صحب برقرار رکھنے کا خیال رکھنا چاہیے اور مفاطق ترابیرا نفتیار کرنا چاہییں ۔
 اور کھانے سے مسل کا طرابیہ بیسے کہ کچاہیل کھانے اور سبز تول کو دھونے سے قبل استعال کریے ہے منع کرسے ، اور کھانے سے قبل دونول ہاتھ دھونے کا حکم دسے ، اور کھانے ہیں بھیؤ کہ مار نے سے منع کرسے ، اور اسی تہیں صحبت سے متعلق اور دوئم کی ۔

وہ تعلیمات جواسلم نے پیش کی ہیں.

۔ بسے کوریاضت دورس کاعادی بننے اور سہواری سیکھنے کی گفتین کرسے، اورسادگی افتیارکر سنے اورمردانہ زیرگی اور تقیقت بہند آدمی بننے کی گفتین کرسے، اور عیش وعشرت میں بڑنے اور نا زونعمت بین ستفرق نہونے دے تاکہ کچہ قومی البیم بنجتہ ارادے والا، اورمضبوط و تندرست جسب والا، اورکرگزرینے والا انسان بنے۔

ی مرتی کوتا کان چیزول پرنظر کھنا ہے ہیں ہوتی کوتباہ اور صحت کو برباہ کرنے والی اور بیماریول کا فرائیے ہیں، جیسے کہ مندرات ومنشات کا استعمال ، سنگر بیٹ نوشی ، مشت ' نی ، نیا ولواطت وغیرہ اس لیے کہ بیتی کہ ما دہمی سرطان سے امراض ، دل کی بیماریول ، اور سے چینسیول ، اور عگر کی خرائی . بانمجھین ، اور مٹیھول ورگول سے کھیا وا وراس سے علاوہ اطها ، ۔۔۔ اوراس فن کے ماہرین سے بیان سے مطابق دوسرے اور خطرناک امراض کا فرراعہ بنتی ہیں ۔

علادہ اطبا، \_\_\_ اوراس فن کے ماہرین سے بیان سے مطابق دوسر کے اور خطرناک امراض کا ذریعہ بنتی بنی۔
اور جب بہتے ہیں ان ہیں سے سی ہماری کی کوئی علامت ظاہر ہوا وراس کی نشانیاں وعلامات نظر نے گئیں، تواس سے علاج کے بیاری کوئی علامت طاہر ہوا کرنا چاہیے، تاکہ نبی کرم کی التّدعلیہ وقم کے سقول سے علاج کے جاتوں کی کھیل ہوجے ان کا حدونسائی نے روایت کیا ہے ،
کی کھیل ہوجے ان کا حدونسائی نے روایت کیا ہے ،

(( يعباداً لله تداوواف إن الله عزَّوج لله الساعدَ المَّ إلا وضع له شفاء)).

اسے اللہ سکے بندوعلا ج کر داسس یے کہ اللہ عزوج نے کوئی ہما ی نہیں آتا ری مگر یہ کہ اس کی دوا و شفار مجن از ب

فروانی ہے۔

ا وراسی صورت میں مرتی ان اواسر بر عمل کرنے والا ہوگا ہوا سکم نے علاج ودوا داروا وراحتیاطی تالبراختیار کرنے اور ہم وصحت میں علق ہسیب ن کیے ہیں اور اس طرح سے نیچے کا ہم ہمہت امراض سے بھی ہائے گا ، اور وہ اک بیش آمدہ خطرے اور مرصل سے حیٹ کارہ حاصل کرنے گا ۔

### عبے سے نفیاتی بہلوکی دیکھ مجال سے مرادیہ ہے کہ:

مرنی بیھی شرمندگی کی عاوت برنظر سکھے۔ لبذااگر وہ یہ دیکھے کہ بچہ کمیسوئی تنہائی اور لوگول اور محبسول سے دوری کا خواہال ہے تواسے چاہیں شرمندگی کی عاوت برنظر سکھے۔ لبذااگر وہ یہ دیکھے کہ بچھنے کی تھفین کرسے ، اور اس بین مکر وہم ہے ، اور سوجہ بوجہ وہ بھائے کے تھفین کرسے ، اور اس بین مکر وہم ہے ، اور سوجہ بوجہ وہ کا من مناشرتی بختگی کو بڑھائے۔

ا ای طرح بیے میں نوف وڈرکی عادت پرنظر سے اگر پیمس ہوکہ بچر میں بزدلی اور خوف اور حادثات سے ساھنے شکست عور دہ بننے اور شکلات سے بھاگنے کی عادت ہے تو مرنی کوچا ہیے کہ بیچے میں خوداعتما دی پدا کرے اپنے پر بھروسہ کی عادت ڈلائے اور شکلات واقدام کا بہلوا جاگر کرسے ، اکہ وہ دنیا وی زندگی واس کی مشکلات وافات کا منبی خوثی خندہ بیٹیانی سے مقالبہ کرسکے ، اور شجاعت واقدام کا بہلوا جاگر کرسے ، اکہ وہ دنیا وی زندگی واس کی مشکلات وافات کا منبی خوثی خندہ بیٹیانی سے مقالبہ کرسکے ، مال پرخصوصی طور سے یہ فریف عائد ہوتا ہے کہ وہ بیکے کو ساسے تاری یا جن بھوت ، پڑایل اور عجیب و عزیب مخلوق ہے ۔

نہ درائے تاکہ بچہ نوف وڈر کا عادی نرگز جائے اور خوف سے اس تک پہنچنے کاکوئی راستہ باقی نہ رہے۔

\* ای طسسرے بیصے میں احمال کہتری کی بیماری پڑھی نظرتھے،اگر میعلوم ہوکہ بیصے ہیں اس کا کچھ اثر ہے تواسے نہایت حکمت اورخوش اسلونی سے اس کا علاج اس طرح سے کرنا چاہیے کہ سسے ذریعہ سے وہ اسباب ختم ہوجا میں ہو اس کا ذریعہ بنے ہیں۔

اگر اصکس کہتری کامبدہتے ختیروا ہانت ہوتوم (نی کوچاہیے کہ بیچے کواچھے الفاظ۔ سے مخاطب کر۔۔۔ اور پہا ر۔۔۔ پکار۔۔۔۔

۔ اور آگراصاس کمتری کاسبب زیادہ نا زنخرسے اٹھا نا ہو تومرنی کو پیچے کے ساتھ مناسب تربیت ، منزا ، پیاراور نرمی گرمی دونول سے کام لینا چاہئے۔

اوراًگراس احباس وشعورگی و حبیتی ہو، توتیم سے سرپرستوں میں سے جومرنی بیں انہیں چاہیئے کہ اس سے ساتھا جیا بر آؤکریں اور اسے مجبت ویبار کا احباس دلائی ۔

بر راگراس است کا سبب نقروغربت ہوتومرنی کو چاہیے کہ بہے ہیں صبرا وربر داشت اوراسلامی شخصیت کیمیزی اپنے پراعتما دکی روح پداِکریسے ، تاکہ بچہ اپنا راستہ خود مہوار کرسے ، اور اس کے علاوہ اور دوسرسے لوگوں اور بڑے برط سے مالداروں نے بوکام کیا ہے وہ می پر کام کرسکے ،

اوراگراس اصاسس کاسبب سند ہوتوم نی کواس بمیاری کا علاج بچے سے مجست سے ذریعے کرنا چاہیے .اوراسس کے اوراس سے بھائیول میں برابری کرسکے اوران اسباب کو دورکرسے کرنا چاہیئے جومد کا ذریعہ بنتے ہیں۔

\* بیے میں غصد کی عادمت رکھی نظر رکھنا جا جیئے، اگر مرنی یہ دیجھے کہ بچہ معمولی سی بات پر نا دافش ہوجا تا ہے تواسے اس کے

اسباب کاازاله کرے اس ما دت کوختم کرنے کی گوشش کرنا جا ہیے۔

سباب ۱۰ ارده دیسے ۱۰ ما دوس وسم سطے کا وسس رہا جائے۔ اگر غصر کا سبب بھاری بہوتومرنی کوکسی طبیب سے اس کا علاج کرنے میں عجلت کرنا چاہیے اور اگر غصر کا سبب بمبوک بہوتومرنی کو بیکے کو مناسب وقت بر ننزا دینے کی طرف توم کرنا چاہیے۔ اور اگراس کا سبب بلا دجہ ڈانٹمنا مجھ کنا ہوتومرنی کوچاہیے کہ زبان سے ایسے کلمات نہ نکا سے جوڈانے ڈپٹ اور اہانت و تحقیر کا ذریعہ بنتے ہول ۔

ا دراگر عنصه زیاده نازنخرے اسٹھانے اور نا زونعمت کی وجہسے ہوتومرنی کوچاہیے کہ اس سے ساتھ عام درجہ کا س معاملہ کرسے اور اسے ساوگ کاعادی بنائے۔

ا دراگراس کاسبب مذاق اٹرا ناا در شی ٹھٹے۔ کرنا ہو تومرنی کوچا ہیے کہ بچے کوالیں چیز دل سے دور رکھے جواس کے جذبات کومرانگیختہ کرنے والی مول ۔

بن اسی طرح مربیول پر به ذمه داری تھی عائد ہوتی ہے کہ غصہ کو مختند اکر نے میں اسلام کے بیان کر دہ قواعد وضوابط کو ابنا ئیل اورا پنے بچول کوان کی تعلیم دیں تاکہ وہ غصہ میں آپ سے باہر یہ ہوں اور جذبات کے برا گیختہ ہونے پران ک تیزی و شدت ماند مرم جائے۔

### 🗨 بیچے کی معاشرتی زندگی برنظرر کھنے سے مرادیہ ہے کہ:

\* مرنی بیری یہ بات نوٹ کر ہارہ کہ وہ دوسرے کے تقوق ا داکر ہاہے یانہیں ؟ اگر وہ میمسوس کرے کہ بچہ بینے یا اپنی والدہ یا بین ہے ہوں یا رشتہ دارول یا بیروسیول یا سافیا برطوں سے نق میں کوئی گوا می کر ہاہے تواسے بیسے کہ بیرے کے سامنے اس کو تا ہی وتقصیر کا انجام ا وراس حرکت کے نیائے بیان کرے۔ تاکہ وہ مجھ جائے اور عمل کرنے مگ کہ بیات کرے۔ تاکہ وہ مجھ جائے اور عمل کرنے مگ جائے ۔ اور حقوق اداکر نے میں جو کو تا ہی اور آ داب کا خیال رکھنے میں ہوستی اور فرائنس کی بجاآ وری میں بوتقصیر اس سے جوئی تھی اس سے دی ہوگی جائے اور ہا آ جا ہے ، اور حقیقت یہ ہے کہ اگر مکمل نظر رکھی جائے اور ہیشہ دیم پر جوال ہو، اور تنہیں ہو تو سے وہ بچہ ایک ایسا ہو کشیرا ربا ادب ، بااخلاق بن جائے کا جو دنیادی زندگی میں برخص سے حق کو طاکسی کی بیش ہوتی کو طاکسی کی بیش ہوتی کہ میٹی ہستی و تقصیر سے ادا کر سنے والا ہوگا ۔

ب مرنی کوچا ہیں کہ وہ بیکے کے دور ول کے ساتھ اٹھنے بیٹھنے اور معاشرت کے آداب بڑل کوھی کمخوط نظر سکے ،اور اگروہ یہ دیکھے کے دور ول کے ساتھ اٹھنے بیٹھنے اور معاشرت کے آداب ،یا سلام کے طریقے ،یا مزاح کے طریقے ،یا گفتگو وہات جیست کے آداب ،یا چھنے کے اگروہ یہ دیکھے کہ بیکے کہ کہ مند کہ بیاری کے عنوان کے کہت اس کتاب " تربیۃ الاولاد فی الاسلام " کی قیم " فی کی تربیت کی ذمرد یں "کی بھت میں غصر کی بیماری کے عنوان کے کہت اس بیماری کے دولان کے کہت اس کتاب اس کی اور اس دیماری کے عنوان کے کہت اس بیماری کے عنوان کے کہت اس کتاب اس کی اور اس دیماری کے میماری کی اور اس دیماری کی اور اس کی اور اس دیماری کی اور اس کی دولان کی کہت اس کتاب اس کی اور اس کتاب اس کتاب کی دولان کے کہت کی کہت میں خوال کی اور اس کتاب کی کا کہت کی کہت کی خوال کی کا کہ کو اس کتاب کو کہتے کے دولان کے کہت کی خوال کی کھنے کہت کا کہت کے دولان کی کھنے کو کو کو کھنے کا کہت کی کہت کی خوال کی کا کہت کی کہت کے دولان کے کہت کی کہت کی کہت کی خوال کے کہتے کے دولان کے کہت کے دولان کی کو کو کہت کی کہت کی کہت کی کہت کی کہت کے دولان کی کہت کی کہت کی کہت کی کہت کے دولان کے کہت کی کہت کی کہت کی کو کہت کی کہت کے دولان کی کہت کی کہت کی کہت کی کہت کے دولان کی کہت کے دولان کی کہت کی کہت کی کہت کی کہت کی کہت کی کہت کے دولان کے کہت کے دولان کے کہت کی کہت کی کہت کے دولان کے کہت کی کہت کی کہت کی کہت کی کہت کی کہت کی کہت کے دولان کے کہت کی کہت کے دولان کے کہت کی کہت کے دولان کے کہت کی کہ

مبارک باد دسینے یا تعزیت یا اس میسے اور دوسرے معاشرتی آداب میں کو آبی کرر ہا ہے۔ تومرنی کو اپنی سی پورک کوشش اور پورا زور اس بات پرصرف کرنا چاہیے کہ بیکے کواسلامی آداب وطور طربیقے آجائیں . اور وہ بہترین عادات کا عادی اور عمدہ صلتول کا مالک جائے۔

بلاست بیم وقت کاادب سکھانا اور متنقل عادی بنانا بیے کوایک ایسا انسان بنا دیے گاجودوسرول کا احترام کرنے اور لوگول کے ساتھ باادب رہنے اور ہرصاحب حق کو بلکی کوتا ہی پاکستی کے اس کا بق اوا کرنے کا فرلینہ انجام دینے والا ہوگا۔

\* مربی کواک برمی نفر کھنا جا ہیئے کہ بچہ دوسرول کے ساتھ اچھے احساسات وجذبات رکھنا ہے یانہ ہیں، لہذا اگر دہ بید دیسے کہ بچہ میں انہت و کہ بریا یا جا آ ہے توا سے اٹیار کا بیق دہے۔ اوراگر است بخض و تسد کی طوف ماکل دیکھے تواک میں محبت وصاحت دلی ہے بچھے ہوں ہے۔ اور اگر یہ دیکھے کہ وہ حلال کو حلال اور ترام کو حرام نہیں مجساتو اسے مائٹہ کا نوف و تقوٰی کے اختیار کرنے گاگھ دے۔ اور است اللہ کے عذا ب و آخرت سے ڈرائے گاکہ ال میں اللہ کے مافرونا فر مونے کہ ہے کو سی نالیندیدہ چیزیا ہمیاری وغیرہ نوفرونا فر مونے اور اگر یہ دیکھے کہ ہجے کو سی نالیندیدہ چیزیا ہمیاری وغیرہ نوفرونا فر مونے کہ ہے کو کسی اللہ کے فیصلہ اور تقدیم پروائے کہ وسے کے مقیدہ کو اسم کی گرائیوں میں اللہ کے فیصلہ اور تقدیم پروائی رہنے کہ وسے کے مقیدہ کو اسم کی گرائیوں میں ایک و تقوٰی اور مراقبہ کے یہ نفیاتی اصول جاگزی کرسکتا ہے۔ اور اس کے جانے میں ایمان و تھی در کہ انہاں مون جائے ہے تو وہ اللہ کے تقوٰی ہو اور اس می مون انسان ہے۔ اور السبے اور وہ ایک کا می وکیل انسان موسم جوان اور موائد کے تقوٰی ہی دار کرے اور السبے اور اسم کی مون انسان موسم کی ایمان کا ور اور ایس کا احترام اور نفوس میں عزت و برائی ہو۔ دسروں سے مقوٰی تھی میں در دو ایک کا مونے ام اور نفوس میں عزت و برائی ہو۔ دستارہ کیا جائے ہوائے ور اسم کا احترام اور نفوس میں عزت و برائی ہو۔ دساسات بھوں ور اسم کی اور دول میں اس کا احترام اور نفوس میں عزت و برائی ہو۔ دساس کی اور دول میں اس کا احترام اور نفوس میں عزت و برائی ہو۔ دساس کی احترام اور نفوس میں عزت و برائی ہو۔

### و مانی بیلوسے بیکے کی دیکھ کھال کامطلب یہ ہے کہ:

\* مرنی بیحی الله تعالی مبحانه کے مراقبہ کے بہلوں نظر رکھے اوران کو پہشہ یہ تبلا یا رہے کہ اللہ تعالی سبحانہ اسے دیکھ ریاہے اور اس کی بایم سن رہاہے ،اور اس کے ظاہر و باطن کوجانیا ہے ، اور انتحصول کی خیانت اور دلوں سے بھید پرمطلع ہے۔

ا دراس کویہ تبلا آ رہے کہ آسمانوں وزمین کی کوئی چیز بھی التہ تعالیٰ برمخفی نہیں، اور یہ بات ایس وقت ہی ہیدا ہو کئی ہے حبب اس پیچے کی رہنمائی الٹہ کی ذات برا بان، اوراس کی معجہ قدرت اوراس کی عبیب خلیق اور ہرڈیش آمدہ صورت مال پر اس کے دربار میں گرون حب کا سنے کی طرف کی جائے.. اس سے بعدوہ حب معبی کوئی کام کرسے گاتو الٹنہ کوجا ہ و ناظرجان کراس کےمراقبہ کوسا منے رکھ کر کرسے گا،اورغوروفکر سے وقت بھی بی دصیان رہے گاا وراحساسات کی دنیامیں یہی خیال ہوگا، بلکم اقبہ اس کے وجود میں راسخ ہوجائے گا اور اس کے دل واحساسات وجذبات پر غالب بنیا د بن جائیگا بچه اس بنیادی رمنهائی اورمفیدترا یانی ترسیت کامپین می می س قدر محاج موتا سے!!

\* مرلی کوخشوع فتصنوع بقوی اورالتدرب العالمین کے سامنے عبودیت و بندگی کے پہلوکو می محوظ خاطر رکھنا جا ہیئے جسس کاطریقہ یہ بہے کہ بہے کی بھیرت کوالٹدک اُس عظیم بڑائی کے مجھنے کے لیے کھول دینا چاہیے جو چھوٹے برائے، جانلار وغیرجاندار اگنے والی چیزوں اور درختول مختلف رنگ شمے شاندار میکنے والے بچولول ، اوعجیب وغریب قیم کی کروطرول اربوب مغلوق کو محیط ہے ، یہ دیکھ کر دل کے سامنے سوائے اس سے اورکوئی چارہ کار نہ ہوگاکہ وہ اللہ کی عظمیت سے سامنے جھک جائے ،اوراس سب کے سامنے فنس انسانی سوائے اس کے اور کری جیز برقا درنہ ہوگی کہ وہ اللہ سے تقوٰی کوافتیار کرے،اوراک کےسامنے بندگی کے لیے جھکے .بلکہ اسے آل میں طاعت وفرمانبرداری کی لذرت اورالتُدرب العالمین کی عبادست کی حلاوت محسوس موگی ۔

بيع بن خشوع وضنوع كے بيلوكو قوى كرنے اور تقوى كى حقيقت كوراسىخ كرنے والى جيزيہ ہے كہ استي عبارى ، شعور کی تمری سے نماز میں خشوع و خصنوع اور قرآن کریم کی تلادت سے سننے پڑمگین ہونے، رونے یا روسنے والی شکل بنانے کا عادی بنایا جائے۔ا وراگران صفات بروہ اسپنے آپ کو ڈھال سے اوران پڑل شروع کرد سے تو ہاہشہ وہ ان النّدوالول میں سے بن جائے گاجن برنستی تسم کا خوف وڈر موگاا ور مذوہ مگین مول کے. بلکہ وہ صالحین سے زمرےیں دال ہوجائے گا. اوران توگول ہیں سے بن جائے گاجن سے بارسے ہی ارشادِ باری تعالیٰ ہے :

﴿ الكَا إِنَّ أَوْلِينَا مُا اللَّهِ كَا خَوفٌ عَلَيْهِمْ إِلَّهُ اللَّهِ كَا وَهُومِ لِوَّلُ اللَّهُ كَا وَست بين النابِرة وُرسِهِ

وَلاَ هُمْ يَخْزَنُونَ ﴾ الَّذِينَ أَمُنُوا وَكَانُوا ﴿ الرَدُوهُ مُكَين بُونَ عَلَي بُونَ عَلَي الله عَالَ ال يَتَّقُونَ هُ). يونس. ١٢٥٩٣

ۇرىتەرىپى

\* مرتی کوعبا دان ادا کرنے سے مہلوری نظر کھنا ہے۔ اوراس کاطریقہ یہ ہے کہ بجہ جب سامت سال کی عمر کو بهنيج مائة تواسي نماز كافكم وسعة تاكدنب كريم عليه الصلاة وأسلام كے مندرج ذيل فروان مبارك برعل موجائے: ((صرواأولادكم بالصلاة وهمأبت،

تمہارے بیجے دب سات سال کی مرکو پہنچ جائیں تو انہیں انساز کا حکم دو ر

سيع سنين ١٠١٠.

روزه کو تھی نماز بر قیاس کیا جائے گا اور جب بچہ روزہ رکھنے سے قابل ہوجائے توعادت ڈلوانے کے لیے اسے رمضان کے بعض روزے رکھوا ناچاہیے ، اور اگرمرنی مالی استطاعت رکھتا ہوتو بیکے کواپنے ساتھ حج کے لیے لیے جائے تاکہ وہ جے کے مناسک سیکھ ہے ، اورای طرح اسے اللہ کے داستہ میں خرجے کرنے کا عادی بنانا چاہیے چاہیے وقیاً فوقیاً پند روب ہی ہیوں نہوں ، تاکہ جب وہ شریعیت کی نظریں مکلف ہوجائے اور سانوں کی نظری مئول بن جائے تو ورفیہ رُکاہ کا عادی بنے ، اس سب سے ساتھ ساتھ مرتی بریم بھی لازم ہے کہ نیچے کو اپنے ساتھ عبادت و وکرالہی کی مجسول میں بھی لے جائے ، اورعلم وفقہ سے ملقول میں حاضرہو ۔ اوراس کو قرآن کریم کی تلاوت وتنسیر قرآن سکھانے سے لیے مناسب آدمی تعین کرے ، اور اسے خلص علمار ربانیین سے اقوال سنائے ، مرلی کویسب کچھ اس وقت تک کے رہا چاہیے جب کک نیچے کف س عبادت سے ذرایے معافی اور اس کا دل اللہ سے ذکر سے روشن ومنور ، اوراس کی روح پاکبازی وعنت سے آسان برلبلہانے ، اور اس کے اصاسات وجذبات قرآن کریم کی آیات سے ترکمت میں نہ آجا بیک ، اور اس کا دل عالمین کے اسان برلبلہانے ، اور اس کا دوراس کا وصدان رسول اللہ ملی وقم سے صحابہ وضوان اللہ علیہم المجمعین کے دوراد وسیرت سے حرکت میں نہ آجا ہے ۔

مرنی کوچاہیے کہ پیچے میں نفیاتی وروحانی مجابرہ کی عادت سیداکرے اوراس پرنظر کھے کہ بچسس درجہ پر بہنجا اور کہال تک متاثر ہوتا ہے ، جسیاکہ مرفی کی ذمرداری بیمبی ہے کہ وہ نیسے کی تربیت میں روحانی مجا بدے اور ساسی وہوتی مجابرہ مبارہ میں مواز نہ کرے ، اس لیے کہ سس طرح است طلم وکفرسے جہاد کا استمام کرنا ہو گا۔ ہو اور دشمنول سے جہاد کے سلسلہ میں مجابرہ کرنا ہوگا۔ اس جنگ اور اس جنگ اور امر بالمعسرہ وف وہمی عن المنکرے فرلیفنہ کی جوذمہ واری مرفی پرعا کہ ہوتی ہے اس نے اگر اس میں سسی یا گوتا ہی کی اور سے اور کا نیٹھ یہ ہوگا کہ بچہ گوشنشنی بسسی اور دوگوں سے دوری کا خوگر ہے گا، اور جو ہوگیا اس پر ستھیار وال کر بیٹھ جائے گا ، اور میدان جائے گا ، اور میدان جب سے سامنے متھیار وال کر بیٹھ جائے گا ، اور میدان جب سے سامنے متھیار وال وربیا و سامن برجم بورکرے گا

اسس کیے جہاد نفس اور جہا و سیاست میں مواز نرکر ناایک الساطر بھتہ ہے جو بہے کو اس بات برمجبور کرے گا
کہ وہ ونیا وی زندگی میں ہرصا رہ حق کاحق اوا کرے ،اورساتھ ہی عباوت ومراقبہ کے و لعیہ اللہ کاحق بھی اوا کے
اورساتھ ہی اللہ کے احکامات کوروئے زمین پر نافذ کرے اور جوطواغیت و سرشس احکام اسلام کی مخالفت کرتے
میں ان کی بیج کنی کرکے اسلام کاحق بھی اوائر ہے ،اورائی صورت میں اس بیجے نے قرآن اور تموار ،اور وین و
حکومت ، اور عباوت وسیاست سب کوجمع کرایا ہوگا ،اورائ کے بارے میں شاعر سے مندرجہ ذیل اشعار بائل

سیحے ہول گے۔

وساعرفواسوى الاسلام دينا ادراس كم عدده كردينا ادراس م كم عدده كرد دين كونه بجب نا سيدك ون المعاقل والحصوب المعاقل والحصوب جوقلعوں اور محفوظ مقامات كويزه يزه كرديتين

شبب فالمسوا سببل المعالی وه ایسونر وان می جنبول نظیم کاموں کے راسے آسان کہیے افدا شہد وا الوغیب کانسوا کمس تا میں تربیب ہوتے ہیں توالیے مع فوج ہے ہیں میں تربیب ہوتے ہیں توالیے مع فوج ہے ہیں

من الاشف ق إلا ساجدينا نداک وحب رسے سجدہ ای کی مالت میں و کھیو سکے یاک ، صاف آزاد و مانت دا رجوان بنایسه

وإن جن انظلام فسلا تراهب ا ورجب رات کی تاریخی چھا جائے توتم انہیں خوف كذلك أخرج الإسلام قومى شبابً لحاهرًا حراً أمينا اسن نے میری قوم کو ایسی ارح

٭ اور آخری بات یہ ہے کہ مرتی ادعیۂ ماتورہ کی طبیق سے پہلو پڑھی نظے۔ رکھے قبس کاطریقہ یہ ہے کہ نیمے کو وہ اہم دعامیں یادکرا دینا چاہیں ہو ۔۔ صبح وشام، سونے جاگئے، کھانے چینے رہیٹے بھرنے ، گھریں داخل ہونے . وہاں سے نکلنے ، کیٹرا پیپننے اس کے آبار نے کے سلسلہ میں وار دہوئی ہیں ، اسی طرح سفرک دعائیں ، استخارہ کی دعا، باش کی دعا جاند نیکھنے کی دعا، بینے خوابی ، بیماری غم وغیب برہ کی وہ دعائیُں جواس سلسلہ میں ما تور ونتول اورا حادبیث صحیحہ <u>سے ثابت ہیں ۔</u>

بلاشبه اگرم فی بچول کو میما تورد عابئر سکھا دستے کا اوران کو یا د کرائے گا، اوراسے ان اوقات بران سے پڑھنے کی ترغییب دے گا، تواس سے بیچے ہیں ابتد کا توف وخشیت بڑھے گی، اوراس سے دل میں تقوٰی جاگزین ہوگا،او مراقبہ ومحاسبہ کی عادت بڑے گی، جونیچے کی ایمانی واضلاقی تربیت اور روحانی ونفیاتی ومعاشرتی شخصیت سازی سے لیے بڑے نے وُٹرعوامل میں ایسی صوتیحال میں نیکھے سے حالات درست اوراس سے اقوال وافعال صیّح ہوجائیں گئے .اور مجروہ بچہ پاکیزگی،طہار، صفائی وبرارت میں رفیئے رہین برسطنے واسے فرشنے کی ماندہوگا۔

ضمیرسے بیدارکرنے اور النّہ جل شانہ کے مراقبہ کے سلسلہ میں سُاعرنے کیا نوب کہا ہے :

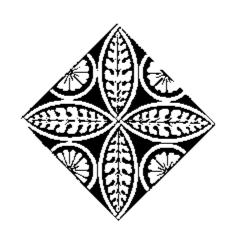
خلوت ومكرب قل عليَّ رقيب كماي تنها وكيل تتعابكه يكهوكه مجعه مرميرا رقبيب مكران مؤزوب ولاأن مساتخفيت عنديغيب اور زریکه تم جو کچه حصیار ب بو وه اسس سے مخفی بریکا

إذا ما محلوت الدهربيم أفلاتقل اگرتم کیمی خلوت میں ہو تو یہ ہرگز نہ کہنے ولاتحسبن الله لغف لم ساعةً اوررین سمجفاک اللہ تعالیم سے یک گھوی کیلیے مجی فالے

ا مرتی صاحبان دیکی محال کے سلسلہ ہیں اسلام کا زار ومنہج ہے۔ اور حبیباکہ آپ نے مشاہرہ کرلیا یہ ایک نہایت سیدهاسادهامنهج ہے،اگرآپ اس کی نبیادی باتول اور تعلیم بڑیل کریں گئے اور اس سے طریقیہ برجیس گئے، اور قواعد کو اینائی كيے نوآپ كا بٹياآپ كى انكھول كى تھے نگرك اورمعاشرہ كى تعمير يل اچھى اپنے اورامت اسلاميہ سے تيم كاايك نفع بخش اور اہم ترین عضوبن جائےگا۔ اس لیےا سے مربی محترم بیچے کی خوب دیکھ بھال کیجیے، اوروہ س مگر ہوائے آپ بھی اس کے منه ملاسظه مجواه م نودى كى ب كما ب الاذكار" اورشيخ عبدائتدسرج الدين كى كماب الأ دعية والأذكار" اورام شهيدك كما ب المأقورت مرني حضات كو ال كتب من وه تما كم ما تورد عايش مل جايش گر جوانهين بجول كوسكها ما جابير.

ساته حائیں آپ بزائپ خود بھی اس سے ساتھ ہول .اور اپنی افکارا ور اہتمام کوبھی اس سے ہمراہ رکھیں اور دیکھیے بھال و رفاقت سے ذریعیکھی اس سے ساتھ رہیں ۔

س کے ایمان ، اس کی روحانیت ، اس سے اخلاق ، اس کے علم ، اس کے دوسرول سے ساتھ اٹھنے بیٹھنے اس کے نفسانی حالیا ہوں اورایسا متعقی اس کے نفسانی حالیا ہوں اورایسا متعقی مومن کے نفسانی حالیا ہوں اورایسا متعقی مؤمن ہے جب کا دلول میں احترام ۔ اور نفوس میں عظمت ، اور لوگوں میں مکانت ومرتبت ہو ، اور میکوئی بعید بھی نہیں بشرط کیہ آپ اس کی اچھی تربیت کریں ، اور اس کی دیکھ مجال کریں ، اور اس کے سلسلہ میں آپ پر حو ذمہ داریاں و فرائنس اور عوق عائد موسے میں ان کو اواکریں ۔



## عقوبت ومنزاکے ذرلعة تربيت

اسلامی شریعیت سے بہتری عادلانہ احکامات اور اس سے عظیم بنیا دی قوامداس غرض و مقصد کے بیے نافذ و مقر کے بینے سے بہتری ناکدان بنیا دی صرفر بیات کی حفاظت ہو سکے جن سے کوئی انسان بھی دستغنی ہو سکتا ہے اور زان کے بغیر زندہ رہ سکتا ہے۔ ان احکام کو اکس مجتہدین اور اصول فقہ سے علماء نے پانچے امور میں محصور کیا ہے اور ان کانی ضوریا ہے اور ان کانی ضوریا ہے مفاظت خمسہ یا کھیا ہے جو بی جن کی حفاظت نفس کی حفاظت ، عزت و آبر و کی حفاظت ، عقال کی حفاظت اور مال کی حفاظت ، اور ان حضارت کا پر کہا ہے کہ اسلامی نمائی میں جو جو بی اور ان کی حفاظت اور ان کی دیکھی جو ال ور عالی و بنیا دی اصول وقواعدا ور قوانین ہیں ان

ن ان کلیات کی حفاظت سے لیے شریعیت نے سخت سزائیں مقرر کی بیں بہوم راستنے مسیر لاگو ہوں گی جوان کی نملا ورزی کرے گاان احکامات کو توٹر سے گایاان کی حدود کو بھیلا گئے گا۔

تربعیت میں یہ منرائی مدوداورتعزیرات کے می ہے معروف میں۔

صدور وہ سزائیں ہیں تخبیس شراعیت نے اللہ کے حق کی حفاظت سے کیے مقرر کیا ہے۔ تو گویا صدور التہ تعالی کے حق کی حفاظت سے لیے لاگو ہوتی ہیں، اور میرصدور درج ذیل ہیں:

ا - صرفتد هونے سی سن اقتل ہے .اگرایا شخص دین سے ترک اور الحادیر باقی رہنے پراصار کرے اور اور الحادیر باقی رہنے پراصار کرے اور تو ہر براضی نرموتولیہ شخص کوفتل کیا جائے گا ، اور اس کونٹسل دیا جائے گا ، ندکفن ، نداس پرنما نیجا زہ پڑھی جائے گا ، نداس پرنما نیجا نے گا ، نداس پرنما نوب کے اور اس کے قبر سال میں دفن کیا جائے گا ،

. س منراکی بنیاد وہ روایت ہے جے الم احمد واربابِ صحاحِ ستہ نے حضرت عبداللہ بن مسعود رمنی اللہ عنہ اللہ عنہ اللہ ع ہے روایت کیا ہے کہ رسول اللہ علیہ والم نے ارشاد فرط یا :

سی سے ایک کا حون بہانا درست نہیں سوائے میں ابو میں سے ایک کے ، ایک تو وہ خص جو شادی شدہ مو ، رناکر ہے ، اور دومرا دہ جو قبل کرسے تواس کواس کے مد قبل کیاجائے گا، اور تمیہ راوہ خص جواب وین جھوڑ دسے اور جاعت ہے کمیں ، سے بدا ہوجا ہے ، اور آپ میں انتہ عیہ

((لا يحل دم اسرئ مسلم لا برحدی شلاث: الثیب لزانف. والنفس بالنفس والنفس بالنفس والت مل لهارت للجاعة» وعنده أيضاً

وسلم سے بیمی مروری ہے کہ تو خص اینا دین (اسلام) بال دے اسے قبل کردو۔

((من بدل دینه فاقتا ۲).

÷

نفرے شخص کومان بوجو کرعمدًا قبل کردِ سے تواس کی منزاقیل ۲ یکسی انسان کوقتل کوینے کی سَنزا | اگرکزنگ بى ہے، اس ميے كرائند تبارك وتعالى ارشاد فراتے ہيں :

اسے ایمان والوتم پر فرض ہوا قعاص (برابری كرنا) مقتولول میں آزاد کے برہے آزاد اور غلام کے برہے غلام ا ورعورت کے ہدیے عورت ۔

(( يَا يَهُا الَّذِيْنَ أَمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُو الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ الْحُرُ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ -لاُ كُنْ عَيْ بِالْأَنْثَى مِ ) . البقرو-

٣- بچورى كى سَنِ الْ بِهِنْجِ مِنْ مِنْ الله كالمن الله كالمناه الرسوري بلافرورت واضطار سيم بوراس اليه كمالله تبارك وتعالى ارشاد فرماتے ہيں:

پوری کرنے والے مرد اور سیوری کرنے والی عورت ان کے باتھ کاٹ والوسنایس اس کمائی کی تبنیہ ہے التُّدِي طرف سع إورالشُّمْ غالب تَكمت والسبع.

( وَ السَّادِقُ وَ السَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْا اَيْدِيهُمَا جَزًّا ۚ يُمَّا كَسَبًا نَكَالًا قِنَ اللهِ وَ اللهُ عَنْ يُزُعَكِيْمٌ ﴿ الما مَره - ٢٨

۷- حد قذف السي عورت برتهمت تكاني منزاس كورسه الدليسخس كاقول زكرنا هه ال يهے كرالله تبارك وتعالى فرماتے ہيں:

ا ورح لوگ تهمست دگایش یاک دامن عورتول کوا ورمیمر يارگوا و زلاسكين، توانهين الثي درست سكا دُاوركمجي ان کی کوئی گوا ہی قبول نہ کرومیی توگٹ توفاسق ہیں ۔

(( وَالَّذِيْنَ يُومُونَ الْمُحْصَنْتِ ثُمَّ لَوْ يَالْتُوابِ أَدْبَعَةِ شُهَكَ آءَ فَأَجْلِدُ وَهُمْ ثَمَانِيْنَ جَلْدَةً قَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ، وَاولَيْكَ هُمُ الْفُسِقُونَ ﴿) إِلْورِيم

۵ - هد زمنا اگرزانی غیرشادی سشده مبوتواس کی منراسوکوری به اوراگرشادی شده بوتواس کی منرام بنه تک سنگسارکزناسے۔

سوكور ساس ليه نگا عالي كه الله تعالى فرات ين

ان میں سے ہرا کیب سے سوسو درسے ما رو۔

الاَالزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجُلِدُوا كُلُ اوَلِحِدِ مِنْهُمَا نَاكَارِ عُورت اورزناكا مردسو (دونوں كاتكم يہك، مِاثَةَ جَلْدَةٍ ». النور - ٢

امًا شافعی کے پہال ایسے زانی مرد وعورت کو ملائسی امتیاز کے ایک سال سے لیے شہر بدر کرنامھی ضرفرری ہے اس یے کہ یہ احا دریث سے ٹائبت ہے، البتہ امام ابوحنیفہ سمے بہال شہر بدرکرنا وا جب نہیں سبے بلکہ ان سے پہال بیصلحت و ضردت برخمول ہے کہ اگر حاکم وقاضی اس کی ضرورت سمجھے توالیا کرے۔

موت تک جم اس لیے کیا جائے گا کہ حضرت ما عزبن مالک ا ورغا پری عورت سے قصہ میں آتا ہے کہ چونکہ یہ دونول شادی شده تعداس لیے رسول اکرم صلی الله علیه وم نے انہیں تسم دیا۔

٧- زمين مين فساد يهيلا في سنا اقتل ياسولى برحراها، يا ايك طرف كا إته اور دوسري طرف كا یا وَل کامْنا. یا ملک بدر کرنا ہے جمہور فقہ احجن میں امام شافعی واحمد حجی داخل میں یہ کہتے ہیں کہ اگر ڈاکوول نے قتل تھی کیا بهوا ورمال بمبى بوٹا بوتوانہ بيں قبل کيا جائے گاينگن سولی پر ہيں پر شھايا جائے گا .اوراگرمال بوٹا بھوا وقبل نرکيا ہو توا کيب جانب کا ہاتھ اور دوسری جانب کا یا وَل کا اُیاجائے گا ، اور اگر دمہشت گردی کی ہواور مال نہ لوٹا ہوتوان کو ملک بدر کر دیا جائے كا. ية قول الم الوصنيف ع قول ع قريب قريب ب · ایت بیسکتے ہیں کہ اہم کو اختیا رہے کہ جو سنامنا سب ں کا مندرجہ ذیل فرمانِ مبارک ہے : اومصلحت بمبنى مجعما ببووه دے،اس سلسلمى اصل التدب

( النَّمَا جَزَّوُا الَّذِيْنَ يُحَايِر بُوْلِ اللَّهُ وَرَسُوا ۖ ` ، سنرا ہے ان توگوں کی جواللہ وراس کے رسول سے وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنَّ تُكَتَّكُوَّ ا او انى كرتے ہيں اور دوٹرتے ہيں حك ميں فساد كرنے كوكران يُصَلَّبُوا آو تُقَطَّعَ آيدِيهِمْ وَ ارْجُلُهُمْ مِّنَ توقس كياجا في ياسولى برجر ما في بارس يا ن كے باتھ اور ياؤل كالمصي مين مخاصف جانب سد. ياس حكدس خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوُا مِنَ الْأَرْضِ. ذٰلِكَ لَهُمْ خِنْئُ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْأَخِرَةِ عَدَابُ عظِيمٌ ﴿ )). کے لیے آخرت میں بڑا عذاب ہے۔

رور کر دیے جائیں۔ یا ن کی سوائی ہے دنیامی اور ان

، ۔ ش<u>سواب نوشی کی سنا اے لیٹ</u>ش سے انٹی کوٹیسے کے سے۔

اس سیے کہ مروی ہے کہ صحابہ مینی الٹی عنہم اجمعین نے شرایب نوشی کی سنارسول الٹیمسلی الٹرعلیہ وہم سے زمانہ میں چالیس کوٹرسے شمارسیے تھے ،اورشو کانی نے روایت نقل کی ہے کہ نبی کریم سی اللہ علیہ وم نے شراب نوش کو دوٹہنیول سے چالی*یں کوڑے انگائے. اور حضرت ابوسعیبہ نمدری رمنی التّدعنہ روایت کرستے ہیں کہ دسول* التّدملی التّدعلیہ وہم نے نمساب نوشی پرجالیس کوٹرے لگائے۔

است کوٹے سے لگانے کی منا حضرت عمر شِی التّہ عنہ کی تجویز ہے ،انہول نے صحابہ منی التّعنہم سے مشورہ کیا ، انہول نے پیشورہ دیا کہ اس کی منزاسٹ کو طریعے مقرر سکیے جا بیئں ،اس لیے کہ وہ اس وقت یہ دیکھ رہے تھے کہ بعض لوگ تراب نوشی میں مصروف ہیں ،ان حصارت نے اسی کوٹرسے حبت و دسل سے مقررسیے متھے،اس لیے کہ صنرت علی رضی التّٰدعنہ ئے یہ قول منقول ہے کہ انسان حبب شراب نوشی کرے گا تونٹ میں مست مہوجا کے گا، اور حب نشر موجائے گا تو بکواس کرے گا، اور حبب مکواس کرے گا توافترا ، وہتبان رگائے گا. توگویاان حضایت نے اس کو صرِقذف (تہمن لگانے کی منل ، پرقیاکس کیا، اور حضرت عمر ضی الله عنه نے مشورہ سے بعدائتی کوٹرسے منزامقر کردی حالانکہ اس سے قبل وہجی

چالیس کورے ہی لگوا یا کرتے تھے۔

اس سیے شراب نوشی کی منراج الیس کورے ہے ، ہاں اگراما کی جا ہے اور سیمجھے کہ بیالیس کو ٹرسے شراب نوشی ہے روکنے کا ذراعیہ نربنیں گے تو اتن یک مارسک ہے جسیا کہ حضرت عمرضی اللّٰہ عنہ نے کیا ۔

تعزیرات ہڑتے ہے۔ جن پرکوئی صدیا کفارہ مقرر نہ ہو،اور یہ اللہ یاکسی انسے حق کے طور پر آئی ہیں جسے کہ لوگول کی اصلاح سے لیے بر و تنبیہ اور تا دیب کے لیے منزا دینا۔

اور حونگرتعزیری سزاغیر تعین ہے اس لیے حاکم کو بیان تھیار ہے کہ وہ توسزا مناسب ہمجھے تجویز کرے نیانچکھی ڈانٹنے ڈیٹنے سے کام بن جائے گا،اور کھی مارنا ہیٹنا پرٹے گا کہ جھی قیدوبند میں گرفیا رکرنا ہوگا،اور کھی ملک بررکر نا کافی ہوگا لیکن تعین نریزت میں یہ خیال رکھا جائے گا کہ وہ مقررہ حدود میں سے سی حدسے برابرنہ موجا میس ملکہ اس

سے کم درجہ کی ہی رہیں۔

کوئی تھی دوآ دمی اس بیل شکنہ ہیں کریں گے کہ اسلام نے حدو دوتعزیرات برمبنی پرمنرائیں اس کئے مقرر کی بیٹ ناکہ لوگول کو امن واستقرار مرشخل منہیں توشی کی زندگی حاصل ہو، اور کوئی ظالم سی نظام پرزیادتی نرکرہے، اور کوئی طاقتو کسی کمزور مزیلم واست بداد زکرہے ، اور کوئی مالدارس غریب وفقہ برچکم نرچلائے ، بلکہ سب سے سب حق سے میدان اور التّد سے دربار میں برابر ہیں کہ سی عربی کوئم بیر ، اور سی سفیہ کوسیا ہ برسوائے تقوی سے فضیلت حاصل نہیں التّد تبارک و تعالیٰ کے مندر جرذیل فران مبارک کا ہی مطلب ہے :

الاوَ مَكُمُ فِي الْقِصَاصِ حَيْوةً يَا أُولِي الْأَلْبَابِ الْوَرِي الْوَلْبَابِ الْوَرِي الْوَلْبَابِ الْوَرِي الْوَرِي الْوَرِي الْوَرِينِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ ا

لَعَلَّكُهُ تَتَقُونَ ﴾. بقره - ١٠٩ بقره - إ

ا ورہی نبی کریم علیہ الصلاۃ والسلام کے درج ذبل فرمانِ مبارک کامقصد سبے بشم سبے اس ذات کی بس کے قبضہ نہ کہ میں قبضہ قدرت میں میری جان سبے اگر (انعیا ذبالتُد) بالفرض فاطمہ بنت محداصلی التّدعلیہ ولم ہم مجی چوری کرلیں تو میں ان کا ہاتھ مجھی کاٹ دول گا۔

سزاخواہ کوئی سی بھی ہوجا ہے قصاص کی ہویا تعزیر کی بہرجال وہ قوموں کی اصلاح اور لوگوں کے امراض کا مفید ترین علاج ہے ہے۔ ہم عالم انسانی بیں امن واستقرار سے ستون مفنبوط ہوتے ہیں ،اور جوقوم بھی اپنے مجرمول کو متراد ہے بغیرزندگی گزارتی ہے وہ ایک ہی آزاد ، ہے اہ ، ور اور شکستہ و منتشرقوم ہوتی ہے جس کے روابط و تعلقات پارہ پاڑ ہوتے ہیں ، اور موجود کی سے مستق و ہے خود الطے سیھے ہوتے ہیں ، اور موجود کی میں مست و ہے خود الطے سیھے ہوتے ہاؤں مارتی ہے ، اور مجرمانہ زندگی میں مست و ہے خود الطے سیھے ہوتے ہاؤں مارتی رہتی ہے ، اور مجرمانہ زندگی میں مست و ہے خود الطے سیھے ہوتے ہوئے کہ ان کے جدید علماء

تربیت کی اکشریت منزے نفرت دلاتی ہے ، اوراس کا نام بھی زبان پر لانا پہندہیں کرتی ، بلکہ اس سلامیں نوب پروپگیٹرہ نشر کیا گیا ، اورا ایسانظام و قانون وضع کیا گیا جو اس نظریہ کا علمبردا را ور اس نوائن کا تکمیل کندہ ہوجب کا تیجہ یہ نظاکہ و بال ایک آزا دیے اور و ذمہ داری سے احساس سے جان چھڑانے والا اور فیا دوجرم اور گناہ کا رسیا معاشرہ وجود میں آگیا جس کی وجہ سے لافی کر میں سالبق سربراہ کنیوی یہ کہنے پرمجبور ہوگئے کہ امریجہ کا مسقبل خطرے میں ہے اس لئے کہاس کی نوجوان سے جوابی اس ذمہ داری کو پواکر نے اس لیے کہاس کی نوجوان سے آزاد ہے اور داور شہوات وجنسیات میں سندو تو اپنی اس ذمہ داری کو پواکر نے پرمجمی قاد رنہ میں جو اس کے کا ندھول پر ڈالگئی ہے ، اور مبران سات نوجوانوں میں سے جو فوجی بھرتی کے لیے پیش ہوتے ہیں جد فوجی بھرتی کے قابل نہیں ہوتے اس لیے کہنس اوراخلاق و ذمہ داری سے احساس کی قیود سے آزاد ہونے نے ان کی نفسیاتی اور جمانی صلاحیت کو تاہ کر دیا ہے ۔

اورامری معاشرے کی تربیت کرنے والی عورت مارگریٹ ہمتھ "نے بھی ای طرح کا ایک بیان لبنائی اخبار" الاحد کو دیا تھا، جواس کے ۔ ۹۵ دی نمبر میں شائع ہوا تھا کہ: طالبات کوسوائے اپنے فبسی جذبات اوران وسائل کے بوان کی اِس خوابش کے مطابق ہول سی اور جیز کی قطعاً فکر نہیں سہتے ، اور سویس سے ساٹھ فیصد وسائل کے بوان کی اِس خوابش کے مطابق ہمو گئی ہوں سے ساٹھ فیصد طالبات امتی نات میں ناکام ہمو گئی ہیں جب کا اصل سبب یہ بے کہ وہ اپنے اسباق اور منتقبل کی فکر سے زیادہ بنس کی فکرین کا ورمنت یا ہم مصرف دس فی صدیبی پاک صاف بنس کی فکرین کا ورمنت یا تھی میں ہیں ، اوران میں سے سومیں سے مرف دس فی صدیبی پاک صاف رہتی ہیں ،

قیان مجرمانہ سرگرمیول کے عادی ٹوبول اور جاعتوں کے علاوہ ہے جوامر کیے ہیں ہرطرف منتشر ہیں ، جوسب کے سب جانوں کے لیے بھی خطرہ میں اور مال ودولت کے لیے بھی جزت وآبرو سے لیے بھی خطرہ میں اور مال ودولت سے لیے بھی جزت وآبرو سے بیے بھی خطرہ میں اور مموی طورسے آئ واستقرار واشحکا آکے لیے بھی جب کا اسلسب سزا دینے میں سستی اور تربیت میں نرمی وتسامح کا پہلواختیار کرنا او مجرمول کا سخت علاق نرکن اور اکندہ سے لیے جرم سے بازگئی والی سزاؤل اور فیصلہ کن سختی کے فریعیہ مؤافندہ نرکنا ہے لیے کیا اللہ تعالی نے جب اپنے بندول کے لیے سنزاؤل کے قانون کو مقر کیا تو وہ خوب جانیا تھا کا ان کے لیے کیا من سب ہے ، اگرا سے میعلوم نہ موتا کر یر سزاؤل کو مشرو سے نرکزیا ، یرسزائی تو درحقیقت معاشرہ ان حدود کو مقرر نرکزیا ، اور اپنے ابدی قانون میں ان سخت ترین سزاؤل کو مشرو سے نرکزیا ، یرسزائی تو درحقیقت معاشرہ کو فساد جھیلا نے والوں کے فدراور خلا لمول سے طب کے انے کا کامیا ہین علاج اورشفا نجش نسخ ہیں ۔

خلفاءِ راستدین نے اس زمانے میں اسلامی سناؤل سے ان قوانین کو نافذکر سے اس بات کی دلی وشابر پیش کردیا

ئه الماضع بورج بارج بالوشى كى كماب التورة لحسية "-

وہ سنرائیں جو حکومت کے دائرۂ اختیاریں آتی ہیں اور وہ منرائیں جنہیں والدین کو نیا ندان ہیں اور مربیول کو مارس مرب ب

میں اختیار کرنا پڑ اسے ہمیں ان میں فرق کرنا چاہیے:

یں اسپار دو پر اسپار و برائے اور سے اگراس کی سزاحدہ و کے قبیل ہے ، و تواس میں حاکم کوسی می کونیم بیشی یا تسال میں برتنا چا ہیں اور کی سفارش کو قبول نہیں کرنا چاہیئے ، اور نہیں اس کو نافذ ہونے کے دیمیان سی کاوٹ و حاک کوائے اس نے دینے کی اجازت دینا چا ہیے ، اور اس کی دیل یہ ہے کہ رسول اکرم ملی اللہ علیہ ولم نے نہا برت متی سے صرت اس اس نہیں اور اس کی تھی بھیرآپ لوگول ابن زید کی وہ سفارش روکر دی تھی بھیرآپ لوگول ابن زید کی وہ سفارش روکر دی تھی بھیرآپ لوگول کی مجلس میں آپ سے کی تھی بھیرآپ لوگول کی مجلس میں آپ سے کی تھی بھیرآپ لوگول کی مجلس میں آپ سے کی تھی بھیرآپ لوگول کی مجلس میں آپ سے کی تھی بھیرآپ لوگول کے دستے کی مجلس میں آپ سے کی تھی بھیرآپ لوگول کے دستے کی مجلس میں آپ سے اور ان کواس بات پر متنبہ فرمایا کہ امتول سے انسحطاط و زوال کا سبب ہی ظالمول سے داستے کو اختیار کرنا اور عدل وانصاف کا فافذ ذکر نا ہے جنا نجہ آپ نے آپ ایشا و فرمایا ؛

صدوننا کے بعد، (یادرکھو) تم سے پیبے توگوں کواک بات نے بلاک کیا تھا کہ اگران میں کوئی شریف (اور بڑ) آدمی چوری کریا تو وہ اسے چیوٹر دیا کرتے تھے. اور اگر کوئی کمزور و معمولی کرمی چوری کریا تو اس برحد لسگا دیا کرتے ( أصابعد ؛ فإنم أهدك الدين من قبلك م أنهب كانوا إذا سرق فيهم التربين تركوه ، وإذا سرق فيهم الضعيف أصت مسوا

تھے ۔ (قسم ہے اکس ذات کی س کے قبعنہ میں میری جان ہے) اگر بالفوض فالممہ بنت محداصلی الدّ علیہ میری جان ہے) اگر بالفوض فالممہ بنت محداصلی الدّ علیہ وسلم ، العیا ذبالقہ کھی چوری کرسلے تویس الکاہی المتحد کا ہے۔ وال کا

على الحد، وإنى والذى نفسى بىيىد و لوأنت فالحدة بنت معسد والش مليوسم، سسرقت لقطعت يدها».

بهرآب نے اس مخزومی عورت کا باتھ کا سے کا حکم دیااوراس کا باتھ کا ف دیاگا۔

ا وراگرگوئی سزاتعزیرات کی قبیل سے بہوتواس کا نا فدکر نامجی طروری ہے بیکن اس میں سزاکی مقدار کیا ہویہ معاملہ عاکم کی رائے برموقوت ہے جووہ مناسب سمجھے دسے دیے بہوتنبیہ وتو بیخ د ڈانٹ ڈبیف سے مارپیف، قیدو بند، دملک برری تک بوٹستی ہے۔

تعزیرات میں لوگول کی عمروشیت ، منزلت وثقا فت سے امتبارسے فرق بڑتا ہے چانچہ لعض لوگ ایسے ہوتے ہیں ہے ہوتے ہیں خرج بیر منزلت وثقا فت سے امتبارسے فرق بڑتا ہے جانچہ لعض کو لغیر ڈنڈسے ہیں جنہیں معمولی سے کام جل جاتا ہے ، اور بعض کو لغیر ڈنڈسے سے کام جل جاتا ہے ، اور بعض کو لغیر ڈنڈسے سے کام نہیں جل میں نہ ڈالاجائے ، اور بعض کو ...
اور بعض کو .. ، اور واقعی کسی نے بیچ کہا ہے :

# مرنی حفالت کے سامنے وہ طریقیہ بیش کیاجا نا ہے جسے دین اسلام نے بچول کوسٹرا فیضے کے سلسلہ میں اختیار کیا ہے:

ا ۔ اسل بیہ سے کہ بیجے سے ساتھ نرمی وہایہ کابرتا وُکیا جائے۔

- \* اما بخاری اپنی تحاب الادب المفرد " میں روابت کرتے میں کہ نرمی اختیا کرواور منتی او نیش گوئی سے مجوڑ \* اور آجری روابت کرتے ہیں کہ سکھا وُلیکن ختی نزکرو "
- \* اورا الم مسلم حضرت ابومونی اشعری رضی الله عندسے روایت کریتے ہیں کہ نبی کریم ملی الله علیہ وہم نے ان کواور عضر معاذر ضی اللہ عنہ کومین بھیجا اور ان دونوں سے فرطایا : نرمی و آسانی پیدا کرنا مختی ذکرنا اور بوگوں کو تعلیم دینا میکن نفریت میت دلانا .

◄ اور حارث وطیاسی و پیقی رحمهم الله روایت کرست ی بعلیم دوسگرختی مست کرو ، اس لیے کمعلم ختی کرسنے والے سے بہتر ہمو بائے۔
 سے بہتر ہمو باہے۔

ان نبوی توجیہات کا اثریہ ہوگا کہ پہھے پرسب سے پہلے بیابت اثرا نداز ہوگ کہ اس کے ساتھ نرمی کی جاتی ہے اور اس کا خیال رکھا جاتا ہیں۔

نرمی وبیار سے بر تاؤکے اسل ہونے کی تا یُداس ہے ہوتی ہے کہ بی کریم ملی اللہ علیہ وہم بات ورو بچول کے ساتھ اللہ طفت و نرمی سے بیٹی آیا کرتے تھے ، سب کی بہت ہی مثالیں اور شوا برہم نموز و مقتدی کے ذریع تربیت "کی بست مثالیں اور شوا برہم نموز و مقتدی کے ذریع تربیت "کی بست میں بیٹی کر بیکے بیں کہ نبی اکرم ملی اللہ علیہ و لم بچول کاس قدر خیال رکھتے تھے ، اوران کے ساتھ کتا پیارا ورنری و اللہ طفت اختیار کرتے تھے ، اوران سے کتنی ول گئی کیا کرتے تھے ، لہذا اس بحث کو الا خطر کر لیجیے وال کشفی کا پوراسامال اور اس موضوع میں جاتے ہی بھی تا ہو اس بھی کا پوراسامال اور اس موضوع میں جات ہی بحث کی بار موضوع میں جاتے ہی بھی کا بی بیار ہے ۔

۲۔ خطاکارنیکے کومنڑ وسینے میں اس کی طبعیت کی رعابیت دکھنا :

بیجے ذکاوت وسمجھ داری ا دراند سے مادسے میں ایک دوسرے سے بہت مختلف ہوستے ہیں، جیسے کشخصیات سے لوا طرسے ان سے مزاج بھی ایک دوسرے سے مختلف ہواکہ تے ہیں، جنانچہ بعض بیجے محصنہ سے معلی جو ہوستے ہیں اور معنی معتمل مزاج بھی ایک دوسرے سے مختلف ہواکہ تے ہیں، جنانچہ بعض بیجے محصنہ سے معلی جو ہوستے ہیں اور معنی معتمل مزاج کے مالک ہوا کہ سے بیزی مورونی نہیں اور معاشرے کے اثرات اور تربیت و بروسٹس کے تنائج بھی ہوتے ہیں ۔ مورونی نہیں اور معاشرے کے اثرات اور تربیت و بروسٹس کے تنائج بھی ہوتے ہیں ۔

چنانچەمنىن بچول كى اصلاح وتبنيد سے ليے ان كى طرف صرف ترجي وتيزنگاه سے دنجيفنانھى كافئ ہو اَ ہے جبكہ دومرا بچەمنزا يىلىنى وژانٹ درچاكاتھى محاج ہو اے اورتھى مرنى كواصلات ونصيحت اور دوانٹ درچائى كاكى سے بعد درند سے ومار میانی کے استعال كى تھى فئررت بڑتی ہے۔

علامہ ابنِ خلدون نے ابنی کتاب "مقدمہ" میں یہ لکھا ہے کہ بیکے سے ساتھ زیادہ ختی کا رویہ اختیار کرنا اس کو بردلی وکا لمی اورزندگی کی سختیاں برداشت کرنے سے گریز کا عادی بنادیا ہے ، چنانچہ وہ لکھتے ہیں کہ جب کی تربیت سختی ودیشتی سے ہوگ خواہ وہ طالب علم ہول یا خادم یا غلام ان برقہر جھیا با تا ہے اورنس کا انبساط ختم اورنشا طرفنا ہوجاتا ہے۔ اوروہ سسست اور کا اب بن جائے ہیں ،اور بیصورت حال ان کوھبوط وعیاری سکھاتی ہے . تاکہ اس سے ذرابعہ سے ان ہاتھ ول کی تی سے بچ سکیں جوان بختی کے عادی ہیں۔ اور اس کی وجہ سے وہ اب ندیدہ وصوکہ بازی سکھے لیتے ہیں۔ اور سے جون ابنی کی صفات ختم ہوائی ہیں۔ میں ، اور سے چیزی ان کی طبیعت وعادت بن جاتی ہیں اور ان میں انسانیت اور۔ اسس کی صفات ختم ہوائی ہیں۔ میھرابن خلدون نے ان خراب تبائج اور بہداڑات کو خوب کھول کر بیان کیا ہے جونبے پر تنقی اور شدت اور سخت گیری کے استعال سے بیدا ہوتے ہیں ، چنا نچہ وہ کھتے ہیں کہ جبس بچے سے ساتھ ختی کا معاملہ کیا جاتے وہ وہ مور س پر بوجہ بن جاتا ہے کہ وہ خودا بی شرافت اور نواندان کی عزت کی طون سے مدافعت کرنے سے عاجز ہوجا آ ہے ، اس لیے کہ وہ حاست و شخاص اور جمیت وغیرت سے عاری ہوجا آ ہے ، اور ساتھ ہی وہ فضائل و کمالات اور انسانیت سے طرح سے اس کا نفسس اپنی منتہا اور انسانیت سے طرح ہوئے کہ اور سے فاصر سیا ہے۔ اور ساتھ ہی دور سے مور سے سے ماری ہوجا ہے۔ اور ساتھ ہی دور سے مور سے سے ماری ہوجا ہے۔ اور ساتھ ہی دور سے مور سے سے ماری ہوجا ہے۔ اور ساتھ ہی دور سے مور سے سے ماری ہوجا ہے۔ اور ساتھ ہی دور سے مور سے سے ماری ہوجا ہے۔ اور ساتھ ہی دور سے سے ماری ہوجا ہے۔ اور ساتھ ہی دور سے سے مور سے سے ماری ہوجا ہے۔ اور ساتھ ہی دور سے مور سے سے ماری ہوجا ہے۔ اس کے ماد سے مور سے سے ماری ہوجا ہے۔ اور ساتھ ہی دور سے سے ماری ہوجا ہے۔ اس سے ماری ہوجا ہے۔ اور ساتھ ہی دور سے سے ماری ہوجا ہے۔ اس سے ماری ہوجا ہے۔ ماری ہوجا ہے ہوجا ہے۔ ماری

علامه ابن فعاران فعاد النافعان في المنظمة الماسبة وي المينا بعابية والم الدعلية ولم ترسلم وي الورسنان كي المينا بعابية والمريخ الله والمولا المينا بعابية والمريخ الله والمعلامة الموني والمعلامة المعتمد الموني والمعلامة المعتمد ال

"سسب کانون صدیہ ہے کہ مرنی کومناسب سنا دینے ہیں نہایت حکمت سے کام بینا چاہیے ،اورائیں منارہ یٹ چاہیے جو نیچے کی ذکاوت بنقافت او میزاج کے موافق ہو،اور ساتھ ہی،اس کوجاہیے کہ مناز کو بالک اخری درم ہیں رکھے اور بالکل افیر ہیں اس سے کام ہے۔

۴ ۔ سزا دینے میں معمولی سے خت سزا کے اختیار کرنے میں مرسیجے سے کا کینا چاہئے: ہم پہلے بنلاچکے ہیں کمرتی نیچے کو نومنزا دینا چاہیے اسے بائل آخری مرحلہ میں اختیار کرنا جاہیے جب کامطلب یہ ہے کہ بیجے کی اصلات اور منزادینے سے بیند مراتب ومراحل ہیں جنہیں مرنی کو مار بیٹ سے پہلے اختیار کرنا چاہیے: ناکہ ہوسکتا ہے کہ انہی سے کا کا جل جائے اور بیجے کی اصلات بوجلئے اور اس کی حالت سے مرحائے اور اس کا اخلاقی و معاشرتی معیار بند ہوجائے اور وہ ایک صحیح انسان بن جائے۔

اس سے کمرنی طبیب ومعالیج کی طرح ہوتا ہے (جیساکدا فا عزائی فرائے نیں) اور صبیا کہ طبیب کے لیے یہ جائز نہیں ہے کہ وہ نقصان اور صفر رکے وہ ہے ، بیا ول کا علاج گانے ہی طریقے سے کرے اس طرح مرنی کے لیے جائز نہیں کہ وہ بچول کی مشکلات اوران کی مجی کا علاج گانے ویٹ سے صرف اس فررے کرے کی بعض بچول یہ بن انحراف وی بڑھ نہا ہے وہ برا اوران کی مرکات کے نوگر نہ ہوجا بیک ، البذا ہر نیچے کے ساتھ وہی برتا اور ان چاہیے جواس کے مناسب ہو، اور اس سبب کو لاش کرنا بہا ہیں ہواں علمی کا موجب بناہے ، اور اس کی عمراور تہذیب و تھا فت اور اس ماحول کو بھی مدنظر رکھنا بچاہیے جہاں سے اس نے یسکی اسے ، یہ تما چیزیں وہ بی بوم فی کو نیک کے انحراف کی علت تک پہنچنے اور اس کے مرض کی صفیق میں مدد کا رثابت ہول گی ۔ جس سے بعداس سے کے انحراف کی علت تک پہنچنے اور اس کے مرض کی صفیق میں مدد کا رثابت ہول گی ۔ جس سے بعداس سے تو وہ مناسب علاج تجوز کرنا آسان ہوگا ۔ اور مرفی جب بہ طراح کو بھی اختیار کرسکے گا اگرا خرکا رہج نیچے لاگوں سے زمرے اور مرضوں کی فیرست بیں شائل ہو سکے ساتھ بہتر طراح کو کوبی اختیار کرسکے گا اگرا خرکا رہج نیچے لاگوں سے زمرے اور مرضوں کی فیرست بین شائل ہو سکے۔

یری برسی الدمای الدعلیہ ولم نے بچول سے انحاف کو دورکرنے اور ان کی کمی کی اصلاح اور ان کی اخلاقی ونفسیاتی تعمیر شخصیت سازی سے مزیول سے سلسنے نہایت واضح و روشن طریقے مقرسکے ہیں ، تاکہ مرفی ان کو اختیار کریں ، اور ان کی اصلاح وعلاج کے بیس ، تاکہ مرفی ان کو اختیار کریں ، اور ان کی اصلاح وعلاج کے لیے بہتر سے بہتر کا انتخاب کریں ، اور آخر کا رہنے کی اصلاح وتربہت ہیں کامیا نی سے بہتر کا انتخاب کریں ، اور آخر کا رہنے کی اصلاح وتربہت ہیں کامیا نی سے بہتر کا انتخاب کریں ، اور آخر کا رہنے کی اصلاح وتربہت ہیں کامیا نی سے بہتر کا انتخاب کریں ، اور آخر کا رہنے کی اصلاح وترب بیس کامیا نی سے بہتر کا انتخاب کریں ، اور آخر کا رہنے کی اصلاح وترب بیس کامیا نی سے بہتر کا انتخاب کریں ، اور اسے بہتر کی انتخاب کریں ، اور اسے بہتر کی میں کا میا نی سے بہتر کا انتخاب کریں ، اور اسے بہتر کی کا میا نی سے بہتر کا تخاب کریں ، اور اسے بہتر کی کا میا نی کی میا نی کی بیٹر کی کا میا نی کی کا میا نی کا کرنے کی کا میا نی کا کی کا کہ کی کی کی کی کا میا نی کا کہ کی کا کہ کی کا کرنے کی کی کا کرنے کی کا کی کا کرنے کی کا کہ کی کا کہ کی کی کی کا کرنے کو کرنے کے کہ انتخاب کی کی کی کا کرنے کی کا کہ کی کا کہ کی کا کرنے کی کا کرنے کی کا کرنے کی کا کی کی کی کی کو کرنے کے کا کرنے کی کا کرنے کی کا کرنے کی کا کرنے کی کرنے کی کا کرنے کی کی کی کرنے کی کا کرنے کی کرنے کی کرنے کی کا کرنے کی کا کرنے کی کی کی کرنے کی کرنے کا کہ کی کرنے کی کا کرنے کی کا کرنے کی کا کرنے کی کی کرنے کی کی کرنے کرنے کی کرنے کرنے کی کرنے کی کرنے کی کرنے کی کرنے کی کرنے کرنے کی کرنے کی کرنے کرنے کرنے کی کرنے کی کرنے کی کرنے کی کرنے کرنے کی کرنے کی کرنے کرئے کی کرنے کرنے کرنے کی کرنے کی کرنے کرنے کرنے کی کرنے کی کرنے کر

## وه طریقے جو علم اول نبی کریم علیہ الصلاۃ والسلام نے ذکر فرمائے ہیں وہ بیاب:

ا - رسنمان اوسيم بات بالف عد فريعيطى كى اصلاح كرنا:

امی بخاری وسلم حمهماالنّه حضرت عمر بن ابی سلمه مِنِی النّه عنهما سے رقرایت کرستے میں کہ انہوں نے فرطایا : میں رمول اللّه مسلی النّه علیہ وہم کی زبرکِفالست جھوٹا سابچہ تھا ۔ کھانے سے برتن میں میرا باتھے اِدھراُ دھر پیلاجایا کر یا تھا ، رسول النّه صلی التّه علیہ وسلم نے مجھ سے ارشاد فرطایا :

الاسكے اللہ كان م كىكىر شەرع كرو، اورا بينے دائيں باتھ سے كھا و، اورا بينے قريب سے كھاؤ۔

((پاعنده سهامته وکل بیمینک وکل مایدیک». لا خطہ فرما یئے کہ رسول اکرم ملی اللہ علیہ وم نے مصرت عمر بن الی سلمہ کی غلطی کی اصلاح انجی نصیحت اور مختصری بلیغ رہائی سے ذریعے کے سس طرح سے فرمائی ۔

٢- نرمي و الاطفنت علطي يرسمنه كرنا:

اماً بخاری وقیم رحمهاالتہ حضرت ہمل بن سعد ونی التہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ ایک مشروب رسول التہ علی التہ علیہ ولم کی خدمت میں لایاگیا آپ نے اسے نوش فرایا آپ کی دائیں جانب ایک نوعمر بیٹھے ستھے اور بائیں جانب عمررسیدہ میں خرای نے فراستھے ، تورسول التہ سلی التہ علیہ ولم نے ان نوجوان سے فرایا ؛ مجھے اجازت و و اکہ ہیں ان نوگول کو دے دول ؟ (یو فرانا آپ کی طون سے المطفت ونرمی کے المہارکیا تھ ساتھ ایک قیم کی تعلیم و رہائی بھی تھی ، ان نوجوان نے کہا : نہیں ابخدا میں آپ کی طرف سے ملنے والے جھے پرکسی اور کو ہرگز ترکی نہیں دے سکتا۔ چناپی واللہ میں ان نوجوان حضرت جدالتہ بن جہاں رہے دیا ۔ یہ نوعس سرنوجوان حضرت جدالتہ بن عباس رہنی التہ علیہ والے تھے میں دے دیا ۔ یہ نوعس سرنوجوان حضرت جدالتہ بن عباس رہنی التہ علیہ والے تھے۔

آپ نے دیمہ لیاکہ نبی کریم علیہ الصلاۃ والسلام نے بیچا ہاکہ ان نوجوان کو بڑول کا اوب کھا دیں کہ انہسیں ایٹ بیٹ ایٹ بیٹ کے بیٹے بیٹے بیٹے کے بیٹی بران کو ترجیح وے وینا چا ہیے اور یہی انتقال وبہتر ہے اس لیے آپ نے ان سے اجازت طلب کی اوران کی رمنجائی کے لیے نہایت نرمی و طلطفت سے یونسسر مایا ؛ کیا تم مجھے یہ اجازت دو گے کہ میں ان لوگول کو سعلے دیے دول ؟

٣ يغلطي كى جانب اشارةً متوجه كرنا :

الم) بخاری حضرت عبداللہ بن عباس منی اللہ عنبها ہے روایت کرستے ہیں کہ حضرت فضل رسول اللہ مسلی اللہ علیہ وہ علیہ وہ علیہ وہ مسلم کے ساتھ سواری برسوار تھے۔ قبیلہ شعم کی ایک عورت آئیں تو حضرت فضل ان کی طرف دیکھنے گئے اور وہ حضرت فضل کی طرف دیکھنے گئے اور وہ حضرت فضل کی طرف دیکھنے گئے اور وہ حضرت فضل کی عرب کو دوسری طرف بھیرنے گئے ان صاحب نے یعرض کیا : اے اللہ کے رسول! اللہ نے بندول پر توجی کا فریفیہ مقرر کیا ہے وہ میرے والد بر ان صاحب نے یعرض ہوا ہے کہ دہ بہت ضعیف وعمر سیدہ ہیں ، سواری پر میک تھی بہیں سکتے تو کیا ہیں ان کی طرف ہے کہ کہ کہ کہ تھی ہوں؟ آپ نے ارشا د فرمایا : بال ، اور یہ مجتم الوداع کا واقعہ ہے۔

اسس واقعه مین آب نے ملاحظه فرمایا بروگاکه نبی کریم علیه الصلاة والسلام نے ابنبی عورتول کی طرف دیجھنے کی علمی کی اصلاح اس طرح کی کہ دیجھنے والے کا جہسترہ دوسری طرف بچھیردیا اوراس کا حضرت فضل پر اثر تھی بڑا۔ مہ ڈانرمے کرخلطی برمتنبہ کرنا ؛

م) بخاری حضرت ابوذر منی الله عنه سے روابیت کرتے ہیں کدانہول نے فرمایا: ایک خص کوہی نے برا معہ

لباا دراسے اس کی مال کا طعنہ دیا، اور کہا: اے کالی عورت سے بیٹے، تورسول التدصلی التدعلیہ ولم نے فرمایا، اے ابوذرکیاتم نے اسے اس کی مال سے عار دلایا ہے؛ تم توایک ایسے آدمی ہوئی سی زمانہ جا بلیت کا اثر پایا جا ہائے۔ یہ تمہارے بھائی اور مددگار ہیں جن کو اللہ تعالی نے تمہار سے نظرول میں دیا ہے، لہذا سی شخص سے زیر اِٹراس کا بھائی ہوتوا سے جا بہت کہ جو خود کھا ہے اور جوخود پہنا ہے وہ اسے پہنا ہے، اور ان کوالیسے کا میرم بورزکر و موان کی طاقت سے باہم بول اور اگر الیا کرنا ہی پر جبور ذکر و موان کی طاقت سے باہم بول اور اگر الیا کرنا ہی پر جبا ہے تو ان کی اعازت ومدد کر و۔

دیکیے لیاآپ نے کہ نبی کریم کی اللہ علیہ ولم نے حضرت ابوذرک التعلی کاکس طرح علاج فرمایا کہ وب انہول نے ان صاحب کو کا ہے بن سے عار ولایا تو آپ نے ان کو الامت کی اورڈا نٹاخس پرآپ کا یہ فرمان ولالت کر ماہیے : اسے ابوذرتم پہنے خص ہوجس میں جا لمبیت کا اثر پایا جا آ ہے۔ اور بھراس موقعہ کی مناسبت سے انہیں بمجھایا اوران کی میچے رہنمائی کی۔

٥ . قطع تعلق كيه ذريعيلطي بير تبييه كرنا :

الم بخاری میلم صفرت البوسعید فرری مینی النّدی سے روایت کرتے ہیں کہ رسول النّدی النّد علیہ ولم نے کنگرما رہے ہے منع فرطا اور یہ فرطا کے ایک میں اللّہ میں اللّہ میں ہے اور دانت فوط سکتا ہے ایک روایت میں آ بہے کہ حضرت عبداللّہ بن منع اللّہ عنہ ہے ایک عزیز نے کنگری ماری ، انہول نے ان صاحب کواس سے منع کیا اور الن سے فرطا کہ سول النّہ علیہ ولم نے اس طرح کنگری مجھنیک کی ممار نے سے منع فرطا وریہ فرطا ہے کہ اس سے منع فرطا کہ سے منع فرطا وریہ فرطا ہول کہ آپ نے اس سے منع فرطا توصفرت عبداللّہ نے ان سے فرطا وی میں تم سے میں ہول اللّہ علیہ وسلم کا فرطان سنا رہا ہول کہ آپ نے اس سے منع فرطا ہے کہ اس سے منع فرطا ہوں کہ آپ نے اس سے منع فرطا ہے کہ اس میں میں کروں گا۔

امم بخاری دوایت کرنے بیں کہ حب حضرت کعب بن مالک رضی النّہ عنظر وہ تبوک سے بیھیے رہ سکتے تو وہ فراتے ہیں کہ نبی کریم سلی النّہ علیہ ولم نے ہم سے ہات کرنے سے منع کر دیا اور پچاس دان تک یہ بائیکاٹ جاری رہا ۔ پہال تک کہ النّہ تعالیٰ نے قرآن کریم میں ان کی تو ہے تبول کرنے کو نازل فرمایا

علامکٹ بولٹی روایت کرتے ہیں کہ حضرت عبداللہ بن عمر مینی اللہ عنام نے اپنے ایک بیٹے سے مرتے دم کک بائیکاٹ ومقاطعہ رکھا اس لیے کہ انہول نے ایک اس حدیث پر عل نہیں کیا تھا ہوان سے والدنے سول اللہ حالی اللہ علیہ ولم سے نقل فرائی تھی مبس میں آپ ملی اللہ علیہ ولم نے مردول کو اسس بات سے منع کیا تھا کہ وہ عور توں کو مسجد جاسنے سے ن روکس ۔

ان وا قعاست سے آپ کویہ اندازہ ہوگیا ہوگاکہ نبی کریم علیہ انصلاۃ واسلام اور آپ سے صحابہ کرام ضی التّدعنہم کی حاءیت غلطی کی اصلاح ا ورکمی سکے دو کریے نہے کے لیے اس وقریت تک مقاطعہ وبائیکا ہے کیا کریتے ستھے حبب تک وہ شخص

معتمع راسته پر بتراجائے۔

۹ - مارىيى كۇنىطى پرمتىنبەكرنا:

ابودا نود وحاکم رحمها الله حصرت عبدالله بن عمروبن العاص ضی الله عنها سے رہایت کرتے ہیں کہ رسولِ اکرم ملی الله علیہ دم نے ارشا وفوایا : اچنے بچول کونماز کا کم دو حبب وہ سامت سال سے بوجا بئی ، اور نماز نہ پڑسصنے پران کی پٹائی کرو حبب وہ دسس سال سے ہوجا بئی اور ان سے بستروں کو الگ الگ کردو۔

اورسورہ نسار میں ارشادِ تانی ہے:

((وَ الَّـٰزِيٰ نَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِضُوهُنَّ وَالْهَجُـٰرُ وَهُنَّ وَالْمَجُـٰرُ وَهُنَّ وَالْمَا وَالْمَا وَالْمَا وَالْمَارِبُوهُنَّ ، فَإِلَىٰ اَطَعْنَكُمْ فَلَا

تَنْبَغُوا عَنْيُهِنَّ سَبِنِيلًا . )). اشاريهم

ا در حمن کی برخونی کا ڈرموتم کو توان کو سمجھا کہ اور حدا کرو سونے میں اور مارو بھیراً کر کہا بانیں تمہارا توان برالزام ک راہ مست لاکش کرویہ

و کھے لیجے کہ مارپرٹ کے ذرائعہ منزا دیناایک ہیں چیزہے جے اسلائے نے برقرار رکھا ہے ، کین اس کامرحلہ بالک انہر میں ہے اس سے پہلے و عظو فصیحت اور تھے متعاطعہ و بائیکاٹ سے کام لیاجائے گا اس ترتیب کا فائدہ یہ ہے کہ مرتی ہے لیے یہ جائز نہیں ہے کہ وہ منعت منزا کو وہال اختیار کرسے جہاں معمولی منزاسے کا جل سکتا ہو ، اکوا پیٹ سب سے خت ترین منزاسے ، اور اس کو آک وقت اختیار کرنا چا ہیے جب اصلاح ور منجائی کے دوسرے تمام طریقے ناکام موجائیں بکن یہ یا در کھناچا جیے کہ نہی کریم کی اللہ علیہ وقم نے اپنی سی میں البیہ کو میں کا اللہ علیہ وقم نے اپنی سی میں البیہ کو میں نہیں ما اے۔

٤ مُؤثرتن مناكب ذيلي المنابك أنا:

قرآن کریم نے موثر ترین منار کے اصول کو مندریۂ ذیل آیت ہی مقرر کیا ہے ارشا دہے:

﴿ اَلزَّانِيَةُ وَ الزَّانِيْ فَاجْلِدُوا كُلُّ وَاحِدِقِنْهُمَّا ﴿ وَالرَّانِيَةُ وَالرَّانِيَةُ وَالرَّانِيُ فَا الْحَلِدُوا كُلُّ وَالْحِدِقِنْهُمَّا مَا ثَالَةً اللَّهُ اللْمُؤْمِنِ اللْمُؤْمِنِينَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ اللْمُؤْمِنِ الللِّهُ اللللِّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُؤْمِنُولُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُؤْمِنُولُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُؤْمِنُ اللَّلْمُ اللْمُؤْمِنُ اللَّلِمُ اللْمُؤْمِنُولُ اللَّالِمُ اللَّهُ اللْمُؤْمِنُ اللَّالِمُ اللَّهُ اللَّلِمُ اللَّلْمُ اللَّلْمُ اللَّ

الثور- ۲

زناکار عورت اورزناکار مردسو ( دونول کاحکم یہ ہے کہ ان میں سے ہرائک کوسوسو درے مارو ... اور پاہیے کہ دونوں کی سزاے وقت مسلم نول کی ایک جامت

اس سنراکی وجہ یہ ہے کہ جب یہ سنراتما کو گول کے سامنے ہوگی اور ہرطرے کے لوگ مجع ہول گے تواس کا اثریبت زیادہ ہوگا۔ اور اس سے بہبن سخت نصیحت ماصل ہوگی، اس لیے کربس جاعت اور گروہ کے سامنے یہ زادِی جائے گی وہ اپنے خیال ہیں یہ تصور کرے گاگویا کہ یہ سنراس کو دی جائے گی اور اس کوای طرح کیف والم کا احساس ہوگاگویا کہ مقدقہ اس کو منزا دی جائے گاگویا کہ وہ سنرا سے قریب گا اور اس خووف سے اس حرکت سے دور یہ گا کہ کہ ہیں اس کو منزا ہے جو ان مجرمول کو دیا جا را ہے۔ چنانچہ قرآن کریم سے اس قانون (د وَلَيَتُ هَا مُدَعَدُ اَبَرَهُ مُدَان ) کہ ان

ے عذاب کواکیب جاعت دیکھے کے مطابق نبی کریم صلی اللہ طلبہ وہم اپنے صحابہ کوان شرعی حدود کولوگوں سے عجیع اور سیسے سامنے نافٹ ذکرنے کا حکم دیا کرتے تھے۔

اور میشل توبهبت پرانی جلتی آئی ہیے کہ ، بیک بخت وہ ہے جو دوسرے سے نصیحت عاصل کرے ،اور میں اللہ تہارک وتعالی سے مندر عبُر ذیل فرمانِ مبارک کامقصد ہے کہ :

الا وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيْوةٌ يَتَأُولِي الْأَلْبَابِ اورتمها يسے واسطے قصاص يس برس كارندگ سپے لَعَلَكُمْ فَيْ الْقَصَاصِ يَس برس كارندگ سپے لَعَلَكُمْ فَتَتَّقُونَ ﴾. البقره ١٥٩ البقره ١٤٩ البقرة المسلط ال

اس لیے کہ اسس قصاص کی وجہ سے اُمن وسلاتتی عام ہوگ اوراطمینان وسکون مامل ہوگا۔ اور پرسشہ پر ہوگوں · کا لمول ا ورمجرمول سے لیے دکا وطے ا ور روسکنے کا ذریعہ ہے ۔

ا ور واقعہ یہ ہے کہ جب مرنی خطاکا بینچے کو اس کے بھائیوں اور ساتھیوں کے سامنے منزاد سے گاتواس منزاکا تمام ہجول پر مہبت گہزا انر بڑے گااور وہ اپنی خطاؤل اور غلطیوں پر مہونے والی تنبیہ وسزاسے ڈریں گے اوراس طرح انہیں نصیحت وعبرت عاصل ہوگی۔

لبن ناان طریقول اوراسلوبول کوسا منے رسھتے ہوئے جنہیں معمر اول ملی اللہ علیہ وہم نے متعین کیاہے مرتی بیطات کھتاہ ہے کدان میں سسے جوبسنر امنا سب سمجھے اپنے بیچے کی کجی دور کرین نے کے کیے اختیا کریے ۔ اور بعض اوقات توعلاج کے سلا میں صرف کہنا سندنا یہ کھوڑ ایا ملکی تعلیکی مطبیف بندیہ یا اشارہ یا ایک آدھ ہات ہی کافی ہوجاتی ہے ۔

بھراگرمرنی سیمھے کہ ان اسالیب وطرق میں سے سی سیھی بیکے کی فلطی کی اصلاح نہیں ہورہی اوراس کے حالات معیک نہیں مبررہ بیسی ہورہی اوراس کے حالات معیک نہیں مبررہ بیسی فریٹ سے کا کے اور حالات معیک نہیں مبررہ بیسی فریٹ سے کا کے اور اگراس سے بھی مقصد حاسل نہ ہوتو بھر بھی تھیکی سی مارپریٹ کے انداز اسے بھی مقصد حاسل نہ ہوتو بھر بھی تھیکی سی مارپریٹ کے انداز اور اچھا یہ ہے کہ آخری درجہ والی مندا گھرسے لوگول یاست تھیوں سے سامنے ہوتا کہ ان سے لیے بی نصیحت وعبرت بن جائے۔

پھر مب مربی یو کوس کرے کہ منزوینے کے بعد بیسے کی حالت سُدھ گئی ہے اوراس کی عاوت واضلاق ورست بھگئے ہیں توجھراسے بیسے کے ساتھ نوش طبعی اورنرمی اور ابنا شبت سے بیس آ باجا ہیے ، اوراس کوجا ہیے کہ بیسے کو یوکسوس کرا دسے کہ اس نے اسے جو سنزادی ہیں اس کے اس کا مقصولا کی خیرو بھلائی اور دین و دنیا و آخرت ہیں اس کی کامیا بی مقصود متھی رہول اللہ صلی اللہ علیہ و سم نے اپنے صحابہ کو جو سنزادی اور سنزا کے بعد ہومعا ملدان سے ساتھ انتھار کیا وہ بیسی تھا جنا نجہ اللہ کا کہ کامیا کہ ماری کے سے بیسی وہ کے ایک کامیا کی کامیا کہ حب حضرت کعب بن مالک میں اللہ عند ملز عذر وہ تبوک سے بیسی وہ کے ا

تونبی کریم می النّد علیہ ولم نے بچاس دن تک ان سے قطع تعلق کاحم دیا۔ اور وہ اس پویے وصیعیں مقاطعہ کی مالت ہیں ہے

ذان کے ساتھ کوئی اٹھیا بیٹھیا تھا نہ ان کوسلام کر اٹھا تھی کہ زمین باوجود وسعت سے ان پر تنگ ہوگئی، اور بھر جب نبی کریم
صلی التّدعلیہ ولم نے یہ اعلان کیا کہ التّہ تعالی نے ان کی توبہ قبول کرلی ہے۔ توصفرت کوب فراتے میں ، میں رسول التّہ
صلی التّدعلیہ و لم سے پاس ماضری سے ارادہ سے نکا تو لوگ فوج در فوج ملکر میری توبہ کے قبول ہونے برجھے مبارک با دوے
رہے تھے اور یہ ہو ہے تھے کہ ؛ التّہ نے تمہاری ہوتو بہول کی ہے یہ میں مبارک ہوجی کہ میں سبحہ میں وہل ہوا تو دیجی کہ آپ صلی التّدعلیہ ولم تشریف فرا ہیں ، لوگ آپ کے اردگر د بیٹھے ہیں ، مجھے دیکھ کر حضرت طلحہ بن عبیدالتّہ ضی التّدعن دولیّک اور مجھے سا کہا ودی۔
اور مجھ سے مصافحہ کیا اور مجھے مبا کہا ودی ۔

حضرت کعب رضی اللہ عنہ فرماتے میں کہ مجر حب سے یہ اللہ ملی اللہ علیہ و کہ کوسلام کیا تواس وقت آپ کا چہروًا نورخوش سے چک اٹھا، اور آپ نے فرمایا : حب سے ہمہاری مال نے تمہیں بنا ہے اس وقت سے آج کہ ہم پر ایسامبارک دون نہ آیا مبرگا، یہ دون تہبیں مبارک ہو، تومی نے عرض کیا: اے اللہ کے دسول یہ توب کی قبولیت آپ کی جانب سے ہے یا اللہ تعالی کی طوف سے ہے، رسول الله ملی اللہ علی مادت مبارک موف سے ہے، رسول الله ملی تا میں بلکہ یہ اللہ علی مبارک موف سے ہے، رسول الله ملی علیہ وم کی عادت مبارک رہے گا جہروً مبارک روشن ہو اتوابیا معلوم ہو ماتھا کہ گویا آپ کا چہرو انور بیا ند کا کھڑا ہے۔ یہ یہ چہر بہبیں بلکہ سے علوم تھی۔

یہ چہر بہبیں یہلے سے علوم تھی۔

اوربیک جب میکس کرے گاکھ فرقی سزا دینے کے بعد اس کے ساتھ شفقت ومجت اور نرمی وطا طفت اختیار کررہا ہے اور اس نے جو سزادی ہے اس سے اس کا مقصد اسس کی اصلاح و تربیت ہی تھی ، توالیسی صورت میں کی ہی بہتی ہو کما کہ وہ بچہ نفسیاتی طور پرابھن کا شکار مویا اضلاقی طور پر بجڑھ جائے، اور اس کے ردعل میں اور زیادہ گجرہ جائے اور برائیوں اور گماڑیوں میں برط جائے، ملکہ وہ اسس ہمدر دی ہے برتاؤ کا احماس کرے گاا وراس کا حق اواکریے گاا ورنیک لوگوں سے طریقے کو افتیار کرے گا. اور چھڑ پیشہ اچھے لوگول سے ساتھ ہے گا۔

### <del>+===</del>

جیاکہ ہم پہلے بیان کریکھے ہیں کہ اسل نے مارپیٹ کے ذریعیہ جو منزامقر کی ہے اسے ایک دائرے ہیں محدود کردیا ہے اور اس کے لیے کچھ شرو طامقر کردی ہیں تاکہ مارپیٹ اصلاح و تنبید کے دائرہ سے کل کرانتقاً اور اپنی شفی کا ذریع نتیہ ہے۔

### مارپیٹ سے لیے وشروط ہیں انہیں ہم ذیل میں ترتیب اربیان کرتے ہیں:

ا مرنی کومار پیٹ کی طرف اس وقت تک متوجیز ہیں ہونا چاہیئے جب تک وہ تنبیہ اور ڈانٹ ڈیپٹ سے سابقہ

بال كرده تما) وسأئل بروئے كارند ہے آئے۔

۲ مرنی کوچاہیے کہ اسی حالت میں ہرگزنہ مارے جب وہ خت غصے میں ہو اکہ بیکے کو ضرر ونقصان نہینچے اور بنی کریم ملی التہ علیہ وہ خت غصے میں ہو اکہ بیکے کو ضرر ونقصان نہینچے اور بنی کریم ملی التہ علیہ وہم کی آپ وصیت بیچے علی موجائے کہ خصہ نہ کرو (جیسا کہ بنجاری روایت کریتے ہیں) ۔ ۳۔ مارینے میں البی عگر مرما دینے سے بیچے جہال مارینے سے نا ارونقصان کا نوف بیو صیبے سرچہرہ سب نہ

۳ مار نے ہیں آبی حجربر مار نے سے بیچے جہال مار نے سے اینا، ونقصان کا نوف ہو جیسے سرج ہرہ سینہ الورہ بیٹ اس لیے کہ نبی کریم علیہ انصلاہ والسلام ارشا د فواتے ہیں جیسا کہ ابودا فور نے روایت کیا ہے کہ ہجرب بر مت مارہ اس کی مزید تاکیداس بات سے ہوتی ہے کہ نبی کریم ملی الشعلیہ وسم نے فاری عورت کو جب سنگ رکزیکا حکم دیا تو چھنے کے برابر نکر مالی لیں اوراس کو ماروی بھر لوگول سے فرایا اس کوسنگ کردولیکن چہرے پرمار نے سے بچو ، ملاحظ فروائیے کہ سنگسارجیسی سزاجی کا مقصد ہی خم و بالک کرنا ہے اس بی کریم ملی الشعلیہ ولم جہرب پرمار سنے ہوگا ۔ سے منع فرایہ جی توجہر سے اور سرم بار نا بدرجہ اولی منع ہوگا ۔ سے منع فرایہ جی جہرہ و سرحاس حگر ہے ۔ یہال مار نے سے قوت سامعہ یا با صرہ یا شامہ سے فوت ہو نے کا خدشہ موظم جوموجب ایزار و بلاک ت ہے ۔

یینے اور پریٹ پر مازا اس بیے منع ہے کہ اس سے ایسے نقصان کا اندلشہ ہے ہو ہلاکت یک پہنچا سکتا ہے۔ اور پر ممانعت نبی کرم علیہ الصلاۃ والسلام سے اس قول سے ثابت ہوتی ہے کہ : نرنقصان اٹھا وُنہ نقصان پہنچا وُر مہانعت نبی کرم علیہ الصلاۃ والسلام سے اس قول سے ثابت ہوتی ہے کہ : نرنقصان اٹھا وُنہ نقصان پہنچا وُر

م منزائے اتبدائی مراص میں مارنازیا وہ بخت اور لکیف دہ بہیں ہونا چاہیے،اور مکی میکی معمولی مجھڑی سے ہاتھو یا وَل وغیرو برمارنا چاہیے، اوراگر بچہ جھوٹا ہوتو وہ مین سے زیا وہ نہیں مارنا چاہیے، ہال جب بچہ بڑا ہوگیا ہوا ورمرنی یہ سمے کہ دوئین ڈٹرلول کے ماریف سے کوئی فائدہ نہ ہوگا تورسس تک مارسکیا ہے،اس لیے کہ نبی کرم علیب العملاة واس کام فرماتے ہیں: کوئی شخص وس کوٹرول سے زیادہ نرمارسے گرالٹدکی صدو دیمی سے سی صدیمیاہ۔

۵ ۔ بچہ جب یک دس سال کی عمر کونہ پہنچ جائے اسے مارنا نہیں چاہیئے۔ اس حدیث کی بنا، برحج پہلے ذکر ہو کہی ہے کہ: اپنے بچوں کونماز کا حکم دو جب وہ سات سال سے موجا ئیں، اور نماز مرپان کو مارو حبب وہ دس سال سے ہوجا میں ۔

الا ۔ اگر فلطی کا صدور بہتے ہے پہلی مرتبہ ہوا ہوتواسے آل جرم سے توبہ کاموقعہ دینا چاہیے اوراس حرکت پراس کا عذر قبول کرنا چاہیے ، اوراس کواس بات کاموقعہ دینا چاہیے کہ وہ ظاہری طور کرسی کواپناسفائٹی بنالائے اور منزاسے بھی جائے اوراس سے عہد لے لینا چاہیے ، تاکہ دوبارہ وہ فلطی نرکر سے یہ اس سے ہتر ہے کہ اسے فوری مارا پہیٹ اجائے یا اس سے جرم کی لوگوں کے ساجے تشہیری جائے۔

له اس كوعد مربن تيميد نے روايت كيا ہے اور الاقناع اور المغنى والول نے اكس كا تذكر وكيا ہے -

ے مرنی بیجے کونود مارسے ریہ ذمہ داری ا*ک سے سی بھ*ائی یا ساتھی کے سپرد نہ کرسے تاکہ ان بھائیول وغیرہ میں لڑائی حجگڑا نہ ہوا ورمقدوصد کی آگ نہ مجھرے ہے۔

۸ ۔ بچہ جب بلوغ کی عمرکو پہنچ جائے اور مرنی بیمس کرے کہ تبنیہ وز جرکے لیے دس چیعر پاں ما ناکا فی نہیں تووہ اس پر اضافہ بھی کرسکتا ہے اور ککلیف دہ مارتھی لگاسکتا ہے اور بار باریمی مارسکتا ہے یہاں تک کہ وہ بیمس کر لے کہ بچہ تیمجے راستہ پرآگیا ہے اور اب بالکل سیدسے راستے پر ٹھیک ٹھاک تاب راہے۔

اس سے بیمعلام ہوا ہے کہ اسلامی تربیت نے سزا دینے کے موضوع کا بہت اہماً کیا ہے سزانواہ مادی ہویا معنوی بکین اس نے اس ساکو ورقیو دوٹر وط سے داکر سے میں محدود کر دیا ہے ، اس لیے مربیول کوچا ہیے کہ اگر وہ این معنوی بکین اس نے اس ساکو ورا نے معاشرے کی شاہ اراصلاح کرنا چا ہتے ہیں توان قیو وسے باہر نہ تکلیں اوران سے تغافل تربی بہری مناسب موقع برمناسب منزا دیا ہے تواس وقت وہ س قدر کیم وموفق ہوتا ہے وہ سیاکہ نرمی کے موقع ربین می وشفقت بہین ایمی چیز ہے۔

ا وراکسس وقت مرنی کس قدراحمق وجامل شمار ہوگا جب وہ حتی کی جگر پر نرمی بریتے، اور نرمی وہیار کی پندیر

جگربرختی کریسسے۔

اللّٰدتعالىٰ رحم فراستُ الله شاعر پرمبس نے مندرجہ ذیل اشعار کہے ہیں: إذا أنت أكرمت الكريم ملكت وإن أنت أكرمت الله يم تمردا

إذا أنت أكرمت الكريم ملكت وبيتم تريف ويت الكريم ملكت وبيتم تريف وي الكريم الكر

اوردرگزرسے زیاد ومؤثر متصیار کے ذریعے شرفا بولٹائیں کالیا وہ رائی الاس تاذی المرشیخ کامل کو مزار خیر دیا کی انہوں نیر بسے سمید انتہ ملاطف میں وزمی اخترا کر۔

اورالله تعالی استا ذوعالم شیخ کامل بررکو جزا رخیر دسے کر انہوں نے بیسے سے ساتھ ملاطفت ونرمی اختیار کرنے کی دصیت کی بینانچہ وہ کہتے ہیں :

> ان المدد فی شدع الحدی دم مربی دین اسلام کے مطابق ابنی رعایا کے ماتد دمل یدمی اسسوط الاً ذمی القلعان وہویوں جوبچوں کوں کینے وہ کواسے سے زخی کردسے اورو فود

بر ببرعیده لاعاتی الخلق وستربین بوتایه ندکه ایسا سخت مسنداج فی نفسه ضیغ آ قد صال فی غسق این ایجوای اشیر سمجے میں نے تارکی میں ملدکردیا ہو

اوراگرتم سیس و کمینے آ دمی کااکرام کروگے تودہ کرشس بن جائے گا

مضركوضع السيف فحي موضع الندى

جیساکه سسناوت کی حبسنگ پر تلواراشمان

ومن لك بالعوالذي يعفظ اليدا

ألحفالنا سيارها تا المجيل عندكم وديعة لا دمى حطم لدى النزق

۔ سے قوم کے رکھوالو ہمسارے بیجے تمہارسے یاس ایک امانت ہیں ذکہ ہمچے پچول کے پاس ٹوٹنے بچوٹنے ولیے ہونے

اور بچہ جب بچین ہی سے محاسبہ ومراقبہ سے ربانی عقیدسے پر بڑسھے پیلے گا،اورایان بالتٰداورزندگی سے تمام مراحل *دم* مختف حالات بیں التدسے مدوماً مسل کرسنے ، اور اس کی طرف ریوب<sup>ع</sup> کرسنے ، اس سے ڈرسنے ، اور اس پر بھروسہ کر سنے کے وصف کا حال بوگا، اور حب وہ دل کی گہرائیول سے پیجان لے گاکہ اللہ تعالیٰ اس سے ساتھ ہے، اس کو دیمھے رہا ہے، سب اس کے سامنے ہے، وہ اللہ اس کے ظاہروباطن کوجانیا ہے، اور آنکھول کی خیانت اور دلول کے فنی بھیدل كوبعى جانماي للبذا يبيح مي جب يه اوصا ف موجود مول كي توميس أخرت كے عذاب سے ڈرا أاور دنيوى عُ انٹ ڈپٹ اس پربچرااٹر کرسے گی ، اور ڈرا یا دھمکا ہا ا*پ کے فس اس سے کردا را ورطال کی*ن ومعاملات پربہت انروسلے گاخبس کانتیجہ یہ بہوگاکہ اس کے حالات سے معرفا بئی گئے اوراخلاق درست بروجا بئی گئے۔

۔ قرآن کریم نے بھی ان ڈرانے دھمکا نے والی سزاؤل کومخلف آیات میں ڈکر کیا ہے اور کُومن نفوس کی اصلاح میں اک سے کام لیا ہے۔ اوراس کے ذریعے ان کی اخلاقی ونفریاتی تیاری کی ہے ،اوران کانفوس پر بہت عظیم اثر ہوتا ہے اور كرداريكس كے اچھے تائج اور تربيت واخلاق براس كي بہترين مرات ظاہر بوستے ہيں۔

💠 چنانچه قرآن کریم مب به دیمیته <u>س</u>یر کوگ گماری میں مگن میں تو ایک مرتبہ تو نہایت سختی سے قسا دیت قلب سے ورا وصمكا أب بيانيدارشا دِباري به:

> ((أَلَهُ بَيَانِ لِلَّذِيْنَ الْمُنُوْآ أَنْ تَخْشَعَ تُلُوْبُهُمْ لِلْوِكْرِ اللهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ « وَلاَ يَكُوْنُوا كَالَّذِينَ أُوْتُوا الْكِتْبُ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ أَنْلُوْبُهُمْ وَكَنِيْرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ يَ).

مي ايمان والول كے ليے وقت نہيں آياكه ال كےول الله کی نصیحت اور حودین حق فازل مواہے اس سے آگے جھک جائیں، اور ان لوگول کی طرح نہ ہوجائیں جنہیں ان کے قبل کتاب ملی تھی بھیران پردیک لمبا زمار گزرگ توان کے دل خوب خست موسکتے . اوران میں کے بہت

سے کا فرہیں۔

💠 اورتبعی صاحةً الله کے غضب و عذاب سے ڈرا تا ہے جبیاکہ واقعهُ افک بیس ہوا ، اور یہ درحب سنست ترین در حبسه:

﴿ وَلَوْ لَا فَضُلُّ اللَّهِ عَلَيْ كُمُ وَدَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْأَخِرَةِ مَسَّلُمْ فِيمَا اَ فَضَتُمْ فِيهِ عَذَابُ عَظِيْهُ ﴿ إِذْ تَلَقَّوْنَهُ إِلَّالِسِنَتِكُمْ وَ تَقُولُونَ

ا وراگرتم برانتد کافضل وکرم نه موتها دنیایی (مجعی) اور سخرت میں رجعی اتوجس شغل میں تم بڑے سے تھے اس میں تم پرسخت عذاب واقع به قاد مذاب عظیم کے ستحق تو

بِافْوَاهِكُمْ مَّالَيْسَ نَكُمْ بِهِ عِلْمُ وَتَعْسَبُونَ الْهَبِينَا وَهُوَعِنْدَ اللهِ عَظِيْمُ ، وَلَوْكَا إِذْ سَمِعْتُمُوٰهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَا آنُ نَتَكَلَّمَ بِهِ ذَا السَّبْخِنَكَ هٰذَا بُهْنَانٌ عَظِيْمٌ . يَعِظُكُمُ اللهُ آن تَعُودُوا لِمِثْلِهِ ابْدًا إِن كُنْتُمُ مُؤْمِنِينَ ».

÷ ÷ ÷ ÷

النور- ۱۸ تا ۱۵

جی زارنا الرحم ایان والے ہو۔ اور مجھی اللہ اور اس کے رسول کی طرف سے اعلان جنگ کے ذریعیہ نبیہ کرتا ہے :

﴿ يَائِنُهَا الَّذِينَ الْمَنُوا التَّقُوا اللهَ وَذَهُرُوا مَا لَا يَائِهُا اللهِ وَذَهُرُوا مَا لَا يَقِي مِنَ الرِّبُوا إِنْ كُنْتُهُ مُّوْمِنِينَ ﴿ فَإِنْ لَا يَعْمُ مُنَاللهِ وَرَسُولِهِ ﴾ لَهُ تَفْعَلُوا فَأَذَ نُوْابِحَرْبٍ مِنَ اللهِ وَرَسُولِهِ ﴾ لَهُ تَفْعَلُوا فَأَذَ نُوْابِحَرْبٍ مِنَ اللهِ وَرَسُولِهِ ﴾ البقرة ١٤٩٥ و مروويه

و اور مجى آخرت كے عذاب سے فرا آ ہے: (( وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللهِ الْهَا أَخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْلَ الْجَقَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْلَ الْجَقَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْلَ الْجَقَ وَلَا يَوْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلَ فَلِكَ يَلْقَ اَتَّامًا لَا يَتُطْعَفُ لَدُ وَيْنَهُ مُهَا نَا ﴾.

لَهُ الْعُذَا الْ يَوْمَ الْقِنْ الْحَدَا الْ يَوْمَ الْقِنْ الْحَدَا الْمُ يَافِي مَهَا نَا ﴾.

الغرّوان مره وووو الغرّوان مرووو وورا الغرّوان مرووو و ورائل المركم و المركم و المرابع و المركم و المرابع و المرابع

(اوَ إِنَّ تَتَوَلَّوا كَمَا تُولَيْتُمْ مِنْ قَبْلُ

ا ورفسرایا :

اس وقت ہوتے ، جب تم اپنی زبانوں سے اسے نقل درنعل کررہ ہے تھے اور اپنے منہ سے وہ کچھ کہ رہ ہے تھے اور اپنے منہ سے وہ کچھ کہ رہ ہے تھے جب کی تمین کوئی تحقیق بڑھی اور تم اسے ملکا سمجھ رہ ہے تھے مالانکہ وہ التٰد کے نزدیک بہرت بڑی بات تھی اور تم نے جب اسے سمنا تھا تو کہوں رہ کہ دیا تھا کہ ہم کیسے ایسی بات منہ سے نکالیں توب یہ توسخت بہان کریم کے اللہ تمہیں نصیحت کرتا ہے کہ بھراس قسم کی حرکت کے اللہ تمہیں نصیحت کرتا ہے کہ بھراس قسم کی حرکت کم بھی زکرنا اگر تم ایان والے ہو۔

اے ایمان والوڈروالٹدسے اور مجوڈ دو توکھے سود باتی رہ گیا ہے اگرتم کوالٹد کے فرانے کا بھیں ہے ، تھے اگر نہیں جھوڑتے تو تیار ہوما و لرانے کوالٹدسے اور

اس کے دسول سے۔

اور جوالتد کے ساتھ کسی اور عبود کونہیں بکارتے اور حب دیا ہے اسے قال کوالتہ نے محفوظ قرار دسے دیا ہے اسے قال نہیں کرتے ہیں کا اللہ نے محفوظ قرار دسے دیا ہے اسے قال نہیں کرتے ہیں اور خزنا کرتے ہیں اور جوکوئی ایسا کرسے گا کس کو مزاسے سالجہ پڑھے گا قیامت کے دن اس کا عذا ہے بڑھ اجائے گا وہ اس فی رہینے ہے کہ وہ اس کا عذا ہے بڑھ اجائے گا وہ اس فی رہینے ہے کہ وہ اس کا عذا ہے گا ۔

اگرتم نہ نکلوگے تو دسے گاتم کو در داک عذاب اور برے میں لائے گاا ورلوک تمہارے سوار

ا وراک روگردانی کرو کے مبیاکہ اس سے قبل روگروانی

كريك بوتووه تهبي مذاب درد ناك كى منزادسكا.

يُعَذِبْكُونَ عَذَابًا أَلِيْمًا ﴿ ﴾ العَجَ- ١٦ نيز فروايا:

ا وراگرینه مانیس کے توعذاب دے محاان کواللہ وروناک عذاب دنیا و آخرے میں۔ ﴿ وَإِنْ يُتَنَوَّلُوا يُعَـنِّ نِهُمُ اللهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ْفِي اللَّذِنْبَا وَالْاَخِرَةِ ، ﴾ اِسْمَ بِم، اورفرايا :

یمی جا ہتا ہے اللہ کہ ان کو مذاب میں رکھے ال چیزول کی وجہ سے دنیاک زندگی میں ۔ ( النَّمَا يُرِنِدُ اللهُ لِيُعَلِّى بَهُمْ بِهَا فِي الْحَيْوةِ
 الدُّنيا».
 الدُّنيا».

اورمیرا خیال یہ کاگرمرنی بیجے کی ایمانی تربیت کا اہمام کرے، اور اس کی شخصیت سازی اللہ کے مراقبہ اور اللہ سے شیت وخوف پرکرے تو قرآن کریم کی یہ تنبیعات اورا مادری ویدیں بیجے کی اصلاح اور اس کو بہت سے محرات سے دو کنے ہیں بڑا مسامل بنیں گی اور اس پران کا بہت اثر مہوگا، اور ہم "ایمانی تربیت کی فرڈاری بہت سے مخوات سے دو کئے ہیں کہ مقید سے سے اعتبار سے بیجے کی تربیت اور ایمانی اعتبار سے تیاری ہیں مرائی کو کے منوان کے مخوان کے منوان کے توان کے منوان کے منوان کے منوان کے منوان کے منوان کے تو سے تیاری ہیں کہ بیر شمیک رہے اور اس کے اضلاق درست ہول ہیں ڈرانے دھم کا نے والی وہ تربیت ہوں ہیں ڈرانے دھم کا نے والی وہ تربیت ہوں ہیں ڈرانے دھم کا سے والی وہ تربیت ہوں ہیں درست ہوں ہیں ایمانی ایمانی کام کیا ہے۔

اورانعيرين يركبايا ښامول كه:

مرتی ایسے وسائل کوکہی تھی معدوم نہیں پائے گا جو بیھے کے لیے زجر و تبیدا درروسکنے کا ذریعہ نہیں ، اور تجو دسائل ہم نے ابھی ذکر کیے ہیں یہ بیچے کی اصلاح و تربیت سے سسلہ کے اہم ترین وسائل واسباب ہیں ، اوران کے استعال کرنے اوران میں سے مناسب ترین کے اختیا کرنے سے ہی مرتی کی مکمت ودانانی کا اندازہ ہو البیعہ

اس بی کوئی شک نہیں کہ بچول کی ذکاوت، ثقافت ومزاج اوراصکس سے امتبار سے یہ وسائل متفاوت و منتف ہیں ، چنا بچد بھن ہیے ایسے بوستے ہیں کہ جنہیں بلکا سااشارہ بھی کافی ہوتا ہے اوراس سے ان کا دل لرزام ماہے اوراس کی طرف بلکا سااشارہ کی طرف بلکا سااشارہ کی طرف بلکا سااشارہ کی طرف بلکا سااشارہ کرسنے سے ہی ال سے صغیر میں بھی جاتے ، اور بعض ایسے ہوتے وقت یک مخصیک نہیں ہوتے جب یک ال کوتیز نگا ہول اور سخت غصے سے تنبیہ نہی جائے ، اور بعض ایسے ہوتے ہیں کہ جنہیں منزا دینے کے باہر سے ہی ڈراناکافی ہوجا آہے ، اور بعض بجول کی اصلاح ترکیفلق ومقالمعہ وبائیکا می ہوتی ہے ، اور بعض بجول پر وازے و بھی اس مزاد ہوتا ہے ، اور بعض ایسے ہوتے ہیں کہ جن سے قریب و نظالیجا ناہرا ہوتا ہے ، اور بعض ایسے ہی ہوتے ہیں کہ جب تک انہیں منزاک اذریت سے تاکہ وہ اسے قریب دیکے کر باز آجا بیک ، سیکن ان بیں سے بعض ایسے ہی ہوتے ہیں کہ جب تک انہیں منزاک اذریت نہیں موقی ۔

جیساکہ ہم نے بیان کیااسلام نے ان تمام قسم کی سناؤل کومشہوع قرار دیا ہے اور ان کی جانب مربیول کی رہنائی کی ہے۔ اوران سناؤل کے اختیار کرنے سے ہی سمجھ اری ظاہر ہموتی ہے۔ لہذ ہو سنزا نبیے سکے بیے مناسب ہوا وربس سے اس کی اصلاح ہوسکے اسے اختیار کیا جائے۔ اللہ تعالیٰ ہی سیرمی اِ ہ دکھانے والا ہے۔

### 

مرتې صاحبان ؛

ہے براثرانداز ہونے ولیے وسائل تربیت ہی ہیں، اور صبیاکہ آپ نے مشاہرہ کرلیا یہ نہایت اہم اور مفید عملی وسائل ہیں اگر آپ ان کونا فذکر سکیں اور ان سے فائدہ اٹھا سکیں اور ان سے طبیق ویہ سے وسائل برعل کرسکیں تو باشک وشبہ بچہ ہوگا جب کی طرف لوگول کی انگلیا ں تو بالشک وشبہ بچہ ہوگا جب کی طرف لوگول کی انگلیا ں اٹھیں گی اور جوابنی قوم وقبیلہ میں تقوی ، ورع اور اچھائیول ہیں معروف وشبہ بور ہوگا۔

بوض یسنجما ہے کہ اُس اُل میں تربیت کی بنیا دس اوراماس ینہیں ہیں ہونم نے بیان کیں ،اوران وسائل کے علاوہ دوسے وسائل سے تربیت ہوتی ہے تو وغلظی پرہے ، الا برکسی کی تربیت ربانی طور بربو ، براہ راست اللہ کی جانب سے ہوجیہے کہ انبیا جلیہم الس اُل کی تربیت تو واقعی ان کی تربیت اللہ کی بحرانی ود کیر برجال میں ہوگی ،اللہ کی جانب سے ہوجیہے کہ انبیا جائے مال ہوگی بلکسی طرح سے جی ہمیں کی تقص یا انحاف سے طاری ہونے کا قطعا کوئی مکان میں نہیں ہوا۔

رہارباب مکومت کا امت کی تربیت کرنا اور ماہرین کا معاشہ ہوگی تربیت کرنا اور والدین کا خاندا نول کی تربیت کرنا تواس کا تعلق تربیتی اسباب سے ساتھ مرتبط ہے اور توجیبی اور رہنائی سے وسائل سے ساتھ مربوط ہے ، اگر مسئول و ذمہ دار حضارت ان کو اختیار کرلیں سے اور مرفی ان طبقوں کو اپنالیس سے توامیت کی اصلاح ہوجائے گی جازان درست اور افراد ہایت یافتہ ہوجا بیش کے اور انسانی معاشہ کا میا بی ہو گی اور خوش بختی واستقرار و سکون کی بلندی پر بہنے جائے گا، اور اے محترم مرفی صاحبان ! آپ نے ان وسائل کا مشاہدہ کرلیا ہوگا جن کو اسلام نے بہنے کی ایمانی واخلاقی تربیت اور نفسیاتی ومعاشرتی شخصیت سازی کے بیے مقرکیا ہے ۔

۔ لہٰذا مقد آئی فہونہ کے ذرایہ تربیت سے بچر بہترین صفات اور کامل ترین اخلاق ماسل کر سے گا، اور فضائل و ایھائیول کی طرفت ترقی کردیگا، اوراس تربیت کے بغیرز تو پیچے کو منزا دینا سود مند ہو گااور نداک بری و خطر نوسیعت کا اثر ہوگا۔
اور عادت کے ذرایہ تربیت کی وجہ ہے بچے سن تربیت کے بہترین تائیج اور شاندارا ترات مال کر سے گا، اسس اور عادت کے ذرایہ تربیت ماسل کر سے گا، اسس لیے کہ اس کامدار و تجھنے اور نظر کے منے بر ہوتا ہے اوراس کی بنیا و ترفیب و تربیب برقائم ہوتی ہے، اورارشا و و توجیہ و سال کی داسلہ سے برتربیت ماسل ہوتی ہے اور اس کے بغیر مرتی کی مثال اس شخص کی می ہوگی جو پانی پر لکھ رہا ہو،

ا ورحيل بايان مي جين رما بهو، اور بلا فائده ومقصد را كه بس ميونك رما بور

اور وعظون فیرت کے ذریعہ تربیت سے بچہ اپنے کالت، اور مہتبرین نصیحت، اور بامعنی قصے، اور شوق دلانے والے سوال جواب، اور حکیماندا سلوب وانداز، اور مؤثر رہنائی سے متاثر مہوگا اور اس سے بغیرنہ تو اس سے وجدان میں حرکت ہوگی، اور نہ دل میں رفت بہیا ہوگی، اور نہ اس کی طبیعت میں حرکت بہیا ہوگی، اور عش ایک خصک تربیت ہوگی اور اس کی اصلاح کی امید موہوم و کم ہوجائے گی۔

اور دیکھ میمال کی تربیت کے ذرایعہ بیچے کی اصلاح ہوگی اس کانفس بلندا وراس کے آواب واخلاق کا مل ہوں گے، اور وہ معاشرہ کی تعمیر میں کا رآمدا بینٹ اورامسٹی سلمہ سے ہم میں اہم ترین مفید عصنو سبنے گا.ا وراس کے بغیر بچے گندی مادتوں رینوں سینوں قریم محملیں اور مرسی میں شد میں میں میں میں میں ہیں۔

اوزخراب انعلاق مي مجينس جائے گاا ورمعاشرے ميں مجرم وبدنجنت شار موگا۔

اوعقوبت ومنزاسے تربیت کے فررکیے بچہ برک ہاتوں سے دسکے گاا وربرسے انعلاق اورگندی صفات سے دوررسے گا، اور اس میں ایساا ساس وشعور مہو گا جواسے شہوات میں بہنے اور گنا ہوں اور نقصان دہ جینزول کے ادر کا ب سے روک دسے گا۔ اور اس کے بغیر بحجہ گنا ہوں ہیں مبتلا ہوگا ، اور جرم ومنکوات کی دلدل ہی جینس جائے گاا ور برائیوں اور خرا ہیوں میں بیٹا رہے گا۔

اس لیے اسے مرنی صافبان! اگرآپ یہ چاہنتے ہول کہ آپ سے بیچے کی اصلاح ہوا وروہ آپ کے معاشو سے لیے خیروبھ سلاتی اور سعا دست اور آپ کی مسلمان حکومت کیلیے نصرت وسیا دت کا ذرائعہ سنے تو آپ یہ گوش کیجیے کہ آپ اِن دسائل کواضتیار کریں ، اور اِن بنیا دی باتوں بڑکل ہیل ہول ، اور اِن کوملی طبیق دیں ، ااٹنہ سے لیے رکھے تھی مشکل نہیں ہے۔

ا ورکب و یبجیے کرعمل سیے جاؤ کھرآگے د کمیر لے گا اللہ تہارے کام کو اوراس کا رسول اوٹرسٹمان ۔ (( وَقُلِلَ اعْمَلُواْ فَسَيْرَ اللهُ عَمَلَكُمْ وَ رَسُولُهُ وَ رَسُولُهُ وَ رَسُولُهُ وَ اللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَمِنُونَ م )) . التوب ١٠٥٠



# فصل می ای تربیت سے بنیادی اُصول وقواعر

یہ اصول ومنا سے جسیاکہ آپ دیکی لیں گے، یہ نہایت واضح وروشن ایسے بنیادی اصول ہیں جن کا نا فذکرنا اسال ہے۔ اور جوبہت عالی مقصد مرشتی ہیں، اگر معاشر ہے کی تعمیراور قومول اورامتول کی تربیت سے بیے مربی ان کو اضیار کرلیں توامتول کی امتیں اور قومول کی قوت اضیار کرلیں توامتول کی امتیں اور قومول کی قوت اور تقل کی بنی کی اور تقل کی بنی کی اور تقل کی بنی کی اور تقل کی بنی کے اور تعمید ورائی میں ایسے آبا ہوا وہ ہوائی کی سیرت کو دو ایس کے اور تھی کے دو تھی کے دو ہرا دیں گے اور صحابہ و تابعین سے پہلے دستے کی عزت کو وائیں لوٹا دیں گے۔

یکے کی شخصیت سازی اور دنیا وی زندگی میں اسے ایک باوقار وسیحے انسان بنانے کے سلسلہ میں جن توامد کو مربیول کو کام میں لینا پیا ہیںے ان کو باین کرنے سے پہلے بہتر میں علوم ہوناہے کہ ہم ان بنیا دی صفا ہت کو مخقرا وُکرکر دیں جن کا مرقی میں پایاجا نا صسب رو ری ہے ۔ ناکہ مرقی کا بچوں پر بوپر اسٹریٹے سے ، اور نیکے اس کی صبحتول . خوب لیک کہیں :



# مرتی کی بنیا دی صفات و اوصاف

مرتی کوچاہیے کہ اپنی نیت درست رسمے اور تربیت سے جوکا میں وہ انجام دیا ہے وہ صرف اللہ کے لیے کرے چاہیے وہ امور تربیت حکم دینے یا روکنے سے علق ہول ، یا نصیحت و خیرخوا ہی سے . یا دیکھ مجال وسزا دینے ہے۔ تربیت کے نظام کو مبیشہ نافذکر نے اور نیھے کی تربیت و ہمیشہ دیکھ مجال سے جوٹمرہ وفائدہ حال ہوگا وہ اس کے علاوہ ہے جواسے اللہ کی رصٰاا وراجرو تواب کی صورت میں حبنت میں ہمیشہ سمبیشہ کے بیسے اللہ جل مبلالہ سے بیہا لے قرب کی شکل میں حاصل ہوگا۔

قول وعل مي انعلاص كوملحوظ ركهنا بي ايمان كى بنياد اور اسلام كاتقاصنه بيد. التُدتعالى سيم على كولغير ضلاص سے قبول نہیں فرواتے، اللہ کی تحاب اور نبی کریم سلی اللہ علیہ وہم کی انی اس کا تکم نہایت تاکیدسے ساتھ وار د مہوا ہے اللہ

تعالى فراتے ہيں:

حالا نكدانهيس بيي ملكم مواتحاك التدكى عبادت اسطرح (( وَمِنَا أُمِرُ وَا إِلَّالِيَعُبُدُوااللَّهُ مُعْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ كريك وين كواسى كے ليے فالص كھيں كميوم وكرواور حُنَفًا ءَ وُيقِيمُوا الصَّالِحَةُ وَيُؤْتُواالزَّكُومَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَبِّهُ وَ \* )) . نازى يابندى كهيس اورزكاة دياكريسيى طريقير ب

البيتند. ٥

نيزارشا د فرايا:

(( فَهَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلُ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكُ بِعِبَادُةِ رَبِّهِ أَحَدًّا ۗ )).

كرسه كي نيك كام اور شركب ذكر سدايي رب کې ښارگ مین سی کو .

(ان) درست مفاهین کار

اورى كريم عليه الصلاة والسلام في ارشاد فرمايا (جيم بخارى وسلم في روايت كياسه): «إنمساالأعمال ببالنيبات وإنسب

لامىرئ مانوى».

ا ورنبي كريم ملى التُدعليه ولم كاارشا وسب (جيدابو دا ذو دنساني روايت كرسته بيس): (( اسب الله عزوجل لايقبر من العمل

تمام اعمال کا وا رومدار نبیت پر ہے اور پرخص کو

سوبچرس كواميدم وايينے ربسيد ملنے كى سووه

وى سے كا جودہ نيت كرے كار

الله تعالى بسسى عمل كوقبول كريت مين بوسروف اسى كے

عدائن **۲۳۱** 

الاه کان له خالصاً وا بتغی به وجهه ».

الاه کان له خالصاً وا بتغی به وجهه ».

لهزایه جان پینے سے بعد مرتی کوچا ہیے کہ نیت خالص رکھے ،اور حوکا کھی کرے اس سے صرف اللّٰہ کی مِنا مقصود ہوتا کہ وہ اللّٰہ کی مِنا مقصود ہوتا کہ وہ اللّٰہ کے بہال مقبول ہوا ور اپنے بچول وشاگردول میں محبوب واثر انگیر بھی ۔

اللہ تقویٰ ی

مرنی میں سب سے ممانہ وصفت تقوی کا ہونا چا ہیے تقوی کی تعربین علی ہر بانیین نے یہ کی ہے کہ : التّٰہ تعالیٰ تمہیں اس جگہ ہرگزنہ دیکھے جہال سے اس نے تمہیں روکا ہے ، اور وہال تمہیں غیرموجود نہ پائے جہال موجود موالی تمہیں کا اس نے تمہیں میں موجود موالت ہے اس کی تعربی اس طرح کی ہے کہ : اچھے اعمال کے ذریعے اللّٰہ سے عذاب سے بنیا ، اور فاہری وباطنی طورسے اس سے ڈریتے رہنا ۔

دونوں تعرفیفول کامفہوم ایک ہی ہے۔ اوروہ یہ کہ دائمی مرافیہ کے ذراید اللہ سے عزاب سے بجناو دُرنا ، اورظاہرو ویوسٹیدہ دونوں طور بررانی طریقہ برخل کرنا، اور صلال کی تلاش اور حرام سے بیخے کی سلسل جدوجہ میں لگے رہا ۔

اس کی تائید اس سوال جواب سے ہوتی ہے ہو حضرت عمرین الخطاب و حضرت ابی بن کعب ضی اللہ عنہ اللہ عنہ اسے درمیان ہوا تھا ، اوروہ اس طرح کہ حضرت عمرضی اللہ عنہ نے حضرت ابی بن کعب رہنی اللہ عنہ سے تقوٰی کے بارے میں دریافت سے ا، توانہوں نے حضرت عمر سے فروایا ؛ کیا آپ میمی کا نٹول والے راستے برچلے ہیں ؟ انہول نے فروایا ؛ کیول نہیں ؛ توانہوں نے فروایا ؛ خوب کوشش و محنت کیا طریقیہ اختیار کیا ؟ انہوں نے فروایا ؛ خوب کوشش و محنت کی ، انہوں نے فروایا ؛ بی تقوٰی ہے ۔

. مستی کیا تھا تھا کی کے اختیار کریے ہو آن کریم کی بہت ہی آیات میں ابھالا گیب اور اس کا حکم دیا سه .

، سے ایمان والو ڈرستے رموالٹدسسے مبیا اسس سے ڈرنا چاہیے

اسے <sub>ا</sub>یمان والوا لٹنہستے ڈرو اور *ماسستی* کی بات کہو۔

اسے ایمان والوالتہ سے ڈرستے رہوا ور شخص دیکھ ہے کہ اس نے کل کے واسطے کیا بھیجا سہے۔ ( بَا يَنْهَ اللَّذِيْنَ الْمَنُوا اتَّقُوا اللَّهُ وَقُولُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ، الاحراب - ٠٠ نيز فرمايا :

((يَا يَنْهُ اللهِ يَنَ امَنُوا التَّقُوا اللهُ وَلْتَنْفُرُ نَفْسُ مَا قَدَّمَتْ لِغَدِئى، الحشر مِد

#### اورفسوليا:

ا سے لوگو ا پنے پروردگارسے ڈرو (کموںکہ) قیامت (کے ون)کا 'لزلدبڑی بھاری بینے ہے۔

(ایَاکَیُهُا النَّاسُ اتَّقُوٰ ا رَبَّکُمُ الَّ ذَلُوَکَهُ السَّنَاعَةِ شَیٰ مُعَظِیْمُ صِ). الحَ-ا نیز فرایا:

ا ورجو کوئی اللہ سے ڈر آ ہے اللہ اس کے لیے کشائش پیدا کر دیاہے اور اسے ایسی حگہ سے رزق پہنجایا ہے جہاں سے اسے گمان تھی نہیں ہوتا۔ (( وَمَنْ يُنْتِقِ اللهُ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ؛ وَ يَذِزُقُهُ مِنْ حَيْثُ لا يَخْتَسِبُ.)).

الطلاق- ١٠و٣

نبی کریم می النه علیه ولم کی بے شارا ما دریت میں مجی تقوی افتیا کرنے کا حکم دیا گیا ہے شلّا: امام سلم نبی کریم میں النه علیه ولم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشا دفر مایا: دنیا شیری و سرسبز وشاداب ہے .اورالله تعالی تمہیں ال میں خلیفہ وجانشین نبائے گائھ دیکھے گاکہ تم کیا کرتے ہو اس لیے دنیا سے بچو ،اور تو تول سے بچو ،اس لیے کہنی اسرائیل کا پہلافتنہ عور تول کے سبب سے ہی ہوا تھا ۔

اوراماً ترمندی حضرت ابومبریره رضی النّه عنه سے روابت کرتے ہیں کہ انہوں نے فروایا ،رسول النّه ملی النّه طیم وسلم سے بوجھاگیاکہ اکترلوگ حبنت میں سس چیز کے سبب داخل ہول گے ؟ آپ نے ارشاد فروایا : النّه کے تقوٰی ہو وڈرا ورسسن انعلاق کی وجہ سے ۔

ا درامام احمدو حاکم و ترمذی حصرت انس دنبی التّدعندسے روایت کرتے ہیں کہ رسولِ اکرم ملی التّدعلیہ وکم نے فرمایا ، تم مِس حکیمی بوالتّد سے ڈریتے رہاا در برائی سے بعد کی کر لینا اس سے برائی مدف جائے گی ،ا ورلوگول کے ساتھ اچھے اخلاق سے پشیں آنا.

ا در طبرانی مصرت نعان بن شبیر رضی الته عنهاست روایت کرتے میں که رسول الته ملی الته علیه وسم نے ارث ا فرایا: الته سے دروا و رصیاتم پرپند کرستے ہوکہ تمہاری اولاد تمہا رسے ساتھ نیکی کرسے اسی طرح تم بھی ان کے رمیان عدل وانصاف کرنا.

ان اوامر وتوجیهات سے اتحت مرفی سب سے پہلے دائل ہوتا ہے،اس لیے کہ وہ الیامقتدی ونمونہ ہوتا ہے جے لوگ دیجھتے ہیں اوراس سے افذکر تے ہیں اور اس لیے بھی کیمرنی ہی ہے کی ایمانی اساس وبنیا داوراسلام سے بلائے ہوئے ہوئے ویا ہے کاسئول اول ہوتا ہے۔ بلائے ہوئے طرفیوں برتر بہیت دینے کاسئول اول ہوتا ہے۔

. اورواقعی بیشیح بات بینے داگرمرنی واقعة مُنتقی نه بہوا ورمعاملات وکروار میں اسلام سے منہج وطورطرنقیول کا پابند نه بوتولازمی طورسے پینمخرف اور آیا وی وسیے راہ روی وضاو کی دلدل میں بیٹس جائے گا۔اور گمراہی وجہالت کی وادی میں بھنکے گا۔ کیوں ؛ اسس ہے کہ اس نے اکشخص کومنکرات وہائیوں کی گندگی ہیں ملوث اور شہوات کے دریا ہیں خوق اور آزادی سے ماحول میں رچا ہے و کمچھا ہے جواس کی ترمیسیت ور نبائی کا ذمہ دار تھا۔ اس لیے اسپی صورت میں نپھے کی شوونما ایسے حال میں ہوگی کہ اسے نہ توالٹہ کی طرف سے کوئی روشے والا ہوگانہ اس کو خدا کے دیکھنے کا خیال ہوگا۔ او خصمیر کی طرف سے اس کی کوئی مدد مہوگی ، توالیسی صورت حال میں پہلے کا آلودہ وگندہ ہوناا ور جاہی ماحول اور گمرامی وجے اہ روی کے زمانہ ہیں رہ کرشندوذ وانمواف کا اختیار کرنا طبیعی وفطری بات ہے۔

اک بیے تربیت کرنے والوں کوجا بہتے کہ اگر وہ اپنے بچوک یا ٹاگرد ول کے لیے باکیزگی کے عالم اورخلوص وصفا کی دنیا میں نیروبھلائی اور مہابیت واصلاح چا بہتے بہول تو اس حقیقت کوخوب اجھی طرح سے سمجھ لیں ۔

ہم" مقتدی ونمونہ کے ذریعہ تربیت "کی بحث میں مقتدی ونمونہ کا بیکے کی تُربیت کے سلسلہ میں جواتر مو ہاہے اسے خوب تفصیل سے بیان کریکے ہیں ،اسس سلیے اسے قارئین کرام وہ الاضلہ فسے والے آب کو کافی ٹیافی بجٹ ال جائیگی۔ یہ علمہ

کوئی دوآ دمی جی اس سے اختلاف نہیں کریں گے کہ مرقی کوان اصول تربیت کاعالم ہونا چا ہیے جوشلویت اسلام نے پیش کیے بین اور اسے ملال وحرام کے احکام سے واقف، اور اخلاق سے بنیادی اصولوں کا جانے والا ،اور اسلام کے انتقام اور شریویت کے قواعد کو عمومی طور سے جمعنے والا ہونا چا ہیئے ،کیول ؟ اس لیے کدان سب کاجانی امر فی کوالیا حکیم و عالم بنا و سے گا جو سر تیز کواس کی حکمہ وسے گا ،ا ور ان سے تقاضول اور اصول کے مطابق بیرے کی تربیت کر سے گا اور قرآلن کرم علی بنا و سے گا جو سر تیز کواس کی حکمہ اور تحریم اللہ کی تعلیمات اور نبی کرم صلی اللہ علیہ و کم سے مبارک طریقول اور سیرت طیبہ اور صحابہ کرام رضی اللہ عنهم جمعین و تا تعمین و مجم اللہ وغیرہ سے شاندار طریقول کی مضبوط بنیا دول پر اصلاح و تربیت کا فراجینہ انجامی دے گا .

سیکن اگرم کی خود ہی جائل ہو۔ اور خصوصا اگر وہ بیھے کی تربیت سے بنیادی قوا عدسے ناآٹنا ہوتوالیں صورت میں پہرنسیاتی طور سے ابھ کر رہ جائے گا اور اخلاقی طور بر پہر ہمت ہوجائے گا، اور وہ ایسا گرا پڑا ان ان بن جائے گا ہیں ہوگا ہزندگی کے سی شعبہ میں کوئی قدر قیمیت، اس لیے کم بیش خص سے پس نود ہی کچھ نہووہ دوسرے کوکیا سیراب کرے گی، اور سس جاغ میں تیل نہووہ دوسرے کوکیا سیراب کرے گی، اور سس جاغ میں تیل نہووہ دوسرے کوکیا سیراب کرے گی، اور سس جاغ میں تیل نہووہ دوسرے کوکیا سیراب کرے گی، اور سس جاغ میں تیل نہووہ اس وقت کس طرح منور وروشن کرے گا، اور اگر باپ جائل ہو تو وہ اپنے بچول پڑس قدر زیاد تیال کرتا ہے ؟ اور بچسہ اس وقت کس قدر بذاہ تیال کرتا ہے ؟ اور بچسہ اس وقت کس قدر بذاہد تیال کرتا ہے ؟ اور بچسہ اللہ کو سے دو گردائی کرنے والا ہو؟ بلا شبہ اللہ کے پہل کی سکولیت بہت شعت اورخطرناک اور قیامت سے روز میدان مشرق کھواکرنا بڑا سندید ہے (اور قیامت سے روز میدان مشرق کے گار کرنا بڑا سندید ہے (اور قیام سس وان نا مال فائدہ دے گار اور یہ اور یہ گار ہوگا جس وان نا مال فائدہ دے گار اور یہ اور یہ کرنے گار ہوگا جس وان نا مال فائدہ دے گار اولاد۔

اورالتُدرم فروائدات شاعر تيسس نے كماب،

لات تُخذ العلم إلاعت جهابذة

علم حاصسسل زکرو مگر براسے علمسیارستے

أما ذوواالجهل فسارغب عن بجالسهم

جا ہوں کے پاکسس بیٹھنے سے مجی بچو۔

ال آیات میں سے بیش بیرین:

الْ قُلْ هَلْ يَسْتَوِكُ الَّذِينَ يَعْكُمُوْنَ وَالَّذِينَ النَّالِينَ لَكُمُوْنَ وَالَّذِينَ لَا لَا النَّامِ الْمَامِ الْمَامِ النَّامِ النَّامِ النَّامِ النَّامِ الْمَامِ الْمَامِ الْمَامِقُولَ ال

اورفرمایا :

(اَيَرْ فَعِ اللهُ اللَّذِينَ أَمَّنُوا مِنْكُمْ وَاللَّذِينَ أُوْتُوا اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالِيلَالِكُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللللّهُ اللللللللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللللّهُ الللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ ال

نيزفرايا ،

الروَ فَكُلِّ سَّ بِ نِهُ فِي عِلْماً » له سه اله المران احاديث مين من جند وري ويل بين: اوران احاديث مين من جند وري ويل بين: الإمن سالت طويق مائمس في علماً سهل الله

متعلماً». بما مع ترمذی

((من خرج فی طلب العلم فهو فی سبیل الله حتی برجع » بایع ترمذی

آپ کہیے کہ کیاعلم والے اور بےعلم کہبیں بربر میں میں میں

الله تم ين ايمان والول كاوران كونهي علم عطا مواسع منهي علم عطا مواسع درج لمندكر كار

ا ورآب كبيركم استميرست برورد گاربرها دين يختلم كور

بخوشخص ایسے راستے پریجلے سی وہم کامتلاشی ہو توالٹرتعالی اس سے لیے حبنت کا داست آسان فرادیتے ہیں۔ دنیا معون ہے اور معون ہے ہوکھے اسس ہیں ہے سوائے الٹر سے ذکر سے اور جو اس الٹرکا فسدما نبروا دم و اور عالم وطالب علم۔

بوسخص للب علم کے لیے نکے تو وہ بب یک واپس نہ ہوالٹد کے اِسے ہی میں شمار ہوتا ہے۔ (اطلب العدم فدییندهٔ علی کلمسم) سنو، بن بو معم کا طلب کرنا بترسمان پرفرض ہے۔ ان قرآنی ارشادات اور نبوی فرمودات سے لیدمرنی حضات کوجا ہیں کہ نافع علوم اورا چھے تربیتی طراقیوں کوچھیں ان سے آراستہ ہول، تاکہ الیبااسلامی معاشرہ پیلاکر سکیس سے افراد کی محنت اور عزم سے اسلام کے لیے عزیت متعقق ہوا ور دنیا میں مسلمانوں سے لیے صنبوط ومحفوظ حکومت قائم ہو، اور بیالتہ کے لیے کچھیم شکل نہیں ہے۔

وہ بنیادی صفات ہومرنی کے لیے اس کی تربیتی ذمہ داری اوراصلاح وتعمیر کی مسئولیت میں کامیابی کی ضائ نبتی ہیں ان ہیں سے بردباری اور ملم کا وصف تھی ہے۔ اس ملم کے ذریعے بچہ اپنے اساذکی طرف کھنچا ہے۔ اوراسی کی وجبہ سے اپنے مرنی کے اقوال برلبیک کہا ہے ، اور اس کی وجب سے اپھے آ داب سے آراستہ ہوتا اور گندے بُرے افلا ق سے بچتا ہے ، اور عیروہ اس فرشتے کی طرح بن جاتا ہے جوزین رپل رہا ہویا الیا بچود بویں کا بچانہ جولوگوں کے سامنے کی ایس بھر بھر گیا ہو۔ الیا ہود ہویں کا بچانہ جولوگوں کے سامنے کی ایس بھر بھوگیا ہو۔

الخَذِ الْعَفْوَ وَأَمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْمِضْ عَنِ الْحُذِ وَاَعْمِضُ عَنِ الْحُذِ الْعَدْ الْعُرْفِ وَاعْمِضُ عَنِ الْحُولِيْنَ اللَّهِ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ الل

(( وَلَهُنْ صَهُرُ وَغَفَرَ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَنْ مِرِ الْأُمُورِ )). شورى - ٣٣

*اورفروایا:* ((لادْفَعُ بِالنَِّیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاذَا الَّذِیٰ بَیْنَکَ

اور دبا لینتے بیں عصد اور معاف کرتے بیں وگول کو ،اور التدنیکی کرسنے والوں کوچا ہتا ہے۔

عادت کیجیے درگزرگ اورحکم کیجیے بیک کام کرنے کا . اورکنارہ کیجیے جا الول سے۔

ا ور پیشنفس صبر کرسے اور می ف کر دسے یہ التب بڑے ہمست سے کاموں میں سے ہے۔

آپ نیک سے زبری کو ، ٹال دیا کیجیے ، تو تھے یہ موگاکہ

حبس شخص میں اور آب میں عداوت ہے وہ الیا ہوجائیگا مبیاکوئی ولی دوست ہو آ ہے۔

طاقتوروه نهبي بيع ويحمار دب بكه طاقتوروه بيع

تسانی پیداکر و اورنگی و شختی مذکرو اوربشادت دونو

غصه کے وقت اپنے اوپر قابور کھے۔

وَبَيْنَكُ عَلَىٰ اوَةً كَانَكُ وَلِيُّ حَوِيْهُ ﴿ ) • مُسْمِهِ وسه

ا وران اما دین میں سے بعض میں ہیں: نیری مصورین سے بیسی مقد سے سشیہ

نی کریم ملی التُدعلیہ وہم نے عبدالقیں کے آسے سے فرایا : (( اِن فیلٹ خصلتین یعب پیسا اللّٰہ: الحلم

لعلم تم من وقعلتين اسي مين بالتدب ندكريا سي ايك

والأنامي. ميم مع

علم دوسرے بردیاری۔

معضرت ابوم رمیره رضی التٰدعنهٔ روایت کرسته بین که ایک صاحب نے نبی کریم کی التٰدعلیہ وہم سے بوض کیا ، مجھے ۔۔۔ ۔۔ مجھے وصیت کیمیے تو آپ نے ارشا دفرایا : عصد ذکروان صاحب نے باربار بہی سوال دم ایا اور آپ نے یہی فرایا کہ عصد ذکرو ، مجھے بخاری

((ليس الشديد بالصرعة ، إنما الشديد الذى

يملك نفسه عندالغضب) وبخاري ولم

( يسروا ولاتعسروا وبشروا ولاتنفوا).

ية ولاق

بخارى وسلم

ملم ہی سے مندرجہ ذیل تمام امور میں نرمی کرنامتفرع ہوتا ہے: حضرت عائشہ رضی الٹرینہا فرانی ہیں کہ رسول اکرم صلی الٹرعلیہ وسلم نے فرط یا:

التُدتعالُ نرم میں اور تمام امور میں نرمی کونہسسند

(( إن الله مرفيق يعب الرفق في الأمر

کرتے ہیں۔

كله». بخارى و لم

مضرت عائث منى التدعنها فرماني مين كرسول التدهلي التدعلية وم ن فرايا و

(دإن الله رفيق يعب السرفق، وبعلمي

على الرفق حالا يعلى على العنف وحالانيطى

على سواة)) . فيخصنم

ا ورانهی حضریت عائث مرشی الله عنها سید مروی ہے کہ : ۱ عنہ معتمریت عائث مرشی اللہ عنها سید مروی ہے کہ :

«إن السوفق لامكون فى شحث إلا زانه ·

ولاينزع من شمعً إلا شامنه)).

ميحسم

سی یا اور نرمی برده الله تعالی زم میں اور نرمی کوپ ندکرتے ہیں اور نرمی پرده کچے عطا فرماتے ہیں جو ختی برعطانہ میں فرماتے اور نہ اس کے علاوہ کسسی اور چیز میہ

نری کس چیزیں نہیں ہوتی عگر اس کومزی بناتی ہے. اور فرمی کوکسی چیزستے نہیں مجین ام آیا عگریہ کہ وہ کس کوعیب دار بنا دیتی ہے اس لیے اگر وہ فرقی امست کی اصلاح اور قوم کے لیے ہاریت اور ایستے بچوں کے لیے قیمے ترببیت اوران کی کمی کی رستگی چاہتے ہیں توانہیں چاہیے کہ وہ طم وبرد ہاری ونرمی سے آراستہ بول ۔ درستگی چاہتے ہیں توانہیں چاہیے کہ وہ طم وبرد ہاری ونرمی سے آراستہ بول ۔

اُس کا مطلب نیہ بی سے کو گربت اور حیاۃ زندگانی کے بیے تبار کرنے کے لیے ہمیشہ علم وبروباری و فرق بی کا داستہ افتیار کرسے بلکہ اس سے مرادیہ ہے کو مربی نجی کی اسلام اور آخس ملاق کی درسگی میں بلا کسی خصہ و تا ترکے اپنے اوپر کنٹرول رکھے، اور اگراس کے نز دیک مسلوت ہی یہ بوکہ اسے نبیہ کی جائے اور افلاق ورست نہ تو اسے چا ہیے کہ اسے مزاد سے میز دیک مسلوت ہی یہ مولی اصلاح نہ ہوجائے اور افلاق ورست نہ موجائی . اور حقیقت یہ ہے کہ جسے حکمت نصیب ہوجائے تواسے بہت بولی کے اور افلاق ورست نہ موجائی . اور حقیقت یہ ہے کہ جسے حکمت نصیب ہوجائے تواسے بہت بولی کو کی کے مطاکر دی گئی ۔ موجائی . اس کا مطالعہ کر لیجے ، آپ کو اسلام میں نصیب کی بحث میں ہم اس سلسلہ میں نصیب کی کام کی سیان بل جائے گا۔

۵ مستولبیت کااحساکس

مرنی کوجن امور کا بخونی اوراک کرلینا چا ہیے اور توجیزی آس سے شعور و و مدان میں جاگزین ہو نا چاہیں ان میں سے یہ موہ ہے کہ وہ بیھے کی ایمانی وکروارکی تربیت اور جہانی و نفسیاتی شخصیت سازی او عقلی و معاشرتی تیاری کی ابنی عظیم و مدواری کومس کرے ۔ یہ ومرواری موس کرنا مربی کو میشیدا ک بات برمجبور کرے گا کہ وہ کمل طور بربیجے کی و کی سے اور اس بنانے کی مسلسل کوشش کرتا ہے ، اور موبی سجمہ لینا چا ہیے کہ اگر وہ بیچے ہے کچھ وقت کے لیے بھی غافل ہوا یااس کی و کی پیمال میں ایک مرتب جمانی کی تو بچہ مربی کو یہ بھی سجمہ لینا چا ہیے کہ اگر وہ بیچے ہے گا ، اور اگر مسلسل غفلت برتی اور تسابل سے کا کیا تو وہ مجدال میں ایک مربی ہوجائے گی ، اور اگر مسلسل غفلت برتی اور تسابل سے کا کیا تو وہ مجدال میں ایک مربی ہوجائے گی ، اور اگر مسلسل غفلت برتی اور تسابل سے کا کیا تو وہ مجدال میں اس موبی کی توجائے گی ، اور اگر مسلسل غفلت برتی اور تسابل سے کا کیا تو وہ مجدال میں اس وقت کی اور اس کا علاج و تربیت بر صلح کے لیے اس کی اصلاح ببدیش کی بوجائے گی ، اور اگر مسلسل خواج کے کہ اور کی میربا ہے کو ایک اس موبی کی اس وقت مربی کو اپنی اس موبی کی ایک اس موبی کی اس می موبی کی میربا ہی کی ایک اس موبی کی ایک میں اس وقت دو جائے گی ، اور کی اس میانی میں موبی کی بیت دربی گی برندا مست موبی کی ایک وہدی ہو کہ کا کی بین ہی برندا کی تعدم دربی کی میربا ہے کہ میربا ہی گی بت دوئر میں اس میانی میں برند کی برندا کی میربا کی کا فرم دار بنایا ہے اور یہ فرم دار کی اس برندا کی اس کی کی برندا کی اس کی تربیت کا فرم دار بنایا ہے اور یہ فرم دار کی ان سب کو تربیت کا فرم دار بنایا ہے اور یہ فرم دار کی ان سب کو تربیت کا فرم دار بنایا ہے اور یہ فرم دار دی ان سب کو تربیت کا فرم دار بنایا ہے اور یہ فرم دار کی ان سب کو تربیت کا فرم دار بنایا ہے دور یہ کی دور کی ان سب کو تربیت کا فرم دار بنایا ہے اور یہ فرم دار کی ان سب کو تربیت کا فرم دار بنایا ہے دور کی دور کی دور کی ان سب کو تربیت کا فرم دار بنایا ہے دور کی دور کی کی میں کی کو کی کو کی کو کی کو کی کی کور کی کی کی کور کی کور کی کی کور کی کی کور کی کور کی کور کی کی کی کور کی کور کی کی کور کی کی کور کی کور کی کی کور کی کی کور کی کور کی کی کور کی کور کی کور کی کور کی کور

ای لیے ہم دیکھتے ٹیں کہ اسلام نے والدین اور مربول سب کو تربیت کا ذمہ دار بنایا ہے اوریہ ذمرداری ان سب پر مکمل طربیقے سے ڈالی ہے ، اوران کو خبردار کیا ہے کہ اللہ تعالیٰ ان سے قیامت سے روز اسس امانت کے بارے میں باز مربسس کرے گاکہ کیا انہول نے یہ امانت ا داکی ہے یا نہیں ؟ اوریہ پہنچا یا تھا؟ اور کیا اس مسئولیت کولوراکیا تھا؟ محترم مرتي صاحبان إمسئوليت سے پورا کرنے يا اس ميں کونا ہی کرنے سے سلسله ميں اسلام نے جو کچھ کہا ہے اس الكيمة عبرات كرسامني بيش كياجا آب التُدتعالى ارشاد فرمات بي ا

الرواصُرْ الهُ لَكَ بِالصَّافِقِ وَاصْطِيرْ عَكَيْهَا مِي،

ا ورفرایا :

ا(يَايُّهَا الَّذِيْنَ أَصُنُوًا قُوْاَ اَنْفُسَكُمُ وَ المَولِينِكُمُ نَارًا )) . التحريم - ٢ نيز فرمايا :

الْفُوَرَتِكَ لَنُسُئِلَنَّهُمْ ٱلْجَمَعِيْنَ ﴿عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُونَ \* ) . الحِرِيرووسرو اور قرمایا ،

(( وَقِيفُ وَهُدُ مُ إِنْهُمُ مُ مُسَدُّ وَلُونَ )) العادات ٢٢ ا ورنبي كريم عليه الصلاة والسلام فرمات بين: « الرجبل داع ومسئول عن رعيته». سنحارى وكمم

((. والمسرأة راعيسة ومستسولةعن رغييتها..)) . بخاری وسکم العلموا أولادكهم وأهليكم الخير وأدبوهم)) . مصنف عبدارزاق وسنن سعيدين نصو (رما نحل والدولد الفضل من أدب

حسن)) . سنن تریذی لاإن الله سأئل كل راع عسا استرعا لاحفظ أم ضيع ،حتى يسأل الرجبل عن أهسل بسيته » . معم ابن مبان

ا ورا چنے گھر والوں کونماز کاحکم دیتے رہیے اورخود میں کے پابندر ہیے۔

اسے ایمان والوبچا وُ اسپنے آپ کو اور اسپنے گھروالوں

سوقسم ہے آپ کے رب کی بہم کوبوچینا ہے ان سب ے جو کچھ وہ کرنے تھے۔

اوران کو ( ذرا ) محمر او ان سے بوچه کچه موگ ر

مرد رکھوالا ہیںے اور اسس سے اس کی رعایا کے بائے۔ میں بازیرسس ہوگی۔

اورعورت رکھوالی ہے اور اس سے اس کی رعایا کے بارسے میں سوال ہوگا۔

اپنی ا ولا د و امل وعیال کوخیرکی تعلیم د و اور انهس با دب

کسی والدسنے کسی بیٹے کواچھے ادب سے 'میادہ بہتر عطيه نهيس ويا به

التدتعالى مركبيان سياس كى رعاياكم بارس مين يوجع گاکرکیا اس نے ان کی مفاقست کی یاضا نَع کردیا جتی که انسان سے اپنے گھروالوں کے بارے میں بھی سوال ہوگا۔

انہذا قرآنِ کریم سے اس حکم اور نبی کریم علی اللہ علیہ و کم کے ان ارشادات کی وجہ سے ہرمومن عقلمند، صاحب بعبیرت<sup>،</sup>

حکیم مرنی پربیلازم ہے کہ وہ اس مسئولیت کو کمل طوبرا وربیری طاقت اور قوی عزم کے ساتھ اواکرے، اور بیا ورکھے کاس فریضے میں اگر کوئی کوتا ہی کی توالٹدکی نا یافنگی کومول سے گا،اور اگراس میں تقصیر ہموئی توجہنم کا عذاب لازم ہوگا،اس سیے کہ قیامت سے روز کی مسئولیت بہبت بڑی،اور حساب نہایت سخت،اور مبولناکی بہت عظیم ہوگی،اور جہنم بول گویا ہموگی کہ:کیاا ورکوئی تھی ہے ؟

مسولیت سے اساس سے سلسلہ میں گفتگو کرتے ہوئے میں یہ چا تباہوں کو مرتی صاحبان سے سامنے مختصرا ہی وہ سازشیں اور منصوبے بیان کر دول ہو مسلمان افرادا ورسلم معاشرے اور مسلمان فاندانوں کو خواب کرنے سے بیے تیا ہے جاتے ہیں۔ تاکہ وہ اپنے معالم میں پوری بھیرت پر ہول ، اور اپنے پھے اور فائدان کی اصلاح سے بیے خوب جد وجد کریں ۔ منصوبول وسازشوں سے میری مراد وہ سازشی قرار دادیں اور منصوب ہیں ہو مہیونی ماسونی ملیبی اور شیوی جالول میں تیاں کے جاتے ہیں جو مہیونی ماسونی ماسی کی مالوں میں تیاں کے جاتے ہیں جن کامقصد امست اسلامیہ سے عقید سے کا خواب کرنا ، اور ال سے لبندا خلاق کا گمراہ کن الحاد کی مالوں اور شراب وجنس سے راستے ، اور شہوات و مبنیات سے بے مہارو آزاد تھیوٹر نے ، اور جذبات انگیز منطام رسے بیسے میں دوڑ نے ، اور اندی تقلید کے ذریعہ خواب کرنا اور بگاڑ نا ہو تا ہے ۔

ان مفدرن کے پہال آزادی وا با سیت کی اس وعوت اوراس عیارانہ جال کاسب سے پہلانشانہ و بدف عوت ہوتی ہے ، اس لیے کوعورت عاطفت و جذبات سے بُر ایک ایسا کمزور ترین عنصر ہے جو باسوچے سمجھے فورًا پروپگنڈے اور فتنہ کی طرف دوٹر بڑتا ہے ، اور عورت اضلاق کے بگاڑ نے کامؤٹر ترین فرلعہ اور براہ راست اٹر ڈا لینے کا شعلہ بچالہ ہے۔

# محترم مرتی صاحبان کے سامنے یہ سازشی منصوب کے بعد دیگیرے واقعات و ہاریخ کے ساتھ ٹی کیے جاتے ہیں:

الف یسشیوی سازشیں

ایک خطرناک سری دستاد پرجس کو کلمة الحق نامے رسامے نے محم منتابیم مطابق اپریل منتائی کے پرہے میں اسلام کے خلاف خطرناک سازش نسے نام کے سے شائع کیا تھا، اس دستا دیز کو کمیونسٹول نے ماسکویس تیار کیا تھا، او مشرق عربی کے ایک مسلمان ملک میں اپنے آلۂ کار ایجنٹول کے لیے چیش کیا تھا، تاکہ وہ است نافذ کریں، اورانہول نے واقعۃ اسے نہایت باریک بینی سے نافذ کرنام بھی شروع کر دیا۔

، یسی ہم آپ کے سلمنے کلمۃ الحق سے اس شیوعی منصوب کا کچھ صفیقل کیے دستے ہیں جواسلا کواس کے اپنے ملک ہی بین ختم کرنے سے لیے تیار کیا گیا تھا۔

## دسّاوىزىمى لكھاسىيە:

اس کے باوجود کہ سویت بنو بین میں کمیونزم پر تقریباً بچاس سال کاعرصہ گزرجیا۔۔۔، اور اس کے باوجود کے ونیاکی سب سے بڑی کمیونسٹ قوت نے اسلام کو سخنت ترین ضربی سگائیں بیک سکین مجر بھی وہ رفقار جوسویت یونین می دنی حرکت برنظرد کھتے ہیں وہ نکھتے ہیں جدیساکہ روسسی مجلہ علم ودین "اپنی جنوری سے قار کی اشاعت میں مکھتا ہے: ہم سوریت بوندین میں مسلمان علاقول میں وخل جلنجول کا سامنا *کر رہے ہیں ، ایس*امعلوم ہوتا ہے کہ لینن کے اسولو<sup>ل</sup>

كوسلمان خون نے اب كك قبول نهيں كيا ہے۔

با وجود دین سے خلاف جنگ کریے نے والی متبعظ و مبدار طاقتول کے اسلام کی شعاعی*ں برابر ہی*یل رہی ہیں ،اور نہا قوت کے ساتھ برطرون میوٹ رہی ہیں،اس لیے کمسلم علا قول میں لا کھول ننی بود سے لوگ اسلام کو قبول کراسے ہیں ا در اس کی تعلیمات کو تصلم کھلا بیان کر رہے ہیں، حالا نکہ کمیونزم سے سربراہ اور و ہاں سے نہیں مفکرین سے سامنے سوت یونمین میں اسلامی علا قول می<sup>ل</sup> اسلام کی بیداری کی خبر کوئی مخفی ا ورتھیبی ہوئی بات نہیں ہے ،ا ور اس جانب کمیونسٹ تقافت سے دائرۃ المعارف میں بیمارست کی گئی ہے کر رحبت لیند ندا بہب میں سب سے طرناک نیربب اسلام ہے۔ اور اسلام اپنی بوری کوششش اس بات سے لیے صرف کررہا ہے کہ وہ ناجائز مناقع نحورول اور جا گیردا رول اور سرمایه داردن کی خدمت کرستکه اور وه ناجائز نفع خوری کی مبرطرح سے املاد کرر باہیے، اور اسلام کا یک جامر قسم کا ترقی و ۔ ''قافت کا خمن ندسہہ ہے،اوراشتراکریت کاسخنت ترین تنمن ہے اور آزا دی سیسندجاعتول کا مقالبہ کرسنے

# دستاویزین لکھاہیے کہ:

"اس منصوبہ میں ریمی وال سے کہ اسلام کی بیخ کئی سے لیے اسلام ہی کوستھیا ربنایا جائے جس سے لیے ہم نے یہ طے

ا - اسلام سے صلیح کی جائے تاکداس پرغلبہ حاصل ہوسیکے، یہ لیے اس غرض سے ہوگی تاکہ ہم غلبہ حاصل کرنے کی گارشی ما كرسكين ا ورعرب قومول كواشة اكيت كى طرف راغب كرسكين .

م ۔ ندہب ودین سے رہنا وَلَ اور دینداَر حکام کی شہریت داغداد کرنا اوران پر استعار صہیونیت کا ایجنٹ ہونے م

ا رہا۔ ۳۔ اشتراکبیت کی تعلیم کوتما )اسکولوں، کالجول، یونیورسٹیوں کے تما اُتعلیم کے شعبول میں عام کردینا، اور اسلام سے

## مزاحمت کرنا ،اوراک کا گھیاؤ کرنا باکہ وہ اسیبی قوت نربن سکے جواشتراکیت سے لیے خطرہ ثابت ہو

### دستاویز میں ہے کہ:

۶۰ د بنی جاعتیں نوا کتنی ہی کمزورکیول نہ ہوان کوملک میں قائم ہونے سے روکنا اور مرقتم کے دینی شعور کوختم کمنے سے بیے نہایت ہومثیاری وبیاری سے متقل کا کرتے رہا ،اور ہر وقعص جو دین کی طرف وعوت دیتا ہوا سے نہایت شدت و قساوت سے بلاکسی جم کے شدید ضرابت بہنجانا نواہ وہ موت یک کیول نہ بہنجا دیں ۔

۱۰۱۳ سب سے باوجود بہلی اس سے غافل نہیں رہایا ہیے کہ معاشرہ سازی بین دین وندہب بڑا نوطرناک کام کر دہا ہے۔ اس سے باوجود بہلی اس سے خافل نہیں رہایا ہے کہ معاشرہ سازی بین دین وندہب بڑا نوطرناک کام کر دہا ہے۔ اس لیے یہ صفوری ہے کہ ہم ہرطرف اور ہر مگر سے اس کام کام اور اس کوشہم بنا بیس اور لوگوں کو اس سے ایسے طریقے سے نفرت دلا میں سے میعنوم نہ ہوکہ ہم اسلام سے دیمن ہیں .

۸۔ ملی مصنفین کی حوصکہ افزائی کرناا وردین، اور دینی شعور، دینی ضمیر، اور مذہبی سربراہی کی مفاحقت اور اسس برحمله کرنے کی انہیں کھلی چیٹی دینا، اور لوگول سے دلول میں بربات جاگزین کرناکہ اسلام کا دوختم ہو چیکا، اور واقعۃ بات ہی ہے اور آج اسلام سے اعمال وافعال میں سے سوائے شمی عباد تول کے جوروزہ نمازجے اور شادی بیا، وطلاق میں اور کوئی چیز باقی نہیں ہے اور برچیزیں بھی عنقریب اشتراکی نمائی کے سائے تھے بیار ڈال دیں گی۔

ب یر دبی بریاب بریستی به پریاب می سر بیست به سرت می سازی می سازی با بی سرت می سرت بریاب بریاب بریاب اس کے کہ اسلامی ۱- لوگول سے درمیان دینی روابط کو مکمل طور سینے تم کر سے اس کی ملکہ اشتراکی رابطہ کو قائم کرنا ،اس لیے کہ اسلامی رابطہ می اشتراکیت سے لیے سب سے بڑا خطرہ سیے۔

الم مساجد وکنیول کوفتم کرنے نہ دین مٹایا جاسکتا ہے اور نہ سمانوں کے دینی روابط خم کئے جاسکتے ہیں اسلے کہ دین فس ضمیر من پوتیدہ ہوتا ہے اور عباوت گاہیں دین کے خارجی مظاہر ہیں سے ایک منظہر وعلامت ہوا کرتی ہیں، اور مقصد تو دی خفیر کافتم کرنا ہے، اور اب حب کہ ہم اشتر کیت کو غلبہ و حکومت اور سربر اہی ولانے میں کامیاب ہو گئے ہیں اور تما ہاں جیزول کو حام کرنے میں کامیاب ہوگئے ہیں ہوالی او کو بھیلا نے، رائج کرنے، اور اس کی طرف وعوت و بینے والی ہیں، اور دین اور اہل دین کامذاتی اڑا نے والی ہیں اور جو صرف علم کی دائی اور ای کو غالب و عبود گردانے والی ہیں شاکل قصے کہانیاں، ڈیا ہے معاضات و تقاریر، اخبار ورسائل اور کی ہیں وغیرہ تو حب ہم اس منصوبے میں کامیاب ہوگئے ہیں تو اب لمانوں کے خمیر و دل ہے دین کا ختم کرنا کوئی مشکل کی نہیں رہا.

اا ۔ دینی شعو ٔ را ورسو جد بوجہ کی مزاحمت کرنا ،اور دینی ہیب راری کوختم کر سنے کے لیے علمی ہداری سے ذریعے اس کامقا بلرکزنا ۔

۱۲ ـ توگول ا ورعوام کواس طرح سے دھوکہ ویناکہ ہم ان سے سلمنے یہ اعلان کریں کہ حضرت عیلی اشتراکی ا ویاشتراکیت

کے امام شخصے، وہ خود فقیریتھے اور کمین خاندان سے تمعے ،اور ان کے بیرد تھی غریب کمین تھے ،اور انہول نے مالدانِس سے جنگ کی دعوت دی تھی یہ

اوریم محد اسلی الله علیه ولم ) سے بارسے ہیں یکہ ہیں گے کہ وہ اشتراکیوں (کینوسٹوں) سے اہم شعے وہ غریب شعے اور عزیب سے اور عزیب ان کی پیروکی تعمی اور انہوں نے دخیرہ اندوزوں مالدا روں ، جاگیروا رول اور سودخوروں سے خلاف جنگ کی اور الن سے خلاف بیا کہ ور سولوں سے بارے ہیں بھی بھی تصویبیش کرنا چاہیے ، اور جہال تک ہوسکے ان سے روح انی تقدس اور معجز ات اور وگی کو بقد المکان ان سے دو کر دینا چاہیے ، اگا ہیں ، اور جہال تک ہوگی جو انہوں نے ہم ان کو عام انسانوں جیسانسان بنا کو پیش کر کھیں ، اور جھی جیس اس مرتبہ وجو ربونسرب لگانے میں آسانی ہوگی جو انہوں نے سے بنا لیا تھا اور الن سے خالی متبعین نے مقر رکر رکھا تھا ۔

ہما۔ تمام دینی قوتول کواشتراکی نظام کے سامنے جھکا دینا اور ان طاقتول کو تدریجاً ان کے موجدوں سے جدا ردینا۔

۱۵ عوام کواشتراکی نعول میں مشغول رکھنا اوران کوسویضے کک فرصت نددینا ،اوران کو فین اوربہادری پر مشتمل اشعار ، وظنی ترانوں ، فوجی معاملات ، جاعتی تنظیموں ، نہبی تقاریر ، پیاوار کی ترقی اور معیشت کے معیار کی بلندی سے وحسدوں میں مبیشہ مشغول رکھنا،اورا قتصادی ناکامی و تا خراور کھوک وافلاس و بھاری کی ذمہ داری استعار و رجعت بہندی اور مبیونیت و جاگیروارٹی اور دنی و ندہبی رہاؤل کی بڑوانا۔

۱۶- دینی وروحانی اقدار کویه که به رته وبالا کرناکه آن میں فلال فلال عیوب و نقصانات میں اوران کی وجہ سے ترقی پیند قوتیں سوماتی ہیں .

# دستاویزمین لکھاہیے کہ:

۱۷۔ صبح وشام ، دات ودن ہروقت انقلاب کا نعبرہ نگانا اور بیاعلان کرناکدانقلاب ہی عوام کوان کے رجعت بہند حکا کے سے پہلا تو اخری نجات و منہدہ ہے۔ اوراشتراکیبت کے لیے یہ نعبرہ لگاناکداشتراکییت ہی وہ باغ اور حنبت ہے

جسس کامظلوم عوام ہے وعدہ کیا گیا ہے۔

۱۸ سالحادی انسکار کونشر کرنا بلکه سراس فکر کوعاً کرناحب سے دینی شعورودینی عقیدہ کمزور بہوتا ہو،اور سراسلامی مملکت میں رجالِ دین برعدم اعتمادیدا ہو۔

۱۹ دین کوختم کرنے سے سیے دین ہی سے کام لینے میں کوئی حرج ومضائقہ نہیں ہے ، اوراشتراکی سربرا ہوں کیلئے لوگوں کو دصوکہ و بینے اورگراہ کرنے سے بیے بعض اجہاعی و دنی فرائض انجام دسینے میں کوئی مضالعۃ نہیں ہے بشرطرکیہ یہ کام زیادہ طویل مرت تک نہ ہوائل لیے کہ انقلائی طاقتول کو وہ جیز ظاہر نہیں کرنا جا ہیے جوان سے باطن میں مخفی نہ مہومگرا یک خاص وقت تک سے لیے ، اور میر ضروری ہے کہ وقت مختصر ہوا ور داستہ بھی مختصر تاکہ کاری صرب لگائی جاسکے ،ائل کے بالا کام تمام دین اقدادا ور قدیم معمولات کوئی کرنا ہے ۔

۶۰ بی اعلان کرنا کہ اشتراکی نیم وین پڑا میان رکھتے ہیں زکر ایسے کھوٹے دین پڑس کولوگ جہالت کی وجہ سے اپنا لیتے ہیں ، اور نیم دین اشتراکیت ہی ہے۔ اور کھوٹا دین وہ انیم ہیے جوقوم کو اس لیے نشہ میں مست کر دیتی ہے تاکہ وہ ایک مخصوص طبقہ کی نعدمت کریں اور اس سے بیم چے ہیں ، اور درولیٹول سے تمام عیوب اور دین سے علق رکھنے والول کی تمام غلطیول کو دین سے محق کر دینا ، اور الحاد کی تر دیج کرنا اور یہ ثابت کرناکہ دین نمرا فات کا نام ہے۔ اور نمرا فات کھوٹے دینے

يس ميي بوئى بن نكسيح دين مي جداشة اكيت كما جا آبد

۱۱-۱۳ اس اسلام کانام لینائبس کی تا پیداشتر کریت اپنے مقصد کو حاصل کرنے کے لیے کرتی ہے، اور اپنے مقاصد کو حاصل کرنے کے لیے اسے دینِ میسے اور دینِ انقلاب اور ترقی لپند دین اور تنقبل کا دین قرار دیتی ہے، یہ اس وقت تک کرتے دیم اس اس کر اسے دین مصوصیات وامتیا ذاست کرتے دیم اس اپنی نصوصیات وامتیا ذاست سے عادی ذکر دیا جائے تاکہ عرف اس کانام باقی رہ جائے، اس لیے کہ سوائے بعض عربول سے اور باقی عرب اپنی فطر سے سے عادی ذکر دیا جائے تاکہ عرف اس کانام کانام

### دستاويزىي لكھايىپەكە:

۲۶- ہم نے لین کی تعالیم و وسیت کو قبول کرلیا ہے کہ اشتراکی جاعت دین کی سخت ترین شمن ہو اوراسلا کے مرنے کے بعد جنت کا ہوتھ و رہیں گئی ہوا ہے اس کے اس عقیہ سے کا مقابلہ اس عملی اشتراکیت سے کیا جائے جس کے ذرایعہ معاشرہ میں عدل وانصاف قائم ہوتا ہے اور میز ظاہر کہا جائے کہ در حقیقت جنت بہت ہورا وراگر کسی وقت دین سے صلح کرنا پڑھے اور اس کی تائید کی ضرورت پڑھا ئے تو میں محتموں سے وقت سے لیے ہورا ورتائید بہت احتیاط سے کی

جائے ،اورساتھ ساتھ اس ائیدوسلے کو دین کی بیخ کنی سے لیے استعال کیاجائے۔

۱۹۵۰ اسلام کا نوب استام کیا جائے سس کا پہلا مقصد ہے ہے کہ اسلام کو اسلام کی بیخ کئی کے بیے استعمال کیا جائے اور دوسرامقصد ہے ہے کہ اسلام کی قومول ہیں والل ہونے لیے وسیلہ و فریعیہ نبایا جائے اور دوسرامقصد ہے ہے کہ اسلام کے نام کو عالم اسلامی کی قومول ہیں والل ہونے سے لیے وسیلہ و فریعین ہم نے جس طریقے کو اور باوجود اس سے کہ عالم عربی واسلامی ہیں رجعت پہند طاقتیں نہایت متنبہ و بدار ہیں کہ میں افتیار کیا ہے اس کے ذریعہ ہے طاقتیں کم دور پر جائیں گی حتی کہ وہ انہیں ان سے اجزا پر کید بیداور حفاظ مت سے عناصر سے ہی عادی کردے گا ور وقت گزید نے کے ساتھ ساتھ وہ ہی نیست و نابود ہو جائیں گ

۱۳۷ اسلامی مفاہیم کی تقییح اور اس کو دوسرے اجزاء سے پاک صاف کرنے کے نام سے ۔ اسلام ہی کا نام استعال کرے ہم اسلام کوختم کردیں گے اور اس کواشتر کرسیت سے برل ڈوالیں گے۔

وستاويزين برسيخطرناك داربين جنائجه اس ميل لكهايجكه:

تما می طوع فی بی ہما ہے انصاروا عوان بولی محنت سے کام کر ہے ہیں ، اور وہ مختف فرارتوں اور محکومت کے اداروں اور کمپنیوں اور سیمومت اور غیر محکومت کے اداروں و کمپنیوں میں کلیدی مناصب اور سرمراہی سے عہدوں تک پہنچ گئے ہیں ، اور ہما ری تعلیمات سے مطابق وہ تسلط و فلبہ جاسل کر ہے ہیں ہا ہے بیت سلط انفادی ہی کیوں نہ ہو بہال ان کا اِن مناصب و عبدوں تک بہنچ جانا ہی کامیا ہی کی علامت ہے صبیا کہ بیض افراد سے بیض سے ملئے سے اجماعی الاقادی سے ملئے سے اجماعی القادی کے ماتھ ساتھ ہما رسے ان معا و نین کی تعداد برخصتی جارہی ہوت ہو انقلابی حرکت سے لیے مناسب فیضا پیدا کرنے والے فعال ترین مناصب برفائز ہیں ۔ اور ہم نے ان کو جو تعلیمات دی انقلابی حرکت سے میں انہوں نے مناسب فیضا پیدا کرنے والے فعال ترین مناصب برفائز ہیں ۔ اس ربعت بہندہ مام نظام کے انسان ہوں نے این کو کی شہر ہونے میں کوئی شک و شہرات ہما ہے اور اس کے خوال سے اور اس کے خوال سے اور اس کے خوال سے دیا کہ میں ہونے ہما ہے ہما ہے ان کی طوف سے دیا ہوں گئے اور ان کی طوف سے دیا کی طرف سے کا دیا ہوں گئے دان کے خوال کے ادر اس کے خوال کی اور میں کا کمی کرتے ہوں گے دان کی طرف کسی کا خیال جائے گا، اس لیے کہ وہ ان مسؤل و فرمہ دار لوگوں کی اور میں کا کمی کرتے ہوں گے دان کے خوال کے دان کے خوال کے دان کے خوال کی کرتے ہوں گئے دان کی طرف کسی کا خیال جائے گا، اس لیے کہ وہ ان مسئول و فرمہ دار لوگوں کی اور میں کام کرتے ہوں گئے ۔ اب

محترم مرتی صاحبان کیا آپ نے اب وہ جال اورمنصوبے پہان لیے توخطز ہاک ڈمن کمیونزم نے گمراہ کرسنے اورا لحاد سے عام کرنے نے اور سلم معاشرول سے سلمانول واسلام کی بیخ کئی سے لیے بچیلائے اور بچھائے بھوئے ہیں ؟

اورکیاآپ به سمجه گئی کشیوعیت به چاستی به که ده اسلام کا عقیده مبراس مسلمان کے دل سے بحال پھینکے بو یرکہا ہے کہ میرارب اللہ مبل ش ند، اور میرے نبی محصلی الله علیه وسلم، اور میرا دین اسلام ہے تاکہ اس کی ملکہ کفروضلال اور کے دستاویز کی عیارات عباس ممود عقاد اور احمد عبدالغفور عطار کی کتاب" استیوعیة ولاسلام کے (ص ۱۲۳) سے لگئی ہیں ،

#### اسلام سے خروج کا عقیدہ لے ہے:

چاہستے پیل کہ الٹرکی روشنی اپنے منہ سے بچھا وی اور الٹراپنی روشی ہوری کرکے رہے گاچاہے کا فسو برا مائیں۔ (( يُرِنِيهُ وْنَ أَنْ يُطْفِئُوا نُوْرَ اللهِ بِالْفُواهِمِهُمْ وَ يَالَجُ اللهُ اللهِ أَنْ يُنْتِمَ نُوْرَةً وَلَوْكُوهَ الْكُفِرُونَ ... ). التوبر ٢٢٠

ب\_صلیبیسازشیں

پہلی صلیمی بنگیں جو دوصدلول تک جاری رہیں ان ہیں اسلام کی پنے کئی کرنے میں ناکامی سے بعد عیدائیول نے بہت سوئے سمحد کر قدم اٹھایا، اور نہایت عیاری سے منصوبہ تیار کیا، اور اسلام اور امتریت سمحد کر قدم اٹھایا، اور نہایت عیاری سے منصوبہ تیار کیا، اور اسلام اور امتریت سمحد کرتے ہے لیے نہایت گھناؤنی سازش تیاری، ان سے تدریجی منصوبہ درج ذیل شھے ،

ا و کا ۔ خلافت اسلامیہ جودولت عثمانیہ کی مکل میں مُوجود تھی اس کوتم کر سے حکومت اسلامیہ کوئم کرنا ، اور عیسائیت ہوائٹریز، یونانیول ، المیول اور فرانسیسیول کی شکل میں موجود تھی اس نے دولت شانیہ سے وصلے پن اور کمزوری اور آئیس سے انتلافات سے فائدہ اسھایا اور خونخوار بھیرائے ہے کہ طرح اپنے عظیم شکر سے ساتھ بڑو حالی کر سے ترکی کی تما مرزمین برقبعنہ کرلیا ہس میں دارالخلافہ استبول بھی شامل ہے ، اور حب دونول متحارب کر وہول سے درمیان صلے سے بات چیت کرنے سے سے برائے بات چیت کرنے سے بیاوز ان کانفرنس میں مرزمین ترکی سے اس وقت تک بہیں جائیں گے جب یک کرمندہ والی شروط نافذ نہیں ہوجائیں :

الف - نملافت اسلامیه کاخاتمه اورخلیفه کوترگی سے ملک بدر کرنا، اور اس کی جائیدا د اور د ولت کا ضبط کرنا۔ ب - ترکی یدمعا بدہ کرسے کہ وہ ہراس جاعت کوختم کر دسے گی جوخلافت سے انصب رسے نربر اِثر و زیرِ

قیادت ہے۔

ج ۔ ترک ایناتعلق اسلام سے توڑ ہے۔

کے ۔ ترکی اپنے کیے اس کوستور کے بجائے جواسائی سے لیا گیا ہے ایک دوسرا دستور تیا کر سے ر ان سے علاوہ شرعی مدالتول ، دبنی مارس ، اوقا ف اورمیراث سے احکام کا خاتمہ ، اذان کا ترکی زبان میں دینا ، عربی مروف کو لامینی مروف سے بدل اور حبعہ سے بجائے اتوار کوچیٹی کرنا بھی ان کی شروط میں دانول تھا، اور بیسب بچورٹ لامیکل ہوگیا۔

خائن آباترک نے ان شرو کا کونا فذکیا ،اور انگریزا وران سے طیغول نے ترک کی آزادی واستقلال کوسلیم کرلیا اور نملافت اسلامیہ سے خاتمے جکومت کولا دینی مملکت بنانے اور اسلام سے جنگ سے سلسلہ میں آباترک کی کوششوں

اورجب برطانيه كاوزير بنارحه كرزون برطالوى بارتهنده مين ان واقعات كوبيان كريه ني كطرابواجوتركى ميمين آئے تھے. توبعض انگریزممبران نے کرزون سے خیت سوالات سمیے ،اوراس پرتعجب کیاکہ برطانیہ سے ترکی کی آذا دی واستقلال كوكيونكرسسليم كرايا حالانكه يمكن بيدكه تركى ابنے ساتھ اسلامى ممالك كو ملاكرا بل مغرب برحله كر دے، تو كرزون نے ان سے جواب میں يہ كہا: ہم نے تركی كواچھی طرح سنے تم كرديا ہے ، آج سے بعد وہ معی اپنے ياؤل پر كھوسے نہیں ہوسیکتے جسس کی وجب یہ ہے کہ اس کی امسل طاقت وقوت جودو جیزول کی شکل میں موجود تھی نعینی اسسلام ا ورخلافت ان دونول کوہم نے ختم کر دیا ہے ۔ بیٹن کرتمام انگریز ممبران نے تالیال بجائیں ا وربی بجسٹے تم ہوکئی <sup>کی</sup> تانباً وقرآن كريم كوختم اورنيست و نابود كرنا، اس يدكه ميسائيت يتحصتى بدكر قرآن كريم مى مسلانول كى قوت ، عزی*ت عظمیت اور قوت و ثقافت کی طرف لوشنے کا اساسی مرکز ومصدہہے۔* ا ـ گولٹوسٹون نے برطانوی یارلیمنٹ میں لوگول کے سامنے قرآن کریم ہاتھ میں اٹھاکر یہ کہا: جب كسمسلمانول سے باتھول میں یہ قرآن موجو دہے اس وقت بک لیورپ کو پمشسرق پرغلبہ حاصل ہوسكتاہے ورزيى يورب امن والمينان سيرره سكما بسطيه ٧ ـ اور عياني مبلغ وليم حي فورد بالكراف كرا ــــ :

جب قرآن کریم اورمکه مدینه عرب ملک سے ختم کر دیا جائے گا تو اس وقت بمارے بیے بیمکن بروگاکه بم عربول منتخب کومغربی تقافت میں تدریجاً ایکے شرصتے ہوئے دیکھیں اور محدر صلی التدعلیہ وسلم ) اور ان کی کتاب سے دُور رکھیں۔ ۳۔ اور ماسدترین مبلغ کیملی کہا ہے:

بهيس جابيبي كمريم قرآن مسكام نيس قرآن اسلام كيضلا ف استعال كياجان والامفيد ترين بتصيار سيدة تاكتم اس کومکل طور سے ختم کردیں، ہمارے یہ بینٹر ری ہے کہ ہم سلمانوں سے سامنے یہ بیان کریں کہ قرآن میں جو میسے بات ہے دہ کوئی نئی چیزنہیں ،اور جونئی چیز ہے وہ صیحے نہیں ہے ہے۔ ہم ۔ اور الجزائر کا فرانسیسی حاکم الجزائر پر قبضہ کے سوسال کمل ہونے پرکہا ہے :

ہمیں چاہیے کہ ہم عربی قرآن کواُن کے وجو دا ور درمیان سے کال دیں، ا ورعربی زبان کوان کی زمانوں سے کھینچ لیں،

ك ملاحظة بوكماب الارض والمشعب \_\_\_ ( ١-١١٨) اور كماب كيف برمست الخلافة (ص - ١٩٠) -

على ملاحفه بوكماب الاسلام على مفترق الطرق رص-٢٩)-

<sup>&</sup>lt;u> ک</u>ه جنرورالبسیل (ص – ۲۰۱) -

مهمه التسشيروالاستعار (ص - ۴۸)

#### "اكدان برغلبه حاصل كرسكير<sup>4</sup>

یہ بات فرانس میں بین آنے والے ایک عجیب حادثہ کی وجہسے امھری ،اور واقعہ یہ ہے کہ الجزائری نوجوانوں کے نفوسس اور دلول سے قرآن کریختم کرنے سے ہے۔ ایک عملی تجربہ کیا گیا ،اور وہ اس طرح کہ دس مسلمال الجزائری نوکیول کا انتخاب کیا گیا ،اور فوہ اس طرح کہ دس مسلمال الجزائری نوکیول کا انتخاب کیا گیا ،اور فرانسیں حکومت نے انہیں فرانسیسی اسکولول اور کا لجول میں دامل کیا ،انہیں فرانسیسی عور تول کی طرح اور ان میں تہذیب کی گھیں کی ،اور انہیں فرانسیسی زبان سکھائی .اور وہ بوری کی پوری فرانسیسی عور تول کی طرح مرکشیں ۔

ان پرگیارہ سال ممنت کرنے سے بعد فرانس نے ان کے فارخ انتھیل ہونے پر ایک شاندار محلس منعقد کی اور اس بروگیارہ سال ممنت کرنے ہوئے ہوئی توا چا کہ ان سب کے اور اس پروگرام میں وزرار مفکرین اورا خیار نوسیوں کو بلایاگیا ، جب اس پارٹی کی ابتدار ہوئی توا چا کہ ان سب کے سامنے الجزائر کی یہ نوجوان لڑکیاں ایسنے اسلامی الجزائری لباس میں رونما ہوئیں .

اس پرفرانسیں اخبارات وجرا کہ میں ایک طوفان بر پا ہوگیا اورانہوں نے پوچھاکہ فرانس نے الجزائر ہیں ایک سواٹھائمیں سال گزارنے کے بعد بھی کیا کیا ہے ؟!!

اس پرفرانسیسی مقبونند جات کے وزیر لاگوسٹ نے کہاکہ میں کیا کروں اس لیے کہ قرآن فرانس سے بہت 'ریاو ہ لاقتی ہے کیے

. ثالثًا :مسلانوں سے اسلامی فکر کا فاتمہ کرنا اور خدا سے ان کے تعلق کو نقطع کر دینا۔

تاکہ وہ اسلامی نظام سے ازاد ہو جائیں اور الحاد و آزادی واباحیت کے راشتے پرچلیں اور وہ اس طرح سے اسلام سے عاری ہوجائیں گے۔

ا۔ مبشرین کی القدل نامی کانفرنس منعقدہ کے اللہ میں جمعیات سے سربراہ ہموئیل زومر کہتے ہیں کہ ؛
مسیحیت کے بر پرچاد سے لیے آپ کو سی حکومتول نے مسلمانوں کے ملکول میں کام کرنے سے لیے نتخب کیا ہے وہ نیہ ہیں ہے کہ مسانوں کو مسیحیت میں وہ نی کہا جائے اس لیے کہ یہ تواان کے لیے ہوایت کا ذرائعہ اوراعزاز واکوام ہے اسپ کی ذمہ داری یہ ہے کہ آپ لوگ مسانوں کو اسلام نے کال والیں ، تاکہ مسلمان ایک ایس مطلوق بن جائیل جن کا دینہ ہے کوئی تعلق نہ ہو جب کا تیجہ یہ ہوگاکہ ان کا ان اخلاق جسنے سے کوئی راج نہیں رہے گا جن برقو میں ونیاوی حیا کے لیے اعتماد کیا کرتی میں ، اور آپ اپنی اس ترجیا کے اور اس مالک ہیں استعاری فتح سے ہراول تھ بی جائی کو قبول کو اس بات برآ مادہ کر بیکے ہول کے کہ دو اس راستہ پرجیلئے کوقبول بن جائیں گے ، اور آپ تمام اسلامی ممالک میں تمام عقول کو اس بات برآ مادہ کر بیکے ہول کے کہ دو اس راستہ پرجیلئے کوقبول

له مبلدانمنار عدد - 9 - 11 - ١٩٧٣ -

ك خيارالايام عدد . ١٩٩٠ . ١٩٩١ر

كركين من كى آب نے كوشش كى ب اور وہ ب ملان كواسلام سے كال دنيا۔

آپ نے مسلانوں کے دیاریں اسی پود تیار کرلی ہے جوالتہ کے تعلق سے آاشنا ہے، اور اس تعلق کوجانا ہجی ہیں باہتی اور آپ نے مسلان کو اسلامی سے باہتی اور اس کوسیجیت ہیں وال نہیں کیا تیس کا اثریہ ہوگا کہ اسلامی نئی پود بائکل اس کے مطابق ہوگی جو استعار عالیہ اسے کہ استظیم الشان کامول کی کوئی پرواہ نہ ہوگی . وہ راصت بہند وسست و کابل ہوگی ، اور دنیا ہیں اس کامٹم نظرا و مقصود ومطلوب عرف سہوات وملذات ہوں گے ، اگر وہ تعلیم عاسل کرے گاتو شہوات کے لیے ۔ وہ ہر جیز کو شہوت ہیں کے لیے ۔ وہ ہر جیز کو شہوت ہیں کے لیے قربال کرنے گا۔

٢- زويمري كتاب الغارة على العالم الاسلامي (عالم اسلامي برحير ها في) ين مكه السيح كه و

مسیحیت گومغرفی نقافت کے مقابلہ پر دوطرح کی برتری حانسل ہے: ایک برتری تخریب کی ،اور دومری برتری تعمیر کی تعمیر سے ہماری مرادیہ ہے کہ اگر مکن ہو تومسلمان کونھارتی وعیسائی بنادیا جائے تاکہ وہ اپنی قوم سے خلاف مغربی ثقافت کا ساتھ دیسے یہ

۳۰ مبلغ تکلی کتیا ہے کہ: بمیں چاہیے کہم مغربی طرز سے لادنی اسکولوں سے کھوسلنے کی بمت افزائی کریں اس سے مدبہ بہت سے کمانوں نے مغربی اسکولوں وغیرہ کی کتابیں پڑھیں اوراجنبی غیر کمکی زبانوں کوسیکھا تواسل کا اورقرآن سے بارسے میں ان کا عتقا دمتنرلزل بڑگیا ہے۔

والعیا : سلمانول کی وحدت کوختم کرنا : اکدسلمان کمزورونسلی اوربے قوت بے عزت وبے سہادا ہوجائیں .

۱ ۔ بادری سیمون کہا ہے کہ :عربی اسلامی اتحا دینے اسلامی ممالک وسلمان قومول کی آرزوک کومتحدوجمع کرر کھا ہے ، اور میسائیت کی تبلیغ اس وحدت کوبارہ بارہ کرنے اور ہے ، اور میسائیت کی تبلیغ اس وحدت کوبارہ بارہ کرنے اور اس کی شال وشوکت میم کرنے کا بہت بڑا اور اہم عالی ہے اس لیے یہ صوری ہے کہ ہم سیمیت سے ذریعے مسلمانول کی توجہ اسلامی وحدت سے ہٹا دیں ہے ۔

، مبلغ لارسس براؤن کہا ہے کہ حبب سمان عربی شہنتا ئیت کے سایہ تلے جمع ہوجا مگن گے تومیمکن ہوجائیگا کہ وہ عالم کے لیے موحب لعنت اور خطرہ بن جائیں . اور بیھی ممکن ہے کہ وہ عالم کے لیے نعمین بن جائیں ، لکین اگر وہ

له مدورالبالار (ص- ٢٠٥)-

ته الغارة على العالم الأسلامي (ص- ١١ ، ١٠

تك التبشيروالاستعار (ص مرم) م

یمی کیف بدمست الخلافة دص ر ۱۹۰.

محوا مے محوا مے اور متفرق موقعم رہے تو محبروہ ہے دران و بے انتیر ہول کے لیے

ہ سے ایک ایک بہت بڑی یورٹی کانفرس منعقد ہجوئی جسس میں برطانوی وزیرِ نیا رجہ کی مسربرا ہی ہی یورپی سیت دانول اورمفکرین کی ایک برلمی جاعبت شہرکے شعی اس میں وزیرنیا رجہ نے افتیا می تقریر میں کہا :

" یو لی ثقافت فناروزوال کی طروب ماک سے ،ہمارا فرض ہے کتم اس کا نفرس میں اثیا موٹروسیلہ وسبب ہلائل کریں جو ہماری ثقافت کوزوال سے ہیا ہے ؟

کانفرنس ہیں ایک ماہ کہ بیش ومناقشات ہوتے رہے اور شرکا، نے ان نارجی خطارت کوپیش کیا جوروہزدال مغربی ثقافت سے خاتمہ کا ذریعہ بن سکتے ہیں، چنانچہ الن سب نے مکوس کیا کہ مسلمانوں کا وجود بور بہ سے لیے سب سے برط خطرہ ہے۔ اس لیے اس کا نفرنس میں یہ طے کیا گیا کہ کوئی الیا طاقیہ و تدبیر اختیار کی جائے (اور اس سے لیے تما) قوت مرف کردی جائے اکا مشرق اوسط میں موجود مکومتول میں سی شتم کا اتحاد وا تفاق نہ ہوسکے، اس لیے کم شرق اوسط میں موجود مکومتول میں سی مسلمانوں کا اتحاد وا تفاق نہ ہوسکے، اس لیے کم شرق اوسط کے مسلمانوں کا اتحاد ہی یورپ سے متعبل کے لیے خطرہ ثابت ہوسکتا ہے۔

اخیر پس انہوں نے بیسطے کیا کہ نہرسو مُنزسے مشکر قبی ہیں ایک اسی مغربی میہ ودی قومیت کو پدا کیا جائے جو عرب اورمسلمانوں کی شمن ہو ناکدمسلمان متفرق ونتشر ہیں ،اوراس طرح سے برطانیہ نے اس عالمی مہیونیت سے ساتھ تعاون واتحا دکی نبیاد رکھ دی جونسطین ہیں ایک بہودی میکومت سے قیام کی وعوسے دارتھی ہیں

خیاهسگا: مسلمان عورت کوبگار آبس کا طرقیہ یہ بوکہ عورت کی آزادی کے سلسلہ میں بوجاعیں کا کریں ان کا نوب خیال رکھاجائے۔ اور عورت کے تقوق کے سلسلہ میں گرماگرم بخیس کی جائیں، اور اس کومرد کے مساوی قرار دیا جائے، اور اسلامی نظام میں کئی بیوبول کے رکھنے اور طلاق وینے کی اجازت کی مخالفت کی جائے، اور اس مب کامقصد شہبات کا پیدا کرنا اور یہ تبلانا ہوکہ اسلامی شریعیت اس دور سے بیدا کئے جائیں ممل بہ ہمیں، اور اس میں طرح طرح کے شکوک وشبہات پیدا کیے جائیں مسیحیت کی تبلیغ کی ذمر دار جامت کے مسربراہ یا دری زوکمر نے آج کا عالم اسلامی سے نام سے ایک رسالہ مکھنے۔ سات کی مالہ اسلامی ہے نام سے ایک رسالہ مکھنے۔ اس نے مکھنا ہے کہ:

تُوصِدُرِمِبنی کوئی عقیدہ آج بھک اس پر اتنی عنی کے ساتھ کاربند نہیں جتنا دینِ اسلام اس پڑکاربندسید، جوالیت یا اورا فرلقیہ جیسے وسیت علاقول میں چھاگیا ہے۔ اور دوسوملین افراد میں آل نے ایسے عقیدے، شریعیت اور رسم و رواج کو بھیلا دیاہے اور لفت عربی سے ان کا تعلق وارتباط نہایت میم کردیا ہے۔ چنا بچہ اب وہ ایسے بن گئے ہیں جیسے کہ مقعم بہاڑ پر تربرتہ آثارِ قدیمیریا عمارت کے ٹوٹے ہوئے احسن ایاوہ بہاڑول کے اس سلسلہ کی طرح ہیں جو با دلول سے

مے جدورالبلاء (ص - ۲۰۰۰) -

سكه المؤامرة ومعركة المصير (ص - ٢٥).

محلار ہا ہوا ور آسمان تک پہنچے رہیے ہول، اور ان کی چومیاں توحید سے نورسے منور مہوں ، اور اس سے شیبی علاقے تعدد از واج اورعورت سمانحطاط مين مست بيليه

بهراس شمن اسلم نے اپناکل مبلغین سے بیت کوال نصیحت نیچم کیا کہ انہیں مالیس نہیں ہونا چاہیے، اس لیے کہ عورت کی آزادی کاکیٹرہ اسلامی معاشرہ کی ہٹری کو کھوکھلا کر دسے گا۔ چنانچہ اس نے کہا کہ: مبشرین کو<mark>جا ہیے</mark> کاگر ومسلمانول میں اپنی تبلیغ کانتیجه کم زوراو رضعیف پائی تواس سے مایوس نه بول ، اس لیے کہ پیحقیق شدہ بات سے کہ مسلمانول کے دلول میں بورنی علوم اورعورت کی آزادی کی جانب بہت زیادہ میلان پیرا ہوگیا ہے تیہ ا ورسشهورفرالسیسی کاتئب"مسیوآی*ن لامی شنے ایک فرانسیسی مجله "العالمین کی ہشمبران<sup>9</sup>ایرکی اشاعست میں اسلام* 

کی بیخ کنی سے لیے یہ خطرناک سازش نشرک ہے۔

اس نے صاف الفاظ میں کہا ہے کے مسلمانول سے بجول کی تربیت کا طریقیہ نتوا ہ اس کا وہ اٹرکیول نہ موجوم نے بای کیا ہے بیکن تراکیول کوراہباؤل کے اسکولول میں تربیت دینے سے ہمارا حقیقی مقصدمہبت زیادہ پورا ہوگا، اور جسس مقید کے لیے ہم کوشش کررہے ہیں اس تک ہم بہبت عبد پہنچ جا بٹن سے، بلکہ ہیں توبہ کہا ہول کہ لوکیول کوا<sup>س</sup> طریقے سے علیم دینا ہی وہ منفرد طریقیہ ہے ہی سے مم اسلام کومسلمانول سے ہاتھوں ہی سے تم کرسکتے ہیں۔ اِ ورمیشہ واکن میلیگال کہتی ہے: ہم ا*س حد تک کامیاب ہو گئے ہیں کہم نیے* قاہرہ کے *لوکیوں کے کا کیم میں* ایس ار کوکیول کواکٹھا کرلیا ہے جن سے والدین باشا اور بک ہیں، قاہرہ کے علاوہ کوئی ایسی عبر موجود نہیں ہے جہال ہمارے یے برمکن ہوکہ ہم وبال مسلمان لوکیول کی اتنی بوی تعداد کوسیجی اثرات سے ماتحت جمع کرسکیں ، بکریوں کہا چا ہیے کاس اسکول کے داستہ سے زیادہ کوئی ایسامخقر استہ نہیں سے اسلام کے قلعے کویاش یاش کیا جاسکے تھے . ممترم مربی معاحبان!کیاآپ نے عیسائیوں کی ان گندی سازشول ومنصوبوں میں سیعض کوبہجان لیا جن سے جال کووہ ہمارے نوجوان لڑکوں اور لوکیوں کی نفوس سے اسلای عقیدے سے مشافے اور ان سے اور اسلام کے ورمیان رابطه ولعلق كوختم كرسن كسيد بيمارسي ي

کیا آپ 'نے برجان لِیاکدان کا اصل مقصدعام اسلام کی وصریت ِاسلامیہ کو بارہ کرنا ہے تاکیس لمانوں سے البين مطلوبه مقاصده المسل كرسكيس اورابني بياس بجعاسكيس ؟

كياآب نے يہ جان لياكدان كاسب سے برا امقعند لمان معاشرہ كوبگاڑنا و نواب كرنا ہے، تاكداك كے تمام ا فراد لرا کے اور لوکیا گاناہ گار آزادی کی تعبی اور برکروار ابا حیبت سے میدانوں میں سرگردان ومستاندواران سے دوسشس

له متاب الغارة على العالم الإمسادمي (ص ١٣٣). المله كتاب الغارة على العالم الاسلامي (ص. ١٠٠) .

سشص ملیں؟

۔ اگرآپ نے یہ پہان لیا ہے تو بھرآپ انی اس ذمرداری کاابھی طرح نے اندازہ کر پیجے ہوا لٹدنے آپ پر ڈالی ہے، تاکہ آپ میمے طریقے سے اس کوبوراکٹرکیس، اورانجام کاریس ایسے بیھے کی ترمبت اورنما ندان کی اصلاح میں اس سے آگی ترب تمرات مانسل کرسکیں.

جے \_ بیمودست اور ماسونیت سے منصوبے وسابشیں:

سیہود پرالٹدکی تعنت ہویہ حیلہ ومحرسے مختف طریقے انتیار کرتے رہتے ہیں ٹاکہ اپنی اغراض وخوا بڑات کے مطابق رہے زہین پرتسان کے مطابق رہے اپنی معروب کے معالم کریں اور تما عالم پر اپنی حکومت کا فہنڈا گاڑ دیں اور انہول نے اپنے منصوبول کو کامیاب کرسنے کے اپنے سامنے دو نبیادی ہوٹ رکھے ہیں : کرسنے کے لیے اپنے سامنے دو نبیادی ہوٹ رکھے ہیں :

پہلا ہرف : قومول کو محرفیہ ہے تحرفیہ ہے کرنا اور تعبض کو تعبض کے خلاف مجوز کا نااوران سے درمیان حنگیس کھڑی کرنا اور ان قومول میں فتنول کو ہوا دینا .

دوسا ہدف: قومول کے عقا ئد نزاب کرنا .اوران کے افلاق اور نظام اور دنی دوق کو خراب کرنا.اورانہیں اللہ سے راستے سے دو کرنا ۔

اس سب کاالسل مقصد پر سے کہ یہ قویم اپنی قوت بخزت وکرامت اوران کے عوال وا سباب کو کھو بیٹھیں تاکہ ہمیشہ ہمیشہ سے کے بیے بہود کے فود اور مائمتی ہیں آجا بیش ، تاکسی بھی قوم کا زکوئی مقام ہوا ور زیام میں کوئی طاقت وقوت ان بیرود یوں سنے تومول کو بحرط ہے کے سے ایک منصوبہ ان بیرود یوں سنے وہول کو بحرط ہے کے سے ایک منصوبہ سری دور بردہ ) جا متول اور جمعیتول کا قیام بھی ہے۔ اور غالباً ان تمام جمعیات اور جماعتول ہیں سب سے اہم اور جو لی کی جماعت " الجمعیة الما سونیة " ہے۔

اســـتاذعبدالرمئن مبنكرانچى سمّاب" سكائدىيبودية " ص<sup>119</sup> ير <u>تكھتے ہيں :</u>

اس جمعیت (مبس کے اغراض ومقاصہ نہایت رازداری کے ساتھ نفی کے جاتے ہیں) کی تاریخ نے یہ بات نابت کردی ہے کہ یہ ان ہین الاقوامی سری جمعیات ہیں سب سے خطرناک جماعت ہے ہیں نے امتوں اور توموں کی اریخ میں نہا ہیت خطرناک کردا را دا سکیے ہیں، اور حبس نے بہت سے قبیلوں سے انجام پر بالواسطہ بہت بڑا انہ چھوا ہے ، اور عالم کے بہت سے ممالک کی سیاست ہیاس نے اس طرح کی تحومت کی ہے کہ ان مکومتول کو یہ بھی معلوم نہ مواکہ وہ اس یہ ودی سازش کا نشکا رموئی میں جوان میں ان ماسونی مجانس و فعلول کی وجہ سے اثرا نداز ہوئی تھی جن سے جھیے ان مکا یہ ودی سازش ہا تھول سے حرکت کی تھی جوا ہے آپ و فعنی رکھنا جا ہتے تھے ، حالانکہ وہ کو لوگ مرحقیقت ان فکری سیاسی، اقتصادی، معاشرتی اور منگی منصوبول اور سازشوں سے محرک اور کرتا دھر ہا تھے ۔

بن ممالک میں ماسونی جماعتیں موجود میں، اگروہال ان کے جاسوسول کی براسی جاعت موجود نہ ہوں لودہ سرگزیجی بین الاقوامی میہودیت سے مفاد کے کام زکر پاتے ، مگر یہ کہ وہ ماسونی جمعیت سرک باک ڈورتمام عالم میں میہود سے پوب اور براسے لوگ تھا ہے ہوئے ہیں یہ جمعیت ہی ان کی اغراض کے لیے آلہ کا کام کرتی ہے جس کے تحصیت افراد اس طرح کام کرگزدتے ہیں کہ انہمیں نہ یہ معلوم ہوتا ہے کہ وہ کہال جارہے ہیں اور نہ یہ مجھ میں آتا ہے کہ وہ کہاں جارہے ہیں۔

بر معققین کواک وقت محست میریت و دمشت کا سامناکر نا بڑا جب انہیں میعلوم ہواکہ مای طلیم جنگیں بہود کی وجہ ہے ہی رونما ہو ئی تصیں اور اس کی اگر سے بھر کانے والے بہیود ہی شھے جنہوں نے بیاگ ماسونی جاعتوں اور ۔ بر سے بی رونما ہو ئی تو سے سے کہ اگر کے بھر کانے والے بہیود ہی شھے جنہوں نے بیاگ ماسونی جاعتوں اور

ان سے منسلک عالمی مجانسس کے ذراعی محطر کا کی تھی ۔

افوں کی بات یہ ہے کہ اسونیت ہمارے وہی واسلامی معاشروں بیں بھی رہے ہس گئی ہے۔ اوراس کے بنیادی اصولوں کو ہمارے بہت ہے مالدا ول اورعزت و جا ہنصب والول اور حکومت وسلطنت سے ارباب مل و عقد نے بھی افتیار کرلیا ہے۔ ہم نہیں کہ سکتے کہ آئدہ آنے والے ایام بیں عالمی ماسونیت ابنے انتہین کے زریعہ ہو سلطنت ومرتبہ کے مالک ہیں اسرائیل کے اعتراف کرنے اور قضیہ فلسطین کے مامہ کے جو بڑے ممالک اس

وورِ ما صنویں مصالحت کی دعوت وے رہے ہیں ان میں کیا کچھ کردِ کھائے گی ۔

ہماس وقت جو کھیے بیان کرنا چاہتے ہیں اس کامقصد صرف یہ سبے کہ ادیان ونڈ ہسب سے جنگ ، اور اخلاق ی گرا و ش، اور انسانی معاننہ وں کو ا دھراُ وھر نمزاب کرنے کے لیے یہودی ماسونیت کی جوسا کرشیں اور منصوب میں

ان *سے بردہ سٹا دیں* .

#### محترم مرتی صاحبان کی خدمت میں ان منصوبول بی سے اہم اہم دیل میں میش کی جاتہ ہیں! دیل میں میش کی جاتہ ہیں!

ج یہود نے اپنے پروٹوکول میں ال گراہ کن آراء کا اعلان تجاہت اکہ لوگول سے عقائہ ضمیروں اور عقول کوخراب کرسکیں ، اورانہ ول نے میہودی وغیر میہودی الشخصیات کے افکار کوافتیار کر لیا ہے جو دینی عقید ہے خاتمہ کی وعوت دیتی ہیں اور شریفیانہ اضلاق سے بنیا دی اصولوں کا جنازہ نکالنا چاہتی ہیں ۔

کی لیوگ علی الاعلان سیکھتے ہیں کہ انہول نے اس " فرائد" کی آرا رکوافتیا کر لیا ہے جوانسان سے کرد ارست علق ہرہیز کی تفسیر بی صغربات اورشہ ہواہت وخواہشات ہیں بہرجانے سے کر ہاہے۔

انہوں نے اسس کارل ماکس کی آرار کو اختیا کر کیا ہے۔ سے بہت سے لوگول کے قلوب اور خمائر وعقول کو انہوں نے بہت سے لوگول کے قلوب اور خمائر وعقول کو خواب کر والا ، اور الا بہت سے عقیدہ کی مخالفت کی ، اور جب کا ل خواب کر والا ، اور نذا بہب وادیان کو لغو و بے کا گردانی ، اور الوہیت وضدائیت سے عقیدہ کی مخالفت کی ، اور جب کال مارس سے پر کہاگیا کہ عقیدہ الوہیت کا برل کیا ہے ؟ تو اس نے کہا اس کا برل سیروسیا و سے ، لوگول کوعقید ، الوہیت سے مٹاکر کھیل کو دئیں مشغول کر دو۔

انہوں نے اس نیشٹ کی آرا کو لے لیاہے سے اخلاق کا جنازہ لکال دیا اور ہرانسان کواس بات کی اجازت وے دی کوس چیزے چاہیے مزے لوٹے چاہے اس کے لیے تنل وغارت ، خونریزی وتخریب کیول نداختیا کرنی پڑھے۔

ی انہوں نے اس ڈارلن کی آرا کو سے لیائب نے اس تطور و ترقی کے نظریہ کو اپنایا تھا جے کم وہم نے علاقہ ردیا ہو اسم مہل چیزوں کی ٹوکری کی ندرکرو یا ہے

کونافذکر نے بھر تیہود تو پیال تک آگے بڑھ گئے کہ انہول نے انسانیت کوخ اب کرنے کے لیے ایک منصوبہ تیار کیا، اورال کونافذکر نے بھے لیے اطلاعات ونشہر ایت کے وسائل اور سینا و تھیٹر سے اٹیجے اور مٹر پووٹیلی ویژن سے پروگرامول اور اسونی جمعیات فطیمول ، اور ہرخائن وجاسوس اور کرایہ سے صاحب فلم سے کام لیا، اور اینے محروض اور بدبا سی اسے اس بات پر قادر ہوگئے کہ نقافت ، تہذیب ، فنون ، تمیل کودا ور بے حیائی کے اڈول ومرکز وغیرہ سے ذیہ ہے قومول کو

ے ان منصوبوں وسازشوں کاامس مرجع نستاذعبدالرحمٰن مبنکہ کی تحاّب '' مکا کُرصہیونیّہ" (ص ۱۳۳۰ یا ۲۳۸) ہے۔ سیمہ بماری سخاب" مشبہات وردود ' کامطالعہ کی بھیے ۔ اس میں ڈارون سے نظریہ کی کافی وسٹ افی تردیہ ہے اور س کے بطلان کوخوب واضح کیا گیلہے۔

خواب کریں، جیسے کہ وہ اپنی عِیاری وچالاکی اور تعلع و ہریدسے اِس اِسٹ پڑھی قادر ہوگئے کہ یورپ وامریجہ اور مشرق کی اکٹریؤ پوڑوں کی علم نفس ا ورعلم الاجتماع (معاشرتی صلوم) کی کرمیوں پر قبصنہ کریں، تاکہ ان ووعلموں سے داستہ سے لوگوں سے اخلاق وعقا کہ کو خواب کریں، اور انہوں نے اپنے نبدیٹ منصوب ہے کوٹا فذکھا، اور اس طرح سے تقریباً ان شعبول کی ای کرمسیول پر قابق ہوگئے، تاکہ تمام عالم کی فکری ،نفسیاتی اور فلسفیاتی قیا دست ان سے ہاتھ میں سہے۔

🖈 اورتسر ہوی پروٹوکول میں کہتے ہیں :

نی یہ ہودی توموں سے عوام کوال بات سے دور رکھنے کے لیے کہ وہ نود بخود ہمار کے منصوبے برمطلع ہول ہم ان کو مخلف تھے ہے کہ وہ نود بخود ہمار کے ہے اور اس طرح کی چیز ول ہیں شغول کر دیں گے ،اور عنقریب ہم اخبارات ہیں ایک اعلان کے ذریعے لوگوں کو مرتسم کے مقابلول کے پروگرامول ہیں شمرت کی دعوت دیں گے جیسے کون اور ریامان سے دائیں شرکت کی دعوت دیں گے جیسے کون اور ریامان کھڑے کا یہ نیاسامان لازمی طور سے عوام کے ذبخ کوان مسائل سے غافل کر دسے گاجو ہم ان سے درمیان کھڑے کررسے ہیں اور جن ہم اور جن ہم ہم موجا بیس گے درمیان کھڑے کررسے ہیں اور جن ہمارے ساتھ شرکیہ ہول گے۔ اس لیے کھر دن ہم ہی معاشرے کے وہ منفروا عفا وافراد ہول گے۔ اس لیے کھر دن ہم ہی معاشرے کے وہ منفروا عفا وافراد ہول گے۔ اس لیے کھر دن ہم ہم معاشرے کے وہ منفروا عفا ورائل کے تواس کے دنگ فکر وسوچے کی ایمیں چنسس کریں ،اور ان فلو کھر کو ہم اپنے ان وسل کے درسے پیش کریں گئے ہم ہم ارسے الیے افراد ہول گے جن سے ہماراطیف و وفاوار ہونے کاکی کوشک و مشبہ وسل ہماری حکومت ہم کی اور یا وگل اس وقت ہماری خدمت کی اور یا وگل اس وقت ہماری خدمت ہماری می خدمت کی اور یا وگل اس وقت ہماری خدمت ہماری حکومت ہمی خدمت کریں گئے۔

پ پروٹوکول میں بیعبی مکھاہے کہ جہیں جاہیے کہ ہم ہر حگہ انعلاق کا جنازہ نکا لنے سے ہے گا کریں ، تاکہ ہم ارسے تسلط
کی راہ ہموار ہو، فرایک ہمارا آدمی ہے ، وہ نبی تعلقات کو دن دہار سے شیسی کر بارسے گا، تاکہ جوانول کی نگاہ میں کوئی چیز ہمجے
مقدس باتی نہ رہے۔ اوران کا سب سے بڑا مقصد عبی نوامشات کی کمیل بن جائے، جب یہ ہوجا ہے گا توانولاق کا حنازہ تحل چکا ہوگا۔

\* بغراد کی ماسونی کانفرنسس منعقده منتافائد کی قرار داد میں ان کایہ قول تحریر ہے کہ جمیس یہ ہرگزنہیں معولنا چاہیئے

کتم ماسونی لوگ دنیے کے دمن ہے، اور بی دن کے آثار وعلامات کے خاتمے کی گوشش میں کی قسم کی کوتا ہی نہیں کراچاہیے \* ماسونی مشیرت اظم میں اللہ کی قرار داد میں لکھا ہے کہ: عنقریب انسانیت ہی کومقصود بنا بیاجائے گا خدا کو جھوم د ماجائے گا۔

: \* اورانٹرنیٹل ماسونی کانفرنس منعقدہ سندلئے گی قرار دا دمیں یہ مکھا ہے کہ ہم صونے اس پراکتھا نہیں کریں سکے کہ دنیلاروں پرفتے حاصل کرلیں ان کی عبادت گا ہوں پرغلبہ حاصل کرلیں ،ہمارا بنیا دی اوراصلی مقصدان لوگوں سکے وجود کو ختر کرنا ہے۔

\* ماسونی مجلدا کاسیات الله میں مکھاہے کہ : دین کے خلاف جہاد ومقابد ابنی انتہاکواک وقت پہنچے گا جب دین کو معکومت سے جوائر دیا جائے۔ ماسونیت دین کی مگر سے لیے ، اور اس کی محافل عبادت گاہول کی مگر ہے ہیں ۔ معکومت سے جدا کر دیا جائے۔ ماسونیت دین کی مگر سے لیے ، اور اس کی محافل عبادت گاہول کی مگر ہے ہیں ۔

محترم مرفی معاقبان اکیاآپ نے اب یہ مجھ کیا ہے کہ ان خبیث و عیارانه منصوبول سے یہ و دیت واسونیت کی چاہتی ہے ؟ بلاشک وسنسبدان کامقصد رہے ہے کہ بنواسرائیل کی عزت دوبارہ قائم ہو، اور فرات سے بل کس ال کی خلیم مکومت کی تاکیس ہو، چورتم ما عالم پر قبضہ کیا جاسکے ، اس مقصد کو جاسل کرنے ہے ان کے جو و سائل ہیں الن می مورث کے زیمن سے تمام آسمانی دینول اور اضلاقی و معاشرتی و اقتصادی ندام ہب کا خاتمہ اور صرف اور صرف بہود رہت سے مسونی مربید کی مسر بیندی ہے ، اور قسطین میں اسرائیلی حکومت کا قیام ان مرکارانہ ساز شول ہی کا کرشمہ ہے جن سے اسونی محفلول نے اغراض لور سے کرنے ہے کام کیا۔

معترم مرنی معاحباک اجب آپ نے یہ سب کی جان ایا تو بھرآپ کو اپنی گوشش وجدوجہ کو دوگنا کر دینا چاہیے ، اورا بنی اولا دکی ایمانی وافلانی تربیت اور فکری ونفسیائی تعمیر سے لیے اہنے عزم کو تیز کرلینا چاہیے ، تاکہ یہودی ساشیں ان کے عقیدہ کو عبنجہ وٹر زسکیں اوران سے اخلاق کو تباہ نہ کرسکیں ۔

#### استعاری منصوب اورساشیں

استعاری سازشول سے میری مراد ورہ منصوبے ہیں جن کا اسلام سے جنگ کرنے ، اورسلمانول کو ال کے عظیم مقعد جہاد فی سبیل التٰدسے مبلانے ، اوراسلامی معاشرے کو آزادی و شہوت پرسی میں غرق کرنے سے میں عیسائیت اوراسٹرات سے بہت گہرار بطر تعلق ہے ، ال منصوبول کا مقصد یہ ہے کہ سلمانول کو الن چیزول ہیں بھینساکر اسلامی عقیدے سے عاری و بہی وست کر دیا جائے ، اورا نہیں ایک ایسا حیوال بنا دیا جائے سب کا دنیا وی زندگی میں سوائے نوا مشاست نفس کے پوراکر نے اور ذلالت و رؤالت کی میچیو میں و صنسنے سے اور کوئی کا کہ نہو، مذاسے عظم مت و طرائی تک بہنچنے کی خوام شاس کے پوراکر نے اور ذلالت و رؤالت کی میچیو میں و صنسنے سے اور کوئی کا کہ نہو، مذاسے عظم مت و طرائی تک بہنچنے کی خوام شس ہوا ور نہ دنیا ہیں کوئی عظیم کا انجام و پینے تھی تا ہو۔

پ ان تعمرن کا کیب بڑا آ دمی مکھا ہے کہ: شراب کا جا) اور منعنیہ امت محدیکو بارہ پارہ کرنے ہیں ہزار تولیل سے زیادہ اثر رکھتے ہیں، اس لیے اس امت کوماوریت و شہوت برسی ہیں غرق کردہ .

پ اوراک سے قبل ہم پاوری زومیر کا وہ بیان نقل کر بچے ہیں ہواک نے (عیدائی مبلغین) کی کانفرنس ہیں دیا تھاکہ:
... آپ توگول نے سلمانول سے دیار میں ایک ایسی نئی پود تیار کرلی ہے جواللہ سے تعلق کونہیں جانتی، اور نداس کو بماناچا ہی ہے۔ اور آپ توگول نے سلمان کواسل سے نکال دیا اور سیحیت میں داخل نہیں کیا .. مسب کا اثر بیہ ہواکہ سلمانول کن نئی نسل استعار کی نوائم شرخی سے مطابق تیا یہوگئی اسے ظلیم کاموں کی کوئی فکرنہیں اور وہ داست بسید وسست ہے، اور دنیا میں اس کا مجمع مرف شہوت برتی ہی ہے، وہ اگرتعلیم ماسل کرتا ہے توشہوت برتی ہی ہے۔ وہ اگرتعلیم ماسل کرتا ہے توشہوت برتی ہی ہے۔ اور اگر وہ ترقی کرکے سی خطیم منصب مک بہنچا ہے توشہوت برتی ہی ہے۔ دہ اگرتعلیم ماسل کرتا ہے توشہوت برتی ہی ہے۔ اور اگر وہ ترقی کرکے سی خطیم منصب بک بہنچا ہے توشہوت برتی ہی سے لیے۔

الندولف بيرك في علاقالم مين سقوط قدس كالعدكما تهاكه:

تدس کومسکانول کے قبضہ سے نکالنا یہ و داور عیسائیول دونول کا ایک جیسانواب تھا،اس سے عیسانی یہودیو سے کم خوش ہیں ہیں، قدس مسلانول کے ہاتھ سے نکل چکا اور میہودی کنیسہ نے قدس کو یہودی قدس کے ساتھ ضم کرنے سے سلسلہ میں بین قرار دادیں جاری کی ہیں، اوراس سے بعدسلمانوں اور یہود سے درمیان جوعی گفت شنید ہوگی اس کی وجہ سے قدین مسلمانوں کو دوبار کہ جی نہیں سلے گا۔

اس سے قبل عیدائیت اور استشراق سے منصوبول وساز شول کی بحث میں بھم ستھرین سے بہت سے اقوال ذکر کرسے بیا دی اصوبول کوختم کرسنے اوران اقوال ذکر کرسے بیل جوسب سے سب اسلامی مقدسات اور اسلامی مبادیات اور بنیا دی اصوبول کوختم کرسنے اوران سے وجود کو دنیا سے مثانے والے وسائل کوٹلی جامہ بہنا نے میں ایک ہاتھ کی حیثیت رکھتے ہیں بکین التٰد تعالیٰ اسٹے نور کومیبیلانا ممکل کرنا چا ہے ہیں خواہ کا فرول کو ناگوار ہی کیول نہ ہو۔

اورائے مرتی صاحبان!

اخیریں یہ بات بھی سامنے رکھیے کہ آپ مسلمان ممالک ملی جاسوی اور دو سروں سے بیے کام کرنے والے ایسے ایجنٹول کی دستہ دوانیول سے قبط کی سے خبر ہز رہیں ، جو المی کشیوعیت اور حاسد ترین عیسا یئت اور مسکا رماسونیت اور کا گراہ کن استعادی ذاہب سے گہرا دیط و تعلق رکھتے ہیں ، اور سرز مین اسلامی اور اسلامی معاشر کی بیں ہرحگہ ابا جیت و آزادی اور سفری بنیا دی باتیں بھیلانے میں میں موف رہتے ہیں ۔

سے مربی صاحبان! آب کو بیمبی جان لینا پھا جیے کہ ان خائن ایجنٹول میں سے ہرجاعت سے کچے عناصری جو مستقل کام کرستے ہیں اوران کے کام کرسنے سے مختلف اسلوب ہیں اوران کے بہدت گہرے بنیادی اصول اورنئی نئ

تنظيمين ميريد.

دم صیلوں اور ذہنی غلامول کی یہ جائتیں آپ کے بیٹے اور بیٹی سے ایمان واسل کا عقید اور انواق وشرافت کوچوری کرنے میں ایک دوسرے سے باہم متحد معاون ومددگار ہوتی ہیں ، ناکر نیسے کے پاس کوئی ایسی جیز باقی مزرسے جس کانا کا ایمان ، اخلاق یا شرافت ہے ، اور ال نعائن جاعتول کی نظریس یہ بیزاس وقت مک عاصل نہیں ہوسکتی بعب کانا کا ایمان ، اخلاق یا شرافت ہے ، اور الباحیت کے مخلف مراصل سے منگزر جائے ، ال مراصل سے منگزر جائے ، ال مراصل سے کرزر جائے ، ال مراصل سے کرزر جائے ، ال مراصل سے گزرنے کے بعد وہ بجہ ہمراس مقدس و آجی چیز کو بھینک دیتا اور دور کردیتا ہے جوادیان و شریعیت سے مول وعرض میں اوھ اُدھر وہ کو منتقب اور مضبوط حیثیت سے مالک ہوتے ہیں ، یہ سرکاری ملازمتوں ، ریدیو ، ٹیلیویژن ہعلیمی میدان کا خانوں کہیں پیول غرض کی مربط کے میں اور مقابول عرض کی میدان کا خانوں کی خون کے مربط کی میدان کا خانوں کے میں نوط خون کر مربط کے میں میدان کا خانوں کی میدان کا خانوں مونیک کر ہم کر گھیے ہوئے ہیں ۔

فساد سے بھیلا نے ، گمراہ کرنے ، اورالحاد کے دام ہیں بھنسانے کے یہے ان کے پاکس مختف وسائل ہیں بھی اخبارات سے کام کیتے ہیں ،اور بھی رڈر ہو کی نشریایت ہے ،اور بھی ٹیلی ویژن کے ڈرامول اور آئیجے سے ،اور بھی توامی ائیج کے ڈرامول اور میلول سے ،اور بھی نقافتی مراکز اور تھاریر کی مجاس سے ،اور بھی مختف قسم کی نظیمول سے افتتاح سے پر یہ دسائل اس کے علاوہ ہیں جووہ نظام تعلیم اور یونیوسٹیول میں مستقل منظم طریقے سے کافرانہ نظر ایت بھیلاتے رہتے ہیں اور سائل اس کے علاوہ نظر ایت بھیلاتے رہتے ہیں اور سائل و فساد کے لیے خصوصی ملاقائیں کرتے ہیں ۔

جناب مرنی صاحبان اآپ کوریم معلوم ہونا چاہیے کہ ان ایجنٹوں کے پاس گراہ کرنے، لگار شے اورگفت و سننید سے بھی بہت سے اسلوب ہیں جن سے وہ بچے کے عقیدے، افکار اور اضلاق پر اثر انداز ہوجاتے ہیں۔ ★ ان کے طریقوں اور اسالیب میں سے بیھی ہے کہ بچہ حبب فارغ ہوتا ہے توبیا سے ملازمت، جاہ و منصب کالالجے دیتے ہیں۔ اور حب وہ ان میں سے سی نظیم میں شامل ہوجا آہیے تو بڑے مرتب روعہدہ تک پہنچ جاتا ہے۔

بہت ہے۔ ان سے اسالیب میں سے پہنے کومغربی تقافت وترقی، یامشرقی بنیادی پیپزول سے ذریعہ گمراہ کرنامجی ایک طریقہ ہے یالوگ الن کے سامنے بنظام کررتے ہیں کمشسرتی تقافت اصول ونظرایت ولیائے زست و بلندی کو اس وقت پہنچے جب انہوں نے دین کو ایک طرف ڈال دیا۔

\* ان سے اسالیب میں سے بیمی ہے کہ بیمے کوخب اسے اعتقاد سے سلسلہ میں شک میں ڈالنا، شُلُّ یہ کہنا کہ اگر التّٰہ ہی بیب اکرنے والا ہے تواس کوکس نے پدا کیا ہے ؟ یا یہ کہ اگریم التّٰہ کو د مکیفے ہیں رہے ہیں توجع وہ موجود مجی نہیں ہے ،اسی طرح کے غلط اور باطل شکوک وست بہات کا پیدا کرنا ،اور ان کے سلسلمیں اشکالا

#### رسوالاست کرنا ۔ وسوالاست کرنا ۔

\* ان كاطريقية يهمي بي كه يولك بيم كواسلامي نظام كه بارسيمين شك ومشبه مين وال دييت يين بمثلاً يه كهاكلسلامي اصولول برعمل كرسنے كانبازگزدجيكا ہے، اوراس كے اغراض ومقصود ايك زملنے سينے تم ہو يجكے ہيں كلہذا يواسلام اللجم بحلی اور علم سے دورسے ساتھ پولنے کی صلاحیت نہیں رکھتا۔

حصول ا ورعزت وکرامت کی چونی تک پہنچے مگر ہے کہ وہ تمام ان قیود سے آزا د مبوجائے جواسلام نے لاگو کی بیب، اور مراسس اچی تیز کوهیور دیے جودین نے پیش کی ہے تھ

 ان کا ایک طراقیه رسی کر بیسے کو آزادی شهوت بیتی . بے حیائی اورزناکی طرف به کهر ترغیب دی جائے۔ عنسی تنہوت کے داعیہ بریمی لبیک کہنا بیا ہیے، او مبنسی جوشس اور نغسیاتی انضباط سے چیٹکا *دا حاصل کر*نا چا ہیے وغیرہ فوج مخلفت مسے اسالیب اور باطل قیم سے شکوک و شبہات اورگند سے قیم کی بہانے والی مربری:

(الخلك قولُهُمْ بِالْوَاهِهِمْ، يُضَاهِنُونَ قَوْلَ يه بِاللهِ عَوْلُهُمْ بِالْمِينَ مُنِينَ مُنِينَ مُرَفِيكً

الَّذِينَ كَفَرُوْا صِنْ قَبْلُ وَقَتَكَهُمُ اللهُ الل سے تھر<u>۔</u> جاتے ہیں۔ أَنَّى يُوفَكُونَ ءَ)). التوبه - ٣٠

مرئي محترم اكياآپ نے يتمجد لياكديہ خائن ايجنط جوشہات پدياكرستندا ورشك وشبہ ڈاسلتے ہيں اس سے ان كامقصد وغرض كياسيمه ؟ بلاشبه أنكامقصد صرف اورصرف بيه بيه كم مُؤمن قومول سيمه انج اوراسالمى معاشول كو ہے ان سربراہول کی گاوی سے ساتھ باندھ دیں جو کافرانہ عقیدے اور گمراہ کن فداہب اور مخرب نظامول سے مالک ہیں ، تاکم سان نوجوان اور مسلمان عورت سے یاس اسلام نامی کوئی چیز مافی نرسیے بیاان سے بہال عیب، حیایا حرام نامی کوئی چیزیافی نه رسیعه

۔ اگریہ کمینے عیارائینبٹ اس گراہی وکمی سے عیلا نے میں کامیاب ہو سکئے اوران کو سرموقعہ وسے دیاگیاکہ وہ اپنے مکر کا بازا دگرم کرلیں . اور اس سے لیے تتحد بہوجا بیش ، اور اپنے زہراور کفریایت کو بھیلادیں ، اور بہاری طرف سے ان کی کوئی

له د طهه کیجیے ، بماری کتاب «مشبهات وردود » اس بی ان شبهاست کی تردید میں نهابیت مضبوط دلیلیں پیشیں کی گئی چیں جو یہ ل*وگ پېداکر تے ہی*ں ہ

سله بالمنظر كيجيع واكط نوالدين عشركي كما ب «ما ذاعن المرأة » اوراسته ذوبهي سليمان غاوج كى كتاب «امرأة المسلمة "ان وونول متابول ميں فاسر شیالات وافیکارکی بہت عمدہ تردید کی کئی ہے۔ بدفعت ومقاومت نه بهونی اوریم نے اپنی ومرواری کا اصاس نکیا ، اور رہائی بھین و تربیت کا اتبام نہ کیا . تو مواز کرے پھر انجا کی یہ بوگاکہ اسلامی معاشر سے لازی طور سے اباجیت و آزادی اور انجادی جانب آ گے بڑھیں گے ، اور کھلم کھلاوہ تمی طؤ سے مشتر تی یا مغربی گاڑی کے ساتھ جُبت جائیں گے ، یا آپ چائیں توبیک ہویں کہ وہ شیوعی (کمیونسٹ) یا راسمالی (سرمایہ والنہ) نظام سے والبتہ ہم وہائیں گے ، اور اس وقت ہم وہئی رسوائی کو پہنچ گئے ہول گے ، اور گل والنے پاؤل لوٹے کی بنار پر امست اسلامیہ کو ذلت ورسوائی اور غلامی کا شکار ہونا پر طرب گا ، اور سے ان لوگول میں سے بن جائیں گے جو قیامت کی بنار پر امست اسلامیہ کو ذلت ورسوائی اور غلامی کا شکار ہونا پر طرب گا ، اور سم ان لوگول میں سے بن جائیں گے جو قیامت سے لیے اللہ اور قوموں اور تاریخ کی لعنت کے ستے ہے ۔

**→** 

مرتی محترم! جب آپ نے منصوبے وسائٹیں ہاائیں جن کامضبوط ترین جال شیوعیت، عیسائیت اور بیہودی ماسونیت اور استعاری ندامیب اور خاکن ایج بلول کی جاعثول نے بنایا ہے، تو مھر پیسب بچھ جان لینے کے لعد آپ فرض پر ہے کہ آپ نموب جدوجہ دو محنت کریں ، اور قوی عزم سے کام ہیں ، اور پکے ادادہ کے ساتھ المحکم ہے ہول ، تاکہ اپنے اس اسلامی فریفنے کو اواکر سکیں ہو بچول کی تربیت ، اور خاندان کی تلقین ، اور الن لوگول کی رہنمائی کے سلسلہ ہیں آپ برجو ذمہ داری فراکی ہے وہ ایک امانت کی تربیت کی فرم داری فراکی ہے وہ ایک امانت ہے ، اور الن سلسلہ ہیں آپ برجو ذمہ داری فراک کے حق کو اداکر ہے۔ اور یہ قیامت کے دل ذات ورسوائی اور ندامت کا فرلعیہ بنے گی محکم اس شخص سے لیے جو اس سے حق کو اداکر ہے۔ اور اس سلسلہ ہیں اپنی ذمہ داری کو وری طرح سے اداکر ہے۔

لہٰذا حساب و کا ب اور سوال سے قبل ہی اس حق کو سیجے طریقے سے ادا یکبیے تاکہ اللّٰہ کی رہناا ورجنت ہیں اس کا قرب اور ان لوگول کی رفافت نصیسب ہو سیکے جن پراللّٰہ نے انعام فروایا سپیے اور وہ انبیار ، صلفیین ، شہدا را وصاین وغیرہ ہیں اور بیے صالت بہت ہی عمدہ رفیق ہیں لیہ

التُدتِعالىٰ فرالستے بين :

(( وَقِيفُوهُ مُ إِنْهُ مُ مُسُنُ وُلُونَ » نعانت ٢٢٠

﴿ فَوَرَبِكِ كَسُاكُنَّهُمُ أَجْمَعِينَ عَمَّا كَانُوا ﴿ فَوَرَبِكِ كَسُاكُنَّهُمُ أَجْمَعِينَ عَمَّا كَانُوا يُعْلُوكَ ﴾. المجدد ١٩٤٣

ا وران كو ( ذرا ) معم إدًان سي بي جي كيم موكى .

سوت مے ہے آپ کے رب کی ہم کو ن سب سے پوٹھا ہے ہو کچھ وہ کرتے تھے۔

ے سس سی سی سی الدولاد " کی مم ، نی میں مربیوں کی سئولیت کی سحت سے ذیل میں ہم تفصیلی کلام کر چکے میں لنبذا اس کامطالعہ کریہ بیجے انت رائت تشفی کا پوراسا ، ن مہیا مل جائے گا

# 

# مرسیت کے بنیادی اصول دوقت عدول بین منحصرین :

۱ - ارتباط اور دربط وتعلق کا اصول به ۲ - متنب و چوکنا کرنے کا قاعدہ به

# ا - ارتباط اور ربط وتعلق كالصول:

یالیتنی بات ہے کہ بجہ جب ہوشیاری اور مجداری کی تمرکو پہنچے اوراس کا تعلق اختصادی اور و مانی رفابط اور فرک میں بادئی ، معاشر نی وریاضتی روابط سے صنبوط ہو، اور مجرجب وہ اور بڑا ہوا ور نوحوانی میں قدم رکھ کر بوراآدمی بن جا اور مجراد صفر عمرکو پہنچے جائے تو بلاسشہ ایسے بہتے ہیں ایمان کی مضبوط دلوا ، موگی ہو اسے جا بلیدی ہونے اور اس سے تمام ترتصورات وعقائدا ور بنیا دی اصولول اور مراک کی جزول سے کنارہ شس ہونے اور اس سے تمام ترتصورات وعقائدا ور بنیا دی اصولول اور مراک کی باتوں سے باتوں سے باتوں سے باتوں کے مقابلہ کی ہونے اور ان کی اس کے مقابلہ کی جا کہ اور ان کی اس کے مقابلہ کی ہوا ہوگا ہوا اور کی باتوں سے معاندانہ موقف اختیار کر سے ، یا اس سے ایمی بنیا دی اصولول پرکوئی حاسدان نظر ڈالیے ، ایسا کیول ہوگا ؟

اک لیے کہ بچہ کا ربع اسلام سے ہوگا عقیدہ سے لیا فاسیمی اورعبادت کے لیا فیسے ہیں، اورانولاق کے لیا فیسے ہی اورانولاق کے لیا فیسے ہی اورعبا دورعوت کے لیا فیسے ہی اورعبا دورعوت کے لیا فیسے ہی اور جہا دورعوت کے لیا فیسے ہی اور تسامی اور تھا فت کا فیسے ہی اور وسے ہی اور قافت کا فیسے ہی اور قافت وافکار کے لیا فیسے ہی اور قافت وافکار کے لیا فیسے ہی ۔

مرتی مخترم! آپ سے سامنے وہ اہم روابط ذکر سے جاتے ہیں جوآپ سے پیچے کے لیے نیری خیر سے فامن ہیں ، لہذاآپ ان کوسس قدر سے فعامن افذکر سکتے ہول بافذکر دیں تاکہ آپ ایٹے بیچے کو نیک معالیم مومنول گائتی اور پاکیزہ وقتی لوگول سے زمرہ اور مجاہری احرار کی جاعب میں ذکیصیں ، اللہ سے لیے یہ کیچیم شکل امرنہ ہیں ہے

## روابط وارتباطات كيداك طرح سيين:

# ① اعتقاد*ی رابطی*

اسے قبل ایمانی تربیت کی ذمہ داری کی بحث میں ہم یہ ذکر کرنے ہیں کہ بچہ حب سے ہوش مند وہمجدار سواسی وقت سے اس کا بنیادی ایمانی ارکان اور غیب مشعلی حقائق اور ان تمام چیزول سے تعلق وارتباط ہونا چاہیے حوصاد قب امین التُدعلیہ و لم سے واسطہ سے ہم تک اعتقادیات ومغیبات زغیبی المور) سے قبیل سے پہنچ ہیں ، خوصاد قب التُدعلیہ و مہرے میں التُدجل شائر پر ایمان اور فرشتول اور آسمانی کی بول اور سولول اور قضار وقدرا ور مختلف کی بریدالازم ہے کہ وہ چھے میں التُدجل شائر پر ایمان اور فرشتول اور آسمانی کی بول اور سولول اور قضار وقدرا ور مختلول سے سوال کرنے ، اور حماب کی اب جنت ودوز نے وغیرہ غیبی المور برا میان آل کے دل میں سمونے ۔

مرقی محترم بیبات آپ سے پوسٹیدہ نہ ہوگی کہ اگرآپ اپنے بیچے ہیں ایمان باللہ کی حقیقت کو جاگزین کردیں، اور اس کے قلب وتصور میں ان بیبی امور کو راسخ کردیں، اور مہیشہ بیکوشٹ ٹی کریں کہ بیچے کا تعلق ربانی عقیدہ سے قام کے ہے توال کا اثریہ ہوگا کہ آپ کا بیٹیا اللہ کے مراقبے اور اس کے حاضر و ناظر ہونے کے عقیدے اور اس سے خوف وخشیت، اور بربیشیں آمدہ امر دمصیبت میں اس سے سامنے گرون جبر کانے، اور اس سے کم پڑمل کرنے، اور ممنوعات سے رکھی ہوئی ہوئی ہو اسے معاشرتی برائیوں اور نفسیاتی و ساوس اور پیش میرگا جگو اس معاشرتی برائیوں اور نفسیاتی و ساوس اور نفسیاتی و ساوس اور نفسیاتی و ساوس اور نفسیاتی و ساوس اور نمور ہوئی ہوگا جو اسے معاشرتی برائیوں اور نفسیاتی و ساوس اور نمور ہوگا ہو ایک کا ، اور علی اور کی مور ایک کی اور اس طرح سے وہ روحانی و اضلاقی طور مرکم کی محملے محمل ہوجائے گا ، اور علی اس کی مور ایک کی طرف اٹھی سے اشارہ کیا جا تا ہے، اس کی دور ہوائیت میرم لیست میرم لیست ، دین اور تی پڑھا کی گا۔

مرتی ممترم امیراخیال ہے کہ آپ کے سامنے مجھے آپ کی ذمرداری وسئولیت کی وہ ودود دکرکرنے کی ضرات نہیں جوآپ پراپنے بیے کی ایمانی تربیت کے سلسلہ بیں لائم ہوتی ہیں۔ اس لیئے کہ اس بحث پر اس کتاب تربیۃ الاولاد کی تیم انی میں "ایمانی تربیت کی سئولیت " کی مجدث ہیں ہرمہا وسے کلام کیا جا جکا ہے۔ لہذا اگر آپ دوبارہ آس کو بڑھ ن بما ہیں تو مذکورہ مجدت مطالعہ کریے ہیے، وہال آپ کو انشارالٹ تشفی کا پورا سامان ال جائے گا۔



# روحاتی ارتب اط

وحانی دبط سے میری مراد بہ ہے کہ بیجے کی دوح صاف و پاکیزہ اور دوشن ہوجائے، اوراس کے دلسے میان وافواس ہوجائے، اوراس کے دلسے میان وافواس میں میں بیرگی وروحا نیت کی فضار میں بندی کی معزاج کوچنچ جائے ، اسلام نے مسلمان وافواس سے دوحانی رابطول سے مربوط رکھنے سے لیے ایک خاص منہج اور نظام مقررکیا ہے آاکہ سلمان اپنی پاکیزگی ونورا ورافواس وصفاء کو ہمیشہ ہمیں شرمی مفوظ رکھ سکے ۔

# اوروه منهج ونظام درج ذیل ہے:

الف - نيم كوعبادت سيم بعط ركصنا:

ال بیے کہ حاکم اور ابوداؤ دیمفریت عبدائٹہ بن عمروبن العاص ضی النّدعنہا سیسے رقے ابیت کرستے ہیں کہ رسول لٹر صلی النّدعلیہ وسلم نے ارشا دفر طایا:

اینے بچول کو نماز کاحکم دو حبب وہ سات سال سے موجا میں ،اور نماز نہ پڑسصنے پران کو مارو حبب وہ دسس سال سے موجا بیش اور ان کے بچیونوں کوانگ انگ کر دو۔

اورنمازىر قیاسس كرستے ، توستے بچہ كاتعلق روز ہے ہے جى قائم كیاجائے گابشر طبیکہ بچے میں روزہ رکھنے كی طاقت ہودائ طرح اگر باہد صاحب بشیعت ہوتو بچے كوجے ہے جى واقف كرائے ، اوراگرم ني صاحب اشطاعت ہوتو بچے كوجے ہے جى واقف كرائے ، اوراگرم ني صاحب اشطاعت ہوتو بچے كوجے ہے جى واقف كرائے ، اوراگرم ني صاحب اشطاعت ہوتو بچے كوجے ہے جى واقف كرائے ۔

مرنی محترم! آپ کونیا بینے کہ آپ بجد سے یہ زئن شین کرادی کہ اسلام میں عبادت صوف ان جادات میں عبادات میں محصونہ میں محصونہ میں سے بلکہ عبادات میں الدر کے نبال ہے اور اس محصونہ میں ہے بلکہ عبادت ہراس نیک کام کو شامل ہے جس میں سلمان آدمی اللہ کے نبال کو اختیار کر ناہے ، اور اس سے اس کام عنی کاماس پر نبیلے گاکہ اگر تاجرا بنی تجارت میں اللہ کے اللہ کے مطابق جلے گا اور اس سے مقصد اللہ کی رصا ہوگی توالیا تاجر بھی کومن بندوں میں شمار موگا ۔

اس بیے ہرمرنی پرلازم ہے کہ وہ پیھے کوئیبن ہی میں نیروٹسر کی بنیادی باتیں اور ملال وحرام اور یق وباطل کی فتانیاں اور علامتیں سمجھا دے تاکہ بچہ ملال کواختیار کرے اور حرام سے پیھے ، بیٹھے کی اس طرح سے رمنہائی کرنانی کرنا ہے کہ صلی التہ علیہ ولم کی اس رمنہائی کے مطابق ہے جو آپ نے مربیول کو کی ہے ، چنانچہ ابن جسریر وابن المنذر روایت

#### كست بي كرب في فرطايا:

(ا اعبلوا بطعة الله والقوامع صى الله و المواجنة و و لا دكم بامت ل الأوامروجة و النواهي، فلالك وق ية لهم ولكم من المنار).

التدكى دا حدت نشب كرو اوراس كى ، فرول سے بچو اور اپنے بچول كو احكاد ت بجال نے وُرِنوع بيرورسے ركنے كا تكم و يا كروية ان كے اور تمہار سے جنبم سے بحث كا فرلوسے

للبذا اے مربی محترم اپنے کا جب شروع ہی سے جادت سے اس عموی فصوصی فہوم کے ساتھ ربط ہوگا و اس کے اداکر نے کا عادی ہوگا ۔ اور بھی سے ہی اپنے فرنس کواداکر تا ہوگا اور اس طرح جب اللہ کی اطاعت اور اس کے حقوق کی ادائی اور اس سے شکراداکر نے اور اس سے نفل کو اپنا نے کی تربیت پائے گاتو وہ بھی وہ میں میں متوازان انسان اور خلاص میں ہوگا ہو دنیا ہی ہر صاحب حق سے حق کو اداکر سے گا۔ اور پنے انہواتی ومعاملات اور پال میل فرکردار میں دوسروں سے لیے بہتری مونہ وُقت کی بینے گا۔ بلدال لوگول میں سے بن جائے گاترن کی طرف انگیول سے اشارہ کیا جاتا ہے۔ اس لیے کہ وہ بوایت ، دین حق اور راہ واست برقائم ہوگا۔

ب - بيم كا قرآن كرم سے ربط بيدائر نا:

س لیے کی طبرانی حضرت علی رضی النّه عند سے روایت کرتے ہیں کہ نبی کریم میں اللّه علیہ وہم نے ایشاو فرمایا : ایسے بچول کو تابی خصلتول کا عادی بناؤ: اپنے نبی (معلی اللّه علیہ وہم) کی مجنت ، اوران کے الّب بیت کی محبت اورقرآن کرم کی خلاوت، اس لیے کہ حاملین قرآن اس روز انبیار و تقریب بندول کے ساتھ اللّه کے عرص کے سامیے اور قرآن کرم کی خلاوت، اس کے سوالوں کوئی سایہ نہ ہوگا ،

\* علامه ابن نولدون نے اپنی کاب مقدمہ میں بخول کو قرآن کریم حفظ کرانے اور اس کی تعلیم دینے کی اہمیت ذکر کی ہے۔ اوریہ واضح کیا ہے کہ مختلف اسلامی ملکول میں قرآن کریم کی تعلیم ہی تمام تعلیمی نظام کی اساس و بنیا دہے اس کے کہ یہ دین کے شعائر میں سے ایک ایسا شعار ہے جو تقیدہ کو مصنبوط اورا میان کو راشنے کرتا ہے۔

ایس سینا نے کتاب السیاستہ میں یفسیوت لکھی ہے کہ بچے میں حب جہمانی او عقلی لحاظ سے استعداد وصلا یہ بیدا ہوجائے۔ توقرآن کریم کی تعلیم سے اس کی ابتدا کرنا چاہیے۔ اکہ بچین سے ہی اسلی بنیا دی عربی زبان اس کی صفی میں بیدا ہوجائے۔ اورا میان کی نشان کی نشان اس کی صفی میں بیدا ہوجائیں۔

ت الم عزالی نے اپنی احیار العلوم " میں یہ وصیت کی ہے کہ پیمے کو قرآن کریم اور احادیث اور نیک لوگول کے واقعا اور بین احیام کی تعلیم دینا چا ہے۔ اور بین کے دور تعلق کی تعلیم دینا چا ہے۔ ر

عادیں، عمان تربیت کی ذمرداری کی فصل میں ہم یہ ذکر کریتھے ہیں کہ پہلے ٹرما نے کے لوگ اپنے بچول کی تربیت اور"ا یمانی تربیت کی ذمرداری کی فصل میں ہم یہ ذکر کریتھے ہیں کہ پہلے ٹرما نے کے لوگ اپنے بچول کی تربیت

چیز کودستو بنظام اور قانون شمجهیں ۔

ال لئے اے مرفی محترم آآپ کو سیمجولینا چاہیے کہ ال است سے تفرک کوگول کی اصلاح بھی اسی سے ہوگی جس سے اس است کے بعد کوگول کی اصلاح قران کیم کی طورت جس سے اس است کے بعد کوگول کی اصلاح قران کیم کی طورت اسلام کو نافذ کرنے سے مصل ہوئی تھی تو اس است کے سخر نیما نے کے لوگ بھی ناصل آگو کا دارا ورحقیقی طورہ سے اسلام کو نافذ کرنے سے مصل ہوئی تھی تو اس است سے ہوئی را اور ناس کے مرتبہ کو پہنچ سکتے ہیں اور نال کوعزت ماصل ہوئی سطر میکر ہم ا بینے بچول کا تعلق قران کریم سے بدا کریں ۔ ان کو است بھا بیک ہا دکرا بیک ، اور اس کے در لعید ان بیس خشوع پیدا کریں ، اور عمل کرا بیک اور کروا را س کے مطاب بق بخوا بیک ، اور اس کے در لعید ان بیس خشوع پیدا کریں ، اور عمل کرا بیک اور کورا را س کے مطاب بق بخوا بیک ، اور اس کے احکامات برعل کرا بیک ، اور اس کے در لیے اسلام کو بیر اگر دیں گے سب کے ذریعی اسلام کو سے مقابلہ کر دیا ہے ۔ اور تقافت میں دو سری عموم سے مقابلہ کرسے ۔ قومول سے مقابلہ کرسے ۔ قومول سے مقابلہ کرسے ۔

اور تلاوت وعمل واحکام کے اعتبارے قرآن کریم سے ساتھ مرتبط کرنے والے مول گے۔

اگرآپ نے یہ کرلیا توجب آپ کا بچہ اپنی دونوں آنکھیں کھونے گاتو وہ قرآن کریم کے بنیا وی احکام کے سواکسی ایسے قانون کونہیں جانتا ہوگا جس پراس کا عقیدہ ہوا وروہ قرآن کریم کی شریعیت سے سوائٹ ایسی شریعیت کو نہ جانتا ہوگا جس سے قانون لیاجائے اور وہ اپنی روح کے لیان خورشفا، وکامیا ب مرہم اورانی نفس کا علاج سوائے قرآن کریم اور اپنی نفس کا علاج سوائے قرآن کریم اور اپنی قانون لیاجائے اور وہ اپنی روح کے لیان خورشفا، وکامیا ب مرہم اور اپنی نفس کا علاج سوائے قرآن کریم اور اپنی قس کا علاج سوائے قرآن کریم اور کریم ہوجائے گی تو آپ اپنے بچے اس کی آپ کو خشوع خضوع سے بوط شف کے سی اور چیز کو نرجم کی گا جب یہ مورت حال تعقق ہوجائے گی تو آپ اپنے بچے کی دوحانی اور امیانی گاروں میں سے ہوگائی کی طون

انظيول مساشاره كياجا تأبيداس ليسكه ده دايت اورق اوررا وراست برقائم بوكا

ج ـ بي كوالله ك محرول كرماته مرابط كرنا:

فرمات مين:

الإنتَا يَعْمُرُ مَسْجِكَ اللهِ مَنْ أَمَنَ بِأَللهِ اللهِ مَنْ أَمَنَ بِأَللهِ اللهِ اللهِ اللهِ الله پرا در آخرت سے دن پر اور قائم کیا نمازکو۔ وَالْيُوْمِرِ الْأَخِيرِ وَ أَقَامَرِ الصَّاوْةَ )) ١١٠ تو ١٠ ١١

مرنی محترم! آب کویہ یا در کھنا چاہیے ک*رمسجداسلام کی نظرین ان اہم ترین ستو*نول میں ہے ہے ہی پرسالقہ مگا ا دوار ہیں فردِسلم کی تیاری اوراسلامی معاشرہ کی تعمیر کا دارو مارر ہاہیے ،اورسٹ مانوں سے دورِحاصراور تنقبل ہی تعمیسجد ا فراِد ومعاشرے کی تعمیر میں بنیا دی اساسی ارکان میں سے رہی ہے اور رسے گی۔ اس لیے کمسجد کے بغیر نہ آہے۔ بیه کی روحانی وایمانی تربیت مهوسکتی بهدا ور زاخلاتی ومعاشرتی تعمیر، اومسجد کے بغیرز آپ التٰداکبرک وه آ وازسن <u>سکتے میں جو آسان دنیا تک پنیتی ہے اور جذبات کو جنجع ورتی اور دلول کو حکمت دتی ہے اور نہی آپ کے پڑوس</u> العظيم الشاك أوازكوس سكتے ہيں ۔

اورمسجد سے بغیرسلمان کو وعظ ونصبحت اور وہ کلمۂ حق سننانصیب نہیں ہوسکتاحب کااثر اس کیفس وروح

ارد جدے بیر ماں میں میں میں اسے اساست وشعور میں ہیجان پیڈہوجا آہے۔ پر ہو آ ہے۔ اور سب کے اثر سے اس کے اصاسات وشعور میں ہیجان پیڈہوجا آہے۔ اور مسجد سبے اجبیر سلمان دین کے احکام، اور دنیوی شغیم وترتیب، اور ملال وصدام امور ،اور زندگی گزار نے کاطرز ونظام، اورشىرلعىت كى بارمكيال نهين جان سكيا .

ادرمسجد كي بغيرعام مسلمان مشرق ومغرب محصلمانوں سے حالات ومصائب اور رپیشا نیال اور حاجات بہسسیں جان سكتابه

به میں اور مسجد کے بغیر مسلمان سے لیے یہ قطعاً ممکن نہیں کہ اپنے مسلمان بھائی سے ساتھ مہر بانی وشفقت سے بیش آئے، اور ان دونوں کی نفوس محبت شفقت ورحمت اور تعاون واتحا دو ہمدردی کی بنیاد ۔ پر ایک دوسرے کا ایسی سا

ا ورکوئی مسلمان اینے یے مصیب سے وقت کوئی دادسی وغمخواری اور گھبراہے ویریشانی کے وقت کوئی اطمینان وسكون كى حكم مبعد كيے علاوہ نهيميں يا ما ـ

یر سید سے بعض وہ اعمال وکا ہیں جونبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی بعثت سے وقت اور آب سے بعدانے والے

حلفاء وحُكام كے زمانے ميں تھے۔

ا وراگرمسلمان پر چاہتے ہیں کہ اپنے اسلامی معاشرول \_ کوہر جگرمضبوط و تھکم بنائیں ،اور سیح راستے اور حجبت و بنیاد پر دہیں اور جبت اور خلی و تعافیت ہیں بہترین قوم بنیں اور بعدیں ہی و چی عزت ورفعیت اور حکومت و مرتبہ اور تشخص قائم رکھ سکیں ہوا بندا ہیں شروع سے لوگول نے قائم کیا تھا تومسجہ کو ہمیشہ اسی معیاد بر رمبنا بچا ہیئے ۔ مربی محترم اکا آپ یہ جانتے ہیں کہ مسجد سے اہم ترین تعاضول ہیں سے یہ سے کہ اللہ سے و کرسے ورسیے قلوب مواطمینان و سکون حال ہو، سنیے نبی کرم علیہ العسلاق والسلام فراتے ہیں ،

ال الما المردت مبر المستح ب رم يه المساه و سن الموسع بن المستح بن المستح بن المستح بن المستح بالمن و المستح بالمن المجنة ف المقعوا حبر تم جنت بن بن المسول الله وما دياض المجنة المستح بالمنع المناع المناء المناء

مرنی محترم ؛ کیاآب جانتے بی کرمسجد سے اہم تقاضول میں سے قرآن کریم کا دس و تدریں ہے ؛ سنیے نبی کریم علیہ العسلاة والسلام ارشا دفرواتے میں :

((ومااجتمع قوم فى بيت من بيوت الله يستهم يستلون كتاب الله ويتدا رسونه بيستهم الانزلت عليهم السكينة، وغشيتهم الرحمة، وحفتهم الملائكة، وذكرهم الله فيمن عندة).

ميم

اور جمین نہیں ہوتی کوئی قوم اللہ کے گھروں میں سے
کسی گھریں، اور بھروہ اللہ کی تحاب کا وہ کری او
اس کوالیس میں بڑھیں بڑھا ئیں مگریہ کہ ان پرسکینت
(اطمینان وسکون) نازل ہوتی ہے، اور جمت ان کو
فرھانہ لیتی ہے، اور فرشت ان کو گھیر لیتے ہیں، اور اللہ
تعالی ان کا ذکرہ ان فرشتوں کے ساھنے کرتے ہیں
جواس کے دربار میں موجود ہیں۔

مرتی محترم!کیاآپ کومعلوم سیے کەسجد سے اہم اغراض ہیں سے حاصت کی نماز ہے؟ الاصطرار کیے نبی کریم صلی اللہ علیہ وہم ارشا د فرما ہے ہیں :

((ألا أدنكم على ما يمعوانله به الخطايا ويرفع به الدرجات؛ قالوابلى يارسول الله إقال: إسباغ الوضوعلى المكارة، وكثرة الخطا إلى المساجد؛ وانتظرار الصلاة لعبد الصدوة

کیامیں تم اوگوں کو وہ چیز نہ تبلاؤں جس سے اللہ تعالیٰ گناہ ہول کو معاف کرستے چیں اور درجات بلندہ لطبے جی جمعاب نے ومن کیا اسے اللہ کے رسول خورس لیے آپ نے ارشا و فروایا کہ تکلیف کے وقت ومنو کا آچ کا رہے ہے ارشا و فروایا کہ تکلیف کے وقت ومنو کا آچ کا رہے ہے کرنا ، اور مجدوں کی جائے ہے ہے کرنا ، اور مجدوں کی جائے ہے ہے کرنا ، اور مجدوں کی جائے ہے ہے کہ نا ، اور مجدوں کی جائے ہے ہے کرنا ، اور مجدوں کی جائے ہے ہے کہ نا ، اور مجدوں کی جائے ہے ہے کہ نا ، اور مجدوں کی جائے ہے ہے کہ نا ، اور مجدوں کی جائے ہے ہے کہ نا ، اور مجدوں کی جائے ہے ہے کہ نا ، اور مجدوں کی جائے ہے ہے کہ نا ، اور مجدوں کی جائے ہے ہے کہ نا ، اور مجدوں کی جائے ہے ہے کہ نا ، اور مجدوں کی جائے ہے کہ نا ہے کہ نا ، اور مجدوں کی جائے ہے کہ نا ، اور مجدوں کی جائے ہے کہ نا ، اور مجدوں کی جائے ہے کہ نا ہے کہ نے کہ نا ہے کہ

جاما اورايك نماز كابعدووسري نماز كانتظاركن

مسجدجا نے آنے اور اس کی طرف ہروقت رجوع کرنے میں جو فوائد ہیں بعنی درجات کی لمبندی اورگنا ہول کی معافی وه اس مصفلاوه مبین ، مل حظه فرمانیسے نبی کرمیشلی الله علیه و کم کا فرمانِ مبا یک :

مستخس في اين كهريس وفنوكيا مجرالتدك كاول میں کے می گھرکی طرف رو نہ ہوا یا کہ و بال التد کے فرعن میں ہے سی فرینے کو او کرے تو س کے قدمور میں ہے میر کیے قدم پر کیگ منا و معاف سی جالب اوردوس بقرم بدایک درج الند والب

ترفع درجةً) . ميخ مم ا ور اس کے علا وہ سجدجا نے برقیامت سے روز کامل ڈکھل نورگی کبشارت دی گئی ہے۔ نبی کریم صلی القدعلیہ وہم كامندرجه ذيل فرمان عالى الاخطه فرمائيه:

تاریخیوں ہیں سجدول کوجا ہے و وراکو قبیا مست کے ور

لابترامشا ئين في انعلم إي المسجد به مؤس المقام بسوم القياصة) . ابوداؤدو تردنى كال وكل نوسك بشارت وس و يجير.

((ص تطهر في بيته شم صني إلى

بيت من بيوت الله ليقضى فربيض يُ

س فرائض المتدكانت خطواته

إحداهب تحط خدستة والأخرى

فذلكم الرباط» -

مرتی محترم امسی ول کی جانب جانے والول اور اس کی طرف رحوع کرنے والول کے لیے ہی کرم کی التدملیہ وسلم كى ان احاديث وخوتخبر بول كى وجهست آپ نوب بمت يجيد ، او پيخته عزم كر كم است يجول كا الله كرك ول ہے ابعد پالارنے کوشش کیجیے تاکہ سجدول میں ان کی ارواح کی تربیت اوعقلول کی صفافی اور نفوسس کی تہذیب وستحرانی ہو۔ اور تھیروہ اس می معاشرے کے افرا دے ساتھ ل کرا پنے اتحاد وو حدت کو ابت کرسکیں. اً كرآب نے ایسا كرليا اوراس دائمی تعلق كا خيال ركھا اور سجد وگھر كا تيلاق دائمی ہوگيا. تومچرآپ اپنے بہتے كی

روحانی ایمانی واخلاقی تغمیر میں انبی مطلوبه خواست کو پہنچ ہوا پئی گے ، بلکہ تھرآپ کا بیٹیاان لوگول میں سے ہو گاحب كى طرب الكيول مصاشاره أباج ما ب الكيار الله الله الله المردن فق اور دان فق اور صاطر متفيم مرقائم الوكار د - بچے کا اللہ کے ذکر سے رابطہ پداکرنا:

> ال کے کہ اللہ تبارک وتعالی فرماتے ہیں: (( فَ ذَكُرُ وَفِي أَذَكُنُوكُ مِ ١٠)، البقره- ١٥١

الربائيهَ عَدِينَ اصَنو آذَكُرُوا الله يُدكُو

سوتم مجدكويا وركهويل تم كوياد ركهول كاء

اسے ایمان والواللہ کونیوب کٹرت سے یا و کرواو

سى وشام اسى ك يج كرتے ريو .

نَشِيرًا ﴿ وَسَبِحُومُ بَكُرَةً وَ أَصِيلًا ﴾ الاحراب ١٩٥٨ الورفر ما يا :

الفَوْاذَا قَصَيْتُمُ الصَّلُوةَ فَأَذَكُرُوا اللهِ قِيلِمًا

وَ قَعُودًا وَ عَلَى جُنُوبِكُمْ ؟) . النسام - ١٠١٠

اوران کے علاوہ آل موضوع سے علق قرآن کرم کی اور دیگیر مہیت ہی آیات مبارکہ ۔

ا ور اس کیے که نبی کریم علیه الصلاة والسلام نیه ارشاد فرمایا و

المشلالذى يذكر ربه والذى لاينكلالله

منسل الحي والميت). مسلح بخاري

اورآب نے ارشادفرایا:

السعان الله أقوامنا يوم المتيامة في وجوههم السورعلى من براللؤلف بغطهم النورعلى من براللؤلف بغطهم الن سلسواب نبيا، ولا شهداء، الن سلسواب نبيا، ولا شهداء، مجتا أعرابي على وكبتيه فقال ايارسول الله حلهم للافعرفهم، قال الاهم المتعابون في الله مست قبال شتى وبلاد شتى يجتمعون على ذكر الله

معجم طبراني

اورآپ نے ارشاد فرمایا:

بندكرونه».

پھر جیب تم نماز میر ہے جگو تو یا دکر و النڈ کو کھراہے اا منتھے اور لیائے ہوئے .

> ایا : این مخص کی مثال جو اوژ کو یا وک

اس مخص کی مثال جو اللہ کو یا دکر کا ہے اور اس کی شال جو، متدکو یا دہسیں کر ہا زیرہ و رمردہ کی ہے۔

التہ تعالیٰ قیامت سے روز بہت کا آفوام کو موتوں کے منبروں پر نور برس رہا ہوگا ان کے بہروں پر نور برس رہا ہوگا سب وگ ان برشک کریں گئے، دولوگ را بنیا، ہول کے منہ برد کھنے کے بل ہور وفن کرنے مرح بیرہوں کے ایک برد گھنے کے بل ہور وفن کرنے کے اسے التہ کے رسول ان کے اوصاف بتا نے تاکہ ہم نہیں جان لیں، تو آب نے ارشاد در ایا ؛ وہ وہ نوگ ہول گئے اسے التہ کے دیوں کے جوالشہ کے لیے باہی محبت کو ستے ہیں اور مختلف فتہ ہول کے لوگ ہیں جوالشہ کے ذکر قبیلوں اور مختلف شہروں کے لوگ ہیں جوالشہ کے ذکر کے لیے بہتے ہیں۔ واکس کا ذکر کرسنے مکتے ہیں۔

بندہ مجھ سے ہیں گمان کر ہاہے میں اس کے ساتھ ولیا ہی برتا ڈکرتا ہوں ، اور حب وہ مجھے یا دکریا ہے تومیں اس سے ساتھ ہوتا ہوں ، بچراگروہ مجھے اپنے دل میں یا دکرتا ہے تومیں بھی اسے اپنے دل میں یا دکرتا ہو اور اگر وہ مجھے تی جماست میں یا دکریا ہے تومیں اسے یہ مامدت میں یا دکرتا ہول جوان سے بہتر ہوتی ہے ، اوراگر

وإن استانی یمشم أتیته هرولهٔ ».

بخارى وتم

وه مجمد سے ایک بالشت قریب ہوتا ہے توس اس کے

ایک بائم قریب ہوتا ہوں ، اوراگر وہ مجمد سے ایک بائھ
قریب ہوتا ہے تو میں اس سے ایک بائر وہ میری طون
پھیلانے کا مقدار) قریب ہوتا ہوں اوراگر وہ میری طون
چلانے کا مقدار) قریب ہوتا ہوں اوراگر وہ میری طون
چل کر آتا ہے تو میں اس کی طرف ود طرکر آتا ہوں ۔

ذکر کامطلب یہ ہے کہ مؤمن کو جو حالات پیٹی آئے ہیں ان سب میں التُرمِل شانہ کی عظمت و مِرَّائی کا استحضار کر ہے جہ استحضار ذہنی ہویا قلبی بفسی ہویا زبانی یافعلی بچاہے کھڑے ہونے کی حالت میں ہویا بیٹھنے کی حالت میں ، لیٹنے کی حالت میں ، لیٹنے کی حالت میں ، لیٹنے کی حالت میں یا زمین پر چلنے کی حالت میں ، قرآن کریم کی آیا ت پر غور کرنے ، یانصیحت سے سننے ، یاللّٰہ کی حالت میں ، یاکسی ایسے کا سے کرنے میں جس سے مؤمن کا مقصد اللّٰہ کی رضا کا مصول ہو، قرآن کریم کی شریعیت مناسبتول پر ذکر سے ہیں کے میں ،

جنانيد ذمنى نفسى ذكرسے بارے ميں قرآن كريم ميں ارشا دے،

الرِجَالُ ﴿ لَا تُلْهِيْهِمْ يَجْارُةٌ وَلَا بَيْعُ عَنْ ذِكْمِ اللهِ وَ إِقَامِرِ الصَّلُوقِ وَإِيْتَآءِ الزَّكُوقِ ﴿ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿ ) • يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿ ) •

اوتلى وَكرك بارس مي ارشادِ ربانى سے: ((اَلَّذِيْنَ) مَنُوْاوَتَظْمَيِنُ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللهِ الله يِذِكْرِ اللهِ تَطْمَيِنُ الْقُلُوبُ فِي ) .

الجيين

ایسے لوگ جنہیں نتجارت فعلت میں ڈائٹی ہے نہ (خریدہ) فروخت اللّٰدکی یا دسسے اور نماز پڑسفے سے اور زکاہ دستے سے ۔ وہ ڈرتے رسبتے ہیں ایسے دن سے سس میں دل اور آنکمیں الش جائیں گی ۔

وہ لوگ جوامیان لائے اور ان کے دل مین پاتے میں اللہ کی یاد سے سے دل مین پاتے کی یاد میں دل مین پاتے کی یاد سے دل مین پاتے

اورقرآن کریم کی تمام وہ آیات بن میں الدُّمل شانہ کے ذکر کا کم دیا گیاہے ان کے ضمون میں نسانی ذکر سب سے پہلے مراد ہوتا ہے اور مکم می اس کا ہو تاہے اس کی مزید تاکیہ صفرت ابو ہر رہے و کر نفلی سب سے پہلے مراد ہوتا ہے اور مکم می اس کا ہو تاہیں اس کی مزید تاکیہ صفرت ابو ہر رہے و منی الدُّر عنہ کی اس صوری ہے جسے ابن ما جہ وابن حبان نے روایت کیا ہے کہ رسول الدُّ ملکہ و کی ساتھ ہوتا ہول جب کہ رسول الدُّ ملکہ الدُّر علیہ و کم میرے و کر سے بیے مرکزت کرتے ہیں ، اور ترمذی مضرت عبدالتُہ بن جب وہ میرا ذکر کرتا ہے اور اس سے ہونے میرے و کر سے بیے مرکزت کرتے ہیں ، اور ترمذی مضرت عبدالتُہ بن بہت روایت کرتے ہیں کہ ایک صاحب نے موش کیا : اے التُہ سے روایت کرتے ہیں کہ ایک صاحب نے موش کیا : اے التُہ سے رسول اسلام سکے احکامات

بہبت زیادہ میں. آپ مجھے کوئی الیسی چیز تبلا و بیجیے کہ جے میں نوب مضبوطی سے تمام لول، تو آپ نے ارشا د منسسرمایا :

تهادی زبان بروقت النُدشے ذکرسے تردہاٰ چاہیے۔ الالايزال ل نك رطباً بذكرالله).

ذكريساني بيس وه تمام ما تور دعا يم سي وال بين جونبي كريم على التُدهليه وللم مصحيح مسند مصروى بين ياصحابه كرام دسى التدعنهم اورسلفن مسائحين رحمهم التدسي مروى بير بنواه ال كاتعلق مبح وشأ كى دعاؤل سيربوء يا كهانا ككلنے اور اس سے فارغ بوسنے کی دعاسے ، وہ سفروا قامست کی دعائیں ہوں یا گھریں وافل ہوسنے اور وہال سے شکلنے کی یا سونے اور جا گئے کی دعائیں ہول یا تہجدا ور دنیا کی مخلوقات کو دیکیھ کر پڑھنے کی دعائیں ہول ،اسی طرح ذکرِلسانی می التُدسية وه فريادرس اوراستغفارهمي واخل ميه حسب كا قرآن كريم مين نذكره سية اور حونبي كريم عليه الصلاة والسلام سے منقول ہے۔

اورفعلی ذکر کے سلسلہ میں قرآن کریم میں ارشاد باری ہے:

الْ فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَوْةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْأَرْضِ وَابْنَغُوا مِنْ فَضَلِ اللهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَائِيْرًا لَعُلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴾ . الجمعه ال

ربوتاكةم فلاح ياؤر اور ذکر سے مومی وکل معنی کے لھا فرسے قرآن کریم میں ارشاد ہے:

(﴿ لِمَنَّ فِي خَلْقِ السَّمُوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَيْنِ وَالنَّهَارِ لَا يُتِ لِلأُولِ الْأَلْبَابِ أَ الَّذِينَ يَذُكُرُونَ اللَّهُ تِعَيْمًا قَ تُعُودًا وَعَلَمْ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْق الشَهٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَـ كَفْتَ هٰذَا بَاطِلًا ﴿ سُبُحْنُكَ فَقِنَا عَدَابَ النَّارِ ﴿ ﴿ ﴾. كُ الْ عمرالن - ١٩٠ و ١٩١

سے بچا پیچے۔

💠 ذكريس قرآن كريم كى تلاوت مجى شامل بهاس اليكدالله تعالى فروات مين :

( إِنَّا نَعَسَنَ مَزَّلُنَا الذِّكُرَ وَإِنَّا لَهُ كُمَا فِنطُولُ )) الحِرِه

ب شک آسمان اور زمین کابنانا اور دات دن کآنامانا اس مین عمل والول سے لیے نشا نیاں ہیں. وہ جمریا دکرتے بیں اللہ کو کھ طریعے اور میٹھے اور کروٹ میدلیٹے ،اور فکر كرسته بي آسمان اورزمين كى پيدائش بيس كهتے ہيں اسے ہمارسے رب آپ نے بیعبث نہیں بنایا،آپ پاک بیں سب عیبول سے اسوم کو دوزخ کے عذاب

بيرحبب نماذيورى بوجكے توزمين برملوبجرو اور

التُدى روزى للمشس كرو ، اورالتُدكو كمبرْست يادكرت

ہم نے یہ نغیمت آباری ہے اور یم ہی اس کے مگہان میں۔

له اذ کارود عاوَل کے لیے مندرج ذیل کتب الاخد فرایش: ۱-۱م نودی ک کتاب الاوکار- ۲-۱م شهید کی کتاب الما تولات. ۲- مشیخ عبدالتد سارج الدين ك كتاب " الأدعية والأذ كار" نيزمولانا تعانوي مصرالتندكي « مناجات ِمقبول " اورمولانا عاشق الهي صاحب كي «مسسنون وعانين « ـ

💠 ذكر مي علم حاصل كرنا اورعلما، ہے پڑھنائھى دائل ہے، اس ليے كەلاند تبارك وتعالى فرماتے ہيں ؛ لا فَ سَالُوا أَهُن الذِّكْوِ إِن كُنتُمُ لا تَعَامُونَ)، ما نبير. . ، ﴿ سُوتُمَ اللَّهِ مَا سِيعِ بِعِ جِهِ ونكيمو كُرتم علم نهيس ركفته . فررسے قصوداللہ کی عبادت ہی ہے اس لیے کہ التد تبارک و تعالی فرماتے ہیں :

(( يَأَيُّهُا الَّذِينَ أَمُّنُوا إِذَا نُودِي لِلصَّلُوقِ مِنْ السَّالِ قِلْ جِبِهِ مِعْدَ عَدِنَ وَالْ كَبِي جِائِدَ مَارَ

يَّوْمِ الْجُمْعَةِ فَأَسْعَوْا إلى ذِكْرِ اللهِ ) الجمعة والحَدِي اللهِ عَلَى الجمعة واللهِ عَلَى المُعامِد و

مرقی محترم! آپ سمجھے گئے کہ ذکر سے کیا مراد ہے ؟ کیا آپ نے بیجان لیا کہ ذکر سسی ایک حالت کے ساتھ خال نہیں ہے، اور اس کامفہوم کسی خصوص معین طریقیہ سے ساتھ مختص نہیں ہے؟ کیاآپ نے محسوس کر لیا کہ ذکر کیا السي نفسياتي حالت بسيجوم كومن كواس مقاً كك يبنيا ديتي سبت كه وه بميشه التدكي عظمت كاستحضار كص

جب آب نے بیرجان لیا اور سمجھ لیا تو تھیراٹ بیر پوری کوشش کریں کہ آپ سے بیھے کی تربیت ان خطوط ومعانی بر بوكرا سے ہروقت النّد كى عظمت كاستحضا ريسبے: ماكروہ اللہ سے نهانی بر معبی ڈرے اور ظاہري طور پر بھي اور اعضے ميھنے بین تعبی اور پیلتے تھے رہے تھی، اور حالتِ سفر بین تھبی اور حالتِ اقامت ہی تھی، اور کو چے کرنے ہیں تھی اور حالتِ سنے ہیں سمى، اورحالت حبَّك مين همي اورحالت إقامت مين همي. اورگھر چين ڪھي اور بازا رمين تھي اور سرحبگر. تاكه وه ان يوگول مي مع بن جائے جن کواللہ تعالی نے اپنے دیج ذیل فرمان مبارک می مرادلیا ہے:

((إِنَّهَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ ایمان واپے وی میں کہ حب امتد کا ٹاگا کے وان کے دل و رہ بیل ، اور جب ان پر اس کا کل میر صاحات ہو ن قُنُوبِهُمْ وَإِذَا تُنْكِيتُ عَنَيْهِمْ وَإِذَا تُنْكِيتُ كايمان رياده بوجا باسے اور وہ ، يغرب پر معبروسہ زَادَ ثُهُمْ إِيْمَا نَا وَعَارَبِهِ مِرْ يَتُوكُنُونَ ).

واقعی اگرالتہ تعالی کا ذکر بیجے میں جاگزین ہوجائے ، اور النہ کی ذات کے مراقبہ کی کیفیت اس میں راسخ ہوجائے توبچه عبادت گزار، نیک صالح اورالند کی طرف رجوع کرنے والا بااخلاق وبا وقاربے گا.اور نیسسی معصیت ہیں گرفیار ہو گا ورنسی فاستہ و ہرائی کا ریکا ہے کر ہے گا،اور ہذکوئی گن ہ کرے گا. اور بخدا ہے میں نقنوی ونیکی کمنتہی ہی ہے۔ واقعی اسلاً کا ترمیت کا نظام اور طریقیه کتناعظیم و ربردست ب .اگراس کی تبلائے بوئے طریقیہ برمرنی جلیب اور

والدین و علمین ان کے قوا مدکولا زم کیزلیس توبہت بڑا کا م ہوسکتا ہے۔

اس كيا اعمر في محترم أآب كوي سيدكه آب ذكر كم مختلف اقسام وانواع ك الن معاني كم مطابق اليف ي كى تربيت كري جن كا تذكره بيل بوج كاب تاكرات كابچه افلاص تقومى الدّجل شاند كم مراقب اورم مالت ين اس كى عظمت سے استحضار كى كيفيت پر راستھ بلے اگر آپ نے برکرایا تو آپ اس منزل مقصود كو پہنچ ہوا بنس سے جو آپ نے اپنے پیچے کی روحانی تعمیراورا میانی واضلاقی تیاری کے سلسلہ میں مقرر کررکھی ہے، بلکہ آپ کا بیٹاان توگول میں سے بن جائے گاجن کی طرف انگلیول سے اشارہ کہاجا تا ہے ،اسس لیے کہ وہ ہابیت اور دین حق اور صرا طِستقیم میرقائم ہوگا۔

٥ - نوافل ك ساته في كاربط بيارانا: اس كي كدالتد تبارك وتعالى فرمات مين: (( وَ مِنَ الْبَلِ فَتَهَجَدْبِهُ نَافِلَةً لَكَ "عَلَى

ان يَبْعَتَكَ رَبُكَ مَقَامًا مُحْمُودًا ﴿ ).

بنی سرایش ۱۹۰۰ اورنبی کریم مسلی التّدعلیه ولم ارشا دفرمات مین :

«. وصن تقرب إلى شبرًا تقرب

إلىد ذراعتا، ومن تقترب إلى

ذراعث القربت إليسه مساعثا، وإذا أقبس ل إلىث يمشمس

اُ قِيلت إليه أهرول».

بخارى وسلم

اوراس ميك كريم صلى التُدعليه ولم فروات مين:

الرمامن عبد مسلم بصلى لله تعالى

فى كل يوم اثنتى عشرة ركعة تطوع

غيرالفريضة إلا بنى الله لدبيًّا في الجند) من لم

نفل سے مراد فرض سے علاوہ مبادت ہے۔ بس سے بیہت مناسبات ومواقع ہیں، اوراگر ہیں ا ہینے مرنی بھائی کونفل نمازروز سے کی اہم اقسام یاد دلاد دل تواس میں کوئی مضائقہ نہیں ہے۔ تاکہ وہ خود بھی اس برکل کرے اور اپنی

اولاد اورابل وعيال كوجى اسكامادى بنائے:

الف - نفل نمازي

ا ـ بيعاشت كى نماذ: ال ليه كدام مسلم حضرت ابوذرض النّدعنه مه روايت كرت بي كدرسول النّعاليّة

علیہ وسلم نے ارشاد فروایا : علیہ وسلم نے ارشاد فروایا : تم میں سے مرشخص کی مربول کے جوڑ برایک صدقہ داجب مہوجاتا ہے، اور اس کی طرف سے دہ دورتیں کفام

اور کھی رات قرآن کے ساتھ جاگتے رہے ، یہ آپ کے لیے زیادتی ہے ۔ قریب ہے کہ آپ کا پروردگار آپ کو مقام محبود میں کھڑا کر دسے .

(الشرتعال فراتے ہیں) اور جو خص مجھ سے ایک بالشت فریب ہوتا ہوں فریب ہوتا ہوں ایک باشد اس کے قریب ہوتا ہوں اور جو ایک باشد میرے قریب آتا ہے ہیں ووثوں باتھوں کے ورمیان کے فاصلہ کے برابراس کے قریب آتا ہوں اور حب وہ میری طرف میل کرآتا ہے تو میں اس کی طرف دو قریب کراتا ہوں .

کوئی ایسامسلمان بندہ نہیں جوالٹد کے لیے ہردوز فرص کے علاوہ بارہ دکھات نفل بڑھے مگریہ کہ اللہ تعالیٰ اس کے لیے جنت میں ایک گھر بناتا ہے۔ كرتى بين جوتم من سے كوئى شخص چاشت سے وقت برمعانے۔

ا دراہ مسلم مضرت عائشہ رضی اللہ عنہا ہے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرمایا: رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم چاشت کے وقت چار رکعات پڑھاکرتے تھے ،اورجتنی چاہیٹے رکعات کی تعدا دبڑھا لیاکرتے تھے۔ چاشت کے وقت چار رکعات پڑھاکرتے تھے ،اورجتنی چاہیٹے رکعات کی تعدا دبڑھا لیاکرتے تھے۔

پرطھ لے تب مجی کافی ہے۔

۳- تعیب المسجد: اس ایر که ام مسلم حضرت الوقاده رضی الله عندسے روایت کرتے بیل که رسول النه مالة علیه مسلم حضرت الوقاده رضی الله عندسے روایت کرتے بیل که رسول النه مالة علیہ ولم نے ارشاد فرمایا ، حب تم میں سے کوئی شخص مسجد میں داخل بروتواس وقت تک زبیٹے حب تک دورکعت زبیٹے سے کہ دورکعت زبیٹے سے کہ دورکعت زبیٹے سے کہ دورکعت زبیٹے سے کہ دورکعت نہیں ہے۔

ا ورُسلم مصرت جابر ضی الله عندست روایت کریتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ و کم نے ارشاد فرایا: اِت کواکیک این گھوی ہوتی ہے کہ جسے کوئی مسلمان آ دمی ایس حالت ہیں نہیں یا اگروہ دنیا و آخرت کے امور میں سے کسی خیر کومانگ ہومگر ریکہ اللہ تعالیٰ اسے وہ عطافر مادیتے ہیں اور یہ معاملہ ہررات کو مواکسے۔

اور ترمنزی حضرت ابوامامه رضی التُدعنه سے روایت کرتے ہیں که رسول التّمسلی التّدعلیه ولم نے فرطایا : رات

کے قیام کولازم بکپڑواں لیے کہ یہ نیک وصالح توگول کی عادت ہے،اور بیسب تمہارے رب سے قریب کرنے کا ذرلیہ ہے، اور برائول کاکفارہ ہے، اورگنا ہول سے روکنے والی ہے۔

تہجد کی کم از کم تعداد دور کعتیں ہیں ۔ اور زیادہ کی کوئی حدیمیں ہے ، نوافل ہیں سب سے انضل تہجد کی نماز

ہے اس کے کہ اس میں اخلاص زیادہ ہویا ہے۔

<u>۹- نما ذ تواویم بحسب کی بیس کعتیں دس سلامول سے ساتھ رمضان کی ہردات کو بڑھی جاتی ہیں، تراویج</u> عشار کی فرض نمازے بعد مجاعدت سے ساتھ پڑھی جاتی ہے، اس لیے کہ بیقی مصرت سائب بن بیزید دختی الٹرعنہ سے روا بہت کرستے ہیں کہ انہول نے فرمایا: وہ حضارت (صحابہؓ) حضرت عمرین خطاب دخی اللہ عندسے دور میں دم ضال میں سیس رکعات بڑھاکرے تھے،اورسوسوآیتیں بڑھتے تھے،اورحضرت عثمان رضی اللہ عنہ کے دور میں طولی قیام کی وحبه سعده معا (مجومی) برهبک نگالیا کرتے تھے۔

٤- نماز استغاری دور تعتین پره کروه و عابرهی جاتی ہے جسے حضرت جابر منی الله عند نے روایت کیا

ے اور بخاری نے تقل کیا ہے۔ سے الفاظ برین : ٱللَّهُ مَّ إِنَّى أَسُمَّخِيرُكَ بِعِلْمِكَ وَٱسْتَعَدِلْ بتتئترتك وكشتكك جن فضلك العظيب فَإِنَّكَ تَفْتِدِمُ وَلَا أَقْدِيمُ وَلَّهُ أَكُمُ كُلُّا أَكُمُ كُلُّا وَائْتُ عَلَّامَ الْغُيُوبِ اللَّهُ حَرَانُ كُنُستَ نَعُلَمُ اَنَّ هَـٰ ذَاالْاَمُرَ خِسَارًا لِيَّا فِي دِيرِي نَعُلَمُ اَنَّ هَـٰ ذَاالْاَمُرَ خِسَارًا لِيَّا فِي دِيرِي وَمَعَسَاشِى وَعَاقِبَةِ أَمْرِئُ فَافْتُدُرُهُ فِئ وَيَشِدُهُ لِحِبُ ثُمَّابِابِكُ لِيُ فِهُ وَارِ. كُنْتَ تَعُلُهُ لَكُمُ أَرِ: ﴿ هَٰ فُاالْأُمُونِشَدُّ لِي فِحْثُ دِنِنِيُ وَمَعَاشِىٰ وَعَافِبَةٍ أُمُرِى فَاصُرِفُهُ عَنِيُ وَاصُرِفَنِي عَسَنُهُ وَافُتُدُمُ لِحَبُ الْخُنُيرَ عَيْسُثُ ڪَادَ تُستَد مَصِّنِيُ بِهِ \*

اسے اللہ بیں آپ سیشٹورہ کر انوں آپ سے علم میل کے ذرایعہ سے اور میں آپ کی قدرت عظیمہ سے قدرت الملب كرتا بول ، اورمي آب سيدآب كي فليم فعل كا سوال كرّ ما بول، اس ليدكه آپ قادر بي ميكسى جيزي قادرنهين اورآب مانتين مينهين مانا اورآب غيب ببلنن وله يمين اسعالتُداكرآب يه جانت بير كربركا كمير اليمير وين اور دنيا اورانجا كا ك كالديب بهترب تواسيمير سي لي مقدر فراديج اوراس كوميرسه ليرآسان فرما ويبجيه بمجراس مير میرسے لیے برکت وسے دیجیے ، اور اگرآپ پرسمجھتے یں کہ یا کا میر<u>ے بیے</u> میرے دین و دنیا اور انجام کارکے لحاظ سے باہے تواسے محدے میروی اور مجعے اس سے جروی اورجبال مجى خير بيواس كومير المسيد مقدر فراوي، مير محيد اس برراضي كردي .

دعایں جب خط کشیدہ انفاظ ھنڈ االگؤش پر پہنچے تو (دل میں) اس نٹرورت کانا کے لیے سے لیے سب کے لیے استخارہ کر رہا ہے۔ استخارہ کر رہا ہے۔ کے طرف طبیعت کا انشراح ہووہ کر سے نتواہ اس کام کے کرسنے کی طرف طبیعت کا انشراح ہووہ کر سے نتواہ اس کام کے کرسنے کی طرف طبیعت کا انشراح ہو یا اس کے چیوٹر نے کی طرف ہ

٨ - نماز حاجت : دو كعتيس بره هي جاتي بي تجران كي بعد مندر به ذيل منون وماثور دعا برهي جاتي ب:

٨ ـ ٨ الحاجك ، (رور به به به به الحقائق الله الله الله المقاه المعليات الكولي الكولي المعلق الله الله المعلق المعل

اسے اللہ میں آپ سے سوال کرتا ہوں اور آپ کی طرف آپ کے نبی محد کی انٹر علیہ وہم ہی رحمت کے ذرایعہ متوجہ ہوتا ہول، اسے محد (صلی انٹر علیہ وہم) ہیں آپ کے ذرایعہ متوجہ ہوتا ہول، اسے محد (صلی انٹر علیہ وہم) ہیں آپ کے ذرایعہ اسپنے دب کی طرف ابنی حاجب و نزوت میں متوجہ ہوتا ہوں "کرمیری حاجت یو ری ہوجائے۔ اسے الٹران کی سفارش میرے لیے قبول فرا لیجے۔ اسے الٹران کی سفارش میرے لیے قبول فرا لیجے۔

((الله عَرَبِي أَسَالُكَ وَأَتُوحَبُهُ إلك ك بَشِيت مُحَدَّ لَهِ نَبِي الرَّحْدَةِ يَا مُحَدَّمَّ لُوا إِنِي تَوجَّهُ تُ يِهِ الرَّحْدَةِ يَا مُحَدَّمَ لُوا إِنِي تَوجَّهُ لَتُ يَهِكُ إِلَى دَلِيَّ يَا مُحَدَّمَ لُوا إِنِي تَوجَّهُ لَتُ يَهِكُ إِلَى دَلِيَّةً عَاجَمِي لِيُقَطَى لِحِثُ اللَّهُ مَدَّةً فَشَقِعُهُ فِي اللَّهُ مِن اللَّهُ مَدَّةً فَشَقِعُهُ فِي اللَّهُ مِن اللَّهُ مَدَّةً فَشَقِعُهُ فِي اللَّهُ مِن اللَّهُ مَدَّةً اللَّهُ مَن اللَّهُ مَدَّةً اللَّهُ مَدَّةً اللَّهُ مَا اللَّهُ اللْمُعْلِي اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلِي اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُ اللَّهُ الللَّهُ اللْمُعْمِلُولُولُولُولُولُولُولُولُولُولُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُعَلِيْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُعَلِيْمُ اللْمُعَلِي اللْمُلْعِلَيْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُلِلِي الْمُعْلِمُ اللَّهُ اللْمُعْلِمُ الللْمُعُلِيْ

> ہ ب ۔ نفل روزے :

نفل روزه کی دلی وه روایت ہے جسے امام سلم نے ابنی سیمے میں حضرت ابوسعید ندرسی رضی التُدعنہ ہے روائی سیا ہے کہ نبی کریم سلی التُدعلیہ ولم نے قرمایا: التُدکا کوئی الیا بندہ نبیس جوالتُہ کے اِستے میں ایک دن کا بھی روزہ سکھے مسلمہ سے کہ بیکرے کہ التُدتعالی اس کے جیبرے کوجہنم ہے سیستر سال دور فرما دیتے ہیں

## روزيه کی جہت سی اقبا ) وانواع میں:

ا . عدف (فوس ذوالعجد) كاروزه: السيك كمسلم حضرت الوقاده رضى الترعنه سے روایت كرتے ہيں كم نبى كريم سلى الله عليه ولم نے ارشاد فرمايا :عرفہ كے دل كاروزہ . مجھے الله سے اميد ہے كہ اس سے ايكسسسسال پہلے اور ايك سال بعد كے گناہ معاون ہوتے ہيں ۔

ع - عامشورا، ( دس محرم) اور نوم عدم کاروزی: ای لیے کہ سم حضرت قادہ دشی اللہ عنہ سے دوایت کھتے ہیں کہ عاشورا، ( دن محرم) اور نوم عدم کاروزی: ای لیے کہ سم حضرت قادہ دنی اللہ عنہ کے گئاہ معال میں کہ عاشوراً ، کے دن کاروزہ، اللہ سے مجھے امید ہے کہ ای سے ایک سال قبل وایک سال ابعد کے گناہ معال معاب موتے ہیں ۔

ا ورحضرت ابن عباس رئنی الته عنها رسول الته سلی الته علیه تم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے فرمایا ، اگر ہیں آئندہ سال زندہ رہا تو نوم م کا بھی روزہ رکھول گا . یہ بھی درست ہے کہ عاشورا ، سے ساتھ گیارہ محم کا روزہ رکھولیا جائے بیا کہ آئندہ مسندا حدکی روایت ہیں آرہا ہے ، اور اس ایک اور روز سے سے ملانے کی حکمت یہ ہے کہ میہ ودکی مخالفت ہوجائے ، تاکہ امت اسلامیہ اپنی عبادت ہیں دوسرول سے ممتازیہ ، امام احمد نبی کریم کی الته علیہ ولم سے روایت کر ہے ، اور اس سے متازیہ کا روزہ کے دوایت کر ہے ، اور اس سے ایک روزہ بھوا کا روزہ کھوا در میہ وکی مخالفت کرو، اور اس سے ایک روزہ بھو۔ کا روزہ رکھویا اس سے ایک روزہ رکھو۔

۳ ۔ شوال کے چھ دوزہے: اس لیے ک<sup>س ن</sup>م حضرت ابوا یوب انصاری ضی التٰدعنہ سے دواہت کرتے ہیں کہ نبی کریے ہیں کرتے ہیں کہ نبی کریے کی میں کا بیار ہیں کہ نبی کریے کی کا کہ میں کا بیار ہیں کہ میں کہ نبی کریے کی التٰدعلیہ وقم نے ارشاد فرمایا جس شخص نے دمضان سے دوزے درکھے ہواس سے بعد چھ دوزے ماو شوال سے دستھے تو یہ ایسا ہے کہ گویا بورے سال بھر سے دوزے درکھے ۔

مع۔ایا استین کے تابن دو ذہبے ؛ اس لیے کہ ترمذی حضرت ابو ذرینی النہ عنہ سے رہ ایت کرتے ہیں کہ رسول النہ عنہ سے رہ ایت کرتے ہیں کہ رسول النہ علیہ وسلم نے ارشا دفر اللہ عبید ہیں ہین دن سے روز سے رکھو تو تیرہ چودہ اور بندرہ تاریخ سے ایز سے دکھا کہ و

٥- بيد اور جمعدات كا دون ١ : اك ليه كرترمذى روايت كرسته بي كرنيم على الترعليدونم ال دو دنول كه روزيت كرسته بي كريم على الترعليدونم ال دونول كه روزي من كريم على الترعليدونم ال دونول كه روزي من كريم المرابي المرابي المرابي المربيط المربيط

اے ایا بین چاند کے ہرمہینہ کی تیر ہوں چودھویں اور پندرھویں تاریخ کو کہتے ہیں، ان کوہین اس لیے کہتے ہیں کہ ان ونوں میں آسان چاند کی دوشنی سے دکیش ہوتا ہے۔

۲ - ایک و ن دوز د دکهناا ورایک و ن افطارکونا : دلین دوزه زدکهنا) استصوم داؤدی کهتے ہیں اسس سے کر بخاری حضریت عبدالتُدین عمرضی التُدعنبها سے رہے ایت کرتے میں کدرسول التُدصلی التُدعلیہ وسلم نے ان سے فرط یا که ایک دان دوزه دکھوا *درایک ا* فط*ادکرو دلینی روزه نردکھو) یبی حضرست داؤدعلیہ انسل*ام کا دوزه سینے اور ب<sub>ه</sub> افعنسس ل ترين روزه ہے۔

اس کے علاوہ اوروہ دن اورمینیے جن میں روزہ رکھنا امادین سے بابت ہے۔ یا درسے کہ چیخص نفل روزہ ر کھے تواس کے لیے سی وجہ سے روزہ افطار کرناجائز ہے البتہ اس کی قضا رکھنا واجب ہے۔

يه وه ايم نوافل بي جن كالعاديث مباركه سي شورت ملّا هيد. اورسيان عظيم نيك كامول بي سي بي جوبنده كو التٰدتعبا لے سے قریب کرتے ہیں اور اس کے نفس میں تعوٰی کا احساس اور نقیمیٰ کی طمانینت اور ایمان کی ملاق

ال ليه احدر في محرم إآب يكوش كيميك آب نود است عمل سن كول كه ليه شاندار نمون بيش كري، اور خود نفل نماز وروز ہے کو اختیار کریں ناکہ وہ آپ سے سیھیں اور آپ کی اقتدار کریں، اور اینے عمل کے ساتھ ساتھ ان کی رہنائی بھی کریں اور نیدوموعظت اورنصیحت بھی کریں ، اس لیے کہ نوافل کے اجرو ٹواب حاصل کرنے اورنوافل کوعل میں لانے کی دعوت دسینے سے آپ دکیمیں سے کہ آپ سے اہل وعیال اور بیے نفل نماز وروز سے سے عادی بنیں گے، اور مخصوص اوقات اور مخصوص و نول میں ان نوافل کو ملی طبیق دیں گئے اور ملی جامہ پہنائیں گے۔

بخدا نوافل <u>سے ساتھ</u> یہ ارتباط <u>بیمے</u> کی ایمانی وروحانی شخصیت سازی اورانولاتی و نفسیاتی تیاری سمے بر<u>ش</u>ے عوامل یں سے ہے ملک میں وہ چیز ہے جو بیچے میں انعلاص تقوٰی ،الٹر کے مراقبے کی کیفیت پیدائرتی ہے اور مبرطالت میں اللہ کی عظمت سے ستحضار کا باعث نبتی ہے۔

ا ہے مربی محترم! اگرآپ نے بیکرلیا توآپ اس منزل مقصود کو پہنچ جائیں گے جو روحانی ربط اور ربانی شخصیت ای سے پیے طلوب ومقصود بیے۔ بلکہ آپ کا بچہ ان لوگوں میں سے بن جائے گاجن کی طرف انگلیول سے اشارہ کیاجا آ ہے اس ييكه وه وايت اوردين عن اورصاط مستقيم مرقائم موكا.

و- بيح كاالتُدتناكُ مِل شانه سيم القبه سيدربط بِيلارنا: اس كيه الله تعالى فرمات بين :

> ﴿ الَّذِيْ يَرْنِكَ حِنْيَنَ تَقُوْمُ ﴿ وَ تَقَالَٰبُكَ فِي الشيجينين ﴿ ) • الشعارد ١١٨ و٢١٩

> > اور فرمايا :

جو آپ کو دیکھنا ہے جب آپ کھٹرے ہوتے ہیں اور نمازیو<sup>ل</sup> كے ساتھ آپ ك نشست وبرخاست كود كھتاسہے -

(( وَهُوَمَعَكُمُ أَيُنَمَا كُنُتُكُمُ ). الحديديم اورارشاد فرمایا :

لاإنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَى عَلَيْهِ شَنَى ۚ فِى الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ: ) . الرِّمران - ٥

اوراك ليه كريم عليه الصلاة والسلام فرطت ين :

الاالإحسال أن تعبدالله كأنك تراء

ف ون سراه ف ناه يراك». فيحصمهم

ادر ارشاد فرمایا :

. لا اتق الله حيثماكنت ، وأتبع السيئة العسنة تمعها ، وخعالت النس بخلق حسن». جامع ترمذی

اورارشا دفرمايا:

«الكيس مست دان نفسه وعمس ل لما بعد المسويت، والعساجسون أتبع ننسب هواها وتمنىعلى ادلك

الأصالخي». جامع ترندي

ا بسيم رئي محترم! حبب آب ابينے بيے سے ساتھ يراسلوب اپنائيں سكے، اور اس كي دل كى گہاريُول ميں مراقبہ محاسبه اورتقوٰی کے بیج بو دیں گے۔ اور اس کو ہرکام میں اللہ کے مراقبہ اور ہرسوچ بچار میں اپنی نفس کے محاسبہ ،اوراحسال وشعوريس التُدكية تونى كوسامن ركھنے كا عادى بنادي كے توجيروہ اپنے تمام اعمال واقوال اورتمام تصرفات ميں مرف التّدرب العالمين كے ليے يوسے اخلاص سے كام كرنے كى تربيت پائے گاا ور يحروه كوئى نيست اوركوئى كام بھى اللّٰدكى مفاکے علاوہ اورسسی غرض ہے زکرے گا۔

اور وہ تمهارے ساتھ ہے خواہ تم کہیں تھی ہور

الله برحینی مسیس کوئی چیز زین میں اور بذ آسم*ان میں* ۔

اخلاص یه به یک تم الندی عبادت اس طرح کروکدگویا تماسے دیکھ رہے ہو۔ اور اگرتم اس کونہیں دیکھ رب تووه توتم كود كميري رباب.

تم جہاں معی مواللہ سے دروء اور مرائی کے بعد اجمائی كرلياكرد اسس برائي مث جاتى سے، اور لوگوں كے ساتھ الچھے انولاق سے بیٹیں آؤ۔

عقلمندوه سيت جوابنى نفسس كامحاسبه كرسي ا ودمرني کے بعد کی تیاری کرے۔ اور عاجز دہ منص ہے جواینی نفس کوخواستات کے بیجیے لگا وسے اور اللہ سے امیدوآرزوئش نگائے بھار ہے۔

قرآن *کریم کی* آیات اوراحا دریث نبویه سے اس مجموعے سے میعلوم ہوتا ہے کہ اسلام نے مبلان فرد کی تربیت کا اس بنیا دیرانتهام کیاب که اس مین طاهرًا و بالمناالله کے مراقبے کی کیفنیت پیدا ہو، اور برحرکت وسکون میں اپنی نفس کا محاسبه كريس، اوراقامت وسفر دونول حالتول مي التدكي در كومحكوس كريسه

اس طرح وہ ہراچھے پاکیزہ شعور کی ترببت یائے گا. بلکہ وہنس کے آفات سے بیج جائے گا بھیرنہ وہ حسد کرے گا. نرکینه رکھے گا. زمینل خوری کرے گا. اور زفان حقیرات یا مسے فائدہ اٹھائے گا. اور اگرا سے کوئی شیطانی خیال یا نفسِ امارہ کانفسانی کچوکہ سکے گاتووہ فورایہ یادکرسے گاکہ اللہ تعالیٰ اس سے ساتھ سبے، اس کی باہم مجی سن رہا ہے۔ اور است دیکیمیمی رہاہیے، اور فورًا وہ صاحب بصیرت اورنصیحت حاسل کرسنے والابن جائے گا:

(( إِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا إِذَا صَسَّهُ مِ ظَيِفٌ صِّنَ جَن كَ ول مِن وُربِد جِهِال النربرُ كَياشيطان كا

الشَّيْطِن تَذَكَّرُوْا فَإِذَا هُمُ مُّهُ حِرُونَ ﴾ الاعزان ٢٠١ گزريونك گئے مجراسى وقت ان كوسوج آجاتى ہے -

اس مسقبل اس تربیة الاولاد کوتسم انی کی "ایمانی تربیت کی ذمه داری "کی بحث بی ہم یہ ذکر کرتھے ہیں کرالترمل شانہ سے مراقبے کا اس طرح سے عادی بنانا پرسلف صلحین کی عادیت اورطرلقیہ تھا، لیجیے ہم آپ سے سلمنے اس سے پہلے ذکر کردہ مضرب مہل بن عبداللہ تستری کا واقعہ بیان کیے دیتے میں جسے الم غزالی سفے" احیارالعلوم" یس مکھا ہے بھے مصرت مہل بن عبداللہ تستری فرواتے ہیں کہ بیت مین سال کا تھاا در رات کو جاگ جا آیا تھا اور اپنے مامول محمدين سَوَّار كونماز را صفة د كيمة اتها ، ايك دن انهول في محصه سے فرمايا : كياتم استفاس الله كويا ديہيں كرتے جس نے نمہیں پیداکیا ہے ؟! میں نے بوچھا؛ میں ا<sup>س کو</sup>کس طرح یا دکروں ؟ انہول نے فرمایا : حب تم ایسے استر پرماؤ توزبان بلائے بغیردل میں مین مرتبہ بیکہاکرو:

الشُّدمير بيراته ب. الشُّه مجعه ديكيد رباب. التَّدمير مشابده كرربإ بيء

أَلِلْهُ مَعِمِ ، أَنلُهُ كَا يَلِيهِ ، أَنلُهُ شَاهِدِيُ .

میں نے یہ کہنا شروع کردیا بھیریں نے انہیں یہ بات تبلائی توانہوں نے فرمایا: اب ہررات کوسات مرتبہ يه كلات كهاكرو . بي سف سات مرتب كنبا شروع كرديد بهران كوتبلايا توانهول نے فرمايا بيمي كلمات سردات كوگياره مرتبہ کہ اکرو، میں نے گیارہ مرتبہ کہنا تنہ وع کرنسیہ اور معیر میرے دل میں ان کی شیر بنی اثر کر گئی، حبب ایک سال گزر گیا تومیر۔۔ یمامول نے مجھ سے فرمایا : میں نے تمہیں جو تعلیم دی ہے اس کو یا در کھناا ورمرتے دم تک اس پر ماو کرنا، اس ہے جہیں دنیا واخرِت دونول میں فائدہ پہنچے گا، میں کئی سال تک اس پرمدا ومت کرتا رہا توئیں نے اسس ک علاوت اینے باطن میں محسوس کی بھرابیب روزمیرسے ماموں نے مجھ سے کہا اسے ہمل تبلاؤ حب سے ساتھ اس کا خدا ہرو<sup>ت</sup> موجود ہو. اور وہ اسے دیکید را ہو اور اس کامشاہرہ کررہا ہو، توکیا ایسا شخص اس خدا کی نافرمانی کرسکتاہے ؟! اس لیے تم معصیت وگنام ول سے بھتے رہنا۔

اس صیح رہنمانی افرسنتقل مثق اور برحق ربانی ترسیت کی وجہ سے مضریت مہل رحمہ اللہ اللہ سکے نیک بندے ا وربڑے عارف بالٹدین سکتے۔ علامدا ممدرفای رحمدالتدانبی محتاب "البربال المؤید" بی<u>ں مکھتے ہیں ک</u>خشیت خدا وزیری کی وجہ سے السان اپنا محاسبہ کرتا ہے اور محاسبہ کی وجہ سے مراقبہ کی توفیق ملتی ہے اور مراقبہ کی بدولت انسان مہینشد اللہ تعالیٰ سے سے ا مشغول رمتیا ہے۔

اس کیے اسے مربی محترم آپ پر کوشش کریں کہ آپ خود بھی اور آپ سے ابل وعیال بیوی بیمے اللہ سے ڈرل مراقبہ کریں ، اور آپ انہیں اپنے نفس سے محاسبہ کا عادی بنائیں اوران کی نفوس میں تقوٰی وُنٹیست نوا و ندی کوجاگزی کر دیں ، آپ جب پر کرلیں گئے تو بھر آپ اپنے اہل وعیال وا ولا دکی روحانی تربیت اور رہائی شخصیت سازی میں نزلِ مقصود کو پہنچے چکے جول ہے بلکہ آپ کا بیٹیا ان لوگول میں سے بنے گاجن کی طرف انگلیول سے اشارہ کیا جا تا ہے اس لیے کہ وہ ہوایت اور دین تِق اورصراط مِستقیم برِقائم ہوگا ۔

مسلمان کے روحانی ربط اورایمانی واخلاقی تعمیر کے کیے اسلامی نبیج و نظام کے بیاہم اصول و قواعد ہیں، اور یہ حقیقت ہے کہ اگر شروع ہی سے بیج کا تعلق اللہ تعالی عبادت سے قولاً دعلاً، اور قرآن کریم کی تلا و سے سنفور ذکار کے کا طاست اور ساجد سے اربار صامنری دینے اور آنے جانے کے کاظ سے قائم کردیں گے اور اللہ کے ذکر سے سنقل دوائمی ربط ہرکا اور انوائل نوافل کو اواکر تا ہوگا اور اندائم کے اپنامی اسکرتا ہرگاتو لامحالر ہجہ صاف دل. رقمن میں ہوگا اور ایمان وافلائل سے متصف اور ورع وتقوی میں معروف اور نوشوع و خصوع اور اللہ رب العالمین کی طب رف انابت و توجب میں ممتاز ہوگا ۔

اس بے تمام مزیول کو پہاہیے کہ اسلام کے روحانی تربیت سے اسس نظام کو بچول میں نافذ کریں تماکہ وہ لوگول میں نمایال وممتاز شخصیت بنیں اور روئے زمین بہ چلنے والے فرشتول کی طرح ثابت بہول، اس سلے کہ انہول نے اپنی نفوس میں ایمان و تعوٰی و مراقبہ کے اصول جاگزین کر سیے ہیں، اور اہینے دلول میں خشیت الہی اور توکل و محاسبہ کی بنیادی راسنے کرلی ہیں، اور میرا خیال یہ ہے کہ یہ اصول وضوابط اور یہ بنیا دی قوا عدیجے کی اخلاتی اصلاح اور معاشرتی تربیت اور نفسیا تی و قعلی دستگر کے اہم عوال میں سے بیں محنت کرنے والول کواس طرح کے طراحیت برمنت کرنا چاہیے۔



### کے فکری ربطہ وارتباط © فکری ربطہ وارتباط

نکری دبطرسے مقصود بیسیے کے کہسلمان جب عقل وشعور کی منزل میں قدم رکھے تواس وقت ہے لے کرنو جوائی اور میں توجوائی اور میں توجوائی اور اس سے بھر کال مرد بننے تک اس کا تعلق دین وسکو مست سے اعتبار سے اسلامی منظام سے ہی ہو، اور اس سے بیے کہتورو شریعیت قرآنِ کریم اور منبع اسکامی اور نظام علومِ شرعیہ مول. اور اس کا مقتدی وروح اسلامی تاریخ، اور اس کی ترقی و تہذیب اسلامی ثقافت ہو، اور اسلامی دعوت و تبلیغ کا نظام اس کا طبح نظرا و مقصودِ اسلامی ہو۔ اسلامی ہو۔ اسلامی ہو۔

عقلی تربیت کی ذمہ داری کی بحث میں ہم بعض وہ تھائق بیان کریکے ہیں جوم بڑیول کواپنے بچول کی فکری تعمیر کے سلسلہ میں انعتیار کرناچا ہیے ، اوراب ہم ان کو مختصر العبض اورنقا طرسے اضافہ سے ساتھ بیان کرتے ہیں ،اسلیے کہ ان کا ہماری سالغة تحریرا وراب جو ہم بیان کریں سے اس سے ساتھ بہت گہرا تعلق ہے۔

## وه حقائق تربتیب وار سیمی:

ا -اسلام کا بری اور سرحگر و سرزماز کے لیے صلاحیت رکھنے والا ہونا، اس لیے کہ اسلام ایسے امتیازی امو مشتل ہے جومیط اور دائمی اور ابری ہیں .

۔ ۱- پیدلے زمانے سے والدین سے سورت وقوت اور ترقی کی چوٹی کوپہنچے ہیں وہ صرف اس لیے کہ انہول نے اس اسے کہ انہول نے اس اسلام سے ذراعیہ عزمت حاصل کی اور قرآن کریم سے ننام کی طبیق دی اور اس کونا فذکیا۔

۳-۱س اسلامی تہذیب سے پردہ مہانا ہوٹنہ وع سے اب تک تمام دنیا کے لیے روشن مینارہ کا کا کہ دے۔ رہی ہے ، اور اس کے نورسے مخلوق خوا ہوایت ماسل کر رہی ہے اورصد بول اورطوبی زمانے کے گزرنے کے باوجود مجی اس کے شیمۂ فیصل نجش سے میرانی ماسل کر رہے ہیں۔

م - ان سازشول كوبين تقاب كرناجوا عدار اسلام اسلام كيفلا ف كرست رسيت بين :

مكارىيېودىيت كىسازشىس.

ظالم وغاصب استعمار کی سازشیں <sub>-</sub>

کے فکری ربد میں ماریخی ارتباط بھی وال ہے ،اور قراع کومیہ ارتباط وہاں نمایاں معلوم ہوگا جہاں بم فکری ارتباط سے کسلسلہ میں گفتگو کری گئے س بیے کہ دونوں میں نہایت گہراتعلق ہے .

محدشیوعیت (کمیونزم) کی ساز<sup>ش</sup>یں۔ کین*ه پرود ماسدعیسا*ئیت کی سازشیں۔

ان سازشول و منصولول کامقصدر قسے زمین سے اسلامی عقید سے اوراس سے نام و نشان کانتم کرنا، اور سلمان معاشر سے میں ان اور سلمان نواز انوں میں آزادی و بے راہ روی کو عام کرنا، اور سلمان نوجوانوں سے معاشر سے میں انحاد سے بیجا دومدافعت کی درج متم کرنا، اور ذاتی اغراض افر صحصی منافع کی نماط مسلمان ملکول کے مال سے فاکدہ اعمانا، اور مجر عالم عربی وعلم اسلامی برقب مند کرنا ہے۔ آگرتم مسلمان ہمیشہ سے لیے ان سے محکوم وما تحست اور ان کے ملکول کا ایسا ہوں بی نماط میں جو کم میں ان سے الگ و حداز ہموسکے۔

۵۔ ہمیشہ یہ بات یا دولاناکہ امت مسلمہ ونیا ہیں اپنے کھوئے ہوئے مقام ومرتبے اورعزت وکرامت کی بولی کو اس دقت کے بینی سکتی جب تک اسلام کو اپنا قانون وننظام ، اور قرآنِ کریم کو اپنا وستورومنبی اسکام زبنا ہے ، اور جب تک حضرت عمروضی اللہ عنہ کا فرمانِ مبادک ذیل اپنے سامنے نہ رکھے اور اسے اپنا شعار و بنیا دی نقطہ ذبلاہ ، جب می وہ قوم ہیں کہ بہیں اللہ نے اسلام سے ذریعے عزیت عطافرائی می توالٹ مہیں ذلیل ہی جب بھی اس سے بغیر ت عطافرائی می توالٹ مہیں ذلیل ہی کرے گا۔

اور معض مضارت کایہ قول کتناعمدہ ہے کہم سلمان تاریخ کے صفحات ہیں ابوہبل، ابولہب والی بن خلف کی وجہ سے مفحات ایخ وجہ سے نہیں مکھے گئے ، بلکہ ہم قورسول عربی صلی اللہ علیہ وہم اور صفرت ابو کمبر وعرضی اللہ عنہا کی وجہ سے صفحات این کے کی زینت بنے ہیں ، اور ہم نے ہوفہ تو صاحت ماصل کی ہیں ، اور ہم نے ونیا پر سبع معلقات کے ذریعہ حکومت نہیں ، فقومات جنگ بدر ، قادسیہ ویر موک سے ذریعہ حاصل کی ہیں ، اور ہم نے ونیا پر سبع معلقات کے ذریعہ حکومت نہیں کی جگہ ہم نے والی میں منازی میں ہول کا بنیام نہیں بہنجا یا جگہ ہم نے لوگول کوالت وعزی نامی بتول کا بنیام اور قرآن کریم کی بنیا دی باہیں بہنجا فی ہیں ۔

ہے علاوہ کسی اور سے بگریہ کر اللہ تعالی الن پران کے ڈیمن کومسلط کر دیتا ہے اور کھپروہ الن کے ہاتھ ہیں جو کچھ ہے اسے ختم کر ڈا لیتے ہیں ، اور کوئی قوم آیسی نہیں کہ وہ اللہ کی کتاب اور سندت نبوی کو چھوڑ دسے مگریہ کہ اللہ تعالی ان کو ہام دست وگریبان کر دسیتے ہیں ۔

، بهیشه بربات یاد دلاتے رہاکہ دیمن خواہ کتنی ہی سازشیں اور کافر کیسے ہی منصوبے کیوں نربالیں مگر یہ کوئن استعبال اسلام ہی کا ہوگا اس لیے کہ ایک میسی حدیث ہیں جے الم احمد و بزار وطیاسی نے روایت کیا ہے یہ آت ہے کہ : تمہارے دین کی ابتدا نبوت ورحمت سے ہوئی ہے ، اور حب تک اللہ تعالی چاہے تم ہیں ہی کیفیدت ہر قراریہ کی بھراس (نبوت) کو اللہ علی شاخاتھا نے گا بھر نملا فت علی منہاج النبوة (نبوت کے طرز پر نملافت) ہوگی ، اور جب تک اللہ تعالی چاہے گا بھر کا فت میں منہاج النبوة (نبوت کے طرز پر نملافت) ہوگی ، اور جب تک اللہ تعالی چاہے گا بھر کا طرف کھا نے والی بادشا ہت ہوگی ، اور جب تک اللہ تعالی چاہے گا ور جبری بادشا ہت آجائے گی ، اور جب کی ، بھراس کو اللہ علی است الحقائے گا اور جبری بادشا ہت آجائے گی ، اور جب کی ۔ اللہ بھا ہی کہ سنت پر عمل کریں گے اور اسلام روئے زمین پر جر کم گر سے کہ اور اس دو زملافت قائم ہوگی ، اس وزمین کو رشی کو اللہ است اللہ است کا مگر سے کہ است بر عمل کریں گے اور اسلام روئے زمین پرجو کم مگر سے کہ است برسا و سے گا ، اور زمین ان وزمین کے بسنے والے داختی ہوں گا گی ، اور اسلام کا ایک قطرہ بھی نہیں چھوڑے گا مگر سے کرما دسے برسا و سے گا ، اور زمین ان کے اللہ کو اللہ کا ایک قطرہ بھی نہیں جھوڑے گا مگر سے کہ است برسا و سے گا ، اور ایر نوب اللہ کے اللہ کی کی مقدم کے بسنے والے داختی کو کا کی گا کی کا ایک قطرہ بھی نہیں جھوڑے گا مگر سے کہ است برسا و سے گا ، اور اور کر کتوں سب کو نکال ڈالے گا ۔

بی مریت سے بیمعلوم ہوتا ہے کہ جبری حکومت کا اُب دوراً چکا ہے اوراس کی نشانیوں اورعلامتوں ہیں ہے بیہ بہت سے انقلابات ہیں جوانقلاب لانے والوں کوقوم کی مرضی ورائے اور خواہ تن کے بغیر مسند بھومت ہک پہنچا ویہ ہوائیں ہے بیا ہوائیں ہوائیں ہے بہت ہے جب کی ابتدار کال انا ترک نے ترکی ہیں کی بھراس کے بعد ہر طکہ بیقصد مہل بڑا ایکن اسلامی شعور کی بیاری کی علامات سے بیمعلوم ہوتا ہے کہ مصورت حال زیادہ دیر یک نہیں چلے گی اور عنقریب وہ وان دوبا و اوٹ اوٹ ایک میں کی تحکم اسلام کے طریقے کے مطابق ہوگی امید ہے کہ بیاد قت تائم ہوگی، اورلوگول کی زندگی اسلام کے طریقے کے مطابق ہوگی امید ہے کہ بیاد قت قریب ہی آجائے گا ان شاراللہ تھا لی ہوگی۔ اورلوگول کی زندگی اسلام کے طریقے کے مطابق ہوگی امید ہے کہ بیاد قت قریب ہی آجائے گا ان شاراللہ تھا لی ہوگی۔ اورلوگول کی زندگی اسلام کے طریقے کے مطابق ہوگی امید ہوتا ہے کہ بیاد قال ہے کہ بیاد قریب ہی آجائے گا ان شاراللہ تھا لی ہوگ

۵۰ ای مهلک ترین نظریہ سے بمیشہ ڈراتے رہنا جویہ کہا ہے کہ بوکچہ بونا تھا ہوگیا اور ہم تو عا جز ہو پیکے ہیں۔ اس لیے اپنے گھر تک مصور پر ہو، اس لیے کہ اب جدو جہ پومونت اور جہا دسے کوئی فائدہ حاسل نہیں ہوگا، آپ خود دیکھے یہجے کوشے مرآن کریم ہمیں اس مایوس کرنے اور رکا ولمیس کھوئ کرنے والی جا عدت سے درج ذیل الفاظ سے فرسایعے ڈرار ما ہے :

التدتم میں سے ان لوگوں کوخوس جانیا سیے جوما نع

﴿ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَالِيلِينَ

له دا منظر برو بماري مخاب وحتى بعلم الشباب كى محدث سياسى جهاد "كاخر عد -

لِإِخْوَا فِرْهُ هَلُمْ النَّيْنَا وَلَا يَأْتُوْنَ البَّاسُ إِلَّا قَلِيلًا ﴿ اَنِتُحَتُهُ عَلَيْكُ الْمَا فَا الْمَاكُ الْمُوْفُ قَلِيلًا ﴿ اَنِتُحَتُهُ عَلَيْكُ اللَّهِ فَا الْمَاكُ الْمَانُ الْمَاكُونُ وَلَا عَبُنُهُ مُ كَالَّذِي الْمَوْتِ فَا ذَا وَهُبَالُهُ كَالَّذِي الْمُوْتِ فَا ذَا ذَهُبَ الْمُؤْفِقُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْفِقُ عَلَى الْمَوْتِ فَا ذَا ذَهُبَ الْمُؤْفِقُ اللَّهُ اللْهُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُ اللْمُؤْمُ اللْمُؤْمُ اللْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمُ اللْمُؤْمُ اللَّهُ اللْمُؤْمُ اللْمُؤْمُ اللْمُؤْمُونُ الل

ہوتے ہیں ، اور جو اپنے ہما ہوں سے کہتے رسبتے ہیں کہ ہما رسے پاس آجا وُ ، اور یہ لوگ را اُلی ہیں تو بس نام ہی کو آتے ہیں تمہار سے حق ہیں نہیں (ہوکر) مجرجب کو فَی تعوی بہتے ہیں کہ وہ آپ کی طرف بہتے ہیں کہ وہ آپ کی طرف اس طرح دیکھنے ہیں کہ ان کی آئی میں مکرائی ہماتی ہیں ہو ہے ہیں کہ ان کی آئی میں مکرائی ہماتی ہیں ہو ہے ہوت کی بے ہوشی طاری ہو بھر جب وہ نعو و در مجو باتا ہے تو تمہیں تیز زبانوں سے معدند دیتے ہیں ۔ الل (خنیمت) پر حرص لیے ہوئے ۔ یہ لوگ ایمان ہی نہیں الل (خنیمت) پر حرص لیے ہوئے ۔ یہ لوگ ایمان ہی نہیں لائے جانی کہ النہ نے ان کے اعمال بیکا کر دیکھ ہیں ۔ لائے جانی کہ انتہ نے ان کے اعمال بیکا کر دیکھ ہیں ۔

الإحزائيد - ١٨ و19

ا در رسول اکرم ملی الله علیه ولم مجمیم بین اس جماعت سے خبرداد کر رسبے ہیں جوسیاسی وجہا دسے میدان ہیں آگے بڑھنے بین مسلمانوں سے لیے رکا وسلے نبتی سبے چنانچہ ارشا و فرماتے ہیں ، جوخفس پرکہا سبے کہ مسلمان بلاک ہو گئے تو وہ ان سب ہیں زیا دہ بلاک ہوسنے والا ہے۔

. اور پیچیے ناریخ کامطالعہ کر پیچیے وہ سیم بات نقل کرتی ہیے،اوران مہبک حوادث کا ذکر کرتی ہیے جو پیچیلے زمانول میں مسلمانول کو پہنچے سین نتیجہ کیا نکلا ؟

الف نه بیبائی جب بہت میں ممالک اور سجد اِقعلی پرایک طویل زمانے تقریباً ایک صدی تک برسراقتداریہ تواس وقت کون پر گمان کرتا تھاکہ سلمان دوبارہ اپنے پاؤول پر کھوسے ہو کر برسراقتدار آجا میں گے ؟

کون پر گمان کرتا تھاکہ یہ ممالک عنقر بیب عظیم ہما در قائد سلطان صلاح الدین ایوبی کے ذراعیہ فیصلہ کن جنگ جلین میں آزاد ہوجا میں گے ، اور مسلمانول کو بھروہ قوت عزت اور مرکز رہت نصیب ہوگی ۔ جوتار سمنے کو روشن کر دیے گئی۔

ب رخب بخولیول اور تا تاریول نے عالم اسلامی کوایک میانب سے دوسری جانب تک تباہ وبرباد کردیا اور جانول مالول اورعزت کولوٹما توکول بیسوچ سکتا تھاکہ سلمان دوبارہ عزمت حاصل کرس ھے ؟ تا اریول نے ایسی قبل وغارت گری کی تھی کہ کہا جاتا ہے : ہلاکو نے مسلمانول کی کھوپر لویول سے ایک بلندوبالا پہرسا مرکم طوا کر دیا تھا۔

ت کون بیم شاتھاکے ظیم بہا در قطر سے ذرلعہ فیصلکن عین جالوت کی جنگ میں عنقریب اسلامی مملکت آزاد ہوجائے گی اور تعیم سلمانوں کووہ عزت وظیمت، بلندی وسیادت حاصل ہوگی حبس پر آنے والی قومیس

*فزکری* گی ـ

کامیابی کی نیک فال لینا کامیابی کا پیش خیمه مرقی ہے، اور مرقوم وامست بمی معنوی قوت ایک ایسا ہی باعث ہے جو قومول اور خوانول کومزید کامیا بیول وفتوحات حاصل کرنے کی جانب وصکیلیا ہے اور ہماری اس باست کا سب سے بڑا شاہ خود آریخ ہے۔

مرنی محترم! بیہ وہ حقائق بیں حواب کوا پنے اہل وعیال اوز بچول کومبی وشا کی سکھانا چاہیںے اور مہیشہ بیر جیزیں ان کے گوش گزاد کرتے رہا چاہیے ، اکر سب سے سب بیک فال لینے والی تحرک نفوس اور مضبوط وعالی ممبول اور راسخ الایمان قلوب سے ساتھ اسلام کی جانب اٹھ کھڑے ہول ۔

مبرے بھائی ! میں آپ کو بینوش خبری دینا چا ہا اہول کہ اگرآپ نے بچول کی یہ اسلامی ذبن سازی کردی اور روحانی وفکری ربط قائم کرلیا اور اربخی و ثقافتی یا دو ہاتی سے کا کیا توآپ بھیلیں کہ فکری طور پڑپول کا اسلام سے ربط تھینی ہوگا اوروہ وجوانی اور شعوری طور پر الٹری طرف دعوت دینے والول کی جاعت میں شامل ہول کے ،اوروہ اسلام کی پیش کردہ شروی اور نظام کو دستور اور نظام ہنجھیں گے،اور نبی کریم علیہ العمل ہ والسلام کے سواکس کوامام ومقائد نہیں بنائیں گے ،اور وہ جو ہے پروپگیٹ ٹرول اور کھوتی سوم اور گھراہ کن باتول اور ملی دانہ و کا فرانہ عقائد سے متاثر نہوں گے ،

مربی محترم! یہ اس وقت کا نہیں ہوسکتا جب کا کہ آپ ان توگول کے لیے جن کی تربیت آپ کے فرمہ سیے ایک ایسا تھر بلوکت نواز مہیا نہر دین سیس میں مختلف قسم کی دینی، فکری تاریخی ادبی کہا نیول قصول اور وعوت اسلام سیستعلق بڑے میں محتلف قسم کی دینی، فکری تاریخی ادبی کہا نیول قصول اور عالم اسلام کے علمار کی گتابیں موجود ہول ، یم ختلف قسم کی کتابیں اسلام کواک کی اصلی اور میچے صا فت تھری شکل میں اس طرح پیش کریں میں طرح اسے ہما رہے ہی اکرم سلی اللہ علیہ والم سیسی محتلی اور میں طرح اسے ہما رہے ہی اکرم سلی اللہ علیہ والم میں اللہ عنہم آبھیں نے سمجھا تھا ، اور میں طرح اس بر ہما رہے سلف صالحین اور ان کے بعد والول نے ملکیا تھا۔

مرنی محترم! آپ جب بھی کوئی گاب خرید ناچاہیں تو اس سے خرید نے سے بال اس دور سے مخلص علما، اور وعوت اسلامی سے تعلق رکھنے والے سپی بلغین سے مشورہ کر لیا کیجیے ، تاکہ الیا نہ ہوکہ آپ سے گھریں کوئی ایسی گاب داخل ہوجائے بس کانام اسلامی ہوا وراسلامی بحوث وجذبہ سے علق ہولیکن اس کامصنف سنشر قین واہل مغرب کی ان افکار سے مثاثر ہوجو وہ اسس میدان میں بھیلا تے رہتے ہیں، وہ مصنف ان افکار کو حقائق سمجھ کر رکھ بیٹھے مالانگر مقبوٹ کا بلندہ ہول ، اوران کا اسلام سے کوئی تعلق نہ ہو، وہ صنف یہ سمجھ کران کونقل کر دے مقبقت میں وہ بالکل مجبوٹ کا بلندہ ہول ، اوران کا اسلام سے کوئی تعلق نہ ہو، وہ صنف یہ سمجھ کران کونقل کر دے

که ملافطه بوسماری کماب" حقیعلم اشهاب کی مجت بعنوان "سیاسی جهاد" -

که وه بهبت اچها کرر باسبے حالانکه حقیقت حال سے وہ بے خبر ہو جیسے که احمدانین ،طانسین حبین مبیل ،خالد محمد خالد محد فرید وجدی . حبلال الدین الکشک وغیروا وران کے علاوہ دسیول آدمیول نے کیا ہے۔

مرنی محترم! وہ وسائل جوآپ کے بیچے کو فکری ووجدانی طوربراسلام سے مرتبط کرسنے والے ہیں،ان میں سے دینی وعظ و تقاربر کا سننا اور محفوس قسم سے محاضارت و تقاربرا ور بامقصد تاریخی بروگرامول کا دیکھناتھی ہے۔

اس کے اس سے اسے مرقی محترم آب کو جا ہیے کہ آپ جمعہ کی نماز کے لیے مناسب بحد کا انتخاب کریں، اور آب کا انتخاب اس وقت تک اجھانہیں کہلائے گا جب تک دُخطیب واعظ نہایت مخلص وتنقی اور بجعد اراوراسلاً کولوری طرح سے بجھنے والا اور ما فرب انداز کا مالک اور تہذیب و ثقافت اور زندگی سے تعلق رکھنے والے توادثات کا بوراعلم نہ رکھتا ہو تاکہ اس سے پوراپورا فائدہ اٹھا یا جا اور اس سے سنفید ہونے والے سب منشا پوراچھل ماصل کر کسی ۔ فرکھتا ہو تاکہ اس میں محترم آب کوشش کریں کہ تقاریر و محافرات سننے سے لیے مناسب ملکہ اختیا رکم ہیں ، اور آسمیں آب اس وقت تک کا میاب نہ ہول گے جب تک کر مقرر و خطیب مضبوط اور راسخ اسلامی عقیدے کا مالک اور کا لل وقت تک کا میاب نہ ہول گے جب تک کر مقرر و خطیب مضبوط اور راسخ اسلامی عقیدے ، عالم ، ثقافتہ اور انتخاسلامی عقید تھی مالی ، ثقافتہ اور وکلی اسلامی افراق کا نمونہ نہ ہوتا کو عقید مالی میں ہو کچھ وہ کہ رہا ہے اس کا اس سے عقید تھی مالی ، ثقافتہ اور فکری طور سے ربط ہو۔

مربی محترم! آپ کوریمی گوشش کرنا چاہیے کہ بامقعد پردگرام کے سننے کے لیے مناسب جہت کا انتخاب کریں اور یہ اصحاات خاب کریں اور یہ اصحاات خاب کریں ہوں ہے جہت کا انتخاب اس وقت ہے ہے ہے دور نہو، اور یہ انتخاب اس وقت تک مغید نہیں ہوسکتا حب ہے کہ یہ ڈرامسہ و بردگرام اربخ و براسے دور نہو، اور یہ انتخاب اس وقت تک مغید نہیں ہوسکتا حب ہی کہ یہ ڈرامسہ و بردگرام اربخ و براسے لوگوں سے کارنامول پرشتل نہویا اس جامل دور کا وافتی نقشہ نہ کھنچے بس میں مسلمان اسلطے سے یہ جاری اور کا مادور و مرادر ہیں سیدھے ہتے ہا وک ماریسے ہیں. لیکن اس ڈرامہ وغیرہ سے لیے شرط یہ سے کہ جواس کے کرتا وحر بااور ذمہ دار ہیں وہ تق بااضلاق ، شراحی و باکر دار ہول ۔ تاکہ اس پردگرام و ڈرامہ سے مقعبہ اصلی حاصل ہو، اور لوگ اس سے دہ فائدہ ان مالی سے سے کہ جواس کے کہ اس سے دہ فائدہ ان کا سے دہ فائدہ ان کا سے دہ فائدہ ان کے سے سے کہ جواس کے لیے اس پردگرام کو تر تیب دیا گیا ہو۔

بیھے کے فکری ارتباط وتعلق اوراس سے ایمانی اورعقیدے سے لحاظ سے کمیل سے سلسلہ بیں یہ وہ اہم وسائل ہیں

جویں اینے مربی محترم سے لیے پیش کرنا جا ہتا ہول ۔

ا وربخدا اگراآپ اپنے بچے کے ساتھ اس طریقے کو اپنائیں گئے اوراس انداز کو اختیار کریں گئے تو بیے میں ایمان کی ایس ایمان کی ایسی قوت اور عقیدہ کی ایس بختگی بدا ہوگی جو اس کو جا لمبیت سے دیٹین تصورات و افکاراور کمراہی والحا د کے میلنج اور غلط نظر ایت کا مقابلہ کرنے کا اہل بنا دے گی بکہ وہ ان تمام زمینی نظاموں پر غالب آجائے گاجولوگوں نے ایجا دیے ہیں ،اس لیے کہ التٰد کا دین اس سے تصور واعتقاد ہیں سرعقیدو تصورسے بالاتر ہوگا ، اور آپ بی تبلائے کریتین وایمان رکھنے والول سے لیے اللہ کے حکم سے بہتراورس کا حکم ہوسکتاہے ، اس کا مطلب یہ ہواکہ آپ کا بہتہ اوروین بھو اللہ ہے کا بچہ ایساعظیم بن گیا ہے کہ بس کی طرف انگیول سے اشارہ کیا جاتا ہو ، اس لیے کہ وہ مرابیت اور دین بحق اور مراطمت تعیم پرقائم ہے۔

# صعاشرتی ارتباط <u>ا</u>

کتاب تربیة الاولاد کی تم بانی کی معاشرتی ترسیت کی ذمه داری کی بحث بین تم پہلے یہ بیان کرسے بین کہ مربیوں پریہ برای ذمه داری مائد موتی سے کہ وہ بچول کوشروع ہی سے شاندارا سلامی معاشرتی آ واب کا پابند بنائی مربیوں پریہ بڑی فضیں اصولول کا عادی بنائی جن کا مرجیتم ابری اسلامی عقیدہ سپے اور جو گہرے برا دراز شعو سے وجود میں آتے ہیں تاکہ بچہ اسلامی معاشرے ہیں تن اضلاق ، برا درانه معاملہ ، معاشرتی آ داب ، عقلی بنگی اور حکیب نہ انسانی تصرفات میں بہتری شکل وصورت میں ظاہر ہو۔

مم في ال وسائل كوجواعلى ترين معاشرتي ترسيت كا ذرابعيه بنت بين جارامورس محصور كرد إيد، الماندار نفسياتي اصولول كوماكرين كرنا.

٢. دوسرول سيحقوق كاخيال ركهنا.

۳ - عمومی معاشرتی آ داب کولموظ رکھنا۔

۸ .معاشرتی د کمهرمجال ا *در نقد و نقید* .

مرنی محترم! آپ بریدبات قطعاً منفی نه بوگی کدان وسائل سے بیچے سے چال تلین اورا خلاق کی در تنگی بوگی . اور اس بی معاشرتی ذمه داری اداکرنے کی صلاحیت بیدا بوگی ، اوراس کی نفسیاتی شخصیت سازی بوگی تاکہ وہ شاندار ما اس معاشرتی دم داری اداکرنے کی مجتری بنیاد کا کام دسے سکے . اور عمدہ معاشرے کی عمارت کی بہتری بنیا نابت بو ، اصلاح معاشرہ اوراس کی تعمیر کے سلسلہ بیں اسلام کا یہی اسلوب ہے سکین اب جبکہ بم معاشرتی تربیت اور اس کے وسائل پرتفصیل بحث کر بیکے بی تواب یہ سوال بیدا ہوتا ہے کہ معاشرتی ربط سے کیا مقصود ہے ؛ اور معاشرتی طور بربیے کے اتباط کا تربیت سے کیا تعلق ہے ؟ ہم اس بحث میں ال تمام سوالوں کا جوا ، دیں گے . اللہ ہی سیمی لوہ وکھا نے والا ہے اور اس را بطہ وار تباط کا تربیت سے کیا تعلق ہے ؟ ہم اس بحث میں ال تمام سوالوں کا جوا ، دیں گے . اللہ ہی سیمی لوہ وکھا نے والا ہے اور اس سے بھم مدد سے طالب بین ۔

پھے سے معاشر سے سے ارتباط سے ہماری مرادیہ ہے کہ مربی یہ کوشش کر سے کہ جب سے چیزول کی حقیقت سے واقف ہومائے تواس کاتعلق ورابطہ الیسے صاف تھرسے معاشرتی ماحول سے پیدا کر دسے س سے بچہ انی نفس کا تذکیہ ، اور قلب کی ملہارت ، اور ایمان پین صنبوطی ، اور عقل کے لیے علم نافع ، اور کردار کے لیے افلاقِ فاضلہ ، اور کتھ کے اور کردار کے لیے افلاقِ فاضلہ ، اور حکے لیے حبم کے لیے حبم کے لیے جبا دِ مساوق ، اور دوح کے لیے رہائی نور ، اور دین سے لیے ایمانی حوارت ویز ہے ماسل کرے کے ۔

سوال به پیدا بو اسپه که معاشره میں ایساا جھا وصالح معاشره کون ساسپے بس سے بچہ انھی اور عمدہ صفات ماسل کرسکے اور حواس کوا بک سمجدار نیک صالح مثالی انسان بنا دے۔

ميراخيال سيه كدائر تمن تتم سك تعلق ورابط بيداكر دسيد جائي توييجير عال بوسكت بهد:

١- نيڪ كاپيروم راف سي رلط .

۲ - بیچے کا انجی صحبت سے ربط ۔

٣ - بيكے كا دعوت وتبليغ اور داعيول سيدربط م

# © بيح كابيرومرشد سير بطويعلق

کوئی بھی دوا دمی اس سے اختلاف نہیں کریں گے کہ اگرنچے کاملق کی الیے نیک سالے مخلف پیروم شہرسے قاگم کردیا جائے جواسلام کی حقیقت سے باخبرا دراس کے بیے ممیت وغیرت رکھنے والا، اوراس کی فاطر جہا و کرنے والا، اوراس کی حدود واسکام کونافذ کرنے والا، اور اس سے احکامات پرعامل اور منہیات سے رکنے والا ہو، اور تق بات کہنے میں اسے سسی ملامت کرنے والے کی پرواہ نہ ہو، توکوئی مجی اس بات سے اختلاف نہیں کرے گاکہ ایسا بچرا میانی وافعاتی انتہارے کامل مکمل ، اور علمی عقل لحاظ سے بخیری، اور جہاد ودعورت سے لحاظ سے پورا پورا تیار ہوگا، اور جمومی طور سے وہ راسخ عقیدے اور کامل اسلام پرتر بہیت مامل کرے گا۔

سیکن اگریم دائی بائین نظر دوٹرانگن ،اوران لوگول کے عالات پرنظرڈالیں جونفوٹس کی تربیت اوراصلاح وارشاد کا بیٹرہ اٹھائے بیں توہمارے سامنے کیآ آیہ ؟

۔ بیر اسے افسوس سے کہا پڑتا ہے کہ ان میں کی اکٹریت اپنے شاگردول اور مریدول سے سامنے اسلام کی مسخ سٹ رہ اورائٹی صورت بین کرتی ہے یا بھروہ اسلام کا صرف ایک مضوص پہلو پیش کرتے ہیں ، اور دو مرے پہلوول ' یونظرانداز کر دیتے ہیں ۔

اسلام کا خلط اور خلاف واقع جوتصور به مصارت میشین کرتے ہیں اس کی شال ان سے درج ذیل اقوال ہیں:

- 🖈 اسلام میں نظام محکومت کا ذکر نہیں ہے۔
- \* سالک ومربیر کے لیے سیاست میں وخل دینا جائز نہیں ہے۔
- \* اسے مریداگرتم اینے شیخ کوئسی گناہ میں مبتلا دیکھو تومہیں اسے میں نیکی شمارکر نا چاہیے۔
  - 🖈 شغ دبیرنا فرمانی ومعصیت میں گرفتار نہیں ہوسکتا اس لیے کہ وہ محفوظ ومعصوم ہے۔
- \* مریدای وقت تک برائیول سے پاک صاف اوراچھائیول سے آراستنہ کی بروسکتا، اورالٹہ تک بہتے ہے مسکتا حب بہتے سے سکتا حب بیک سے است اپنے ہم جرم مرکناہ اور برائی کا عتراف نرکرے۔
- \* مردداگراہیے شیخ کے سامنے ہرچیز حتی کہ ول میں آنے والے برے نیالات کامی اقرار نہ کرے تواسس کی بعیت ٹوٹ جائے گی
- اس کے علاوہ اس قسم کے اور دوسر سے خیالات جوشر لعیت ِالنہیہ کے خلاف اور نبطام اسلام کے برکس ہیں۔ اوران لوگوں کی مثالول میں سے جواسلام کے ایک بہلوکو لیے لیتے ہیں اور دوسر سے بہلوؤل کو ھپوڑ دیتے ہیں چند ہیں :
- بین اور ایمی باتول کا مکم دینے اور برائیول سے روکنے اور مالا زور نفس کی اصلاح اور اس کے تزکیہ برٹرے کوئیے بین اور ایمی باتول کا مکم دینے اور برائیول سے روکنے اور ظلم وظالمول کامتعا بلرکر سنے کا فرلینہ چھوٹر جیھتے ہیں۔
- ان ہیں۔ سے تعفی کوگ ایسے ہوئے ہیں جواسلامی منظہراور روحانی شخصیت سازگ اور عبادت کا توخوب اتہا کا کرتے ہیں۔ کا توخوب اتہا کا کرتے ہیں۔ کا کو خوب اتہا کا کرتے ہیں۔ کا کہ کرنے کے لیے مغیب اعمال کرتے ہیں۔ کو بالکل جوٹر بیٹھتے ہیں ۔
  کو بالکل جوٹر بیٹھتے ہیں ۔
- ان میں سے تعبض لوگ ایسے میں جوسال زور دعوت الی النہ اور تبلیغ پر خرج کر ڈالتے میں کی کئی ایک ایسی تخریب یا نشاط یا ممل سے ان کا قریب یا دور کا بھی واسط نہیں ہو تا ہواسلام کی مکومت قائم کرنے کا ذریعہ بنے ،اوران میں سے تعبض ایسے میں ... یہ بات یا ور کھنا جا ہیے کہ اسلام ایک ایسی کی چیز میں جے ہوئے بڑی (جزرجز مہوسنے) کو قبول نہیں کرتا ، اوراسلام کے تشریعی احکام الگ الگ ہونے اور کھولے محرورے ہوئے کو قبول نہیں کرتا ، اوراسلام کے تشریعی احکام الگ الگ ہونے اور کھولے محرورے ہوئے کو قبول نہیں کرتا ، اوراسلام کے تشریعی احکام الگ الگ ہونے اور کھولے محرورے ہوئے کو قبول نہیں کرتے اللہ تعالی فرواتے ہیں :

(ر) فَتُوْفِئُونَ بِبَغُضِ الْكِنْ وَتَكُفَّرُ وَنَ بِبَغْضِ الْكِنْ وَتَكَفَّرُ وَنَ بِبَغْضِ الْكِنْ وَتَكَفَّرُ وَنَ بِبَغْضِ الْكِنْ وَتَكَفَّرُ وَنَ بِبَغْضِ الْكَنْ وَتَكَفَّرُ وَنَ بِبَغْضِ الْكَنْ وَتَكُفُّ وَتَكُفُّ وَنَ بِبَغْضِ اللَّهُ وَيَوْمَ الْفِيلِ عَلَى اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللللْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللللْمُ ال

اس کیے مرتب ربانی اور میں بختہ عالم وہ ہے جواسلام کا پورا کا ل مکل مونہ بیش کرے اس کے لیے یہ قطعًا مائز نہیں ہے کہ وہ التہ کے دین سے بال کرنے میں کسی بات کو جیبائے باحق کہنے میں سکوت اختیار کرے . یا برانی کو د کمید کر تیم پوشسی کرے، یا پینے فریفے سے اداکرنے میں ستی برتے. یا کسی بات کو اس کی جگہ سے شاکراس میں تحریف کرے، یا نمسی انسان سے ڈرسے میکسی با دشاہ وسربراہ یامرتبہ والے سے ساتھ مُمُاشاۃ کرسے اوراک کا ساتھ دسے اور مدا سنست کا ثبوت دسے یاالتٰد کے بسی حق کے سلسلہ یں کوئی بات کہ سکتاہوں کین خاموسٹس رہے، اگروہ ان میں سے سی بات کامر کمب ہوگاتووہ التٰہ کی نازل کردہ آیات بینات اور ہوایت کو حیبایے والا ہوگا، بلکہ وہ ان توگول میں ہیے ہو گاجن کی طرف قیامت سے روز التُّدتعالى نظرِرمنهيں فرمائيں گھے۔ اور نه ان کا تزکيه فرمائيں گے، بلکہ ايساآ دمی ان لوگوں میں سے ہوگاجن پرالتّٰدا ور لعنت كرسف والصلعنت بمعيمة مي التدتبارك وتعالى كارشادس،

> (لِإِنَّ الَّذِيْنَ يَكُنُّهُوْنَ مَثَا ٱغْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَى مِنْ بَعْدِ مَا بَيِّفُ فُلِلنَّاسِ فِي الْكِتْبِ أُولِينَكَ يَلْعَنْهُمُ اللهُ وَ يَلْعَنَّهُمُ اللَّعِنُونَ ١ إِلَّا الَّذِيْنَ تَتَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُواْ فَاوُلَّيِكَ أَتُونُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِينُمُ - )).

البقره - 149 و١٢٠

اورفرایا:

﴿ إِنَّ الَّذِينَ يَكُتُمُونَ مَّا أَنْزَلَ اللَّهُ صِنَ الْكِتْبِ وَ يَشْتُرُونَ بِهِ ثَنَمَنَّا قَلِيْلًا. أُولَيْكَ مَا يَاكُنُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَيِّمُهُمُ الله يُومَ الْقِيْمَةِ وَلَا يُزَرِّكُنِهِمْ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ

به شک جونوگ چپلتے ہیں جو کھیم سے آبادے صاف مکم اور مادیت کی بآمی اس سے بعد کرم ان کولوگوں سے واسط كماب مي كعول حك ان يرالتُداهنت كراب ادر ان پرلعنت کرتے ہیں لعنت کرنے والے بھرجنہوں نے توب کی اور اینے کا کودرست کیا اور حق بات کوبانی كرديا توان كومعاهت كرتابول، اوريس برامعات كرنے والانبايت مهربان بوب.

ب تک جولوگ جھیاتے ہیں جو کھے اللہ نے کتاب نازل ى اوراس يرتمعورًا سامول يستة بيس وه اسيف بسيث كو نہیں بھرتے مگراگ، اوراللہ ان سے بات نہیں کو كا قيامت كے دن اور ذان كو ياك كرسے كا، اور ان

کے لیے دروناک عذاب ہے۔ اور سول التصلى التدعلية ولم في سراس خص كوبهم كالكر بسه درايا بيح كرك اليي بات كوجيبا يحب سد دين كافائده ببنجابو، يادين ميعلق كسى لازمى حق چيزكو بايان كرسني سكوت اختيار كرسه اورجهنم بهبت برامه كانسه، چنانچه ابن ما جرحضرت ابوسعید خدری رضی الندعنه ستے روایت کرستے ہیں که رسول الندسلی الندعلیہ و کم نے ارشا و فرایا چسب شخص نے کوئی ایساعلم چیپا یا حب سے اللہ تعالیٰ دین سے معاصلے میں فائرہ پہنچاستے ہوں تو قیا<sup>م</sup> مست سے *روز* 

### اس شخص کواگ کی لگام پہنائی جائے گا۔

گذشته زمانول میں جن مخلص مرشدول اور ربانی علمار نے اصلاح ، ترسیت وارشاد اور تزکیۂ نفوس کا ہیرا اسلامی اسلامی کی میں اسلامی کی میں اسلامی کا میں اسلامی کی میں اسلامی کا میں اسلامی کا میں اسلامی کا میں اسلامی کا میں اسلامی کی میں اسلامی کا میار کے میں اسلامی کا میار کا میار کی کا میار کا کا میار کا میار کا میار کا میار کا میار کا میار کا کا میار کا کا

## ر باان کا شریعیت برگل کرنا در قرآن کریم دسنت نبویه کولازم بکرنا . تو اس سلسله بن جمیس وه الفاظ سن لینا چا سیسے جوان انمهٔ ومرشدین اور علماء ربا نبین سے بڑے حضرا کہد کھیں :

\* عادف بالتُدَيْن عبدالقادرگيلائى رحمدالتُدائى كتاب الفتح الربائى (ص ٢٥٠) پر الكھتے بيل : مبروہ جيزاور حقيقت جس كي شرفيت شها دست نه ديتى بو ، وه زندقہ ہے، تم التُه الله كا نه كل طرف تحاب وسنت كے بازوسے الحكوم پنجو ، الله كے دربار يس الي مالت بيس وافل بوكه تمها لا باتھ رسول التُه سلى التُه عليہ فيم كے دست مبارك بيں بو ۔ الله كے دربار يس الي مالت بي ، عبا دات كا جيور نا زندقه و گرابى ہے ، اور منوع چيزوں كا ارتكاب كرناگناه ومعميت اور فرماتے بيں ، عبا دات كا جيور نا زندقه و گرابى ہے ، اور منوع چيزوں كا ارتكاب كرناگناه ومعميت ہوئے .

\* خضرت سهل تستری رحمه الله فرائے بین: ہمار سے طریقے سے سات اصول بیں: الله کی کتاب کو مفہوطی سے پر خام الله کی کتاب کو مفہوطی سے پر نا میں الله کی کتاب کو مفہوطی سے معرفی الله کی است نبویہ کی افتدار و پیروی کرنا ، حلال کھانا ، ایذار رسانی سے بچنا ، سخنا ہول سے دور رہا ، ہمیشہ تو برکر ہے رہنا ، اور حقوق کا اداکر نا کھ

حفاظمت وعصمت کتاب وسنست میں رکھی ہے ناکر شف والہام میں اور نہ مشاہرہ میں مگران کو تحاب اللہ وسنست پر بیش کرنے سے بعد ہے۔

\* اورام ابوسعید خراز رحمدالته فرمات میں: سروہ بالمن حبس کا ظاہراس کے خلاف ہوتو وہ باطل ہے۔

\* اورائم رہا نیین کے نیخ می الدین بن عربی رحمہ التّه فرماتے میں: تما ) المِ تصوف اس بات برتفق میں کہ التّہ کے سول خاتم النبیین صلی التّہ علیہ وسلم کی شریعیت سے بعداب کوئی چیز نہ حرام کی بمائے گی اور نہ ملال کی جائے گی بال اب تو وہ خاص ہم وسم ہے ہاتی ہے اور اللّه کے علم کا وہ خاص ہم وسم ہم وسم ہم اللّه کا ہے ہو قرآ ان کریم کے سمجھنے کے سلسلہ میں التّہ کے خاص بندول کو دی جاتی ہے اور اللّه کے علم کا ایسا فیضا ان جو التّٰہ تعالیٰ ا چنے فرما نبروارول کوعرہا فرما دیتے میں، اور الن براله می فرماتے میں ۔ اور اس کے لیے نور مقسر یہ فرماتے میں ۔ اور اس کے لیے نور مقسر یہ فرماتے میں ۔ اور اس کے لیے نور مقسر یہ فرماتے میں ۔ اور اس کے لیے نور مقسر یہ فرماتے میں ۔ اور اس کے لیے نور مقسر یہ فرماتے ہیں ۔ اور اس کے لیے نور مقسر یہ فرماتے ہیں ۔ اور اس کے لیے نور مقسر یہ در اور اس کی اس کے در اس کو دیتے ہیں ۔

بلکہ ہم ان علم ربا نیین ہیں ایسے علاکو بھی پاتے ہیں جوہیں ان بطن قسم کے دعویاروں کے خطات برطلع واگاہ کرتے ہیں جوہیں اور شراحیت سے احکام کومعلل کردیتے ہیں اور قرآن و احادیث کی نصوص کی خلا ون واقع تاویل کرتے ہیں اور اپنے کرداروا فعال ہیں اسلام کے طریقے کو حجوظ دیتے ہیں ابلکہ ہم توان علما ربا نیین کو دیکھتے ہیں کہ وہ ال تسم کے شعیدہ بازوں کی صحبت اور ان کے ساتھ استھے ہیں گئے ہیں ۔ ہم توان علما ربا نیین کو دیکھتے ہیں کہ وہ ال تسم کے شعیدہ بازوں کی صحبت اور ان کے ساتھ استھے ہیں گئے ہیں ۔ ہم توان ملکا ربا نیین کو دیکھتے ہیں کہ وہ ال تسم الم سے ارشاد فرط تے ہیں کو درا ہم ارسے ساتھ صلح الگئے ہیں ۔ پسے مسلور کر رکھاہے ، وہ عص تھوئی وزید میں شہور تھا، لوگ اس کے پاس جایا شخص کو دیکھ لیسی سے اپنے آپ کو ولی شہور کر رکھاہے ، وہ عص تقوی وزید میں شہور تھا، لوگ اس کے پاس جایا کہ سے مسلور کے تھوگا اور میں ہوگئے اور ان صاحب کو سلام بیا اور پر فرا پاکہ یہ صاحب کو سلام بیا ور سے نہ بیان ہوئی ہوئی ہوئے اور ان صاحب کو سلام بی سے اور پر سے نہ ہوئے اور ان صاحب کو سلام بیا اور پر فرا پاکہ یہ صاحب تو کھو ہوئے اور ان صاحب کو سلام بی سے تو کہ ہوئے اور ان صاحب کو سلام برا سے نہ بیں ہوئے تو کھو ہے کہ بیا ہوئے اور ای سے دیو سے بار سے بیں ایسی تا بیت ہوئے تو کھوئے اور ان صاحب کو سلام بیا میں ہوئے اور ان صاحب کو سلام بیا ہوئے دیا ہوئے دو کھوئے اور ان صاحب کو سلام بیا ہوئے دو کھوئے اور ان صاحب کو سلام بیں جوئے تو کھوئے دو کہ بوٹ تو کھوئے اور ان صاحب کو سلام بیات کے بار سے بیں ایسی تا بیات ہوئے دو کھوئے اور ان صاحب کے بار سے بیں ایسی تا بیت ہوئے دو کے بار سے بیں کسی طرح المیں ہوئے ۔ اس کی دور بین ہوئے ۔

ا ورحضرت ابویزیدر حمدالتٰدی فرمات بین: اگرتم به دیکیوکه شخص کوبهبت ی کرامتیں وسے دی گئی بین حتی که وه بروا بیں الرنے بیمی سلکے تب بھی اس کے بارسے بیں دھو کے بیں نہ پڑو جب یک کرتم یہ نہ دیکیے لوکہ وہ احکامات و

افته ملاحظ بوكتاب انتصوف الإسلامي والإمام النعل في مولفه له عبدالها في مرور (ص- ٥٠ و ٥٥).

سے حضرت علی رضی التہ مذہبے پوچھاگیا کہ کیا اور لوگوں کے علاوہ آپ کوئی کریم صلی التہ علیہ وہم نے کوئی خصوصی تعلیمات دی ہیں ؟ توانہوں نے فراڈ جی نہیں قسم ہے اس فرات کی میں نے واپنے کو پھاٹرا اور ذی وج کو پدا کیا ۔ سواستے اپی کتاب کی ہی فہم وسمجھ سکے جسے التہ تعالی اپنے سس بندے کوچا ہے عطا کرد تیا ہے ، ہس معریث کونجاری والود ا فرد انسانی نے روایت کیا ہے تھے ملاحظ ہو استسوی وہ دور انسانی مورد اور انسانی سرور (مس، وہ مار

منهیات بین کیساہے۔ اور صدودِاللہ یک حفاظ سے کر اسپے یا نہیں اور شریعیت پرکتناعائل ہے۔ ٭ اور حضرت بہل بن عبدالتٰ تستری فرماتے ہیں جین فتم کے لوگول کی مجست سنے بچو: غافل جابروں ، مدائمن قاربول اور جامل صوفیوں سے ہے۔

¥ اوراماً کربانی حضرت مبنیدر مدالته فروات میں: ہمارایہ فرمب کتاب التداور سنت رسول التصلی الته علیم مسے سے ساتھ مقید ویا نبر ہے مخلوق سے لیے تما کراستے نبر ہیں سول نے اس سے جورسول الته مسلی الته علیہ وسلم سے نقش قدم بر پھلے ہے۔ ا

ا وراهٔ شعرانی ابنی کتاب "الیواقیت والجوامر" بین مکھتے ہیں جبشخص نے ایک لمحہ کے لیے بھی تمریعیت کی میزان کوا بنے ہاتھ کے ایک میران کوا بینے ہاتھ کے ایک میران کوا بینے ہاتھ سے چوڑ دیا تو وہ ہلاک ہوگیا ۔

راکمری کی سرباندی کے لیے ان کا آوازا تھانا ،اور باطل ومنکر کے سامنے سرسکندری بنیا ،اورالٹد کے لاسے یں ان کا مقدس جہاد ، تواس سلسلہ میں بولیے برا سے مقتی مصنفین نے ان رائی مرشدول سے بار سے میں ہو کچھ کھے ا یہ ،اوران کے بہادری کے مواقف اور جہادا ور دعوت و تبلیغ میں ان کے مثرات ،اورامسلاح و تربیت سے لیے ان کے ارشادات و توجیہات کے سلسلہ میں ہو کچھ توالہ قرطاس کیا ہے اسے می من لیجھے :

و عظیم شیخ ابوزم ری رحمدالله فرمات میں بر ... بقول اسا ذفو ده ممارسے اخراد وار بین تصوف کا بہم حال تھا .تصوف م بہت سی خصوصیات کا حامل تھا جس سے نہایت وانبے اثرات تھے ۔ جنا بچھ غربی ، جنوبی اور وطی افرلیتہ سے مسلمان اور ان کا مضبوط ایمان در حقیقت تصوف سے ثمرات و نیا کمے ہی ہیں سے تھا۔

اورام م سنوسی کبیر نے حبب لمانول کی اصلاح کرناچاہی توانہ بول نے جو لاستدسب سے پہلے اختیار کیا وہ تصوف کاراستہ اور طریقیہ تھا کیے اور ان کا طرز اور نظام بھی فی نفسہ بڑا عجیب وغریب نظام تھا ،اس لیے کہ انہول نے

له لاحظ بوكماب شرح الطريقة المحدية "مؤلف ين عبدالغنى نامسبى (١- ١٥٥)-

مله شرح الحكم مؤلف ابن عميبة (١-٢٠)

<u> شه الرسالة القشيرية (ص-19) -</u>

بقيدماشية آئذه صغوبر الماطغ فرايش

پہلے تو توگول کومرید بنایا بھرانہی میں سے کا کے آدمی تیار کیے ، اور اس غرض کے لیے مختلف خانقا ہیں بنائیں . سب سے پہلی خانقاہ مکہ مکرمہ سے قربیب ایک پہاڑ میں بنائی بھرا پنے خانقا ہوں کے ساتھ لایدیا کے )صوار میں منتقل ہوگئے ، یہ خانقا ہیں صوار کے درمیان رنگیتانی میدان تھے اور ان سے مریدین کی ممنت وجدوجہد سے وہاں پانی نکلا اور کھیت ہاغات و میں لدار درخت اگر آئے۔

انہوں نے ان کی رہنائی کی،اورانہ میں امورِ جنگ اور تیراندازی سکھائی یٹی کہ انہوں نے ہیں سال سے زیادہ عرصہ تک فعلی والول کی نیند حرام کردی ہیہ وہ وقت تھا جب دولتِ عثمانی بھی المبالی امداد سے عاجر آگئی تھی۔ ان خانقا ہول سے سنوسی مدافعت جاری رہی حتی کہ اللہ تعالیٰ نے حکومت اللی کابسترابوریا گول کردیا اور نوسیت از سرنوزندہ کی جانے تھی ہم یہ چاہیتے ہیں کہ وہ اسی طرح زندہ رہیج سس طرح اس کی ابتدار ایک قومی ترین فعسال صوفیت سے ہوئی تھی ہے

اساذصری عابین نوارالاسلام کی ایک میں ہے ہیں کہ .. جقیقت یہ ہے کہ صوفیا جفرات عالم ہیں اسلام کو مجیلاتے ہیں ، اور ہیں آپ کے سامنے یہ ذکر کرنا جا ہما ہمول کر تقریباً ہجا کس سال قب ل شیخ بحری نے ایک کتاب لکھی تعرض میں انہوں نے میشرین کا یہ تول نقل کیا تھا کہ ہم افراعیہ کے بعید تعرض میں انہوں نے میشرین کا یہ تول نقل کیا تھا کہ ہم افراعیہ کے بعید ترین علاقوں میں جہال کہ ہیں جم کے وال ہم نے یہ ہی دیکھا کہ مسے پہلے صوفی وہال ہم جے یہ اور ہم پرغلبہ کا ل کرنے جات ہیں اور ہم پرغلبہ کا ل کرنے جات ہیں اور ہم پرغلبہ کا ل

۔ کاش مسلمان بیمجہ لیستے کہ تصوف میں روحانی ومادی کیا قوت ہے ،اس لیے کہ صوفیا، سے شکراسلام سے لیے ہمہ وقت مسلمے رہنتے ہیں۔

وکلھم ق ل قولا غیرمعرون اورہرائیک نے غیب رمعروف قول ہی کہا حس فی فصوفی حتی سمی الصوفی میں نے منعائی گوشش کی اورائی منعائی ہوگئی تی کہ ان کا نام محصوفی پڑگیا

البقيط المناس في الصوفى واختلف والمستحدة منع كذشت لوكون من صفح كناري المناس في الصوفى واختلف والمستخددة المنافئ المنافئة المنافئة

ا*ورت عرب*ہتے میں : امیر الات

لیس التصوف لبس الصوف ترقع ہے تصوف اون کے پی زرگاکرادن کپڑے پینے کانا ہبی ہے بل التصوف اُن تصفوب لاک در بکد تعوف یہ ہے کہ تم بلاکسی گذرہے صاف تھے۔ ہوجاد

ك طاحظ موا مجله " لوارالاسلام " كأبار بوال عدوما ه شعبان ١٣٢٩ م معالق ١٩٧٠ كا برجيد

یں نے مبشہ سوڈان اور اریٹیر اکی مدود پر سی بعین کی ایک سوٹیش جاعت دکھی جن سے پہلویں نیوفیول کی جون سے پہلویں نیوفیول کی جون سے پہلویں نیوفیول کی جون پر ایک ایک جون پر ایک جون پر ایک جون پر ایک جون کی میرکونی کے لیے باہمی تعاون کریں جو بھیل دنی اورسیای طور براندار پہنچائی بیل ، اور جو بوگئے وفیار پر اعتراضات کرتے ہیں وہ صرف شبہات کی صرت کے محدود ہیں ملکہ وہ لوگ حقیقت میں سے بہات وخد شات میں ہی غرق ہیں ۔

ارم النج کمیر شیخ الواسس ندوی ای کتاب "رجال الفکروالد موق الاسلامیة " پی عالم ربانی شیخ عبدالقاد جی انی کا بارے بی رقسطراز بی کدان کی علی بین تقریباً ستر مزارا فراد حاضر بوت تھے . اوران کے باتھ بربائی ہزارے زیادہ کی امراک کے باتھ بربعیت کی . اور یہ بوت میں دہل میں دہل ہونے والول کی سیح تعداد اللہ کے سواکوئی نہیں انہول نے بیت اور تو بدکا دروازہ کھول رکھا تھا پہنا نجہ اس میں دہل بونے والول کی سیح تعداد اللہ کے سواکوئی نہیں جانتا، الن لوگول کے حالات سدر سے . اور دی حالت بہتر بوگئی . اور شیخ عبدالقادر جیلانی الن کی تربیت اور دی میں جہال بون ان الدی تربیت اور دی ہے جہال کرتے رہے . اور این ور میں استقامت ، کمال اور تربیت واصلاح کی ممازل سے کہ اور تھر شیخ عبن استقامت ، کمال اور تربیت واصلاح کی صلاحت والجیت والجیت کی اجازت تھی دے دیارتے تھے ، جنانچال کے نیمل ، اللہ کی دعوت اور خالم میں جنانچال کے نیمل ، اللہ کی دعوت اور خالم میں استقامت ، کمال اور تربیت نوس اور تعدیل کے دیکھ کے لیے اور تعدیل کے دیکھ کی دیوت کی اجازت میں ایمانی مراکز اور تعدون کی دورے کے لیے اور خالم میں ہوئی کے دیکھ کے دیال کے دیماکن اور تو دیال کا کہ دوران کا کران اور تعدون کی دورے کے لیے اور خالم میں ایمانی مراکز اور توت و مبادر از محب دی دورے کی مراک وائم ہوئی ۔ اور جالمیت و نوال میں ایمانی مراکز اور تعدون کے دورے کے دارس اور جہادے کی ایمان وائم ہوئی ۔ اور جہادے کے مراکن اور توت و مبادر از محب کے دارس اور جہادے کے مراکن اور توت و مبادر از محب کی مراکن وائم ہوئیں ۔

اوران کے خلفا، وشاگردول اوران سے بعد والے دور پی جو بڑے برطے اور ایمان کے شعلہ کی حفاظت، اور کے اس دعوت اور نفوسس کی اصلاح کے طریقے پر جلے ان کا اسلام کی روح اور ایمان کے شعلہ کی حفاظت، اور وعوت واصلاح کی جراً ت، اور جہاد کا ولولہ پداکر نے، اور شہوات ونف انیت کی سکتنی کو کنٹرول کرنے ہوئی بہت بڑا ہاتھ ہے ۔ اور اگر بدلوگ نہ موتے تو وہ ما دیت جو حکومتول اور تمدن کے زیر اثر روال دوال تھی وہ اس امت کو مہفتم کر جاتی ، اور اس امت سے افراد کے دلول سے زندگی اور مجبت کی پشگاری بجہ جاتی ، اسی طرح ان حضات کا ان دور دار کر ماتی ، اور اس امت سے بال علاقول کو کے ملاقول میں اسلام سے جہال مسلمانول سے شہروں اور چین و اسلامی حکومت کے دیر اثر لانے پر قادر نہ ہوسکے ، اور سے ، اور انہ ویونیا یا ور محیط مبندی کے حزیر وں اور چین و مبند میں اسلامی حکومت کے دیر بیت کی اور سے ، اور سے ، اور سے ، اور انہ ویونیا یا اور محیط مبندی کے حزیر وں اور چین و مبند میں اسلامی حیل گیا ۔

• اور سمارے استاذِ مكرم شيخ محدرا غيب الطهاخ رحمه الله ابنى محاب الثقافة الاسلامية " بيس تكهي يك كمه امت

اسلامیه میں صوفیا، کے ظیم اعمال اور شاندار کارناموں میں سے یہ عجمہ بادشا ہوں اور حکام نے بہ جہاد کا اِرادہ کیا توان صوفیا، کی اکثریت خواہ صراحة اسٹارہ ذمجی کریں تب بھی یہ حضرات اپنے متبعین ومریدین کو جہاد میں نکلنے پر ابھارتے تھے ،اور چوبکہ مریدین اپنے بیرول کے بڑے غالی معتقدا و رفر بانبردار ہمستے ہیں اس لیے وہ مجابدول کی صفول میں شعر کی سبقت کے برائے تھے ،اور اس طرح مملکت سے اطراف سے ایک برائی تعداداکھا ہوجایا کرتی تھی ، اور اس طرح مملکت سے اطراف سے ایک برائی تعداداکھا ہوجایا کرتی تھی ، اور بہا اوقات یہ صوفیا، و بریر صفرات نور کھی سٹ کر کے ساتھ نکلتے اور ارسے مریدوں کو انجھاد تے تھے ہوفتے و نصرت کا سبب بنیا تھا ۔

اور خطیم اسلامی مصنف امثیر کلیب ارسلان ابنی کتاب ما صالاله الاسلامی " یس" افرلقه بی اسلام کی ترقی اور اس سے اسباب " کے عنوان کے توسیت کی مقیم اسلام کی ترقی اور اس سے اسباب " کے عنوان کے توسیت کی مقیم بی کہ ، انجھاروی اور اسبوی صدی میں قادری و شاذلی طریقے کے متبعین میں ترقی کے ایک سنتے باب کا اضافہ مولا ور تیجانی اور سنوسی کے نام سے دوسیلسلے وجود میں آئے۔

سلسلا قادر میر سے سپر و کارمغر فی افراغیہ میں سنعال سے بنین جو حصد دریا، نیجر کے ڈیلیٹ اکے قریب واقع ہے اس تمام خطہ میں دین اسلام سے بہا درمبلغ وواعی ہیں . اور میر حضرات نہایت پر سکون انداز سے تجارت تعلیم کے ذراعیہ اسلام کو تصیل رہے ہیں ، چانچہ میر حضارت تعلیم قریر سے دوران حینی کو دین اسلام کی تلقین کرتے ہیں اور اپنے شاگر وال میں سے محدار طلبہ کو خالقا ہول سے خربے برطرا بس اور قیروان سے مدارس اور فاس کی جامع القروبین اور مصر کی جامع القروبین اور مصر کی جامع القروبین اور مصر کی جامع در میں اور کی جامع القروبین اور کی جامع در ہو میں اور کی جامع القروبین اور کی جامع القروبین میں افران شہرول میں آگر سوڈال میں میبانی مشرکی جامعہ ان میں میبانی مشرکی جامعہ ان میں میں اور کی دافعت و سبریا ہے کہ ہے ہیں ۔

قادر سلسلم کے ایک سے بارے میں مکھتے ہوئے کہا ہے: "اور شیخ عبدالقادر جیلانی ہوفارس کے شہر جیلان کے عقد وہ بڑے فیم موٹی وذک شخص تھے، ان سے لاتعدا دیر وکار پائے جائے ہیں، ان کاسلساء تصوف اسانیا تک پنچ پکا ہے، بھر جب بڑنا طریعے برائ کی مکومت تھے موگئی تو اس سلسلہ کا مرکز "فال" منتقل ہوگیا۔ اور اس سلسلہ کے برکات انوال سے سبب بر ہروالول ہیں سے بدعات کا وجو ذختم ہوگیا۔ اور انہول نے المسنت وابحاءت کے طریقے کوا بنایا جب اکسالہ کی وجہ سے بندر ہویں صدی میں مغربی افراقیہ کے بہت سے جنشیول نے ہواہت مانسل کی !"

اوسلسلۂ سنوسیہ سے بارسے ہیں انہول نے بھی وہی بات کھی ہے توشیخ ابوزمرہ نے تکھا ہے کہ اس فرقے نے اجنبی انہول کے بی بات کھی ہے توشیخ ابوزمرہ نے تکھا ہے کہ اس فرقے نے اجنبی انہوں موسیہ سے اجنبی انہوں ہے خلاف اس وقت تک جنگ کی جب تک کہ اللہ نے ان کوفتے نہ دلادی اس لیے سنوسیہ سے بارسے میں ان سے کلام کا تذکرہ نہیں کر رہا تاکہ ایک ہی بات مکر رہ ہوجا ئے۔

### 

سلسدة شاذليه كيسلسله مي كفتگوكرية موسئه مكمة مين كه شاذلى سلسله كي نسبت ين ابوالس شاذلي كي طرف هـ

جنہوں نے شیخ عبدالسلام بن شیش سے اور انہول نے شیخ ابو مدین سے یعلم حاصل کیا تھا، اور سیلسلہ شا ذلیہ ان ابتدائی واسائی سلسلوں میں سے ہے۔ اس سے ابتدائی واسائی سلسلہ کامرکزمرائش میں ہے۔ اس سے ابتدائی واسائی سلسلہ کامرکزمرائش میں ہے۔ اس سے مشایخ میں سے سیدی ایشنے ابعربی الدرقاوی (متوفی تلاک کہ ) بھی تھے جنہوں نے اپیٹے مربوں ہیں اس و تنی حمیت و جرائت بیدائی سس کا دائرہ مغرب اوسط تک بہنچ گیا . اورفرائسیں فتح کی روک تھا کا ومدافعت کرنے میں سلسلہ درقا و یہ کہ بہت بڑا ہاتھ تھا .

کابہت بڑا ہاتھ تھا۔
ہم نے جو کچے ذکر کیا ہے اس کا خلاصہ یہ نکات ہے کہ بیر ضارت جن کا بذکرہ انھی گزرا ہے یہ وہ علماء رہا نیمین اور باصفا صوفیا، اور خلص اصحاب طرفیت ہیں جنہول نے پہلے زمانول اور صدیول میں دعوت الی الندکی زمام سخصالی اور اسلام کا بیغام برت لوگوں تک پہنچایا، اور بی وہ لوگ ہیں جنہول نے عبادت اور جہاد کو جمع کیا، اور حقوق النداور حقوق العباد میں ہم آنگی پیائی، اور دونول کا تق اداکیا، اور بیمی وہ ہستیال ہیں جبہول نے ظالمول وجابرول سے ساھنے تق کی آوار طبند کی اور دھوکہ ہازمت میرین سے ساھنے تق کی آوار طبند کی اور دھوکہ ہازمت میرین سے ساھنے بڑی بہادری سے ڈھٹے یہ ہے۔

یہی وہ لوگ ہیں جنہول نے دین بری اسلام کی شریعیت کے ساتھ حق کو وابستہ کیا نکر اپنی فائی ذات کے ساتھ۔
انہول نے شریعیت سے اسکانات کو بالا دستی عطاکی نواہ وہ ان کے تق میں ہونیا ان کے برخلاف، بی حضرات اگر غلطی کر بیٹھے ہے تھے ،اس لیے کہ وہ یہ ہی ہے تھے ،اس لیے کہ وہ یہ ہی ہی ہوجائے تونصیعت برکان وہ ہے تھے ،اس لیے کہ وہ یہ ہی ہی ہوجائے تونصیعت برکان وہ ہے تھے ،اس لیے کہ وہ یہ ہی ہی ہوئے ہے کہ وہ میں انسان اور بشر ہیں، ان سفیلی می ہوتی ہے ، اور سیمع ودرست کام بھی ،اس لیے کہ عصمت انبیاء کرام علیہم السلام کا خاصہ سے دافتہ تا ہی ہوئی ہے ، اور شرفیا گرم سے دو فلائے اللہ میں اللہ علیہ وہ میں اللہ علیہ وہ میں اللہ علیہ وہ اللہ میں میں نے ترویہ نے ہواور سب پر رو نہ کیا گیا ہوسوائے اس قبر ممارک والی بستی کے اور فرفی کو اللہ بستی کے دو فلائے کی جانب اشارہ کیا ۔

وه تاریخی وابدی مواقف جوعلما و تعانیین اور مخلص ارباب شراییت نے پیش کیے ہیں عالم عصر اور مرشد شیخ سعید نورسی ترکی مبن کا لقب برلیج الزمان جمہ التد بیدان کا موقف ہی ہے جب کا نمالات یہ بیج الزمان جمہ التد بیدان کا موقف ہی ہے۔ سے مبرس کا نمالات یہ بیج اور حق کوان کی فائی ذات کے وابست مجتے ہیں ، توانہ بول نے ان کی رہنمائی و دلیت کی غرض سے نیسیوت ووصیت کی فرمایا ؛ یا و رکھواس بات سے بیا کہ تم اس بی کو بیس کی میں بہیں وعوت و تیا ہول اسے میری فائی ذات سے مرتبط مجھو جمہیں سبقت سے جانا چاہیے اور اسے ان کی رہنمائی کو بیسی کی فرمایا ، یا و رکھواس بات سے اور اسے اس سے مقدس سے مربوط رکھنا چاہیے ، اور تم کو سیم بی اور تم کو سیم بی اللہ علیہ کم کی سنت سے مربوط رکھنا چاہیے ، اور تم کو سیم بی اللہ علیہ کہ کی بین سبح اللہ کے سازد سامان کی طوف رہنمائی کرنیوالا ہوا ورتم ہوگوں کو جان لینا چاہیے کہ میری حیثریت ، اس دلال سے زیادہ نہیں جو اللہ جل جلالہ کے سازد سامان کی طوف رہنمائی کو جہ سے یہ ڈرسے لینا چاہیے کہ میں معصوم نہیں ہول مجھ سیم گناہ جی سرزد ہو سکتا ہے اور انحافی بین ہوسکتا ہے جسس کی وجہ سے یہ ڈرسے لینا چاہیے کہ میں معصوم نہیں ہول مجھ سیم گناہ جی سرزد ہو سکتا ہے اور انحافی بین ہوسکتا ہے جسس کی وجہ سے یہ ڈرسے لینا چاہیے کہ میں معصوم نہیں ہول مجھ سیم گناہ جی سرزد ہو سکتا ہے اور انحافی بین ہوسکتا ہے اور انحافی کیا ہو کہ سے یہ ڈرسے لینا پہاہیے کہ میں معصوم نہیں ہول مجھ سیم گناہ جی سرزد ہو سکتا ہے اور انحافی بین ہوسکتا ہے جسس کی وجہ سے یہ ڈرسے لینا ہو سے سے کہ میں معصوم نہیں ہول مجھ سیم گناہ جو سیم گناہ ہو سے سیم ڈرسے کا میں معصوم نہیں ہول مجھ سیم گناہ جانے کا میں میں میں معصوم نہیں ہول مجھ سیم گناہ ہو سیم کی معموم نہیں ہو سکتا ہو سیم کی میں معصوم نہیں ہو سکتا ہے کہ میں معصوم نہیں ہو سکتا ہو سیم کی میں معصوب کی سیم کی میں معصوب کیا ہو سیم کی میں معصوب نہیں ہو سیم کی میں میں میں کی میں میں کی سال کی کو سیم کی میں میں کی موجوز کی کو سیم کو سیم کی سیم کی میں میں کی میں کی میں کو سیم کیا کو سیم کی سیم کی موجوز کی کو سیم کی میں کی کو سیم کی کو سیم کی موجوز کی کی کو سیم کی کی کو سیم کی در سیم کی کی کو سیم کی کی کو سیم کی کو سیم کی کی کی کو سیم کی کی کی کو سیم کی کو سیم کی کو سیم کی کی کی کو سیم کی کی کی کی کی کی کی کی کی کو سیم کی کی ک

که اس بق کاظا سرونظ سربرنما موجا سے جوآب لوگول نے مجھ سے مرتبط کر رکھا ہے۔ اس گناہ اور انحراف یا ہڑئول کے ارتکاب سے اس حق پر بدنما داغ نگ سکتا ہے، یامیر سے گناہ وانحرات کی دجہ سے تی کی جوسکل مجھ سے گی اور اس میں خلط ملط موگا اس سے لوگ متی سے روگر دانی کر سکتے ہیں۔

سلف صالحین اورعلما بر رہا نیپن سے یا دگارمواقف میں سے حضرت عبداللہ بن المبارک کا حضرت فضیل بن عیامن کے سلسلہ میں وہ موقف بھی ہے۔ اس وقت اختیا کیا تھا جب انہیں میعلوم ہواکہ حضرت فضیل حرم مکہ میں عبادت سے لیے گوٹر شیبنی کو اضیار کر جیٹھے ہیں اور جہاد فی سبیل اللہ برسلامتی کو ترجیح دی ہے توحضرت عبداللہ بن الباک نے انہیں اشعار کا ایک قصیدہ لکھ بھیجاجس سے صرف درجے ذیل اشعار برجم اکتفاکہ ہے ہیں :

لوجدت أنك بالعبادة تبعب
تو يسمج ليت كآب عبادت كامذان الرابي بي
فغيب ولنا ليوم الكريدة تبعب
بمايت هورت جنك ك دن تعكة بي
فغعورن ب مائن التخضب
توبمار سيخ بمار سنون من يكم الته يي
دهج السنابك والغبار الألحيب
كودل كردوغار اور إكيس خامي

باعابد الحرصين لو أبصرت المساور المحروب المساور المحروب المساور المحروب المرات المحليلة في باطل الموضل المال المحال المال المحلوم المواد المحال المحل المحال المحال المحل المحال المحال المحال المحال المحال المحل المحال المحل المحل المحال المحل المحل المحال المحل المح

حضرت فضیل کو حبب براشعار بینجے تو وہ رونے لگے اور انہوں نے فرمایا کہ میرسے مجانی نے بالکل سیج کہا اور میرے ساتھ خیر نواہی کی

حضرت عبدالتدب المبارک رحمه الته نه حضرت فضیل رحمه الته کو حب به اشعار کیھے تھے وہ اس وقت سرزین شام میں جہا دسے یہ تیاری ہیں مصروف تھے، الله ان سے راضی ہوا وران پر رحم کرے۔
عالم ومر شد حب ا بنے آب کو حق کے مطابق مطابق موالیا بیے ذکہ حق کو اپنے مطابق تولیے موقع بروه کتنا عظیم ہوئی ہو اور حبب وہ اپنے طرز عمل سے لوگول کو اسلام کا ایسا محیط و عام منہاج بیش کرتا ہے جوخوا و عقیدہ سے علق ہویا تشریع سے دین سے تعلق ہویا جہا دسے دین سے تعلق بویا سیاست سے .
دین سے تعلق ہویا حکومت سے ترکیہ سے تعلق مویا جہا دسے بویا در ت کے تاہمویا سیاست سے .
امر ہالمدوف اور حق بات کہنے سے تعلق ہویا نہی عن المنکر سے ایسے موقع براس کا نموز عمل کیا تھیم ہوا کرتا ہے۔

اس ليداسمرني محترم إآب كوچا سيدكرآب كى ايد عالم ومرست ربانى كولاش كرير سب يرتما كاصفات

محتمع بول، اوراس کی تخصیست میں بیرتم امفہوم کا مل طور سے موجود بول : اگد حبب آب سے بیٹے کا سے سیعلق قائم ہوتووہ اس کواملامی تعلیمات کانتیجے اور کامل ونکمل نمونہ پائے. اوروہ اس کومیجے اسلامی تعلیمات کی ملقین کرے. اور اس کے دل ور ماغ، روح وا فیکارکو اسلام سے محیط نظام و منہج کی طرف را غب کرے . اوراس کا تعلق بحق اور شریعیت اور سعف صالحین سے ارشاد ا سيجور سينكراني فانى ذات اورغير معصوم تمخصيت سيء

مرنی محترم!آب ایا ہرگزنہ کیجیے گاکہ آپ اپنے بیجے کا تعلق ان لوگول سے قائم کریں جو پیری مریدی کے دعویدار ا ورتصوف ہے۔ نابلہ ہیں، جو منافقین کی جاعبت سے تعلق رکھتے ہیں، جو آج کل بہت بڑی تعداد میں یا نے جاتے ہیں۔

\* جومر شد ابینے آپ کومعصوم سمجے اور معفوظ ومعصوم ہونے کا دعوی کرسے وہ جائی وہردین ہے۔

★ ا در جومرشدا پنے مرید ول سے اس بات کا خوا ہال ہو کہ وہ اس سے ارتکاب کردہ گذاہوں کو ما ان کیں اور اس پڑ کمیرز کریں تووہ جاہل و بردین ہے۔

\* اوروه مرشد جوابینے مرید کواپنی باتول سے امید ولالیج میں مبتلا کرتا ہے اوراس کو قرآن کریم کی تا نیر و ہوایت ہے دورر کھتا ہے اور سندے نبویہ کی تعلیمات سے بے بہرہ رکھتا ہے وہ جابل وب وقوف ہے

🖈 اور حومرت د ایسے علم کو چھپا ہا۔ ہے ب سے اللہ تعالیٰ دین کے معاملہ میں نفع میہ نچائے۔ یاکسی ایسے رتنی معاملہ میں سكوت اختياركرتاب اورعق باستنهبين كتباحبس كادين سيهونا برميح طور بيعلوم مبوتواليها مرسف جابل وبيه وقوف سبة 🖈 اور الیامرست حجاسلام کوصرف ترکیئرنفس اورنفس انسانی کی اصلاح یک محدود رکھتا ہوا وراسلام کے دوسرے وہ بنیادی احکام جونظام حکومت اور دنیا دی زندگی میتعلق ہیں انہیں عطل جوٹر دتیا ہو تو وہ بھی جابل وب وقوف ہے۔ 🖈 وه مرشد حو حکام کے ساتھ منافقت ہے جیت آیا ہواوران کی تعربعین پار متار سبا ہوا وران کے دستر خوا ن برآ أجاآ ربتامبوده مجى جامل وسبعه وقوف سبعه

مربی محترم اس میں کوئی شک نہیں کہ حبب بیمے کاللق ایسے مجدا مقتلی سے بوگانسس سے ادصا وزیم نے بال کے اور ایسے عالم ربانی مرشد سے ہوگا ہیں کے اوصا و سم ذکر کرسکے ہیں توبلا شبرایی صورت ہیں بچہ تقوٰی اور ابتد کی الحاصت وفسوانبرداری کی تربیت حاسل کرسے گا ، اور التّدجل شانه کی طرف رحجرعِ اور حق سے بارسے ہیں جری جونے كاوصف آل مين نمايالِ بوگا، اورِ وه محاب مين عبادت الهي اورميدانِ كارِ زار مين وتمنول كي سركو بي كرسه كا إور تصروه روئے زمین پراللہ سے مکم کو قائم کرنے سے بیے ایماتی حرارت ، اسلام کی شجاعت ، حواتی کی قوت ، پنتگی وعرم ، سمجہ وذکارا ومسئولیت سے احساس کے ساتھ آ گئے برمیصے گا، اور اس پرشاعر کا درجے ذیل شعرصادق ہوگا :

اور شرفاء کے مرتبہ ومنزلت کے اعتباریسے اسکے انعامات موسے بی

على قدير أهدل العسزم تأتى العزائم وتأتى على قد والكسوام المسكا دم انسانول کی قوت دعزم کے مطابق می ان سے لبندامورصاد بیوتے ہیں

وتعظم فى عين الصغير صغارها وتصغرفي عين العظيم العظائم اورهپوٹول کی نظر میں معمولی جیب نرجھی بڑی بن ماتی ہے ۔ اور بڑوں کی نظریس بڑی جیبزی بھی معمولی بن جاتی ہیں

اس تعلیم وترببیت اورشخصیت سازی کی وج سے ایسے مرث دربانی سے ہاتھول سے بچہ ایک شانداراس لامی مملکت سے قیام سے لیے بہترین ایزسٹ کاکام دے گا، اوراس سے ذرایعہ سے اسلام کی سولندی اورسلمانوں کی فتح وجود يس آئے گى . اور قرآن برعمل كمينے والى مصبوط حكومت قائم بوجائے گى ، اور الله تعالى جل شأنه سے ليے يا كوئى مشكل

# ٢- شيخے کو آهي صحبت اور نبيث لوگول سے البتدریا

يهے كى ايماني ولفسيانى تخصيت سازى اورمعاشرتى وانىلاقى تعميركے اہم عوالل بيس سے يريمى ب كرنيكے كوشروع ہی سے نیک صالح لوگول کی صحبت مہیا کی جائے. تاکہ بچہ ان سے وہ شاند*ار روحانیت اورعلم نافع اوربرتر*اً داب ا در شاندارا خلاق ماسل كرسيك ص ساس ك شخصيت اجاكرسور

مرنی کوچاہیے کہ وہ بیچے میں مرشدِ رہاتی سے تعلق اور نیک صالح افراد کی صحبت سے ارتباط کاپورا خیال رکھے. اس کیے کہ ان دونول میں تناقض اور غیریم آسنگی اور ان دونول تعلقات میں ایک دوسرے سے دوری بیااو قا دونہایت خطرناک مالات سے دوحارکر دشی ہے:

۱ ـ تربيت ورمنهائي بي تعارض ومحرار ً

۲- کردار و حال مین میں اُتحاف۔

تربیت ورمنمانی میں تعارض وکمرا و سے مرادیہ ہے کہ وہ بچہ جوئی مجمدار مرشدربانی سے تربیت مال کرے گا وہ اگرا یسے توگول کے ساتھ رہے گا ہواسلامی سوچ بجار اور کال پختہ ذمن کے مالکے ہیں ہیں تو ہوسکتا ہے کہ بجہ ان سے متأثر ہوجائے اوران کا اثر قبول کرسے اوران کی طریت مائل ہوجائے، اوران جیسے کام کرسنے لگے. اوران سے افکار کو قبول کرسے، اس سیے کہ وہ اب بک علم وعل کی میگی سے اس درسے کونہیں بہنچاہیے جواسے اس قابل بنا دسے کہ وہ اس سے ذریعہ سے سیمجے اور خلط میں امتیاز کرسکے ، اور اس کااثر یہ ہوگا کہ بچسہ دوشم سے افکار سے متأثر ہوگا ، اور دوخیستو سے ان کرسے گا، ایک کامل و محمد استخصیت اور دوسری جال و ناقص شخصیت. اور معیروه مخست میبریت ویرایش ایی اور تکلیف ده فکری ونغسیاتی جنگ کاشکار موجا سنظی اوراسے میعنوم نه موگاکدوه کسطرون بهاسنے اور نه میمعنوم موگاکه کیارہے؟ ا در چال ملین وکردادسے انحاون سے میری مرادیہ ہے کہ بچہ جسب مرشدربانی پاسمجدارمسلانوں کی جماعیت کو یہ

دیکھے گاکہ وہ اسے ایسا اسلام اور علم دے رہے ہیں جواس اسلام وعلم سے باکل مختلف ہے جواسے اپنے ساتھیوں کی صبحت اور الن کے ساتھ اسٹھنے بیٹھنے سے ماسل ہوتا ہے توظا سرہے کہ بچہ اس تناقض سے متأثر ہوگا اور سوالا وافکار و پرلیٹ انی کے جال بھنس جائے گاجو ہو سکتا ہے کہ اسے کردار وعقیدہ میں انحاف تک بہنچا دے، جو سراسران متناقض اور ایک دوسر سے کی صندصورت مال کا روم ل ہوگا، اس لیے مرشدا و راجھی صبحت سے ساتھ ارتباط میں باہری کا خیال رکھنا ہے کہ شخصیت سے ساتھ ارتباط میں باتھ تاقض اور شخصیت تباہ کرنے اور حیال کون امورا و رنسیاتی و اضلاقی تیاری کے اہم ترین عوامل میں سے ہے۔ تاکہ بچہ تناقض اور شخصیت تباہ کرنے اور حیال کون امورا و رنسیاتی و اضلاقی تیاری کے اہم ترین عوامل میں سے ہے۔ تاکہ بچہ تناقض اور شخصیت تباہ کرنے اور حیال کون امورا و رنسیاتی جنگ کاشکار نہ ہو۔

اس کیے مربی کوچاہیے کہ اپنے بیرے کے لیے ایسے دوستول کو لاش کرسے جوان لوگوں میں سے بہل ہنہوں سنے ایسے محبدار با کمال مرشدِ ربائی کے ہاتھ سے تربیت حاصل کی بوس کے اوصاف اس سے پہلے ذکر بوچکے ہیں، اورس کے افکار وخیالات کا ایک حصدیم اس سے قبس ل جان بیکے ہیں ،اورائیں صورت میں ربط مصنبوط اور تا شیرقوی اور نبیعے کی مضخصیت میں المالی ترین کمال ہوگا۔

جن امور کامرنی کو نیمال رکھناا ورخوب ائتمام کرنا باسید،اوران کولینی بنانے کی گوشش کرنا جاہیے ان میں سے پیمی ہے کہ ہیجے کا چارتسم کے ساتھیوں سے تعلق قائم کرنا چاہیئے: انگھری صحبت ۔

۲ ـ محله کی صحبت ـ

س مسجد کے رفعار۔

م و مدرسہ یا کام کی حکمہ کے ساتھی۔

که گهری صحبت و رفاقت سے مراد ہے بھائیول اور قرابت دارول کی رفاقت، اس کیے کہ یہ پہلے وہ افراد ہیں جن سے بچہ ملیّا و ران کے ساتھ اکٹھا ہو یا اوران سے تعلق پیدا کر تاہیے۔ اور یہی وہ اولین افراد میں جن سے بچہ اضاکر تا اور قال کرتاا و ران سے تعلق ہو تاہیے۔ اس لیے مرفی کا یہ فرلینہ ہے کہ وہ نحرب دیکھ بھال اور اچھی طرح سے نظر رکھے بس کی وج سے وہ نواہ قریب ہویا دُور ان لوگول سے حالات سے باخبر رہے بن سے بچہ ملیّا جلیّا اور بن سے ساتھ اسٹھا ہے نواہ وہ اس کے مہن بھائی بول یا دو سرے عزیز رشتہ دار۔

یرایک ظاہری بات ہے کہ نیکے کا بڑا بھائی اچھائی یا برائی اورخیروٹسرٹیں دوسری تما کا اولاد سے سیے ایک نموز اور مثال بنتا ہے۔ اس سیے اگر باپ یا مال بچے یا بچی کو بالکل آزاد و سید نگام چھوٹر دیں کے اور دوسروں سے میل جول اورائھنے میں کوئی گرفت زکریں گے تواہیے براضلاق بھائی یا بہن کا باقی بہن بھائیوں سے اضلاق پر بھی برا اثر پڑے گا۔ اور بھر مرنی یا باپ کے بیے ان کے انحاف و بدا نمادتی اورکجی کی اصلاح اوران کوراہ راست پرلانا اورسیدھے راستے پردگانا بہت مشکل ہوجائے گا۔

الم شکل کائملی کل اوراس کے مارک کا طریقہ یہ ہے کہ برسے اور خراب بھائی اور بداخلاق و نالائق عزیز ورشتہ دار اور دوستول سے لاقات وسیل جول کے درمیان مائل ہونے کی پوری کوشش کی جائے تاکہ بچے ان سے متأثر نہوں اوران کے برسے اخلاق اورگندسے اوصا ف کاان پر کوئی اثر زیڑھے۔

#### **@@@@@@@@@@@**

وه رسیاد کی صبت سے میری مراد نبچه کا پنے محلے اور میروس سے بچول سے بی بول ہے، وہ محلق میں وہ رہااو کو مقال کا م وہ گھرسس میں وہ بتنا اور بڑھتا بلتا ہے۔

تیسیم شده بات به که خواه کوئی محمد موقریب کایا دور کایس مانده یا ترقی یا فید، جابل یا ثقافت کاعلم برار سب میں ایسے بہت سے بیچے پائے جائے ہیں جن میں نہ حیا ہوتی ہے نہ تربیت واضلاق، وہ بے حیائی کے کا کمتے ہیں اور آنے جائے ہے کا کا کرے کا کہتے ہیں اور آنے جائے والول، اور حیولوں بڑول، اور عورت ومردسب

سے سامنے بہبت برسے افعلاق وتہذیب کامظامرہ کرتے ہیں۔

یه بهبت معطرناک مرض سبے مربیول اورسئولین کواس کا علاج کرنا چا سبیے ،او راس کی بیخ کنی کرنے ہے لیے تمام لوگول کومعا ونرت کرنا چاہیے ۔ اور اس سلسلہ میں ہم اخلاقی تربیت کی سئولیت سے ذیل میں نہایت کافی شافی بحث کر چکے ہیں اس لیے اس کا مطالعہ کر لیجیے و ہال شفی کا سامان مل جائے گا۔

اس وقت اس مرض سے بارہ میں ہم جم طرف توجہ مبذول کرانا چاہتے ہیں وہ یہ ہے کہ ہم یہ چاہتے ہیں کھڑو کی توجہ اس تعکیف دہ اور افسوسناک حالت کی طرف بچیر دیں جم بھارسے کٹرنچے بداخلاقی اور تربیت کی خرابی اور عقیدہ کے انحراف میں مبتلا ہو گئے ہیں، تاکہ مربی اپنی جدوجہ دو محنت دگنی کر دیے۔ اور نیچے سے حقیدے کی اصلاح اور اخلاق سے بنانے میں اپنی مسلسل طاقت خرج کرسے اور پیکواس فاسر جمٹی اور گندسے ماحول سے بچانے سے لیے حس ہیں ہمارے اکٹرنچے دہتے ہیں مفید ترین اسباب اور وسائل انقیار کرے۔

اکٹرطا، تربیت واصلاح کی نظریں اس سے کامیاب ترین وسائل میں سے بیہے کہ بیے کا اہمی صحبت سے ساتھ رابطہ پدا کیا جا رابطہ پدا کیا جائے، اور اس صحبت تعلق کا کامیاب ترین راستہ وطریقہ یہ ہے کہ مطلے یا پڑوس سے سے معالے و نیک ساتھی سے بیے کا ربط پدا کردینا چا جیے س سے وہ سجد میں، اور فارغ اوقات ، یا ملمی مباصف، یا کھیل کود، یاسیروتفری میں ہمیشہ رابطہ رکھے.

ادر واقعہ یہ ہے کہ اگر محلہ سے ایسے ایسے ساتھیوں سے بیے کا تعلق قائم کر دیاجائے تووہ اس سے محفوظ رہے گاکہ محلہ سے گاکہ محلہ سے لڑکول اور برکردار ساتھیول اور نزاب دوستول سے لی کول قائم کرے، بلکہ اس کاعقیدہ زینے و گمرابی سے ادراس سے افراس کے افراق مجملہ نے در اور بی کے جا نئیں گے۔

اس بیداسی مخترم فرنی صاحبان آپ بیر گوشش کریں که آپ نین نیکے کا محلے کے شریف و نیک بچول سے دابط قائم کریں۔ اور سانتھ ساتھ ہمیشنہ کوئی گڑانی ، و مکیو محبال ، اور رہنمائی بھی کریتے ہیں تاکہ آپ کا بچہ نیک صالح موکن بندول کی فہرست میں شامل ہو۔

مسجد کی صحبت سے ممیری مرادیہ ہے کہ بچے کا ایسے کچول سے رابطہ پداکیا جائے جواس کے ہم عمر ہول، اور مملم کی مسجد میں جماعت سے نماز مرشعتے ہول، جمعہ اوراس باق وغیرہ میں بابندی سے نمرکت کرتے ہول ۔ مسجد میں جماعت سے نماز مرشعتے ہول، جمعہ اوراس باق وغیرہ میں بابندی سے نمرکت کرتے ہول ۔ میراندازہ یہ ہے کہ جو بچے خود اپنے طور بریا اپنے والدین بامر نی کی رمنجائی سے بحد کا عادی ہوجائے گا وہ الیا بچہ ہوگا جس کی نفس میں ایمان کی روح، اور اللہ کی فرمان ہر داری ، اوراسلام سے احکامات ومنہیات سے سامنے گردان جھ کا نے عادمت تھکم ہوجائے گی ، اور الیہ بی بیچے سے خیر کی امید کھی جاسکتی ہے ، اور اس سے وجود سے نفع و معلائی کی آرز و

ک جا<sup>شک</sup>تی۔۔پیدر

اوراگرا سے بچے کے لیے بومبحد جانے کا عادی ہوکوئی ایساشخص میسرا جائے ہواس کی رہنائی کرسے اور استعلیم ہے اور شعیم اور شعیم کے اور اس بنیا دول اور شاندارا نعلاقی اصولول پر اس کی تربیت کرسے اور اس بنی فکری سمجھ پیدا کرسنے کا کام کرسے تو بلاشبہ ایسا بچہ ان لوگول میں سے ہوگا جن سے اسلام کا قلعہ تعمیس کرسنے اور مضبوط ترین حکومت قائم کرنے کی امید رکھی جاسکتی ہے۔

یں جس جیزگی طرف توجہ دلاناچاہا ہول وہ یہ ہے کہ نحلہ والول کی صبت اور سبحہ کے ساتھیوں کی رفاقت لازم الزم میں۔النمیں سے کوئی ایک دوسر سے سے مجدانہ ہیں ہوسکا،اس لیے کہ محلہ کے ایسے ساتھی کاکیا فائدہ جونماز نہ بڑسمے اور سبحہ آنے جانے کا عادی نہ ہو؟ اور جونخص مبحراً آبا آبواک کو محلہ کے ایسے ساتھی سے میل جول سے کیا فائدہ پہنچے گا جو ایسے گھروں کا رخ بھی نہ کرتا ہو جہال اللہ کا ذکر ہوتا ہو؟

ا دَراگرکونی شخص پر چاہتا ہے کہ اپنے پیچے کے لیے بہترین ساتھی اور عمدہ دوست منتقب کریے۔ تاکہ اس کا بچہ ان کے ساتھ استھے بیٹھے اور ان سے تعلق قائم کرے تو اسے چاہیے کہ ایسے دوست ان لوگوں میں سے منتخب کرسے ہو معلمہ کی مسجد میں جانے کے عادی ہوں اس لئے کہ وہی لوگ میسے فطرت اور حقیقی ایمان اور پاک صاف اچھے اخسے لاق سے ملاکہ میں یہ

یہیں سے مرفی فرمہ داری شروع ہوجاتی ہے کہ وہ بہتے اور اس کے دوستوں اور ساتھیوں پرنظرر کھے کہ وہ جات سے نماز بڑھتے اور اسباق و دروس اور اسی انھی مجلسول میں عاضر ہوستے ہیں یا نہیں جوسجد میں منقعہ ہوئی ہیں؟اور بیہ دنظر سکھے کہ کیا یہ لوگ قرآن کریم کے ملقول اور السّد کے گھرول میں علمار واسا تذہ جو قرآن کریم و تحجید کا درس دسیقے ہیں اس سے ان کاتعلق سے انہیں ؟

مرنی کوبچول کومسجدا نے جانے کی عادت ڈالنے کی ترغیب دینے رہنا چاہیے تاکہ نماز کے اوقات ہیں وہ سجد کارخ کریں اورجہاءت کے وقت وہ سجد جانے میں ایک دوسرے سے سیسبقت لے جائیں، اور قرآل کریم کے صلقہ درس اور نی تعلیما کی مجالسس میں ان کے مقررہ اوقات پرٹیرکرت کرنے کے شوقین وحربیں بنیں۔

اس بیداسیمرنی محترم اآپ برگوشنش کیجیے که اپنے بیکے کومسجد سے تعلق رکھنے والے ایسے ساتھیول سے رابطہ رکھنے کا عادی بنائیں جن کا ذکرہ ہم کرسچکے ہیں، اور بھپران پرکڑی نظر بھی کھیں، اور انہیں ترغیب بھی دینے رہیں، اور بمت افزائی بھی کرتے رہیں۔ تاکہ آپ کا بدیا اللہ کے فضل سے پاکباز مسلمانوں اور اچھے صالحین کی جماعت ہیں شامل ہو۔

مرسه، اسکول یاکارخانے کی رفاقت وصحبت سے میری مراد بیسے کا اپنی جاعت سے ساتھیوں اور اسکول میں اپنے

ہم عمرول کے ساتھ رفاقت ہے جہال وہ پرطرحتا ہے اور سب میں وہ داخل ہے، یا وہ کارخانہ جہال وہ کام کر تا ہے اور وہال سے کمائی کرتا ہے اور اس کی طرف منسوب ہے۔

مدرسہ سے ساتھیوں ہے رفاقت سے سلسلہ ہیں گفتگو کے ذیل ہیں میں یہ چاہتا ہوں کہ مربیوں کی توجہ ایک ہم ترین حقیقت کی جانب مبدول کرا دول جس کے سلسلہ ہیں سجٹ اور اس پر کلام کرنا ہہیت ضروری ہے۔

اس حقیقت کانطاصہ یہ ہے کہ آج کل وہ ممالک اور شہر حہال گمراہ کن افکار اور ملحدانہ نظریابت بھیلے ہوئے اور غیرال کے اصول وضوابط حیائے ہوئے ہیں وہال مدرسہ واسسکول خطرناک نظریابت وافکارا ورآیا، کانہابت سرسبز باغ بن گیاہے جوبہت انسوس کی بات ہے، اور یہ سب کچکس کے ہاتھول سے ہور ہاہے ؟

یہ سب کچھالیسے اساتذہ کے ذریعے ہور ہاہے تنہول نے اہینے شمیرکو شیطان کے ہاتھ اور اپنی نفوس کو دوسرول بیا تھ جیج دیا ہے۔

ایسی گمراه کن نظرمانی جماعتول کے ذریعے ہور ہاہیے جن کامقصداِ سے سوااور کچیے نہیں کہ دین میں شکوک و شبہات پیدا کیے جائیں اور اسلام کے نملاف جنگ کریں۔

اسی طابنظیموں کے فرسی طرب ان جاعتول سے احکامات ماسل کرتی ہیں جن کی طرف ان کی نبست ہے تاکہ طلبہ وطب البات کو گمراہ کرنے اور دوسرول کا غلام بنا نے اور شک وسشہ ہیں گرفتار کرنے کا ابنا فرلھندا داکر سکیں۔
عورتوں کی اسی جماعتول کے ذریعے جن کا اس کے اور کوئی مقصد نہیں کہ وہ اس اسلامی پر دسے کے سامنے صف بستہ ہوجائیں ہو پاکہاڑی وعفت کا شعارہ ہے ، اور اس اسلامی نفام کا مقابلہ کریں ہوعورت کے ساتھ انصاف کرتا ہے ، اور سستہ ہوجائیں ہو پاکہاڑی وعفت کا شعارہ کریں جنہول نے ہرصا حب حق کو اس کا پوراپورا حق دیا ، اور یہ جماعتیں عام طور سے بھی توعورت کی آزادی کی علم ہرداری کا دعوای کرتی ہیں ، اور کھی عورت کو مرد کے مساوی قرار دینے کا نام لیے کرتا گئے ہڑھتی ہیں ۔

یہ تمام زہراک معموم فضا کے علاوہ ہے جو ملاک واسکولول میں مختف نظرایت ،اور ایک دوسرے کی صندافکار اور آزادی وبے راہ روی وہکاری کے دور دورہ کی وجہ سے عام ہے ، مدسد کی فضا بیل جمیع الیے آدمی بہبت کم سطنے میں جو سیح دین اور بری اسلام اور اچھے اخلاق اور سیح بنیادی تربیتی اصولول کی طرف دعوت وینے ولیے جول اس اسم مقیقت کے آشکا داکر نے کے بعد اسے مربی محترم! آپ کا فرض یہ ہے کہ آپ اہینے بیمے کواک تاریک وسیا ، فضا اور اس گراہ کن فاسدما حول سے بچانے کے لیے بوری جد وجہد صرف کریں اور انچی کو اس ناور بیان مکن ہوگا جب ان کو مدرسہ میں مجمعل رنیک صالح طلبہ کی صوبت ورفاقت مہیا کی جائے ، تاکہ ملمی لمقین اور ثقافتی شخصیت سازی خواہ وہ تعلیم سے اتبالی مرطر میں ہویا اعدادی یا نانوی یا یونیورسٹی مہیا کی جائے ، تاکہ ملمی لمقین اور ثقافتی شخصیت سازی خواہ وہ تعلیم سے اتبالی مرطر میں ہویا اعدادی یا نانوی یا یونیورسٹی

کی سطح پران تما مراحل میں آپ کا بچہ ایسے نبیدہ ونیک طلبہ سے مربوط رہے۔ ایسے طلبہ کا انتخاب بہتر یہ ہے کہ ال بوگول میں سے بوش کے ساتھ بچہ محکمہ یا مسجد میں اٹھ ابیٹھا ہو۔ اکہ صبحت و رفاقت کا پورا اثر بڑے سے ہے کے یے خیرو بھوائی کے نیازہ بہترول چھے ہول بسکن اگر لیسے طلبہ نہ پائے جائیں توسم یہ بوجہ اور عقیدہ کی سلامتی واضلا ق کی درستگی اور عبادات کی ادائی خصوصًا نمازکی ادائیگی کی بنیاد برانتخاب کرلیا جائے۔ اللہ تمالی شاعر بردم کرسے فراتے ہیں :

تمسك إلى الحرف المفرت بذيل حر في الدنيا قليل المعسوفي الدنيا قليل المعسوفي الدنيا قليل المرتم من المرتب المر

مدرسہ واسکول کے بارے میں گفتگو گرتے ہوئے میں یہ چاہتا ہوں کر ہیں مربی محترم کی توجہ ایک اور حقیقت کی طرف بھی مہندول کر دول حسب کا اہتمام ہمبت صرفری ہے اور اس طرف توجہ کرنا لازمی ہے۔ اور دہ ہے لڑکی کو اسکول میں اضل کرنا اوراس کے نفسیاتی وجذباتی تأثر کے صالات یہ

مرنی محترم!آپ کویہ یادر کھناجاہیے کہ عورت میں جذباتی مزاج رکھاگیاہے اور وہ برانگیختہ کرنے والی چیزول و آرزؤل سے بہت جلد متأثر ہوجاتی ہے۔ اور جدید تمدن کے دھوکہ دینے وارزؤل سے بہت جلد متأثر ہوجاتی ہے۔ اور جدید تمدن کے دھوکہ دینے والے منظام کی جانب بہہ جاتی ہے۔ اس کی وجہ ہے وہ تق سے بہت جلد دور ہوجاتی، اور ماحول سے رنگ بیں رنگ جاتی۔ اور نوابرتات کی رو ہیں بہہ جاتی۔ اور فضاء کے ساتھ ساتھ جلنے لگتی ہے۔ اس میں ندین کی طرف سے کوتی رکا وسٹ اور نوابرتات کی رو ہیں بہہ جاتی۔ اور فضاء کے ساتھ ساتھ جلنے لگتی ہے۔ اس میں ندین کی طرف سے کوتی رکا وسٹ

ہموتی ہے۔ نصمیر کی طرف ہے کوئی مانع اور ن<sup>ع</sup>قل کی نجنگ ہموتی ہے نہ انجام پرنیظر۔ ہموتی ہے ناصمیر کی طرف ہے کوئی مانع اور ن<sup>ع</sup>قل کی نجنگ ہموتی ہے نہ انجام پرنیظر۔

ال بیے آپ کا بہ فریضہ ہے کہ آپ لڑکوں سے نیادہ لڑکیوں کا خیال رکھیں ، تاکہ ان کا بیان متنزلزل اوراخلاق خواب نہوں ، اور وہ بیے جیائی و آوارگی کی تباہ کن گھاٹیوں میں قدم نہ رکھیں ، اور وہ لادنی جماعتوں سے وابستہ نہول جس کی وجہ سے وہ عزیز ترین چیزاک لام و شافت سے میں عادی ہوجائیں ، اے ترب بیت کرنے والو ااس لا اسپ پریہ لازم کرتا ہے کہ آپ اپنی بیٹی کے لیے اپنے گھروم رسم میں اچھا ماحول اور صبیح فضا، مہیاکریں تاکہ آپ اسے مخفوظ میں میں ایکھیں اور انحراف سے بیانیں ۔

اچھے ماحول کے مہاکرنے والے وسائل واسبب میں سے یہ ہی ہے کہ آپ ایسی انجی نیک پارسااوردعوت دین دینے والی عور تول سے اس کا ہوڑ پراکردیں بہن سے وہ ہمیشہ میں بول رکھے . اوران سے پاس آئی جائی رہے ان وسائل میں سے یہ کی گرآپ اپنی بڑی کے لیے اس کی بیاس مالے سہیلیوں کو مہاکریں بن سے اس کا رابطہ سے اوران سے انجی بائیں سے یہ کی گرانسا وران سے انجی بائیں ہواہ گھر ومحلہ میں رشتہ داروں میں سے ہوں یا اسکول کی ساتھ ، اس کے ساتھ ساتھ بجی پر ہمیشہ نظر رکھنا چاہیے انکہ وہ اپنی اصلیت پر باقی رہے ۔ اورا میان واستقامت رکھنا چاہیے ، اسے وقیا فوقیا اپنی نصیح تول سے ارائس کرسے رہنا چاہیے تاکہ وہ اپنی اصلیت پر باقی رہے ۔ اورا میان واستقامت وحق پر قائم ہے ، اوراکس ایسی کے موانی کی کی پاکادی

و پاکدامنی اوراس کی مصمت کی مفاظت کرنے سے اسباب مہیا کرنے پر قاور نہیں اورا پنی مگر گوشہ سے لیے بھی فضا و ما تول نہیں پیدا کرسکتا ہے تو ایسے باب سے لیے یہ شرعًا ترام ہے کہ وہ اس نظری کوان نمرا بیول سے مرکز میں وال کرے اوران ہلاکت و تباہی کی مگر بھینک دے تاکہ وہ بچی اپنے عور پر ترین دین اور عزت و عصمت کو گم نکر بیٹھے۔

مربی محرم اآپ کوریمی مجد لینا چاہیے کہ جوائزات مرسہ واسکول کی صعبت سے پوٹے تیمیں ۔ ولیے ہی اُٹرات اسکول وکارفانول کے ساتھیول کی صعبت ہے تھی پڑتے ہیں، اس بے کہ یہ نہایت افسور سناک بات ہے کہ اکنر فیکٹر لول وکارفانول اورادارول سے کام کرنے والے افراد افعال باختہ ہے ادب اور بے دین ہوتے ہیں، بکہ ان مزدورول ہیں ان کے درجات سے تفاوت سے اعتبار سے ایسے لوگ پائے جاتے ہیں جو سرخ المحادا ورکافرانہ شیوعیت سے قبول کرنے والول ہیں ہے ہوتے ہیں۔ ان میں ایسے لوگ بی بے خاتے ہیں جو سرخ المحادا ورکافرانہ شیوعیت سے قبول کرنے والول ہیں ہے۔ نوٹ جی بان میں ایسے لوگ بھی بائے جاتے ہیں جو در والے سے لیے کام کرنے والی این میں ایسے لوگ بھی ہوتے ہیں جو جانورول کی مرتبہ ، وزن نہمیں ہو تا جہیں اسلام لے کر انست ان کام کرنے والول میں ایسے لوگ بھی ہوتے ہیں جو جانورول کی طرح سے آزاد زندگی گزارتے اورافلاق باختہ حرکا اختیار کرتے ہو انسان میں بڑے ہو کہ کردار فاصلہ منہ ہوتے ہیں جو بانورول کی ویوراکریں اور خلی جذبات کو کھیں بہنچا ہیں ، اور ان کام کرنے والول ہی بنجا ہیں ، اور ان کی دلدل میں بڑے رہیں ، اور فیل گئے کہ سے اور کوئی مطح نظر بہیں ہوا کہ وہ شراب ، جو کے اور برائی کی دلدل میں بڑے رہیں ، اور فیش مرنے گئے والول ہی باختہ جانس مقدر اموں میں شرکت کرے اپنی مردائی ، عربت وشرافت کو برکردار فاحشہ مغنے ، یاگری پی رفاصہ ، یازانیہ و بے جانے والول کی دلدل میں بڑے ہوں کہ در ان کردیں ۔ مرتبہ ، یازانیہ و بے جیاعورت کے قدمول پر قربان کردیں ۔

سین اس کے ساتھ ساتھ مزدوروں اور ملاز مین میں ایسے لوگ بھی پائے جائے ہیں جودین سنقیم وا ضلاق عالیہ پرقائم
اور اس اسلامی نظام کو اپنائے ہوئے ہیں جسے رسول اکرم سلی النّہ علیہ ولم لے کرتشر لین لائے ہیں سکین ایسے لوگ دوسرے
لوگوں سے مقابلے ہیں ہہت کم ہیں ، اور اکثر طلاقوں میں ایسے لوگ ان غیر دیندار و بلاضلاق جماعتوں سے مقابلے میں تھوئے
سے ہیں جن کی کا رفافوں وفیکہ لوں اور عمومی و نصوصی اواروں میں بھر مارہ ہے ، اس لیے اسے مرتی محترم! اسلام آب پریہ
لازم کرتا ہے کہ آپ کا رفانے وفیکہ لوں ان بیس ہمامت اور مومن باکردارا فراد کو تلاشس کریں تاکہ آپ ایسے نے کا
ان سے تعلق قائم کریں ۔ تاکہ اگر وہ معبول جائے تو یہ یا و دلادی اور اگر اسے اپنا سبق یا د ہوتو ہے اس سے مدو کا رہنیں اور
اگر اسے غلط راستے اور بری مجمہ جائے وکھیں تو اسے تباہی سے بچاہئی اور اس کا گھیاؤ کرکسی تاکہ وہ بمیشہ ہمیشا ستقا
واضلاق پر قائم رہے۔

اور حبب گھرکی دیجھ بھال را مہنائی کا نیک صحبت سے ساتھ تعاون اور امادِ باہمی جاری ہوگی توبیص بست نواہ مدسہ کی ہویا کا رخانے کی محلہ کی ہویامس برکی تو بھراس میں کوئی شکٹ ہمیں کہ نیچے سے حالات درست اور معاملات تھیک ہوجائیں سے۔ اوراس کی اسلامی شخصیت کامل موکمل ہوجائے گی ،اور وہ ہمیشہ ہمیشہ ایسٹے عہر واستقامیت وانملاق عالیہ پر برقرار

رہے گا۔ اس کیے ابن مینا نے بیمے کی تربیت کے سلسلہ میں درجے ذیل وصیت کی ہے کہ بیمے کے ساتھ اس کے مکتب ومدس میں ایسے بیے مول جن سے اخلاق وآداب ایھے اور عادات پندیدہ مول اس لیے کہ بجہ بیعے سے بہت زیادہ افذکر تااور اس سيك يكه تاا ورمانوس بوياسيه

اس لیے اسے مربی محترم آپ اس بات کی پوری کوشش کریں کہ آپ تربیت سے ان بنیادی اصولول اوراسلام کے ان اعلی اساسی قوامد مرقمل برایول، تاکه آپ کا بچه هنائع نه بو ، اور گمرایی ، انحاف او چیمچه درست بن میں مبتلا نه بو . اوراس کا طریقیصرف یہ سبے کہ آپ اس کالعلق ایسے اچھے ساتھیول سے پدایروی جن کا نذکرہ ہم تفصیل سے کر چکے ہیں ۔ تاکر آپ بمبیشہ مستح راست اوربصبرت بربي اورمنزل مقصودي باخبري،

(( قُلْ هٰذِهُ سَبِينِ إِنَّ أَدْعُوَا إِلَى اللَّهِ سَ عَلَا بَصِيْرَةٍ أَنَا وَصَنِ انْتَبَعَنِي مُ وَسُبِهُ فِنَ اللهِ وَمَا كَلَ مُ اللهِ وَمَا كَلَ مِن مِهِ الرالله اَنَا مِنَ المُشْرِكِينَ ﴿ ) . يوسف. ١٠٠

ات كب ويجيكر يرميرى راه ب مين بلانا بول الله یاک بے اور میں شرکیب بنانے والوں میں سفیریں بول۔

مربی معترم! بیم اخیروس آب سے سامنے اسلام کی ان تعلیمات کوپٹیس کردیہتے ہیں جواس نے برسے ساتھیول اور مغدد وبددین رفقاً ، سے اجتناب ودور رہنے کے سلسلہ میں دی ہیں، تاکہ آپ کومیعلوم ہوجا کے کہ اسلام نے نیک صحبست كے اختیار كرف نے كاكتنا ا مبتام كيا ہے اوراس كاكسس شدت سے حكم ديا اور اس كى تعليم دى ہے اللہ تعالى فرماتے ہيں : ا ورسس روز فالم البنائي كاش كاف كعاست كا،

((وَيُوْمَ يَعُضُ الظَّالِمُ عَلْ يَدَيْثُ يَقُولُ لِلَّيْتَنِي اتَّخُذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿ يُونِكُنَّى لَيْتَنِي لَمْ أَنَّخِذُ فَلَانًا خَلِيْلًا ﴿ لَقَدْ أَصَلَّنِي عَنِ اللَّهِ كُو بَعْدَ إِذْ جَاءَ نِيْ مَ وَكَانَ الشَّيْطُنُ لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا ﴾ .

الفرقال ٢٠ يا٢٩

نيزارشا دفرايا :

((قَالَ قِرْنِئُهُ رَبُّنَا مَآ ٱطْغَنْتُهُ وَ لَكِنْ كَانَ فِي ضَالِ بَعِيْدٍ ﴾ ).

رت ، ا*س کے س*اتھ رہننے والاشیطان کھے گا اے بمآر <u>ېرور د گاريس نه اسه نهيس بوشکايا تها بکه په نودې دور</u> درا کی گرای میں تھا۔

<u>کے گاکہ کاشس میں رسول کے ساتھ راہ پرنگ بیتا</u>

المنت ميرى شامت إكاش مي نه فلال تخص كودوست

زبایا ہوتا ۔ یعیناً اس نے نعیم*ت آستہ بیجیے مجعے اس سے* 

بهكاديا ، اورشيطان توانسان كوا ما دكرسن سيحباب

وسے ہی دیتا ہے۔

اسى طرح ارشاد فروايا:

(( اَلْاَخِلَا ؛ يَوْمَيِذِ بَعْضُهُمْ لِبَعْضِ عَدُوُ اِلَّا الْمُنَّقِبَنَ نَ ) . الزّرف. ١٠ اورنبي كريم على التُرعِليه ولم في الشاد فرايا : (( المسرع على دين خمليله فلينظر أحدكم من يضالل ) .

جامع ترمذي

نيز فرمايا:

((صنى الجليس الصالح والجليس السو، كمشل حاصل المسك ونافخ الكير فحامل المسك ونافخ الكير فحامل المسك إصاأك يعذيك .أوتشترى منه أو تجد منه ويعًا لحيبة ، ونافخ الكير إماأك يحرق ثيابك .أو تجد منه ويعًا منتندة » . بخارى و مم منتندة » . بخارى و مم اور فرما يا ؛

رد إياك وقدرين السوء فإنك به تعرف». ابنِ عب كر

الله يم كرسے اس شاعر برس نے كہا ہے: عن المسرم لاتساً ل وسسس لعن قربینه آدی كے بارسے میں سوال ذكر و عجراس كے مراتھى كے بارے میں درا كرو

اس روز (دنیا کے) جگری دوست ایک دوسرے سے فرمن ہوں جے مگر بال سفین (نہیں)۔

انسان اپنے دوست کے ندسب پرمج تاسیے اس لیے تم یں سے برخص کوری دیکھ لینا چاہیے کہ وہ کس سے دوستی کرر ہاہیے۔

تم برسد التمى سے بچواس ہے كەتم اس سے بہرا سنے جا فیگے۔

فكل قسرين بالمقارس يقتدى ملك مرين بالمقارب وم ذوق كرات المراكب مريد وم دوق كرات المراكب

## **──**

# ٣- بيك كا دعوت بن اوردين كى دعوت دين والول سارتاط بداكرنا

بیجے کی تخصیت مکل کرنے اور اس کونفسیاتی ہمعا شرتی تیاری اور دینی دعوت دسینے سے قابل بنانے سے بنیا دی عمال میں سے یہ سبے کہ بچر بس وقت سے زندگی کے گور کھ وصندول کو سمجھنے سگے اور اس کی ذمہ داری جاان جائے تو اس وقت سے اس کا دعوت بن اوردین کی دعوت دینے والول اور اللہ سے کلمہ اور دین کی سرباندی کے لیے حرکت سے رابطہ پدایکر دینا چاہیے جس کامقصد یہ ہے کہ بچھے کفس میں دعوت الی اللہ اور حق سے بارسے میں جراً ست اور صبر کی عادت ڈالنے کی روح بہا ہم اور بڑھتی جائے۔ تاکہ حب اس میں دعوت سے یہ معانی جاگڑین ہوجا بیس ، اور برنفسیاتی صفات گھرکر جائیں تووہ شیر کی طرح اللہ سے دین کی تبلیغ کرسے اور اس سسلہ ہیں اسے زسمی میں ملامت کرنے والے کی پرواہ ہوا ور ز دنیا وی برلیٹ ایال اور زندگ میں بیش آنے والی رکا وقیمی اس کو اس سے عزم سے بازر کھ سکیں ۔

ادراس میں کوئی تک بہیں کہ جب وہ مرت بربانی جن سے بیھے کافعلق ورابطہ ہوگا اس میں وہ صفات پوری طرح موجود ہول گی جو وعظ وارشاد میں کام دیتی ہیں کال فہم وسجد ، دوراندیشی ، اسلام کے لیے گئیں ، اوراس کے راستے میں مہوجہ تو آس کا اثریہ ہوگا کہ نیسے میں مہوجہ تو آس کا اثریہ ہوگا کہ نیسے میں دعوت و بیلے اور جہاد کی روح برط سے گی ، اور سولیت کا اصاس پیدا ہوگا اوراملا بھت الله کے سیست تقل جدوجہ کراسیا ہی اوراسلام کی دعوت و سینے والوں میں سے ایک وائی ہی راگ ہوئی کے دوسروں تک پہنچا و سے والوں میں سے ایک وائی ہی کراپنے رہ سے پہنچا م کو ہوئی کے دوس و جھج کہ سے دوسروں تک پہنچا و سے اور وہ امور جن بین کسی کوھی شک و شبہ نہیں ان میں سے یعی سے کہ حب بینے کے لیے تمام اس بالی موجود ہوں گے تو ہلا شربہ کے میدان و شعور کی عمرش قدم رکھی گا۔ تو اس میں جہاد اور دعوت و تبلیغ اور لوگول کی رہنائی اور راہ و راست پرلا نے اور جب میں جہاد اور دعوت و تبلیغ کی روح ہاگڑیں ہوجائے گی ۔ اور اجھی طرح گھرکر سے گی۔ اور بالآخریہ اس کی طبیعت ، عادت و مزاج بن جائے گی۔

اوریہ بالک بینی بات ہے کہ جب بچہ اپنے فارغ اوقات میں دعوت کے کامول او تبلیغی میدان میں شنول ہوگا، در اس سلد میں لوگول کے ساتھ میں جول، ملاقات وگفتگو کرتارہے گاتواس کا مطلب یہ ہوگا کہ ہم نے اس کا فارغ وقت ایسے کامول میں مشغول کر دیا تبسی کا فائدہ خود اس کو پہنچے گا، اور اس کے اچھے اثرات امت ومعاشرے کے افراد پر پایل گے ، اور ساتھ ہی ساتھ ہم نے بچے میں ایسامعاشرتی واجہاعی شعور پیاکر دیا ہوگا جو اس کی خداداد صلاحی تول میں تکھار پیا کیے ، اور اس کے اور اس کی خداداد صلاحیتول میں تکھار پیا کرے ، اور اس کی خداداد صلاحیتول میں تکھار پیا کرے کا ، اور اس کی خداداد صلاحیتول میں تکھار پیا کرے کا ، اور اس کی خداداد صلاحیت و بلیخ اور اسلام کرے مجام بین سے کے ، اور اس کی خداد میں تو کی کام دو مجام بین سے ۔ کام دو مجام بین سے ۔

کین بیچے کو داعی وبلغ بنانے کی کیا تدبیرہے ؟ اور وہ مراحل کیا ہیں جن کو تدریجاً اختیار کرنا پاہیے تاکہ بچید ممت از مبلغین کی صف اور بڑے کام کرنے والے لوگول کے مرتبہ کو پہنچ جائے ؟

de him white

## ا نغساتی تیاری

جسس کاطرلیقہ یہ ہے کہ اس درد ناک حقیقت کی تصویر شمی کی جائے جب تک عالم اسلامی ایک کارے سے دوسر سے کارے بہنچ چکا ہے، افکار و بنیادی اصولول کی باہمی جنگ کی تصویر بسیاسی ومعاشر تی اختلافات کی تصویر آزادی واباسیت کے مرض کی تصویر شماری سازشول کی تصویر بادر اس ناامیدی ومالیسی کی تصویر جو واباسیت کے مرض کی تصویر جو بہت سے مسلمانول پر جھائی بموئی ہے ، اور اس کے علاوہ اس جیسے اور دوسر سے تصویرات جو عالم اسلام کے معمولی سے مسلمان بر می نفی نہیں ہیں۔

ت موجوده حالات اور واقعه کی تیصوراِ ورجوکچه مور با ہے اس کو بیان کرنا پیے کواس بات پرمجبور کر دے گاکہ وہ ڈبو کے عملی کام اور بلیغی جہا د کی ضرفرت کو سمجھے، اوراس طرح ہم اسے نفسیاتی طور پراس قابل بنا دیں گے کہ وہ امیان وقیمین اور قوت و طاقت اور بورسے اعتماد سے سانھ دعوت سے میدان ہیں آگے بڑھے۔

# ٢. ضرب الامتال كابيان كرنا

مرتی ومرشدربانی کاکام یہ ہے کہ وہ پیچے کو یہ باور کراد ہے کہ اللہ کی شریعیت کی سرلبندی اوراسلام کا پرتم بلند کرنے کے لیے وعوت کال اور بلیغی جہاد نہایت ضروری ہے بضرب الامثال کے دوطریقے ہیں ؛

ا۔ صرب الاشال کا ایک قیم تو وہ ہے جو نفس کی ناامیدی ومایوسی کوشم کر دیتی ہے اوراس کو برامید بنا دیتی ہے اور نیک فالی کا ذراعیہ نبتی ہے۔

۔ ۱ - ضرب الامثال کی دوسری قسم وہ ہے جومسلمان کوممل و قسربانی اور نوا کہ بسی ہی رکا ڈیس کیول نہ ہول بھی کھی ثابت قدم رہنے کا دیس دیتی ہیں یہ

بہلی قسم کے لیے مندرجہ ذیل ماریجی واقعات سے استنہاد کیا ماسکانے:

مندن التحری الته علی الته علیہ ولم کے اس ونیا سے تضریف کے بعد وب اوگول میں وقتی انتشار کھیلاا ور لوگ مختلف جماعتوں میں بٹ گئے ، اور کچے مرتد ہو گئے تواس وقت کون سیمحتا تھا کہ اسلام کا تکم بھر بلند ہوگا، حضرت ابو بکر فی تعمید عند کی خلافت کے پہلے مرحلہ میں جائی تعصیب نے تنبیطان کے سینگ کی طرح اپنے سینگ نکال لیے اور الب عرب کے بہت سے افراد اسلام کو تھیوٹر بیٹے ، اور بہت سے ان لوگول نے ہوظا ہری طور پرسلمان ہونے کے وعوید استے زکا ہ ویت سے انکاد کردیا ، اور بہت سے ان لوگول نے ہوظا ہری طور پرسلمانوں کی باکل وہی مثال تھی ویتے سے انکاد کردیا ، اور بعض نے نماز کو تھم کر دیا . نمی کریم صلی اللہ علیہ وہم کی رصات کے بعد سلمانوں کی باکل وہی مثال تھی ہوچھ نے سے انکاد کردیا ، اور بھی سے بیان کی کہ وہ ایسے سے جسے کہ بری بارٹس کی دات میں ہوتی ہے . اور سلمانوں پر بوحضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہ سے بیان کی کہ وہ ایسے سے جسے کہ برضی اللہ عنہ کے پاس حاضر ہوئے اور ان سے عرض کیا : انتہ کے رسول کے خلیفہ آپ متا کے وہ سے جنگ کرنے کی قدرت نہ ہیں دکھتے ہیں اس یے مہتر یہ سے کہ آپ گھیں اس اللہ کے دسول کے خلیفہ آپ متا کہ عنہ کہ برنے کی قدرت نہ ہیں دکھتے ہیں اس یے مہتر یہ سے کہ آپ گھیں اسے اللہ کے دسول کے خلیفہ آپ متا کی دریے جنگ کرنے کی قدرت نہ ہیں دکھتے ہیں اس یے مہتر یہ سے کہ آپ گھیں

گوشنسین موجا بیک، دروازہ بندکر سے بیٹھ مائیں، اور مرتبے دم تک اینے رب کی عبادت میں لگے رہیں۔

سین الله تعالی کے اس مور بہ ہور سے بی اس موسے اور نشوع و خصوع کرنے والے بندے کے دل برمالی کا ذرابھی گزرزہو، اور وہ الله کی رحمت و نصرت سے قطعاً مالیوں نہ ہوئے ، بلکہ اپنی خلافت کے دور کے اس نظر ناک موڑ برخعا تھیں مارتے ہوئے ہوئے ہمزری اللہ عنہ سے لول گویا ہوئے مارتے ہوئے سے مرضی اللہ عنہ سے لول گویا ہوئے کہ کہا تم زمانہ جا المبیت میں نہا ہوئے ہوئے ہمزائہ جا ہوئے ہو کہ میں ایسے بیم ہمت و کمزور بن جا و گے و کہا تم یہ ہمجھے ہو کہ میں ان کے ساتھ جا دو کے اللہ کے رسول مسلمی اللہ کہ میں ان کے ساتھ جا دو کے ذور یا شعروشاعری سے و لمحوثی کرول گا ؟ ہرگز نہیں ہرگز نہیں !! اللہ کے رسول مسلمی اللہ علیہ و کم میں ان سے بہاد کہ میں ان سے بہاد کرارہوں گا ہو نہا ذاور زکاۃ میں تفریق کردے گا ۔ وی کالل وکمل ہو حکی ہے ، کیا کردا گا ہوئی کردا گا ہوئی کردے گا ۔ وی کالل وکمل ہو حکی ہے ، کیا میں سے جنگ کردل گا ہوئی اگردہ ایک بکری سے بچے یا ادنرٹ کی ری دینے سے جنگ کردل گا ۔ میں ان سے بہاد کریں گئے تو بیں اس برائ شعص وکی آسکتی ہے ؟ بخدا اگردہ ایک بکری سے بچے یا ادنرٹ کی ری دینے سے جنگ کردل گا ۔

حضریت عمرضی اللّٰدعنہ فرماتے ہیں کہ اللّٰہ نے حصرت ابو بحر کے سیننے کو جنگ سے لیے کھول دیا تھا۔ اور ہیں سیمجہ گیا کہ وہ بانکل حق بات کہ رہے ہیں ر

ا دراس طرح سے حضرت ابو مکرونی اللہ عنہ ایمان وعزم ، اور جہاد ومہت نِفس سے اس بات بر قادر مہوسگئے کہ سلطنت اسلام کو دوبارہ استحکام نجشیں اوراس کے دبد رکوستھ کم اور لبھا ، کویقنی بنا دیں ۔

وقت یہ کون تصور کرسکتا تھا کہ اکسٹر اسلامی ممالک اور سبی اِقطنی اور اس کے گرد و نواح میں ایک عرصے تک غالب سہے تواس وقت یہ کون تصور کرسکتا تھا کہ اکس جگہ دوبارہ اسلام کوسر بلندی حامل ہوگی۔

کون جانیا تھاکدیہ ممالک سلطان صلاح الدین ایوبی جیسے بہا درسے ذریع فیصلاکن جنگ حطین میں آزادی حاصل کریں سے اوران کو بھروہی عزیت وشان شوکت اور مقام راصل ہوجائے گاجو تاریخ کاسنہ لباب ہنے گار

ور با در المرا ور المار المراب المراب المراب المراب المراب المراب المراب المراب المرديا المرديات المرديات المرابيات المرابي المرابي المرابي المرابي المربي الم

سر سراریا میں بھیسے میں میں جی سامان میں کا میں آروبا ہوں کے دراید جنگ میں جانوت میں فتح و آزادی عامل کرے گی او کون یہ گمان کرسکتا تھاکہ مملکتِ اسلام علیم ہمپادر قطر سے ذراید جنگ میں جانوت میں فتح و آزادی عامل کرے گی اور مسلمانوں کوایسی عظمیت وفتح نصیب ہوگی مبس پڑسلیں فخرکریں گی۔

فتح وکامیابی سے نیک فال لینا کامیابی کابیش خیمہ تر آسے ، اوری عبی قوم وامت کی معنوی طاقت ہی ایک ایسی چیز ہے جو اس سے نوجوانوں اور مردول کو اس بات برآما دہ کرتی ہے کہ وہ ناامیدی کو امید سے اور شکست کو فتح سے اورکمزدی وضعف کوطاقت وقوت سے اور ذلت کوعزت سے اور مرباً گندگی اورتشتت و تفرق کو و صدت سے بہل دی۔ اسے مربی محترم! جب آپ بہے ہیں امیدونیک فالی کے بیرجذبات اور معانی پیداکر دیں گے تولا محالہ وہ دعوت الی النّہ کے میدلن کی طرف بڑے ہے گا بلکہ اس سے سشکر کا ایک فوجی اور اس سے نوجوانوں ہیں سے ایک طاقتور بہا در و صابر توان بن جائے گا۔

دوسری سم کے لیے مندرجہ ذیل مقداؤل اور نمونوں سے استشہاد کیا جا سکتا ہے:

ج ہمارے سب سے برائے اور پیلے مقتدا ور بہانی کریم ملی اللہ علیہ وقیم جنہوں نے دعوتِ اسلام کے راستے ہیں مختلف قسم کی تکلیفایں مجبلیس اور طرح سے امتحانات سے گزرے اور مصائب وآلام برداشت سے سیرت نبویہ پاکھی جانے والی کتابیں ان امتال وواقعات سے جری ہوئی ہیں۔

وه مقتدی و رنباجورسول النه ملی النه علیه وسلم کے صحابہ اور اس جماعت کی بہلی فوج ہیں جنہوں نے النه کے راست میں جہاد کا حق اداکیا اور اک کی خوت کی مختت میں بہاؤی طرح ایمان کے ساتھ داخل ہوئے ندان میں سی قسم کی مست سی اور مکہ کی زندگی میں وعوت کی مختت میں بہاؤی طرح ایمان کے ساتھ داخل ہوئے ندان میں النہ منہ مست سی آئی زضعف و کمزوری بلکہ امتحابات ومصائب نے ان کے ایمان واسلام کو اور برطادیا ، یہ صحابہ کوم وضی النه منہ معدد ضی التہ منہ نے فرایا ہے :
میں وہ حضرات ہیں جن کے بارسے میں حضرت عبدالتہ بن مسعود ضی التہ عنہ نے فرایا ہے :

جو شخص سی کی پیروی واقداکر ناچائے تواسے جا ہیے کہ رسولِ اکرم صلی اللہ علیہ وہم کے صحابہ کی پیروی کرے ،اس لیے کہ پر حفرات اس امت کے تما) افراد سے زیادہ نیک دل ،اوروسیع وگہرے علم والے ،اور کم لکلف والے ،اور راہ راست پر زیادہ قائم ،اور بہت زیادہ اصحی حالت میں تھے ،ان حضارت کو اللہ تعالیٰ نے اپنے نبی اکرم صلی اللہ علیہ وہم کی صحبت اور اپنے دین کے قائم کرنے کے لیے پند فرمایا تھا ،اس لیے ان کے فضل و مرتبہ کو پہچانو اور ال کی پیروی کرواس لیے کہ یہ میچ وسید ھے راستہ پر گامزن و قائم تھے ،صحابہ کرام ضی اللہ عنہم انجعین کی قربانی و ثابت قدمی اور مبرکی مثالیں ہوت کنٹہ اور زیادہ ہیں ۔

وه مقدی حضارت بزناریخ کے ابتدائی دورسے آج تک دعوت و بلیغ کے میدان میں سکے بوسے ہیں، ان حضارت کے دورسے آج تک دعوت و بلیغ کے میدان میں سکے بوسے ہیں، ان حضارت کے ایسے بڑے ورشاندار کارناہے اور زردہ جا وید قربانیاں ہیں جن پر قومیں ہر دور وہر زمانے میں فخرکرتی ہیں جسے کہ حضرت صن بصری ، بعزبین عبدالسلام ، مُنذِر بنِ سعیدا کم احمد بن صنبل ، ابوغیاث ذاہد ، حسسن بنا اور سید قطلب وغیر سینکڑوں حضارت جو ممل سے بہاڑا ورثابت قدمی میں شیر کی مانند اور صبر و قربا نی میں صرب المثل تھے۔

اس سے اسے مرفی محترم آآپ جب دعوت اسلام اور تبلیغ کے سسادیں بیصے میں قربانی بسبرو ثابت قدمی کے یہ جذبات پیدائردی گے تو بلاشیہ یہ کارنامے بیھے کے تصور میں گھرکر جائیں گے اور اس کے نفس وول میں سلریت کرجائیں گے اور اس کے نوبلاشیہ یہ کارنامے بیھے کے تصور میں گھرکر جائیں گے اور اس کے نوبلائے اور ان کے راستے کواپلے اور مجروہ اپنی زندگی میں مقتلی کے لیے داستہ بنا ہے گا اور ان حضرات سے نقش قدم پر چلے گا اور ان کے راستے کواپلے

گا اوران توگول میں سے بن جائے گاجن کو اللہ تعالیٰ نے اپنے درجِ ذیل فرمانِ مبادک میں ذکر فرمایا ہے : ((اُولَیِّ کَ اَلَّذِیْنَ هَدَی اللّٰهُ فَبِهُ لَهُمُ اقْتَابِهُ ، » . ۔ یہ وہ توگستھے جن کو اللہ نے جایت کی سوآپ ان

ك طرلقيه پر جلي -

الانعام - 9٠

۳۰ دعوت الى التُدكى فصيلت ومرتبه ظامركرنا

اس مرحلہ میں مرنی کوچاہیے کہ نیکے آئے ذہن میں اس طیم اجر و تواب کوراسنے کر دسے جو دین کی وعوت دینے والے کو وعوت دین اوراسلام کے ابری پنیام سے بہنچانے پر ملما ہے۔

ے بیجے کے ذری میں پر بات بیٹھا دینا جا ہیسے کہ دئین کی دعوت دینے والے لوگ ہی تمام لوگول سے افضل وہرتر دہبر میں ہیں۔ ان میں ان تر الایران شاہ میں ا

میں اس میے کہ اللہ تعالی کا ارشاد ہے:

تم ہوبہتر سب امتول سے جو جی گئی عالم میں جگم کتے مرادر برسے کامول سے منع کرتے ہوادر

- ١١٠ التديرا يان لات مبور

الكُنْتُمْ خَيْرَ أَمِنَاةٍ الْخَيْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُونُونَ بِالْمَعُونُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُوْمِنُونَ بِاللَّهِ ﴿)). تَالِمُمُوانِ مِاللَّهِ ﴿)).

ے پیچے کے ذہن میں یہ بات راسخ کر دینا پرا ہیے کہ دین کی دعوت دینے والے ہی دنیا و آخرت میں کامیاب و کامران ہو کے اس کیے کہ اللہ تعالی فرماتے ہیں :

> (( وَلَتَكُنُ مِّنْكُمُ مِّنْكُمُ أُمَّةٌ يَلَاعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَ يَاْمُرُونَ بِالْمَعْدُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِمُ وَأُولَيِّكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ » . مَالَ عَمِول يهما

اورچاہیے کہ تم میں ایک آپی جاعت رہے ہونیک کام ک طرف بلاتی رہے اور نیک کام کی طرف حکم کرتی رہے اور برائی سے منع کریں اور وہی اپنی مراد کو پہنچے۔

والول كاكوئى مم بلير ونظير نهيس بيد بات وال دينا چاجيه كرم تب ومكانت ، اورعزمت وشرافت اور تن افعال مي دعوت دين والول كاكوئى مم بلير ونظير نهيس بيداس ليه كرالتُه على شاز فريات بين ؛

(( وَمَن أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَنَّنَ دَعَّا لِمَكَ اللهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَ قَالَ لِنَّكُ مِنَ الْمُنْدِينِينَ ».

طرف بلاستُے اور انحوں نیک عل کرسے اور کھے کہیں تو نین میں میں دور انحوں نیک عل کرسے اور کھے کہیں تو

حم السنجده - ۳۳

فرمانبردارول میں۔۔۔مبول ۔

ا ور اس مصیبتر بات کس کے ہے جو (دوسروں کو)اللہ کی

و اور پیچے کے ذہن میں یہ بات بٹھا دے کہ بلیغ اور دعوت کا کام کرنے دالول کو اتنا ہی اجر ملے گا جناان کی اقتداء دہروی کی کمہ نے دالوں کو اتنا ہی اجر ملے گا جناان کی اقتداء دہروی کہ کہ نے دالوں کو ملیا ہے۔ ایکن ان ہروی کرنے والے لوگوں کے اجروثواب میں کوئی کمی نہ ہوگی ، جنانچہ امام سلم واصحابِ سنن روایت کرتے ہیں :

حبس نے کسی اچھے کا کی طرف وعوست دی تواس کو

ررمن دعاإلى مدى كالنب له

آنا ہی اجر طے گا جتنا اجران ہوگوں کو سلے گا بواس ک پیروی کرنے والے بیں اس کی وجہ سے ان ہوگوں کے تواب میں کونی کمی نہیں کی جائے گا۔ من الأجرمثلأجورمن اتبعه لاينقص ذلك من أجوبرهم شيئًا».

وراس کے ذہن میں یہ بات وال و سے کہ وقوت و تبلیغ کرنے والول کا معاشرہ پر مجوا تربیر آ ہے اور الله تعالی ال کے فرسید سے ہولوگوں کو ہوا بہت و بیتے ہیں وہ الن کے سے ہولوگوں کو ہوا بہت و بیتے ہیں وہ الن کے لیے اس سب سے ہم ترسیط سے بی برسورج کلمآ اور غروب ہوتا ہے۔ اس اسے کہ اما کہ بخاری نبی کریم سلی اللہ علیہ ولم کے درج ذیل فرمان مبارک کو روایت کرتے ہیں :

بخدا اگران ترتعالی تمہارے فرسیعے سے ایک آدمی کو تھی جارت دے دے تویہ تمہارے لیے سُرخ افٹول سے زیادہ بہتر ہے، اورایک روایت میں ہے کہ تمہارے لیے اس سب سے بہتر ہے ہیں پرسورج نیکے اور ((فوالله لأن يهدى الله بك مجلاً واحدًا خار لك من الله عمرانعم)، واحدًا خار لك من أن تكون لك عمرانعم)، وفي رواية: ((خوير لك مما طلعت عليه الشمس وغربت).

مرنی محترم اجب آب بیھے کے سامنے دعوت و بیلنے سے علق یہ فضائل و مقائق رکھیں سے اوراس کے ذہنیں انہیں مرنی محترم اجب آب بیھے کے سامنے دعوت و بیلنے سے علق یہ فضائل و مقائق رکھیں سے اوراس کے ذہنی انہیں رائٹے اور جاگزین کر دیں گے۔ تو بچہ نوشی اس میدال میں آ گے بڑستھے گا، تاکہ اس زبر دست شہنشاہ وظیم ذات سے اجرو تواب مامل کرسکے س کے دست قدرت میں تمام جہان کی کنجیاں ہیں۔

ہے۔ دعوت وتبلیغ کے رہنما اصول کا بیان اس مرحلہ پرمرنی کو چاہیے کہ دعوت وتبلیغ کے سلسلہ کے رہنما اصولول کو بیان کر دسے ناکہ بچہ ان کو افتیار کرے اوران سے مطابق بغیراس کے کام کرے کہ آس میں کوئی تم یاشیڑھا پن بیدا ہوتا کہ دوسرش پراس کا اثر زیادہ بڑے اوروہ اچھے واعلی قسم سے تیائجے مامل کرسکے۔

وه اصول مختصرًا درجٍ ذيلٍ بي :

الف حسب چیز کی طرف دعوت دیے رہاہے آجی سے روک رہاہے اس سے کم سے واقف میں ہو:

تاگداس کاحکم دینا یا روکنا ہمیشہ شرعی احکام اور اسلام سے بنیا دی اصولوں سے مطابق ہو، واقعی التٰد تعالیٰ درج ذیل آسیت ہیں بالکل ہجا ارشاد فراتے ہیں :

ے سرخ اوزٹ المب عرب سے یہاں نہایت تیمتی و قابلِ نخرمانورست، رہوتے تھے۔

آب كيے كركياعلى واليه اوربيعلم كہيں برابريجى ہوتے ہيں۔

القُلْ هَلْ يَسْتَوِكُ الَّذِينَ يَعْكُمُوْنَ وَالَّذِينَ لَا

# بَعْلَمُوْنَ )) الزمرة ب - اس كافعل بميشة قول كيه مط ابق بهو:

تاکہ لوگ اس کے طریقے کو قبول کریں اور اس کی دعوت پرلبہ کہیں ، اور ایسے لوگ کتنے بربخت ہوستے ہیں ہوائی باتیں کہتے ہیں جن پروہ خودعمل نہیں کرستے ، اور ایسے لوگ کتنے بڑے حتی ہوستے ہیں جو دو مسرول کو تواجی باتوں کامکم نیتے ہیں سکی خود اپنے آپ کو مجلا دیتے ہیں نحود الن پڑمل ہرانہیں ہوستے ، اللّٰہ تعالیٰ نے اس مسے لوگول سے بارسے ہیں کتنی شدید بات فرمائی ہے ،

(( يَايَّهُا الَّذِينَ المَنُوالِمَ تَقُولُونَ مَا لَا يَايَّهُا الَّذِينَ المَنُوالِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَقُعُلُونَ ( كَابُرَ مَفْقَا عِنْدَ اللهِ أَنْ تَقُولُونَ مَا لَا تَقْعَلُونَ ). الصف-١٥٣ مَا لَا تَفْعَلُونَ ). الصف-١٥٣ اور ارشا و فرايا :

((اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّوَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتْبَ، أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ». وَأَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتْبَ، أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ».

اسے ایمان والوایی بات کیول کھتے ہوجو کرستے نہیں ہو اللہ کے نزدیک یہ بات بہت نا اِصْلَی کی ہے کہ ایسی با کہوجو کرونہیں۔

کیا مکم کرتے ہو توگوں کو نیک کام کا اور اپنے آپ کو تبھوستے ہوا ورثم تو تحاب پڑستے ہو تھے سو بیچے لیوں نہیں مو۔

# جے۔ حبس بات برنکیرواعتراض کیاجارہا ہے وہ سب کے نزدیک متفق علیطور بربری ہو:

تاکه لوگ اس کے تعصب کی وجہ سے فکری ونفیاتی ومعاشر نی تشش وینج واضطاب میں گرنتار نہ ہوں خصوصاً وہ معاملاً جن می تنظیمی فیصلہ اجتہا داور ائمہ کی تقلید کرسے گا وہ اللہ سے کہا جاتا ہے کہ توخص کسی عالم کی تقلید کرسے گا وہ اللہ سے میں صبح سالم ملے گا لینی گرفت سے کے جائے گا)۔

# د - ارگی کے بدلنے میں تدریج سے کا لینا چاہیے:

تاکدانیام کاریس ایسے شدیدوسخت تائج کے رہے نہیجے جونواب وخیال بی تھی نہول ،اس لیے تدریج سے کا کلین ا چاہیے نصیحت وخیرخواہی کرسے، اللہ سے ڈرائے ، دھم کا ئے بھرزبانی سختی سے کا کے بھربھی اگراصلاح نہ ہوتو ہاتھ و طاقت قوت سے ذریعے سے اس برائ کو بدل ڈالے بہی میچ طریقہ اور حکمت کا تقاضہ سبے اللہ تعالی فرماتے ہیں ، الوَ مَنْ بُوْتَ الْحِكْمَةَ فَقَانَ أَوْتِي خَنِرًاكَيْنَارًا)) بَقَرُ ١٣٩ م ورْسِس رَسِمِهِ لَى اس رَرِ عَنوبي لل

# لا - نرم مزاج وخوش اخلاق بمونايا بيد:

تاکدانی نرمی اور نوش اخلاقی سے لوگول کے دلول پر قبضہ کرے اور لوگ اس کی نصیحت واچی باتول پر لبیک کہیں اللّٰہ تعالیٰ بل شانہ نے بالکل سے فرمایا ہے :

بلائيدا پندرب كى اه بركي إلى سمجعاكر اور العبى طرح المستيد النهاكر اورالزام ديجيدان كوسس طرح بهتر بور

( أُدْءُ إِلَىٰ سَيِبِيلِ رَبِكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْعُسَانُ ﴾ الْحَسَنُ ﴾ الْحَسَنُ ﴾ المُحَسَنُ ﴾ المُحَسَنَةِ وَحَبَادِ لْهُمْ بِالْكِيِّ هِيَ الْحَسَنُ ﴾ المُحَلِمَةِ

# و۔ تكاليف برسبركرناچا ہيد:

تاکه متکبرول کی ختی وتشدد اور جا ملول کی حماقت .اورمذاق اڑانے والول کے مذاق اڑانے سے مایوس و تنگ ول وٹ کست خوردہ نہ ہو .اس سلسلہ ہیں وہ نصیحت سنیے جوحضرت تقانِ مکیم نے اپنے بیٹے کو کی تھی جس کا ذکرہ قرآن کریم نے اس طرح کیا ہے :

اسے میرے بھے نمازکو قائم کھ، اورلیھےکامول کی نسیحت کیاکر، اور برسے کام سے منع کیاکر، اورجو کچھ پہش آئے اس پرصبرکیاکر، بدشک پر (صبر) ممست (( يُنْبُقَّ أَفِيمِ الضَّلَوٰةَ وَأَمُّرَ بِالْمَعْرُوْفِ وَانَهُ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلَّامَّا اَصَابَكَ إِنَّ ذُلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأَمُورِ \* )).

مان ۔ ١٤ كر كامول ميں سے ہے۔

مرنی محترم! دعوت اسلام ببلیغ، اورلوگول کی خیرو بھلائی کی طرف رہنائی کرنے کے سلسد سے یہ اہم رہنا اصول ہیں۔
اس لیے آپ کو جا ہیں کہ جب آپ کا بچہ س شعور کو پہنچ جائے اور بچوش سنبھال نے تواسی وقت سے بیچے کویہ بایس کھایں اور سمجھائی تاکہ وہ ان کا عادی ہنے ، اور مدریجاً ان کو سیکھے ، اور ان کے مراحل اور اصولول کو سیمھے ، تاکمستقبل ہیں وہ ایس موفق دائی بن جائے جس کی حکمت وسن مربیر ، وخوش اسلوبی ، وسسنِ معاشرت اور بطیف اضلاق اور ظیم تا خیر کی جانب لوگ انگلبول سے اشارہ کریں ۔

٥ - رسنائي وتوجيه يعلى تعبيق تك

اس اہم مرطبہ میں مرتی بیعے سے ساتھ معاشرتی زندگی کی تیاری اور دعوت کے بیداس کو تیار کرنے میں عملی تطبیق کے

له كتآب تربية الاولاد فى الاسلام الدرمبيت اولاد ، كتيم نانى كمينى فصل كي معاشرتى تنقيدا ورد كهيد كهال "نامى بحث برشصه، و لاب آپ كويرتمام بنيادى ماتس اور اصول ولائل وشوا بد كے ساتھ مغصل موجود طبیں گئے۔

يهلوكي طرف منتقل مبوما ہے۔

اس دعوت کے لیے تیار کرنے کے مرحلہ میں مربی سے لیے بہتریہ ہوگاکہ وہ اپنے بچے کاس مخلص بلغ وکر پرکارداعی سے تعلق قائم کردے سے بیات کائم کردے ہوں اور اس کی صحبت میں رہ کرلوگول کوخیرہ سے تعلق قائم کردے بس سے بچہ رہنائی حامل کر سے ، اور دعوت کے اصول سیکھے ، اور اس کی صحبت میں رہ کرلوگول کوخیرہ مجل نی کا طرف دعوت دینے کے ملی بہلوکو دیکھے اور اس کی شق کر سے ۔

یہ بات کوئی دھی چیپی نہیں ہے کہ ابتدائی عمر میں اس طرح کا تعلق قائم کر دینے سے بیچے کو دعوت سے لیے بخت کرنے ،اور معاشرے کے لیے تیار کرنے ، اوراس کی شخصیت کی نفسیاتی وکردا رسے اعتبار سے کمیل کرنے میں بہت زمادہ اثر میڑ آ ہے۔

اس مرطر کے بعد تھے رہ ایت واصلاح کے لیے انفرادی ملاقات کی مشق کامرحلہ آباہیے۔ اور یہ اس وقت تک نہیں ہوسکتا جب تک کہ بچہ تن تنہا اکیلے بغیرسی مرشد کی معیت یاکسی دوسرے کی مرافقت کے کمی طور مردوں کواچھی باتوں کی طرف دعورت دینے کی مشق نہ کرہے۔

سین اس سے قبل کہ بچرسی انسان کو خیر و تھلائی کی طرف وعوت دینے کا کملی تجربہ کر سے بہتریہ ہے کہ مرتی یا دائی بچے
کو دعوت و تبلیغ کے اصول اور اس کے مراصل یا دولا دیے۔ تاکہ وہ خوب باریک بینی و عمدگی سے ان کی تنفیذ کر سکے، اور تھے
خود خوشی خوشی نوشی نہایت اطمینان وانشراح کے ساتھ دعوت و تبلیغ کے میدان میں کام کر سے بھی اس دعوت سے میدان میں
ایسا ہوگا کہ یہ اپنے مدرسہ یا اسکول سے ایسے ساتھی کو دعوت دسے گاجس کی نظر میں عبادت کی وئی چنیت نہیں ، جو نمازی طلق
پروا ہ نہیں کرتا ہوگا ، اور نیک لوگول کی زندگی قطعاً نہ گزار آبا ہوگا۔

ایسے موقعہ پر دعوت و تبلیغ میں بیسے کا کمال اس وقت ناا ہر ہوگا جب وہ اس ساتھی کو نہایت عمدگ سے نماز کی دعوت وسے ،اور اس کو فاسد و نواب ما حول سے بچاہے ،ایسے موقعہ پراس کی مؤثر شخصیت کا اظہار ہوگا کہ وہ اس ساتھی کو سمجھا دسے ، اس کی شفی کو کر است برسے آئے ،اور ایسے موقعہ پراس کی مؤثر شخصیت کا اظہار ہوگا جب وہ دوسرے کی شفی کو کر ایسے موقعہ پراس کی مؤثر شخصیت کا اظہار ہوگا جب وہ دوسرے کی شفی کو کر اپنی بات منواکر دوسرے کو ہوایت دسے سکے ،اور ایسی صور تحال میں دعوت و تبلیغ کے میدان میں اس کی مقدرت اور طاقت مجم موکر سامنے آئے گی، اس معنی کہ وہ لوگول کو کتنا اپنی طرف مائل کرتا ہے اور لوگ اس سے کتنے متاثر ہوتے ہیں ،اور دوسرول کو وہ اپناکٹناگرویدہ بنا آہے۔اور جسس جسید کی دعوت ، اور جس بات کا کم دے رہا ہے اس میں لوگ سس مدیک اس کی پریاف کرستے ہیں !!

بیچے کے دعوت تبلیغ کے اس عملی مرحلہ سے فادغ ہوسنے کے بعد مرنی یامرشدیا داعی کے لیے بھیرائیک اور دُورا ورمرحلہ آیا سبے، تاکہ وہ بیچے سے الن ترائیج کے بارسے ہیں دریا فرت کرسے جو اس نے ماسل کیے ہیں ، اور جن مراحل سے بچہ گزر دیکا سبے ان کامی اسبرکرسے ، اور بھیراگروہ میمکوس کرسے کہ بیچے نے دعوت سے میدان ہیں بیچے طربقیہ اختیار کیا ہے ، اور خوری قواعد کی بیروی کی سبے .اورتماً) مرائل پرمولمدوارعمل کیا ہے تو پیھے کے اس اچھے کا رنامے وکادکردگی کی تعربین کرسے .اور اس پر اس کی مجمت افزائی سے کام لیے اورمعاشرہے ہیں دعوست و تبلیغ سے میدان ہیں اس سے اورنشاط و تمبت سے کام کرسنے کا مطالبہ کرہے ۔

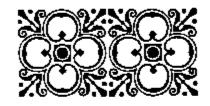
اوراگر وہ یہ دیکھے کہ لوئے نے صبیح اندازسے کا نہیں کیا اور اصول کے مطابق صبیح وعوت نہیں دے سکا توسیہ مولیتے کی طوف اس کی رہنمائی کرسے، لہذا ایسے موقع بروعوت و تبلیغ کے گران اور مرنی پرید لازم ہے کہ وہ بیے کے ساتھ اِس طریقے کو افتیار کرسے ۔ اور بجہ وعوت و تبلیغ کے سب کا کوجی کرسے اس سے اس کے بارسے میں استفسار آرا رہنے اور اس کا محاسبہ کرتا رہیے ۔ اور مجرجب یوموس کرسے کہ وہ اس کام بی شریحگاہیے اور کروار و اعمال میں بختہ ہوگیا ہے تو اسے جہالت سے لبریز ماحول و معاشرے میں چھوڑ و سے تاکہ وہ نہایت عمدگی اور خو اس اسلابی سے دعوت ناسول کے کام کرستے ۔ اور دنیا میں اسلام سے بنیا وی احکامات کی تبلیغ باکسی خوف و خطرے کرسے نواہ اس کام میں اس کوجوٹ و سے کام کرکھوٹ و کام کرکھوٹ اسلابی میں اس کوجوٹ کو سے کہ وہ انہیں اسلام سے بنیا وی احکامات کی تبلیغ باکسی خوف و خطرے کرسے نواہ اس کام میں اس کوجوٹ بیت کا کی ہے مصائب و تکالیف و مناؤل کوکیوں نہ برداشت کر الم ہے ، اور انہیا بالیم اسلام کواس داسے میں جو تکا ہوت بین آئی تارید میں برداشت کر دہا ہے ، اور ان بوا ہیں گار فروت دینے والے ہر دائی کے ساتھ التہ تعالی کام می تو میں برقسے میں برقسے کہ مور فروت دینے والے ہر دائی سے ساتھ التہ تعالی کام می تو و کوت دینے والے ہر دائی سے ساتھ التہ تعالی کام می تو کی کرکوئی میں برقسے میں ہو کو کوت دینے والے ہر دائی سنت میں کی قسم کی کوئی تدریکی التہ کی است سنت میں کی قسم کی کوئی کی برنی یا بیش گے ۔

#### **多米多米多米多米多米多米多米多米多米多米多米**

مرفی محترم! اگرآپ بیجابی کدآپ کا بچداسالی کوسٹ کرکاسپاہی اور حق کی وعوت دسینے والے داعیول میں سے بن جائے آئی آپ کو چاہیئے کدآپ اپنے نیکے کا ایسے سے داعیول اور مخلص بلخی سے جوٹر قائم کردیں جن سے آپ کا بچرایمان کا عزم و بقین حاصل کرسے ، اور ان سے ذریعے جہاد کی طرف جل بڑھے ، اور ان کی جدوجہدسے دعوت الی انڈر کے میدان میں کا کرنے باتھول و مکال کو پہنچ جائے اور دعوت سے میدان میں عملی قدم رکھے تو بلکی سستی کا بی تقصیر دکو آبی کے دوگوں کو گرا ہی سے نکا لیے ضعی راستے کی طرف برایت دینے گرا تو ست فررت ہے بن کی اور اصلاح و بلنے میں زردست کا رئامدانے کی دے ۔ آب دنیا واسلام کوایے بونہا دول کی سخت ضورت ہے جن کی گھٹی میں نیروست کا رئامدانے کا ورجو با نغ ہونے سے قبل ہی تبلینی جہاد اور دعوت الی اللہ کے عملی میدان میں بڑھے بعد بول تاکہ دب وہ اس عمر کو پہنچ سے میں اسلام کے ابدی پیغام کے اٹھانے سے قابل ہول تو دور در از علاقول میں بڑھے کو گول کو تہذیر بیافت اورات کی مدد کریں ، اورعی مدورت سے آناکرائیں ، اوری کی مدد کریں ، میں بہنچ کر لوگوں کو تہذیر بیافت اورات کی مدد کریں ،

ا و ربدامیت کی طسب رف دعوت دیں اور روئے زمین کو عدل وانصاف ، امن واستحکام اورسسکون و قرار کاگہوا رہ بنا دیں ۔

وہ دعوت وجہا دے میدان ہیں بلائسی خوف وخطر کے آگے بڑھتے جائیں. اوکسی کے خوف وڈر کے بغیبہ اور اس کے موست وجہا دے میدان ہیں بلائسی خوف وخطر کے آگے بڑھتے جائیں. اور اس کا کا میں اللہ کی شریعیت کونا فذا و راسلامی حکومت کو قائم کرسکیں، اور اس خطیم عزت و بزرگی اور قوت وطاقت کو دوبارہ حال کرسکیں جسے ان کے سابقین اولین نے حاسل کیا تھا اور اس وسیع عظیم عزت و بزرگی اور قوت وطاقت کو دوبارہ حال کرسکیں جسے ان کے سابقین میکومت کو قائم کرسکیں حب کی سرمین سے سورج کبھی غروب نہیں ہوتا تھا، اور سے اللہ حبل شان سے میے کوچھی مشکل نہیں ہوتا تھا، اور سے اللہ حبل شان سے میے کھی مشکل نہیں ہے۔



# ۵ ۔ ورزشس وریاضت

معاشرہ کے افراد کی جمانی تربیت اور صحت کو برقرار رکھنے سے لیے اسلام نے جن اہم اور نفع نجش وسائل کو مقرر کیا ہے ان میں سے رہمی ہے کہ موقعہ کی منا سبت اور حالات سے مطابق فارغ وقت کو جہا دے کامول بوجی مشقول اور ورزش وغیرہی مصرو مصروف کر دیا جائے۔

اس کی وجہ بیہ ہے کہ اسلام نے اپنے شاندار بنیادی اصولول اورعالی ترین تعلیمات سے ذریعہ ایک ہی وقت میں حقیقت اورواقع اور ماقت سے ذریعہ ایک ہی وقت میں حقیقت اور واقع اور صافت مرسے تھیں کو دکو کم جاکر دیا ہے اور روح کی ضرفریات اور جم کی ضرفر یا ہے درمیان تطبیق پدائر دی ہے ، اور جم کی تربیت اور روح کی اصلاح کا پورسے طورسے خیال رکھا ہے۔

بچر حبب سے قل ترمجھ کی مرکو پہنچے اس وقت سے اس کی صحت اور میم دونوں کا خیال رکھنا ہا ہیں بلکہ ناسب یہ ہیکہ ناسب یہ ہیں ہوا وراع فارغ اوقات کوایسے مشاغل سے صوف کردیا جائے جن سے اس کو جمانی صحت عاصل ہوا وراع فار میں قوت بدا ہوا وراع فار میں قوت بدا ہوا وراع فار میں قوت بدا ہوا ورای کا سال بدان چست اور چاق و چو نبدر ہے یہ بین و برسے ضروری ہے :

ا۔ اس کو حاصل شدہ بہت ہے فاغ وقت کی وجہ ہے۔

۲- اس کوبہت می بیمارلول وامراض سے بیجانے کے لیے۔

٣ بجين بى سے اسے ورزش اورجها دے كاموں كمشق كرانے اور عادى بنانے كے ليے۔

مرنی محترم اسلام نے ریاضت ورزمش اور فوجی تیاری کے سلسلہ میں جوانتمام کیا ہے اسے ظاہر کرنے کے لیے آپ کے سلسنے دینی نصوص اور آیات واحاد میٹ کا ایک مجموعہ پیش کیا جا آہے تاکہ ہر انکھیں رکھنے والا محص یہ جان لے کہ اسلام ہی انتد تعالی کاوہ ابری دین ہے جوعزت وقوت اور جہاد کے وسائل کی طوف دعوت دیتا ہے الند تعالی فراتے ہیں:

(( وَ اَعِدُّوْا لَهُمْ مَّنَا اسْنَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَمِنْ مَا السَّنَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَمِنْ مَ

سے اور بیلے بوئے گھوڑول سے ، کہ اس سے الترکے

وتمنول بردهاك برسه اورتمهار سيتمنول بر

(( وَ اَعِدُّوا لَهُمْ مِّنَا السَّنَطَعْنَمُ مِّنَ ثُوَّةٍ وَّمِنَ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللهِ وَ

عَدُّوَّكُمُ ». اداندر...

\* الم سلم اپنی بیجے بی رپول اکرم کی التّدعِلیہ ہم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشاد فروایا : ((اللغومن القوی خدیر وأحدب إلی اللّٰہ کا تالہ کا قدر مؤمن مبترسے اور التّٰدکوزیا دہ مجوب وہیندیو ہے کمزورمومن ہے۔

من المئومن الضعيف».

بروه چیزجواللہ کے ذکریں سے مزمود کھیل کودہ یا مجول سوائے میار پیزوں کے : تیراندازی کے لیے انسان کا دونشانول کے درمیان بیلنا، اور لینے تھوٹے کوتربیت دینا. اورانی بیوک کے ساتھ دل لگی . اورتيرناسيكصناء

\* اورطبرانی سسندجید کے ساتھ رسولِ اکرم صلی التدعلیہ ولم سے روایت کرستے جی کہ آپ نے ارشِاد فرایا: لاكلشئ ليب من ذكرالله فهو لهوأوسسه والاأربع خصدال : مشى الرجل ببين الغرضيين. وأديه فرسه ، وصبلاعبته أهبله وتعليمه السباحة».

\* اورامام مسلم اپنی تحاسب سیح میں روایت کرتے ہیں کہ رسول الته صلی الله علیہ ولم نے اللہ تعالی حبل شار کا فوال مِراکِ ذلي لاوت فرايا:

> ((وَأَيْعِدُ أُوالَهُ مُ مَاالْسَ مَاالْسَ مَاالْسَ مَاالْسَ مَالِكُ مُ مِنْ قُوَّةٍ ». ميمرارشاد فرمايا:

تیراندازی ہے فہردارس لوکہ قوت تیرانداری ہے۔

اوران کی نوانی کے واسطے تیادکرو میرکمیہ قوت جمع کر کو

لا أله إن القوة السومى . ألا إن القوة الرمى · نبردارسن بوكرةوست تيرا ذازى بيرين فيروارسن لوقوت ألا إسنب القوة السرمي».

\* اميرالمؤمنين حضرت عمرين الخطاب رضى التُدعنه نه إين حكام كولكها تقاكه: التُدى حمدوثنا كوليس يد لكمنا چاہتا ہوں کہ)ا<u>پنے بچول کو تیراندازی اور تیرن</u>ا اور شہسواری سکھا ؤ۔

اور اہام بخاری وسلم روایت کرتے ہیں کہ نبی کرم مسلی اللہ علیہ وسم نے حبشہ کے توگوں کو بیرا جازت دی تھی کہ وہ آپ کې مسجد مبارک میں ایپنے نیز 'ول سے محمیلیں .اورا بنی زوح بر مطهرہ حضری<sup>ت</sup> عائشہ صدیقیہ منی التّدعنها کویہ اجازت دی کہ وہ ان کی نیزہ بازی کو دکیمیں ۔ وہ منتی اس نیزہ بازی ہیں مصرف تھے کہ ای اٹنا دہیں حضرت عمرضی التّٰدعنة تشسر بونیہ سے آئے اور انہول نے چھوٹے حیو ملے تکراٹھا کران کو مارے تونی کریم علیدانصلاۃ واسلام نے ارشا دفسر مایا ؛ کر اسے غمران وهيوردو ـ

\* اورام احدوبخاری روایت کرستے چیں که نبی اکرم ملی التّٰمالیہ وسم قبیله اسلم سے کمچه توگول سے پاس سے گزرسے جو بازار سے قریب تیراندازی کر رہیے تھے آپ ملی اللہ علیہ وم نے ارشاد فرمایا : اسے صریت اسماعیل علیہ السلام کی اولاد تیراندازی کرداس کیے کہ تمہارے جدامجد همی تیرانداز تھے تم تیراندازی کرویس بنوفلان کے سے اتھ ہول بیان کرا کی جاعست تیراندازی سے رک ٹئی، تورسولیِ اکرم صلی التدعلیہ ولم سنے ان سے فروایا :تمہیں کیا ہوگیا۔ ہے کہ تیراندازی نہیں کررہے ہو انهول نے عرض کیا: اب بم مجلا کیسے ٹیراندازی کرسکتے ہیں حبب کرآپ توان سے سامتے ہیں ؛ اس پرآپ سلی اللہ علیہ وسلم

نے فروایا :تم محی تیراندازی کرویس تم سب سے ساتھ ہول ۔

\* اور الوداؤد مصرت محدم من بن رکانة سے روایت کرتے ہیں کہ نبی کریم ملی اللہ علیہ و تم نے رکانہ سے تی لڑی اور آپ نے ان کو بچیاڑ دیا۔

\* اور مضرت عقب بن عامرض التُدعند سے مروی ہے کہ انہوں نے فرایا رسول التّصلی التّدعکی کا ارتّنا وہدے : درا رسوا وا رکبوا وأنت توجب واخیرہ ن تیراندازی کردا ورشہ واری بھی، اورتم تیراندازی کردوا ورشہ واری بھی، اورتم تیراندازی کردوب اس ان توکبولی).

\* اورامام احمدو بخاری رحمها الته حضرت آس رضی الته عندست وایت کرست بین کدانه ول نے فرایا ، نبی کریم کی الله علیہ وقم کے پاس عضبا، ''نامی ایک افتحوان انگلی علیہ وقم کے پاس عضبا، ''نامی ایک افتحوان انگلی علیہ وقم کے پاس عضباء اوٹمنی تھی سے کے بڑے گیا ، تواس سے کمانوں کوسخت تعلیف ہوئی اور انہول نے کہا کہ عضباء توجیعے رہ گئی ، نبی کرم علیہ انصلاہ واسلام نے ارشاد فرایا :

التُّه کا دُستورییسپے کہ وہ دنیا کی سب چیز کو بلندی عطا کر ہے۔ اسعہ گزامجی سبے ۔ «إن حقاً على الله أن لاير فع شيئاً من الدني الاصعد».

اُن اِمادیث سے بہات ظاہر ہوتی ہے کہ اسلام نے ورزش ہر بنی کھیلوں اور جہاد کیں معاول ورزش اور شقول مشکر گئیستی دوڑنا ، تیرنا ،

ر المدن کوئی بھی دوآ دمی ال میں اختلاف نہیں کریں گے کر حب اسلام سے خونمنوں کویہ بات عنوم ہوجائے گی کہ امت سلم سکھ کری۔ وظبی طور برتیار، اور جہانی وصحبت سکے کہا کہ سے توانا ،اور ایمانی ونفسیاتی کیا کھ سے کامل ہے۔ اور اس نے قیقی وواقعی طور برجہاد کاعرم کرلیا ہے۔ تو بلاشبہ اسلام سے خون اپنی ہے جبین وبزول افر ترفیرنوکسس کی وجہ سے اس سے پہلے ہی مشکست کھا جائیں

> له ترحمه ، اوران کی لڑاتی کے واسطے تیار کرو یوکچھ قوت جمع کرسکو۔ سے ترحمہ ، طاقتور مؤمن اللہ کو زیادہ مجبوب اور بہترہے کمزور مؤمن سے۔

سے کروہ جہاد و جنگ کے مقالبہ میں شکست بحوردہ ہوں بہی چیز آج مسلح اُن سے نا کسے معروف ہے اور یہی نبی کرمم صلى التُدعليه ولم نے البين ورج ذيل فران مبارك يس مرادليا به:

((نعمرت بالسرعب مسيرة شهر)). ايك ما و ك فاصله سيم رعب ك دريع ميرى ب بدرگ گئے۔

اورسالبة تفصيل سے مطابق سچه جب اس جسانی دیکیو بیال اور جہاد کی تیاری اور ورزشی شقول کا زیادہ تحق ہے تو کیااس، کامطلب یہ ہے کہ لڑکا اس میلان میں بغیر قیود وصرود کے نکل کھڑا ہو ، یا اسے سی دائرہ میں رہ کرصرود کی بابندی کرستے ہوئے ایک نظام سے مطابق جلنا ہوگا؟

حقیقت اوزواقعه برسید کروررش مسین کواس وقت تک طلوبه فائده بهین پنج سکتااوراس سے صب منشا نتيجه اس وقت تك مامل نهيس بوسكما جب نك وه اس نظام كيمطابق زموجواسلام في مقركيا سع

ہم مرتی محترم کے سامنے اس نظام کے اہم امورا ورتعین خطوط وحب رود

ا ـ توازن پيداكرنا

یہ قطعًا نامناسیہ ہے کہ ورزمش وریاضت سے نیمے کاتعلق دوسرے فرائفس وواجبات کے کھاتے میں مواورال پر جوذمه داریال مایکه موتی بین اور بوکم اس سے ذمر بین ان کوچیو فرکر ورزمش وریاصنت میں لگ جائے مثلاً بچرایناتما کا وقت فٹ بال <u>کھیلنے</u> ہشتی ، تیرینے. یا تیرازازی میں خرجی کرڈا لیے اور التہ سنے جوعبا دانت فرض کی ہیں یا اس پرعلم حامسل کرنے کا جو فریضه لاگو برقسیسے، یا اسینے والدین کی اطاعت وسنِ سلوک کی ذمہ داری ہے. یا اسلام سنے جو فریضۂ دعوست وہلینے عائد کیا ہے اس

اس میسے ورزش وریاصنت سے ساتھ بیمے کا تعلق درمیانہ روی واعتدال سے ہوبا جاہیے تاکہ دوسرے فرائض و واجبات کافت تھی ا دا ہوا ورکسی ایک کی و مبہ سے دو سرے حق کی حق تلفی نرمہو، یا ایک ذمہ داری پر دوسری ذمہ داری کو غالب نه کر دیا جائے۔ یہ اس سیلےصروری ہے تاکہ وہ توازن وعدل قائم کیا ہواسکے سبس سے اصول نبی کریم کی التّدعلیہ ہم خے اسس وقت مقرر کر دیدے ستھے حبب آپ سنے مضرت عبدالٹہ بن عمروبن العاص رضی الٹدعنہ اسے ارشأد قرماياتها

الله كاتم برحق سے، اورتمهارسے بدن كاتبى تم ير

الران الله عليك حقاً .وإن لبدنك

حق ہے ، اور تمہا ہے اہل وعیال کا بھی تم برحق ہے. اسس میے ہرصاحب حق کو اس کا حق دو۔ عليك حقاً . وإن لأهلك عليك حقًّ ... فأعط كل ذى حق حقه » .

<u>۲ ـ اینگر کی مقرره کروه حدو د کاخیال رکھنا</u>

جوصا مسبهی بیچے کوریاضت و درزش کمشق کرائی اوراس کوشکری و فوجی تیاری میں سگائیں ان کوچاہیے کیمندر بئر ذیل امور کا نیال رکھیں :

# الف ۔ ورزش وریاضت کا جولباسس بچے کو پہنایاجائے وہ ناف سے گھنے کہ جونا جا ہیںے جیسا کہ اصاد بیٹ ذیل میں آیا ہے :

¥ دا رفطنی حضرت ابوابوب رضی التّدینه سے روایت کرتے پیل که انہول نے فرمایا : میں نے رسول التّد سلی اللّه علیہ ولم کو یہ فرماتے سنا ہے کہ :

گھٹنول سے اوپر کا مصدعورت (قابلِ ستر اسے اور ناف سے نیچے کا مصدعورت (قابلِ ستر ) ہے۔ الإما فوق الركبتين من العورة ، وها أن المرون من العربية

أسفِل من السرة من العبورة).

💉 اورحاکم نبی کریم سلی الله علیه ولیم سے روایت کرستے ہیں کہ آپ نے فرایا: ناف اور سکھٹنے کے درمیان دکا مقد، کابل سترسے۔

× ۱ ور ابودا ف د ، حاکم اور مزار صفرت علی کرم التّٰدوجه به سنے روایت کرستے میں کہ انہوں نے فرط یا ، رسول اکرم کی تاہم علیہ وہم نے ارشاد فرط یا ہے کہ اپنی رانول کو نہ کھولو ،اور نہسسی زندہ کی ران کود کیھونہ کسی مردہ کی ۔

\* اوراه مبخاری این تاریخ بین اوراه ام مدوها کم حضرت محدن ترضی الله عندست روایت کریت بین که انهول نے فرمایا و سرال سند کریا تا اوراه است کریت بین که انهول نے فرمایا و سول الله کا کا تعمیل کا مصرت محمد کرد بهوا ، توان کی دونول را بین کلی بهوئی تعمیل ، آب سند فرمایا : است معمراینی دونول را بین طرحک لواس کیے که را بین عورت بین رئیسی بونا چام بین ) .

ا ورعقبہ بن علقمہ حضرت علی صنی اللہ عنہ سے روایت کرنے بیل کہ انہول سنے قرماً یارسول اللہ علیہ وسلم اللہ علیہ وسلم سنے ارشاد فرمایا سبے: گھٹنہ عورت (شرمگاہ تعنی مستور حصے) بیل سے ہے۔

لہٰذامشن کرانے واسے کے لیے یہ قطعاً جائز نہیں ہے کہ وہ الرکے کو ورزش وریاضت کا ایسا لباس پہنا ہے۔ سے ران وکھی مہونی ۔ اور گھٹنہ تھے یا ہوا نہ ہو ، جیسا کہ اہمی مندرجہ بالاسطح احادیث سے معلم ہونا ہے، اور مرقی وشق کرانے والا اگر اللہ تعالیٰ کے مقر کردہ احکامات وحدود کی بابندی نہیں کرسے گاتو وہ گنا ہگار ہوگا اور اللہ تعالیٰ اس ہے سے محم عدولی و زیادتی کا حمال ہے گا۔

# ب. ریاضت دورش این مگهول پر بوناچا بینے جو بهمنت و فتنے کے مقاماً نہ بہول ۱۰ سیالے کہ اما مخاری وسلم حضرت نعمان بن شیر رضی التُدعنها سے منہول ۱۰ سیالے کہ اما مخاری وسلم حضرت نعمان بن شیر رضی التُدعلیہ کم روایت کرتے ہیں کہ انہول نے فرایا: میں نے رسول التُدملیہ کم کویے فرماتے ہوئے شناہے کہ:

ملال کھلاہوا اور فاہر ہے اور طرام تھی فاہر ہے ،اور از دونوں کے درمیان بہت سی مشتبہ چیزی ہیں بہس بہت سے لوگ نہیں جانتے .لہذا جوشخص مشتبہ چیزوں سے پچا اس نے اینے دین دعزت کو بچالیا اور جوخص مشتبہ چیزوں میں پڑگیا دہ حرام میں پڑگیا ... لاإن الحد لال بين، وإن الحرام بين، وبينها اسود مشتبهات لا يعلمهن كشيرون الذس، فمن القى الشبهات فقد استبراً لدين و فمن القى الشبهات وقع فحف الشبهات وقع فى الحرام...».

بلی پیدیا ای مفہوم سےموافق مصرت عائشہ مینی انڈیمنہا کا فرمان ہے کہ دھنی سائٹہ تعالیٰ اور آخریت سے دن رہی ہیں رکھ تاہو اس کوچا جیے کہ اپنے میکہ بر یہ کھوا ہو دوتہ میت وا تہام کی ہو۔

اور حضرت علی رضی الندع نه فرمائے ہیں : تم الی چیزول سے بچوجن پرنکیرکر نے میں ول سبقت لے جاتے ہیں خواہ تم ہیں ا خواہ تمہار سے پاک اس کارد اور حواب کیول نہ ہو .اک لیے کہ اس بری چیز کے بہت سے ایسے سیننے واسے ہول گے جن کوتم اپنا جواب اور عذر نرکن اسکو گے ۔

ا ورآب بی بتلاسیهٔ کدال سے بڑھ کر قابلِ اعتران اور شبری ڈالنے والی کیابات ہوگی کہ بچہ ورزش وریافنت سے کام آزادی وسے حیائی کے ماحول میں کرے مثلاً یہ کہ تیرنا ایسے مقامات برسیکھے جہال مردوعود ہیں ایک ساتھ تیرتی بول. جہال عربانی وسے حجابی نہایت عام ہو ۔ یاکشتی یامکہ ہازی اسی حبکہ پرسیکھے جہال برے کام ہوستے ہوں اور شراب نوشی عام ہو۔

اک بیدا سے مرتی محترم! آپ کوچا جیدے کہ آپ اپنے بیکے کوتہمت کی حکمہ سے دور رکھیں تاکہ معاشرے ہیں اس کی شہرت داغدار اور لوگول میں اس کی شخصیت میں شخصیت بند نہ ہو اور آزادی وبیدراہ روی کے ماحول میں اس کا اخلاق وکردار خراب نہو۔

# مع مریاضت میں کمال وسبقت میے جانے پر مہت افزائی ناجائز شرط اور ناجائز امور سے مذہو :

اس سلیے کذابودا فرد ترمذی ، نسائی ، ابن ماجہ واحمدنبی کریم سلی الله علیہ و کم سے روایت کرستے ہیں کہ آسی سلی الته علیہ و کم نے ارشا د فرمایا :

مقابلہ ومسابقت سوائے اوموں اورگھوڑوں او

«لاسبق إلا في خف أوساف راونسل».

تىراندازى كى كى يى جائزنهيى .

اس مدیث سے بنتیج نکلتا ہے کہ مسابقت ومقابلہ دوشرطوں کے ساتھ جائز ہے :

۱۔مسابقت جنگ وجہاد کے بیے وسیلہ کے طور پر بہر مِثلًا اونٹول یا گھوڑوں کی دوٹریا تیراندازی ونٹ انہازی وعیرہ قیہ سردیم ن

وسرے جدیدہم سے نگی وسائل۔

١٣ حن نيت واخلاص كايبداكرنا

اس میں ذرہ برابرهمی مشنبہ بیں کہ پیھے کے کان میں شرع ہی سے یہ آواز ڈال دینااور اس کی متقل رہنہائی کرستے رہناات کو ہمیشہ نیست نے کا کا عادی بنادے گا ور وہ ہرموقعہ پر اپنے نفس کامحاسبہ کرسے گا کہ جوریاصنت اوروزش وغیرہ وہ کررہا ہے وہ صرف اس کیے ہے۔ وہ کررہا ہے وہ صرف اس کیے ہے۔ وہ کررہا ہے وہ صرف اس کیے ہے۔ اگر نبی کرہم کی التّرعلیہ وہم سے درجے ذیل فرمانِ مبارک بڑمل پیرا ہوسکے ، درالخومن القوی خدیروائٹہ کونیادہ میں مردیؤمن سے ماتقہ مومن بہراورائٹہ کونیادہ موب

المنومن الضعيف)).

اور درج ذیل فرمان نرسمي :

(ا دیست ما دلله احدی آ اُ راهدم من الله تعالی ایستینص پردم کریے جوان (دُمنوں کے ملینے) نغسه قوقٌ )) .

ا وروه جوفوی شقیں اورجہادی تیاری کرر ہاہے وہ اس کیے ہے تاکدالتُدتعبُ الی سجانہ سے مندرجہ ذیل حکم کو م مرسکے ،

> (( وَ أَعِدُّوا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنَ قُوَّةٍ وَّمِنَ رِّبَاطِ الْخَبْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللهِ وَ عَدُوَّكُمْ )). الانفال ...

اور ان کی لڑائی ہے واسطے تیار کروجو کچھ قوت سے جمع کرسکوادر سیلے ہوئے گھوٹروں سے کہ اس سے دھاک پڑے اللہ کے شمنوں پرا ور تہارے شمنوں پر۔

بیحسے ہم کوقوی وطاقتوربنانے کی تربیت اورجہا دسے کارناموں بی نفس کو حصہ لینے کے قابل بنا سنے کی مشقول بیں بم بیے کی اس طرح نیست درست کرے پہنے کا رابطہ اسلام سے عقیدہ وفکریے کا ناہسے، اورجہا دسے قربانی اور دین سے لیے اٹھ کھڑے ہونے سے احتہا دسے قربانی اور دین سے لیے اٹھ کھڑے ہونے سے احتہا دست تعلق قائم کر دیں سے اور دین سے لیے اٹھ کھڑے اور اس سے ساتھ ساتھ بم سنے اس کو قابل بنادیا ہوگا کہ وہ اسلام سے فوجوں ہیں سے ایک فوجی بن با سے جود نیا سے اور اپنے تلص ودیا نتدا جہم میں ایمان واضلاق اور عزت و نیک فالی او اس منظیم اسلام کی نصرت سے تھے مقاصدومعانی پدیا کر ہے۔

اس نیت صالح بی بردات بچه این دل کی گهرایکول اور و بدان بی میموس کرسے گاکروه بوشق ورزمش کررہاہے وہ کی کو داور نفول چیز بہیں سبے بلکہ وہ ایک عظیم مقصد کی تیاری اور اس کے صول کے بلیے ہے ، اوراس ایھے وہیے جذبہ و شعور کی و بستے وہنتی و بہے وہیے وہیے وہیے وہد و شعور کی و بستے وہنتی اور نشاط کے ساتھ کرسے گا، اور اور اس کے داور کی دور اس کے ساتھ کرسے گا، اور اور اس کے ساتھ کرسے گا، اور اور اس فائدہ اٹھائے گا اور اپنے فارغ وقت کو اس میں صرف کرسے گا۔

اور حبب پہھے سے دل میں ہم یہ باتیں مٹھادی سگے،اور یہ ہدایات اس سے کانوں میں دیتے رہیں سگے،اوراس سے نغس میں یہ اچی وشاندرہاتیں *دائ کردیں گے تو بچہ ایک ننی زندگی اور* نیاسبق ماسل کرسے گا۔

## 

مربیان کرام بیرے مقیده کی مفاظت اور اس کے کردار کے مان ستمرار کھنے اور اس کی شخصیت کے کال وکھار
اور اس کے افکار وخیالات کے بیچے کرنے اولاس کے بیم واعضا، کوتھویت بہنچانے نے کے بیاہ م دائع اور تالبر ہیں ، بلکہ
ایمان کالل اور اخلاقی فاضلہ اور تقل کی نضیح و نیٹ گی اور شخصیت کے مکھار بھل وہم کہ کہ بیاری ، اور معاشرہ بیں صاف ستھری
بے داخ شہرت کا حال بنانے کے لیے بیچے کو شروع بی سے تربیت ویے کے بیظیم اور ایم عوال ہیں ، اس لیے اسے
مربیان کرام !آب یہ کوشش کیجے کہ تیعلق وروابط نہایت ایہ ام ، درسکی اور اضلام سے پدا ہول ، اور آپ نوونہایت عمرم
و تدبیرا ورقوت وایمان اور جرائت سے ان کی تلبیق دیے کی گوشش کیجے۔

یا در کھیے اگر آپ نے ایسا کرلیا تو بھر آپ اپنے جگر گوشول کوروشن چاندا ورحبکدار سورج اور مہک دار بھیولول ، اور زمانے سے بزمار برخوں میں دور روئے زمین پرسیلنے والے فرشتول کی طرح یا بٹن گئے :

ا ورآب کہ ویجیے کے عمل کیے جاؤ کھرآگے اللہ کھے لئے گاتمہا ہے کام کواور اس کا رسول اور سلمان ۔ (( وَقُلِ اغْمُلُوا فَسَيَرَكَ اللهُ عَمَلَكُمْ وَ رَسُولُهُ وَ رَسُولُهُ وَ اللهُ عَمَلَكُمْ وَ رَسُولُهُ وَالمُؤْمِنُونَ . )). والمُؤْمِنُونَ . )).

# ٢- متنبه وجوكناكرنه عاقاءه:

اب جبکہ م ربط وارتباط سے مومنوح پرخو تبغیسیل سے روشنی ڈال چکے اور نیچے کی تربیت اور اس کی شخصیت مازی اور اس کے اس سے کردار و چال مین پراس کا جور رد ست اثر رہے آ ہے اس کو باان کر بیکے ہیں. تواب ہم پہنے کی تربیت سے بنیادی قامد ا یں سے دو سرے قاعد سے پر روشنی ڈالنا چاہتے ہیں، جو متنبہ و چوکن کر سنے کا قاعدہ ہے۔

ال وقر تحسِس موضوع پریم گفتگوگر ناچاہتے ہیں وہ بھی ان دوسے موضوعات سے کچھ کم اہمیت اوراثرو فائدہ کا حال نہیں ہے جن پریم اس سے پہلے گفتگو کر بیکے ہیں ، بلکہ یہ توان بنیادی عوالی ہیں سے جو پھے سے ذہن کو گندے افکاراور باطل و گراہ کن نظریات سے دھوڈالٹا ہے۔ بلکہ اس کی قوت ایمانی و ذہنی پٹگی سے ایک ایسامضبوط قلعہ تعمیب رکر دیا ہے ہواس کو گراہ کرنے دالول سے افکاراور آزادی پیندوں کی ہے راہ روی اوراخلاق باختہ لوگول و برکرداروں کی معمیت سے بحالی آ

اس سے قبل کہ بیں ان اہم نبیہات سے سلسلہ میں گفتگوکرول جن کا حاسل کرنا پہنے سے لیے ضروری ہے اسے مرنی محترم آپ سے لیے مناسب پر ہے کہ آپ مندر حرفیل دوخقیقتول کو مجمعیں :

سرا بین بین میشه متنبه و خبرداد کریت رسناای کے دل میں شروف اد کی کراہیت بٹھا دیتلہ ہے، اورای کے نفس میں زیغ و فعلال سے نفرت پیاکرد تیاہے۔

۲- زینے وضلال،الحاد وآزادی اور بے راہ روی وغیرہ کو کھول کربیان کرنیام ربی کے لیے سئولیت سے بارا ٹھانے ہیں عزم و پُوتگی کو بڑھا دیا ہے اور بیچے کو ٹسر سے دور رہنے اور باطل سے کنارہ شس ہونے کی تعلیم وسینے اور رہائی کرسنے میں ممدو معاون نہاہے۔

. ان دوحقائق کوبیان کرسنے سے بعداب ہم اسل موضوع کی طرف نوسٹے بیٹ پاکہ اس سے ہر پہلوپراھی طرح روشنی ڈال سکیس ، اورالٹ ہی مددگا دسپے۔اوراس پراعتماد و بھروسہ سپے ۔

#### BABBBBBBBBBBBBBBBB

اگریم الندتعالی کی تحاب اورنبی کریم ملی الندعلیه لیم کی سنت کوغور سے پیرهیں اوران پرایک نظر والیں توہم پیموسس کری گے کہ شرسے بچانے اور باطل کو کھول کر بیان کرنے کا استوب وانداز قرآن کریم کی بہت تی آیات اور بیٹ مارا ما دیث میں بالکل عیال ونمایاں اور صاف صاف نظر آیا ہے ۔۔ ان آیات وا حادیث کا کچھ حصد ذیل میں درج کیا جا آہے : الند تعالی سورة اسلومیں فراستے میں :

ارشا وفرایا:

﴿ وَلَا تَجْعَلَ يَدَكَ مَغُلُوْلَةً اللَّهُ عُنُقِكَ وَلَا تَبُسُطُهَا كُلُّ الْبَسْطِ فَتَقَعُدَ مَلُوْمًا مَخْسُورًا ﴾. تَبُسُطُهَا كُلُّ الْبَسْطِ فَتَقَعُدَ مَلُوْمًا مَخْسُورًا ﴾. بن اسرئيل ١٩٠٠

ميصر فرطايل

الوَلَا تَقْتُلُوْا اَوْلَادُكُمْ خَشْيَةً اِمْلَاقٍ كَمْنُ كَوْزُونَهُمْ وَالْيَاكُمُ مِنْ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطاً كَبِنْيًا)). بني اسرائيل ٣٠٠

اور فرمایا ،

﴿ وَلَا نَفْرُ وَالذِّنَى إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةٌ وَسَاءً

سَبِيْلُا ۞ وَلَا نَفْتُلُوا النَّفْسَ الَّذِي حَرَّمَ اللَّهُ

الاَ بِالْحَقِّ وَمَنَ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَلَ جَعَلْنَا

الاَ بِالْحَقِّ وَمَنَ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَلَ جَعَلْنَا

لِوَلِيتِهِ سُلُطْنًا فَلَا يُسْرِفُ فِي الْقَتْلِ اللَّهِ اللَّهِ الْفَاتِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُعُلِمُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ

التد کے ساتھ دوسرا ماکم مت تھے ہاہے۔ بھر بیٹھ جي آپ الزام کھاکر ہے س بوکر

اور اپنے ماتھ کو بندھا ہوائر کھیں اپی گردان کے ساتھ اور نہ کھول دیں اس کو بالکل کھول دینا پھر آپ بیٹھ رہیں الزام کھانے ہوئے مارسے ہوئے۔

ا ورانی اولاد کوندار ڈالومغلسی کے خوف سے، ہم روزی دیتے ہیں ان کوا ور ہم کو، بے شک ان کا مارنا بڑی خطاسیے۔

اورزاکے پاکس زجاؤوہ ہے جیائی ہے اور بری راہ بھے
اور اس بھان کو شاروس کوالٹہ نے منع کردیا ہے مگر
حق پر ،اور جوظلم سے ماراگیاتو ہم نے اس کے وارث
کوزور دیا ،سوقتل کرنے میں مدسے ذکل جائے ، اس
کومدد ملتی ہے۔ اور تیم کے مال کے پاس نہ جاؤمگریں
طرح کرمہتر ہو وجب تک کہ وہ بنج پی انجی جوانی کو ،اور عہد
کو بوراکر و بیے شک عہد کی پوچھ ہوگ ۔

اورآپ اس بات کے پیمھے نہ بڑی میں کی آپ کوخبر نہیں ، بےشک کان اور آنکھ اور دل ان سب کی اس کے اس کی اس کے اس سے بوجھ ہوگ ۔ اور زمین پر اترائے ہوئے مت پطیے ، نہ آپ زمین کو بھاڑ والیں گے اور نہا ہو کر پہاڑوں کے در نہا ہو کہ بہاڑوں کے در بکی بیزاری ہری چیزے ہے۔ اس سب یں آپ کے دب کی بیزاری ہری چیزے ہے۔

وراسس کےعلاوہ دوسری اور بہبت تی آبات کریمیر جوعقیدہ میں زیغ وکمی ، اور اخلاق میں فساد وخرابی ، اور معامل میں تواہی و خامی سے منع کرتی اور ڈراتی ہیں ، اور اس طرح سے مضامین برشتمل آبات قرآن کریم میں بہبت کشریت سے پائی جاتی ہیں۔

# اورنبى كريم عليه الصلاة والسلام فرطت بين:

(( إ يوكم والكذب فإن الكذب بجانب لإيمان). مسنداحمد ترمندى انسانى ابن ماجه وأبوداؤد ا ورفرال .

الإإياكم وكاثرة المعلف فى البيع فإند ينفق شم يميق» . صيح مسم ومنداحد اور فرطايا :

((إياكم والظن فإن الظن أكذب العديث ولا تبعسوا، ولا تعسوا، ولا تعسوا، ولا تنافسوا، ولا تعاسدوا ولا تباغضوا، ولا تدابروا، وحونوا عبادالله إنعواناً، ولا يخطب أحدكم على خطبة أخيه حتى ينكم أويترك).

## صيمع نجارى ويجمسهم

اورفرمایا :

«إياكـم وكثرة الضعك ، فإنه يميت القلب ويذهب بنوراً هل الجنة » بنن ابن ماج اورفرايا :

لاإياكم وذى الأعاجم» ميح ابزجان اور فرايا :

((إياك وقرين السوء فسإنك سبه

تم حموط مع بي كواس كي كم حمود ايان كى فدي -

تم خریدوفرونست میں زیاد قہم کھانے سے بچواس لیے کہ اسس سے سود اتوخوب کمیاسے لیکن مرکت ختم ہوماتی ہے۔

تم برگمانی سے بچواس لیے کہ برگمانی سب سے بھوئی بات ہے۔ افر س ندکرو، اور بھیکے سے کسی بات کے معلوم کرسنے کی گوشش ذکرو، اور منا فست ندکرو، اور معدند کرو، اور این خس ذکرو، اور ایک دوسے سے بیٹھ زیچیرو، اور اللہ کے بند سے اور بھائی بھائی بن جاؤا اور تم میں سے کوئی شخص اسی مگر بنیام کاح نہ بھیجے جہاں تل کے بھائی نے بنیام کاح بھیجا ہوجب کہ کروہ یاتو نکاح ذکر ہے یہ وہال سے بات چیت ختم ذکردسے۔

تم زیادہ منسنے سے بچواں لیے کواس سے دل مردوریا سے اور اہل جنت کا نورختم ہوجا آب ۔

تم عجیول کا سالیکس پہنے سسے کچ ۔

تم برے ساتھی سے بچواس لیے کراسی کے ذرایدسے

تم پہچانے ساؤگے۔

تعرف». ابزعاك اورفرایا :

«إياكم والتَّقع ف غاأهدك من كان قبلكم الشيخ . أُصرهم بالبغسل فبغلوا . وأ مرهم بالقطيعة فقطعوا، وأسرهم بالفِيور، ففِيرواً».

الووا ؤد وماكم

تم ترص وبخل سے بچواس لیے کہتم سے پیلے توگول کو حرص و بخل بی نے بلاک کیا ہے کس نے ان کو بھل کا حکم دیا اور انهول في بخل سيركم لياء اك في انهين تطع حمى كالمكم ديا اورانبول نے ملع رحی کی ،اوراس نے انہیں فسق وفھور کا تمكم ديا ورانهول فيضن ونجور كواحتياركيابه

ا دراس کے علاوہ اور دوسری وہ احا دیہے ہو مرائی وشر سے روکتی اور فسا دسسے ڈرائی ہیں ۔ اور انس ان کواس طرف متوجہ کرنی میں کہ وہ زینے وضلال اور براضلاقی سے پیچے. اور اس مضمون والی احادیث کتب احادیث میں بہت کترت سے ياني جاني تيس.

متنبه کرنے اور ڈراسنے کا طریقیم بیول کا ایجاد کردہ کوئی نیاطریقہ نہیں ہے، اور نہی یہ معاشرہ سیستعلق رکھنے والے نلسفیول کی اختراع ہے۔ بلکہ یہ تو وہ طریقہ ہے جسے قرآن کرم نے لوگول کی شخصیت سازی ، اورا حادیثِ نبوسے معاتمرہ كافراوك ترسيت ك يصافتياركيات واقعى الله تعالى بالكل بحاارشاد فرمات ين :

اور رسول اكرم صلى التدعليد وللم في بالكل درست ارشا دفروايا بهاد:

(د. فعليكم لَبِسنتى وسنة المخدف الواشك . بـ برتهيں پيا بسيے كميرى سنت اور دايت يافتظاد.

راشدین کی سنست کواختیا دکروا در اسے معنبوطی سے

المحديين بعضواعليها ولنواجذ».

كرتب نن وليحع ابن مبان

ا در پیجیے اب ہم مربول کے سامنے ڈرانے ومتنبہ کرنے کے سلسلہ میں وہ اہم مسائل ذکر کیے ویتے ہیں جو پیجے میں شعور پیدا کریں ،اوراس کے ذہن کو صافت کریں ، اور عقید سے کو مضبوط کریں ،اوراس کے انولاق وکروا رکوسنوار دیل " ماكه وه ان برعمل بيرا بهول اوران كا خيال كيبس ، اوراس كى تنقين وتبليغ كا ابينه آب كوم كلف بنا ميس .

اگرانهول نے ایباکرلیاتو وہ ان لوگول کی فہرست میں شامل ہوجا ئی*ں سکیے نبوں نے تربیت سیمیران ہی* اپنافریف اور دینی مسئولیت فزمرداری کومهترین طریقے ا درعم رگی سے اِ داکیا . اِ وروہ ان لوگول کی جاعبت ہیں سے بن جائیں سے جنہیں التدتعالى في بيويول بجول كى طرف في سين ويكون اورائههول كى طفي الدانهين نيك وتقيول كامام بنا ديا ـ

### مرنی محترم! کیجیے اب آپ سے سامنے ہم وہ اہم تنبیہات وروکنے والی نصوص بیش کرتے ہیں : میش کرتے ہیں :

ا۔ روت (مزید موسنے) سے ڈرانا اور اسس پر نہیہ

مرتی محترم! ردت کامطلب یہ سبے کوسلمان اینے اس دین کوتھیوٹر دسے ہوالٹد نے اس سے بیے لہند کیا تھا ، اور اس سے بجائے کوئی اور الیا ندمہب یا عقیدہ اختیار کرسلے جو دینِ اسلام سے خلاف ہو۔

# ارتداد کے بے شمار مظامر ہیں:

ارتداد کے مظاہریں سے ایک مظہریہ ہے کہ ایسے نعرے باند کیے جائیں ہو مسلمان کو التہ جل شا نہ کے عبود و مقعود بنانے سے آجائیں ، آئی مہیں بہت سی حالتیں آجاتی ہیں:
بنانے سے روک دیں ، یا اسلام کو مقصود و مطلوب بنانے کے آجائیں ، آئی مہیں بہت سی حالتیں آجاتی ہیں:
الف ۔ انسان قومیت سے لیے کا کرے اوراسی شعار کو اپنا ہون و مقصد بنا ہے ۔ اسی کی طرف دعوت دسے ، اسی کے لیے دور دحوب کرے ، اس کے لیے لؤے ، اسی کوجا ہی تعصب کہا جاتا ہے بس سے نبی کریم ملی التہ علیہ وسلم نے روکا ورڈرایا ہے فرایا :

((ليس منامن دعا إلى عصبية . وليس منا من قاتل على عصبية ، وليس منا من ما على عصبية ، وليس منا من مناور على عصبية ).

و منفس ہم میں سے ہیں ہے ہوعصبیت کی طرف بلائے۔ اور وہ خص ہم میں سے ہیں ہوتسسب کی فعاطر لرسے، اور شخص ہم میں سے نہیں جوتعصب پر مرسے۔

ب - وطنیت وقومیت سے نام پرکام کرنا اوراک شعار کواپنا ہون ومقعہ بنالینا اس کی دعوت دینااس سے لیے گٹ وو کرنا،اوراس کی طرف سے مرافعت کرنا، اللہ تعالی نے اسی قومول کی مذمت کی ہے جو اپنے وطن سے جیٹ جاتے ہیں چنانچہ ارشاد فرایا :

(( وَلَوْ آَنَا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ آنِ ا قَتُلُوَ آ أَنْفُسَكُمْ أَوَا خُرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوٰ اُلَا قَلِيْلُ اَوَا خُرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوٰ اُلَا قَلِيْلُ قَلِيْلُ مِنْ فَعَلُوٰ اللهُ عَلُوْلَ مَا يُوْعَظُوْنَ بِهِ مِنْهُ مُ ذَوَلُوْ آ أَنَّهُمُ فَعَلُوا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَآشَلَ تَفْعِينِتًا ﴿ ) .

اوراگریم ان برحکم کرتے کدائی جان کو الاک کرویا اپنے گھرکو چھوڑ کلو توالیا ذکر نے مگران میں سے تھوڑ سے، اور اگری لوگ کریں وہ جوان کو نصیحت کی جاتی ہے تو البتدان کے حق میں بہتر ہوا ور دین میں زیادہ نا بہت

ساء - ۲۷

ريكينے والا ہو۔

ارتداد کا انحصاراس میں ہے کہ مقصد و برف برموکدان چیزول کی سرلبندی اور تقدس ہو، اور ان کوعبادت کا درجہ دے

دیاجائے، اس میں دخواکا نام ہون اس پرایان لانے کا ذکر ، نراس کی شریعیت پڑھل سے کوئی تعلق بین اگرمقصود اللہ کی ذات مور اور اس کے احکامات کا نا فذکر نامطلوب ہو . اور اس میں وطن اسلامی کی مصلحت ہو، اور عزرت وآبر ونفس و مال وجان اور دین سے دفاع ہو۔ توراسی عبادت والیے اور اس کا میں لوٹے والیے کو اللہ جل شاند کی مضاو توا ہے کا مستق منادیتی ہے، اور اگرابیا آدمی اداجائے تو وہ اللہ کے راستے میں شہیب دشار ہوتا ہے ۔ رسول اکرم مسلی اللہ علیہ وسلم ارشا دفرماتے میں :

الامن قتل دون دست في وشهيد، ومن تل ومن تل اور تخص الني مال كوفا لات مي الرجائد وه تهيد بيد اور تخص الني مال كوفا لات مي الرجائد وه تهيد ومن المربخ في المرب

مسنن ابی داؤد کرتا بوا مارا بهائے وہ تہدستے۔

جے ۔ انسان صرف انسانیت سے نام پر کام کرسے ،اور اس سے دل ہیں اس کا ذر تھی خیال ناگزرے کروہ یہ محنت اس بیے کراہے کرائٹد تعالی نے اسے انسانیت سے راہ راست پرلانے کی محنت ،اور مخلف قومول سے میل جول ،اور کمانوں سے ساتہ بانمی تعاون کا کم دیا ہے ، یہ وہ شعار ہے ہی علمبردار وہ اسونیت ہے ہیں سے در بردہ بین الاقوامی بیہودیوں سے ہاتھ حرکت کررہے ہیں ۔

منت ابم یرکہا چا ہتے ہیں کہ بروہ آوازاور شعار ہے کوئی مسلمان بانکر سے اور اس سے اس کامقصداللہ کی رضا ہاں سے دین کی سربلندی ، اور اسلام سے جونئد ہے کا بلند کرنا نہ ہوتو وہ جا بلیت کی آواز اور شعار ہے ، لئذا بیخص اس کو بلندگرا ہے ، اور اس کی طرف بلاتا ہے ، اور اس کے لیے جدوجہ کرتا ، اور اس کی خاطر اور تیا ہے ، ایر اسلام سے نواہ وہ کتنا ہی ایمان کا دعوی اور کیسے ہی اسلام کا افہا ر کیوں نہر کے بیام کا افہا ر

یرت برسید. ها ارتدار کسیم منظا هر دیس سیسے میرسی میسیسے کہ دوستی آبعلق ، محبت اور حاکمیست واطاعت غیرالٹدکی کی جاسئے.القد تعالیٰ ارشا دفرماتے ہیں :

میمریم نے آپ کودین کے ایک نماص طربقیہ پر کردیاسواک

((وَمَنْ لَهُ يَخْكُمُ بِمَّا أَنْزَلَ اللهُ فَأُولَلِكَ هُمُ الكَّفِرُونَ ﴿). المَامَهُ يهم اورفرايا:

((ثُمَّ جَعَلَنْكَ عَلَا شَرِيْعَةٍ مِنَ الْأَمْرِ قَاتَبِعْهَا

وَلَا نَتَيِّهُ أَهُوَا ءَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ » الجاثي ٨

( يَاتِهَا الَّذِينَ أَمَنُوا لَا تَقْيِنُوا الْبَهُوْدَ وَ النَّصْرَے وَ لِيَا مُرْبَعْضُهُمْ أَوْلِيًّا ءُ بَعْضٍ • وَمَنْ يَّتَوَلَّهُ مُقِينَكُمُ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ دَاِنَّ اللهُ لَا يَهْدِث الْقُوْمَ الظُّلِمِيْنَ ﴿ ) المَامُهِ - اه

« يَا يَنْهَا الَّذِينَ امَنُوا لَا تَتَّخِـ ذُوْاَ ابَّاءُكُمْ وَ إِخْوَانَكُمْ أَوْلِيكَاءُ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَعَكَ الْوَهِ... الَّايُمَانِ وَمَنْ تَنُولُهُ مُ مِّنِكُمُ فِأَوْلَيْكَ هُمُ الطَّلِمِينِي.

استدايمان والورت بجرثواسيف بايون كواود بعائيول كورفيق اگر وہ كفر كوعزيز ركھيں ايمان سے ، اور تم ميں سے جوان كى رفا کرسیه سووی لوگ گنام گارمیں ۔

بريطه جائيه ادرب علمول كخوا بشول كي بيروى زكيجيه

است ایان والوبهوداورنصاری کودوست نابا دردآپس

یں ایک دوسرے کے دوست ہیں۔ اور بوکوئی تم یں سے

ان ہے دوستی کرے تووہ انہی میں ہے ، انتدالی الم لوگول کو

دایت نهی*ن کر*یار

اورامام احمدوترمذی وابن جربرحضرت عدی بن حائم رضی الله عند سعدروایت کرستے بی کر وہ اسلام لانے سےبل رسول الشمسلی التدعلیہ ولم کی خدمت میں حاضر پوسے، اوران کی گردن میں بیاندی کی بنی ہوئی صلیب بڑی تھی، تونبی کرم ملى النه عليه ولم نع درج فريل أبيت كلاوت كى:

معه إليا ابين عالمول اور دروسيول كومدا الشدكو حيو وكركر

(﴿ إِنَّحَنُدُوا أَحْبَارُهُمُ وَرُهُمَا نَهُمُ أَنَهَا مَا مِنْ دُونِ اللَّهِ ﴾ الترب.٢٠ مدى في كاكراكد لوكول في الله عبادت تونهيس كيفى ، تواتب في ارشاد فرالي :

کیوں نہیں ان (احبارول میبوں) نے ان کے اوپر ملال جيزول كوحرام كرديا اورحرام كوملال كردياء اوران توگوں نے ان کی بات مانی بہی ان توگوں کا ان کی عبار

(( بلحب ! إنهم حسرم واعليهم العلال، وأحلوالهم الحسوام ف اتبعوهم، فذلك عبادتهم

إياهم».

💠 ارتداد کے مظاہر بیں سے اسلام کے سی فرنسینہ کا نالیٹ ندکرنانھی ہے مثلاً کوئی کہنے والا یہ کھے کئیں دوزہ کو اس لیے ناب ندکرتا ہول کہ اس سے امت اقتصادی لحاظ ہے ہیں ماندہ ہوجاتی ہے یاکوئی شخص یہ کھے کہ میں عور سے لیے جاب ورردہ کواس لیے اچھا نہیں ہم قالر رہی ماندگی کی علامت سے یاکوئی تنفس یہ مکے میں اسلام سے مالیاتی نظام کو اس کیے براسمحقیا ہول کہ اس میں رہا وغیرہ حرام ہے، التدتعالی جل شانہ ایسے لوگول سے بارے میں ارشاد فرائے ہیں:

((وَ الَّذِينَ كُفُهُوا فَنَعْسًا لَهُمُ وَأَصَلَ

؛ ورجولوگ کا فربیں ان <u>سمہ بسے</u> بربادی سیے ، اور ( اللہ )

أَعْمَالُهُمْ ﴿ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَّا انْزَلَ اللهُ فَأَخْبُطُ أَعْمَالُهُمْ ...)) .

ان کے اعمال کالعیم کردے گا یہ اس سبب سے کہ انہوں ف الشرك أبد سير بوئ (احكام كوناكوارجانا السف ن کے اعمال کو اکارت کردیا ۔

منافق اس بات بسيره داكرسته چي كرسسمانول يرايسي

سورت نازل ہوکہ جیا دے ان کو حوال کے دل میں ہے

💠 . تداد کی علامات میں سے پیھی سپے کہ دین کی کسسی بات کا نداق اٹرایا جائے ،اسلام کے شعائر میں سے کسی شعار کا استہزار كياجلة، الله تعالى فرات مين :

> «يَحُذَارُ الْمُنْفِقُونَ أَنْ ثُاكُزٌّ لَ عَسَلَيْهِمْ سُورَةً تُنَبِّئُهُمْ مِمَا فِي قُلُوبِهِمْ وَقُلِ اسْتُهْزِءُوا، إِنَّ اللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا تَحْلَى رُونَ ﴿ وَلَهِنْ سَالْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا غَنُوضٌ وَتَلْعَبُ قُلْ أَبِ اللَّهِ وَ اللِّيهِ وَ رَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْذِهُونَ ﴿ لَا تَعْتَذِرُوا ۚ قَالَ كَفَرْتُمُ بَعْكَ إِنْ كَاٰشِكُمْ وَإِنْ نَعْفُ عَنْ طَا إِنْهَ تَهِ مِّنْكُمْ نُعَلِّرِبْ طَآيِنَهُ أَ بِٱنَّهُمْ كَانُوا

مُجْرِمِينَ أَنَّ ﴾.

آب كىردىيى كالمفط كرسق رمواننداس چىزكوكمول كر سبے گاجل کاتم کو دُرہے ،اور اگرآپ ان سے بیجیس تودہ كهيس كك كم بم توبات چيت كرتے يتھے اورول فى اتب كبه ديجيدكوكياتم التدسداوراس كرسول مع تعفي رق تعے بہائے مت بناؤتم توکافر ہوگئے ایمان کاظہار کرنے ك بعد الرجم تم يس سي بعضول كومعاف كردي ك تو البترعذاب بعی دمی سگے تعفول کواس سیسب سیسے کہ وہ

💠 ارتداد کے مظاہر میں سے بیمجی ہے کہ ان چیز ول کوحلال کیا جائے جنہیں النّہ تعالیٰ نے سرام قرار دیا ہے ، اوران جیزو<sup>ں</sup> كوحرام سمحا جائے جنہيں الله تعالى في الله علال كيا ہے الله تعالى فراتے ہيں :

> ﴿ وَكَا تَقُوْلُوا لِمَا تَصِفُ الْسِنَتُ كُمُ الْكَذِبَ هٰٰذَا حَلُلُ وَ هٰٰذَا حَرَامٌ لِتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ ٱلكذِبَ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتُرُونَ عَلَمَ اللَّهِ اللَّذِبَ لَا يُفْلِحُونَ مَتَنَاءً قَلِيْكُ وَكَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْرُ ﴾ الله

اوراینی زبانو*ں کے معبوط بنا پینے سے ی*رست کہوکہ ہے ملال بيدا ورير حرام بيد كرالتدير بهيان بانهود يشك جوالتدريبان بالدهقين الكاعبلانه بوكا يحفوا سا فائرہ اٹھالیں اور ان کے واسطے دردناک عذاب ہے۔

جوشخص ایس اکرسے گاتووہ دین سے لازمی احکامات کامنکرا ورالٹدکی حاکمیت وٹربعیت کامقابلہ کرنے والاشمار موگا. اور مرتد وكافر بوجائے گا۔

💠 ارتداد کے مظاہر ہیں ہے اسلام سے کھے حصے برائمیان لانا اور کھے کا انکار و کفرکرنائھی شامل ہے بشلاً یہ کہ کوئی مسلمان یہ ایمان رسکھے کہ اسلام عبادت میشتل دین ہے ،اوراس سے انکار کرسے کہ اسلام نظام وقانون والا دین سیے. یا یہ مان سے کہ اسلام روحانی اخلاقی وتربیتی نظام توپیش کرتاسید کین اسلام سے دوسرسے نظام کانکا رکرسے مثلاً سیاسی اقتصادی یامعاشرتی و اجتماعی نظام کا ،الله تعالی فرماستے ہیں :

> ((أَفَتُوْمِمُنُونَ بِبَغْضِ الْكِتْ وَتَكُفُّرُونَ بِبَغْضٍ فَمَا جَزُاءُ مَن يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمُ اللَّاخِزْيُ فِي الْحَيْوةِ الدُّنْيَاءَ وَكَوْمَ الْقِيْمَةِ يُرَدُّوْنَ إِلَى الْحَيْوةِ الدُّنْيَاءَ وَكَوْمَ الْقِيْمَةِ يُرَدُّوْنَ إِلَى الْعَذَابِ مِن البقرو - ٥٥ إِلَى الْعَذَابِ مِن . البقرو - ٥٥

توکیا بعض تحاب کو مانتے ہوا و یعفن کونہیں مانتے ہوجو تم میں سے یہ کام کر ہاہے ، ک کوئی سزانہیں سوائے دنیاوی زندگی میں رسوائی کے ، اور قیارت سے دن سخت سے سخت مذاب میں ہنچائے جائیں گے ۔

اتداد کے مظاہر میں سے صرف قرآن کریم برایمان لانا اور سنت نبویہ کا انکار ہے، جیسے کہ وہ قادیاتی فرقہ سب کی گائٹ انگریز نے مبندوستان میں کی تھی جس کامقصد تر ابویت اسلامیہ کی بیخ کنی اور رسول اکرم صلی التہ علیہ ولم کی نبوت میں شک یداکر ناتھا۔

بریات فرآن کریم نے مراک شخص سے ایمان کی نفی کی ہے جور سول اکرم ملی التّہ علیہ وہم کی حیات طبیّہ ہیں آپ اور آپ سے دنیا سے تشہ لیف سے جانے سے بعدآپ کی سنت کو حکم وفیصل نہ بنا سے چنانچہ ارشادِ باری تعالیٰ ہے :

سوقسم ہے آپ کے رب ک دہ اس وقت کک ٹوکن نہول گے جب کک کہ آپ ہی کومنعیف نہ جانیں اس جھ گڑھے میں جوال میں اسطے ، بھراپ نے جی ہیں آپ کے فیصلہ سے نگی نہ پائیں اور نوشی سے قبول کریں۔ ﴿ فَلَا وَ رَبِّكَ كَا يُؤْمِنُونَ كَمَةً يُعَكِّمُوٰكَ ﴿ وَنَهُا مُنْكُمُوْكَ ﴿ فَنَهُمْ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّ

النساء - ۵ ۲

يه بات بانكل تقينی طورست معلوم بيد كه رسول اكرم صلی الله عليه ولم كی اطاعت الله تعالیٰ كی بی اطاعت بيد. الله تعالی ارشا د فرط تے بیں :

﴿ مَنْ تَبْطِعِ الرَّسُولَ فَقَدُ أَلَمَاعَ اللَّهَ ﴾ انسان ۸۰۰ مس نے رسول کا تکم انا اس نے انٹرکامکم ، ۱۰ مام امام ترمذی ، ابوداؤدوا بن ما جرمضرت مقام بن معد کمیرب منبی النّدعز سے روایت کرتے ہیں کرانہول نے فرایا رسولِ اکرم کی ا نہ بنت میں ۔

عليه وسلم فرمات جين :

راُلاه حل عسى رجل يبلغه الحديث عنى وهومتكئ على أريكة فيقول ببينت وبيسنكم كتاب الله ، فما وجدن فيسه حدلالا استعللن ، وما وجدن ومسا وجدن فيدحرامًا

سن اوقریب ہے کہ ایک نیم کومیری حدیث ہینے گرجو اچنے تخت برطیک لگائے بیٹھا ہوا ہوگا اور یہ کھے گاکہ مہارے اور تمہارے ورمیان اللّٰدی کما ب فیصل ہے ، لہٰ اِ جو چیز ہم اس میں حلال پائی گے ہے صلال قرار دیں گے ، اور جو چیز ہم اس میں حرام پائی گے

معرام قراردی کے ،اورحقیقت یہ ہے کی بنیز حرمناء، وإن ماحرم رسول الله كوالله كرسول صلى التدعليه وسلم فيصرام قرارديا ب صلى الله عليه وسعم كاحرمه الله). وه وسي بي رام ب جيسكمالله تعالى في سام ك بور

> اورابو داودکی روایت سیسے: «ألا إنف أوتيت الكت ب يهتله

سسسن لومجھے محالب التّٰددی گئی ہے اور اس مبیی اس كدراته اوريمي اليني سنت واحاديث رسول اكرم صلى التُدعليه ولم كى اطاعت سے واحب بونے سے سلسله میں التُدتعالى كا ايک عمومی حكم ہے. فرمایا:

اوررسول جو كويميس ويدوياكري وهدا ليأكرو اور عبس سے وہ ہیں روک دیں رک جایا کرو اللہ سے ڈرو

بے شک الله منزادینے میں براسخت ہے ۔

﴿ وَمَا الْتَكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُونُهُ وَ مَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا وَاتَّقُوا اللهُ وإنَّ اللهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ).

💠 ارتداد سے مظاہر میں سے پر بھی ہے کہ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وہم سے افعال میں سے سی فعل کا مُراق اڑا یاجائے یا اس برز كميركي جائية، جيسي كدوه لوگ جورسول اكرم صلى الته عليه وسلم سي زياده شاديال كرسف براعترام ف كرست بيل كراب على التعليه وسلم نے بیک وقت نو از وائے مطہرت سے شادی کر کھی تھی اللہ تعالی ارشاد فرماتے ہیں :

((يَاكِيُّهَا الَّذِيْنَ الْمُنُواكَا تَرْفَعُوْا أَصُوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّهِيِّ وَكَا تَجْهَرُوا لَهُ بِٱلْقَوْلِ كَجَهْدِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضِ أَنْ تَحْبَطُ أَعْمَالُكُمْ وَ أَنْتُمُ لَا تَشْعُرُونَ ﴾. الجِرات ٢٠

اسے ایمان والوامنی آوازول کو پینمبرکی آوازسے ملندنہ كياكرو .اورنزان \_سے اليسے كھىل كرلولاكر و بيسے اليس يس كھل كر بولا كريتے ہو ،كەكبىيں تمہا يسداعمال برماد مه بوجایل اور مهین خبر یک نه مور

آپ بتائیے کہ جب رسول التدملی اللہ علیہ وہم سے سامنے آواز کا ملند کرنا ہی ردست کا احتمال رکھیا ہے تو پھران بالو کاکیا موگا جواس ہے تھی نیادہ بڑی ہیں ؟

💠 ارتداد سے مظاہر میں سے تعبن لوگول کا یہ دعوٰی تھی ہے کہ قرآن کریم کا ایک باطن ہے جوظ اسر سے بالکل برضلاف ہے اور ایک ظاہر سبے جو باطن سے برنصلاف سبے، اور اس باطن کاعلم صرف بعض مخصوص لوگول کوان سے دعوے سے مطابق الہا سے ہو اسبے. اس دعوٰی کامطلب یہ سہے کہ شریعیت اسلامیہ کی تصوص کوعطل کرسے شریعیت کو ہی معطل کر دیا جا ئے،اس دعوٰی سے بعد بعد کھیرکوئی اسپی اسل باقی نہ رہے گی جس کی طرف رہوع کیا جا ہے۔ اور نی<sup>مو</sup>ٹی بغنت سے کوئی ایسے قامد سے جن ے اس موضوع ترشفی کن وسیرماسل بحث کے لیے ہماری تحد والن وجات والحکمة من تعدد أن واج التبح صلی الله علیه توقم "کا هالعه كيي وبال آپ كواس كثرت سيست دلول كي مكمت بطره كركا في تسنى بوگ. اور اس مومنوع بركا في ساه ل كيجاسك كار

كوتكم بنايا جائے: قرآن كريم توصاف متھري واضع عربي زبان ميں نازل ہوا ہے الله تعالی فرماتے ہيں : ﴿ لاَنَّا اَنْزَ لُنْهُ قُوْءً نَّا عَدَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴾ جم نے تا داہے اس کو قرآن عربی زبان کا ماکتم مجدلو۔ معدد فرول ا

الوَكُذُ لِكَ أَنْزَلْنُهُ مُحُكُمًا عَرَبِيًّا) الرعرية الرعامة المراى طرح بم في آلايكام مم مرلى زان مير.

لہٰذا قرآنِ کریم کی سی جی آیت کی بروہ تفسیر جس کی بنیاد کوئی اثروروایت یا لفت عربیہ وعرفی زبان کا قامدہ واصول اور افوال عرب نہ ہول تو وہ تفسیر قبط قا باطل ہوگی اور ایسی تفسیر کرنے والا وائرہ ایمان اور اسلام سے خارج شار ہوگا ،حقیقت یہ سبے کہ ان وراسلام سے بڑے ہے کہ روا ور ذائع ہیں۔ یہ سبے کہ ان وجو سے کرنے والے کفرو کرائی والحاد کے امتبار سے سب سے بڑے کے روا ور ذائع ہیں۔ قرآنِ کریم سے متشابہات مرائی کریم سے متشابہات میں انٹر نقالی فراتے ہیں :

الهُوالَذِي اَنُولَ عَلَيْكَ الْكِتْبُ مِنْهُ الْيَقَ الْمُوالَّالِي الْمُوالَّالِي الْمُوالِمُ الْمُؤْرِمُ اللَّهِ الْمُؤْرِمُ اللَّهِ الْمُؤْرِمُ اللَّهِ الْمُؤْرِمُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللْهُ اللَّهُ اللْهُ اللَّهُ اللْهُ اللَّهُ اللَّهُولِ اللَّهُ الللْهُ اللَّهُ اللْهُ اللَّهُ اللْهُ اللَّهُ اللْهُ

دبی ہے جس نے آپ پر کتاب آبادی ،اس کی بیش این گاب میں کتاب می کا بین ان کے عنی واضح ہیں ، وہ اصل ہیں کتاب کی ، اور دوسری مشابہ ہیں گئی جن ہے وہ متشابہات کی ،اور دوسری مشابہ ہیں گئی ہے وہ متشابہات کی بیروی کرتے ہیں گرائی بھیلانے کی خوش سے اور طلب معلوم کرنے کی وج سے ،اور ان کا مطلب کوئی ہیں معلوم کرنے کی وج سے ،اور ان کا مطلب کوئی ہیں جاتا اللہ کے سوا، اور مفبوط علم والے کہتے ہیں جم اس براتے سب ہمارے رب کی طرف سے اثری ہیں ، اور ہم ہوائے سے وہی سمجھتے ہیں جن کو مقل ہے ہیں ، اور ہم ہوائے سے وہی سمجھتے ہیں جن کو مقل ہے اسے رب نہ چھر ہے ہمارے دلوں کو جبکرآپ ہوائیت اسے رب نہ چھر ہے ہمارے دلوں کو جبکرآپ ہوائیت وہ ہوائے ہوائیت اسے دب بھیر ہے ہمارے دلوں کو جبکرآپ ہوائیت وہائے اسے دب بھیر ہوائے ایس ہوائی ہوائیت وہائے اس سے دہمت عنایت وہائے سب کچھ دینے والے آپ ہی ہیں ۔ وہائے سب کچھ دینے والے آپ ہی ہیں ۔ وہائے سب کچھ دینے والے آپ ہی ہیں ۔ وہائے سب کچھ دینے والے آپ ہی ہیں ۔

ن ښ ښ ښ . کا*پ* عمران ، وه

رسی میں مذکور ابتغاء الفتنہ (فتنہ کی نماطر) سے مراد ہے۔ کے مسلمانوں کوان سے دین میں شک ونلبیس میں مبت لا کرے اور شبہات پیداکر کے فتنہ میں ڈال دیا جائے۔

ا در "ابتغارتاً ومليه" مسهمرادييسيك كرى بالتدين تأولي وتحريف كرنا، بيني ايي غلط ما ويل جومن ماني وايي مرضى

الله يرتفسيرييخ حسنين للوت كي منفوة البيان " (١-٩١) سينتول ب

کے مطابق ہوا درا بنی نوائش کے مطابق تحرافیہ کی جائے اور سیمجھا جائے کہ یہی اس کی مراد سہے ،اہلِ بدعات و ملاحدہ ہردوریں ایسا پی کی کرتے ہیں ۔

ارتداد کے مونوں ہیں سے اللہ کی شیخے معرفت کا خاصل کرنا بھی ہے۔ بشلا یہ اعتقادر کھنا کہ (العیاذ باللہ) اللہ تعالیٰ اپنی بعض معلوق ہیں ملوق ہیں ملول کر جائے ہیں ، یا اللہ تعالیٰ کو کسی ایسی صفت سے ساتھ متصف کرنا جو اس کی ظمیت وجلال سے منافی ہو۔

لہذا جو شخص یہ کہا اللہ تعالیٰ بعض اشخاص میں صلول فرماتے ہیں ، یا وہ کا کنات ہیں صلول کیے ہوئے ہیں یا وہ کسی جہت میں معصور ہیں تو ایسا شخص کا فراور دین اسلام سے نمارج ہوجائے گا، اس لیے کہ اللہ تبارک وتعالی فرماتے ہیں ؛

(اک کُذر کُلُهُ الْدَائِمَالُ وَهُو اَبْدِيكُ الْدَائِمَالُ وَهُو اللهِ الْدَائِمَالُ وَهُو اللهِ ا

الْ كَتُدُدِكُهُ الْاَبْصَادُ وَهُوَ يُدُدِكُ الْاَبْصَادَ وَهُوَ الْاَبْصَادَ وَهُوَ الْاَبْصَادَ وَهُوَ الْكَالِمِ الْكَتِينِ وَهَ الْكَعُولِ كُوبِالْكَالِبِ اللَّالِيةِ الْكَلِيفُ الْاَبْدِينِ اللَّالِيةِ اللَّهُ الْمُعْدِدُ الْمُعِدِدُ اللَّالِيةِ اللَّهُ الْمُعْدِدُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْدِدُ اللَّهُ الللِّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْكُولِينَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُ اللَّهُ الللِّهُ الللْمُلِلْلُهُ اللَّهُ الللْمُلِلْمُ اللللْمُلِيلُ الللْمُلِلْمُ الللْمُلْمُ الللْمُلْمُ الللْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللَّهُ الللْمُلْمُ اللَّهُ اللَّلْمُلْمُ اللَّهُ اللَّلِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُلِمُ اللَّهُ الللْمُلِمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّلِمُ الللللْمُ اللللْمُ الللِمُ اللللْمُ اللَّهُ اللللْمُلِمُ اللللْمُلِمُ الللْمُلِمُ اللللْمُلِمُ اللللْمُ الللللْمُلِمُ الللللْمُلِمُ الل

کوئی چیزای کے مثل نہیں اور وای (بربات کا) سننے والا بے رہر برجیزکا) دیکھنے والا ہے .

اوران لوگوں نے اللہ کا ہز دالٹ کے بندوں میں سے تھر

لیاہے شک انسان کملا ہوا ناشکراہے۔

الكِيْسَ كَيْمَثْنِلِهِ شَنَى ءَ وَهُوَ السَّيِنِيَّةُ الْبَصِيلِيُّ ﴾.
الشُورُى - اا

اور فرمایا :

﴿ وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِمْ جُزَءً او إِنَّ الْإِنْسَانِ لَكُفُورٌ مَّيِهِ بِنَنَّ ﴿ ﴾ . الزخرون - ٥٠

اورفرايا :

اللَّقَدْ كَفَرُ الَّذِينَ قَالُوْآ النَّالَ هُوَ الْمَسِيْعُ بِي اللَّهُ الْمُسِيْعُ بِي اللَّهُ وَمِي عَهِ ا

البق مُنكِم م)) . المائرور عا

اور حبِّنفس بيركها بيدكتين فداوك بين مسايك فداالتُّدتعالي هي ميت تووه معني گمراه كن گمراه اور كافرسيد.

ولَقَيْدُكُفْرَ الَّذِيْنَ قَالُوٰ إِنَّ اللّهَ ثَالِثُ

تُلَاثِيَةٍ ». الماروس

لبائدہ سے ایک \_\_ ریس نے ایک \_\_

اور حوشخص النول شانه کی طرف اروسکے کی نسبت کرتاہے وہ بھی گمراہ وکا فرسبے ،اس میلے کہ اللہ تعالیٰ جل شانه

ارشاد فرماسته بین : در بین در و سردی «

﴿ وَقَالُوا النَّخَذَ الرَّحُمُنُ وَلِدًا هُ لَقَالَ حِمُنَهُ وَ شَيْبًا إِذًا ﴿ تَكَادُ السَّمُوتُ يَنَفَظُرُنَ مِنْهُ وَ تَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِزُانِعِبَالُ هَدًّا ﴿ اَنْ دَعُوا

اور (یہ لوگ) کہتے ہیں کہ خدائے حمن نے اولاد اختیار کر کھی ہے ،تم نے یہ حرکت اسی سخت کی ہے کہ کچھ بعید نہیں ہواس کے ہاعث اسمان ٹوٹ پڑیں ،ورزمین بچٹ

یے شک کافر ہوئے جنہول نے کہاالٹدنین ہیں کا

لِلرَّحْمِينِ وَلَدَّا أَ وَمَا يَنْبَغِيْ لِلرَّحْمِينِ أَنْ يَتَخِذَ ولَكُا )) .

مريح. د د ۱۹۳

رطن کے لائق یہ (کسی طرح) نہیں کہ وہ بٹیا اختیار کرے ؛ ورخیخص ابتدتعالیٰ کوسی ایپی صفیت ہے متصفے کرتا ہے جواس کی شان سے لائق نہ ہوتو وہ بھی گمہ راہ

و كافريد ارشاد فرمايا .

( لَقَ لَ سَبِعَ إِنَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوْا إِنَّ اللَّهَ بي تسك الله في الله الله الله الله فقير الاربم ماللار جي ـ فَقِيْرٌ وَنَحُنُ أَغُنِياً وُمِن) المائدة - ١٨٠ نيزارشاد فرمايا :

> (( وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللهِ مَغْلُو لَيَّ عُلَّتُ أَيْدِينِهِ وَلُعِنُوا بِمَّا قَالُوا مِ بَلِّ يَهٰ لَا مُنْسُوطُ بَنِّ ).

جائے اور پیام کانپ کر گر بڑی اس بات سے کہ یالگ

خدائے دلمن کی طرف بیٹے کی نسبت کرستے ہیں . اور نعلے

ا درمیع در کتے بیں اللہ کا باتھ بند ہوگیا، انہی کے اتھ بند موجائي ، اورلنت سے ان کواس کے پر جکہ اس کے تو دونول إتر كملے بوئے ميں۔

اس کے علاوہ ارتداد کے اور دوسرے وہ مظاہر دعلامات جو ان سے حامل ومرتکب افراد کو اسلام سے نکال دتی ہیں اور کفرو گماہی ، زندقہ والحاد کے دائر سے میں داخل کر دیتی ہیں۔

نودنى كريم على الله عليه ولم في على الله ناف سے دوليا بيے سس نماسف س ارتداد ببت عام موكا، اور ميع وسلم اس فتنه كاحله ودور دوره بوگا، اورائسي صويت حال بين مؤمنول كواس باست برا بهاداسيه كه وه اعمال صالحه كي طرف سبقت لے جائیں ، اور ایمان کے مفوظ قلعہ میں بنا الیس ، تاکہ کفری تارکی میں گرفتا راورا تداد میں ڈالنے والی کسی چیزے متأثر نے ہول نبى كريم عليه الصلاة والسلام فرات ين :

> ((بادرواإلى الأعمال الصالحة فإنه ستكون فأن كقطع الليب لا المظلم ، يميث السيجسل مسؤمنياً ويصبح كافرًا، و يعبيح صؤمن وتيسى كافسؤارببيع دينه بعرض من الدنيا قسليسل». طبرانی واین ماجه

ا*ور ارش*اد ہاری ہے : ﴿ رَبَّنَا لَا ثُنِوٰءُ قُلُوْبَنَا لَعْدَادُ هَدَ نِيتُنَاوَ هَبْ

نیک اعمال کی طرف سبقت ہے جا و اور طبری کرواس يے كونقريب بہت سے فتنے سياه دات كے كراوں ی طرح سے آئیں گے ، جن ٹیں ایک خص شام کومومن ہوگا ا درمین کوکافر بوجائے گا. اوراکیشخص مین کومؤمن بوگااور اورشام كوكافر بوجائے كاداپنے دين كودنيا كے تعورت ہے سامان کے وض بیج دے گا۔

اسے رب نر پھے ہارسے دلول کو حب آپ درایت

لربیطے . اور عنایت کیجیے ہم کو اپنے پاس سے جمت آپ بی سب کچھ دسینے والے ہیں نَنَا مِنْ لَدُنْكَ يَخِمَةً النَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ» العمران - م

۲ - الحادسية دُرانا

الحادسے مراد ہے۔ اللّٰہ کی ذات کا انکار کرنا ، اوران نسلیجیول کا انکار کرنا جنہیں اللّٰہ کے رسول صلی اللّٰہ علیہ وَم لے کرآئے بیں ، اوران اچھے کامول وفضاً ل اور بہترین باتول کا انکار کرنا جن کی نسبت آسمانی وگ کی طرف ہے ، الحادم بی ارتداد کی ایک قسم ہے بلکہ یہ تو اس سے بمبر وبری چیز ہے جبیا کہ ہم آئندہ بیان کریں گئے۔

بڑے افسوں سے کہنا پڑتا ہے کہ الحاد ایک الیا استقل نظام بن گیاہے جسے بڑی بڑی حکومتول نے اپنایا ہوا ہے ، اوروہ اس الحاد کو طاقت وقوت سے بل بوتے پر زبردتی وجبر سے ساتھ ان حکومتوں پر تھوپ دیتے ہیں جو ان سے زیر سایہ ہیں ۔

ان حکومتول کے پیٹھو و کارندسے ہر ملک وحکومت میں موجود ہیں جو نہایت ڈھٹانی سے کھلم کھلاالعاد کی دعوت دسیتے ہیں ،اور ناہب دادیان اور نبیول کا بلاکن حجبک ڈسرم وحیا م سے انکارکر دسیتے ہیں ۔

بلکہ ہم تو یہ دیکھتے ہیں کہ پرلمی خوص سنے ماکس ولین کے عقائد وافکارا پنائے ہوئے ہیں، نیصوصی طورسے اپنی طمیرانہ وعورت کانشاز ومحوراسلامی حکومتول اور سلمان ملکول کو ہی بناتے ہیں، اس لیے کہ یہ جانتے ہیں کداسلام کے بنیادی اصولوں میں تمدنی ، نقافتی ، سیاسی او ملمی لحاظ سے تنتی قوت مدافعت ہے۔ اور سیا حکامات کس قدر عام ، محیط اور ہم زمانہ وہر جگہ سے ساتھ چلنے کی بوری بوری صلاحیت رکھتے ہیں ۔

ان ممالک سے الحاد کی طرف دعوت دینے کا جوطر نیچہ ہے اگر ہم اس کا تمیح کریں تو ہمیں معلوم ہو گاکہ یہ اپنے ملی انه نظر بایت واصولول کو چھیلانے میں کس قدر مختلف طریقوں اور طرح کے اسالیب سے کام لیتے ہیں ، تاکہ گماہی وکفرکو عام کیا جاسکے۔

وم، تی بنانچرکہ تو یہ لوگ مارکسیت کو اسلام کالباوہ اڑھا دیتے ہیں، اور یہ کہتے ہیں کرنم کریم کی اللہ علیہ وم ہی وہ ، تی سے جن نے کہتے ہیں کہ نیم کریم کی اللہ علیہ وم ہی وہ ، تی سے جن ول سنے مہنشا ہیت سے جن ول سنے مہنشا ہیت کا خاتمہ کیا لاہذا آپ رصلی اللہ علیہ ولم کی اور سلے میں سے دسول اور شیوعیت سے نبی ہیں ۔

ے تسبی برلوگ یہ کہتے ہیں کہ کمیونزم سے بنیا دی اصول اسلام سے بنیا دی اصوبوں سے منافی وخلا دنیہیں ،اوران کااسلام کی معاشرتی واجتماعی عدالت سے کوئی تعارض نہیں <sup>ہو</sup>ہے۔

ے۔ یہ باہرسے آنے واسے ان اقتصادی نظامول سے اسوام بانکل ستنی ہے ۔ واحظ فراسیئے ہماری تحاب التکا فل الاجماعی ( بعتیعاشیہ آئدہ مغربرہ جیس ا کہ تھی وہ یہ کہتے ہیں کہ اگر ہم کمیونسٹ نظام کا اقتصادی نظام ا بنالیں اور اپنے دین بیرسلمان تھی برقرار رہیں تواس سے بچاچیز مانع ہے ؟

کوسیاست سے خلط ملط نہیں کہ دین ایک الگ چیز ہے اور سیاسی واقعادی ندا ہیں۔ الگ چیز ہیں، اس لیے ہمیں دین کوسیاست سے خلط ملط نہیں کرنا چا ہیں اقتصادی نظاموں اور علمی نظیات کو دین میں واُفل نہیں کرنا چا ہیں۔ کوسیاست سے خلط ملط نہیں کرنا چا ہیں۔ اور کج رؤل اور آزادی پسندوں کی نفوس میں شکوک وشبہات و کفر ک جڑی بورن بورن کے اور بسااو قات کھلم کھل چینجے دیا جا گاہے ہوئی آئے ہے میشل بھیے ان میں سے بعض یہ کہتے ہیں کہ اللہ اور مذاہب وادیان اور جڑی بورن اور آزادی پسندوں کی نفوس میں کہتے ہیں کہ اللہ اور مذاہب وادیان اور جاگیروارانہ اور سرمایہ وارانہ نظام اور اجتمال واستعمال و تی تھیں یہ جاگیروارانہ اور سرمایہ وارانہ نظام اور استعمال و تی تھیں اور اچھائیاں ہوگذشتہ معاشہ وال پر جھائی ہوئی تھیں یہ سب ماریخی نمائٹ گاہ بی می مگی ہوئی گڑھا ہیں ہیں۔

یا پہکے کرکائنات میں کوئی معبود ہمیں ہے .اور زندگی مادے کا نام ہے .اور دین قومول سے یہے افیم ہے اور دانعیاذ باللہ) انبیاد چور و حبوہ نے ہیں ۔

اپنے الحاد کورائج کرنے اور دوسرول کو گمراہ کرنے سے لیے ان کے جوطریقے ہیں ان ہیں سے کمی نظر بات سے فائدہ اسھانا، اور سن کو گمراہ کیا جا رہا ہے۔ ہے کہ بیسب نابت سندہ شدہ حقائق ہیں جیسے کہ ان توگول کا ڈارون کے نظریہ کا داری کی گار ہی ہے کہ بیسب نابت سندہ شدہ حقائق ہیں جیسے کہ ان توگول کا ڈارون کے نظریہ کا داری کی ابتدا کہ ہاں سے ہوئی، اور ترقی کے نظریہ کا داری کی ابتدا کہ ہاں سے ہوئی، اور ترقی کرتے کہ سندہ سندہ سندہ بھی اور اخیر میں انسان کے شکل میں وجود پزیر ہوئی، یہ بات یا در کھنا جا ہے کہ مام و تحقیق نے اس نظریہ کو خلط قرار دیا ہے۔ اور اس کو میکار و مہل باتول کی ٹوکری ہیں ڈال دیا ہے ہے۔

یا جیسے کہ ان کا فرائٹ کے نظریہ کو عام ورائج کر ناتمبس کامحورات بات برسبے کہ سرچیز کا تعلق مبنس اور شہوت سے ہے جوانسان کے کردار کی ہر جپیز کی تفسیم نبوا بٹ کے راستے سے کر تاہیے۔اس عقیدہ کی ترویج کا گھناؤ نامقصد علیم خالق ذا کا انکار کرنا ہے۔

مخلف اسالیب سے اختیار کرنے میں تیفنن اس بات کوظ اسرکرتا ہے کر محدانہ مارکسیت ہر حالت کواس کے مناسب لباس پہنائی ہے۔ اور ہرجاحت کواس سے مناسب التشفی کوائی ہے۔ اور انسانوں سے ہرطبقہ میں ایکے مناسبِ السل مناسبِ اللہ عناسبِ اللہ عناسبِ اللہ عناسبِ اللہ عناسہِ اللہ عناسبِ اللہ عناسہ مکاری سے کام لیتی ہے۔ اور مجرجب شخص بس کو دھوکا دیا جارہا ہے اس سے دروانہ ہے میں واتل ہوجا آہے اور شکاری سے جال میں جن منا ہے تو بھر مارکسیت سے دائی اس سے ساحت ما دی مزاجب اور ملمدانے قائد کو مزین وآراستہ کرے

مردہ مدسے ہم دسے سے بیچے ہیں ہے تیاری کا رہا ہودہ میں دسیمیں ہے۔ کے لاصلافوا بیتے ہماری کمآب شہبات ورد ود جس میں ہم نے نہایت مرال طریقے سے ڈارون کے نظریہ کی تردید کی ہے۔اورالمی دختی امترارسے اس کو باطل ٹایت کیاہیے۔

ربقيه حاشيصغى گذشة سے آگے ، فى الاس لام اورسيقطب كى كتاب العدالة الاجهاعية "جہال آپ كواس باب برتشفى كابورا سامان سے گاكىمعا شروسے فقرونى قد كے ختم كرنے كے ليے اسلام نے كيا وسائل ايجا دوانتها ركيے ہيں ۔

بیش کریتے ہیں، تاکه اس کو گمراه کرینے سے ایسے خبیب مقصد کوچامل کرسکیں ۔ اور مجرق خص نہ توکس دین کوما نا ہے ، اور نہ خدا کا اعتقاد رکھتا ہے۔ اور نذر کی میں کس کارنا ہے اوراچیائی کا طلب گار ہو تاہیے ، بلکہ وہ اس گراہ کا فرجا عست میں شامل ہوجاتا ہے جس سے بارے میں اللہ تعالی فرماتے میں:

> (( اُولَيِكَ الَـٰذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَاصَمَعُمْ وَ اَعْلَى ٱبْصَادَهُمْ ضِدْٰلِكَ بِأَنَّهُمُ التَّبُعُوا مَّنَا ٱلسَّحَطَ اللهَ وَكَيْرِهُوا رِضُوانَهُ فَأَخْبَطَ أَعْمَالُهُمْ ))

سبب \_ سے ہوگاکہ یہ اس راہ پہیلے حوط لیتے اللہ کی انوٹشی كاتف، اوراس كى صنا سے بيزار سب ، سوالتہ نے ان كے

يمى توگ تومين جن برائند نے نعنت كى سے سوانہ يں بہرا

كرديا وران كآنكمول كوانده اكردياب .. يراسب،ال

اممال اکارت کر دیے یہ

الحاداگرچه ردت داندادسیمغهوم می میں داخل سیے لیکن به معاشرے اوراس سے افراد سے حق میں ارتدا دکی دوسری اقعام مثلاً بیہودیت یا عیسائیت کا اختیار کرنا، یا برہمن بننے ہے بھی زیادہ برا اور خطرناک ترین ہے۔ اور اس کی وجہ یہ ہے کہ الحاد ملحد سے دل سے سئولیت کا احساس ختم کردتیا ہے ،اوراس کے دل سے ایمان بالغیب اور شاندارا ضلاقی کا رنامول کی روح ختم کردیا ہے. اور اس کواس بات پر آمادہ کر دیتا ہے کہ وہ اس بے مقصد زندگی بیس حیوانوں کی طرح زندگی اب سرکرے، نة تودين اس كى رښانى كرسيد، اورېزاس كوچېنجهورينه والاضمير بيو، اور ندالتد كيمواخنده اور بچراكا درېو، نه آخريت سي تواب كى امیب رہو ، اور بذاسے اس دن سے عذاب وگرفت کا ڈرمہوجی دن تمام لوگ اٹکم الحاکمین سے دربار میں کھٹرے ہول گے۔ قرآن كريم في اس فاس وفاجر كميني جاعبت كادرج ذبي آيت مي مذاق اوايا ب :

ا دریالوگ کھتے ہیں کہ بھر ہماری اس دنیوی حیات کے ﴿ وَقَالُوا مُمَا هِمَى إِلَّا حَسَيَا ثُنَّنَا اللَّهُ نَيَا نَمُوْتُ وَتَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَّآ اللَّا اللَّهُ هُرْ وَمَا ا درکونی حیات نہیں،ہم دبس ایک ہی ہار)مرتد اور لَهُمْ بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمِهِ إِنْ هُمُ الْكَا يَظُنُّوٰنَ ))

رلبس ایک بی بار) زندگی پائے اور یم کوصرف زمانه ی بلاک كرة اسد ورآل ماليكه ال كي كاس اس ككوني ولي بسي معض الكل سعة إنك رسي ييس

اور قرآن کریم نے ان کے اس مذموم اندھے پن اور نسیت قیم کی حیانیت اور کھناؤنی آزادی واباحیت پسند کا کو کھول کربیان فرايا<u>ــــــارشادــــــــ</u> .

﴿ وَ لَقَدْ ذَرَاٰنَا لِجَهَنَّهُمَ كَثِنْيًّا مِّنَ الْجِينّ وَ الْإِ لَئِسِ ۗ لَهُمْ قُلُونَ ۚ ۚ ۚ كَيْفَقَّهُونَ بِهَا ﴿ وَلَهُمْ آغَيُنُ لَا يُبْصِرُونَ بِهَا ﴿

اورمم نے پدا کیے دوزخ کے واسطے بہت سے جن اور آوی ، ان کے دل بین کدان سیسم منت نہیں ، اور ان کی جمعیں ہیں کران سے دیکھتے ہیں، اور کان ہیں کہ وَ لَهُمْ الْذَانُ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا أُولَيِكَ كَالاَ نَعَامِ بَلْ هُمْ اَصَلُ الْوَلَيِكَ هِمُ الْغُفِلُونَ» الاولاد- ١٠٠٠ نيزارشا وفرايا:

((وَ الَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا ثُلْكُلُ لَانْعَامُ وَ النَّارُمَثُوَّى لَهُمْ ﴿ ﴾ .

سورة محسيعيد - م

اور فرمایا:

لا ذَرْهُمْ يَاٰكُلُواْ وَيَتَمَتَّعُواْ وَيُلِّهِهِمُ الْأَصَلَّ فَالْمِهِمُ الْأَصَلَّ فَسُوْفَ يَعْلَمُونَ » الجرء

مچھوٹر دیجیے ان کو کہ کھائیں اور فائدہ اٹھالیں اور امیری مجھے میں سوآئدہ علوم کرئیں گئے۔

ان <u>سەسىنتە</u>نبىي ، دەلىسەي<u>س مىسەجويلەت</u> بلكران

ا ورحو کا فرمیں وہ عیش کررہے ہیں اور کھا (نی ) رہے

ہیں جس طرح جویائے کھاتے اچتے ہیں۔ آگ ہی ان کا

سيميى زيا ده بدراه . وې لوگ غافل بېر.

دین اسلام نے مربدوں اور ملحد تن سے سلسلہ میں نہا ہے تن فیصلکن موقف اختیا رکیا ہے ، آس لیے کہ اس لام سنے اس کے فریرات خست فیصلکن موقف اختیا رکیا ہے ، آس لیے کہ اس لام کے فریرا صارا ورواضح وصاف میا ف دین تق سے اعراض کرین کی منزا تلوادستے کردن اڈا نامقرری ہے جنانچہ اما ) بخال کی واحد رحم الله درسول اکرم مسلی اللہ علیہ ولم سے روایت کریتے ہیں کہ آپ نے ارشاد فروایا ،

مم کا ناہے

جوشخص اپنا نرسب تبدلي كردساس كوقتل كروالور

(رمن ملل دینه فاقتلوم). اورام بخاری ولم رحمهاالته نبی کریم علیه الصلاة والسلام سے روایت کرتے ہیں:

ر لا پیمنل دم اصری سستم إلا باحدی

ثلاث ، الثيب الناني ، والنفس بالنفس

والتارك لديند ألمف ارق للجاعة).

کسی مسلمان کاخون بهاناتین باتوں کے علادہ کسی معورت یس جائز نہیں سبے : شادی شدہ زناکسے ، اورقتل کے شلے میں قبل کیا جائے گا ، اور وہ منص جوابنا دین مجود کر (سسلمانوں

کی)جاعت سے علیجہ و ہوجائے۔ سریر میں میں میں ایک ا

کین مرید یا لمی کواس وقت کم قبل نہیں کیا جائے گا جب کک کا سے میں یوم کی مہلت نہ وسے دی جائے ،ال تین و دنول کے دوران المرجلم وارباب ہم اس سے مرید ہونے کے اسباب پر بحث مباحثہ کریں گے ،اوراس کے ذہن ہیں جو شبہات و خیالات ہیں انہیں دور کریں گے ،اور دین متین اسلام کے زرین اصولوں ،اور تھانیت کواس کے ساسنے کھول کھول کو کر بیان کریں گے ، چراگراس کے بعد بھی وہ کفروالحاد پر مصرر سے اور دی کھل کر ساسنے آنے کے باوج دہمی اس کی طرف ہوئ کر بیان کریں گے ، چراگراس کے بعد بھی وہ کفروالحاد پر مصرر سے اور دی کھل کر ساسنے آنے کے باوج دہمی اس کی طرف ہوئ کا کہ دو سر سے لوگوں کے لیے عبرت کا ذرائی ہوئ ہوا ہے ۔ کام اور ذرائی اور اپنی کوئی تنظیم یا جا مست قائم کر ہیں تو مسلمانوں کے دکام اور ذرائی اور اپنی کوئی تنظیم یا جا مست قائم کر ہیں تو مسلمانوں کے دکام اور ذرائی اور اپنی کوئی تنظیم یا جا مست قائم کر ہون دوبارہ لوسے کر مذا آجا میں برین اسلام کی طرف دوبارہ لوسے کر مذا آجا میں کہ برید فرض ہے کہ وہ ان سے اس وقت تک جنگ کریں جب تک کہ وہ دین برین اسلام کی طرف دوبارہ لوسے کر مذا آجا میں کہ

ا در اسلام قبول کرنے کے علاوہ کوئی اور چیز قطعا قبول نہ کریں ، جیسے کہ حضرت ابو بحر صدیق ضی اللہ عند نے متر دول سے جنگ کی اور اسلام قبول کرنے نے کے علاوہ کسی اور باست بررضام ندنہ ہوئے ، اور جیسے کہ خلیفہ عباسی مہدی نے اس مقنع نا می خص سے جنگ کی تھی جس نے خراسان میں خدائی کا دعوٰی کیا تھا اور ا پہنے متبعین و پیرد کا رول پرسے نماز ، روزہ ، زکا ہ وجے معاف کردیا تھا، اور لوگوں کے لیے مال ودولت اور عور نیں حلال وجائز کردی تھیں ، یہ واللہ عرکا واقعہ ہے۔

# ملاحدہ ومرتدین کے سلسلہ بیں اسلام نے اتنی سخت وشدیر نرا ین اسباب کی وجہ سے تقرر کی ہے:

۱- تاکها بھا یسنے وآبادہ کرنے والی تیبزی بعض کمزو رفوس کواپنی طرف راغب نہ کرسکیں ،ا دراس سے ذراحیہ انہسیں رتداد والحاد پر آبادہ نہ کرسکیں ۔

۲ ـ تاکه کوئی منافق بیسوچ کراسلام میں داخل نه بوکه وه مچر دوباره اسلام سے خارج بوجائے گا،ا وراس طرح ارتدا د و الحاد کی ہمت افزائی ہوگی اور کم معاشرے میں فتنہ وازمائش کا دور دورہ ہوجائے گا۔

۳۔ تاکہ کفرکی عزیت وقوت میں اصافہ نہ ہو کہ بچروہ اسلامی مملکت سے لیے بڑا خطرہ ٹابت ہوا ورجب موقعہ ومہلت ملے توسلانوں کی بینے کنی کی خاطران سے خلاف جنگ بریا کردیں .

الحاد کی حقیقت اور ملحدین جوسازشیں اور جا گئے ہیں اور جس طرے سے اندر فی طور برمجر مانہ حرکات کرستے ہیں ان کوکھول کر بیان کر سنے اور واضح کرنے سے سے لیے میں اسے مربی محترم آپ سے سامنے مندرجہ ذیل تاریخی مثالین شیس کرتا ہوں ، تاکہ آپ کوموقعہ میں جائے تو وہ سلمانوں سے نعلاف سے کوکھوکڑنا چا جستے ہیں ،اوراگر ان مجرمول سے لیے حالات سازگار مہوجا ہیں تووہ کیا کھے کرنیٹھیں گئے :

کو بیخ کئی کرنے کی یہ تدابیر وسازشیں اب کا بین مسامانوں کوسال ہیں ایک ملین کے حساب سے ختم کرڈالا، اور ہمانوں کی بیخ کئی کرنے کئی ہے۔ ایک جا ہے کہ بین کا میں ہے جی جی جہ بی کہ اور ایک ہا کہ مناہ کم بیریزدہ ڈال دیا ہے جسلمانوں کے ایک سربراہ کولا یا گیا اور ایک ما کہ مناہ کے جی بی بی بی بیر کہ ہور کیا گیا اور سلمانوں کو طاقت وقوت سے بی بوتے پر اس بات پر مجبور کیا گیا کہ وہ اپنے فضلات رگندگی پیشا ہے یا فانے کو لاکر اسس مسلمان سربراہ کے اوپراس گرمے ہیں ڈالتے رہیں. یہ حرکت ہین دن تک مسلسل جاری رہی اور اپس منزا کے دوران اس مسلمان رہناکی دوح اس گرمے میں پرواز کرگئی۔

ک کمیونسٹ ملک لوگوسلاویہ نے بھی اپنے ملک سے مسلمانوں سے ساتھ ایساہی بر ّاوُکیا اور اِس ملک میں جب مسلم کمیونسٹ ملک لوگروں کے دور دورہ مبولسیے اس وقت سے آج تک ایک ملبن مسلمانول کو ختم کیا جا چکا ہے۔ اور وحشیانہ سزاؤل اور

مسلمانول کوختم کرسنے کاسلسلہ اب تک جاری ہے جسب کی سب سے وحشیانہ وظالمانہ سنراکی مثالول میں سیسے سلمان مردول اور عورتول کا قیمه کی ان مشینول میں ڈا انا ہے جو گوشت کو رول کی شکل میں بنادیتی ہیں تاکہ دوسری جانب سے میسلمان مرد و عور میں گوشت وہرلول وخون کامرکب قیمیدین کرنظیں ۔

💠 جوکیجه لوگوسال ویه بین برور پاسپه وه سب کچه کمیونسٹ بلاک سے تمام ممالک میں اب تک برقراب اور مجور پاسپے جانچہ کمپوسٹول نے عزاق کے شہرموسل میں عبدالکریم قاسم سے دور میں جولی وغارت کا بازار گرم کیا آپ سے بار سے میں کتنی مرتب بهم في من ركها بهد. أى طرح دعوت اسلام وسين والول اورمسلمان جاعبت كيسانه م توكيه قتل وغارت وغيره كابازار تسحل سے حوادث میں گرم ہوا وہ تھی ہمارے سامنے ہے ان سے جو کھے مجرمانہ حرکات اور غدر وخیانت صادر ہموتی ہے اس کے بارسے میں حق تعالی کا درج ذیل فرمان مبارک بالکل برحق و سجے ہے:

الكَيْفَ وَإِنْ يَّضْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا كَيْرِقْبُوا كَيْرِقْبُوا كَيْرِقْ مِنْ الْمُعَالِمِينَ الْمُعَالِمُ الْمُولِينِ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ اللَّهِ الْمُعَالِمُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ ال فِيْكُ إِلَّا وَلَا ذِمَّةً )) • التوب، تهارى قرابت كا اور خعهد كار اور فسرمانِ مبارک :

الاَلاَ يَرْقُبُونَ فِي مُوْمِينِ اللَّا وَّلاَ ذِهَاهُ مُواُولَيِكَ نهي لاَلاَ يَرْقُبُونَ فِي اللَّا وَلاَ ذِهَاهُ مُواُولِيكَ لاَلاَ يَالِمُ اللهِ عَلَا اللهِ عَلَا اللهِ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ﴾ . التوب ١٠٠ كا، اورويين زيادتي ير-

اک لیے اسے مربی محترم حبب آپ نے بہ تھائق جان کیے تواب آپ کافریفید یہ ہے کہ آپ نوب اٹھی طرح سے اس بات کی گوشش کریں کہ آپ ایسے نبیجے کو ارتداد سے خونخوار پنجول اور الحاد سے دام سے بچابی ، ماکہ آپ کا بچر راسخ ا کیان اور مضبوط اسلام والابین ، اور شاندار استقامت پرتائم ہو، اوراس کی فطرت سِلیمه اورصاف ستصریب دل اور معصوبالنس میں بیمعانی جاگزین ہوجائیں ،اوراگرایسا ہوگیا تو بھیروہ التہ سے سواکسی کو رہب بنانے ، اور اسلام کے علاوہ کسی ذرہب کو دین سلیم کرنے اور محمصلی اللہ علیہ وہم سے سواکسی کونبی ورسول ماننے اور قرآن ِ نظیم سے سواکسی کوام م ومنہاج ماننے پر راضی م مہوگا . اور وہ ان لوگول میں سے بن بہائے گاجن کو اللہ نے نعمت ایمان اور اسلام کی عزت وکرامت سے قیامت تک مے کیے توازدیا ہے۔

ــه لا حظه فريائييرس شيوعييت اوداسلام • مؤلفه مرحوم عبكس محمود عقا دِ. اود اســتاذا حمدعبدالغفورعطا ر، إى طرح تغسير ْ فلال القرّل ْ كى سورة توبركى آيت لا كَيْفَ وَإِنْ يَعْلُهَ كُواعَ كَيْكُتُمَ لَا يَرُقَبُوُا فِينَكُمْ إِلَّا قَلَاخِمَةً إِلَّا قَلَاخِهُمْ أَلَّا مِلَاكَ مَالَك الرمسلانول سك خلاف شیوعیت اور کمیوسٹوں نے مورازشیں اورمجرمانہ تابیر وحرکات کی بیں ان کے بارسے میں دل کو پکشس باش کرنے والی باتیں پڑھنے کو لمیں گ ، س استه می بریمی محوظ خاطررسی کرم نے کچے تعصیل "تربیت سے سعد میں مؤثر وسائل کی فصل میں بیان کردی ہے جسس سے شیوعیت کی وہ سازشیں جودہ اسلام اورسلمانوں کے خلاف کرتی ہے ان کی وضا صت ہوتی ہے لنبزا آپ اس کا سطالعہ کر لیجیے۔

٣- ترام کھيل کو دستے بچانا

اسلام نے اپنی لجندترین تربعیت ونظام اورحکیمانہ بنیادی اصولول کے ذریعیس لمانوں پر ایسے بہست سے کھیل کو د ا *ور س*امان عمیش و مشریت کو حرام قرار دے دیا ہے جس کا افرا دے اخلاق اور معاشہ ہے کی اقتصادیات ، دولت ،اور حکومت ترشد : كي خص ، امت كى كرامت اورخاندانول كے وقاروركه ركها و بررُراارْ روايا ہے.

اب ہم مربیان کرام سے سامنے ان حرام و ناجائز بھیل کو دکی کچھ اقسام بیان کیے دیے ہیں ناکہ وہ ان کو مجیس اوران سے بیجے اور دوررسے میں اینے آپ کومقتدا ونمونہ تابت کردکھا میں، اللہ ہی سیدھا راستہ دکھانے والاہے اوراسی سے ہم توقیق ومدد کے طلب گارہی :

# اً نروسے کھیلنا (یہ ایک میں کھیل ہے جسے اردسیر بن بابک شاواران نیے ایکا کیا تھا:

حرام کھیلوں میں سے سرد سے کھیلنا تھی ہے خواہ یہ شرط لگا کر کھیلا جائے یالویہی دل بہلانے اور وقت پاس کرنے کی خاطراس کھیل کے حرام ہونے بروہ حدیث دلالت کرتی ہے جسے اہم سلم، احمدوابو داؤدرجمہم اللہ نے حضرت بریروضی ش عندسے روایت کیاہے اور انہول نے بی کریم صلی اللہ علیہ وکم سے کہ آپ نے ارشاد فرمایا :

لامن لعب بالنروشير في أنما صبغ يده في جوتنم نروخير سيكيلا اس نيگويا پنا إته نعنزير ك

گوشت وخون سے رنگ بیا.

لحم خازيرودمه).

اور الم احمد، ابوداؤد ، ابن ماجه ومالك حمهم التُدحضرت ابوموئى رضى التُدعندست روايت كريست يي كهنبى كريم صلى الله عليه وسلم نيے ارشا د فرايا:

جوضخص نردست كميلاكس فالتداوركس كيول ک نافرانی کی۔ درمن لعب بالنود فق وعصى الله ورسوله».

ہے اس سلسلہ میں استناذِ قرضا وی نے اپنی تحالب" حرام وملال میں شوکائی سے بواسط ابن المسیبُ وابن مغفسل یونقل کیا ہے کہ ان دونوں حضارت نے نروسے کھیلنے کا اس صورت میں اجازت دی ہے جکہ جوا بازی نہو، صاحب کما ب کی ینقل غیرمنتبرہے اس ہے کہ شوکائی سے حسبس صیغہ سے ذراعیہ اس قول کونقل کیا ہے وہ "رُوِی "سیے جوضعف پر دالاست کرتاہیے، اور جونودضعیف ہو ۔ اس کے ذراعیہ شراعیت کے احسکام یں سے کا مکم کوٹابت نہیں کیاجا سکتا ، ہم نے نرو<u>سے کھیلنے کے مس</u>وام ہونے کے سلامیں جوامادیث تقل کی ہیں یہ احب دیث ہراسس شخص سے ملائٹ نسیسل محکم ہیں ہواں سے جواز کا قائل ہو۔ مق سے مہربا نے کامعیا شخصیات ہوسیں ہومیں بکرشخصیات کوحق سے

ال کمیل کوترام کرنے بین حکمت یہ ہے کہ نرد سے کھیلانواہ بلانسرط و جوابی کیول نہ ہوتہ بھی یہ اس کھیل بی شغول ہونے والول کے افقات کا برط حصد برباد وضائع کر دیاہے۔ اور وقت کی یہ بربادی وضیاع ان کوان سے بہت سے دین برتی، وین فرائفس سے روک دیتا ہے، اور ساتھ ہی یہ شرط لگا کر کھیلنے کا ذرایہ بھی بندا ہے جو بالکل قمار و جواہے مسلمان کواس و نیامیں اس لیے پیاکیا گیا ہے تاکہ وہ پنیام اور امانت کو بہنچائے ، اور اپنے فرلیند کوا داکرہے، کیااس کے بعد بھی انسان کے یاس آنا وقت بچتا ہے کہ وہ اس لامین کھیل میں مست ہوا ور اس ترام و ناجائز لذت سے سطعف اندوز ہو؟ واقعی کسی نے بالک بچ کہا ہے کہ فرائفس اوقات سے بہت زیادہ ہیں ، اور کسی نے کیا خوب کہا ہے کہ وقت کی مثال تلواد کی طرح ہے اگر تم اس کونہ کا ٹوگے تو وہ تم ہیں کا ہے وہ الے گی۔

اور رسول ِاکرم سلی التُدعلیہ وہم نے ہرسلمان کواس بات کاحکم دیا ہے کہ وہ اپنی اس دنیا وی زندگی کوغنیمت جلنے اور اس سے نوب فائدہ احتائے اور خیروا چھائیول میں لگائے جا ہے یہ نفع وخیراس سے اینے بیے ہویااس سے اہل وعیال کے لیے یامعا شرہ وقوم سے لیے ۔

ی میں سے علامہ حاکم رحمہ التّہ صبیح سسندسے حضرت عبدالتّہ بن عباس ضی التّہ عنہا سے روایت کرتے ہیں کہ بی کریم سلی التّہ علد سلمہ نری شاہ فرالی

عليه وسلم نيه ارشاد فرمايا:

پائی چیزوں کو پائی چیزوں سے تبل غیمت مجمع : ابی زندگی کو غیرمت مجمع و بری زندگی کو غیرمت مجمع مرسفے سے پہلے ، اور انبی صحبت کو بھاری سے قبل ، اور انبی فراغت کو شغولیت سے پہلے ، اور انبی و افرائی بوانی کو بڑھا ہے ہے ۔ اور انبی توانگری و ما لداری کو فقر و فاقہ سے پہلے غیرمت مجمع و۔

الااغتنى منحساً قبل خمس ؛ حياتك قبل موتك، وصعتك قبل سقك، و فراغك قبل شغلك، وشبابك قبل هرمك، وغناك قبل فقرك».

٢ يكان بجان اوروسيقى كاسننا

ناجائز دحرام کمیل کو دمیں ایسے گا۔ نے کا سننائھی داخل ہے جس میں موسیقی ہوچاہیے یہ گانا مباح قسم کا ہی کیول زہو اس بے کہ اس موسیقی کی حرمت سے سلسلہ میں آئدہ دلائل بیش کیے جارہے ہیں ،اس طرح وہ فمش گاناتھی جوشہوت اورنسی جذابت کو ابحار نے والا ہو ،اور وہ گانا تھے جس میں کسی مخصوص عورت سے اوصاف بیان کیے گئے ہول اور اس کانقشہ کمینے ہے آگیا ہو ،اور اس طرح وہ گانے ہمی جو کافرانہ رسوم اور گراہ کن باتول اور عقائد وغیرہ کی طرف وعوت دینے والے ہول،

اس سے ترام ہوسنے کی دلیل وہ رقرارت ہے جے ابن عماکرا بنی تاریخ میں اور ابن صصری اپنے امالی میں حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ سے نقل کرتے ہیں کہ انہوں نے فرما یا جو خص کسی فاحشہ کے گانے کو سننے سے سیے ہیں گے گا قیامت کے روز اللہ تعالی اس کے کانول میں سیسہ گبھلا کر ڈالیں سکے۔

اور امام ترمندی حضرت علی کرم النّدوجه بست نقل فرمات بین که رسول اکرم سلی النّدعلیه و کم نے ارشاد فرمایا: حبب میری امست پندره کام کرسے کی تواس برج زمائش وابتلاء کا دور دوره شروع بوجلسهٔ گا:

الإذاكان المغنم دولاً، والأمانة مغنماً.
والزكاة مغرباً. وأطاع الرجل نوجة وعق أمه ، وبرصديقه وجفا أباء ، وارتفعت الأصوات في المساجد. وساد القبيلة فاسقهم ، وكان نعيم القوم أرذ لهم ، وأحرم الرجل مغافة شرة ، وشربت الخمر ، ولبس الحرين واتخذت القينات والمعازف، ولعن ذلك ريعا حمراً ، أوخسمنا أوسمعنا). ذلك ريعا حمراً ، أوخسمنا أوسمعنا).

جب، مال غیرت دولت جع کرنے کا ذراید اور امانت مال غیرت اور آکاۃ اور کاۃ اور نمان ہوی ک اطاعت کرنے گھ اور مال ک افرانی ، اور دوست کے ساختوس سلوک اور والہ کے ساختو کتی ، اور دوست کے ساختوس سلوک اور والہ کے ساختو کتی ، اور سعبدول ہیں آدازیں الجند ہونے لگیں اور قبیلے کا سرداد ان ہیں کا فاسق شخص بن جائے ، در واسمان کا اگر ماس سے ڈرک کمترین و حقیر شخص ہو جائے ، اور انسان کا اگر ماس سے ڈرک وجہ سے کیا جائے گئے ، اور انسان کا اگر ماس سے ڈرک وجہ سے کیا جائے گئے ، اور انسان کا اگر ماس ہو جائیں ، اور گئے اور مغنیات و کا نے کہانے کے آلات عام جو جائیں ، اور اس اس است کے بسطے گزرے ہوئے وگوں برائے تا کہ جائے گئے اور مغنیات میرے مگر کے آلات عام جو جائیں ، اور وگوں برائے تا کہ جسے گزرے ہوئے وگر ایر ایمن بی اسم میں انسان کی باز مین بی والے سے موقعہ برائم خ آندگی یا زمین بی وسف یا صور بھی اسمور بھی سے موقعہ برائم خ آندگی یا زمین بی وسف یا صور بھی سے موقعہ برائم خ آندگی یا زمین بی وسف یا صور بھی سے موقعہ برائم خ آندگی یا زمین بی وسف یا صور بھی سے موقعہ برائم خ آندگی یا زمین بی وسفت یا صور بھی سے موقعہ برائم خ آندگی یا زمین بی وسفت یا صور بھی سے موقعہ برائم خ آندگی یا زمین بی وسفت یا صور بھی سے موقعہ برائم خ آندگی یا زمین بی وسفت یا صور بھی سے موقعہ برائم خ آندگی یا زمین بی وسفت یا صور بھی سے موقعہ برائم خ آندگی یا زمین بی وسفت یا صور بھی سے موقعہ برائم خوات کا انتظام کرد و اسمان کے انتظام کرد و انتظام کرد

اورمُتَذَدُوابِ حبال حضرتِ ابوسرِيره رضى التُدعنه سدروايت كرسته بيل كرسول اكم سلى التُدهلية ولم سفارتُ او فرايا: اخيرزبازيس ميرى امّست مي سدايک قوم كي سوديس مخرک بندر وخشر ير بناديد ميري امّست مي سعابه سنه عوم كي موديس مخرك بندر وخشر ير بناديد ميرست التُدك رسول بي استانتُ الترك رسول كيا وه لواله الاالتُد ا ورميرست التُدك رسول بوسف كي كوابي وسيتة مجول كي والي المالاالتُد المرسول النسك سائته الياكيول بوگا؟ كي كوابي وسيتة مجول كي معابه ني عضل الشرك رسول النسك سائته الياكيول بوگا؟ آپ ملى الته عليه وتلم ني فرايا واله الالته الدرون كا استعمال شروع كرديا بوگا، اور شراب آپ ملى الته على مواب و كميل كوديل مست بول كي اوروه من اليي مالت مي كرب كي كران كي صور من كردي گئي بول گي مول گي

را وه گاناجوملال وبراح سبت اس كے سلىل يى آپ سے ساسنے اس تحرير كا خلاصہ پیش كيا بوا آ سے تجريشنے محموما مدنے پے دسالة حكم الإسسلام في العنسناء " بي فقها ، سي نقل كيا ہے لكھتے ہيں : اگر كسى شكل وسخست كام ہيں تمبت

بر معانے یا جنگلات دوریان سفرول میں دل کونوش کرنے کے لیے اشعاد دغیرہ برسے جائیں تویہ مباح ہے، اس لیے کہنی کرم صلی التّدعلیه ولم اورصحابرام وضی التّرینیم نے سبدنبوی کی تعمیرا ورخندق کے محمود نے سے وقت اشعار میسے میں ،اوراسی طرح وہ اشعار بھی مباح ہیں ٹین سے ذریعیہ سے دیباتی لوگ ایسے اوٹیول کی ٹودی خوانی (لینی اوٹیول کو پیلنے اور دوٹر نے پر مست كرف كه اليواشعار بإحاكه تربيع اس طرح وه اشعار جوفن گوئى اور شراب وكباب اوداس كى دكانول كى مدح مرائې <u>سے خالی بول</u> ،اورکمی مخصوص عین زنده عورت سے محاس داوصاف کا ان میں ندکره نه بو ، اوراس طرح وه اشعار توکبی مسلان یا ذمی کی مذمیت و چوست خال بول توالیسے اشعار مباح بیں میکن اگران قیود کا خیال نه رکھاگیا ہو تووہ غنا چرام ہے۔ لیکن اگر کمی خیر تعیمن عورت سے اوصاف و محاسن کا نذکرہ ہوتو یہ جائز ہے جیسے کہ کعب بن زہیر نے نئی کرم کی اللہ

مليدوم كيسامف الين ورج زيل اشعار ريسه ا

وماسعاد غداة الباين إذرحلوا جدائی کی میخسس دن لوگول نے کو چھ کیا اس دن سعا در مبوب<sub>)</sub> تجلوعوا رض ذى كُلُيم إذا ابتسمت وه جب مسكراتي توجيك دار درنت جيكا ديتي سي

حویاکه وه رمنه بار اول پلایاگ سیست واب داور) باردیگریمی اسى طرح نبى كريم صلى الته عليه وكم نے حضرت صال ضى الته عنه كا وہ قصيده مجى سنا تھا حبس سے شروع ميں يہ

تسقى الفهيع ببسارد بستسام جوابيف پېلوم يدين وار كومسكرات يوف مرتاست دا تول سيركر آيا

إلا أغن غضيض الطرف مكعول

نبيرتهى كمرعندوالى دمرنى النيجانكام ببجكات داور المحس جثم والى

كأنءمنهل بالراح معسلول

تبلت فؤادك فحب المنتام خريدة خواب میں آپ سے ول کواسسی دوشیزون نے چین لیا

اس مباح قسم کے غنار میں وہ اشعار معی و اصل ہیں جوعور میں بجول کوسلانے کے لیے لوری کے طور بربڑھتی ہیں ا دراسی قسم سے تعدیت وہ صافت تھری غزلیں تھی وال ہیں ہوشا دی ہے موقعہ برمردول کی غیرمو تورگی ہیں عور نہیں برحتی مين، بنانجه ني كريم كى الله عليه ولكم في الدين الموكرون ولي التعارير في المازت وي تقى المازت وي تقى ا

فحيئــان وحيّــاكـم الله تميين اور بمين زنده و تابنده سكم مساحللنسا ببواديكسم تو ہم تمباری وادی میں تیام ناکرتے

أتينكسم أتيناكم بم تمہارے پاس آگئے ہیں ، ہم تمہارے پاس آگئے ہیں ولولا العبية السيمول اگر گئے۔ م مگول دانہ نر ہوآیا

اسی ذیل میں وہ صاحت تھرے اشعار تھی آتے ہیں جن میں بچولول، باغول اور نہروں کی تعربین و توصیف ہو<sup>ا</sup> تواس شم کے تمام اشعار جائز ہیں بشرط مکیہ اس میں کوئی حرام وممنوع قسم کا آلۂ غناء شامل نہ ہو، ورنہ اگرابیا ہواتو وہ حرام ہوجائے گاخواه وه پسندوموعظمست پرشتل کیول نه برول ،لیکن وه الن ناجائزآلات ِغناء کی بناء پرناجائز بوجائےگا زکرمباح اشعار وخناکی وجہ سے۔

### گانے بجانے کے آلات کا استعمال کرنا اوران کامنے نا من من ماریدا کی معمد میرون

مندر جدِ ذمل ادله کی وجہ سے حرا کہتے:

المجامی کھی پہلے ہم یہ مدیث بیان کر بیکے ہیں کہ حبب میری امت پندرہ کام کرسلے گی تواس پر آزمائش وامتحانا اللہ ہوجا نیس گئے ۔ الن میں سے یہ محب کے گئے نے والیال اور کا نے بجانے کا سامان افتدیار کر لیاجائے۔

¥ اس سے قبل ہم یہ بھی بیان کر چکے ہیں کہ انعیرزمانے ہیں صوریس سنے ہول گرس کے اسباب ہیں سے گانے بجانے کا سامان اورمغنیات وگلوکا دائیں بھی ہیں۔

مامان الراماً) احمد بن منه المحدين مينع اورجارت حضرت ابوامامه رضى النّدعنه سے اوروہ رسولِ اکرم سلی النّعلیہ ولم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے فرمایا :

للعالمسين . وأمرنى أن أصحق المؤامسير

والمعازف والخسور والأوشالالتحب

تعبد في الجاهلية)).

التُدَّ فِل شَانَ نِهِ بِمِعِهِ دوبهان کے بیے رحمت برات بناکر بھیجا ہے اور مجھے حکم دیا ہے کہیں باسسرادں اور گائے بجانے کے سامان اور شراب اور ان بتول کوختم کردول جو زمانہ جاہیت میں پوجے جاتے تھے۔

\* اورامام بخاری ،احمدوابن ماجه وغیره روایت كرية بين كرسول اكرم صلى الته عليه ولم في ارشا دفرمايا :

میری امست میں اسی قومیں مجی بول گرجوز نااور پیٹم اور

شراب اور گلنے بجانے کے سامان کوحل ل مجعیں گے۔

«ليكوننَّ فى أُمتى أقوام يستعلون الحر

والعربيروالخمروالمعازف».

اورائل کےعلاوہ اور دوسری بہت سی وہ اما دیرے جن سے گاسنے بجائے کے آلات سے اپنے پاس رکھنے ۔ان کے بجاسنے ،اوران کے سننے کی حرمت ٹابت ہوتی ہے ۔

# ال چيزول كوحرام قرار دينے كى حكمست ظاہريہ كه:

جُوخس ہے ہودہ گانوں کی مجانس، اور عیش وعشرت سے مراکز ،اور کھیل کو دکی جگہول ،اورا بیسے مقامات پر جائے گا جہال گلنے بجائے کا سازوسامان ہووہ وہال جاکر کیا جائل کرے گا ؟ ده وبإل اسی فامنهٔ عورمی جنهول نے زنا وحرام کاری کوافتیار کررکھا ہیے ان کالچربے ہودہ فحش ناچے دیکھے گا۔ وہاں إدھراُدھرشراب سے جام کا دور دورہ ہوگا۔

وبإل مدروش ونشه مين مست لوگول كے منه سے چنخ ويكار و بداخلاقى كى باتيں سنے گا۔

وبإل گندسيغش اور شرم وحيا است عارى اورب شرى ووقا حت سي مجر بور كلمات سنے كا ـ

و بال نهایت قبیح منظر،اور آزادی به ندمردون عورتول کاگنده اختلاط دسیل جول دیکھے گاجهال بے راه روی و ان تقدیم سریان گرده ایک مید در میرون شده و بر میرون تا در بدیگر

بے حیائی اور تفق وسرود کابازار گرم ہوگا اور عزبت وشرف کادان تار تارہور با ہوگا۔

خلاصنہ یہ ہے کہ وہ آزادی وا باحیت وسے راہ روی کواس کے نہا بیت گندسے نباس اور برسے ظہروروسپ میں یائے گا۔

بقول ہمارے استاذ ماریے سے ہمرن کی سازش اور مصوبہ ہے وہ جن قومول پرغبہ ماصل کرتے ہیں انہیں فمش گندے گانوں ، نہایت فیش مناظر، فوامول ، شراب وکباب اور عور تول کے سیلاب ہیں فرق کر دیتے ہیں ناکہ نہ انہیں اپنی ذمہ داری وفرائفس کا اسماس ہوا ور نہی اپھے کا کے قابل رہیں نہی مبطائی ونیکی کی طرف وعوت کی ہوئی گراس یہ بات سب کومعلوم ہے کہ گذشتہ مدیوں ہیں مسلمان عزت ومجد کی بلندی اور طاقت وقوت کی ہوئی گراس لیے بہنچے اور مشرق ومغرب کے اکثر ممالک کے مالک وحاکم صرف اس لیے بنے کہ انہوں نے ان سے ہود گی و بے جانی کی چیزول کو اپنے سے دور بھینیک دیا تھا جنہیں اسلامی شریعت نے ترام قرار دیا ہے۔ وہ اس منصب پر اس لیے بہنچے کہ انہوں نے وہ اگی خوانون و شریعیت بھا ،اس پرعمل کیا اور اس کی تملیق وی ، اور وہ اس کی میں مجبت ان اس مقام پر اس لیے فائز ہوئے کہ انہوں نے وہ مقیقت بہنے کہ لؤری امار میں مورد دور اور اور فولوگل براس لیے فائز ہوئے کہ انہوں اور فرائفس کو موس سے ای وہ میں مجبت ان کے پہلول کی میں زندگ سے کرتے تھا اور وہ وہ اس کے انہوں کی سے اس کے بہنچے کہ لوری قوم نے اسلام کی ذر دار اور اور فرائفس کو موس کرلیا تھا، اور حقیقت یہ ہے کہ اس است کے اخر کے لوگول کی اصلاح بھی اس سے ہوئی جس سے ان کے پہلول کی اصلاح بھی تھی ۔

مرلیا تھا، اور حقیقت یہ ہے کہ اس است کے اخر کے لوگول کی اصلاح بھی اس سے ہوئی جس سے ان کے پہلول کی اصلاح بھی تھی ۔
اسلاح ہوئی تھی ۔

ال لیے اسے مربیان کرام! اگرآب لوگ اپنی قوم اوڈسلمانول سے لیے مدد ونصرت اور اسپنے ملک سے لیے علم وترقی چام وترقی چام وترقی چام اورکوئی داسته نہیں ہے کہ آپ اسٹے بچول میں تقیقت بہدی خوائی نظام کی بیروی اوڈسئولیت سے احساس اور اللہ سے داستے میں شہادت کی مجبت پدا کیجیے تاکہ آپ اپنی قوم وامت سے لیے عظمت وعزت ، بھارا وروقار دوبارہ وابس لوماسکیں ،اور یہ اللہ سے لیے کچھیمشکل نہیں ہے۔

۳- سینمانتصیشراور ثبلی ویژن کا دیکیهنا

تحاب تربیۃ الاولادگر شم نانی میں "اضلاقی تربیت کی ذمدداری" کی فصل میں ہم یہ بیان کریے ہیں کہ اطلاعات و نشر بات کے جدید دسائل مثلاً ریڈ ہو ، شیلی ویڑن، مییپ ریکارڈرا در سینا وغیرہ اس زمانے سے وہ ترقی یا فتہ آلات بعدیدہ بیں جہاں تک انسانی عقل کی رسائی ہوئی ہے۔ بلکہ یہ بیسویں صدی کی مادی ترقی کی سب سے بڑی پیدا دار ہیں ، یہ بیزی در حقیقت دو دھاری ہتھیار ہیں جواچھائی وخیرا وربرائی وشر دونوں سے بیے استعال کے جاسکتے ہیں ۔

ہم پہلے ذکرکر کے بیں کہ الن ایجادات کو اگر خیر و بھلائی اور علم کی نشروا شاعت ، اورا ملامی عقیدہ کی پختگی ، اور اچھے افعال قبائزین کرنے ، اور موجودہ معاشر ہے کواپنے اکا برین و ناریخ کے ساتھ مربوط کرنے اور امست کی ان چیزوں کی طرف رہنمائی کے لیے استمال کیا جائے ہو اس کے دین و دنیا کی کامیابی کا ذریعیہ ہول تو پھراس ہیں کوئی بھی دوآ دمی اختلاف نہیں کریں گے کہ ان کا رکھنا ان کا استعال کریا اور دیکھنا جا کرنے ہے ، میکن اگر ان چیزوں کوفسا دوان کوئی ہے دائے کرنے ، اور آزادی و ۔ بداخلاقی و بداوان کے میں اور کی ہوئے ہوں تو پہلانے کے بداخلاقی و بداوان کے میں اور کر است کی طرف چہلانے کے بداخلاقی و بداور و کے میں اور موجودہ معاشر ہے کو اسلامی واستہ سے بجائے کی اور دراستے کی طرف چہلانے ہے استمال کیا جائے تو بھرک بھی علی و ہوش کے ملاک ایسے منصف شخص کو جوالٹ اور قیامت پریفین رکھتا ہوان کے ہمال سے مراح میں دراس کے درکھنے کے گناہ ہونے ، اور سننے کو باعث مؤاخذہ ہونے ہیں ذرا بھی شک نہوگار

بہم یہ مکھ تھے ہیں کہ اگر ہم میں یونیزن کے ان پروگراموں کا جائزہ لیں جو ہمارسے یہاں عام طورسے دکھائے جاتے ہم تو ہمیں معلوم ہوگا کہ اک کے اکثر پروگرام عزت وشرافرت کا جنازہ لکا لینے والے، اور بیے ہودگی و آوارگی وزنا کاری کی طوف وعوت دینے والے، اور ابا حیت و بیے راہ روی اور معاشرتی خوابیوں کی طوف و حکیلنے والے ہیں، اور ٹیلیونزن پر ایسے پروگرام ہبت ہی کم دکھائے جاتے ہیں جن کامقصد علم ہو، اور جوا چھائی و خیرکی طرف متوجہ کرسنے والے ہوں، اور قوم کودین و دنیا کے لھالا سے فائدہ پہنچانے والے ہول ۔

تما بحث سے بعد ہم نے نیتیج نسکالا اور سکم بتلایا تھاکہ ٹیلیونٹرن کا رکھنا ،اس کے موجودہ پروگراموں کا دیمینا قطعاً حرام دناجائز اورسب سے بڑاگناہ ہے۔

میملیونزل کے ساتھ حرمت وگناہ ہونے ہیں سینماگھرول تہمیہ طرول اور رات کے فحسش پروگرامول اور سیے جائی فیق وفجور کی مگہول میں جانا بھی شامل ہے ب کولیلیر درج ذیل ہیں: ا-اسلامی شریعیت کے مقاصد ہیں سے عزت وا بروا ورنسب کی حفاظت بھی ہے اوراس اعتبار سے کوال فلموں

له علماء سے پہال احادیث سے مطابق تصویری بنا نا ان کا دیکھنا ناجا نزاورگنا ہے۔

نه تماب تربية الاولاد كتسم الى ك" العلاقى تربيت كى ذمر دارى كى فصل ين بم يليويزن كى حرمت بردلالت (لقيد ماشيه في آئده بر لادط فراش)

دُرامول اور کھیل کود کے مراکز میں جو چیزی عام طورسے دکھائی بیان بیں ان کامقصد عزیت وشرف اور کرامت کاختم کرنااو آبروا ورنسب کی دجمیال بھیے نا ہوتا ہے اس لیے وہال جانا، ان جگہول کاقصد کرنا اور وہال جو کچے دکھایا جاتا ہے اس کا دکھینا یہ سب ناجائز و ترام اور گناہ ہے ، اور اللہ تعالی اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ ولم کی نا راضگی کا ذرای ہے خضیب کو دعوت دینے والا ہے۔

۲-۱هٔ) مالک، ابن ماجہ و دارقطنی تضرت ابوسعید ضدری رضی النّدی نے سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اکرم مہلی النّد علیہ وسلم نے ارشاد فرایا: نه ضروفقصان اتھاؤنہ نقصان بہنجاؤ، اور یونکہ موجودہ دور کی فلمیں، اور دات کے ڈراھے و پروگرام ایسی چیز ہیں پیشین کرتے ہیں جوسے راہ روی اضلاق بانتگی اور آزادی کا سبب بنتی ہیں، اور بیمعا شرو میں مبنی الاکی اور شہوانی خیالات کے ابھار نے و محبول کا موجب ہیں، اور زنا و ترام کاری و بسے بودگی طرف سے جاتی ہیں، اس سے مسلمانوں کے لیے سلمانوں کے لیے ان مجمول کا قصد کرنا اور تو کی و بال بیش کیا جاتا ہے اس کا مشاہرہ کرنا قطع کو ام سے ، تاکہ افراد و معاشرے کے انواق محفوظ رہ کیس اور فساد و بسے راہ روی و آزادی کی نیخ کئی ہو، اور رسول اکرم میں التّد علیہ و کے اس فرانِ مبارک بڑمل موکہ دولا صندرولا صندان » نظر رہنج اور نقصان اٹھاؤ۔

۳۰ یہ ایک ناہرسی بات ہے کہ سینما وک ہمیں طرف اور تفریخ کے ان مراکز میں ہو کوچھی دکھایا جا آہے اس کے ساتھ گانے بجانے کے سکے آلات اور فن قسم کے بعے ہودہ گانے اور نیم عمرال فن رفس و داسس ضرور ہو اسبے، اور سیج نکہ یہ نام چیز کے حرام میں دھیساکہ اس سے پہلے بیال کیا جا چکا ہے) اس لیے ان مکہول کی طرف جانا، اور و ہاں ہو حرام و ناجا ئز کھیل کو دیم و آہے اس کو دیکھنا یہ ناجا ئز تیفریخ میں واضل سے ، بلکہ یہ سب سے بڑاگنا ہ اور قبلے تا حرام و ناجا ئز سے۔

ٹیلیویژن اور سنیما وتھیٹر پر کام گفتگو کرتے ہوئے میں یہ چاہتا ہول کر ہراس مرنی کے سامنے مندرجہ ذیل حقیقت کھول کر بیان کر دول ہوالٹد تعالی واس سے رسول ہرایان رکھتا ہوکہ :

بهود کے منصوبول میں بینصوبہ وسائے شکی دائل ہے کوفیر پیمودی انسانی معاشرول اور قومول میں اخلاق کی دھجال کمعیروی جائیں ، چانچہان سے پروٹوکول میں مکھاہیے کہ :

"بهیں بیکوشش کرنا چاہیے کہ ہم ہر مگرا فلاق کی جوئی کھو کھی کردیں ، تاکہ ہم ہم بولت ان پرغلبہ ماسل کرسکیں فرائڈ ہم ہیں سے ہے اور وہ دل دہا میسے کھلے عام منبی تعلقات سے نمو نے پیش کرتار ہے گا تاکہ نوجوانول کی نظرین کوئی تبیز مقد ک باقی ذر ہے ، اور ان کامقصہ اِصلی ہی منبی جذبات اور خوا ہنات کا پوراکرنا بن جائے ، اور جب وہ اس کوا پنامقصہ و بنائیں گے تومجران کی اخلاقی حالت ختم اور ہم نہیں ہوجائے گی:

ن کی نظرول میں افعلاق کی جرویں کھو کھلی کرنے سے وسائل میں سے ایک وسیلہ یہ جی ہے کہ نشہ واشاعت رید یو و تبلیویژن، اورسینا و تعیش اور بویسیه سین شریا بی پروگرامول اور سراس خائن اسینت اور کراییه سیصحافی سے کام لیسا جلئے جوان کے منصوبہ میں ان کا ہاتھ مٹائے بہودی اپنی مرکاری وعیاری سے اس منصوب میں کامیاب ہوگئے کہ قومول کو ثقافت بھیل کود ،اور فنون سے نام پر سبے حیائی و سبے راہ روی اور اخلاق باختگی *کے مراکزے* ذریبے ہے۔ سے تباہ وہرباد

كردى، لا عظه فرمائيك يولك تيرهوي پروتوكول مين كيا الكھتے جين :

یے غیر پیروری قومول اورعوام کو ہما رہے خلا ہے کئی کا ہ اختیا *رکرنے سے روسکنے سے بیے بیر ہزو*ری ہے کہ ہم ان کو مخلف تسم سے کھیل کودا وراہو اوجب وغیرہ میں مصروف کردیں، اوربہت طبیری ہم اخبارات میں لوگول کو مختلف شم کے پروگرامول اورمنصوبول میں مقابلہ کی وعوت دیں گئے جن میں ریاضت ودیگیر مخلف تسم سے فنون شامل بہول سکے. سیر کا پہ جدیدسم کا سامان عوام کے ذہن کوئیتنی صورسیہ ان مسائل سے غافل کر دے گاجن مکیں ہما اِان سے اختلاف ہے ، اور مجر حب آمستہ استہ عوام اسپنے طور برغور وفکر کی نعمت سے محروم ہوجائی گے تو بھر سب سے سب ہمار سے ساتھ صرف ای وجه سیدایک آواز بهول گیے که معاشر سیمی**ن ص**رف مهم یی وه منفردا فراد مهول گیمیے جوننگ سوچ بچار کی انہیں هولنے سے اہل ہوں گے . اور یہ نئے خطوط ہم صرف اپنے ہی مخرکردہ وسائل سے دریعے پیش کریں گے ، اور ایسے افراد کے دریعے پی*ش کریں گئے جن سے ہما اِ حلیف وساتھی ہونے کاسی کووہم و*گمان بھی زمبرگا،آزادی بیسندمثالی لوگول کا دوراس وقت ختم سپوجائے گا دیب ہماری حکومت کوت لیم کرلیا بہائے گا، اور یہ لوگ وقت پڑنے نے بہارے لیے نہایت قابلِ قدرخد مات انجام

مر فی محترم! کیاآب <u>نے محسس کرلیا</u>کہ میہودا<u>یت بر</u>وٹو کول میں کیا کیا منصوب بنائے بیٹیس ہیں؟ کیایرلوگ لوگوں کی عقلول کومسخ کرنے اوراضلاق کوربگا مینے سے دن وراست درسیے نہیں ہیں تاکہ وہ اس سے ذریعیہ مصداني منوقع صكومت قائم كرسكين سب كاان كوانتظاميه

كياان كے منصوبول ميں سے ينهيں ہے كەلوگ كھيل كود اورنس وسهوات اورعياشي ميں مست موكر عقاب ليم اوغور وفكرا ورمفيدكا رنامول اوروطن كي ليعانىلاص سيعكام كرسن سيع عارى بهوجائي ؟

مرنی محترم! کیاآب یه جاسنتے میں کہ جونو جوان مردوعور میں زنا کاری الحاد ، بسے حیاثی وازادی ، شہوات ، گندی فلمول، اور ات كوبريا بوسنے والى گندى محفلول اور پروگراموں سے پیچھ برسے بوسئے بیں وہ چاس سے مجھیں یا تنمجھیں درحقیقت وه يېرود مين خورن کوملی جامر بېنارسې يې ؟

مرنی محترم إ جب آب يه مجھ گئے ہيں تو پھر آپ پر به ذمه داری عائد بوتی ہے کہ آپ اپنے بچول کوان و مائی مقامات اور فتنے کی جگہول سے دور رکھیں چاہے وہ مینا ہو یا تھیٹر ، یا دوسے سیل کودسکے مراکز ،ال لیے کہ اپنی اس موتودہ مکل میں یہ سب سے سب عقیدہ واضلاق کو بگاریسنے واسے ہیں، بکہ جسیاآ پ نے ابھی بڑھایہ ان سازشوں و منصوبوں کا جزبی ہو بیجود سنے سلمان افراد اور سلمان خاندانوں اور سلمان معاشر سے کوخراب کرنے سے لیے تیار کے ہیں، اس لیے اس کوخوب سمجہ لینا جا ہیں سمجہ اروں سے لیے عبرت کا کافی ووافی سامان ہے۔
لیے اس کوخوب سمجہ لینا جا ہے ہیں مجہ اروں سے لیے عبرت کا کافی ووافی سامان ہے۔
اگر کوئی یہ ہے کہ اگر سنما یا تھیٹر وغیرہ میں ایسے پروگرام پشیس کیے جائیں جوقوم سے لیے دینی اضلاقی اور تاریخی کا ظ سے مفید ونافع ہوں تو بھر وہاں جانے میں کیا قباحت ہے ؟

# یه اعتراض مندر حبزیل امورکی وجهسے مردود و ناقابل قبول بسے ،

ا۔ ان پروگرامول میں مردوزن کا ہا ہمی اختلاط ہو آہے جواسلام نے حرام قرار دیا ہے۔ ۲۔ ان پروگرامول میں تاریخی فلمول یا تاریخی ڈراموں میں فتندائگیز عرباں عورتیں سامنے آتی ہیں، یا ان ہیں زمانہ جاہمیت سے ہے ہودہ ڈانس اور فحش گانوں کے نمونے ہیٹیں سیے جاتے ہیں۔ اور اسلام نے ہرائی چیز کی طرف دیکھنے کو حرام قرار دیا ہے جوجنبی جذبات کوا بھارسے اور فتنہ سامانی پریاکرسے۔

۳. سینما و تحصیر ول می مام طور سے ایسے مناظر ہی پیش کے جائے ہیں جو گندے ، بے ہودہ فحش اوراخلاق ہائنہ ہوتے ہیں، اسی لیے یہ مراکز بید راہ روی کی علامت ، اور فسا دکاعنوان بن گئے ہیں ، اور سلمان کے لیے یہ قطعاً نا جائز بیدے کہ وہ مث تبہ جگہول کا قصد کر سے اور تہمت کی جگہ جلئے ، اس لیے کہ صفور علیہ انصلاۃ واسلم فرائے ہیں جو تحص مشتبہ جیزول میں پر گھیا وہ حرام میں پر گھیا ۔

نه کید مراکز انسان کوانی طرف باربار آنے پرمجبور کر دیتے ہیں ، شروع میں پہلی مرتبہ وہاں جاستے ہوئے انسان میں اسلامی حیار سامنے آجاتی ہوت و درحقیقت وہی ہے جو پینلے صدمہ سے وقت کیاجائے بھر دوسری اور تسیری مرتبہ جانے میں نہ کوئی رکا ورمعی ہوتی ہے اور نہ مانع اور مجر تدریجا شرم وحیا ہے تم ہوجاتی ہے ، اور مجرعام طورسے پر شذوذوانحراف اور برمی نرابی تک بہنچا دیتا ہے ۔

اروبرن رب سبب بن الراکوئی قابلِ اعتماد ای دینی جاعت موجود به و بوجه کچه مراکز اور سنیما و که کوستقل علمی ومعاشرتی فلمول اور تاریخی و منا فرامول کے بلیم خصوص کر دسے اور و ہال کسی قسم کی برائی خرائی، فتنه سامانی، اور حرام وممنوع چیز نه به و تو پیچرسلمان نوجوانول کے بلیم فائدہ و استفادہ کی خاطر ایسے اہم قبیتی موضوعات برشکل بروگر امول سے فائدہ اٹھا اور ست به وجائے گا۔ میکن ال کے علاوہ کسی صورت میں ان جگہول برجا با بہت بڑاگناہ اور اسلام کی نظریس سخت شرام ہے۔

کوئی شخص یہ اعتراض کر سکتا ہے کہ نفت مخشس امور اور مفید بروگر امول مشلاً قرآن کریم کی تلاوت ، خبری اور علم واصلاح کے جہا ہے جب ایک میں ایک کوئی شخص یہ اعتراض کر سکتا ہے کہ نفت مجان اور اسلام کی نظری است کے جب اور کا میں اور کا میں اور کا میں اور کی خاصل کے بین دور کا در کیون کر کیا ان جیزوں کا در کیون امنوع ہے بین دلف کا بی رائے ہے۔

حلدثاني

سے تعلق پروگرامول سے سیے ٹیلیومیڑان استعال کرنے میں کیا حرج ہے ، خصوصاً جبکہ اس میں دومرسے گندے وفیش مناظر نے دیکھے جائیں ؟

سین حقیقت یہ ہے کہ اس دعوی کا حقیقت اور واقع سے کھے می تعلق نہیں ہے، اس لیے کہ یہ بالکل مشاہری بات ہے کہ شخص می شینیویزن رکھتا ہے وہ جب کک الف سے لے کریا، تک لات سے سارسے پروگرام نا دیکھے ہے اس وقت کا کہ بنی گرا، اس لیے کہ شیطان ۔ اللہ اس کورسوا کر ہے۔ انسان کی گھات میں بیٹھا رہتا ہے ، اس سے دل میں یہ خیال پیاکرتا اور اس کورسی معاتا ہے۔ کہ اس پروگرام بال گانے یا اس خبر سے بعداب مفید پروگرام آنے والا ہے ، اور ایوں کرتے ان پروگرام وقت نیم ہوجاتا ہے ۔

اوراگریفرض می کرلیاجائے کروہ خص اسے او پر پواکنٹرول رکھتاہے ، اوراک میں زبردست قوت ارادی ہے ، اور اس توی خوش می کرلیاجائے کروہ خص اسے ان پروگرامول میں سے مفید ونفی خش پروگرامول کے منتخب کرنے کی قوت ہم پہنچائے گی ، لین کیا اس بات کی کوئی خیانت اور گازی ہے کہ حیب وہ گھریں موجود نہ ہوگاتواں وقت بھی اس سے بوی نہے اسس پابندی کو لموظ فاطر کھیں گے ؟ اس کافینی جواب فی بی بروگا بھرسوال بیجی پیدا ہوتا ہے کہی پروگرام کے خراب ہونے کافیعلہ کس طرح ہوگا نظام رکھیں گئے اس کامطلب یہ ہواکہ اس می واجھے پروگراموں کس طرح ہوگا نظام رسیحال کے دیجھنے سے بعدی فیصلہ کیا جاسے گئے ہیں کامطلب یہ ہواکہ اس می وگرام کو دیکھ لیا ،
سے انتخاب سے لیے اس کی ہیٹیوں گھروالوں اور اس کے خاندان سے افراد نے اس کے سامنے اس فیش پروگرام کو دیکھ لیا ،
لیکن کیا آس کی گازشی اور کوئی فیان ہر کار بابند ہیں گئے ؟ اس کالازی ہواب فی ہیں ہوگا۔
یہ لوگ اس وقت میں اصول ہر کار بابند ہیں گئے ؟ اس کالازی ہواب فی ہیں ہوگا۔

میر حبب ال پروگرام پرگندسے اور خواب ہوسنے کا تکم اس سے دیکھنے سے بعد لگایا جاسئے گاتواں کامطلب یہ ہوا کہ اس خاندان نے یہ گندہ وفن پروگرام بلادوک ٹوک دیکھ لیا ، اور شیطان نے منکر وخرابی سے اچھا بناکر پیشس کرسنے اور باطل کو اداستہ کرسے پورا پروگرام دکھا نے سے لیے اینا کام مکل کرلیا ہے۔

اور ببااوقات ایسا ہوتا ہے کہ جب کوئی عُیرت مندباب ان پروگرامول ہیں ایسے مناظرد کیمتا ہے ہوا دہ و میا،

کے خلاف ہوتے ہیں، اور بداہ روی واخلاق باختگی پر مبنی ہوتے ہیں، اوران کی وجہ سے وہ ٹیلیویژن بندکرنا چا ہتا ہے اسے مبعی اس کی بیوی اور کھی بچے یا کوئی دو سراعزیز اس سے روک دیتا ہے جب کا نقیجہ یہ ہوتا ہے کہ خاندان سے افراد میں آپس میں رسکھی اورافتلاف بدا ہوجاتا ہے، اور عمراس لطائی جھکور سے سے نفسیاتی ومعاشرتی جو اثرات پڑستے ہیں وہ ہم شمار نہیں کرسکتے، اور اس کے جو نہایت خطرناک نتائج نکھتے ہیں وہ جبی نا قابل بیان ہیں و کھے افراد میں طلاق واقع ہوجاتی ہوجاتی ہے، اور کتھتے ہی گھرانوں میں طلاق واقع ہوجاتی ہے، اور کتھتے ہی گھرول میں ان لوائی جگڑول کی وجہ سے بچرل میں طرح طرح کی خوابیاں اور خاندان سے افراد میں عجیب امراض پیا ہوجاتے ہیں۔

لبذاہم نے جو کچہ ذکر کیا ہے اسے یہ بات کھل کرسا سے آگئ کی میں ہوٹرن کے پروگراموں میں سے مفیدونا فع کے انتخاب کا قصد والاوہ کرنا تقریباً ناممکن ساہے، بلک حقیقت میں اس کا تحقق ہونا ناممکن ہے، اور اپنے دین وعزت کی مقات کرنامسلمان پرفرض ہے، ای طرح اپنے فاندان کی تربیت بھی فرض ہے، اور یہ فرض جب ہی پورا ہوسکا ہے کہ گھرونا ادان کی فضا، سے خطرہ کو دور رکھا جائے۔ اور آپ نحود ہی تبلائے کہ عزرت و آبرو اور اخلاق وشرف سے بیے میں پریاری موجودہ پروگراموں سے بڑھ کر اور کھا چیز خطرناک ہوگئی ہے؟

# ایک بات رہ گئی ہے۔ س برمتنبہ کرنا اور آل کی طرف اشارہ کرنا ضوری ہے ؛

اوروہ یہ کہ تعبض والدین اپنے بھول سے لیے ٹیلیویڑن اس لیے خریدتے ہیں ٹاکرانہیں سینما تعییر وغیرہ کمیل کود ویے حیاتی کے مقامات سے روک کیس.

لین حقیقت یہ ہے کہ ان کی یہ اس نہایت بودھی اور ان کا یہ دعوٰی مندرجہ ذیل امورکی و جہسے باطل و فلط ہے:

ایسی برائی کو اس طرح نم نہیں کیا جاسکتا کہ اس کی جگہ کی اور برائی کو جگہ دے دی جائے۔

ایسی برائی کو اس طرح نم نہیں کیا جاسکتا کہ اس کی جگہ کی اور برائی کو جگہ دے دی جائے۔

ایسی بیرمانے سے وجود میں آتی ہے، اور اس کی وجریہ ہے کہ ٹیلیویژن کا فساد روز انہ اور دائمی جاری رہتا ہے جسس کو چھوٹے برشے۔

ایسی اور برے ، مردوعورت سب دیکھتے ہیں بکین اس کے برخلاف کھیل کو دوفیا شی کے مقامات کی برائیاں وقتی اور وسی بھی ہوتی ہیں۔

ایسی جو بے راہ روار کو کول اور براخلاق و نا ایسندیدہ مردول کے برخلاف کی مدودرہتی ہیں۔

ی بیلیویژن رسکھنے کی وجسے بہت سی بوئی بوئی معاشرتی تباہیاں اورایسی اخلاقی خوابیاں پیدا ہوتی ہیں جن کا انجام بہت براہو اسبے حسب کا سبب خاندان سے افراد کا پروگرام دیکھنے کے سید دیر تک جاگنا، اور بڑوسیوں دوستوں مردوں عور توں کا ستقل اجتماع واختلاط ایک ایسا المیہ ہے جس کی وجہ سے بہت سی عزیں لوٹی گئیں، اور خوان خرا ہے ہوئے، اور بہت سی لڑائیوں اور حکروں کی داغ بیل پڑی جس کا صل سبب ٹیلیویژن کی لعنت اور باہمی اخت لاط

مجوجہم نے بیان کیا ہے اس سے بعدان لوگول سے پاکس اور کوئی حبت ودیل ہاتی نہیں رہ جاتی جویہ دعوٰی کرتے ہیں کھر میں ٹیلیویزن کاموجود ہونا بچول کوہ ان سے روکتا اور مفاسد سے بازر کھتا ہے

یه اسب سے علا دہ ہے جوٹیلیویژن کے صحب پرمضرا ثرات پڑتے ہیں، مثلاً نگاہ کا کمزور ہونا، اور دو مسرے نف یاتی نقصانات مثلاً کمی سین وجیل اکمیٹرس کو د کمچھ کراس ہیر دل کا آجانا، اور عقل واف کار کا اس ہیں الجھ کررہ جانا۔ اور تعلیمی نقصان مثلاً بچول کا مدرسه سے کام کا جے سے رہ جاناا وراس میں دل نه لگنا۔ اور فکری نقصانات مثلاً حافظہ کا کمزور ہونا ،اور فہم وسمجھ اورغور و فکر سے ملکہ کاضعیف ہونا۔

اوراقتصادی نقصانات مثلّاا*س سے خرید نے سے سیے سال بر*باد کرنا جبکہ افرادِنماز کواس سے میمی زیادہ صروری اکشیداء کارمِول کیے

م م قمار بازی وجوا

اس كے حرام ہونے كى دسيل الله تبارك وتعالى كادرج ذبل فرمان مبالك بسے:

اسے ایمان والویہ جوشراب اور جوا اور بت اور پانسے یں
یہ سب شیطان کے کندے کام بیں اسوان سے بچھے رہ تواکہ
تم نمات پاؤ سٹ بیطان توہی چا تباہے کہ تم میں تومنی
اور بیر فوالے بریع شراب اور جوسے سے اور تم کوالٹہ
کی یا دا در نما نہ سے روسے سواب میں تم باز آ وکے۔

( يَاكِنُهَا الْإِينُ الْمُنُواَ إِنْهَا الْعَمْرُ وَالْمُيُسِرُ وَ
الْاَنْهَا الْإِينَ الْمُنُواَ إِنْهَا الْعَمْرُ وَالْمُيْسِرُ وَ
الْاَنْهَا اللّهَ يُطِلِهُ وَلَا وَلَا مُرِجْسٌ مِنْ عَمَلِ الشّيطِينِ
فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمُ ثُفْلِهُ وَنَ ﴿ اِنْهَا يُرِينُ الشّيطِنُ النّهُ يَطِنُ الشّيطِنُ النّهُ وَقَعَ اللّهَ الْعَلَا وَقَا وَ الْبَغْضَاءَ عَنْ الْحَمْرِ وَ
الْمُنْسِرِ وَيَصُلُكُمُ الْعَلَا وَقَا وَ الْبَغْضَاءَ عَنْ الْحَمْرِ وَ
الْمُنْسِرِ وَيَصُلُكُمُ عَنْ ذِكْرِ اللّهِ وَعَن الصَّالُوقِ.
الْمُنْسِرِ وَيَصُلُكُمُ عَنْ ذِكْرِ اللّهِ وَعَن الصَّالُوقِ.

# فَهَلَ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ) الله المسترام قراردين كمس يها الماسي الماسي

ه جوانسان کواس بات کاعادی بنادیّا ہے کہ انسان کمائی بیں نصیب واتفاق اور فالی وفارغ امیدول وآرزؤل برر ا متماد و بھروسہ کرسے عملی جدوجہدا و رحقیقی محنت اور کمائی کے لیے پسینہ بہانے اور جائز وسنسروع اسباب افتیار کرنے کی صرورت زیڑے ۔

۔ چھ جوانوش ونرم اورآبادگھرول کو تباہ وہرباد کرسنے اور بھری ہوئی جیبول کوخالی کرسنے اور مالدار خاندانوں کو متحاج فقیر بناسنے اور باعزت نفوس کوڈلیل کرنے کاسامان سہے۔ ہم نے کتنی ہی ایسی نفوس سے بارسے میں ساہرے جوعزت سے بعد ذلیل ہوئیں اور کتنے ہی خاندانوں کے بارسے میں سسنا ہے جودولت سے بعد فقیروغریب بن مجھے۔

جه جواوقهار دونول این کیسلنے والول سے درمیان بغن وعلات تبداکرتا ہے اس کیے کہ وہ ایک دوسرے کامال غلط طریقے کے موافق سے موافق سے درمیان بغن وعلات بیداکرتا ہے اس کامعانعہ کریہے ، وہاں آپ کوٹیلیوٹرن سینما وتعیشروفیوکے بارے میں اس نے جومکم دیا ہے اس سے تعلق کافی سٹ انی بحدث ل جائے گ

سے منم کر پہتے ہیں اور بغیری کے دوسرے سے مال پر قالبن ہوجاتے ہیں۔

پی جوا الند کے ذکر ونماز سے دوک دیا ہے اور اپنے کھیلنے والوں کو بدترین اخلاق اور قبیح عادات واطوار کی جانب و محکیل دیا ہے امام بیقی دواریت کرستے ہیں کررسول النام ملی النام علیہ ولم السے توگول کے باس سے گزر سے جوز دسے کھیل رہے تھے تواتپ نے ارشاد فروایا : غافل دل ہیں جن سے ہاتھ مشغول ہیں اور زبانیں لغویس مصروف ہیں ہیں ہیں ایس کریہ ہیں جو لغود محموم میں ہیں۔

میں جو لغود محموم ہیں .

و بوا و قارابیا برترین گناه سبه جووقت اورمونت کومبنم کرجا تاسید. اور ستی و گمنامی کاعادی بنا تاسید. اورلوگول کوکام کاج اورمحنت سیدروک و تیاسید.

ج جواجو۔۔ بازکوجرم پرجبورکرتا ہے۔ اس لیے کہ جوفرتِ قلاش ونفتیر ہوجاتا ہے وہ یہ جا ہا ہے کے حسب طریقے ہے بھی ہو مال کوجا ل کریانے وا ہ اس کسے لیے چوری کرنا پڑے۔ یا ڈاکہ ڈالناپڑے۔ یارشوت دینا پڑے۔ یاکسی کامال جیننا پڑے۔

جواقلق وبدمینی پیداکرآسیداوربهیت سیدامراض و بمیاریون کاذراییه بنراسید، اوراعصاب کو کمزورکرآ، اور مقدوسه پیداکرآسید اور مقدوسه بیداکرآسید اور عام طور سیدم یا خودکش یا دایوازین یا لاعلاج بیماری کاذرایید بنراسید.

، بقول استاذ قرضا دی سے چوخص الن لوگول سے نقول سبز دستر خوال می عادی بن جائے تواس سے بیھی مستبعد نہیں کہ وہ اس کی وجہ سے اسپنے دین بعزیت وآبرو، اوروطن تک کونیج ڈاسے، تاکہ مال دنبس سے سلسلہ میں اسکی خوام شات پوری ہو کیس۔

## حرام وناجائز قمار وجوے سے اقسام وانواع میں سے:

دی انعامی بوندگاخریدنامجی ہے، آس کیے کہ اس قیم کے انعامی ککٹ قیمت واتفاق پرمبنی ہوتے ہیں، اور پیمی سرام و
ناجائز ہوئے کی اقسام میں سے ایک قیم ہے جسبس میں قطعًا نرمی نہیں برتنا چاہیے اور نداس میں سی کی مات اہل کرناچاہیے
نواہ یہ انعامی کک طبی فلامی ادار سے یا انسانی بہبود سی قطعًا نرمی نہیں برتنا چاہیت کی طرف سے بی کیول نہ ہول! ساتھ ہی
یہ بیمی ذم ن شین رکھنا چاہیے کہ زمانہ جا جیت میں ہو جوا رائج تھا اس کا مقصد بھی سی سے ساتھ معبلائی یاکوئی ا چامقصد ہی ہوا کہ اس میں نفع ماس کرینے والا اپنے بیے کہت نیاکرتا تھا، وہ بھی بہت برطهی مدین سان نعامی ککٹول سے مشابہ تھا ہو
ترجی فلاحی ادار سے یا انسانی بہبود سے تعلق رکھنے والی تنظیمیں جاری کیاکرتی ہیں۔

اسلم اس قامدے کوکہ مقاصد وسائل سے جائز ہونے کا ذریعہ بنتے ہیں 'دلینی اگرمقصدنیک ہوتواس کے حاصل کرسنے کے سیسے جوذراعیہ بھی انعتیار کیا جائے وہ درست ہے ، ان خطرناک اصولول میں شارکرتا ہے جہیں یہودی اپنے مقاصد حاصل کرنے کے لیسے رواج دسیتے ہیں ، اسلام سی انھی غرض وغایت کو حاصل کرنے کے لیے جس چیز کو مبدآ و بنیا د بنا آسیے وہ سیسے شریفیانہ وسائل کا انعتیار کرنا ، چنانچہ کی بھی انسانی فلای کا کے لیے مشلا اللہ کچہ دسینے کو اسسلام ال وقت تک ایم بہبر کرتا میب کک کہ اس تک بہنچا نے والے وسائل واسب ب ما وضحرے و مہذب و شریفا نہ دیموں اس بینی ا نیموں ، لیکن حرام دنا جائز جوئے یاڈاکہ وغیرہ سے ذرایعہ سے مال کردہ مال کو اسلام قطعاً قبول نہیں کرتا ، اور سجلا ایس پیسہ دینے کی کیا قیمت ومنزلت ہوگی جس سے وسائل خیر سے میذب اور جم واحسان ، وحسنِ سلوک سے جذبات سے عاری ہول ؟

اور ایسے خرجی کرنے کی کیا چندیت ہے جو خالص ایمان کے جذبہ اوراسل کی کے شیری منبع سے متا تر نہو؟

اس لیے ہمیں ا ہنے بچول کو انعلاص سے خرجی کرنے اور جائز و حلال طریقے پر بیسیہ صرف کرنے کا عادی بنا ناچلیے تاکہ وہ خود بخو دخیر سے کامول میں مصدلیں اور التدرب العالمین کے دربار میں اجرو تواب سے سخت بنیں۔

اکہ وہ خود بخو دخیر سے کامول میں مصدلیں اور التدرب العالمین سے دربار میں اجرو تواب سے سخت بنیں۔

اکہ وہ خود بخود خود کو دخیر سے میں شرط لگا کرکھ بلنا بھی داخل ہے ، نبواہ یر شرط رگانا فٹبال کے کھیل میں ہویا کہوتر بازی یا شعر بح

ا در اس کی صورت یہ ہے کہ دونول فریقتین میں سے ہرائی دوسرے سے لیے شرط نگائے، یا ایک فرلق دوسر پر کمچہ مال مقرر کر دسے نوا ہ اسے نقصال ہویا فائدہ . تو ریھی ہوا بن جائے گا .اس لیے کہ اس میں ایک فرلق کو فائدہ ہوگا اور دوسرے کونقصان سے اور ایک دوسرے کا ناحق مال کھا جائے گا .

اس شرطهازی سے وه کھیل مشنی ہیں توجنگ تیاری اور جہا دیسے سله میں ہول، مثلاً اونٹول یا گھوڑول کی سیس مگانا. یا تیراندازی یانشانه بازی وغیرہ اس طرح کی وروہ چیزیں ہوجہ پر خنگی سازوسالمان سے تعلق رکھتی میں اس لیے کہ اصحاب نن والم احمدرسولِ اکرم صلی التّدعلیہ وم کا درج ذیل فرمانِ مبارک روابیت کرتے ہیں کہ :

(( لاسبق إلا فخف أوحد أف من المسبق إلا فخف أوحد أف و السبق المسبق المسب

کین اس مقابله میں بھی یہ شرط سبے کہ حوانعام مقرر سحیا جار ہاہے وہ دونول فریقین سے علاوہ کسی اور کی جانب سے ہو یاان میں سے صرف کسی دیک کی جانب سے ہو۔

سین اگر دونول مدمقابل اس طرح ابنی ابنی طرف سے انعام مقرر کریں کدان دونول میں سے جو بھی سبقت سے جائے گا وہ دونول انعام کو مستحق بوگاتو بہ ناجائز اور جوابن جائے گا، اور اس قسم کی گھڑ دوٹر جو شرطید اور جو سے کے لیے لگانی جاتی ہاتی ہے۔ اسے شیطان کے گھوٹو سے سے تعبیر کیا گیا ہے جیسا کہ اس سے قبل ہم بیان کر چکے ہیں.

اس سے برضلاف اگر کھیلنے والول سے علاوہ سی تیسرے کی جانب سے انعام مقرر بہومشلاً حکومت یا دزارت یا مدرسہ والول کے علاوہ سی تیسرے کی جانب سے انعام مقرر بہومشلاً حکومت یا دزارت یا مدرسہ والول کی طرف سے تواہیس صورت میں انعام دینا ولینا دونوں شیرعًا جا تزیں۔اس سے کہ اسی صورت میں قمار وجوانہ ہیں پایا جا تا۔اور اس کامقصد سمیت افغالی کرنا ہوتا ہے۔ یہ بمت افغالی نواہ جنگی تیاری سے سلسلہ کی بہومشلاً تیراندازی وغیرہ،یا جہمانی

وزسش اوراس میں بیتنے سے علق ہومٹلاکشتی یا فعبال وغیروا وراس سے جائز ہونے کی دلیل وہ روایت ہے جے اما کا حمد حضرت عبدالتٰ میں اللہ علیہ وکی دلیل وہ روایت ہے جے اما کا حمد حضرت عبدالتٰ میں اللہ علیہ ولم نے محوروں کی دور میں مقابلہ کرایا اور بیتنے والے کو انعام دیا۔

شربیت اسلامیہ نے بسطرے کمیل کودکی مختف انواع واقسام کواس بیے حرام قرار دیا ہے کہ روحانیت بفس اور انعاق و معاشرے پران کے برے اثرات پڑتے ہیں، اسی طرح اسلام نے ابناء اسلام کی دلجوئی اوران میں اہنے فرائفن و واجبات کے دوازے میں کھول دیے ہیں۔ اسی طرح اسلام کے دیوان کے دروازے میں کھول دیے ہیں۔ الکہ واجبات کے دوازے میں کھول دیے ہیں۔ الکہ وہ چاق وجو بند میں رہیں اور طاقتور ومتعدمی، اور ساتھ ہی ساتھ جہاد فی بیل انتد کے وسائل کی شق بھی ہوجائے۔ وہ چاق وجو بند میں رہیں اور طاقتور ومتعدمی، اور ساتھ ہی ساتھ جہاد فی بیل انتد کے وسائل کی شق بھی ہوجائے۔ مطرت علی کرم اللہ وجہ فرماتے ہیں کہ بس طرح حبم تھک جاتہ ہے اس طرح دل بھی تنگ ہوجائے ہیں اس ساتھ اس طرح دل بھی تنگ ہوجائے ہیں اس ساتھ اس ساتھ کی رہیں نشاط پیا کرنے کے لیے حکمت و دانائی کی دلیس بابتی تلاش کرو۔

نیز ده فراتے میں : وقفہ وقفہ سے دلول کو را حت بہنچاتے ربا کرواں لیے کہ اگر دل پراکزاہ وجبر کیا جائے تودہ مسترین

اندها موجا بأسه

اورانام بخاری ابنی تخاب الادب المفرد بیس روایت کرتے بیس که نبی کریم میں التدعلیہ وہم کے صحابہ کرام فی التہ نہم دل گی میں ایک دوسرے کو خربزہ بھی دے مارا کرتے تھے لیکن جب کام کا وقت آیا تو وہ زبردست آدمی بن جاستے تھے اس لیے ملحان کے لیے اس میں کوئی مضالقہ نہمیں کہ وہ کھیلے کو دسے دل لگی کرسے اور دل نوش کرسے بشرطیکہ اس کو ابنی عادت و مزاج نہنا ہے، اور نہج وسٹ م اپناتمام وقت اس میں صرف نہ کرسے، اور حقیقت و واقعیت کے بجائے کھیل کو دمیں مست نہ دہ ہے ۔ اور کام کاج کے وقت کو عبت اور لغو و باطل میں نہ گزار ہے۔ اور کسی نے کتنی شاندار بات کہی ہے کہ مباح کھیل کو دکو وقت کا آتا حقسہ بی دو جمتنا مصد کھا نے میں

کھیل کود کی وہ اقعام وانواع جنہیں اسلام نے جائز قرار دیا ہے:

الف معاكن دورسنه ين مقابله

جائز کھیل کی اقبام میں سے دوٹر ناہمی ہے ،اورصحابر کرام رضی النہ تنہم آبین دوٹر نے میں مقابلہ کیاکر ستے تھے او نبی کریم سلی النہ علیہ وہم نے ان پرکوئی کمیز ہیں فرمائی ، بلکنو دنبی کریم صلی النہ علیہ وہم اپنی المیم طہرہ حضرت عائشہ رضی النہ عنها کہ ، حصہ است ذیرسعٹ قرن دی کی کتاب العلال والحرام " اص - ۱۱۱) ہے کچہ تعرف کے ستھ دیاگیا ہے۔ ۔ بے سانمہ دوڑسے میں مقابلہ ال کونوش کرسنے اور صحابہ کوتعلیم دسینے سے بیے کیا کرتے تھے۔

الم احمدوابودا فرد حضرت عائث در الندع نهاست روایت کرتے میں که انہوں نے فرمایا: رسول الندسلی الندعلیہ وہم نے میر سے ساتھ دوڑ لگائی تومیں ان سے جیت گئی بھر کھی زمانے سے بعد حب میراحبم فرا بھاری ہوگیا توآپ نے بھر تیرساتھ دوڑ لگائی اور آپ مجھ سے آگے بڑھ گئے توآپ نے ادشاد فرمایا کریہ جیت اس کا بدلہ ہوگئی تعبیٰ پہلے تم جیتی تھیں اور اب میں جیت گیا۔

ب بُشتی

اما ابودا فد روایت کرتے ہیں کہ نمی کریم ملی التہ علیہ ولم نے خرت رکانہ سے شتی ٹری اور آپ ملی التہ علیہ ولم نے انہیں کئی مرتبہ پھاڑدیا ، ایک اور دوایت میں بول آ ناہے کہ نمی کریم ملی التہ علیہ ولم نے ان سے (ہوبہت طاقتور تھے) ختی کو ، انہوں نے کہا کہ اگر آپ جیت گئے تو میں مجری دول گاور نہ آپ دیل ہے نا نہیں کی مرتبہ کھی التہ علیہ ولم نے انہیں کھیاڑدیا آور انہوں نے کہا کہ دوبارہ لایں ، نبی کریم ملی التہ علیہ ولم انہیں بھرزیر کردیا، انہوں نے بھر کہا کہ بھر سے لڑی انہوں ہو کہا کہ دوبارہ لایں ، نبی کریم ملی التہ علیہ ولم انہیں بھرا یا گھا گیا اور علیہ ولم نے انہیں بھیاڑدیا آور کا انہیں تھی ارتباق کہ ایک ہوں گا ؟ انبی کریم ملی التہ علیہ ولم نے ارشاد فرمایا : ہم یہ نہیں کرسکتے کہ بیں دوسری بھاگئی کئی کئی میں کریم ملی التہ علیہ ولم نے ارشاد فرمایا : ہم یہ نہیں کرسکتے کہ بیں دوسری بھاگئی دیں اور تم برتا وال وڈنہ بھی آ مبائے اس لیے تم ابنی بحریاں لے و

ج تیراندازی

جائز کھیلوں کی اقسام ہیں سے ایک قیم نیزہ بازی اور تیراندازی بھی ہے۔ اور اس سے قبل ہم یہ بیان کر بھے ہیں گئی کرم کرم سلی القد علیہ وہم اپنے صحابہ سے ان صلقول میں سے گزرتے تھے ہو تیراندازی کرتے ہوتے تھے تو آپ ان کی ہمت مزانی فرماتے اور ان سے یہ ارشا د فرماتے تھے کہتم سب تیراندازی کرتے رہویں تم سب سے ساتھ ہول. البتہ اس قیم سے کھیل کھیلنے والول کوئبی کریم سلی التہ علیہ وہم نے اس سے شع فرمایا ہے کہ وہ جو پالوں یا پالتوجانور مل کو تیراندازی یا اس کا مشق کے لیے نشانہ بنایش جیسا کہ زمانہ جا بلیت ہیں وہ لوگ الیا کیا کرتے تھے۔

الم بخاری و کم مصرت عبدالنّد بن عمر فنی النّد عنها سنے روایت کرتے ہیں کہ مصرت عبدالنّد بن عمر نے ایک جماعت کو دیکھاکہ وہ تیرا ندازی میں چوبایوں پرنشانہ بازی کر رہے ہیں . توانہ ول نے فرایا : نبی کریم صلی النّدعلیہ وکم پرلعنت بھیجی ہے بھی جاندار چیز کونشانہ بازی کا ذرایہ بنائے۔

اورابودا فود و ترمذی روابرت کرستے ہیں کہ نبی کریم صلی التُدعلیہ وقم نے جانوروں کو اپس میں لڑا نے سے منع کیا ہے۔

ماہ یہ واقد لازمی طورسے جوسے کے حرام ہونے سے قبل کا ہے ،اوراس موقد پڑھی آپ نے دیکے لیا کہ نبی کریم سلی انڈعلیہ وسم نے ان ما صب کہ کریاں

نہیں کو داہیں لوٹا دیں اورخود ذلیں گویا کہ بوسے کہ حرمت کے بیے پہلے ہی سے لیک یہ پہریتی۔

یعنی ایک دوسرے کواس طرح چھوٹر دیا جائے کہ دونول میں سے ایک مرجائے یااس کونقصان پینچے جیا کہ الم عرب مانہ جالبیت میں کیاکرتے تھے۔

ان اما دیث سے ہمیں یہ پتر ملتا ہے کہ دین اسلام نے بیوانوں سے ساتھ سی طرح نرمی سے بیٹ سی آنے کا حکم دیاہے اوران کو منزاد بینے اور ان سے ساتھ براسلوک کرنے سے منع کیا ہے بلکہ ہمیں اسلام کے اس حکم کا بھی علم ہے جواس نے اس مقل بلے سے بارسیس کی ماجم کا بھی علم ہے جواس نے اس مقل بلے سے بارسیس دیا ہے۔ مقل بلے سے بارسیس دیا ہے۔ منازی ا

<u>۵ - سیزه باری</u> مباح کھیلول میں سے نیزه بازی کا کھیل تھی ہے ،اور اس سے لئم یہ تبلا چکے بیں کہ نبی کریم سلی اللہ علیہ وہم نے اہلِ مبیشہ کو اپنی مبادک مبحد میں نیزہ بازی کی اجازیت مرحمت فرمائی تھی ،اورا پی المبیم طہرہ ہے جغریت عائث کو ان کی اس نیزہ بازی ويميعنه كرمجي اجازيت دى تقى ـ

سیسے باب ہوت رہ ہوں۔ یہ نبی کریم رسول اکرم ملی التّہ علیہ وقم کی فراخ دلی سبے کہ آپ سنے اس جیسے کی اپنی مبارک سجد میں اجازت علی فرائی : اکہ وہال دین ودنیا ، اور عبادت وجہا و دونول کو مجع فراوی ، اور بھپریہ کہ یہ صرف کھیل ہی نہیں ہے ملکہ یہ ایک وزرش منت ت ومثن وتيارى تمبى ہے۔

اس سے پہلے ہم ریاضت وورزش سے ارتباط کی مجت میں اس موضوع پرنہایت کافی رفتی ڈال میکے ہیں ،اس لیے اسے الاحفه فرويبي آب كونشفى كابوراسامان وبإل برمل جائے گا۔

اس کی بنیاد وہ روایت ہے جے فرانی سندِ بیسے ساتھ نبی کریم کی التٰدعلیہ و کم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے فرمایا کہ : ہروہ چیز جس میں التٰدکا ذکر خیریہ بروہ کمیل کود اور معول ہے سوائے چار چیز ول کے ، تیراندازی کے بیے دونوں نشانو

فرویات به بررسه پرت برت بست که تربیت کرنا، اورانی بیوی سے دل تکی اور سیزاسیکمنا، کے درمیان دوڑنا، اورا پنے گھوٹرسے کی تربیت کرنا، اورانی بیوی سے دل تکی اور سیزا سیکمنا، اور حضرت عمرونی الله عندسیمنقول ہے کہ ابنی اولاد کو تیزیا اور تیراندازی سکھاؤ اورانہیں اس کا تکم دو کہ وہ گھوڑے کی بیشت پر کود کرسوار مونات میمیس به

جائز ومباح اورنفی بخش و کھیل جنہیں اس الم نے برقرار رکھا ہے ان میں سے دریائی وہری شکار بھی ہیں۔ اس لیے کہ التٰدتبارک وتعالیٰ ارشاد فرایتے ہیں ،

ملال بواتمبارے ليدرياكاشكارا ورورياكا كحاناتمان اورسب مسافرول کے فائدہ کے واسطے اور جنگل کاشکار

﴿ أُحِلَّ لَكُمُ صَيْدُ الْبَحْـيرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لْكُوْوَ لِلسَّيِّنَارَةِ ، وَحُرِّرَمَ عَلَيْكُوْ صَيْدُ الْبَرِّ

سکعایاہے۔

### شكارسي عموى احكامات:

ا۔ شکاری کا شکارسے مقصداس کا کھانا اوراس سے فائدہ اٹھانا ہو۔ اس سے کہ نسانی وابن سان ابنی میمی بی ترمیم سلی اللہ علیہ وسلی مقصد فائدہ کی فالم میرانون نہیں کیا تھا۔

کی فالم میرانون نہیں کیا تھا۔

٧-شكارى قى يا عمر الكبر من الكبر الكبر من الكبر من الكبر الكبر من الكبر ال

مطلب یه مواکه به جانور چیشکا سگنے کی وجه سے مراسیے تیراس میں گھسانہیں ہے ، اور مدبیث سے یہ بات معلوم ہوتی ب كوس حيريد من البدايد من الماري المركات كالركار كالمركار كالمرك المسكم بن كلسنا ورنفو فركر نامعتبر بيد البدايد وانور بن كوب تول بندوق یا اِنفل وغیرہ کی گولی سے مال جائے تووہ جانور صلال ہوگااس لیے کہ گولی میں تیرونیز ہے سے زیادہ ہی سے

یہ۔ حبب شکارکرنے والے الے کو پھینکا جائے یا ترسیت یا فتہ شکاری جانورکوشکا ریرچیوٹرا جائے تواس وقیت التدکا نه كه كم تعيورنا چا بيد. اس كيدكه الله تبارك وتعالى ارشاد فرمات بين:

لا وَاذْكُرُوا اسْمَ اللهِ عَلَيْهِ ». المائدة م اوراس پراستدئ م او .

سكن اگر تير سيجينيكتے يا جانور شكار برجعيوم ستے وقت بہم الله برج صنا بھول جائے تواكنز فقها مسے يہاں اس شكار كا كھا ما جائز ہے اس کے اللہ تعالی نے اس امست کی مصول بچک او نفلطی پرمئوانونرہ کو حیور ویا ہے ۔

ہ۔اگر شکاریانی میں گرجائے اور اس کویانی میں سے مردہ حالت میں نکالاجائے تواس کا کھا یا جائز بہیں ہے اس لیے كرال بخارى وللم نبى كريم كى الله عليه ولم سع روايت كرية بي كر آب في ايشاد فرايا:

(شکار) کوقتل کر دیاہے تواس کو کھالو سگر سیکراس کو پانیس گراہوا یاؤر تونہ کھاؤی اس لیے کتم ہیں علام کہیں ہے کہ اس کویانی نے الاسے یا تمہار سے تیرنے۔

((إذا رميت سهمك فإن وجدته جبتم اينا تيريينيكوتوميرا كريد ديميعوكراس نے قدقت ل فكل إلا أن تجدد قد وقع فی مساء فیانک لا تندری المساء قتیله اُم سىلىك؟».

تحبل کی معروف اقسام میں <u>سے شطرنج کھی</u>لنا تھی ہے، اورصحابہ و تابعین اور فقہا بشطرنج سے معاسلے ہیں دوفرقول يں بٹ گئے ہيں :

ا- ایک فرقداس سے سرام ہوسنے کا قائل سبے اوراس میں حضرت علی بن ابی طالب بحضرت عبداللّٰدین عمراور حضر عبدالله بن عباس منی الله عنهم اور الم) مالک وام البوطنیفه وا ما احمد رحمهم الله شام بند. ۲- دوسری جاعدت اس سے جوازی قائل ہے۔ س میں حضرت ابوسپر مریہ دشی اللہ عندا ورسعیدین المسیب وسعیدین

جبيروابن سيرين اورامام شافعي واللهي .

بوحضارت اس سےمباح وجائز ہونے سے قائل بی وہ یہ کہتے ہیں کہ تما کاسٹیا میں اصل اباحست ہے اوراس کے

له يمصنعنكى التعب ورندائمكرم كيهال الساجانور مرام ب-شه فقها ومنفيه كميبال ايسا جانورمروارشمار بوگا-

حرام ہونے سے سلسلہ میں کوئی نفس وارڈ ہیں ہوئی ہے اور پیشطرنج نردسے دو وجہوں سے الگ ہے : ا نرد کا ساما دارومدارقسمت پر موتا ہے لہٰذا یہ تیرول سے فال لینے سے مشابہ ہے اورشطرنج کا دارو مدارتجربِ غور وفکر اور تدہیر دِنفکیر پر مہو تاہے لہٰذا یہ تیراندازی سے مقابلہ کی طرح ہوگئی ۔

۲۔ شطرنج میں جنگ اور اس کی تابیر کی شق ہوتی ہے ، اور نرد ہیں فضول ہے کارکھیل ہیں جلکی مقصد وفائدہ سے وقت ضائع ہو آہیے۔

جن مضارت نے شعرنج کھیلنے کی اجازت دی ہے انہول نے اس کو بین شعرطوں کے ساتھ مشہ وہ رکھا ہے: ا۔ شطرنج کھیلنے والاکسی نمازکو اس کے وقت ہے مؤخر نہ کرسے۔

۲ شرط بازی نه بوورندیه قما روجوامن جائے گا۔

مرِ . تھیلنے والا اپنی ربان کوفیش گوئی اور گندی باتول سے بجائے ۔

سکن اگران شرطول میں سے کوئی شرط نہ یائی جائے تو بھیراس کا کھیلنا حرام ہوجائے گا۔

مرنی محترم!آب نے ترام کھیل کود سے بھا "ای عنوان سے تعت یہ پر جھ لیا ہوگا کہ اسلام نے کھیل کی ہدت سے آت ا کوترام قرار دیا ہے اس لیے کہ ان کامعا شرے اور فرد سے اخلاق بربہت برااثر پڑتا ہے ،اور ال قیم سے کھیل انسان کی نفسیا وکر دار پر بہت اثرات چپوڑ سے ہیں اس لیے آپ کوچا ہیں کہ آپ یہ کوشش کریں کہ اپینے بچول کو ان سے بچا بئی اور ان سے روکیں تاکہ وہ تباہی میں گرفتار نہوں ، اور آزادی و بے اہ روی کی دلدل میں نہجنسیں ، اور آپ نے بیھی جان لیا کہ اسلام نے اسلامی معاشرے سے افراد سے لیے بامقصد مباح کھیلوں سے درواز سے کھول دیے ہیں، آس لیے کہ انسانی نفوس کی راحت اور نشاط قریتی کو لوٹا نے سے سلسلہ میں ان کا بہت ، اثر ہوتا ہے ، اور اسی طرح اس کا ایجا بی اثر افراد کی فوجی تربیت اور جہا دکی تیاری پر بھی پڑتا ہے ، اس لیے اسے مرفی محترم جہال تک بوسکے اپنے پہلے کی اس تربیت کی جانب آپ پوری توجہ رکھیں ، اور اسے اس قسم کی تیاری وشق کراتے رہیں تاکہ وہ شجا عست وبہا دری میں مثال اور

که زمان جاجیت میں عربوں میں یہ دستو تبھاکہ مین تیر لیتے تھے۔ ایک پر یہ کھا ہو ہا تھاکہ مجھے میرے رب نے مکم دیا ہے ،اورود سرے پر ہا کھا ہو ہاتھاکہ مجھے میرے رب نے مکم دیا ہے ،اور دسرے پر ہا کھا ہو تا تھاکہ مجھے میرے رب نے منع کردیا ہے ،اور تمیسر پر کہتے ہم الکھتے تھے ،پھر حب سفر یا جنگ یا شادی وغیرہ کا ادا دہ کرتے تھے توہت نے جس میں بیت ہم اگر وہ تیرنکل آناحب میں کرنے کا مکھا ہو ہاتھ تواکس کا کو کر بیتے تھے اور اگر وہ تیرنکل آناحب میں کرنے کا مکھا ہو تاتھ تواکس کا کو کر بیتے تھے اور اگر وہ تیرنکل آناحب میں منع کی گیا ہو تا تو اس کا میں سے رک ما یا کرتے تھے، اور اگر بغیر مکھا ہواتیز کلتا تو کیے بعد و گیے سے دوبارہ سہ بارہ تیرنکا لئے رہتے۔

# ۷- انهی تقلید<u>ست بچانا</u>

# ا وراس کی درج زیل و جوبات بین:

💠 اندهی تقلید روحانی ونفسیاتی مشکست اور خود براعتما د و بحروسه نه بوسنه کی دلیل سبد. بلکه انسان اپنی ذات شخصیت

کواپنے پسندیہ بین خصیت بین ختم اور فناکر دیاہے۔ کواپنے پسندیہ بین خصیت بین ختم اور فناکر دیاوی زیدگی اور اس سے مظاہر سے فتنہ بیں مبتلا کر دیتی ہے جو لاز ماغرور وبرائی میں گرفت ارکر دیتا ہے، اس یہے کہ ایسا آدمی اینے لباس کی شان وشوکت اور ظاہر کی چک دمک اور فاخرانه باكس مين مست بوتا ہے۔

اس لیے کہ برسے اخلاق میں انھی تقلیدانسان کویقینی طور سے ڈھیلے بن اور آزادی و بے راہ روی کی زنگی تک میں بیا

ہ ، چاریں سب اسے کہ اندمی تقلید قومول اور جاعتول کو یقینی ہلاکت اور لازمی تباہی تک بہنچا دہتی ہے۔ بلکہ اسی قومی ابنے وجود سے تما کا لازمی اجزارا ور ابنی بقار وعزت سے اسباب کو کھونیٹھتی ہیں ،اس لیے کہ وہ ناشکری و نافرمانی کے رائستے رہاں پرتی میں ۔

سسے پہری ہاں گا تائید فرانسیسی کا تب اندریاموروا "سے اس بیان سے میں ہوتی سیے جوانہوں نے اپنی تماب انسباب ان کمپ رف رنسیا " ہیں مکھا سیے کہ : دومری علی جنگ ہیں فرانس سے سقوط سے اہم اسباب ہیں سے فرانسیبی قوم کا ال وجهست فاسدوب كارموناكمى بيكداس كي أفراديس برائيال عام بوكئي تعين

اس بات نے جنرل ڈیگال کو (جب انہول نے فرانس کا زمام حکومت بنیھالا) اس بان پرمجور کیا کہ وہ ہریس کی پوسیس سے سربراہ کو میآرڈر دمیں کہ: میرسے ملک میں ان بے حیاتی کے اڈوں، درسبے راہ روی سے مراکز کو فورّا

💠 اس بیے کہ اندھی تقلیدان توگول کو جو دوسرول سے طریقیول ، عادات اور لباس واخلاق کواپناتے ہیں اوران کے سیجھے بہے چلے جاتے ہیں بہت سے دینی فرائفن وواجبات اور معاشرتی ذمردار بول سے روک دیتی ہے ، اور اقتصادی تعمیرا ور نقافتی میدان میں آگے برمصنے سے مانع بن براتی ہے۔

💠 اس کیے کہ اندمی تقلید حافظ کے کمزور کرینے ، اوٹر خصیبت سے تیاہ کرینے ، اور اخلاق سے بنگاٹ نے ، اورمرد انگی ختم کرنے

اور مخلف قیم کی بیماریال پیدا کرنے ،ا درعزت وشافت ویاکدامنی جیسے فضائل کی بیخ کنی *کے برطیسے عو*امل اور تباہ کن بیماریوں میں سے بھے ال کے کواسس اندی تقلید کی وجہ سے جذبات بدلگام اور شہوات افکاروب والوم وجاتے ہیں۔ واكثر" الكس كاليل" ابني تحاب" الانسال ذلك المجهول" مين لكهة مين كه جب انسان مين جذبات موجز ن ہوستے ہیں توا کیٹیم کاما دہ خون کے ساتھ مل کر دماغ ٹکٹے ہنچ کراس کو مدہموشش کر دتیا۔ ہے بمچرانسان جیمے سوچ بچار يرقادريهين ربتار

ا ورتبارج بالوشى "این كتاب" التورة الجنسیه " میں لکھتے ہیں كر الله المريم سندمان مان كهاكدامركير كاستقبل خطرے بیں ہے۔ اس لیے کہ اس کے نوحوال بے راہ روی اور مبنی جذبات میں غرق میں. وہ ان ذمہ دار لواسے عہدہ برآنہیں ہوسکتے بوان کے کا ندھوں پر ڈالی گئی ہیں .اور ہر وہ سات جوان جو فوج ہیں بھرتی ہوسنے آتے ہیں ان میں سے چیر جی کے قابل اس لیے نہیں ہوتے کہ وہ جن نبی کھیلول میں مست رسیے ہیں۔ انہول نے ان کی نفسیاتی وجہانی صلاحيت كوتتم كردياسية

اس لیےاگریم یہ دنیمیں کہ انسان نے دوسرول کی مشابہت سے روکاا ورانھی تقلید سے منع کیاہے تواس میں کچھ تعجب نهيبي ببونا ماسيعه

# ال سلسله كی بعض ایم نصوص آب کے سلمنے یک کی جاتی ہیں:

\* امام ترمذی حضرت عبدالله بن عمرو منی الله عنها سے روایت کرتے ہیں که رسول الله صلی الله علیه وسلم نے ارشا دفرمایا :

و فخنص ہم میں ہے نہیں حسس نے دوسرول کے ساتھ مشابهبت انتیباری بهبوداورنصاری <u>ک</u>یماته مشابه<sup>ت</sup>

اختيارمت كرور

\* اور امام احمدوابودا فادحضرت عبدالته بن عمر رضى النه عنها \_ روايت كرية مين كمانه ول نے فرمايا رسول الته مي ا عليه وسلم في ارشاد فرمايا بهكر:

تجو شخص کسی قوم ہے مٹ بست افتیا یکر اسے وہ انہی

((صن تشبه بقوم فهومنهم».

لاليب منامن تشبه بغيرنا لاتشبهوا

باليسهسود ولابالنصائي».

٭ اورا مام بخاری ،ابودا ؤد وترمندی حضرت ابن عباسس رضی النه عنهاسسے روایت کرتے میں کم انہوں نے فروایا : رسولِ

به در مفد بوسماری کتاب متی مشباب (س ۱۹۹۰ ر

اكرم صلى التُدعليه وتم في ارشا وفروايا بي كه:

لانعن الله المخنشين مسنب الرجيال

وامترجلات صالنساء».

فخالفوهم)).

التُدك بعنت بوان مردِد ب پرجِ عورَوں سنے مشابہت اختیار كرست ين اور ان عورتول برجوم دون سعدمشاب بن اختيار

مرتی میں.

\* اورامام بخاری وسلم نے نبی کریم کی الله علیہ وسم سے روایت کیا ہے کہ آپ نے ارشا و فرمایا:

ا ورمیمود ا ورعیسائی (اپی دالمهی کو) رنگے نہیں ہیں (نحشام الإنب اليهودوالنصائى لايصبغون

نہیں نگاتے) لہٰذاتم ان کی مخالفت کرو۔

\* اور الم ترمندی نبی کریم ملی الله علیه ولم سے روابت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشاد فرمایا ا

(( لا مكن أحدك م إمعيةً يقول: أنا مع

الناسب إن أحسن الناس أحسنت وإن أساءو أسأت ، ولكن ولحنوا أنفسكم

إن أحسن النباس أكنب تحسنو، وإن

أساءوا أن تحسنوا إساءتهم).

تم يى كوئى شخص سراكيكى رائے كى بيروى كرسف والان ہے اور نہ کے کہ یں تو ہوگوں کے ساتھ ہوں اگر ہوگ اچھا كرى كي سكة تومي بجى اجعاكرو ل كا اورا كرلوك براكري كي تويس مبى باكروں گا. بك اسف آب كو قابوس كھوا گرلوگ اجيب سلوک کمرس توقم معی اچھاسسلوک کروا وراگر لوگ برائی کریں تو

تم ان كى برائى كا برلد اجعانى سے دو۔

به ا حادیثِ نبویه جن امورسے منع کررہی ہیں وہ سب اس طرف رہائی کرتے ہیں کہ انسان ایسے کردار ، انملاق و عادات اورلباس میں ان امور کی وجہ سے جوہم نے انھی انھی ذکر کیے دوسروں کی انھی تقلید سے بیھے۔

کیکن اسیسی چیزوں میں تقلید واتیاع کرنا جوام<sup>نت</sup> اسلامیہ سے لیظمی طور سے مفید بہول ، اور اس کوما دی وثقافتی لحا فا مصطبندكرين مثلاً علوم طسب ومندسه وفسركسس وغيروسه فائده المهاناا وراميثم اور عديد حبكى وسأل كے اسرار وغيره علوم كرناتو یرسب کے نزدیک بالاتفاق جائز ہے، اس لیے کہ یہ امور اللہ تعالی کے درج ویل فران مبارک کے تحت واللہ ہیں: ا در تیار کرد ان ک لڑائی کے داسطے ہو کچھ جمع کرسکو قوت سے ((وَ أَعِدُّ وُ إِلَكُ مُ مَا اسْتَطَعُتُمُ مِنَ قَوْعٍ)) المثال - 1-

ا وراسی طرح درج ذیل مدیث کا صنهوان بھی اس باست بروظ است کرناہے جسے ترمذی وصکری نے روایت کیا ہے :

حكمت ودانانى كابت حكيم كالمشده بييزب وه استجبال

معی یائے وی اس کاست نیادہ مقدارہے۔

((الحكمة ضبالة كل حكيم فباذا

وجدها فهوأحقبها)).

#### ہماری عورتول میں انھی تقلید کے خاص خاص مظاہب درج ذیل ہیں :

درج فریل بی : هه بهت محورتول کاایسالباکس زیب تن کرسکے کلنا بوعریانی کی طرح ہوجس ہیں تیم کھلا ہوا ہوا ورنمائٹس ہورہی ہو بنبی برتق صادق مصدوق صلی الٹرعلیہ ولم نے تبلایا ہے کہ اسی عورتیں نہ جنت میں داخل ہول گی اور نہ اس کی نوٹبو سزگھیں گی۔

یرین و امام سلم ابنی سخاب "صبحع" میں حضرت ابوہ رمیرہ رضی الندعنہ سے دوایت کرستے ہیں کہ نبی کریم صلی النّہ علیہ وسلم نے ارشا د فرایا :

الاصنفان من أهدل النادل م أدهما: قوم معهم سياط كأذ ناب البقرين ديول به اناس، ونساء كاسيات عاديات ما ئلات مميلات ووسهن كأسنمة البغت ، لا يدنعل الجنة ولا يجدن ديجها. وإن ديجها ليوجد من مسيرة نهسمائة ديام).

دوزخ کی ستی دو تھیں ہیں ہیں ہیں کو میں نے نہیں دیمیا :

ایک تودہ قوم ہے جن کے پاس گائے کی دم کی طرح کے کورسے ہوں گے جس سے وہ لوگول کو ماری گے ، اور اسی عورتیں ہوں گئی ہوں گی ، مائل ہونے وال اور مائل کرسے والی ہوں گی ، مائل ہونے وال اور مائل کرسے والی ہوں گی ، مائل ہونے والی اور مائل کرسے والی ہوں گی ، ان کے سر (کے ہوڑسے ) ایسے ہوں گی ان کے سر (کے جوڑسے ) ایسے ہوں گی والی کی مالانکہ اس کی خوش ہو پائی سو اور نہ اس کی خوش ہو پائی مالانکہ اسس کی خوش ہو پائی سو مال کے فاصلہ سے میں یائی جاتی ہے۔

ہ موت وغیرہ مصیبت کے وقت سیاہ لباس کا عیا ایکون کی مشابہت ہیں بہنا۔

ا الله المرشاديول كے موقعه پرمغنيات يكے كانول كے سينے اور رقاصا وُل كاناچ ديكھنے سے يے جمع ہونا۔

ه عام طالات اور غصص مي غيرالتدكي أم كي قسم كمانا.

چه غیرموری مثلاً دیور ، چهازاد بهایول وغیره کے سامنے بے برده کھیے سرجانا ہمار سے نوجوانوں میں انھی تقلید کے مظاہریں سے سب سے کھلانموندان کا ہجرابی اورعورتوں سے ساتھ مشاہبت اختیار کرنا اور ان کی حرکات سکنات کی نقل ایریں سے سب سے کھلانموندان کا ہجرابی اورعورتوں سے ساتھ مشاہبت اختیار کرنا اور ان کی حرکات سکنات کی نقل آبارنا ہے۔ بلکہ ہمار سے معبن نوجوان تویہ دلیں ہیں کرتے ہیں کہ حب رسول اکرم سلی اللہ علیہ ہم سے ابل برطھائے اور کانوں سے بیجے تک سمجی رکھے ہیں توجوالی علم زیبیوں کی شکل صورت وغیرہ برکھیں اعتراض وکلیرکرے تعیمی ؟

کے ما ڈائٹ ؛ بینی چال پی شکرکرسے نے والیاں ، اور ممیلاست بینی اپنی ہے حیائی وہیجان آنگیزی سے مردوں کے ولوں کو اپنی طرف ما می کرنے والیاں۔ کے بمارسے بہاں کالابیاسس سٹیعوں کا ماتمی بیاسسس ہے۔

ہم اس سم کے لوگول سے یہ کہتے ہیں کہ:

ا بنی گریم ملی النّدعلیہ وہم سے بالول سے طولی رکھنے کی صورت میں یہ نابت نہیں ہے کہ آپ لوگول سے ساسنے ننگے سرنکلتے ہول . بلکہ آپ ملی النّدعلیہ وہم وہ عمامہ باندھ کرنسکلتے شعصے جو تاج نبوت اور اسلام کا شعار ہے ،النّدرم کرسے سے خدار جو سے نہ میں دور ، اس شاعر پرسسنے درج ذیل شعر کہاہے:

وجمعت هولك ب مسول مصابة بعمائم أذهى سن التيجان جوليسيعام باضع بوز بوز تع حوتا بول سے زیادہ شا داری

اسدالله كردان معار المات الميدوم ،آب في المينارد كردان معار كوم جركها ۲۔ ہمیپی ازم آج بے راہ روی کاشعارا در آزادی وہے نگامی کانشان بن گیا۔ہے ،تو پھیر بھلا کیا کوئی بھی عقل مندر پرکہا جے کراسلام اسپنے نوجوانوں سے لیے یہ بسید کرسے گاکہ وہ سے راہ روی اور آزادی بیسندول کی جماعت میں اضافہ کریں اورال كى جماعست برهايش ؟ اورنبى كريم منى الله عليه وسلم فراست مين:

جو خصی قوم کی جا عت کی نمیر کر ما ہے وہ اس میں شار

«من كنترسوا د قسوم فسهومنهم».

۳- سيابيسي پن اور كاندهول تك بال برط هاني مي عور تول كيرساته رسواكن مشابهبت نېيس بهونی به مالانكه الله تعالی توایسے مردول پربعنت بھیجتے ہیں ہوعورتول سے مشابہت اختیار کریں جیاکہ اس مدیث میں مذکور ہے جوال سے قام. مک قبل *گزرهی سید*.

ہ بیپی بن اختیار کرنے والامسلمان اپنے لیے کیس طرح پندکر ہاہے کہ وہ اس بیپی بن میں اس گندے کیڑے کے مشابہ ہوجائے ۔ جسے خنفساء کہا جا ہا۔ اور شکل وصورت میں اس جیسا بن جائے مالانکہ اللہ تعالیٰ مبل شانہ تو يە فىراپىتە ئىن كە:

ال بیدا ۔ مربی محترم آپ یہ بودی گؤشش کریں کہ آپ اسینے بچول سے سامنے ان تمام گندسے مناظرا ورہے حیب ا شکل وصورتول اوزهمچوری عادتول کی برائیول کو کھول کررکھ دیں ،اس سلیے کدان کا ذات کے تم کرنے اور تحقیدت سے لگا ڈسنے، ا *درعزت وشرافت دوقار کے تیم کرنے میں ہبت بڑا ہاتھ اور اٹریسبے ، اور ساتھ ہی آپ پر میمبی لازم ہے کہ جن* کی تربیت آپ کے ذمے ہے آپ ان کویہ باورکرادی کہ لوگوں ہیں انھی تعلید کامر ش ان فیطرناک امرانس میں سے ہے جوعزیت و

ا موس میں تکھا ہے کفننس اور ضنف ، ایک سیا ، رنگ کا جانور ہے جوچیج وی سے چھوٹا ا در بربو دار ہوتا ہے ادر کس کی ججے

عه يه مصد كماب، حتى ليلم الشعاب، (مس - ١٣٥) سعد مأخوذ ب -

تسرافت کوبریا دکرنے اوراضلاق کے بگا ڈسنے اورفضائل سے نیست ونابود کرسنے کے سب سے بڑسے اسباب ہیں ممکن ہے آپ کی اس مخنت سے آپ سے مگر گوستے سیجے راستے پر پلیس ،اورسوچ سمجہ اور عقل وشعورسے کا لیس ،ادر سی قسم کی فتندانگیزی وحشرسامانی ان کورز راستے سے جٹاسسکے اور ندان پراپنا داؤمپلاسسکے۔

#### ٥ برسه ساتھيول سے بيانا

ده امور جن مین کونی بھی دوخصول کا خیلاف نه بوگاا ور دو آ دمیول کی رائے مختلف نه بوگی یا بھی ہے کہ بری صبحبت يج كنفياتى واخلاقى انحراف وبكار كم براس اسباب مي سه بعد، اورخصوصًا اكربي كم مجد، بليد جنعيف العقيده ا *درا* خلاقی لیا کھ سے بیست ہو تو برول کی صحبت اور بدکرداروں کے ساتھ رہینے سے بہت جلدی متأثر ہوجا با ہے اور بہت تتھوٹرے سے وقت میں ان کی بیس عادات اوربری صفات میں رنگ جا تاہے، بلکہ ان سے ساتھ نہایت تیزی اوم ضبوبی سے برختی کے راستے بل بڑتا ہے جس کا تیجہ یہ ہوتا ہے کہ جرم اس کی طبیعت اور انحاف اس کی بختہ عادت بن جاتا ہے ا *در پھر مر*تی ہے بیہ بہت مشکل ہو تا ہے کہ اس کو راہ راست پرلا ئے اور گماری کے گڑے ہے اور بربختی کے جال سے اسے

اس كتاب (تربية الاولاد فی الاسلام)، سلام اور تربيب اولاد کومم اول کي بچول ميں انحاف كے اسباب "امی فصل کے ذیل میں ہم یہ تبلا بیکے ہیں کہ اسلام نے اپنی تربیتی تعلیمات سے ذریعیہ والدین اور مربیول کی اس جانب توجہ مبذول كرائى بيدك وه ايين بيول كى كوى ترانى كري اورخصوصاً جب وه بالغ بوسف سے قريب كى عمراور بوش وسمه كى عمرکومپینینے والے بہول، تاکہ انہیں بیلم رہے کہ ان سے بیچکن کن لوگول سے ساتھ اٹھتے بیٹھتے اورکس قیم سے لوگول سے سیل جول رسمتے ہیں ، اسسی طرح اسلام نے ان کی اس جا نہیں رہنائی کی ہے کہ وہ اپنے بچول سے بیے نیک معالے ساتھیول كانتخاب كري . تاكه وه ان ـــا چھے اخلاق اور شاندار آ داب اور عمده عا دائت تكيميں ـ

اسی طرح اسلام نے ان کو اس جانب بھی متوجہ کیا ہے کہ وہ اپنے بچول کو برسے ساتھیوں ، گندسے و بداخلاق رفقا. سے دور رکھیں تاکہ وہ گرائی سے جال اور انحاف وسے راہ روی سے مجند سے میں نمجنسیں ہم سفے بہت می آیات مبارکہ ، *درا حا د*ریث نبویه سے بیژنابت کیا تھا کہ اچھے رفقار کا انتخاب کرنا چاہیے اور بریے دوستوں سے بچانا چاہیے۔ البذاآب اس مذكوره بالافصل كامطالعه كرييجي وبإل آب كومفصل بحث اورشفى كالوراسامان مل جاستے كاراس طرح

س كتابى دىكىدىجال سے ذریعے تربیت " نامی بحث بھی پڑھ لیجے سب ہیں آپ کو پیچے کی افراقی تربیت اورنغیا تی شخصیت میازی اوربرسے میاتھیول اورگندی صحبت سے بچانے سے میلسلہ میں رہنمااصول ملیں سے بجودالدین وم بو<sup>ل</sup> <u>۔۔۔ یہے ا</u>س تربیتی ذمہ داری پوراکر۔۔نے میں ممدومعا ون ثابت ہول گے۔

#### ١٠ بريساخلاق سيربيانا

اس سے قبل اس کتاب تربیۃ الاولاد فی الاسلام کی "اضلاقی تربیت کی ذمہ داری "اور جمانی تربیت کی ذمرداری "
نامی دونول فصلوں میں ہم یہ تبلا بچکے بیں کہ بچول میں کچھ اسی عام بیماریاں پائی جاتی ہیں جن کامربیول کو بہت نیال رکھن ا
چاہیے ،اور بچول کو الن سے بچانا پیا ہیں۔ اور اب اسے مربی محترم ہم آپ کو وہ یا دولائے دیے اور ان کی طرف توجہ مبذول
کرائے دیتے میں تاکہ آپ تربیت ، رہنمائی اوران کی اصلاح سے سلم میں اپنی وہ ذمرداری پوری کرسکیں جوان کو متنبہ کرنے
اور دیکھ جھال کے سلسلہ میں آپ برعائد ہوتی ہے۔

اخلاقی تربیت کی ذمه داری سے سلامیں ہم درج ذیل امراض کاعلاج بیان کر کے ہیں:

ال*ف رجوٹ بوسلنے کی عاو*ت۔

ب بچری کی عادت ر

ج ۔ گالم گلوچ کی عادت۔

🗻 ۔ آزادی ویسیے راہ روی کی عادت۔

جهانی تربیت کے سلسلہ میں ہم مندرج ذیل جیزوں کاعلاج بیان کر علیے ہیں ،

الف - تمباكونوشى كى عادت ـ

ب ۔ مشت زنی رحلق) کی عادت۔

ہے ۔ منشا*ت و مکرات کی عادت ۔* 

۵ - نه او اغلام بازی کی عادت ـ

علماءِ تربیت واخلاق کے یہاں یہ بات ملے مشدہ ہے کہ مندرجہ بالاعادات بچے کے اخلاقی بنگاڑا وراس سے کر دار کے خراب کریے نے میں خطرناک کردار ا داکرتی ہیں۔

اس لیے اگر مرفی حضارت بچول کی دیکھ بھال نگرانی اور خیر خواہی میں اپناکردارا دانہیں کریں گے تو بچے لامحالہ اسفل سافلین میں گرجائی گے اور تاریک دادیوں میں اسٹے سیدھے ہاتھ پاؤل ارتے رہیں گے .اور بھرائیں صورت میں صلح ومر ہی سے بیے یہ شکل ہوگاکہ ان کو راہِ راست ہر لا سکے ،اور حق واہلِ حق سے ان کا رابطہ پیدا کرسکے ،اور انہمیں ہوایت ونور کا راستہ دکھا سکے ،بلکہ وہ اُن وسکولن کے لیے خطر ناک ثابت ہول گے . اور معاشرے کی نیخ کئی کے لیے الیہ آباہ کن ذراحیہ بن جائیں گے بس کے شرے لوگ بناہ ما مگیں گے . اور ان سے جم م اور بدکر دار لول سے نگ دل ہوجائیں گے۔

اس کیے اسے مرفی محترم! آپ کوچا ہیے کہ آپ اپنی ذمہ داریوں سے متعسلق ان ابھساٹ کو دوبارہ پڑھ لیس تاکہ آپ ان ذمہ داریول کو نورب اچھی طرح سے ذبن نشین کرلیس ہومر بیوں پرانولاقی وحبمانی تربیت سے سلسلہ ہیں عائد ہوتی ہیں تاکہ جب آپ اپنے ذکن بی ان نقصانات و آفات کو محفوظ کرلیں گے ہوتھوٹ، چوری گالم گلوجی آزادی، ہے یا ہ رؤں سگریٹ نوشی ، مشت زنی ، منشیات ، مخدرات اور زنا ولوا طست کی وجہ سے رونما ہوتی ہیں تو پھیرآپ ایسنے بچول کو نفسیانی واخلاقی اور جہانی ہیماریوں سے بچانے کے سلسلہ ہیں اپنے فرلھنہ کو پوراکرسکیس گے۔

لهذا اگرآب نے وقاً فوقاً مُستقل طورسے اس طریقے کو اپنالیا آواک میں کوئی شکٹ ہیں کہ بچہ تما کا ان چیزوں سے پیچے گاجوافلاق کو بگارین جائے گاکہ وہ خود نیجے گاجوافلاق کو بگارین جائے گاکہ وہ خود نیجے کا جوافلاق کو بگارین جائے گاکہ وہ خود نیجے کے ساتھ ساتھ دومہ ول کو بھی اس سے بچائے گا۔

اس کے اسے مرفی محترم آپ یہ بورگ کوشش کیجیے کہ آپ بیچے سے سلسلہ میں اپنی ذمرداری مکل طورسے اداکرین اکہ وہ ہمیشہ نیکس صالح اور پارسا وتنقی لوگول میں شامل رہے ، اوران مؤمن وصالح نمونول میں سے بن جائے جن کی طرف انگلیول سے اشارہ کیا جاتا ہے۔

ے۔حرام <u>سے بچایا</u>

متند کرنے ور ہوسٹ یارکرنے کے سلسلہ میں جن اہم امور کامزیول کو بہت اہتمام کرنا اور خیال رکھنا چاہیے اور متند کرنے اور متند کی سے بچایا جائے ، اور اس سلسلہ میں متند کیا جائے ، علما واصول نے حرام کی تعرف یہ ان برنظر کھنی چا ہیں ہے کہ حرام سے بچایا جائے ، اور اس سلسلہ میں متند کیا جائے ، علما واصول نے حرام کی تعرف یہ کی ہے کہ حرام وہ ہے ہوں کے ترک کرنے کا شرف یہ ہے کہ حرام دیا ہو ۔ اور حواسک کو از حواسک کا از تکا ب کرے اس کو از خرت کی منزلیا و نیاک کسی منزل کا متحق قرار دیا ہو جو ہے کہ کی کو قبل کرنا ، زناکرنا ، شارب بینا ، حوالھیلنا ، یشم کے مال کا کھانا اور کم ناینا تولنا ۔

اس کے جب ہم نبی کریم سلی النّدعلیہ و تا ہم کور بیول کو میکم دیتے ہوئے دیکھتے ہیں کہ وہ اپنے بچول کو تنمروع ہی سے فرائف کی بجا آوری اور منوع چیزول سے بچنے کا عادی بنائیں اور انہیں صلال و ترام کے احکامات سمجھائی تاکریران کی طبیعت اور مزاج بن جائے تو جمیں کی قسم کا کوئی تعجب نہیں ہوتا، ابنِ جریر وابن المنذر نے صفرت ابن عباسی مینی اللّه عنها ہے روایت کر، ہے کہ آپ نے فرمایا:

الشرك ماعست وليني يوكرك واوركنا ببول والتذك نافرانى

( اعملوا بطاعة بنه ، والقوامعاصي لله ،

وصروا أولادكم ب متث ل الأو مسر واجتناب النواهى ، فذلك و ت ية لهم جيزدن سے رسے كاكم دو ، يه ان كريا آدرى ادرمنوع . بيزدن سے رسے كاكم دو ، يه ان كريا آك سے كاكم دو ، يه ان كريا آك سے كاكم

كاذربوسيصد

مربی محترم! آپ کو بیمی جان لینا چاہیے کہ صلال وہ ہے جسے اللہ تعالیٰ نے صلال کیا ہواور حرام وہ ہے جسے اللہ تعالی ہے مربی محترم کیا ہو۔ البندا کوئی محی انسان کی کہ سے جیز کو حرام نہیں کرسکتا ہو اللہ ہے سے اللہ تعالی ہو، اور ذکسی اسی چیز کو صلال کرسکتا ہو اللہ تعالی نے حرام کیا ہو۔ اور چینے کے مربانی سے جسے اللہ تعالی ہے والا شمار ہوگا ، اور انسانول میں سے چیخص ان کے اس عمل پر راضی ہوگا وہ ان کو اللہ کا شرکیے گرائے نے والوں میں شمار ہوگا ، اور دین میں المحاد ہے والا اور اس قرآن کریم کا منکر شمار ہوگا ، اور دین میں المحاد ہے والا اور اس قرآن کریم کا منکر شمار ہوگا جسے اللہ تعالی نے اپنے نبی محمد صلی اللہ میں المحد والا میں ہے ۔

(() مُركَهُمْ شُرَكُوُ ا شَرَعُوا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَاكَمُ يَأْذَنُ بِلِحِ اللهُ ».

نہیں دی سیے۔

النثوری - ۲۱

ری دو سید اور قرآنِ کریم نے ان اہلِ کتا ہے ہورو نصاری کی ندمت کی ہے جنہوں نے ملال وحرام کرنے کا اختیار اپنے پوپ اور راہمبول کے ہاتھ میں دے دیا تھا الند تعالی ارشاد فرماتے ہیں :

الرَاتَّخَذُوْلَ اَخْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِنْ دُوْلِ اللهِ ابْنَ مَرْيَمَ ، وَمَا أُمِرُوْا وَالْمَسِيْجَ إِلَّا لِيَغْبُكُ وَالِلهَا وَاحِدًا ، لاَ اللهَ وَالْمَسِيْجَ إِلَّا لِيَغْبُكُ وَالِلهَا وَاحِدًا ، لاَ اللهَ وَالْمَسِيْجَ إِلَّا لِهُوَ ، سُبْعَانَهُ عَتَا يُشْرِكُونَ )) ، التوبر ١٠٠

اورسے مریم کے بیٹے کو بھی، اور ان کو حکم بیپ بوا تھاکہ بندگی کریں ایک معبود کی سسی کی بندگی نہیں اس کے سوا وہ

معهراليا إبين عامول اور دروليث ول كوندا الشركوهيوا كمر

توكياان كے (تجويزكيے بوٹ) كچەشرك بي بنبوں نے

ان کے بیے ایسادین مقر کردیا ہے حبس کی انتد نے اجازت

پاک ہے ان کے شریک بتلانے سے۔

اوراس سے قبل ہم اما تریزی سے یہ روابت نقل کر سے بین کہ حضرت عدی بن حاتم نبی کریم ملی اللہ علیہ وسلم کی ندمت میں حاضر ہوئے دا وروہ عیسائی تھے ) اور انہوں نے نبی کریم ملی اللہ علیہ وہم سے وہ آیت سنی توانہوں نے خوض کیا: اسے اللہ سے رسول انہول نے ان کی عبادت تونہ میں کی تعمی ؟! آپ نے ارشاد فرایا ؟ کیول نہمیں! انہول نے حال جیزول کو حال کیا، اور ان لوگول نے ان کی چروی کی میں ان کی عبادت کہلا آ ہے۔

ی جدی میں سے ان مشکرین کی تھی ندمت کی ہے جنہول نے اللہ کے تکم سے بغیر بینے میں جیزوں کوحلال گر داناا وربعض کوتراً قرر دیا ، چنانچہ ارشادِ ہاری تعالیٰ ہے : قرر دیا ، چنانچہ ارشادِ ہاری تعالیٰ ہے :

آپ كبه ديجيه وكيموتو، تندسن جواماري تمهار س واسط روزی مجرتم نے تھمرانی اس میں سے کونی حزام اور كونى صول البيكم ويجيدكيا التدف تم كوهكم ديايا التدرير افتراه كرستے ہو۔

الْ قُلُ آرَءَ يُنكُمُ مَّنَّا ٱنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنِّن رِّرْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْ لَهُ حَرَامًا وَّحَلْلًا وقُلْ آلله أَذِنَ لَكُمْ أَهْرِ عَلَى اللَّهِ تُفْتَرُوْنَ ...).

ان تمام تصریحات سے پہ باست کھل کرساسنے آگئی کرصوف التدتعالیٰ ہی کواس باست کا حق ہے کہ وہ ملال یا حرام کوے ا وراک ذات نے اپنی نازل کردہ کتاب میں ہما رہے سیے سب کچھ کھول کر بیان کر دیا ہے:

لا وَقَدُ فَصَّلَ لَكُمُ مِّنَا حَتَّرَهُمُ عَلَيْكُمُ إِلَّا مِنَا اللهِ مَا اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ مِنْ اللهُ مَا اللهُ مِنْ اللهُ مِنْ اللهُ مِنْ اللهُ مِنْ اللهُ مِنْ اللهُ مِنْ اللهُ اللهُ مِنْ اللهُ اللهُ مِنْ اللهُ مِنْ اللهُ مِنْ اللهُ اللهُ مِنْ اللهُ الل

مجورمو ماوُال کے کانے پر

اصُطُرِرْتُمُ إلَيْهِ وا). الانعام - ١١٩

اس سے اسے مربی محترم! اس تفصیل کے بعد حویم وکر کرسیکے ہیں آپ کوچا ہیے کہ آپ حوام چیزوں کی ان اقسا كوتلاش كرير عن كى حرمت كاتكم التُدتعالى كى كتاب يانبى كريم على التُدعلية ولم كى ا حاديث بي آ چيكاسيد، ياكه آب ال لوگو<sup>ل</sup> کومتنبه وخبردار کرنے کا اپنا فریصندا داکر سکیس جن کی تربیت واصلاً حا ورمنمانی کی ذمرداری آپ برعائد ہوتی ہے ،اوراس میں کوئی شاک وشبہ ہیں کہ ہمیشندنصیوست کرستے رہبنے کا فائدہ واثر ہو اسبے۔ اور ایک ایک قطرہ تھی تھے ہیں گرمھا وال دیا ہے اورستقل خبردار کرنے اور مجعاتے بھاتے رہانے کوایساانسان بنا دے گا جوالٹدکی مدود کولازم بچڑے گا اوراس کے احکامات بجالائے گا، اورمنہیات ہے ہازرہے گا۔ اور صلال وحرام کے سلمیں نازل شدہ احکامات کی ہیروی کوے گا. نه ادهراُ دهر محشِکے گانه گراه بوگا منبد بخت و نامراد -

مرتی محترم الیمیداب میں آپ سے سامنے اہم محرمات احرام چیزی ذکر کیے دیتا ہول بالکہ آپ سے لیے نموز دما د د بانی کا ذراید بن مانین . اور آب خبردار کریف اور رینهائی سے فریعینه کوجن وخوبی کامل طور سے اداکر سکیں ، الف كهانه يين كي بيزول مي ترام استيار

۱- مردارجانور ، خون ، خنسز بریکا گوشت اوروه جانورس کو غیرالند کے نام پر ذبح کیاگیا ہو' اور وهب كا كلادبا ياكيا بهواور وه جو محصك سے ماراكيا بوداور وہ جسے لبندى سے كراكر ماراكيا بود ا وروہ جسے سینگ مارکر ماراگیا ہو، اوروہ جسے درند سے نے کھایا ہو، اور وہ جو بتول کے ليے ذبح كياگيا بيو، يەسىب حرام بي اس ليے كه التّدتعب الى ارتْما وفسرمات بين الله الله وفسرمات بين الله و الله و الله و الله م الله و الله و الله و الله و الله م الله و ا

الْجِنْأُذِنْيْرِ وَمَأَ الْهِلُّ لِغَنْيْرِ اللهِ بِهِ وَ الْمُنْخَـنِقَةُ وَالْمَوْقُؤُذَةُ وَالْمُتَوْذِيَّةُ وَ النَّطِيْحَةُ وَمَنَّا أَكُلُ السَّبُعُ إِلَّا مَنَا ذَكَيْتُمْ سَ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النَّصُبِ )).

جسس جانوربرنام بكارا جاسف الندك سواكس اوركا .اور جومرگیا ہو**گ**لانگونٹے سے، یا چوٹ سے . یا اونچے سے *گرکز* یاسینگ مارسے سے ، اوجل کو کھایا ہو ورندے نے سترحبس کوتم نے ذبح کربیا اور حرام ہے جو ذبح ہو اکسسی

تھان دہت ہے نام پر ر

مردارسے سراد ہروہ جانور ہے جوانی طبعی موست سرا ہونوا ہے بند ہویا پرند۔

اوراس سے حرام کرنے میں حکمت یہ سبے کہ جوجانورانی طبعی موست مرسے گا وہ عام طورسے کی مرمن وہرا سنے مرض وبیماری یائی عارضی بیماری یائی زمرالی چیزے کھانے سے مراہوگا، اور فامرے کہ ایسے جانور کا کھا اجہم کونقصان

بہنچائے گاا درصحت کے لیے ضرررسان ہوگا۔

پ دم مسفوح (بهتابهوا نتون) بوتیوان سے نکلے نواہ وہ ذبح کرنے کی وبہ سے نکلے یاکسی اور وبہ سے۔ اس کے ترام کرنے کی حکم مت یہ سبے کہ نتون طبعاً نالیہ ندیدہ چیز سبے ، اوراس میں تراثیم جمع ہوتے ہیں ، اواقع ما وصرر مہنجانے میں یہ مردار سی کی طرح ہے۔

🚓 نخنز بریکاگوشت، اور بیراسلام کے نقطۂ نظرے ترمیت کے لحاظے سے سب سے بڑھا ہواہیے اس لیے کہ کیم لعین

ہے ، اورمنظر کے اعتبار سے بہت محروہ ونالیہ ندیدہ ہے۔

اس كے ترام كرنے ميں حكمت يہ ہے كہ يوسمت سے پيے نقصال وہ ہے اورعزت وآبرو پرغيرت كوكم كرديّاہے. مزیدنقصانا*ت کی نشاندهی کریں* گی۔

ر بااس کاعزت و آبر دیرخیرت کوکم کر دینا تووه اس لیے کھلم طب سے ماہرین کاکہا سیے کہ حیوا بات سے گوشت میں ایسے مواد وا جزار ہو تے میں جو کھانے والے میں حیوانی اثرات پیاکر دیتے ہیں، لیجیے ڈاکٹر صبری القبانی طبیب "نامی رسالہ

ك شاره نمبرتيس ك صفى ١٨٩ بر لكمة ين كه:

يهات ثابت مشده ب كرميوانات كركوشت مين ايسهمواد پائے جاتے ہيں جن كااثر سير بوتا ہے كه وه اسپنے کھانے والے میں بھی حیوانی صفالت پیدا کر دسیتے ہیں ، جنانچہ انگریز مُصندی مجھلیاں کھلسنے کے شوقین ہیں ،اس لیے وہ عمن فرسے مزاج سے مالک بیں، اورفرانسیبی سورکاگوشت کھانے سے شوقین ہیں اس بیے ان سے اخلاق اس جیون سے

سطنتے جلتے ہیں (مراد یہ ہے کران میں بھی غیرست نہیں پائی جاتی) اور دیہات سے رہنے واسے عرب اونٹول کا گوشت کھانے سے نیادی ہیں ۔اس لیے ان میں صبرا ورکینہ پایا جاتا ہے اور ج تہری بحرسے و مسنبے کا گوشت کھانے سے مادی ہیں ان کی قیادست ورہنمائی آسان ہوتی ہے۔

اسی طرح کی گفتگوکیلغوریا یوئورشی سے علوم طبیہ سے سربراہ نے کہ ہے جصے مجلہ "الہلال" والول نے نقل کیا ہے۔ حاجہ غیرالٹر سے نام پر مذہوحہ مانورلینی وہ جانور جو الٹرکا ہم لے کر ذبح کرنے کے بجائے لات وعزی وغیر کھی بت سے کیر ذبح کیا گیا ہو۔

اس کے ترام کرنے کی علت یہ ہے کہ توحید بہانی کی حفاظت وحایت ہو، اور شرک وہت پرتی ہے تمام آثار کی مخالفت و فایت ہو، اور شرک وہت پرتی ہے تمام آثار کی مخالفت و فی ہونا کے بیان ہوجائے ، اس لیے کہ بقول استاذ قرضا وی جانور کو ذکے کرتے وقت اللہ تعالی کانام لینے کا مطلب کو یا یہ ہے کہ اس جانور کے داس جانور کا ذکے کرنے والا یہ اعلان کررہاہیے کہ وہ اس زندہ جانور کے ساتھ جو یہ کام کر دہا ہے کہ اور رضامندی سے ہے ، لہذا اگروہ ذکے کرتے وقت اللہ کے بجائے کی اور کا نام کے کا توگویا اس نے اس اجازت کو تھے کردیا اور وہ اس بات کا ستی بوگی کہ ذکے سے جوئے جانور کو اس پر مسام کر دیا جائے۔

#### مردار کی اقسام وانواع پیر میں:

- ه گلاگھونٹا ہوا جانوریینی ہروہ جانور جو بی طریقے سے گلا گھٹنے کی وجہ سے سرا ہو۔
- ا جھتکے سے مارا گیا جانور ، اور اس سے وہ جانور مراد ہے کہ جیے جعنکے یاسی لکڑی دغیرہ سے مار مار کرختم کردیا جا
  - اوپرے گرکرم نے والا جانور لینی ہروہ جانور جوا دنجی جگہ ہے گرکرم ا ہو۔
  - ه سینگ مارسنه کی وجه سیصرا به وا جانوریعنی وه جانوریس کوکسی اورجانور سنے سینگ ما رمار کرمار والا بور
- دندسے کا کھایا ہوالینی ہروہ جانورس کاکوئی مسکسی بھاڑ کھانے والے جانورنے کھایا ہوسس کی وجہ سے یہ مرگیا ہو۔ مرگیا ہو۔

ان پانگافساً کے ذکر کرسنے سے بعداللہ تعالی نے فراپا سوائے اس سے جوتم نے ذریح کیا ہولینی ان جانورول ہیں سے اگر کوئی جانورائیں حالت میں مل جائے کہ اس میں زندگ کی دُسّ باتی ہوا ورتم اس کو ذری کرلوتو تمہارسے ذریح کرسنے کی دجر سے ملال ہو جائے گا، بشرطیکہ جس جانور کو ذریح کیا جارہا ہے اس میں زندگی ہوجس کی علامست یہ سبے کہ نول بھورہ پڑے ادر اس میں حرکت ومدافعت ہو۔

ان اقسام کے مانورول سے حرام کرنے کی حکمت یہ ہے کہ ان سے کھانے میں انہی اقسام کے نقصالات وضرر کا اندیثر

ہوتا ہے۔ بن کا نذکرہ مردارجا نورسے بارسے ہیں ہو جبکا ہے ، اور ساتھ ہی ساتھ اس سے اس جانور والے کو بھی اس بت برسزنش و مزادیا مقصود ہے کہ اس نے اس جانور کو بول جبوٹر دیا اس لیے کہ اس کو چاہیے تھا کہ اس کی دیکھ محال اور حفاظ مت کرتا، اور اسے دم محطنے کلا دبانے یا اونجی عبگہ سے گر کر طان اور ایک دو سرسے سے خلاف ہوگا نا جبول کا ناجیا کہ جلاک کرنے سے بچانا بھا جیسے تھا، جانوروں کو آبس میں اس طرح اطانا اور ایک دو سرسے سے خلاف ہوگا ناجیا کہ عام طور سے لوگ کیا کہتے ہیں اور بیلول یا مینڈھول وغیرہ کو لوائے اور ان کی سینگ بازے کرائے ہیں اور ایک وراس میں سے ایک سے بلاک ہونے تک نوب بہنچی ہے الیساکرنا قطفا نامناسب ونا جائز ہے ، باقی رہا وہ جانور ہے کسی ورندے نے بھاڑ کھایا ہو تو اکس کی حرصت انسان کی کرامت واعزاز کے لیے ہے اور اس لیے بھی کہ اسے درندوں وغیرہ سے مجموسے سے بچیا کہا جائے اور اللہ تبارک و تعالی ارشاد فرماتے ہیں :

الروكَ قَدُ حَتَى مُنَا بَنِى آفَهُم » - الاسراء - ٥٠ الاسراء - ١٥ الارتم في عزت وى سيعاً دم ك الالادكور

بتول وغیرہ سے نام پر ذکے کیا ہوا جانور اس زمانے میں لوگ بت یا پنھری کوئی مورتی بناکر کعبہ سے اردگرولگا دیتے تھے
جوان کے معنوعی دلیے باشار ہوئے ستھے، اور زمان ہا بلیت میں لوگ ان سے پاس جانورول کی بھینے برط معایا کرتے تھے، اور
اپنے دلیے باؤل اور معبودول کا قرب ماصل کرنے سے لیے جانور ذرئے کرتے تھے، ایسے بچھرول سے لیے یا ایسے مقامات پر
ذکے کرنا اس جانور کو ترام کر و تیا ہے، چاہے ذرئے کرنے والاغیرالٹد کا نام لے کر ذرئے کرسے یا کسی کانام سے بغیر ذرئے کرسے اسس
سے کہ اس کامقصد ہی بتول کی تعظیم کرنا ہے۔

اس سے حرام قرار وسینے ہیں کھی محکمت وہی ہے ہوغیرالٹد سے نام پر ذبح سیے جانود سے حرام کرنے ہیں ہے۔ مردار حرام جانوروں ہیں سے شریعیت ِ اسلامیہ سنے مجھلی اور ٹرمی کوا ورخون سے کلیجی اور کمی کومنٹنی کیا ہے۔ اس لیے کم امام شافعی ، احمد ، ابن ِ ما جہ ، دارملنی و حاکم حضرت عبدالٹدین عمرونی الٹدی ہاسے روایت کرستے ہیں کہ نبی کرم کی الٹد علیہ کم نے ارشا وفرط یا :

(لأحلت لناحيتان: السمك والجواد، ودمان: بمارسه يه دوم والمحيل وُيْرَى، اور دونون كليم اور لي الله والطحال). والكيد والطحال).

مندکوره بالا ترام چیزی جن کا برکره کیا جا چکاہے وہ سب غیرمجبوری اور عام کالات سے لیے ہے، لیکن مجبوری کی حالت اس سے مختلف ہے اسی صورت میں اس کا کھانا ووثر ملول سے جائز سیے:

۱- مزے یلینے اورشکم پروری کے لیے زمور

٧- صرورت مع زياده مركها يا جائد مين التدتبارك وتعالى كواس فرمان كامطلب هه:

الْ إِنَّهَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَاةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْمَيْتَاةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الرِّورِ الرّور

الْحِنْزِنْدِوَمَّا الْهِلَ بِهِ لِغَيْدِ اللهِ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَانَهُ وَكَلَا عَادٍ فَكَلَّا إِنْهُمَ عَكَيْبِهِ مِانَ الله عَفُورُ رَّحِيْهُمُ ».

کا گوشت اور جس جانور پر النّد کے سواکسی اور کانام ایکا اُ جائے بچھ چوکونی ہے اختیار موجائے نونا فرانی کرسد اور مزیادتی تواک پرکھے گنا نہیں ، بے شک النّدی برا ابخشنے

وال نهايت مبرونه.

لبقرور ١٤٣

اس کی حکمیت یہ ہے کہ انسانی زندگی کو بچایا جائے ،اور اسے بلاکمت سے مندیس نرجانے دیا ،اور لوگول کوشقت ونگی سے محفوظ رکھا جائے۔

# ۲۔ شہری گدھول اور پھاٹر کھانے والے درندوں اور نیجول سے برندوں کے گوشنت کی حرمت :

بن ال کے کہ امام بخاری نبی کریم صلی الٹرعلیہ وہم سے روایت کرستے ہیں کہ آپ نے جنگ نیبر سے موقعہ پر شہری گرحول کاگوشت کھانے سے منع کیا تھا۔

. اوراہام بخاری وسلم روایت کرتے ہیں کہ نبی کرم صلی التّہ علیہ وہم نے ہر کھیا ڑکھانے والیے درندے اور پنجول سے پڑھ کر کھانے والیے پرندوں کے کھانے سے منع فرایا ۔

درندول مے مراد وہ بیں جو دام حول کے بیار کھاتے ہیں جیسے شیر چیتا و تھیٹر یاد غیرہ ۔ اور میں موجیے کہ گدھ، بانہ ننگرہ وجیل وغیرہ ۔

سره در بی میرود ان کاحرام موناجه در کا فدمهب سید، تسکین مضرت ابن عباس ضی النّد عنها اور الم) مالک کا فدمهب به سید کریجائز تسکین مکرو و بین، اور ان مصنارت نے ان سے روکنے والی اصادمیث کا پرجواب دیا ہے کہ ان ک مراد بیر سبے کہ یہ محرو و بی بر جدامہ

زکر حرام ۔ شریعیت اسلامید میں یہ بات مصنف ہ سے کہ اگر ان جانوروں کو جن کا کھانا حرام ہے شرمی طریقیہ سے مالال کرایا جائے تو اس سے ان کی کھال پاک ہوجاتی ہے اور ذرج کرنے سے بعد دباغست دیے بغیروی ان سے فائدہ اٹھانا جائز ہے۔



### ۳- ہوجانورغیرشری وغیراسلامی طریقے ہے ذبح کیا گیا ہومٹلا بجلی سے جھٹکے کے ذریعیہ ذبح کیا ہوا یاکسی ملحد یا مجوسی یا بت پرست سے ہا تھے۔ ذبح کیے جب انور کا

#### <u> حرام ہونا :</u>

تسرى طريقے ہے جانور كاذبح ہونا پند شروط سے ساتھ مقيد ہے ،

ر سر رہے۔ سب بھی ہے۔ ہے۔ ہے۔ العن بِہ جانورکولٹاکرذبح کیا جائے یا کھڑے کھڑے اسے سی ایسے تیز دھار والے آلے سے ذبح کیا جائے ہونون بہاڈالیے اور کس کاٹ وے۔

ب. ذنے حلق سے کیاجائے جس میں گلے اور کھانے بینے سے جانے والے راستے اور گردن کی دونول جانب جودو گھ بھی ریر در در دا

موتی رکبی ہیںان کا کا شاشا مل ہے۔

كين كلاكاست كن تسرط اس وقت ختم بوجاتى بسير حبب إس مخصوص مگرست جانور كا ذبح كرنامشكل بوجاست مشلاً یر کہ کوئی جانور کنویں میں گرجائے اور اس و حب<sup>ر</sup> سے اس کا ذبح کرنامشکل ہوجائے . یا اونٹ بدک جائے اور اس کامالک اس کو بچڑنے پر قادر زمو، یاکوئی حیوان کسی پرحملہ کر دستہ اور وہ اس سے پیچنے سے بیسے استے تیرمار دسے، توان حالات میں اس حیوان سے ساتھ شکار کا سامعال کیا جائے گا، اور اس کے بم سے بس مصے پڑھی سی تیز دھاروا ہے آلے سے زخم رگا<u>سکے</u> نگا دے بہی کافی ہوجا ئے گا اور اس کا کھا نا حلال ہوگا ، لین اگریہ بتہ تیل جائے کہ وہ جانور زخمی ہوسے بغیرمرگیا ہے تواس کا کھانا اس جانور کی طرح ناجائز ہوگا جسس جانور کو چھٹکے ہے ذریعے مارا گیا ہو۔

سے - ذبح كرتے وقت الله تعالى كانام كراس جانوركوذ كى كياجائے .اس كے كدالله تبارك وتعالى فرطتے بيل:

تم کواس سے حکموں پراییات ہے۔

ول فَكُلُوْ ا صِبّاً ذُكِرَ اللهُ اللهِ عَكَيْهِ إِنْ كُنْتُهُ اللهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الله

بْ يُنْ بِهُ مُؤْمِنِينَ )). انعام - ١١٨

اور فرمایا :

اُور اس میں سے نہ کھاؤ حمیس پر بند کا نام نہیں پاگیا اور پہ

كھانا گناہ ہے۔

(( وَلَا نَنَا كُلُوا مِتَنَا لَمْ يُذْكَرِ الْسُمُ اللَّهِ عَلَيْهِ

وَ إِنَّهُ لَفِسْقٌ مِ )). انعام - ١٢١

اورام م بخاری وغیره رسول اکرم سلی الته علیه ولم سے روابیت کرستے بی کراپ سے ارشا وفرمایا :

جوچیر خون بدبا دے اور بسس پر استد کا نام بیا جاسئے تو

الرساأنهرائم وذكراسمالله عليه فكلوا).

استعكالوه

ا دراگر ذبے کرسفے والاالٹدکانام لینامجول جائے توالیہا جانورصلال ہیے ۔اس بیلے کہ الٹدتعالیٰ ہے اس امت کی بعول بوك وخطاكومعا تكروياه.

الله كانام يين مي مكمت ير سب كرير واضح بوجائ كر ذبح كرسف والااس جانوركواس سيا ذبح نهيس كررباسي كر وه ان مخلوّقات پرتسلط رکھیا۔ جب بلکہ وہ برکام النہ جل شانہ کی اجازیت سے کر رہا ہے ، اس کانام سے کر ذبھے کر رہا ہے ، اوراسی كانام ك كرشكاركرد باب، اوراس كانام ك كركها دباسه.

د و فریح کرنے والامسلمان یاالم کتاب (یہودی یا نصراتی) میں سے ہو۔

ليكن اگر ذبح كرسف والاملحدوبروين يا يارس يابت برست سبع ياكسى باطنى عقيدسه سيعلق ركها سبعث لل وه لوگ جوحضرت على كوندا ما خنتے ہيں. يا وہ لوگ حوفاظمي مذہب سي تعلق رسكھتے ہيں اور ماكم بامرانندالفاظمى كوندا ما خنتے ہيں، يا وہ لوگ جو آغاخان کی خدائی سے قال ہیں،ایسے لوگول کا ذیج کیا ہواجانور بیا روس اماموں اوران سب حضارت سے پہاں سرام ہے جن کی فقہ و نداہ ہب پرلوگ عمل بیرا ہیں ۔

ذ بے کرنے واسے کامسلمان ہونااس لیے شرط سبے کرمسلمان اس دین برحق کا پیرو کا رسبے بیسے حضرت محد صلی التّد

عليه ولم كر كرتش ركيف لاست مين.

ا باتی الم کتاب سے ذبیحہ سے ملال ہوسنے کی وجہ النہ تبارک و تعالی کا یہ فرمانِ مبارک ہے:

((أَلْيَوْمَ أُحِلَ لَكُمُ الطَّيِيِّبُ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُونتُوا آج ملال بوئي تم رسب تعري جيزي اور الل تاباكلانا

تم برصلال ا در تمهار ا كعانا ان كوملال ب

الكِتْبُ حِلْ لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلْ لَهُمْ) ما مُهد ه

دین اس ام نے ملاحدہ وسبت پرستول وباطنی فرقول کے ساتھ نہایت سخست برتا وُانتیار کیا ہے اوراہل کتاب کے ساتھ نرم برتاؤ، اس کے کہ اہل کتاب مومنول اور مسلمانول سے زیادہ قربیب ہیں اس کیے کہ وہ وی ، نبوت و فی المجله دین سے صولول کا عتراف کریتے ہیں ، اور اسلام نے ان سے نکاح کا تعلق قائم کرینے اور ان کے ندبوجہ جانور کوحلال قطر دیاہے، اس بے کہ اگر وہ سلمانول سے ساتھ اٹھنا بیٹھنا اختیار کریس اور سیحے معنی میں اسلام کو پہیان کیس تووہ یقین کرلس گے کہ دین بق اسلام ہی ہے اور تھروہ تحقی ورضا مندی اسلام کوقبول کریس گے۔

لیکن اگر میعلوم ہوجائے کہ اہل کیا ب میں سے سے ذبح کرتے وقت غیرالتُد حضرت عینی یا حضرت عزیرعلیمااسلام كانام لياب توبجراس كا ذبح كيا بواجانور حرام بوجائے كا اس ليے كه وه جانورغيرالله كے نام پر ذبح كيا گيا ہے۔

مربوحه جانورول <u>سے س</u>لسلہ میں جوشروط ذکر کی گئی ہیں ان سے بیادم ہواکہ:

وہ جانور ترام ہے جسے کبل سے نیستکے وغیرہ سے ذریعیہ سے ذبح کیاگیا ہواس لیے کہ اپی صورست میں وہ جانور دم

گھٹ کرمراہیے،ال کوکی دھاردارآ ہے کے ذریعے سے گلاکاٹ کر ذکے نہیں کیاگیا ہے۔ ﴿ محدوسیے دین اور پاری وبت پرستول اور ہالمنی فرقول کا زبومہ جانور حرام ہے،اس لیے کہ انہیں غیرالند کے نام پر

ے یہ ایس میں پیک برآمدشدہ وہ گوشت حرام ہے جوالیے طید ممالک سے درآ مدکیاگیا ہو جوالندا ورآسانی مذاہب

مری اس طرح ان فرلول کا گوشت کھانا بھی ترام ہے جن سے بارسے ہیں یہ بات بینی طورسے ثابت ہوجائے کہ اس بیس جس جانور کا گوشت ہے اس کوغیراسلامی طربیقے سے ذبح کیا گیا ہے مثلاً یہ کہ اس کو گلا کھوزٹ کریا بجلی کے مجتلے سیے مالاگیا ہو۔

ے۔ رہے ہے۔ دو اس طرح لیسے بیرونی گھی بھی مزام ہیں جن سے بارسے ہیں یقیمین سے ثابت شدہ ہوکہ اس میں موجود گھی ہیں سور

کی چربی یا دود صشامل ہے۔

ی پرب یا دوده ساں ہے۔ میکن ڈربول میں درآ مدشدہ مجیلی کا کھانا سب سے نزدیک جائز سیے اس لیے کہ احادیث کی کمابول میں نبی کریم ملی التدعلیہ وسلم کا درج ذیل فرمان موجود سے جوآپ نے اس وقت جاری فرمایا تھا حب آپ سے مندرسے پانی کے لیے ين دريافت كياكيا توآب فيدارشاد فراي

( هو الطهور مداق الحل ميشت ». اس كاياني يك دراس كامز بوجانور طال ب

ا در بخاری مسلم میں حضرت جابر دضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ نبی کرم صلی اللہ علیہ وہم سنے ایسنے صحابہ کی ایک ۔ جاعیت کوالٹر کے راستے میں جنگ کرنے کے بیے جیجا، انہیں سندر کے پاس ایک بڑی سی جیلی فی جو یانی سے باہر آنے کی وجہ سے مرکئی تھی ،انہول نے اس کا گوشت بہیس سے زیادہ دان تک کھایا، بھر مدینے منورہ آئے تورسول اکرم عليه الصلاة والسلام عداس كاتذكره كياتوات ني ارشاد فرايا:

((كلوا رزقاً أخرجه الله لكم . أطعمونا إن کھاؤ الٹدنے تمہارے ہے رزق مہیا کیا ہے اوراگرتمہارے يسس موجود بوتويمس معي كحلا دور

پنانچ تعبض مفارت اس کابچا ہوا کچہ گوشت کے آئے تو آپ نے اسے نوش فرایا۔

#### ۲۰ - شراب اور دوسری منشات و مخدرات کا است تعال :

شراب ومنشیات کا استعال متفقه طور بسیے حرام سیے ،اور ہم اس سیقبل اس کتاب اسسلام اور تربیت اولاد کی سم ثانی کی مجمانی تربیت کی ذمہ داری کی فصل سے تحصیل سیے ال تمام نقصانات ومصنرات کو ذکر کریچکے ہیں ہو

شراب نوشی دمنشیات سے استعمال سے پیا ہوتے ہیں ، اوراس طرح ہم ان سے استعمال سے بارسے میں اسلام کا فیصلہ معى فعل ذكر كريكي بين اورسامته مين وه كامياب ومفيد علاج بعى ذكر كريك بين بواسلام في ان كى بيخ كنى اور خاتم کے لیے مقررکیا ہے ، اس لیے اسیم نی محترم آپ اس فصل کو الاحظ فروایسجیے تاکہ آپ کے ذمین میں ان دومہلک ترام جیزو<sup>ں</sup> كے نقصانات اور ان كے بارسے ميں دين إسلام كافيصله اور لم معاشرے اور آزاد وسے ديگام فاسد معاشرے سے ان كى بيج كنى كاطريقيم أب كے سامنے آجائے۔

نكين وه نزارب جوانگورا ورهمورسيمه ملاوه اور دومسري جيزول سيدنبانی جاتی سيد کيااس کاپينيا درست سيداس پر

کلام کرنایافی ہے؟

ا مام سلم رحمہ اللّٰہ روایت کرتے ہیں کہ نبی کریم سلی اللّٰہ علیہ وسلم سے اس شراب سے بارسے ہیں پوچھاگیا ہوشہ مر اور مکنی یا جَوسے بنائی جاتی ہے تواتب مسلی اللّٰہ علیہ وسلم دجن کوجا مع کلمات عطاکیے گئے تنھے ہے ارشاد فرمایا : ((کل مسکر خوس ، و کل خوس مرزشه آور چیز شراب (کے عکم یں) ہے۔ اور بر شراب کی عکم یں) ہے۔ اور بر شراب کی علم یں) ۔ حسل میں) .

للذاس مديث كا متارس :

ہر دِ ہ مشروب ہو میلول یا جو یا کسی اور جیز <u>سے بنایا جائے اور وہ نشد آور ہوا ور</u>قل کو مدہوش کر دیے تو وہ شراب كي علم من داخل بوگا، اور رسول النه عليه والله عليه وقم كيمنبر ريم صريت عمر في يا علان فرمايا تحاكه شراب وه ہے ہوعقل بربردہ وال وسے (الاحظم موبخاری وسم)۔

اور جوچیزنت آورب توه فواه تعوری بویازیاده سب کی سب ترام باس کی ایم ایم ام احمد، الوداؤد اور ترمذی رسول اكرم ملى التدعلية وم سدروايت كرست يي كرآب في فرايا:

(( مساأس كركشيرة فقيليله جس جيزى زياده مقدارنشه بديرك فقيليله فقيليله والمعادر الماء الماء الماء الماء الماء الم

حوام». اورنبی کریم علیه الصلاة والسلام نے شراب کی تھوڑی یازیا دہ مقدار سے حرام کرنے پری اکتفار نہیں فرمایا بلکر آنے

اس کے بیچنے خربیہ نے اور اس کی تجارت کرنے سے مجمی منع فرما دیا نواہ وہ غیرسلموں کے ساتھ ہی کیول نہ ہو ، لہذاکشی مسلمان کے لیے یہ قطعاً جائز نہیں ہے کہ وہ شراب امیورٹ یاانکیسٹیورٹ کرسے ،یا بنائے یااِ دھرسے اُدھرمنتقل کرے اور لائے لیجائے،اس کیے صربیف میں آ ماہے:

اللّٰدکی لعنیت بوشراب برا وراس کے چینے واسے اور بلانے واسے اور پیچنے والے اور خرید نے والے اور کوٹنے

الالعن الله الخسروشاربها وساقيها وبائعها ومبتاعها ومعتصرها وحاملها

والمحسول إليد وآكل ثمنها».

وا لے اورا تھا کر الے جانے والے اور سب کے پاس اٹھا کر اے جاتی جائے اور اس کے پیسے وقیمت کے کھانے والے بر

ابودا فد وترمندي

اوراسلام نے سرباب کابوطرلقہ انتیارکیا ہے اس کے تمت کان سے لیے یہ ہی ترام ہے کہ وہ تمراب بنانے والے کے باتھ انگور فرونست کر سے بی کی ایک کے باتھ انگور فرونست کر سے بی کہ اس سے بیانچ طبرانی ابنی محاب معجم اوسط" بیں رسول اکرم سی الندیلیہ وقم سے روابیت کرتے ہیں کہ آپ نے فرایا :

الامن حبس العنب أيام القطاف حتى

يبيعه من يهودى أونعماني أومس

يتخذ لا محمرًا فقد تقتم النارعلى بصيرة ».

حبس شفس نے انگور توڑنے کے دنوں میں انگور اس لیے روک کر رکھے تاکسی بہودی یا عیسانی یا ایسے شعص کے باتھ یجے جو اس سے شراب بنائے تو وہ مل بعیر قاگ میں دافل ہوگیا۔

اس طرح سے اسلام نے سلمان کو ٹمراب کی مفلول سے بائیکا شاور ٹسارب نوشول کی صعبت سے بچنے کا تکم دیا ہے جنانچہ افکا اور ٹسارب نوشول کی صعبت سے بچنے کا تکم ویا ہے جنانچہ افکا اصدو ترمذی حضرت عمر بن الحظاب رضی التدعنہ سے روایت کرتے ہیں کے انہول نے فرمایا: میں نے رسول اکرم مسلی التدعلیہ ولم کویہ فرما ہے کہ حقیقص التد تعالی اور قیامت سے دن برقیمین رکھتا ہواس کوچا ہیے کہ ایسے دسترخوال پر نہ بیشے جہاں شراب کا دُور حلی رہا ہو۔

اورخلیف را شدم مفرت عمر بن عبدالعزیز رحم الله سے مروی ہے کہ وہ شارب نوشوں کوکوٹے مادا کرستے تھے اور ان لوگوں کوجی جوان کی شراب نوشی کی مجلس میں حاضر ہوں خواہ انہوں نے ان کے ساتھ شراب نوشی کی مہو، مکھا ہے کہ ان کے ساتھ شراب نوشی کی مجود کہ کہ ان کے کہ ان کے کوڑے کا کا کہ دیا، ان سے کہا گیا کہ سامنے ایسے کو کا ان کے کوڑے کا کا کہ دیا، ان سے کہا گیا کہ ان میں ایک صاحب ایسے میں جوروزے وار میں ، توانہوں نے فرایا: اسی سے کوڑے ناکھا نے کی ابتدا دکرو ، کیا تم نے ان کی درج ذیل فران مبارک نہیں سنا ہے :

(( وَقَالُ نَزْلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتْبِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ اللَّهِ اللَّهِ يُكُفُّونُ فِي الْكِتْبِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ اللَّهِ اللَّهِ يُكُفُّونُ إِنَّا وَ يُسْتُهُ ذَا بِهَا فَلَا تَقْعُدُ وَاللَّهِ اللَّهِ يُكُفُّونُ الْحِدُ حَدِيْثٍ تَقْعُدُ وَاللَّهُ مُ مَنْ يَكُونُوا فِي حَدِيْثٍ عَدْرَةً \* إِنَّكُمْ إِذًا مِنْ أَنَّهُمْ مِنَ ). الناء - ١٠٠٠ عَدْرَةً \* إِنَّكُمْ إِذًا مِنْ أَنْهُمْ مِنْ). الناء - ١٠٠١

اورتم برقرآن مین مکم آنار جیکاکه حبب نو الندگیآیول بر آنکار جوت اور نبی بوت توان کے ساتھ نابیٹھوییا یک کوشغول بول کسی دوسری بات میں نہیں توتم بھی نہی میسے بوگئے۔

اوراس سے بل اس کاب اسلام اور تربیت اولاد کی منظیات و مخدات کی بحث کے سلسلہ میں ہم یہ ذکر کر بھکے میں کہ شاری کا بیان کی منظیات و مخدات کی بحث کے سلسلہ میں ہم یہ ذکر کر بھکے میں کہ شاری کا دواء کے طور بہاستعمال کرنا بھی جائز نہیں ہے۔ رسول اکرم مسلی الشد علیہ ولم نے ان صاحب کو بھی جواب و یا تھا جنہوں نے آپ سے منع فرادیا ، ان صاحب نے دیا تھا جنہوں نے آپ سے منع فرادیا ، ان صاحب نے عرض کیا کہ میں تو اسے دوا ڈاستعمال کرتا ہول ، آپ نے ارشاد فروایا : یہ دوا زنہیں ہے بلکہ یہ تو بیماری ہے (ملا حظہ ہو صحب ج

م سه سه الاحدیث اوراس بین دیگرا درنصوس سے بم پہلے اس بات پراستدلال کریکے ہیں کہ صرف شراب کا دوار سے طور رپاستعال کرنامجی گناه و ناجا ئزسیے ، جواسے استعال کرسے گا وہ مجی گنام گار ہوگاا ورجواستے استعال کرائے گا وہ مجى گنابىگار بوگار

لیکن تعبن دواؤں میں ان کی حفاظمت وخیرو سے بیے جوایک مخصوص مقدار میں اٹکس وغیرہ الائی جاتی ہے تو اس كاستعال مندرة ذيل شروط ك ساته جائز بهد

۱ - اگراس دوا مکواستمال ندکیا جائے تو اس کی وجہ سے صحبت بیروانی خطرناک صورت حال پیش آنے کا ڈرپو۔ ۲-اس کے علاوہ کوئی اور حلال وجائز وواموجودیز ہو۔

٣- اس دوا كوكونى ما برتجربه كار دينارمسلمان معالج تجويز كرسه

اوراس آسانی وسہولت پداکرنے وجریہ ہے کہ اسلام سے بنیادی احکامات آسانی وسہولت اور مشقست سے دورکرنے اور فائدہ ونفع پہنیانے برمبنی ہی سب کی بنیا دائٹہ تعالیٰ کا درجے ذیل فرمان مبارک ہے:

عَكَيْهِ وَإِنَّ اللَّهُ غَفُورٌ رَجِهِ إِنَّ البعره ١٥٠٠ ناولَ تواس بِرَجِع كناه نهير ـ

ب ـ لباكس بوشاك اورزيب وزينت اورسكل وصورت مي ترام اشيام اسلام سے اسان بنیادی اصولول میں سے بیمبی سیے کہ اس نے سلمان سے لیے یہ بات مباح کھی ہے کہ وہ سکل وقتور اوردصع قطع کے لعاظ سے لوگول سے سامنے مناسب بئیت اور شکل وصورت میں بیش ہو،اسی یالے اللہ تعالیٰ نے لباس وبوشاك اورزیب وزینت كى تمام وه اشیار بداكی بین حب سے انسان فائده انتفاتا ہے ارشادِ ربانی ہے : سَوْاتِكُمُ وَ رِنْيَثًا ﴿)) • الاعراف - ٢٩ تهاري شرمًا جي اورا آره آرائش كه كبرك -

نیزارشاد باری ہے:

وَ الَّذِيْنَ إِذَّا ٱنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَهُ يَقِتُرُوا

( اللَّهُ فِي الْاَوْ عُلْدُواْ زِنْيَنْكُمْ عِنْدُ كُلِّلْ مَسْجِدٍ )) الاعلان المستقام كا ولاد الوافي أراسش برنما لك وقت. تین بیمبی یا درسیه کدان مباح زیب وزینیت کی اشیاء سمه استعال میں درمیانه روی واعتدال کے دان کونہیں مِعورُ ناجا بِعيدُ الله الله تعالى كے درج ذيل فران مبارك برعمل مو:

، در ده لوگ جب خرج كرنے لكتے ميں توز فضول خري كرتے

بیں اور نشکی کرسے میں اور اسس کے درسیان (ان کا حرق)

وكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ﴾.

اعُها ١٤٠ ، عَدُل پررتها عد

اورنبی کریم سلی الته علیہ ولم سے دیتے ذیل ارشا در بھی جصے الم بخاری نے روایت کیا ہے: (( كلوا واشولوا والبسوا وتصدقوامن غاير

کھاڈ اور پیوا وہینواور سدقہ کر دبغیرسی اسراف اور

لمسراف ولا مخيلة».

ه اسلام نے ظاہرا ورشکل وصورت کاجو خیال رکھا ہے اس کا ندازہ اس سے ہوتا ہے کہ اسلام نے سلمان كونظا فت اورصفائی ستھ انئ كاحكم ديا ہے اس ليے كەنظا فەت ہى پرامھى زىنىت كى اساسس اورمناسب واسچھے منظہر ک بنیاد ہے :

\* ابن جبان رسولِ اكرم صلى النّعِليه ولم معدروا بت كرسة بي كرآب في ارشاد فرطايا: نظافت اختيار كرواس یے کراسلام صافت تھا (دین) ہے۔

«إنكم وسادمون على إنعوانكم فأصلحوارحاتكم وأصلحوالباسكم حتى تكونوا كأنكم شامة فى الناس فإن الله لا يحب الغيش ولا التغيش ».

تم لوگ اینے بھائیوں سے پاکس جانے والے ہو لہذا کجاودں کودرست کرلو ا ور ایسنے نیاس ٹھیک کرلو اگ تم لوگول بیس ایسے بن جاؤ جیسے تل اس لیے کہ التہ تعال فحشس اوربع حیانی کوپندههی کرما.

ہ دین اسلام نے منظہ اور شکل وصورت کا ہوخیال رکھا ہے اس کی علامت یھی ہیے کہ اس نے اجتماع کے مقامات اور مبعه وعيدين وغيروي نظافت وآرائتكي پرابهارا اور آماده كياسه:

 الم انسانی روایت کرستے ہیں کہ ایک صاحب نبی کریم ملی النّہ علیہ وقع کی خدمت میں حاضر ہوئے اور انہول نے معمولی سے کیٹرسے بین ریکھے تھے ، آپ نے ان سے دریا فست فرمایاکہ کیا تمہارسے پاس کچھ مال ودولت سہے ؟ انہول نے عرض کیا جی بال ! آپ نے توجیا : کس شم کا مال ہے ؟ انہول نے عرض کیا : التُدتعالیٰ نے مجھے ہرشم کا مال عطا فربار کھا ہے۔ آپ نے ارشا دفرما یاکہ : مجر حبب اللہ تعالیٰ نے بہیں مال دسے دکھا ہے تواللہ تعالیٰ حل شانه کی معتول اوراعزاز کے آثرات تم پرظا ہر ہونا جا ہیں۔

جہ اور الوداؤدنبی کریم صلی اللہ علیہ ولم سے روابیت کرستے ہیں کہ آپ نے ارشاد فسسر مایا جم ہیں سے جس کو استہ تنا کی سے جس کو اللہ تنا کی سے جس کو اللہ تنا کی سے میں اللہ تنا کی سے میں سے میں سے میں اللہ تنا کی سے دوالے کے کہر ول سے علاوہ اگر ایک جو مراح میں لیے بالے تا ہے۔ تو اس کا کیا نقصان ہوجا ہے گا۔ تو اس کا کیا نقصان ہوجا ہے گا۔

اسلام نے شکل وصورت اور ظاہر کا جو خیال رکھ ہے اس کی ایک طلامیت ہی ہے کہ اسلام سراور ڈاٹوھی کے بالول کی اصلاح کا تکم دیا ہے چنانچہ الم مالک اپنی کتاب "موطا" یں روایت نقل کرتے ہیں کہ ایک صاحب نبی کریم صلی النّہ علیہ ولم کی نمومیت ہیں اسی حالت میں حاضر ہوئے کہ ان سے سراور داؤھی کے بال پڑاگندہ متھے، نبی کریم سلی النّہ علیہ وکم نے ان کی طرف اشارہ فروایا دگویا آپ انہوں نے الیا علیہ وکم نے ان کی طرف اشارہ فروایا دگویا آپ انہوں سے درست کرنے کا حکم دے رسے ہول) انہوں نے الیا ہی کیا دلیتی بال درست کر ہے ہی دوبارہ حاضر ہوئے تو نبی کریم سلی النّہ علیہ وکم نے ارشاد فروایا: کیا یہ اس اس سے بہر نہیں ہیں کہ تم ہیں ہے کوئی شخص اس طرح پڑاگندہ سرآئے کو یا کہ وہ شیطان ہے۔

اسلام نے یہ تمام چیزی نصرف مباح وجائز قرار دی بیں بلکہ ان کوانتیار کرنے کا انسان سے مطالبہ کیا ہے اورشخص نے ان کو اپنے اور پرام قرار دیا اس پرسخت کمیر کی ہے اور اس سے منع کیا ہے اللہ جل سٹ نہ بنی نہ میں میں میں ایک کے ایک میں میں میں میں میں میں کا میں میں میں کیا ہے اللہ جل سٹ نہ

ارشاد فرمات مین:

آپ کہہ دیجیے سس نے ترام کیا التہ کی زینت کو مس نے پیدائی اپنے بندول کے واسطے اور کھانے کی ستھری

( وَ قُلُ مَنْ حَرَّمَ زِنُنَهُ اللهِ الْآَتِيُّ آخُرَمَ لِعِبَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزُقِ )).

چيزې په

اعراف ۲۲۰

البته دین اسلام نے مسلمان برزیب وزینت باس اورظ ابری شکل وصورت کی بعض انواع واقع ای کی بعض انجم مکمتول کی وجہ سے ممانعت کرکے ان کو حرام قرار دیا ہے ، اور لیجے آب کے سامنے ان حرام چیزول ہیں سے ایم ایم ذیل میں بیس پیش کی جب اتی ہیں :

<u>۱. مردول برسونا ورستم کا حرام قرار دینا :</u>

اس کے کہ امام احمد ، الو داؤد ، نسانی و ابن ماجر مصنرت علی کرم الله دوجہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرایا نبی کی میں اللہ دوجہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرایا نبی کریم سلی اللہ علیہ وقم نے رقم کا کے میکودا اسپنے دائیں ہاتھ ہیں متھاما اور سونے کو بائیں ہاتھ میں مجھرار شاد فردیا ،
یہ دونوں جیزی میری امت سے مردوں پر حرام ہیں ، اور ابن ماجہ میں یہ الفاظ مجی زائد ہیں کہ : ان کی عور توں سے یہ دونوں جی

\_يے حلال ہيں

اوراماً مسلم رحمالتدروا بیت کرتے ہیں کہ رسول النّدصلی النّدعلیہ وقم نے ایک صاحب سے ہاتھ ہیں سونے کی انگوشی بھی تواسے آگر کا نگارہ لے کرا ہے ہا ہتھ میں طال لیّا ہے؟!
انگوشی بھی تواسے آبار کر بھینیک دیا اور فرمایا : تم میں سے ایک شخص آگر کا انگارہ لے کرا ہے ہا ہم میں طال النّد صلی اللّہ علیہ وم سے یہ کہا کہ انہی انگوشی اٹھالو اسے کسی کام میں لیے لینا، انہول نے فرمایا : بخدایہ ہرگرز نہیں ہوسکا۔ جب رسولِ اکرم ملی النّہ علیہ وسلم نے اسے بینک دیا ہے تھیں کے اسے بینک دیا ہے تواب میں اسے قطعًا نہیں ہے سکتا۔

اورام مبخاری حضرت مذلفیہ صنی التُدعنہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہول نے فرایا، سول اکرم صلی التُدعلیہ وہم نے ہیں ہ چاندی سے برتن ہیں پینے اور کھانے اور دیشم دریشم کپروسے پیپنے اور اس پر بیٹھنے سے منع فرادیا ہے، اور اہم سلم جرشہ حضرت علی التُدکرم التُدوجہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہول نے فرایا: رسول اکرم صلی التُدعلیہ وہم نے مجھے سونے کی اگری پیپننے سے منع فرادیا ہے۔

اور حربتم حراً مبصاس مصمراد وواصلی نمانص تیم بسے جو رشم کے کیر سے کا بنایا زوا ہو بھی مصنوعی تیم کاپہنا

یااس کااستعال کرنا حرام نہیں ہے۔

اورای طرح و گرطانجی استمال کرنا ترام نہیں ہے جورتیم وغیر تیم طاکر بنایا گیا ہو، اور دونوں کا ذران برابرہو،
اسی طرح اگر دشم سے مجول ہوئے بنائے گئے ہوں یا رسٹی دھا گے سے سیاگیا ہو یا ہوندرگایاگیا ہو یا اسے سی کپڑے
سے اندر معبر دیا گیا ہمو تو حب کک وہ اس کپڑے ہوں بالبروزان کا نہوجا ئے تو اس کا استعال جائز سہے ،اس لیے کہ
ابوداؤد حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہا سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرطایا: رسول اکرم صلی اللہ علیہ
وسلم نے اس کپڑے سے منع فرطایا ہے جونوالص رشیع سے بنا ہوا ہو ایکن اگر سی کپڑے میں رشیم سے جول ہوئے ہول
یا صرف تانا دیشم ہو تو اس سے استعال میں کوئی حرج نہیں ہیں ۔۔۔
یا صرف تانا دیشم ہو تو اس سے استعال میں کوئی حرج نہیں ۔۔۔۔

نمانص رکیٹم کااستعال ضورت سے موقعہ پرجائز سبے مثلانعارش وغیرہ کے دورکر سفے یا ہلاک کر سنے والی سمردی یاگرمی سے بچنے کے بیے، یااگراس کے علاوہ اور کوئی سائر کپڑا نہ ہوتواس سے ٹرمرنگاہ ھیپنائٹ اس بیلے کہ الم) بخاری مصرت اس رضی الٹہ بحنہ سے روابیت کرتے ہیں کہ نبی کرمیم سلی الٹہ علیہ وظم نے حضرت زہیر اور مصرت عبدالرمن کوخاش کی وجہ سے ریٹم دن کے مند میں منتہ

ببیننے کی اجازت دی تھی۔

بانی سوناا وررشیم صرف مردول سے لیے ترام بسے سکین عورتول سے لیے سونے اور رشیم کا استعال ویپنہنا جا نزسیے

کے تعبی نقبہا ، نے فائص رسیت سے ستعمال کی حرست سے قرآن کریم سے جزدان اور سیجے سے وہاگے اور بیت اللہ کے غلاف کوستنٹی کیا ہے

مياكدائمي كيدبيك مفرت على دنى الندعذك مديث ميس كزاس

سین مردوں سے لیے جاندی کی انگونظی پہننا جائز ہے بشرطیکہ اسراف کی سریک نہ پہنچے ہا ورا چھایہ ہے کا سے دائیں ہا تھے کی جوئی انگی میں پہنے اس لیے کہ اہم بخاری حضرت ابن عمرضی التہ عنہا سے ایک مدریث روایت کرتے بیل جس میں یول آنا ہے کہ بچر سول التہ ملی التہ علیہ وہم نے جاندی کی ایک انگونھی بنوائی تولوگوں نے بھی جاندی کی ایک انگونھی استعمال کی بھر عفرت انگونھی استعمال کی بھر عفرت انگونٹھی اللہ علیہ وہ مسے بعد حضرت ابو بجروعمروع تمان نے وہ انگونٹھی استعمال کی بھر عفرت عثمان سے وہ انگونٹھی اربی نامی کنویں میں گرگئی۔

مردول پرسونے ورتیم سے ترام کرسنے کی علت یہ ہے کہ مردول کو اس زنانہ پن سے دور رکھاجا ہے جومردول کی شہا ومردانگی کے خلاف ہے،ا ورساتھ ہی ساتھ اس آسودگی کے خلاف جنگ بھی ہوجائے ہوآزادی وبدراہ روی کا ذرایے بنتی ہے ا ور انسان کے نفس سے کمبر و بڑائی کی تبریم می کاش دی جائے،اور مبر جگہ وہرزمانے میں سکے کے اسلی مرکز سونے کی حفاظت معمی موجائے۔

کین اس کی حرمت سے عورتول کواس لیے سندٹی کیا گیا ہے تاکہ عورت کی نسوانیت کی رعایت ہو۔ اورعورت کی نطرت میں ودلعیت دسکھے گئے اس کی ملکیت سے جذب ہے کوبڑھایا جائے۔ اورزیب وزیزت سے مجست سے اس کے نطری جذر برلہ بیب کہی جاسکے اور ساتھ ہی حبب اس کا شوہرا سے شاندار برئیت اورخوبھورت شکل میں و کیھے تواس کا استیاق اور بڑھ جائے۔

۲- عورت سے یہ مرد سے ساتھ متا بہت افتیار کرنا اور مرد سے بیے عورت کی کشکل وصورت بنانے کا ترام ہونا:
اس لیے کہ امام بخاری اور اصحاب نن مضرت عبدالتہ بن عباس وضی النہ عنہا سے روایت کرتے ہیں کہ رسول التہ علی لتہ علیہ سے مردول پر تومردول سے علیہ ولم نے ایسے مردول پر تومردول سے علیہ ولم نے ایسے مردول پر تومردول سے مثابہت اختیار کرتی ہیں ۔ اور بخاری کی ایک روایت میں ہے کہ رسول اکرم علی التہ علیہ ولم نے ایسے مردول پر لعنت بھیج مثابہت اختیار کرتی ہیں ۔ اور ایسی عورتول پر تومردول کی مثابہت اختیار کرتی ہیں ۔

اورامام احمدوطبرانی نہل کے ایک صاحب سے روایت کرتے جی کہ انہوں نے فرایا: میں نے دیکھاکہ حفرت عبدالله بن عمروین العاص منی اللہ عنہا کامکان حرم سے باہر کے علاقے میں ہے اوران کی مسجد صدود حرم میں ہے ۔ وہ فراتے جی کہ ایک مرتبہ میں الن سے پاس تھاکہ انہول نے ام سعید بنت ابی جہل کو کمان لٹکائے مردول کی سی چال چلتے ہوئے دیکھا، تو حضرت عبداللہ نے فرایا کہ : یہ کون عورت سے ؟! میں نے عض کیا: یہ ام سعید بنت آئی جہل ہے ، انہول نے فرایا : میں نے دسول اللہ علیہ ولم سے سنا ہے آپ نے ارشاد فرایا :

ے فقہا دصنفیداس کے قائل بیں کرانگویمٹی کاورن ایک درہم (جوسوا بین گڑم سے برہرہے) سے زائد زہو۔

وه عورتني تم مين ينهيس جومرد ول كوس التي مشبهت اختيا كري اورنه وه مردجوعورتول سيس تحدمشابهيت

«ليب منامن تشبه بالرجب ل من النسار ولا من تشه بالنسار

بماريه نواجوان مردول اورعورتول مين ايك دوسري يسمشابهت اورانهي تقليد كامض بهبت عام ہوگیا ہے اس لیے تربیت کرنے والبے حضارت کوجا ہیے کہ اس ممن کابہت عمدہ اسلوب سے عل ج کریں۔ ۳- ریا کاری ، دکھاوے اور تکبر کے لیے کیٹرے پہننے کی حرمت

اس بید که امام احمد، ابودا فرونسانی رسول اکرم صلی الته علیه و مسرواریت کرست میری که آب سنے ارشا و فرط یا : 

کے روز اس کو ذامت ورسوانی کا لبائس بینامیں گے۔ تُوب مذلة بيوم القتيامية ».

ریاکاری و دکھا وسے سے کپھروں سے مراویہ سپے کہ انسان میتی اور شاندارلیاس ٹرائی کے اظہارا و فخرومباہات سے یے پہنے، اور اس میں فررہ برابرجی شک نہیں ہے کہ یہ دکھا وا اور فخرومبا ہات بمبر*واکٹر* پیلاکر تا ہے، اور التّٰہ تعالیٰ متنکبر و فخر كرسف والمه كولي ندنهي فرمات، اورنبي كريم عليه الصلاة والسلام كاارشادي،

بتخص كبرى وجست ابيف لبكس كوككسيث كرحياب

((من جنز شوبه خيلارتم ينظهر الله إليه يوم العيمة». التدتمال قياست سے روز اس كاطرت نظر يمت

نہیں فرمیں گے۔

اس بیے سلمان کو چاہیے کہ اینے لباس پوشاک کھانے پینے اور گھرسے سازوسامان میں اعتدال ودرمیانہ روی کی صهيرة كي زبرسط تاكدا ك يركبروبواني كاتسلط اورا تراسف سمه جذب كاغلبه نه بور

ایک شخص نے حضرت عبدالله بن عمرضی الله عنها سے بوچھاکہ میں کس تسم سے کپھرسے بینول؟ انہول نے فرمایا: حن ک د جر <u>سے</u>بے وقورتسم سے لوگ تمہاری نالیل زکریں اور حکما، وسمجھ لار برائیمجھیں بینی ایسے *کپڑے نہ ہول جو صداع* تدال سے

م. التُدكى خلقىت كو برسكين كاحرام بونيا

اس میے کہ اہم سلم رحمہ التّد سول اکرم صلی التّدعلیہ وہم سے روایت کرستے ہیں کہ آپ نے ارشا و فرایا : رسول التُدمسلي التُدعليه وتم سنه كودسنه والي اوركدون اللعن رسسول الله صلى الله عليد وسلم الواشمة والمستوشمية، والسواشرة

والى اوردانتون كوبارك كرسف والى اوردانتول كوبارك كرانے وال يرامنت مجمي ہے۔

والمستوشرة».

گود نے میں چہرے اور ہا تھول کو نیلے رنگ اور فیج لفش ونگارے بھا گرکر رکھ دیا جا آ ہے۔

ا ور دانتوں کا تینر اور میوٹاکر، اور اسی طرح اوروہ آپلین وغیرہ جو آج کل نوبھبوٹی سے سیے کیے جاتے ہیں نبی کریم ملی الله علیہ ولم نے ایسا کرنے والول پر بعنت بھیجی ہے۔ اس لیے کہ اس بیں انسان کو عذا ب دینا اور اللہ کی خلفت میں تغییر و تبدیلی موتی ہے۔ اور اللہ کے فیصلہ و تقدیر برعام مضامندگی کا اظہار ہو ہاہے ، اور قرآن کریم نے اس تغیر و تبدیلی کو تیمانی اثر قرار دیا ہے بس سے ذریعے وہ اپنے بیرو کارول کو گمراہ کرتا ہے:

(اوَلاَ مُسَوَنَّمَاتُ مُ فَلَيْغَيِّرُتَّ خَلْقَ اللهِ » النساء ١١١ اوران كوس معلاق م كربيس التدكى بذئى بونى موتيس.

خوبصورتی کے لیے ہوعمل مراحی کیے جاتے ہیں ان سے وہ ایرین وغیر*و ستنٹی ہیں جو اس لیے کیے جاتے ہی*ں جن سے انسال کوشی یا نفسیانی درد والم سے بچایا جا سکے مثلًا زائداِنگی یا غدود وغیرہ یا جن سے کا شیخے کا شرایعیت نے حکم دی<del>ا ہے</del> مثلًا بالول کا کا ثنا. ناخن تراشنا، زیر نافٹ سے بال کا ثنا. تاکہ لوگول <u>سے</u> شقیت دور میوا ورصفانی ستھائی حاصل ہو اورشکل وصورت بھی اٹھی رہیے۔

۵۔ دار هی موند نے کا ترام بونا

اس بیے کہ امام سلم حضرت ابوہ بریرہ رضی النّہ عنہ سے روابیت کرتے ہیں کہ انہول نے فروایا سول اکرم سلی النظمیر وسلم نے ارشاد فرمایا ہے ،مرحجین کاٹو اور داھھی برطھا وُاور اسٹس پرستول کی مخالفت کرو۔

اور ابن اسحاق وابن بريرحضرت يزيدين صبيب ضى النّه عنه سيد روايت كرست بين كه دومجوى نبى كريم صلى النّه عليه فم کے پاک حاصر ہوئے انہوں نے اپنی دافر صیال منڈائی ہوئی اور موجیس براجائی ہوئی تھیں، تو آپ نے ان کی طرف نظر اٹھا کر و کیصنایھی لیسندنرکیا اوران سے فرمایا ، برا بہوتمہارے لیے مہیں اس بات کاکس نے حکم دیا ہے ؛ انہول نے کہ کہ اس کاحکم ہمارے رب (مین کسی) نے دیا ہے تونی کریم میں التعلیہ کم نے ارشا وفرایا :

(( لکونے وبی أمسربی باعد خار کیبتی سیکن میرے رب نے تومجھے میری واٹھی بڑھا نے اور وقص شادبي ».

موجیس کاشنے کاحکم دیاہے۔

اورامام احمد حضریت ابومبر ریمة رضی النّه عنه سے روایت کریتے ہیں کہ نبی اکرم صلی النّه علیہ وقم نے ارشا د فرمایا ہے : دامرهی بڑھاؤا ورموکھیس موند ؤا وربہود ادرمصاری دراهفوااللى وجزواالشوايب ولاتشبهوا

كے سیاتھ مشاہبیت انتیارمت كرور

باليهسود والنصارى».

ا ورامام سلم ، أحمدا وراصحاب من حضریت عائشہ رضی الله عنها سے روا بہت کرستے ہیں کہ انہول نے فرمایا ؛ رسول اکرم صلی الندعلیہ وکم نے ارشا دفروایا ہے:

دسس چیزی انبیارعلیهاس کم ک سنت پیس امونحیول کا

(رعشوص الفطوة : قص الشارب

و إعفاء اللحية ، والسواك، واستنت ف الماء، والمضمضة ، وقعرب الأنلفان يغسل لبرهم، ونتف الإبط، وحمات لعسانة، وأشقاص المانس) .

کا ثنا . والمص کا بر معانی اورسواک ، ور ناک میں یائی ڈا اما اور کی کڑیا ، اور انحن کا ٹنا ، اور انگلیوں کے جوارول کو دھول اور بنل سے بال کھیڑیا . اور زیر افت سے بال کاشف ، اور پائی

## دام می کے بارسے میں چاران امامول کی آراد:

چاروں مذاہب اس بیسفق ہیں کہ دار معی کا برطهانا وا جب اور اس کامونڈ نا ترام ہے۔

ا - مضارت صنفیه کاندسید : مرد کے لیے دام حی منڈا ناسمام ہے اور نہایہ ، میں تقریح کی ہے کہ ایک مشت سے زائد کا کائنا وا جیب ہے ، لیکن اگر دار حی ایک مشت سے کم ہو تو اس کا کا منا جیسا کہ تعبض مغربی ممالک کے لوگ یانیم ننا نقیم سے افراد کرتے ہیں اسے میں بنے جائز قرار نہیں دیاہے ، اور ساری دائرے کامونڈ ا مبدوستان سے پیودلول او عجمي بارسيول كافعل ب- ملاحظه فرائي فتح القديرية

ر. مضات مالکیه کا ندمه : " دارهی کاموندُنااس طرح اس کا کاننااس وقت ترام ہے عب اس سے بصورتی دیمار کا میں منت ما پیدا موتی بردلین اگر دارمی برم جائے اور اس کے کاشنے سے بصورتی نه پیدا بوتی بموتو میضلاف اولی یامکروہ ہے: الاحظامو ابوالحسن کی تسرح الرسالة اور عدوی کا اس کا حاشیه .

سى حضارت شافعيد كاندسب : شرح العباب ميں لكھاسيد : فائدہ : ينجين فراستے ہيں كه دارهى كاموند الم مكروہ ہے اس پر ابن الرفعہ نے یہ اعتراض کیا ہے، کہ اہ کا شافعی رحمہ اللہ نے تحاب الام میں ایک سے حرام ہونے کی تعریح کی سے اور ازرعی فرواتے ہیں جمیعے یہ ہے کہ بلاکسی بیماری سے اس کا سب سے سب کامونڈ دینا حرام ہے اس طرح مذکورہ کتاب برابن قائم العبادى سے ماشيدى كمما بے۔

ہے۔ حضارتِ منا بلر کا ندیہ ب : حنا بلہ نے دام حی سے موٹڈ نے سے حرام ہونے کی صاحب کی ہے ، ان حضارت میں سے تعبض نے توبیت میں کی سبے کمعتمد علیہ قول یہ سبے کہ اس کامونڈ اعرام سبے ، در تعبض نے حرمت کی تصریح کی سبے او "انصاف كيمونف كاسكوئى اختلاف نقل نهي كيا هيد.

ہے انگلیوں سے جوٹرول سے دھونے سے سراد اوپر اور پنچے دونوں طسیدف سے جوٹر دھونا ہے اور زیرِ باف سے بالول سے وہ ، مراد بیل جوشرمگاه کے اردگرد ہوتے ہیں۔

هه الماحظ فربائية أمسّا ذِمبيل شيخ محدما مدرهمه الله كارساله وسكسع البحيسة في الإسسلام» اس مين والرحى موندُسف كي حرمت بربهبت

بہذاان امادیث بویہ اوقعتی نصوص ہے یہ بات کھل کرسامنے آگئی کہ دادھی کامونڈ نا ترام ہے، اور مسعد مزاج حقیقت کا سلامی صریح امادیث اور قوی ولائل کو دیکیے کراس سے بڑھانے سے واجب ہونے کا ہی قائل ہوگا ور داھی منڈوانے والے سے بارے ہیں سب سے کم اور معمولی ترین بات یہ ہے کہ الیا تخص جیج طایا عور تول سے مثابہت اختیاد کرنے والا یا اللہ کی خلقت کو تبدیل کرنے والا ، یا دوسرول کی اندھی تقلید کرنے والا ہے ،ان امور مثابہت اختیاد کرنے والا ، یا اللہ کی خلقت کو تبدیل کرنے والا ، یا دوسرول کی اندھی تقلید کرنے والا سے ،ان امور میں سے صرف ایک بات ہی مسلمان کو گئاہ ہیں گرف آر کرنے سے سے کافی ہے چہ جائیکہ تمام اوصا ون اس بیطبق کے جائیں ۔

التٰدتعالیٰ ہمارے نوجوانول کوسیدھا راستہ دکھائیں،اوران کے عقیدے واسلام کومضبوط فرمائیک تاکہ وہ ہمیشہ مرداگی اور کمال کے لباس کوانتیارکریں۔

۲- سونے بیاندی کے برتنول کا ترام ہونا

اس کیے کہ امام ملم اپنی صبیح میں حضرت ام سلمہ رضی اللہ عنہا سے روایت کریتے میں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سلم نے ارشاد فروایا: تخوین خص چاندی یا سونے کے برین میں کھا تا بیتیا ہے وہ اپنے پیٹ میں جہنم کی آگ انڈیلیا ہے۔

ہ اس ہے کہ امام بخاری وہم حضریت عبداللہ بن سعود وٹنی اللہ عنہ سے رہ ایت کرستے ہیں کہ انہوں نے فرمایا : ہیں نے دسول اللہ صلی اللہ علیہ وہم کور فرط نے سنا ہے :

تی منت سے روزمسیسے بخت عذاب تعویر بنانے

((إن أشدّ النساس عداباً يع القيامة

والول كوبوكار

المصورون).

وراه کم بخاری مسلم حضرت عبدالندن عمرضی المندعنهاست روایت کرست بین که رسول اکرم صلی الندعلیه وسلم فی ادشاد فرایاسید: نے ادشاد فرایاسید: جولوگ پرتھوری بناتے ہیں ان کو قیامت کے دن غلاب دیا جا کے گاکہ جوتم نے بنایا ہے دیا جا کے گاکہ جوتم نے بنایا ہے اس کوزندہ کرسے وکھاؤ۔

((إن المسندين يصنعون هذلا الصور يعذبون يوم القيامة يقال لهم: أحيواما صنعتم)).

اورا فم بخاری و کم حضرت عائنہ صی النہ عنہا سے دوایت کرتے ہیں کہ انہول نے فرایا: رسول اکرم سی النہ علیہ وسلم ایک سفر سے واکس تشریف لائے اور بیس نے گھری ایک الماری پرایک ایب بردہ ڈال رکھا تھا جس بی ہوئی تھیں ، جب رسول اکرم سی اللہ علیہ ولم نے اسے دیکھا تو آپ سے چہرے کا دنگ بدل گیا، اور آپ نے فرایا : اسے عائشہ اللہ کے پہال قیامت سے روز سب سے خت ترین عذاب ال توگول کودیا جائے گا جواللہ کی دصفت خلق میں مشابہت اختیا رکرتے ہیں ، مصرت عائشہ فراتی ہیں کہ ہم نے اس پر دسے کو کا مس کراس سے ایک یا دو تکے بنولے میں مشابہت اختیا رک مصفرت ابوطلی ضی اللہ علیہ قرم فرائے ۔ ورایت کرتے ہیں کہ انہول نے فرمایا رسول اکرم سی اللہ علیہ ولم فرائے ہیں : فرشتے اس گھریں وانول نہیں ہوئے جس میں کیا تصویر ہو۔

اورامام سلم والوداؤد و ترمندی حضرت حیان بن صین سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرایا: مجھ سے حضرت ملی والیت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرمایا: مجھ سے حضرت ملی وہی وہی اللہ علیہ وم نے میں وہی وہی اللہ علیہ وم نے میں اس کا سے لیے نہیجول سسے سیسے کے سولی اکرم ملی اللہ علیہ وم نے میں جاتھا اور وہ بہتے کہ م سیسے کہ تم سیسے کہ تم م سیسے کہ تم م سیسے کہ تم م سیسے کہ تم سیسے کہ تم م سیسے کہ تم م سیسے کہ تم سیسے کرتے ہوئے کہ تم سیسے کے تم سیسے کہ تم سیسے کے تم سیسے کہ تم سیسے کہ تم سیسے کہ

یہ احاد میٹ مجموعی بیٹنیت سے نہایت وضاحت سے ساتھ ان بات پر دلالت کرتی ہیں کہ تصاویر ومور تیال ترام ہیں خواہ وہ خواہ وہ مجسے کی شکل میں ہول باز ہول، اور خواہ وہ فوٹوگرافی سے ذریعے ہول یا بغیراس سے اور خواہ ان کوتحقیر قرندلیل سے طور بربنایا گیا ہویا اعزاز واکرام سے لیے اس سیے کہ اس میں اللہ تعالی صفت خِلق کا مقابلہ ہے۔

یان تصاویریسے درخول اوراس چیزی تصویر سنتی سیے سس میں جان نہ ہو،اس لیے کراما کاری مسلم عضر سعید بن اُبی اُسن سے روایت کرستے ہیں کہ انہول نے کہا: ایک صاحب عضریت عبدالتّٰد بن عباس شی النّٰد عنہا کے پاس آئے اورانہوں نے کہا: ممک ایک ایٹ تفص ہول کرسس کا معاش وروزی ہاتھ سے کام سے سبے اوری تصاویر بنا آبول ۔ توحفرت عبداللہ بن عبکسس رضی اللہ عنہا نے ان سے فرایا کہ ہیں تمہیں وہی بات تبلاؤل گاجو ہیں نے پولِ اکرم صلی اللہ علیہ قیم سے بن سے ہیں نے آہی لی اللہ علیہ وہم سے سنا آپ نے ارشا د فرایا ہے :

بوضعص كوئى تصوير بنائي كاتوالله تعالى استعاس وتت

یک عذاب دسے گا حب یک و و شخص اس میں روح نہیونک دسے اور او شخص اس میں بھی بھی روح نہسیں

ال *سكتا* ر

رس صورصورةً فإن الله معذبه حتى ينسعخ فيها السروح وليب بنافخ فيها السروح وليب البذا،

یسن کروشخص سخستگهبار میخه تو مصریت عبدالله بن عباس دخی الله عنهاسندان سید فرمایا :تمهیس کیا هوگیاسیداگر تم تصویری بنانا هی چاہیتے ہوتو بھر درختول اورائسی چیزول کی تصاویر بناؤ ہو غیرجا ندار ہیں ۔

تصور ول اورجسمول سے بچول سے محلونے دگویاں ستنٹی بیش اس لیے کدان سے مذتوا بنی عظمت وبڑائی کااظہار مقصود ہوتا ہے خاائی مالداری کا اظہار اس لیے کدا کا مجاری وسلم حضرت عائشہ صدیقیہ رضی التُدعنہا سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں سنے فروایا: میں رسول اللہ صلی اللّہ علیہ ولم سے پاس گرایوں دیعنی وہ محلونے بوگر یای شکل سے سنے ہوتے ہیں) سے محیلتی تھی، اور میرسے پاس میری سہبلیال آیا کرتی تھیں تو وہ رسول اکرم صلی اللّہ علیہ ولم سے جو بسیلیال آیا کرتی تھیں تو وہ رسول اکرم صلی اللّہ علیہ ولم سے جو بسیلیال جایا کرتی تھیں ، مالا نکہ رسول اکرم صلی اللّہ علیہ ولم ان سے میرسے پاس آنے سے نوش ہوا کرستے تھے میری وہ ہیلیال میرسے ساتھ آکر کھیلاکرتی تھیں ، مالا نکہ رسول اکرم صلی اللّہ علیہ ولم ان سے میرسے پاس آنے سے نوش ہوا کرستے تھے میری وہ ہیلیال میرسے ساتھ آکر کھیلاکرتی تھیں ۔

آبودا ؤدکی روایت بیس ہے کہ نبی اکرم صلی الڈ علیہ تو م نے ایک دن صفرت عائشہ سے بوچا؛ یہ کیا ہے؛ انہو نے عرصٰ کیا یہ میری گڑھال ہیں ، آپ نے بوچااان کے درمیان میں جو ہے وہ کیا ہے انہول نے کہا کہ وہ گھوڑاہے، آپ نے دریافت فرمایا: اس سے ادبر یہ کیا بنا ہوا ہے ؛ انہول نے عرض کیا یہ بُرجیں۔ توآپ نے ارشا د فرمایا کہ گھوڑاہے کے برحمی ہوتے ہیں ؟؛ توصفرت عائشہ نے فرمایا : کیا آپ نے نیہیں سنا کہ حضرت لیمان بن داؤد علیہ االس الم کے پاس ایک گھوڑا تھا جس کے برحمے ؟ تو نبی کریم میں اللہ علیہ تو میں اللہ علیہ تو کہ ہوتے ہیں کہ آپ کی داؤھیں ظاہر ہوگئیں۔ شوکانی لیمنے ہیں کہ الن ایمادیث سے میعلوم ہوتا ہے کہ گڑھا یوں کی شکل سے کھلوٹوں سے بچول کو کھیلنے کی اجازت ہے۔ البتدا مام مالک رحمد اللہ سے مروی ہے کہ انہوں نے یہ نا پسند کیا اور مکروہ جانا ہے کہ کوئی شخص ابنی ہیں گئے لیے۔ البتدا مام مالک رحمد اللہ سے مروی ہے کہ انہوں نے یہ نا پسند کیا اور مکروہ جانا ہے کہ کوئی شخص ابنی ہیں کے لیے

گڑیاں نریدسے ،اور قانسی عیامن نے کہا ہے کہ بھوتی نیکیول کو گڑیوں سے کھیلنے کی رخصت دی ٹمئی ہے۔ ایک بات کی طرف توجہ دلانا ضروری ہے اور وہ یہ کہ تصویر کو سین عزیت بنا نا اور اس کی شکل وغیرو لیکاڑ نسینے

له بشطیک و مجم تعویرا درآج کل کی بازارس بخنے وال گرم دیں کی طرح نہول۔

سے دہ توام نہیں رہتی اور اس سے انتفاع ورست ہوجاتا ہے ، اس لیے کہ اما نسائی وا بن جان ابنی سے حسی روایت بقل کرست میں کہ حضرت جبرائیل علیہ اسلام نے بی کریم سی اللہ علیہ ولم کی فرست میں حاضری کی اجازت چاہی، تو آب نے نہیں اجازت وے دی انہوں نے فرایا: میں کس طرح داخل ہوجاؤل جبکہ آپ کے گھر کے ایک پر دے میں تصاویر بنی ہوئی بی اس لیے اگر اس پر دے کو بھا وکر کھیے ما گذا بنالیں بیں ، اس لیے اگر اس پر دے کو بھا وکر کھیے ما گذا بنالیں وہیں کہ میں میں مارح وفور گرافی توقیعی وصریح نصوص وا دلہ کی وجہ سے بالکل ناجائز ہے الا یہ کہ مجبوری و مرورت ہوجیے کہ شناختی کارڈ پاسپورٹ یا مشکوک لوگول اور مجرمول کی تصویر تی ، ایک وضاحت وغیرہ کے لیے تصویر کو صلح بنایا جائے تو بیاس عمنوع چیسٹ میں یہ آتا ہے کہ صرورت کی وجہ سے ممنوع چیسٹ میں مباح ہوجائی ہے۔

اور چوکونی مکم مانے التدکا اور کس سے رسول کاسو وہ ان سے ساتھ ہیں جن برائند نے انعام کیا کہ وہ نبی اور سے مدیق اور شہیدا ورئیک بخت ہیں اور ان کی رفاقت

(( وَمَنُ يُّضِعِ اللهَ وَ الرَّسُولَ فَأُولِيكَ مَعَ الَّذِينَ اَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّيِبِينَ وَ الصِّدِيقِينَ وَالشَّهَدَاءِ وَالصَّلِحِينَ وَحَسُنَ اولِيكَ رَفِيْقًا ».

ا م - ۲۹ اچھی ہے۔

**→ >** 

جے۔ زمانۂ جاہلیت سے حرام وناجائز عقید ہے ] غیب کاعلم الٹد کے سوانسی کونہیں، وہ اپنے بندول میں سے جسے چاہتا ہے غیب پرمطلع کرت ہے۔ رہ ا رٹانی ہے:

> ا(عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلَی غَیْبِ ہَ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْنَضٰی مِنْ رَّسُولٍ )) ابن ۲۰۹۲،۰۰۰

وسی غیسب کا جلسنتے والاسبے سووہ (الیسے) غیب پر کسی کوچی کھلع نہیں کرتا ہاں البتدکسی برگزیدہ پہیر کو۔ للنزاج تنخص حقيقي غيب سيم جانن كا وعوى كرتابيه وه التداور حقيقت اورلوگول پر حبوث بانده تابه. التُّدتعالى فرمات يين :

> (( قُلُ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَاوِتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبُ إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشَعُرُونَ آيَّانَ يُبِعَثُونَ ﴿ ﴾ .

آب كبر ديجيكة اسانون اورزمين مي مبنى دمخلوق ) موجود سبے کوئی بھی غیب کی بات نہیں جاتی بحزالتہ کے ا اور زوه په جانتے بین که ده کب ددوباره) انتهائے جائی کے۔

لهذا غيسب كاللم نه فرست تول كوسيه اور زجول اورانسانول كوسوائه اس سهي جوالتُد ف انهيس تبلاياسيه. التُدتعالي عضرت سلیمان سے جول کے بارسے میں تبلاتے ہیں ، كمأكر ودغيب جاننته بوسته تؤسس ذبت كامعيت

(( أَنْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْعَبْبَ مَا لِبِتُوا فِي الْعَدَابِ المُهنِين ١٠٠٥ سباريها

اس عقيده كى بنيا ديرالتُدتعالى في درج ذيل عقيدول كوناجائزورام قراريا ب

ا. کامپنول (غیب جاننے کے دعویاروں) کی تصدیق کا ناجائز وحرام ہونا: اس بیے کہ امامسلم رحمہ الله نبی اکرم صلی الشیلیہ ولم مدروايت كرية ميل كرات فرايا:

المن أتي عبل ف فسأله عن شعبُ فصدقيه بمساقيال لسمتقبسل لدصلاة اربعين يومًا».

بھو مسی کھوی ہے یاس جاکراس سے کسی چیزے بارے یں دریافت کرے اور اس کی بات کی تعدیق کرے توال کی جالیس روزکی نماز قبول نہیں ہوتی۔

ا در سنرارس ندم بدست به الفاظ نقل کرت مین:

الرمسن أتى كاهنثا فصدقه بماقال

فقيد كضربها أنزل على معيدصلي الله

عليه وسلم)).

بو خص کسی کابن سے پاس جائے اوراس کی بات کی تھادی كريد تواس فياس ك ساته كفركيا بومحمسى الله عليه وم برنازل کیا گیاہے۔

ان احادیث سے یہ بات معنوم ہوتی ہے کہ اسلام نے صرف نجومیوں اوراس طرح کے دجالوں پر ہی یہ حکم نہیں اس احادیث کے سے انکایا بلکہ گناہ میں ان کے ساتھ ہرائس شخص کوشامل کیا ہے جوان کے تو ہمانت اور کمراہ کن باتول میں ان کی تعدیق

٧- تيرول مين فال تكاليف كى حرمت: اس كيا كدالله تبارك وتعالى فراية بي : (( يَاكِنُهُا الَّذِينَ الْمُنُواَ إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمُيُسِرُ وَ

: اے ایمان والوں یے جوشراب اور جوا اوربت اور یا سے

الْانْصَابُ وَالْازُلَامُ رِجْسُ مِنْ عَمَلِ مِيسِسِيعان كَرُندَ كَامِيسِ مِيسوان سِهِ بِهِ

الشَّيْطِين فَاجْتَيْبُولُ لَعَلَّكُمْ تَعْلِمُونَ ﴾ المائم ١٩٠ ربو اكتم نجات بادر

نمائہ جا بلیت میں عربوب سے پاس کچے تیر ہوا کرتے تھے جن ہیں سے ایک پریہ لکھا ہو ہاتھاکہ مجھے میرے رہ ہے مکم دیلہے،اوردوسرے پرنگھا ہوتا تھاکہ مجھے می<sub>سرے</sub> رب نے منع کیا ہے،اور تمیسارسادہ ہوتا تھا اسس پر کھے لکھا نہیں ہوتا تنها ان کی عادت پرتھی کہ وہ حبب کہیں سفرکرنا چاہتے، یا جنگ یا شادی بیاہ وغیرہ کرنا چاہتے توبت خانہ جاتے جہال پرتسر ر کھے ہوئے متعے اوران تیرول سے فال نکالاكرتے تھے ، جيراگروہ تير نكلاس بي كردنے كاحكم بوتا تھا تواس كام كوكراياكرتے تعے اور اگر وہ تیر نکتا جس منع مکھا ہو آتو اس کام سے رک جاتے تھے اور اگر سادہ تیر نکلیا تو مجرد وبارہ سربارہ تیز کللتے جب يك كم وسين والايامن كرسف والاتير ذكل آسك.

بمارسات کل کے اسلامی معاشرول میں اس سے مشابرلائری ، نمبر سے فرسیے کوئی چیز کال وغیرہ یائی جاتی ہیں اور یرسب جبیزی اسی قبیل مستعلق رکمتی میں اور اسلام کی نظر میں یرسب کی سب منکر ونا بیسندیدہ اور حرام ہیں ۔

طبرانی سندجیدسے بی کرم صلی الته علیہ کم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشا دفرایا:

(( کا بینال الد درجیات العسلی وضخص لبددرجات کونہیں بہنچ سکتا جونجومیوں سے پاس <del>کا</del>

من تكلون أو استقسم أوهج من يترون سفال كالديابفالى وجرس مرسوديس

سفرتطينُ)».

للبذاا سے وہیں دیکھ کیجیے۔

موسحروجادو کی حرمت: اس سیسے کہ الم بخاری ولم رسول اکرم سلی النّدعلیہ ولم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشاد فرايا :

> «اجتنبواالسبع الموبق ت» قالوا: بيارسسول الله! ومساهى؛ قسال: الشسرك بالله ، والسحسر، وقسس لنفس التحب حسوم الله إلا بالحق، وأكل الربا. وأكل مسال اليشبيسم، والشولى يوم الزحف

سات تباه کن دمهلک چیزوں سے بچو ،صحاب نے عرض کیا : اسے اللہ کے رسول وہ کیا ہیں ؛ تواکب سفے ارش د مسرویا، التد يحد التع شريك تعبرانا ورجادوه اوراس تغس كول كرنا جيسه الشرسف وم كياسه عام مق كساته. ورسود کھانا، اوریتیم کے بال کا کھانا، اور حبائک کے ون بیٹے میمیر کر میاگنا ، اورسسیدهی سادهی پاک دامن مومن عورتو*ن پر* 

و قذف المحصنات إيغاف لات المؤمنات».

زنا کی تہمت نگانا ۔

ا ورجس طرح دین اسلام نے سلان پرنجومیول ا درغیب سے علم سے مدعمول سے پاس جا کرغیب کی باہیں اور براسارِ و بین سے م ونچرشیدہ چیزی پوچھنے کی ممانعت کی ہے اسی طرح اسلام نے بیمبی ترام قرار دیا ہے کہ انسان بخی باتوں پر مطلع ہونے یا مشکلا سے مل یالوگول کونقصال پہنچانے سے لیے جا دوگرول سے پاس جائے یا جا دوکرے اس سے کہ بڑا یرسند چرید سے رسول اکم مسلی اللہ علیہ میم سے روا بہت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشاد فرایا :

الليب منا من تلمير أو تطير له،

أوتكهب أوتكهب لهاأو

سحراوسحرله».

و شخص ہم یں سے بہیں ہے ہو بدفالی سے یااس کے لیے برفالی سے جائے، یا بحوی ہے یااس کے لیے علم بحوم سے بات بتلائی جائے، یا جا دوکرے یااس کے لیے عام دکیا جائے۔

اورائن حبان اپنی میم یس رسول اکرم می الند علیه ولم سے روایت کرستے ہیں کہ آپ نے ارشاد فرایا :

(( لا يدخىل الجعندة، مسلمان خمر و كامؤمن جنت مين، شراب نوشى مين رنگارست ولا، اور بهادو پر

یقین کرسنے والا، درقطع حری کرسنے والہ داخل مرموگا۔

بسحس ولا قساطع رحسم،

تعض فقہا وکرام نے مادوکوکفر یا کفرتک بہنچانے کا ذراعی شمار کیا ہے۔ اور معض مضارت کی لئے یہ ہے کہ عاشرے کو ایسے لوگول کی گندگی سے بچانے کے لیے جا دوگر کا قتل کرنا واجب ہے اکدامت مسلمہ کے عقیدے کو فساد و زایغ اور کا دیں۔ یہ میں میں

گماری ہے بچایا جائے۔

کرلیا اورایک آدمی سے بعیت کرنے سے رک میکے ، لوگول نے آپ سے آک بارسے یں پوچھاتواک نے فرمایا ؛ کہ اس سے بازو پر ایک تعویٰ نرایک ہے اسے بعیت کرنے اسے بعیت کرنے اسے بعیت کرنے اور پر ایک تعویٰ نرایک تعویٰ براس شخص نے وہ تعویٰ اناریجین کا، تورسول الٹرسسی الٹرملیہ وکم نے اسے بعیت کرلیا اور فرمایا :

حبس نے تعویٰ لٹکا یا اس نے شرک کیا ۔

((من علق تميمةً فقدأشرك».

ٔ ورامام احمد کی روایت میں بیرانفاظ میں:

جس شخص نے تعویٰدلٹکایا تو القد سس کا کام پورا نظر اسے، اور جس شخص نے کومی یا گھوٹے اشکایا تو اللہ تعالیٰ اس کی حفاظت

(( من علق تميمةً منسلا أتسم الله مد. ومن علق ودعسةً منه أودع الله

له)).

تعونیہ سے مرادوہ تعویٰہ میں جوشرکیہ کلمات یا غیراللہ سے استعانت یامبہم الفاظ بیشتل ہول، اسی طرح وہ ٹونے گھونگے وکوٹریاں بھی جوچھوٹول برٹول وغیرہ سے اس عقید سے سے تحست ڈالی جاتی ہیں کہ بیماری کوشفادی گی یا نظر بہ سے بچائیں گی یامصیبت وشرکو دفع کریں گی ۔

ہم کتے ہی دبالول اور عیارول دھوکہ بازول سے بارسے ہیں سنتے رہتے ہیں کہ وہ سیدسے سا دسے لوگول کے لیے تعویٰ گذشے ہیں ،ان ہیں مختلف تم کے نقشے ولکیری کھینچتے ہیں ،اوران پر مختلف تم کے منتر وکامات پڑھتے ہیں ،اوران پر مختلف تم کے منتر وکامات پڑھتے ہیں اور دعوٰ کارتے ہیں کہ اسے جنول کے شراور نگاہ سکتے سے حفاظت ہوگی اور یہ تکلیف دہ چیزول اور شروغیرہ وغیرہ سے بچائیں گے۔

کین اگر تعویٰ بیس معاف تھری عربی عبار میں یا اس کا ترجمہ وغیرہ لکھا جائے یا نبی کریم ملی اللہ علیہ ولم سے منقول مشہور دعائیں یا احادیث مبارکہ سے قرآن کریم کی بعض آیات یا سور تول کے بارسے ہیں ہو ثابت ہے انہیں لکھا جائے مشان سورہ قل اعوذ برب الناس وغیرہ توبعض فقہا ہ سے یہال اس میں کوئی ترج نہیں ہے، اسسی طرح ایس اعاد بیث یا آیات اور دعاؤل سے پڑھ کر تھونے میں بھی کوئی ترج نہیں مشال بھاریا جس پرجن آگیا ہویا سانب بھونے دیں تھی کوئی ترج نہیں مشال بھاریا جس پرجن آگیا ہویا سانب بچھونے وٹس کیا ہوتواس برمعوذ تمین یا سورہ فاتح پڑھ کر دم کرنا یا جاتھ پردم کرکے جاتھ مجیرنا۔

الم انودى اورما فظ ابن جمريف ككھاسيە كەاڭرتين بالول كاخيال ركھاجائے تودم كرنا بالاتفاق سب سے يہاں جائز ج

۱- النّٰد کے کلاکم یا النّٰد کے اسما، وصفات کے ذریعے سے بو۔ ۲ ۔ عربی زبان پاکسی دوسری زبان میں ہوں کین اس کے معنی ومطلب معلوم ہو۔

١- يوعقيده ركاجائية كريدم كرناخودايي طور بيؤثرنبي بوسكما بكه اثروفائده ديين والاالتدتعالى ب

وه تعوید توجیس نبی کریم ملی الله علیه و کم نے بچول وغیرہ کی حفاظمت کے لیے سکھا ئے ہیں وہ ہیں جوا مام بحاری حضر

عبدالندبن عباسس میں النہ منباسے روایت کرتے ہیں کہ انہول نے فرمایا : مصریت نبی اکرم مسلی النہ علیہ ولم مصریت سن وین ک حفافلت کے لیے یہ پڑھاکرتے تھے :

( أعوذ كما بكلمات الله التسامة من مرتبارى مفافست كى دعاكرًا بول الله كان كالمات كه من كل شيد كما الله المسامة، ومن كل مديد بوكال وكل بي برتبيعان وموذى جانورست اور كاه برعان لاحسة ».

۵- بیشگونی کی حرمت: ، ک لیے کہ بزار وطبالی نبی کریم ملی النّدعلیہ وسم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے فروایا : (( بیس من من مست تعلیم اُوتعلیہ وہنٹس کی بیں سے نہیں ہے جو پرشگونی سے اِس کے بیے کہ اِس کے بیے کہ است منسل میشگونی ای مائے۔

اور البوداؤد، نسانی وابنِ مبان ابنی بیجے بی نبی کریم کی النّدعلیہ وقم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشاد فرایا : ((العیب افت والطب برق والطب رق من کی کیری کمنی ناء در برشگونی اور جادومنتر کے دورپر من العیب است ) .

عید فقہ نام ہے علم رمل کی تکمیری کھینچنے کا ،اور ریمی جادو کی ایک قسم ہی ہے ، جو آج بھی پائی حب آتی ہے طوق : ہم ہے اور کی ایک تسم ہی ہے ، جو آج بھی پائی حب آتی ہے طوق : بھی جادو کی ایک قسم ہے۔ طوق : بھی جادو کی ایک تسم ہے۔ بست ، سے مراد ہے وہ غیرالٹند بس کی عبادت کی جائے۔

نماز جاہدیت میں اہل عرب کوول اکوول کی آوازول اور پرندول کے دائیں سے بائیں جانب گزرجانے سے بنگونی لیاکرتے تھے،اور پر چپزی انہیں دنیا کے بہت سے کامول سے روک دیاکر تی تھیں،اس لیے نبی کریم سلی اللہ علیہ ولئے میں اس سے روک دیا اور پر واضح فرمادیا گئی فائدہ بن چپزے مصول یا نقصان دہ چیزا وراس کے ضرر دور کرنے میں ان کاکوئی اثر نہیں ہوتا بلکہ اثر و تا شیر صرون اور صرون اللہ تعالیٰ کے دست قدرت ہی میں ہے۔ ابن عدی حضرت ابو ہر پر دور اللہ والیت کرتے ہیں کہ نبی کریم ملی اللہ علیہ ولم نے ارشاد فرمایا ؛ ابن عدی حضرت ابو ہر پر دور ایت کرتے ہیں کہ نبی کریم ملی اللہ علیہ ولم نے ارشاد فرمایا ؛ دور ایک میں تب میں میں میں میں ایک دور کرلیاکروا دراللہ تعالیٰ بر دور کرلیاکروا دراللہ تعالیٰ بر دور کرلیاکروا دراللہ تعالیٰ بر میر در کرلیاکروا دراللہ تعالیٰ دور کرلیاکروا دراللہ تعالیٰ بر میر در کرلیاکروا دراللہ تعالیٰ بر میر در کرلیاکروا دراللہ تعالیٰ بی میر در کرلیاکروا

وريه على حضرت عدالله بن عمرض الله عنها عدروايت كرية مي كدرسول الله صلى الله عليه ولم في اشا و فرايا :

((صن عرض له من هذه الطيرة مينى في من هذه الطيرة مينى في الله عنه من هذه الطيرة والله في الله عنه في الله والاطيرك والمناه وال

الالعلام عدافال

اور حضرت عکرمہ کہتے ہیں کہ ہم حضرت عبداللہ بن عباسس رضی التہ عنہا کے پاس بیٹھے متھے کہ ایک پرندہ تو مجا آ موااڈگیا، تو ایک صاحب نے کہا: خیر ہے خیر، حضرت ابنِ عباس نے فرمایا، نه خیر ہے نه شمر ( یعنی اس کے اور ذکر نے پرکوئی چیزمت غرع نہیں ہوتی ہے)۔

یه تمام نصوص یر واضح کرنی بیری که وقت یا مبکه یاسی حیوان سے شگون لینا ،اسلام سے کوئی تعلق نہیں رکھتا، اور شریعت میں بڑتگونی لینا ترام ہیں اور فاعل علی الاطلاق اور تقیقی مؤثر اللہ تعالیٰ ہی ہے ، اس لیے سلمان کوچاہیے کہ اپنی منزلِ مقصود کی طرف روال دوال سے اور اپنے مقصد ومطلوب تک پہنچنے میں اللہ تعالیٰ بربھروسہ دیکھے اور برگولی اسے کوئی سے باتھ کھینچے ۔
اسے کسی کا کے کرنے سے نہ و کے ،اور نہسی ہرفالی کی وجہ سے کسی کام سے باتھ کھینچے ۔

د - کمانی وروز گاریس ترام چیزی

حب وقت الله تعالی نے نبی کریم ملی الله علیہ ولم کومبعوث فرمایاتھا اس وقت زمانهٔ جا ہلیت ہیں اہل عرب ہیں ترید وفروخت اور مالی معاملات اور تجارتی کین دین کی مختلف قسمیں رائج تھیں آپ نے ان ہیں سے بعض ایسی اقسام پرانہیں برقرار رکھا جو شریعیت اسلامیہ کے اصول وقواعدا و لران نصوص کے خلاف نہیں تھیں جو دینِ اسلام ہیں موجود ہیں ، اور بعض اسی قسموں سے روک دیا جوافرا دوجاعتول کی مصلحت سے خلاف تھیں ، جن سے بہت می برائیاں ومفاسد پیدا ہو تے ہتھے، اور جو برسے اثرات بھورتی تھیں .

### روزگاروکمانی میں جوام ماہم حرام چیزی نبی کریم صلی اللہ علیہ وہم سے قول بیں وہ ذیل میں بیٹ کی جب انی بیں :

<u>ا - حرام چیزوں کی فروختت :</u> اس سیسے کہ امام احمد والوداؤد رسول ِ اکرم صلی اللّٰہ علیہ وہم سے روایت کرستے بیس کہ آپ سفے ارشاد فرایا :

التدتعالى حبب كسى چيزكوترام قرار دسد دسية بين تواس كى

( إن الله إذ احسرم شيئًا حسوم ثمنه».

قیمت کوبھی حرام کر دیستے ہیں۔

لہٰذا شراب اور مباندار جیزوں کی مورتیاں اور سور اور گانے بجانے کے سامان کی تمام اور سلیبوں اور لاٹری سے پر چوں وغیرہ کی نعریدو فروخیت اسلام کی نظر میں حرام ہے۔ پر چوں وغیرہ کی نعریدو فروخیت اسلام کی نظر میں حرام ہے۔

ان چیزوں سے حرام کرنے میں مصلحت و مکمت یہ ہے کہ ان کوشم کیا جائے ان کانام نشان مٹایا جا سے اورلوگول کواشکے لین دین سے دورر کھا جائے، اورمعاشرے کوان سے حبمانی ونفسیاتی ومعاشرتی واخلاقی اور اسس سے ملاوہ اور دوسرے مصرا ترات ونقصانات سے بچایا جاسے توکسی عقل وداش اوربھیہرت وبھارت والے بڑفی نہیں ہیں ۔

۲ دصوکہ والی بیجے: الل لیے کہ الم مسلم اپنی سیح میں اور الم احمد و اصحاب نن مصرت ابوہر سریہ وضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ مسلم اپنی سیح میں اور الم احمد و اصحاب نن مصنوب اور الم احمد وطبانی روایت کرتے ہیں کہ زمول کرم ملی اللہ علیہ کوم نے ارشا دفر مایا :

کرتے ہیں کہ رسول اکرم ملی اللہ علیہ کوم نے ارشا دفر مایا :

مجھل کویانی میں ہوتے ہوئے زخریدوا ک لیے کداک میں دھوکہ کااحمال ہے داکس معنی پرکہ فروخت کرنے والااسے پرکو کر فریدار کے توالہ نہ کرسکے کے الاتشترواالهك سيالمد، فإنه غرر».

عرد : کامطلب یہ ہے کہ این مخل چیزوں کی فروخت جن کے انجا کا پتر نہ ہوکہ وہ ل سکتی ہیں یا نہ ہیں ؟ جیسے کہ ہمندً یا دریا ہیں موجود مجھلی یا ہوا میں اڑتے ہوئے پر ندسے کی بیع ، اس سے کہ ان جیزوں کا پچوکر خریدار سے حواسے کرنا فروخت کرنے واسے کے قبضہ میں نہیں ہوتا ہے ، اور اس میں کوئی شبہ ہیں کہ بیٹ کی قیم خریدار وفروخت کرنے والے کے درمیان افرانی مجھکو سے کا فراحیہ بنتی ہے اور ساتھ ہی ساتھ اس وصوکہ دہی کی وجہ سے اقتصادی مصالے کو بھی نقصان بہنچا ہے اور تاجروں اور کاروبار کرنے والوں اور خریدا ول میں عام اعتماد کی فضار پدا ہوتی ہے۔

۳- غبن اور قیمت برط هانے کی بنیاد برقرونوست: اس کے کہنی کریم سنی التعلیہ وم نے فرایا: (دلا خبر ہے ولا خبرار ». سندِ احدوا بنِ ماجہ ننقصان اٹھا و اور نقصان بینیا وُ۔

اسلام درآسل به چا بتا بسے کرتجارتی معاملات بیں لوگول کو خود مخیا را ور آزاد مجبور دسے تاکہ فٹرورت اور مالات کے عقبار سے اقتصادی زندگی عمدگی سیطیتی سبت، اور کاروباری زندگی بین تجارت روال دوال رسبت ،اس سلیے حبب ایک مرتبہ سول کرم مسلی النّدعلیہ ولم کے زمانے میں دام مبدت چرم ہے گئے اور نرخ برم ہے توصحابہ نے عرض کیا: اسے اللّہ کے دسول ہمارے لیے محاوُم قرر کر دیجیے تو اس تربیت و آزادی کو برقرار رکھنے کے لیے آپ نے ارشاد فرایا ا

ر إن الله هوالمسعوالقابض الباسط الوازوت ، وإنى لأرجو أن ألقى الله وليس المحدمتكم يطالبخ بمظلمة فى دم ولامال».

الله تعالیٰ بی بھاؤ د نرخ مقرد کرسف والاا ور دوسکنے اور کشت دار کشت در کرسف والا اور زن سید ، ورس یہ چاہا اور زن سید ، ورس یہ چاہا ہوں کہ میں اللہ تعالی سے ابی صالت میں موں کہ تم ہیں سے کوئی شخص مجھ سے ، ل یا ج ن کے با رسے ہیں کی فلم وزید تی

مسنداحدوا بوداؤد وترمذى وغيرو

کامغابرزکریے۔

ہے بیع مصاق کامعلی یہ ہے کہ خریدار دفرونوت کرنے والے دونوں آپس میں یہ ہے کرنس کرسے رکھی ہوئی چیزوں میں سے جس پرمعی کنگری گرے گی وہ خریدار کی موگی۔

سکین اگر بازار میں فرضی عوامل کاعمل خل ہوجائے اور ضرور بایت زندگی کی ذخیرہ اندوزی ہونے لگے . اور نرخ وبھاؤکولوگ کھلونا بنالیں اور نماص حالات سے ناجائز فائدہ اٹھانے لگیں تومعا شرے کی صوریات و حاجب کو مدنِظر سكهتے ہوسئے نرخ مقرر کمناا وران كاكنٹرول كرنا درست سبے تاكہ قوم كے افراد كو ذخيرہ اندوزوں اور موقعہ سے فائدہ اٹھلنے والول سينجايا جاستك مبياكه دورسه عام اصول اورشرعي قواعد كافيصله بيرمشلا جيب كدير قاعده سبيركه فسا دكود وركم فالمحت ومنفعت كعمال كرسف برمقدم ب اورجيك مدية قاعده ب كرنقصان دورزنقصان المحاؤر

فقها رحنفید نے یہ طے کیا ہے کہ اگرغلہ کا کارو بار کرنے ولسلے بازار میں اپنی حکم انی چلاتے ہول اور قیمت میں بہت زیادہ زیادتی کریتے ہوں ،اور قاصنی وحاکم بغیر کنٹرول اور نرخ مقرر سیے مسلمانوں کے حقوق کی حفاظت مذکر سکتا ہو تواہی صورت بیں اصحاب بھیرت اور ذی اِسئے حضارت سے مشورے سے نرخ مقر کرسنے ہیں کوئی ترج نہیں سیے، الاحظہ ہو

فقیحنفی کی کتاب ہواتیہ ۔

سى و خيرواندوزى كى بنياد برفرو خست: اس سيسه كه الم احمدوحاكم وابن ابى شيبه رسول اكرم صلى التّه عليه ولم سه روايت كرية بي كه آب في ارشاد فرمايا:

بوتغص چالیس رات تک غل کی ذخیر اندوزی کرسے گاوہ اللہ

((صن احتكس الطعام أربعين ليلةٌ فقد

سے بری بوا ا ورائٹرتعالیٰ اس سے بری بوا۔

برى من الله وبرى الله مند ).

اورا ما مسلم رحمه الندنبي كريم عليه الصلاة والسلام سه روايت كرسق بيل كه آب فيه ارشاد فرمايا ؛ د خیره اندوزی بهیس کر ماسکه خطا دار .

((لايحتكس إلاخا لمئ».

یہاں خطا وارسے گنام گارخص مزاد ہے اس معنی میں تفظ خاطئ النٰد تعالیٰ کے درجے ذیل فرمان میں استعال ہوا ہے۔ ((إِنَّ فِرْعَوْنَ وَ هَامْنَ وَجُنُودَهُمَا كَانَوُا خَطِينَ ». ب شک فرعون ، ور إمان وران كے تالعين (برسے ،

ا ور ابن ماجه وحاكم نبى كريم على الته عليه ولم سب روايت كريت بي كرآب ندارشا دفرمايا:

موضعف غله بازاريس لأناب اس كورزق دياجا باب، ورجر « الجالب مرزوق والمعتكرملعون».

ذفيروا لدورى كمرباسي وهلعون سبےر

: ذخیرواندوزی کامطلب به به یه که تا بزایسی چیز ذخیره کرست سب کی توگول کوسخت ض<sup>و</sup>رت بوتاکه مناسب وقت پرحسب منشأ دام وصول کرسکے،ای دخیروا بدو زی سے منوع ہونے ہی عمومی طور سے تمام غذائی اجناس شامل ہیں۔ ذخیرہ اندوزی کی ممانعت میں مقامی عص کا باہروا سے کے بیے فروخت کرنامی واحل ہے اس لیے کہ اما مسلم میول التمملی ائتدعلیہ حکم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشاد فرمایا ؛کوئی مقامی اورشہر کا رسینے والا آ دمی

کسی دیہات کے رہنے واسے آدمی کے لیے خرید و فروخت نرکرے اوگوں کوچیور دو تاکد بعض کے ذریعے درق ماصل کرسکیں ، اس کی صورت یہ ہوتی ہے کہ کوئی امینی خص باہر سے یاکسی دیہات سے ایسا سالان سے کرآ آ ہے ب کی لوگول کو ضرفررت ہوا وروہ اس دن کے بھاؤ پر پیچنا چاہتا ہو تو وہال کا کوئی مقامی آدمی اس کے پاس آئے اور اس سے کھتم اپنا سالمان میرے پاس رکھ دو تاکہ میں اسے آرام سے معنے دامول پر فروخت کر دول ، اگر وہ دیہات کا آدمی یا باسر کا آدمی خود بچیا توسستا بیچا اور شہر والول کو فائدہ پہنچیا اور وہ خود بھی فائدہ اٹھا آ۔

3. دهوگر دی سے فرونست کرنا: اس لیے کہ امام سلم رسول النہ ملیہ ولی سے روایت کرتے ہیں کہ آپ ملیہ ملیہ ولی سے روایت کرتے ہیں کہ آپ ملیہ علیہ ولیم ایک صاحب سے پاس سے گزرسے ہو غلہ فرو خت کرر ہے تھے ، آپ کوغلہ اجھامعلوم ہوا ، آپ نے اس وصر سے اندر باتھ مالا تواس میں کی ممسوس ہوئی توآپ نے فرایا : اے غلہ والے یہ کیا بات ہے ؟! اس نے کہا : یہ بارش سے ہویگ گیا تھا، تو نبی کریم ملی النہ علیہ کم نے ارشا و فرایا : تم نے اس بھیگے ہوئے غلہ کوغلہ کے اوپری مصر میں کیون ہیں میں گھا تاکہ لوگ اسے دیکھ لیتے ہیں نے ہمیں رہینی مسلمالول کو) وصوکہ دیا وہ خص جم ہیں سے نہیں ہے۔

دھوکہ دینےکامطلب یہ ہے کہی چیزکواس کی حقیقت سے خلاف اس طرح ظامرکیا جا سے جس کاعلم خریار کو نہ ہو، حاکم وہیقی رسول اکرم صلی الٹرعلیہ ولم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشاد فرمایا :

کمی شخص کے بیے یہ جائز نہیں ہے کہ وہ کوئی چیز فردفت کرے گریکہ اس میں جوعیب ہووہ بیان کردے اور ج یہ عیب جانیا ہو اس کے بیے یہ علال نہیں کہ دہ عیب کو

رر لأيحل لأحد أن يبيع بيعًا الأسيع بيعًا الأسيع بيعًا الأسيع بيعًا الأسيع بيعًا الأسيع بيعًا الأسيع بيعًا المن يعلم ذلك إلا بين ».

وصوكه وتبى ك اقسام بيس مسيم تولنا اوركم ناينا تعبى بيد ،اس ميل كدالله تبارك وتعالى فرمات بين : بڑی خزنی ہے (ناب تول میں) کمی کرینے والول کی کہ حب بوگول سے اپ كرلى بودائىلى اور عب نہيں ناب كرياتول كردي توكف دي . كيد انهيب اس كايقين بي كه وه زنده المُفاست جائيل كه ايك برسيس خنت و ن ميرس ون کددتم م بوگ پروردگارے روبرو کھوسے ہوں گے۔

( وَنِيلُ لِلمُطَفِّفِينَ أَ الَّذِينَ إِذَا أَكْتَالُوا عَكَ النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ﴾ وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْوَزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ﴾ أَلا يَظُنُّ أُولَيِكَ أَنَّهُمْ مَّبُعُوْتُؤُنَ ۖ لِيَوْمِ عَظِيْمٍ أَيْنَوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَلِّينَ \* ».

" تطفیف کے عنی بین تجارت کین دین اور خریدو فروخت میں کم نا بناا ورکم توانا، قرآن کرم نے ہمارے لیے ال قوم کی مالت بیان کی ہے جس نے معاملات میں زیادتی کی اور نائب تول میں انصاف ہے ہے ہے ہے۔ اور لوگول کو جیزیں اُ کم کرے دیں . توانٹہ نے ان کے پاک ڈرانے اوران کوعدل وانصافت وسیدھے راستے پروائیں لانے سے لیے اپنے بی كو بهيجا۔ يه لوگ حضرت شعيب عليه السلام كى قوم شعيح جن كوالله كے نبى مضرت شعيب عليه السلام نے دعوت حق دی اور *ڈرایتے ہوسئے فر*ایا :

تم لُوگ ہو۔ نا پاکرو ا ورنعقعا ن پہنچانے واسے نہ بنوا وہیجے (( أَوْقُوا الْكَبْلِ وَلَا تَكُوْنُوا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ وَزِنُوا ترا زوسے تولاکرد ، اورلوگول کانقصان ، ن کی چیزوں بِالْقِسُطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ وَلَا تَبْغَسُوا النَّاسَ أَشْيَا إِن هُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴾ أَشْرِ. میں نرکیا کرور اور ملک میں فسادمت مجایا کرور ۲ بچوری وڈاکہسے مال کاخرید ایا بیجنا : اس سیے کہ بیقی رسول اکرم صلی التّٰدعلیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں كه آب نے ارشا دفروایا:

حب شخص نے کوئی جوری کی تبیز خریدی ا وراس کومعلوم مجی ہوکہ وہ چیز پوری کی ہے تووہ خریدار کھی اس گناہ اور

لامن اشترى سسىرقسةً وهوبيلم أنهاسرقة فقداشترك في إثبها وعارها)).

عارمین شریک بوگیار اس قسم کی خرید و فروخست سے حرام کرنے کامقصد حرام کمانی کے دائرے کو ٹنگ کرنا اورمعاشرہ سے انسراد کو حبسهم ومجرمول کی بینج تنی کی ذمه داری اشعالنے میں شریک کر اسہے۔

، مسودا ور مجوسه محدرا مستع مسع کمانا: اس مینے کدالتد تبارک و تعالیٰ ارشاد فراست میں:

((بَاكِيُّهَا الَّذِينِينَ الصَّنُوا اتَّقُوا اللهَ وَذَرُوا مَا بَقِي مِنَ الرِّبُوا إِنْ كُنْنُمُ مُّؤُمِنِينَ ﴿ فِإِنْ لَهُ رَّفْعَلُوا فَأَذَ نُوْابِحَرْبِ مِّنَ اللهِ وَرَسُولِهِ

اسد ايمان والوائندسي دروا ورجيور ووسوكي ماقى ره گیا ہے سود اگرتم کویقین ہے اللہ سے فرانے کا بھراگر نهيس جهوات توتيار بوجاؤ التدسيع اوراس كرسول سے روسنے کو، اوراگرتو بکرستے ہوتو تمہارے واسطے ہے اصل مال تمہا یائے تم کسی پڑھم کروا ور مذکوئی تم پر۔

اللہ کے رسول صلی اللہ علیہ وہم فیصل و اسے اس کے کھن نے واسے اور اس کے مکھنے واسے اور اس کے گواہوں کے ملے فیصلے واسے اور اس کے گواہوں کی لیعندے کیا وہیں برابر سکے براغز میں برابر سکے اور فروایا کہ یہ سب گذا وہیں برابر سکے اور فروایا کہ یہ سب گذا وہیں برابر سکے اور فروایا کہ یہ سب

وإن نُبتُغُ فَلَكُوْ رُءُوسُ آصُوالِكُولَا تَظُلِبُونَ وَلَا تُظُلِبُونَ الْعَوْدِ ١٠٩٥،٠٠ وود ١٠٩٥،٠٠ وولا تُظلَبُونَ الله والمراس يحدرسول الرم على التدعلية وم فروات مين ولا لعن رسول الله صلى الله عليه وسلم الكالربا وموكله وكاتبه وشهاهدية وفساهدية وفسال: ههم سواء».

صيخصتم ومسنداحمدوكتيسن

دین اسلام نے سود کو حو حرام کیا ہے یہ حرمت ہر تسم سے سودی کا و بار کو شامل ہے خوا ہ او حار کا سود ہویا نہادتی واللہ، خواہ سود مال بڑھانے والا ہویا مال کم کرنے والا بخواہ سود تھوٹی سے فائدہ والا ہویازیادہ فائدہ والا سود کی یتما اقسام سود کی حرمت سے اس مندرجہ ذیل فرمان ابھی کے تحت دانمل ہیں :

للْدن سوداگری کوحلار کیا ہے اور حرم کیا ہے سود کو۔

(( اَحَلَّ اللهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبُ) المقرد ٢٠٥٠

### اوراسلام نےمندرجۂ ذیل امورکی وجہ سے سودکوترام قراردیا ہے:

اس یے کہ محنت اور تمرہ تھیل کے درمیان تقابل وتوازن بہیں رہا، اس یے کہ سود نور قرض دینے والا نہ اس یے کہ محنت اور تمرہ تھیل کے درمیان تقابل وتوازن بہیں رہا، اس یے کہ سود نور قرض دینے والا نہ مدوجہد و محنت کرتا ہے نہوئی کا جا ور حوکچھ کما آا ورس نفت کو حاصل کرتا ہے اس میں خسار سے کو برداشت نہیں کرتا ہے۔

- سرما ہے۔ ہ معاشرہ کا اقتصادی ڈھانچہ ڈہ جاتا ہے اس لیے کہ قرض دینے والاکا) کائے سے پیکچا تا ہے اور سستی و اوست کا دلدہ ہوجا کہ اس لیے کہ اسے اپنے نفع وفائدہ کی لائج ہوتی ہے۔ اور سودی گورکھ دھندے سے ذریعے قرض دار کودہا نا و مجنسا نامقصود ہوتا ہے۔
- معاشرہ کے انون کا جنازہ نکل جاتا ہے۔ اس لیے کہ مودی تعلقات کی وجہ سے معاشرے کے افرادیں باہمی تعاول نہیں ہوجاتا ہے۔ اس معاشرہ کے افرادیں باہمی تعاول نہیں ہوتا جس کی وجہ سے معاشرہ نحراب ہوجاتا ہے اور اس میں قربانی جانثاری ایٹار و مجت کے بجلئے انائیت

که دھارسے سودکوربالنسینہ اور ربادہ کہا ہا ، ہے سب سے مرد مروہ زیادتی ہے جوقر فندار قرض خوا ہ کوافل مال سے زائدکی شکل میں دیّ ہے اس ہے کہ وہ اسے ایک تعین مرمت بھک کی مہدت دسے دیّا ہے

یہ زیادتی والاسود جے رہاا تعفل کہتے ہیں، س کا معلب یہ ہے کہ ایک ہی منس کے غلے یا نقری کا ایک دوسرے سے کی سیٹسی سے ساتھ تباد نہ کرنا جے مثلاً ایک کلوگندم کا تبادلہ ڈیرٹ ھوکلوگندم سے ۔ اورابين فائده كودوسرول برترجيح ديين كامرض عام بوجاتاب.

معاشرہ دومتنازے طبقول میں برط براتہ ہے ایک طبقہ ان لوگوں کا بواپنے مال ودولت کے بل بوتے برلوگول پر محکومت وبرط ای کرستے میں۔ اور دوسرا طبقہ کمزور ونا توال غربول کا جن کے خون پیپنے کے بیسے کو بلائق ہفتم کرلیا جاتا ہے۔

اسلام معاشر سے وما حول میں باہر سے درآمد کر دہ تباہ کن انحادی نظریات برط پر طرف سکتے ہیں ہاں لیے کہ وہ اسس کمنے حقیقت سے فائدہ اٹھا تے ہیں بو حوام و ناجائز سودی معاملات کے نتیجہ میں وجود ہیں آئی ہے۔
ان تمام وجوہ کی وجہ سے اسلام نے سود کو حوام قرار دیا ہے اوراسے بیرہ گنا ہوں میں شامل کیا ہے اوراس کے لینے والے کو قیامت تک کے لیے اللہ اور فرشتول اور تمام لوگول کی لعنت کا متی قرار دیا ہے۔

## رباوسودسے بیخے کے لیے اسلام نے کچے راستے متعین کیے اور تعین کیے اور تعین کیے اور تعین کیے اور تعین کیا ہیں نے اور تعین کی کارٹری کارٹری کی کارٹری کارٹری کارٹری کارٹری کی کارٹری

ا۔ اسلام نے مضاربت کے طور پر تنرکت کی اجازت دی سے بہ سیاں مربایہ ایک شخص کا بوتا ہے اور کا م دوسرا آ دمی کرا ہے ،اور آپس میں طوشرہ مقدار سے مطابق نفع ان دونوں آ دمیوں سے درمیان مشترک ہو ہاہے اور نقصان سربایہ دار کا ہو ہا ہے بہکن کام اور محنت کرنے والا اس خسارہ بیں کسی مصد کا ذمہ دار نہیں ہو تا اس لیے کہ اس نے اپنی مبدوِ جہدا ورمحنت صرف کملی ہوتی ہے۔

۲- بین سلم کی اجازت ، اس میں نقد کوا دھا رہے بر لیے بیجا جاتا ہے۔ للہٰ السِ شخص کو پیپول کی صرفریت ہوتی ہے وہ اپنی پیدا دارکوموسیم وسیزن پر دسینے سے وعدہ پر مناسب دام سے بدسائیج دیتا ہے۔ میں کی شروط فقہ کی محت ابول میں مذکور ہیں۔

۳- او حاربر بیخنا، اس میں نقد بیجنے کی بنسبت قیمت بڑھا کر بیچا جاتا ہے۔ اسلام نے لوگول کی صوریات کو دکھتے ہوئے اور انہیں سو دی معاملات سے بچانے کے لیے اس قسم کی خرید و فروخت کی اجازت دی ہے۔

۲ مے قرض منہ دینے والے ادارول کے قائم کرنے برا بھارنا، نحواہ بیر قرض افراد کے بیمیاز پر دیا جاسے یا جاعات یا حکومت کے بیمیاز پر ،اوراس کامقصد یہ ہے کہ قوم سے افراد میں ایک دوسرے کا بوجے برداشت کرنے کی عاد یہ بیار ہو۔

۵۔ زکاۃ وخیارت کے ادارسے قائم کرنا جن کاکام یہ ہوکہ متاج قرض داروں ، غربوں ، مساکین اورسافرو کو آنا رو پہریپید دسے دیا جائے سسے ال کی حاجت پوری ہواور باہمی امداد ہوسکے اور ان کامعیار بلند ہو۔ یہ وہ اہم ابواب ہیں جواسلام نے معاشرے کے ہرفرد سے سامنے معول رکھے ہیں تاکہ اس کی امداد ومعاونت بوسکے اوراس کی انسانی کوامست وشرف کی حفاظست ہو ،اور وہ اپی ض*وریات ب*وری کرسکے ایسے مقصو د کوجاس ا در اپینے مصالے کی حفاظ مت کرسکے ، اوراس کی محنت اِ درجدوجہ مثمر ہور ر با بوا تواس کی بحدث اس کتاب میں حرام کھیل کو دکی بحدث میں گزر تھی ہے، اس لیے اگراس سلسلہ میں آپ كافی وشافی بحدث دىكيصنا بيا بيس اوراس كاكامل مكمل علاج كرنا چابيس تواس بحست كود مكيمه يسجيه كار

<u>لا بجابل دورکی ناجائز وترام عادات</u>

ان کے نفوس اور گھرول میں جاگزینِ ہوگئی ہیں ، بلک معض لوگول کی نظریس تو وہ اتباع و پیردی کے کیا ظ سے دین کی طرح اوراعتقاد سے بھانط سے ایمان کی طرح ہوگئی ہیں، اور مزے کی بات یہ ہے کہ وہ بہمجھتے ہیں کہ وہ بہت ا چھا کام کرر ہے ہیں۔

## زمانهٔ جامبیت کی جندایم ایسی عادات قصلتین موجکم بروکی بین:

<u>ا عصبیت کی بنیا دیرمددکرنا : حِس کامشاہرہ ہم ان معاشوں میں کرستے ہیں جو دینی لحاظ سے پیجھے ہیں ۔ ہم</u> د کیمتے ہیں کہ وہ اپنی قوم اور قرارت دارول کی ہرصورت میں مدد کرتے ہیں خواہ وہ حق پر ہوں یا باطل پر ۔ یبی وہ چیز ہے سب کی وضاحت نبی کریم ملی اللہ علیہ و کم نے ان صاحب کے سامنے کی تھی جنہول نے آہے۔ عصبیت سے بارسے ہیں دریا فری کیا تھا، چنانچہ ابوداؤد حضرت واثلہ بن الاسقع صنی اللہ عندے روابت کرستے ہیں کہ انهول نے کہا میں نے وض کیا اے اللہ کے رسول عصبیت کیا ہے؟ تو آپ نے ارشا و فرایا :

يە كەتم ظلم يىل اپنى قوم كا ساتھ دو ـ ((أن تعين قومك على الظلم)).

اس طرح آب نے ان لوگول سے بری الذمر ہونے کا اعلان کیا ہے جوعصبیت میں گرفیار موستے ہیں فرایا:

وتنمص ميم ميل سينهي سي جوعصبيت كاطرف ررليس مناس دعاإلى عصبية ،

بلائے، وروہ مضص ہم میں سے ہیں ہے جوعفسیت و ليس منا من حاتل على عصيية کی بنیاد پرجنگ کرے ، اور وہ تخص ہم میں سے نہیں

وليس منامن مسات على عصبيدة».

بير جوع عبسيت كى بنياد يرمرس

جیساکه نبی کریم ملی النّدعلیه ولم نے «انصِراُخاك ظالمًا أومظلوماً » نین ایسے بھائی کی مدد کرونواہ وہ ظالم ہویا مظلوم كازمانهُ جامِليت واستصفهم كادخ اسلام كى طرون بچيردِيا چنانچدا في بخارى دوايت كريت بي كدايك مرتب حصنوراً قاتر

مهلی التدعلیه وم نے ان حضرات سے سلمنے جوآپ سے اردگر دین<u>تھے تھے ی</u>ے فرمایاکہ :تم اسپینے بھاتی کی مدد کر وخواہ وہ ظالم بهویامظلوم بو لوگ بیسن کردم شدت زده بهوسکت اورتعجب میں پڑھکتے۔اورعرض کیاا سے التد سے رسول: اپنے مظلوم کھانی كى مددكرنا توسمجه يب أياب الكروه ظالم بوتواس كى مددكرين كاكيام طلب ب توآب ن فرايا:

تم اس کوظلم سسے روک دومہی سس کی مدد کرناسہے۔

((تمنعه ص الظلم فذلك نصرله)).

حق کے نابت و محقق کرنے اور عدل وانصاف کو ہرمیورت میں لازم پیرطب نے خواہ ابینے قریبی عزیز یا مجوب ترين فردى كے خلاف كيول نربواس سلسله ميں قرآن كريم نے تنى عجيب وظيم إت لهي سيے: ( يَا يَهُ النَّذِينَ المُنُواكُونُوا قَوْمِ بِنَ بِالْقِسْطِ شُهَدًاءَ السايان والوقائم موانصات بركواى دوالتدى ون ك

يِنَّهِ وَلَوْ عَكَ أَنْفُوكِ مُ أَوِ الْوَالِكَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ ) إِنَّ الرَّمِيْقَان بُوتَمِا إِيمال بب كاية رابت دارون كار

٧- حسب نسب برفر كرنا: جن توكول مي نعير و بعلائى كاكونى وافر حصنه بي بيدان مي مسب ونسب برفخرو برائ کا دعوٰی اکٹر سینتے رہیے ہیں، میکن آپ ہی بتلاہیے کہ اگرایسے لوگ اسلامی داستہ ہے ہیٹ بھائیں اور گمراہی وتباہی کے راستے کواختیار کرلیں تو پھر حسب نسب کی کیا قیمت اور قدرومنزلرت رہ جاتی ہے کیاالتدتعالی نے یہ ارشا دنہیں فرایاہے،

الْ فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ، فَلاَ الْسَابَ بَنِينَهُمْ بِيرِبِ مورمِيدَ كَامِا سَدُ كَاتُوس روز ذان كه درميان

دشتے نکے رہیں گے اور نہ کوئی کسی کوبی بھے گا۔

يُوْصَيِنِ وَكَلَّ يَنْسَاءَ لُوْنَ ﴿ ) ﴾ . المؤمنون . الرا

نبى كريم ملى النه مليه ولم في ان توكول كونها يت سخنت الفاط بين نبيه كي سب جوسب نسب برفخ كرست مين ایسے توگول سے بارسے ہیں نہایت مت دیرجہ اور تیززبان استعال کی ہے جنانچہ ابوداؤد و ترمذی روایت کرستے ہیں كراتب في ارشاد فرايا :

> ((لینتهاین اُ قسوام یفتخرون بآبانهم الهذين ما توا. إنماعه فعهجهنم أوليكونن أهون على الله من الجعل يدهده الخسرع بأنفه .. إن الله أذهب عنكم عبية المجاهلية وفخرها بالآباء . إنماهو مؤمن تعَى أوفاجرشتى ، النباس بنبوآدم وآدم خىلتىستىراپى.

چاہیے کہ قومیں ا پہنے ان آباء واجداد پرفخ کرسنے سے رکھائی جومر علي بير، ووجهنم كاكونوي، ورز (ياقومير) الله كالنوير اس چیچڑی سے زیادہ تقیروذسل بن جائیں گی جوپافانہ کواپی ناک سے اوھراوھرکرتی ہے۔ اللہ تعالیٰ نے تم سے زمانہ کا مبیت کے نخوت وغرورا ورآبار واجدا دېر فخرکو دور کرديا بيد، بات په ب كه يا تواسسان ليك تعلى مؤمن بهو كايا بد مخست و فاجرو فاسق سب لوگ اولادِ آدم بیں اورحضریت آدم مٹی ستے پیدا کیے

اور ہمیں وہ خطبہ بی سن لینا چاہیے جوآپ نے جمۃ الوداع میں لوگوں سے بنیا دی حقوق کے سلسلمیں ویا تھا فرایا ؛

ودياأيها النامس إن ربكم واحد، وإن أماكم واحداً الالافض لعربي على عجى، ولالتجي على عربي، ولا لأحسر على أسود. ولا لأسودعلى أحمر إلابالتقوى)).

*ذنگ ولسلے کو کا سے ہ*ر، اور ن<sup>رس</sup>ی کا لیے کو *سرخ پر*فغیلیست مال سے سوائے تقوی دیر ہیز گاری کے ۔

اے توگو ہے شک تمبارارب ایک ہے۔ اور تمبارا بایب ایک

ہے سن وکسی مربی کو کو عجمی پراورز سی عجمی کوعربی پر، اور زسرخ

<u>4- مرینے والول پر نوحکرنا :</u> جن عادات کی اسلام سنے بینے کنی کی سبے ان میں مُردول پر نوحہ کر ناتھی شامِل ہے جنائجہ غم ا *در تزان ملال سے اظہار پی غلوکر نا مشلا چیرسے پر تھے۔ طو*ار نا گریبان بھاڑنا، چیرسے کونوجیا ، یرسب زانہ جا جسیت کی حرکات ا ور اس کی موروثی عادات ہیں بچیخص ایساکریا یا اس طرح سے انلہاغم کرنا ہے نبی کریم سلی التُدعلیہ ولم نے اسے برارت بسیزاری کا اظہار كياب، جنائجه الم بخارى مصرت عبدالندين مسعود منى التدعنه سدروايت كرية مي كذي كريم لى التعليد فم في ارشاد فرايا: الاليس منامن لطسم المغدود وشق الجيوب

وہ خص ہم میں ہے ہیں ہے جو جہرے کو پیٹے اور گریب ن

ودعا بدعوى الجاهلية)).

يهاشدادرزمانه جابليت كمنعب بلندكه

ليكن وجنح وليكار سي بغيراكراً نسوبهائ بائر اورجزع فزع كالغيراكردل بي تزن والال موتويه بالكل جار بهاس یے کہ یہ اسلامی آ داب اورانسانی وبشری طبیعت سے وافق ہے جنانچہ ام بخاری حضرت عدالندین عمرضی التعنها سے روايت كرية بين كدانبول في فرمايا : حضرت معدين عباده رضى النّدعنه كوكوني تكيف بركّني ، نبي كريم لى النّدعليه ولم مضرت عبد الرحمٰن بن عوف مسعد بن ابی و قاص وعبدالتدین مسعود منی الته عنهم سمے سم اوان کی عیادت سمے کیے شراف السنے . حبب آپ ان سمياس سكة توآب في انهين البين كارك افراد سك درميان باياآب في يوجهاكيا رحلت كرسكي بين و انہول نے کہا : جی نہیں اسے الٹرکے رسول ، پیسن کرنمی کریم سلی الٹرعلیہ وسلم رونے لگے ۔ جن دومرسے لوگول نے آپ کو رویتے دیکیعا وہ بھی رہنے لگے، تو آپ نے ارشا د فرایا ؛ کیاتم لوگ سنتے نہیں ہو ؟ اللہ تعالیٰ آنکھول سے انسوبہانے دل ے مکین بونے پر عداب نہیں دیتے ہیں ،بلکہ اس (زبان) کی وجہ سے عذاب دیتے ہیں یا رحم فرماتے ہیں ،اورمر نے <sup>وا</sup>لے کواک سے تھر باریے لوگول سے رونے کی وجہ سے عذاب دیاجا آ ہے۔

### نوه برکام کے سلسلہ میں سرج ذیل امور پر نبیہ کرنا ضرف ی علم ہوا ہے:

ا یسنی سلمان مردیا عورت سے لیے بیرجائز نہیں ہے کہ وہ سوگ اور حزن وطال سے لباس یا شعار کواستیمال کر<sup>ہے</sup> ا درسنے پیٹرسے والاستنگی اورزیب وزینت چیوٹر دسے. یاغم سے افہارا ورحزن وطال سے دیا ز کرسنے سے لیے اپنی عاد<sup>ت</sup>

اے رونے سے مراد نوسہ کرنا اور ابنداَ وازسے ، و وکا کرنا ہے ۔ اوراگرمرنے والا اس طرح سے رونے کی وصیت کرسے یا اس پرداختی ہو تو س دوسفے کی وجسے اسے مذاب دیا جائے گا

یالباس اورمبیت سابقه کوبل وسے .آک بیلے کریہ کافروں سے مشاببت اور اندھی تقلید سے قبیل سے ہے۔ چنا بچہ الم ترمندی حصرت عبدالتٰد کن عمرورضی التٰدعنعا سے دوایت کرتے جی کرنم کریم ملی التٰدعید ولم نے ارشاد فرایا :

(( لبسب منسا میں خشید بغیریت مشابد انعیار کردے تم پیودونعا کی مشابهت انعیار کا تشبه ہوا سب الیہ ہود و لا بالنصاری ) .

ب ب ی*د مت کرو*ر

ا وراماً احمدوابوداؤد صفرت عبدالله بن عمرض الله عنها سيدروايت كرسته بي كه رسول الله صلى الله عليه ولم سف ارشاد فرايا:

((من تشبه بعض فهومنهم)) . جوشخص کی قوم سے شاہرت انمتیارکرتا ہے تواس کا تار نیم میں ہوتا ہے۔ نیم میں ہوتا ہے۔

۲- دوسرول سے مشابہت اورا نرحی تعلید میں میت کی تعش یا قبر برچھولوں کی چاور برخیوانا بھی داخل ہے ، ہس کے بری کا کے نہ مون یہ کہ کا فرول کاعمل ہے بلکہ اس کے ساتھ ساتھ اس میں ناحق مال کوضا کئے کرنا بھی داخل ہے بلکن اگر قبر برحچولوں کی چا درسے بجائے چولدار درخت یا کوئی پودا کا دیا جائے اورغیروں سے اس میں ہی قسم کی مشابہت نہ ہو تو ایساکر نا درست ہے سنت نبوی سے اس کی اباصت و تا ئیرمعلوم ہوئی ہے ، پنانچہ اما مسلم حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنبواسے دوابرت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرایا: رسول اکرم مسلی اللہ علیہ ولم دوقبروں کے پاس سے گزرسے تواپ نے ارشاد فرایا کہ: سن لوان دونوں کو عذاب دیا جارہا ہے ، اللہ علیہ ولم میں ہوئی جیزی وجسے عذاب نہمیں دیا جارہا ہے ، اللہ میں سے ایک آریا تھا، دادی ہے ہیں کہ میں سے نہیں بچاکریا تھا، دادی ہے ہیں کہ میرنی کریم میں اللہ علیہ ولم سنے مورک کے ایک تبریس کا گردیا اور دسری قبریس میرفرایا : ممکن سے اللہ وقت تک سے بیے عذاب قبریس تعفیف فرادسے ب الدون میں ہوئی ہوئی ہے بدونوں شہنیاں سوکھ نہائی ۔

۳- دوسرے سے مشاہبت واندی تقلید میں مرسنے والے کی تصویر کانعش پررکھنایا اس کا تعزیت وسوگ والے گھر سے صدرمقام پررکھناجی دائل ہے، اس لیے کہ اس کام میں دوسروں (غیرسلموں) کی حرف اندی تقلید ہی نہیں ہے ملکم اس میں ترام کا ارتکاب مجی ہے اس لیے کہ بلا ضوررت تصویر بنوا نا اسلامی نقطۂ نظرسے ناجائز وحسسوام ہے جیسا کہ جہلے گزر حکاسے۔

۔ ہے۔ دوسوں سے مشابہت واندھی تقلید میں میت کی نعش کے پاس یا تعزیت والے تھر بی غمناک موسیقی وگانا ہجا آ جی داخل ہے۔ اس لیے کہ اس فعل میں کا فرول سے ساتھ نہایت قبیح و ناپسندید و مشابہت ہی نہیں ہوتی بلکہ یہ چیز شرلعیت مطہرہ کی نفریں ناجائز و ترام کاموں میں سے ہے جسیاکہ ان اما دیث سے ٹابت ہوچکا ہے ہوگا نے بجانے کے سازوسا مان اور اس سے سیننے سنانے سے بارسے میں اس سے بل گزری ہیں۔ یہ گانا بجانا نحوا ہ نوشی سے موقعہ پر ہویائم وتز سے دونول صور تول میں ناجائز وسرام سے۔

۵. تعزیت سے موقعہ بر ۔ ناپ ندومنکر کامول میں سے سگریٹ نوشی اور دوسروں میں اس کی تقسیم بھی شال ہے، خصوصاً قرآن کریم کی تلاویت سے موقعہ پر ، اسلام کی نظریں پر نہا بہت قبیح وٹینیٹی فعل ہے ، اس لیے کہ اس میں ایک جانب

توحرام چیز کاار تکاب ہوتا ہے اور دوسری جانب قرآن کریم کی ہے حرشی ہوئی ہے۔

 ۱۰ میست سے دون کرنے سے بعد حومنکرات رائج بیں ان ہیں قبرول کا پکا با ا اوران برعمارت وقیے کا تعمیر کر ا تمجى وال بسيراك ليحكوا المملكم رحمه التحضرت جابر ضى التدعنه سيدروابيت كرسته بيركه بم كريم فعلى التدعليه وسلم نے قبرول کوپکا نبانے اوران پر بیٹھنے اوران پرتعمیرکرے سے منع فرمایا ہے۔

ا وریہ بات تقینی طورسے نہایت افسوسناک ہے کہ آج کل معض لوگ قبر پرعمارت بنانے اور اس کے مزین و ۔ ار استہ کرسفے میں ایک دوسرے سے مقابلہ و فخر کرستے ہیں ، سین اس میں کوئی شک وسٹ نہمیں کہ یہ لوگ نبی کریم صلی التّٰہ ملیہ وسلم سے اس طریقے کے چپوڑنے اور مخالفت کرنے والے ہیں جواتپ نے قبر کے پکابنا نے اور اس کی تزیین سے سلسلمیں د پاہے اور نور آپ ملی التدعلیہ وکم سے یہ ابت ہے کہ جب آپ سے صاحب را دسے حضرت ابراہیم کا انتقال بواتو آپ نے ان کی قبر سطح مجیلی ہوئی) بنائی اور اس پرکسٹ کر ڈال کر اس بریانی مصحیر کاؤکیا۔

يهميمسنون ہے كەقبرىمے پاس كوئى ملامت لگادى جائے تاكەانسان حبب قبريرجانا چاہيے توقبر پېجان سكے جيسه كه نبي كريم ملى الدّعليه ولم نه حضرت عثمان بن منطعون رضى الندعنه سمه سرلو نه اكيب تبجر ركد كورفروا يا تحفاكه مي است اسبت

معانی کی قبری بہان سے لیے سکھ را ہول۔

ور ثابس وقت البيضمر في والول كو وفن كرية مي اكر وه إس وقت نبى كريم في الله عليه ولم سحة تبلائ بوسطريق كواختيا كركيس توبه لوگ الله كى حدو دركيس قدر قائم رسينے واسے ، ول سجے ،

اور الیسے ورثابس قدرنیک مبالح ہول گے جوابینے مرحوم کو ثواب بہنچانے اوراس کی خیرو مجلائی وغیرہ کے لیے قبری تعمیر وتزیمین میں خرج ہونے والی رقم کسی مسجدومدرسہ کی تعمیر باشفاخانہ قائم کرنے سے سلسلہ میں خرج کر ڈالیس. سول اکم صلى التُدعليه وللم في ارشاد فرمايا به :

> ((اذامات ابن آدم انقطع عمله إلاس مُلاث : صدقة جاربية . أوعم يُتفع به، أوولد صالح يدعوله). .

جب انسان مرج ، سبع تواس كاعمل فتم بروج ، سبع سوخ تین حیزول کے اکدان کا جرو تواب ملت رہتا ہے معدقہ جاریہ، یاایساعتم سب سے تفع محصا باست یانیک کے

### بڑکا ہواس کے لیے ، ماکر ما ہے

### الأوب المفروللبخارى وغيرو

### ٣ ـ ان كے علاوہ مجھے عادات اور تھی ہیں جہیں اسلام نے حرام فرار یا ہے:

کان مان جاہیت کی ان عادات واطوار میں سے جو ہمار سے بعض معاشروں میں رہے بس گئی ہیں ہے کہ نوشی و مختلف و مناسبات میں لوگ مغنیوں اور مغنیا وَل اور رقاصا وُل کی مجانس برپاکر ستے اور ان میں شریک ہوتے ہیں ، اور اس سے علاوہ مزیدا دروہ برائیاں اور خرابیاں جوان محفلوں میں پائی جاتی ہیں مثل نشر بسر ہے جاموں کا دُور ، اور بے ہودہ گانوں وسازوں کا بجانا اور نشر ہیں دھست مست و سرشار لوگوں کی إدھرا دھر سے بے جابانہ ٹرمستیاں تنہی مذاف ، اور معمول و بیے وقوفوں کا بندوقوں و بیتولوں سے ہوائی فائر نگر کرنا ۔

ال گندی مجانس اورش محفلول اورگناہ سے بُرجا لمی عادات کی اثباع کی بعنت میں کتنے لوگ مارے جا پیکے ہیں اور کتنے ہی زخمی ہو چکے ہیں اور کتنے ہی فتنے وخرا بیال پیدا ہومکی ہیں اور کتنے ہی فاڈانول میں خوان خرا بہ ہو چیکا ہے۔

اس وقت ہم پرض رست محسوس نہیں کرتے کہ غنا، وکوئیقی، قص وسرودا ورگانے باہے، شراً ب اورمردوزن کے اختلاط کے بارسے ہیں اسلام کانقط و نظر دوبارہ بھر سے پہنیں کریں، اس لیے کہ اس کتا ہے بہت سے مقامات پر ہم ان مباحث پرروشنی وال بچکے ہیں۔ اوران کا حکم صاف الفاظ ہیں بیان کر پچکے ہیں۔ لہذا اگرآب ان برائیوں اورخرابوں کی حرصت کی دلیمیں اور حکمت معلوم کرنا چا ہیں توان ابحاث کامطالعہ کرلیں۔

وہ بعض معاشروں ہیں زمانۂ جاہلیت کی جن عادات کا ندکرہ ہم سنتے رہتے ہیں ان ہیں سے بیکے کا اپنے باپ کے علادہ کی دوسرے کی طروف منسوب کرنا بھی والی ہے۔ اور نبی کریم سلی اللہ علیہ وہم نے اس فعل کو ان گندے منکوات میں شارکیا ہے جواللہ اور قرشتول اور تمام کو گول کی لعنت کے مستوجب ہیں ، چنا بچہ الم بخاری وسلم سول اکرم سلی اللہ علیہ میں شارکیا ہے۔ واللہ اور قرشتول اور تمام کو گول کی لعنت کے مستوجب ہیں ، چنا بچہ الم بخاری وسلم سول اکرم سلی اللہ علیہ

وسلم مدروايت كرست ين كرآب فرايا:

((من ادعى إلى غير أبيه أوانتمى إلى غير أبيه أوانتمى إلى غير أبيه أوانتمى الحاغين مسواليه فعليه لعنة الله والملائكة والملائكة والمنسلة المنسلة المنسلة منه صرف ولاعدلاً).

پڑتفس اپنے باپ کے علادہ کسی اور کی طرف ابنی نسبت کرے
یا اپنے مولی کے بجائے کسی اور کی طرف منسوب ہوتو اس پر اللہ
او فرسٹ توں اور تما کا لوگوں کی لعنت ہوتی ہے اور اللہ تعالی اس
کے نافر من کو قبول کر سے گانے نفل کو (نہ تو ہول ہوگ نہ

اس عن فدر قبول كياجات كلى م

اورانا بخاری وسلم حضریت سعد بن ابی و قاص رضی النّه عنه سے اور وہ نبی کریم ملی النّه علیہ وسم سے روایت ستے بین کہ آپ نے ارشا د فرمایا : جوشخص ا پنے باپ سے علا وہ سی اور کی طرف یہ جانتے ہوے ا اپنے کومنسوب کرسے کروہ اس کا باپ نہیں ہے تواہیے شخص پر حبنت حرام ہے۔

رصادعى إلى غير أبيه وهو يعلم أنه غير أبيه فالجنة عليه حرام ».

قص پرجنت ترام ہے۔ مدر دیں قرر میں سرک ہونی ۔

یں اور قیم کا پروکیش کرنے والا جنست ہیں اس طرح ہول کے اور آپ نے شہادست کی بھی اور درمیانی بھی ک طرف اشارہ کیا اوران دونوں انگلیوں کے درمیان ذرا سا فاصلہ ((أن وكاف لايت يدم فحف الجنة هكذا، وأشب بالسب بنة والوسلى وفسرج بينهما).

عليه ولم ارشا د فرات بي :

بنونوس ایسے پتیم یالاوارٹ بیجے کی کفالت وپرورش کررہاہے اس کویہ اختیار ہے کہ وہ اس بیجے کو اپنی ندگی میں جتنامال چاہے دے دے دور اپنے مرنے سے بعدا پنے مال میں سے ایک تہائی کی حدود میں اس کے لئے وصیت کر جائے۔

۔ چھ بہہت سے علاقول اور دیہاتول میں 'سانۂ جا بلیت کی جوعا دات اورطورطریقے رائج بیک ان ہیں سے لڑکی کے مہر کا کھا حب آیا اور اس کومیراٹ سے محروم کرنا بھی ہے۔

التدتعالی نے عودت کے لیے مہریس الیا ہی تی رکھا ہے سی طرح اس سے لیے میراث ہیں تی رکھا ہے اس لیے ذکسی باپ، نکسی بھائی اور ذکسی شوہر یا کسی اور انسان کے لیے یہ جائز ہے کہ وہ عورت کو اس کے تی میراث سے محروم کردے یا اس سے اس کا حق مہرچین ہے۔

عورت كالتي ميراث قرآن كريم سعة نابت ب الله تعالى فرطت بي : ( لِلدِّجَالِ تَصِيْبٌ فِهَا تَوَكَ الْوَالِدُنِ مردوں كانعى مصب سس بن جوجو مرس مال إب اور قرابت واسدا درعورتون کانجی حصه سبته اس میں جو چھوٹر مربر ماں باپ ، ورقرابت واسے تھوٹرا ہو یا بسبت ہجھسہ مقررکیا ہوا ہے۔

اوراس کے حق مہر کا ابت ہونا میں اللہ تعالی کی کتاب میں موجود وثابت ہے ارشادِ ربانی ہے:

اور اگر برن چا بوایک عورت کی جگه دومری عورت کو اور و سے چکے بوایک کو بہت سامال تومت بھیر ہوا ت میں سے کچھ ، کیاکس کو ناتق اور صریح گن و سے لیناچا ہتے ہو۔ اور کیونکر کس کو سے سکتے ہوا ورہ بنج چکا ہے تم میں کا ایک دومرے تک اور وہ عور تمیں تم سے گئة عہد سے میکیں ۔

ا (وَإِنَّ أَرَدُ تُنَّمُ اسْتِبْدُ الْ زُوْجِ مَّكُانَ زُوْجِ وَالْتَبْنُهُ إحديثُ وَبِنْظَارًا فَلَا تَاخُذُ وَالْمِنْهُ شَيْئًا ، اَ تَاخُذُ وْنَهُ بُهْتَانًا وَإِنْهَا مُبِينًا ، وَكَيْفَ تَاخُذُ وْنَهُ وَقَدْاً فَضَى بَعْضُكُمْ إِلَا بَعْضِ تَاخُذُ وْنَهُ وَقَدْاً فَضَى بَعْضُكُمْ إِلَا بَعْضِ وَاخَذُ وَنَهُ وَقَدْاً فَضَى بَعْضُكُمْ إِلَا بَعْضِ

و الْكَفْرَنُونَ مَ وَلِلنِّسَكَاءِ نَصِيْبُ فِمَهَا تَرَكَ

لُوَالِدُنِ وَالْأَقْرَبُونَ مِنَّا قُلَ مِنْهُ أَوْكُثُرَ.

نَصِيْبًا مَّفْرُوضًا ﴿ ) -

لہذا بوتنف مجی میراث یا مہر سے سلسلہ میں اللہ کی تمریعیت وفیصلہ سے خلاف کرسے گا وہ سیدسے راستے سے بھٹاگ گیا وراس نے اس بن سے روگرانی کی جواللہ تعالی نے اپنے کائم پاک میں بیان کردیا ہے۔ اورالیا شخص ایسے روز اللہ کی دوز اللہ کی جواللہ سے دوز اللہ کی جواللہ سے دوز اللہ کی دوز اللہ کی دوز اللہ کے جواللہ سے در بار ہیں قلب سلیم سے کر حاصر ہو، اس لیے عقلمن وال کو عقل و ہوش سے کام لینا چا ہیں۔

ر بہر بہت مجب کے مصدر ماہم طور بر بہت سے سیارت مرسی سوہات سے مہارت ہوئی ہیں۔ یہ ان اہم اہم محرات کا نذکرہ تھا جنہیں اسلام نے ترام قرار دیا ہے اور ان سے ڈرایا ہے اور ان کے ارتکاب کمنے والے کے عذاب کی وعید ذکر کی ہے۔

ال ہے اسے مرفی محترم! آپ کوچا جیے کہ آپ خود تھی ان سے بیس اور دومرول کوان سے بینے والا بنانے کیلے اپنا سے کیا ہائے کیلے اپنا سوہ حسندا و زموز چوڑی، اورا ہینے آپ کو اس میں مثال بنائی، اورساتھ ہی ساتھ جن لوگول کی تربیت کی ذمہ داری آپ برعائد ہوتی ہے۔ اوران خرابیول کی دلدل اوران تباہ کن چیزول سے نہیں برعائد ہوتے۔ اوران خرابیول کی دلدل اوران تباہ کن چیزول سے نہیں بیسے ایک بیسے ایک بیسے بیسے ایک بیسے

اگرآب نے ایساکرلیا تواللہ تعالیٰ آپ کو جزا بخیر دے گا ، ورآپ سے اجرو تواب کو قیامت سے روز سے میے دخیرہ بنائے گا۔ اور آپ کی طاعات ویکیول کو قبول کرے گا، آپ کی دعاکو شرف قبولیت بخشے گاا و مرغم و پریشانی میں آپ کا مددگارا و رتنگی بیں آپ سے ہے اس سے نکلے کا استہ پراکرے گا ، اور قیامت سے روز اپنے اولیا، و منتقب بندول ، ور فران بیول ، ور صدر بھین و شہدا دسے ساتھ آپ کا حضہ کرے گا جن کی رفاقت بہت ہی عمدہ واجھ ہے۔ فرشتول نبیول ، ور صدر بھین و شہدا دسے ساتھ آپ کا حضہ کرسے گا جن کی رفاقت بہت ہی عمدہ واجھ ہے۔ لیسے ان لوگول کے بارسے میں نبی اکرم حضور انور سلی اللہ علیہ ولیا مبارک من یہے جن کا کھانا حوام ، بینا توام در باس حرام ہونے کا کھومال آپ کو بھی معلوم ہوجائے . در باس حرام ہونے کا کھومال آپ کو بھی معلوم ہوجائے .

الم مسلم رحمه التد حضرت الوهريره وضى التدعنه سعد روايت كريست اليك رسول اكرم على التدعلية ولم سف ارشا وفروايا :

الإإن الله طبيب لا يقبل إلا طبباً ، وإن الله الله المنال الله المنال الميب عن المراك ما ف الميب كومي تبول فرق

أم والمسؤمنداين بهدا أصوب الميسوسيلين، فقال تنان؛ \_\_\_\_\_ بيد. اورانتدنية يُومنول كودي مكم دياسيرجواجيند يبولوب

( ا يَا أَيُّهَ الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِبَاتِ وَاعْهَلُوا ﴿ مَو مِا جِنَا كِهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ السَّالَ كُلُوا مِنَ الطَّيِبَاتِ وَاعْهَلُوا ﴿ مَا عَلَمُ اللَّهِ مِن اللَّهِ اللَّهُ اللَّا الللَّلْمُ اللَّهُ اللَّهُ ا

صَالِحاً ﴾ وقال تعالى : (( مَيَا أَيُّهَا الَّذِينُ آمَنُ وَاكُنُوا كُنُوا كُنُوا )

مِنَ كَمِيبَاتِ مَارَزُ فَنَاكُ مُ ﴾ . ولو كادً بأكروبيزي جوروزي دى بم نع تم كور

میحرآب نے بیربیان فرمایاکدایک شخص لمبے لمبے سفرکرتا ہے پڑاگندہ بال وغبار آلود ہوتا ہے آسمان کی طرف دونوں باتھ میں ایجیال کرا سے میرسے رہب اسے میرسے پروردگار کہ کر دعا مانگرا ہے۔ اور اس کا کھانا ترام کا ہوتا ہے اور بنا حرام سے ہوتا ہے اور اس کالباس ترام کا ہوتا ہے اور اس کوترام ونا جائز کی غذا ملی ہوتی ہے تو بھرمجلا اسس کی دعسا کیول کرفتبول ہو۔

ا وربیه قی وابونعیم حضرت ابو بجرصد پق رضی التدعنب سے روابت کرستے ہیں کہ انہول نے فرطیا رسول التد صلی التّٰه علیہ وم کا ارشا دہیے :

جوحبم بھی ناجائز: وحزم سے براسے گا ہس کے لیے آگ

(ركل جمسد نبت مسنب سعت فالنار أو المدرية

رياده مناسب هيد.

اسے مرقی محترم! اللہ تعالیٰ ہمیں اسسے مفوظ فرمائے کہ ہم ان لوگول میں سے بنیں ہوجہنم کے عذاب کے سختی ہیں اور حو دعا مانگتے ہیں لیکن ان کی دعا قبول نہیں ہوتی ،اللہ ہمی بہترین وہ ذات ہے جس سے امید کھی جاسکے ،اور وہی سنراوار ہے۔ اس کاکہ دعا کو قبول فرمائے۔

مربیان محترم! به وه اهم اصول و قواعد بی جو دینِ اسلام بی بیچے کی تربیت سے بیے مقریسکیے گئے ہیں،اور آپ نے خود لاحظہ کرلیا ہوگا کہ یہ تمام اصول دو بنیادی قاعدول پر بہنی ہیں :

بهبلا قاعد لا - ارتباط وربط كا قاعده -

. دوسوا قلعدی - بچانے اورمتنبہ کرینے کا قائدہ ۔

اوراس سے قبل آپ یہ پڑھ کے بیں کہ ان قوا عدیں سے ہرقاعدے کے تحت بہت سے فروعی قواعد مندرج ہیں

سے المؤمنون ۔ ا ۵

حلد ثاني

جو پیچه کے توازان اور اس کی رقی حانی وایمانی ونفسانی تعمیر اوراضلاقی ومعاشرتی علمی تخصیت سازی میں بہت بڑی اہمیت سر سامل میں

جہ آپ نے وہ بائیں پرطرصائیں جو ربط وارتباط سے قامدہ ہے تفرع ہوئی ہیں،آپ بتلا ئے کہ آپ نے کہ آپ سیست کا ا

کیا آب نے پیمسوس نہیں کیا کہ اعتقادی ربط وہ بہترین ذرابعہ ہے ہیں سے آپ بیچے کے عقیدہ کو زیغ و برایس میں ،

ے پانے۔ اور روحانی ربط وہ بہترین وسیلہ ہے جس سے آپ ہیسے کی نفس واخلاق کو ہیے راہ روی وآزادی سے مہ

ہ اور فکری تعلق وربط وہ بہترین طربقہ ہے جسب سے ذریعہ آپ ہر باطل مفہوم اور درآ مدشدہ دستور وں سے باہے بیں اس سے تصور کو درست کرسکتے ہیں ۔

اورمعا شرقی ربط وہ بہترین ذریعہ ہے سے آپ ہے کی شخصیت کو بربا دوضائع ہوسنے اورمہل ہفنے سے : دبین

ا وروزش وریاصندت کاربط وہ بہترین ذریعہ سیے جس سے آپ بیعے سے یم کوضعف و کمزوری ڈھیلے پن اورنسول دیے مقصد کھیل کو دسے بچاسکیں گے۔

اور آپ نے وہ جزئیات پڑھ لیں ہو بچانے اور متنبہ کرنے کے قاعدہ سے متفرع ہوتی ہیں، تواب تبلائے کہ نی محبر میں ،

کیا آپ نے یہ نہیں دیکھاکہ نیکے کو ارتداد سے بچانا وڈرا ناا سے گمرا ہی اور کفر کی واد بول میں بیصلے سے دور کتا ،

اورالحا دسے چوکناکرنانیکے کو ذات الہی اور آسمانی دینول سے ناآشنا ہونے سے بچانا ہے۔ اور حرام کمیلول سے بچانا بچے کوشہوات ولذات کی دلدل میں پیصنے اور نوا ہشات نفسانی کے دام میں گرفتار ۔ بر آ

سے بچھا ہے۔ اور اندمی تعلیہ سے بچکنا کرنا پیکے کی تخصیت کو تباہ ہونے اور انسانی کرامت کے برباد ہونے سے بچا ہاہے۔ اور برسے ساتھیوں سے بچانا بیکے کونفسیاتی انحراف اور انوا فی بگاڑسے روکتا ہے۔ اور برسے افواق سے بچکنا کرنا نبیکے کو ہے جیائی کی کیچرا ہیں پھنسنے اور گند گی سے جوہڑیں پڑسنے سے

اور حرام سے بچانا چھے کو جہنم کے عذاب اور اللہ تعالیٰ کے غصنب اور ہیمارلیں اورامراض کا نشانہ بنے سے بچا ہے۔
لہذا اگر بات آی طرح ہے تو آپ کو جا ہیے کہ آپ اپنی سی پوری کوشش کریں اور اچی طرح سے محنت کریں اور اپنے
بسس میں جو بھی ہولسے ہروئے کا رلائی تاکہ آپ ارتباط و ربط کے قاعدہ کوایک ایک کرے نافذکر سکیں ، اور اس کے عقیہ اور بچانے کے بنیادی اصول میں سے ایک ایک اصول پڑمل کراسکیں ، اسی میں چھے کی اصلاح ، اور اس کے عقیہ کی بہترین وعظیم
کی بچنگی اور انعلاق کی درستگی ، اور اس سے جسم کی تقویت اور تقل کی بچنگی اور اس کی شخصیت کی بہترین وعظیم
تعمیب سے ب

جن امورکی ہیں نصیحت کرتا ہول اور جن کی طرف توسہ مبذول کراتا ہوں یہ ہے کہ ربط ومتنبہ و چوکنا کرنے کے اصول ایسے اصول ہیں جن کوایک دوسرے سے ساتھ شانہ لبشانہ چلتے رہا چاہیے اور یہ اس وقت ہوگا ہیں مرفی تربیت و شخصیت سازی و د کیے مجال کے فریوند کوا دا کرے گا۔ اس لیے ان دونول ہیں کسی ایک کا دوسرے سے جوا ہوناکہ جی نے کوفکری یا اخلاقی یا نفیائی انحواف یک پہنچا سکتا ہے۔

ہم نے کتنے ہی ایسے بچول سے بارسے میں سنا ہے جن کا رابطہ اللہ تعالیٰ کے گھرول سے قائم ہوگیا جن کا تعاق مرنی ویٹے سے بڑگیا ، جن کا اچھی صحبت سے رابطہ پدا ہوگیا لیکن بھر بھی وہ بافل فکری اعتقادات میں گرفتار ہوگئے ، مثلاً یعقید کراسلام صرف ایمانی تضیول اور دینی تنسوی مسأل میں محصور ہے ، اسلام نے حکومت سے معاملات اور میاسی نظامول اور زندگی سے دستور و مہجے سے کوئی تعرض نہیں کیا ۔

یا وہ خطرناک قبم کے اخلاقی انحراف میں تھینس گئے شلاً یہ دعوٰی کرناکہ بیئر صلال ہے اور موجودہ صورترعال میں شیلیوزن کارکھنا جائز۔۔۔۔۔۔ اور معمولی سے سود کا معاملہ حرام نہیں ہے، اور فش گانوں کا سبنیامباح ہے۔

یا وه سیح تربیت اوراهی رمنهانی نه سلنه کی وجه سے نفسیانی وعصبی امراض بیں گرفتار مہوسکئے.مثلاً بیکرانہ ہیں ہمیٹ گوشه نشینی، گمنا ہی اور گھر میں رہنے، اورعبا دت گاہول میں محصور رہنے کی تلقین کی گئی۔

اس بیم فرنی کوچائے ہے کہ وہ ربط وارتباط اور متنبہ و پوکنا کرنے سے درمیان توازن رکھے، اور منفی اور متنبت دونوں پہلوؤل کو جمع رسکھے، اور پیچے کی تمام سرکات وسکنات پرنظر رکھے تاکہ اگروہ یہ و پیھے کہ وہ داہِ راست سے ہٹ رہا ہے توال کو را ورا کر است سے ہٹ رہا ہے توال کو را ورا کر است ہے۔ اوراس کے عقیدہ میں کو تھم کا زینے یا تمی دیکھے تواسے نورتی سے فرانی صاحب ہمیرت بنا دسے، اوراس سے ول کوا میان سے نوروں اسے اس کے انجام ہوا ور خواب نتیجہ سے بوکن کر سے تواسے اس کے انجام ہوا در خواب نتیجہ سے بوکن کرسے، اوراس کو مصنبوط دا بطر سے باندسے رکھے اور شاندار طربیقے سے اس کی رمنانی کرتا رہے۔

تربيت كرسف والول كوال بنيا دول برعينا چاسيدا وعمل وجدوجهد كرسف والول كوال اصول وقواعد بركمل برابونا جاسيك

# منتيري

## ۳ - تربیت متعلق جند ضروری تجاویز

ا نیریس بی تربیت کرنے والے حضارت کے سامنے تربیت سے علق کھایی تجاویز بیش کرناچا ہتا ہول ہونہائے فرری بیں اورجن سے استغنا نہیں بر تاجا سکیا، اورجوان ابحاث ہے کھا ہمیت نہیں رکھتیں جوہم اس سے قبل کچپلی فصلوں میں تکھ چکے ہیں، جو "مربیوں کی ذمہ داریوں اور فرائفس "اور" تربیت کے مؤثر دسائل "اور "نیچے کی تربیت کے بنیادی قواہد "کے موضوع سے تعلق ہیں ۔ان تجاویز کو تکھ ہم تربیت کے دسائل کا ہر پہلو سے احاطہ کرلیں گے اور ساتھ ہی ساتھ ہم تربیت کے دسائل کا ہر پہلو سے احاطہ کرلیں گے اور ساتھ ہی ساتھ ہم تربیت کرنے والول سے سامنے نیچے کی اخلاقی وقتری ونفیاتی تیاری اورجہ انی وکردار ومعاشرتی شخصیت سازی کے لیے نئے آفاق کھول دیے ہول گے تاکہ وہ اپنے مذہب ودین اور امت وقوم سے یہے نیک صالح انسان اور خاندان اور معاشرے سے سے لیے نفع نجنس عضو بن جائے۔

### ميراخيال بيك بينجا ويزمندر جبرذيل امور مين منحصرين

ا - بیمے کو اچھے وعمدہ روزگار کا شوق ولانا۔

٢ - بير كي فطري صلاحيتول كانعيال ركهنا.

۳ - بیجے کو کھیل کو دوغیرہ سے لیے موقعہ فراہم کرنا۔

م ۔ گھرسجد اور مدرسه میں باہمی تعاون پیاکرنا۔

۵ - مرفی و بینے کے درمیان رابطہ کا قوی ومضبوط کرنا۔

٧- ون ورات تربيتي نظام كيمطابق يلاً.

، - بیجے سے لیے نفی مجشس ثقافتی وسامل مہاکرنا۔

٨ - بيجي مين مبميشه مطالعه مين مشغول رسينے كاشوق پيدا كرنا.

۹ - بیچ کودین اسلام کی ذمه داربول سیمیشه محسس کرسند کا عادی بنانا.

١٠ - بيح يس جهادي روح كاعميق وگهراكرنا.

اگر خدانے جا ہا تو اس فصلِ ثالث میں مُرکورہ بالاان تجاویز میں سے ہربجویز میں کمل بحث کی جانے گی، اورالند تعالی ہی سیدھی راہ دکھانے والا ہے اور ہم اسی سے توفیق ومدد طلب کرتے ہیں۔

ا - بیچه کواچه روزگار کاشوق دلانا بیچه سے سلسله میں مربی برجوا یم ذمرداریال عائد ہوتی بیل ان میں سے ام برن دمرداری یہ جے کہ بیچے کو آزاد وخود مخارکام پرامجا راجا سئے ،خواہ یہ کام صنعت وحرفرت سے تعلق ہو یا زراعت و کاشتکاری سے ، یا تجارت و کاروبارسے۔

ے ، یا بارک رہا دیا ہوں السلام اللہ میں آزاد واپنے پہندیدہ خود مخارکا کم کیا کہتے ہتھے، اور بعض ہنروصتاعت ہیں انبیا ہر کرم علیہم الصلاۃ والسلام بھی آزاد واپنے پہندیدہ خود مخارکا کم کیا کہتے ہتھے، اور بعض ہنروصتاعت ہیں مہارت ماسل کرستے تھے، اور اس طرح سے ان مقدس ہتیول نے امتول اور قومول سے لیے آزا ڈ ہنرا ورکسپ ملال میں ایک شاندارنمونہ جھوم اسے۔

ین بیت ماهد میرود سیست. چنانچدیی حضرت نوح علیه انسالا کم بین جنهول نی شختی بناناسیمها اورانند تعالی نیمانه بین کنتی بنانه کاهم دیا اورارشا د فرمایا :

اور بنائیے شتی ہمارے دوہرہ اورہما رسے مکم سے ،
اور نابت کیجے مجھ سے فالمول کے حق میں ، بے شک یہ فرق ہول گے ، وروک شتی بنائے تھے اور حب ان پرگزیت ان کی قوم کے مواران سے نبی کرتے ، انہول نے کہا اگر تم ان کی قوم کے مواران سے نبی کرتے ، انہول نے کہا اگر تم ہم سے جیسے ہو تو مم جنستے ہو۔

(اوَاضَنُوالْفُلُكَ بِاعْيُنِبُنَاوَ وَحُبِينَا وَلَا تُخَاطِبُنِي فَالْمَالُولُا تُخَاطِبُنِي فِي النَّهُمْ شُغْرَقُونَ وَيَضِنَعُ الْفُلُكَ وَكُلّْمَا مَرْعَكِيهُ وِمَلَا مِّنْ قَوْمِهِ سَخِدُوا الْفُلُكَ وَكُلّْمَا مَرْعَكِيهُ وِمَلَا مِنْ قَوْمِهِ سَخِدُوا مِنْ قَوْمِهِ سَخِدُوا مِنْ قَوْمِهُ سَخِدُوا مِنْ قَوْمِهُ سَخِدُوا مِنْ قَوْمِهُ مَا قَالَ ان تَسْخَدُوا مِنَا قَاتَ اللّهَ مُدُوا مِنْ قَالَ ان تَسْخَدُوا مِنْ قَالَ اللّهُ مَنْ اللّهُ مُرُونَ مِن اللّهُ مِن مِد مِه ومِهِ اللّهُ اللّهُ مُدُونَ اللّهُ اللّهُ اللّهُ مُرُونَ اللّهُ الل

ا ورمچر خصرت نوح علیہ السلام اور حوال سے ماتھ برایمان لائے وہ نجات باسکے۔

اور آیر حضریت دا فردعلیہ السام کو ہے کام اور جنگ میں کام آنے والی زرموں کے بنانے کے ماہر ہتھے ارشا دِ مانی ہے :

اوریم نے انہیں زرہ کی صنعت تہارے 'نفع کے ' ہے سکھلادی تھی تاکہ وہ تم کوتمباری لڑائی میں بچائے۔ سوکیا ( وَعَلَمْنَهُ صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَكُمْ التُخصِنَكُمْ مِنْ بَأْسِكُمْ فَهَلَ اَنْتُم ته شکرا داکروسگے

الأبسياء

شڪِرُون »٠

بيزارشا د فسرمايا:

الوَ اَلَنَّا لَ مُ الْحَدِيدَ اَنِ اعْمَلْ سِيغْتِ وَقَدِّرَ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوا صَالِعًا وَإِنِّى بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيْرٌ » . سبأ مرور

ورداؤ د کے داسطے ہم نے لوسیے کونرم کردیا کہ تم ہوری زمیر بناؤ در ن کے جوریس (مناسب اندزه رکھو، درتم سب نیک کا کرد ، میں نوب دیکھ رہا ہوں جو کچیہ تم ہوگ کرسے ہو۔

اور بیر حضرتِ موسی علیہ اسلام بیں جنہوں نے اسٹھ سال تک بجریاں چراسنے کے لیے اپنے آپ کو حضرت شعیب علیہ اسلام کے حوالہ کیا تھا تاکہ وہ ان سے اپنی ایک صاحبزا دی کا نکاح کردیں ،الٹدتعالیٰ فرماتے ہیں :

((قَالَ إِنِّ أَرِنْدُ أَنْ أَنْكِحَكَ إِخْدَى ابْنَتَقَ هُتَنْبِ
عَلْمَ أَنْ تُأْجُرَ فِي ثَلْمِنَى حِجَدٍ فَإِنْ أَنْهَمْتَ
عَشَّرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ، وَمَا أُرِيْدُ أَنْ أَشَقَّ
عَيْنًا فَمِنْ عِنْدِكَ ، وَمَا أُرِيْدُ أَنْ أَشَّ أَشْقًا عَلَيْكُ سَتِحَدُ فِي إِنْ شَاءً اللهُ مِنَ الطّهِينَ.
عَلَيْكُ سَتِحِدُ فِي إِنْ شَاءً اللهُ مِنَ الطّهِينَ.
قَطَيْنُ أَنْ بَيْنِي وَبُيْنَكَ مَا يَتُمَا الْاَجَلَيْنِ
قَطَيْنُ فَلَا عُدُوانَ عَلَيَّهُ وَاللهُ عَلَى مَا
قَطُيْتُ فَلَا عُدُوانَ عَلَيَّهُ وَاللهُ عَلَى مَا
نَقُولُ وَكِيْلًا يُنَى ).

وہ بوسے میں چاہا ہوں کرمیں اپنی دو بیٹیوں میں سے ایک تہارے نکاح میں دے دول آل شرو پرکتم آٹھ سال می نوکری کر واور، گرتم کرس سال پورے کر دوتویہ مہاری طرف سے ایس سال پورے کر دوتویہ مہاری طرف سے ایس سال پورے کر دوتویہ مہاری طرف سے ایس سال بھورے کوئی سختی نہیں چاہا تم ان شاد، مذر کھ کونوشش معاد پاؤگے دموی نے کہا توہ بات میسرے اور آپ کے درمیان ہوگئ ہے۔ میں ان دونول میں سے بومدت جی پوری کردوں جھ پرکوئی جب میں ان دونول میں سے بومدت جی پوری کردوں جھ پرکوئی جبر نہ ہوگا، اور ہم بی سے بومدت جی پوری کردوں جھ پرکوئی جبر نہ ہوگا، اور ہم بی کے کہ کہاری رہے ہیں ایٹ دائی کا گوا ہے۔

نقصص- ۲۲ و ۲۸

اوریہ ہمارے بی اکرم ملی التعلیہ وہم بعثت رنبوت سے قبل بحریاں چرایاکرتے اور تجارت کیاکرتے تھے اور آپ خود فرائے بی کہ میں چند فیراط کے بدلے ابل کو گا برایا کرتا تھا (جبیبا کراہا) بخاری نے رفرایت کیا ہے) اور آپ ملی اللہ علیہ وہم تجارت کیا ہے اور آپ ملی اللہ علیہ وہم تجارت مال سے بہراہ س وقت آپ کی عمر صرف بارہ مال تھی ، اور دوسری مرتبہ آپ کوشیدہ خدیجہ منی اللہ عنہا نے اپنے غلام میسرہ کے ساتھ جیجا تھا، اس وقت آپ کی عمر باک میں سال تھی ، اور آپ نے نوب کامیاب و بہترین تجارت کی تھی۔

وانسلام کا پیشیہ اور رسولول علیہم انصلاۃ وانسلام کاکام ہے۔ دینِ اسلام نے اسینے محیط بنیا دی اصولول اور کامل و کمل تشریعے ونظام کے ذریعیہ کام کا بج کوتفدس قرار دیا اور مزدوردل کااکرام کیا ہے، اور انسان کے ایسے ہاتھ کی محنت سے کمانے کو افضل ترین عبادت اور مبارک ترین عمل

### ذیل میں ال موضوع مستعلق قرآنِ کریم کی چندلصوص اور نبی کریم صلی الته علیہ کم کی چنداحا دیث بیش کی جب اتی میں:

شُوّا فِی اللّٰهُ وَ اللّٰهِ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مَا رَبِ مِنْ مُروياسوتم اللّٰهُ وَ اللّٰهُ وَ اللّ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ وَ اللّٰهِ مُنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ وَ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ م من سے کھاؤ (پیو) اور اس کے پاس زندہ ہوکر جانا ہے۔

الهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُّ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي الْهُو النَّهُو فَي مَنَاكِبِهَ أَوَكُ لُولًا فَالْمُشُو فَي مَنَاكِبِهَ أَوَكُ لُولًا مِن رِّنْ قِهِ وَالْيُهُو النَّشُو وُ ). مَنَاكِبِهَ أَوَكُ لُولُ مِن رِّنْ قِهِ وَالْيُهُو النَّشُو وُ ).

اورفرايا:

لافَيَاذَا قَضِيَتِ الصَّلُوةُ فَانْنَشِهُ فَا فِي الْأَرْضِ بِهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ فَا فَانْنَشِهُ فَا فِي الْأَرْضِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ ا

اوراماً) احمدر حمدالتدنبی کریم سلی التدعلیہ ولم سے روایت کرستے ہیں کہ آپ نے ارشا و فرمایا:
 (د إن أفضل الکسب کسب الرجل من یدی).

اور اما) طبانی وابنِ عدی و ترمذی نبی کریم صلی الله علیه و کم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشاد فرایا: الاان الله یعب العبد المعترف، .

کا اوراہ کا بخاری نبی کریم مسلی الندعلیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشا د فرمایا ؛ تم میں سے کوئی شخص سی لے کر لکڑی کاٹ کراپنی بیٹھے پر رکھ کرلائے یہ اس کے لیے اس سے بہتر ہے کہ وہ توگول سے سوال کرسے نواہ وہ اسے دیں یا اسے منع کردیں ۔

یک اور امام بخاری واحمدوابن ما به نبی کریم صلی الله علیه ولم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشا د فرمایا : کسی خص کوئی بھی روزی اس سے بہترنہ بیں کھائی کہ وہ اپنے ہاتھ سے کام کاج کرسے کماکر کھائے ، اور اللہ کے نبی حضرت واؤدعلیا سلام اپنے ہاتھ کی محنت کی کمائی سے کھایا کرتے تھے۔

ا ورطبرانی و بہقی نبی کریم سلی التّدعلیہ و کم سے روایت کرستے میں کہ آپ نے ارشاد فرایا ؛ (دکسب الحدلال فریضہ قابعہ نفریضہ )، ورسرے فرنفن کی طرح ملال کمانابھ کیک فرمل ہے۔



### ا ورکیجیے سکفٹ صالحین نے بے کاری اور بیے کارلوگول اورکا) کاج مِنْ مَعُولُ سِمِنْ والول كے بائے بی جو کھے فرمایا ہے وہ میں سیعے:

 ابن ابوزی روایت کرستے بیں کہ حضرت عمر بن الخطاب صنی النّہ عند ایک ایک قوم سے ملے توکید کا) کاج ذکرتے يتهے. توانہول نے ان سے فرمایا : تم لوگ کیا ہو؟! انہول نے حواب دیاکہ ہم تومتو کلین ہیں ، حضرت عمر ﴿ نے فرمایا :تم جمویت کہتے ہومتوکل تو درحِقیقت وشخص ہے جوا نیا غلہ زمین میں ڈال کرالٹہ تعالیٰ پرتھروسہ کرتا ہے، اور فرمایا: تم میں کے کوئی مخص کام) کاج ہے ہاتھ کھینچ کر مبیرے کر رہ دعا نہ کرسے کہ اسے الٹد مجھے رزق عطا فریا دسے ،حالانکہ وہ جانیا ہے کہ اسمان سے سوناچاندی نہیں برساکرتے،اور حضرت عمر ہی وہ بزرگ ہیں جنہول نے غرباء وفقار کواس بات سے رو کا کہ وہ کا ) کاج حیور كرلوگول كےصدقات وخیارت پرتکیه کرسکے بیٹھ جائیں ، جنانچہ فرمایا : اسپے غرباء وفقار کی جماعیت! اچھائیول میں ایک دوسرے سے سبقت لے جاؤا ورسلمانول پربوجھے نہ بنو۔

کے اور سعید بن منصور حضرت عبدالتید بن مسعود رضی التدعنہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہول نے فرمایا ہیں یہ مات قطعاً اپسندر کھتا ہول کرسی خص کو بالکل فارغ دیکھول مذوہ دنیا کے کام کاج میں مشغول ہواور نہ آخرے۔

اور الندتعالى الم شافعي برقم فرمائے وہ قرماتے ين :

أحب إلحت من من الرجال لوگوں کا اصال مندمونے سے مجھے زیادہ مجوب وسیندہ فقلت أبعار فحب ذل السنسوال توسي كها بوركه ماروشرمندكي تو مانگف دسوال كرنے ك دلية مِنْ

لنقل الصنعرس قلل الجيال یماڑوں کی چوٹی سے ٹیلوں کا ستقل کرنا يقلول النبس كسب فيهعار لوگ کہتے ہیں کہ کمائی د صندہ میں عارو ذلت ہوتی ہے

ہم نے جونصوص پیشیں کی ہیں ان سے یہ بات کھل کرسا سف آجاتی سیے کہ اسلام سنے ایپنے یا تھے کے کام کاج کا بہبت امتمام کیا ہیں۔ اورصنعت وحرفت کی تعلیم پرتوجہ دی ہے . اور کالمی وسیے کاری پر عار دلایا ہیں ، اور محنت مزدوری

وکام کاج پراہمارے۔

اوریر کام ابتدائی عمر میں ہوسکتا ہے۔ میس میں تعلیم زیادہ انھی ہوتی ہے اور کام میں نبوغ وآگے بڑھنا زیادہ قوی وظاہر ہوتا ہے۔ اس لیے مرتی پر بیلازم ہے کہ بچہ جب ابتدائی تعلیم حاصل کرے لکھنا پڑھنا اور قرآن کریم پڑھنا اور دیگر شرعی و تاریخی و ما حول و کا مُنات سے تعلق وہ علوم سسیکھ سے جن کا سیکھنا ضروری سبے تو تھے مرنی کوچا سبیے کہ نیکے کو نوعمری ہی میں بعض صنعت وحرفت سکھا دیسے تاکہ اپنی زندگی ہے لیے کمانی کرستے، اور اپینے دست و بازوکی محنت اور میٹیا نی ك ببينه سے روزى ورزق كماسكے.

ورآینداب ابن بیناکاوہ قول سن بواہ ہوں نے بیجے کومناعت میں مقات امور کی تعلیم اور محنت ومشقت سے کام کاج سکھا نے سے بارے ہیں فرطا ہے کہ: بیجہ حب قرآنِ کریم پڑھ کرفارغ ہوا ورلغت کے بنیادی اصول یا د کر سے تو بھریہ دیکھینا چا ہیں فرطا یا م کاح کر سکتا ہے ، اس کے مطابق اس کی رہنائی کرنا چا ہیں ۔ چنانچہ اگر وہ گنابت پسند کرتا ہو تولغت کی تعلیم سے ساتھ رسائل، تقاریر ، لوگوں کی بات چیت وگفتگو وغیرہ بھی پڑھانا چا ہیں ، اور اس کی خوش طی کا خیال رکھنا چا ہیں ، اور کام کرنا ہو توال کوئی اور کام کرنا ہو توال کوئی اور کام کرنا ہو توال کوئی اور کام کرنا ہو توال کواس نوعیت سے کام میں شق کرانا چا ہیں ۔ اور اس کی خوش طی کا خیال رکھنا چا ہیں ۔ اور اس کی خوش کوئی اور کام کرنا ہو توال کواس نوعیت سے کام میں شق کرانا چا ہیں ۔

جنانچہ قرآنِ کریم کا پڑھنا اوراصولِ لغت کا جاننا یہ اسلامی نظام تعلیم میں بنیادی اساسی مواد میں سے تھے بچر حبب بچہ ان دونول سے فارغ ہوجاتا تھا تواس کے بار سے میں غور کیا جاتا اور یہ دیکھا جاتا کہ وہ کس کام کی طرف ماک ہے اور تھر اس کے اختیا رکرنے سے لیے اس کی رہنمائی کی جاتی تھی تاکہ وہ اس میں کمال پیدا کرے ہے۔

رق وروزی کے کمانے کے بیم مانوں نے بیٹہ وہرفت کی طوف ہوتو جہ کی ہے اس کے ظاہر کرنے کے ایسے ہم درج ذیل قصد ذکر کرتے ہیں جس مے علوم ہو ہا ہے کہ وہ کتا ہت کے بیٹیہ کو اضیار کیا کرتے تھے : جب اہ انزالی کے والد کے انتقال کا وقت قریب آیو انہول نے غزالی اور ان کے بھائی احمد سے بارسے میں اپنے ایک نیم نواہ محب و دوست کو وصیت کی اور فرمایا: مجھے اس بات کا بہت افسوس ہے کہ میں کتا بت زمیکھ سکا اور میں یہ چا ہتا ہوں کہ جو چیز مجھ سے مورم گئی تھی ، س کا تدارک میں اپنے ان دو بعیوں محمد اور احمد سے کردوں للہذا آپ ان دولوں کو کتا ہت سکھا دیں۔ اور اگر آپ ان کو سیکا سکھا نے میں میرا مجھوڑا ہوا سالے مال بھی خرج کردیں تب بھی آپ پر کوئی طامست نہیں ہوگی.

جب ان کا انتقال ہوگیا توان صاحب نے ان دونول بچول کوتعلیم دلانا شروع کی۔ یبال تک کہ وہ تھوڑا سا پس ماندہ کیا ہوامال ختم ہوگیا ہوان سے والد نے ان دونول سے لیے چوڑا تھا، اوران صاحب سے لیے میشکل ہوگیا کہ دہ ان سے کھانے پیغے کا بندولیت کرسکیں۔ توانہول نے ان دونول سے کہا : تم دونول یہ بات جان لوکہ ہیں نے تم دونول پروہ سا! مال خرچ کردیا ہے جو تمہارے لیے چوڑاگیا تھا، میں عبادت میں مصووف جہنے والا ایک غریب آدمی ہول میں میں سے بال کچھ بھی ہیں ہے جس سے میں تم دونول کی فدمت کرسکول، اس سے میرے نیال میں اب تم دونول کے لیے میں سے بال کچھ بھی ہیں ہے جس میں طالب علم بن کر داخل ہوجا کہ تاکہ زندگی سے سے ضوری روزی حال کرسکو۔ من سے بنانچہ ان دونول لوگوں نے بہی کیا، اور میں چیزان کی نوٹونتی اور ترقی و بندی کا ذراعیہ بن گئی، ام انتہ کے سواکسی پنانچہ ان دونول لوگوں نے بہی کیا، اور میں چیزان کی نوٹونتی اور ترقی و بندی کا ذراعیہ بن گئی، ام انتہ کے سواکسی ورسے ہے ہوجائے۔

مناسب یہ ہے کہ بم بچول کی دونول قسمول کے درمیان صنعت و حرفت کی تعلیم دینے میں فرق کریں ؛

ا ۔ وہ بچے جوتعلیم میں فوقیت سے جلتے ہول الیے بچے عام طور ہے ذکی و ہوستیار ہوتے ہیں ، ایسے بچے اگرا بنی تعلیم کوتعلیم کی آخری منزل تک بہنچا ایا جاہتے ہول توان کواس میں مصروف جھوٹر دینا چاہیے ، بشر طبکہ چھٹیول او فرقلف فرصت کے موقعول پراپنے ذوق ولیسند کے کام کاج اورصنعت و حرفت کی ہے ہیں ، اس لیے کہ آنہیں کیا معلوم ہے کہ آئندہ کی زندگی میں کیا توادث اور پریشانیاں آئی ہیں ۔ اور اللہ تعالی رحم کرے استیم میں پریس نے یہ کہ ہاہے کہ اپنے ہاتھ کا ہزفق وغربت سے بچانے کا در لیے ہوں نے فرایا ،
کا ہزفق وغربت سے بچانے کا ذریع ہے ۔ اور اللہ تعالی راضی ہو حضرت عمر بن الخطاب طبی اللہ عنہ سے جنہوں نے فرایا ،
میں ایک عص کو دیکھا ہوں تو وہ مجھے بہت اچھا معلوم ہو تا ہے ، مچر میں پوچھا ہول کہ کیا وہ کوئی کام کام کرتا ہے واگر میں گربی تو وہ مصری نظرے گربا ہے۔

۲- وہ بیجے بوتعلیم سے میدان میں بیجے ہیں ، یہ بیچے عام طورسے ذکادت میں درمیانہ درجے سے بہوتے ہیں یاغبی بروتے بیل ان کا استاذیا ہوتے بیل اس کے ایسے بیول کو دین و دنیا سے علق فروری تعلیم دینے کے بعد یہ ضروری ہے کہ حب ان کا استاذیا مرنی یا والدان کی کوتا ہی اور بیچے رہ جانے کو محکوس کر لے توفوز انہیں کام کا جا درصنعت و حرفت کی طرف متوجب کرسے ، الیسے حالات میں یہ بات فلط ہوتی ہے کہ سرپرست ان کی تعلیم کوجاری رکھے جب کر اسے بتہ ہوکہ وہ بی سے تعلیم جاری نہیں رکھ میک اور ناسمجھ ہے۔

کتے ہی ایسے پیچے ہیں جن کے بارسے ہیں ہم سنے ہیں کہ وہ بوانی کی عمر کو پہنچ سکے اور انہوں نے رتوتعلیم حال کی اور
د کوئی صنعت و حرفت کیمی جس میں سالا و خل باب یا مربی کو تا ہ نظری کا ہوتا ہے کہ وہ پیچے کو اس مقا کی بزہمیں رکھتے جس
کا وہ اہل ہے، اور بساا وقات ایسا ہو تاہے کہ ایسا آدمی دنیاوی زندگی میں بہل بن جاتا ہے۔ لوگول سے سوال کرتا اور مائلاً
ہے تاکہ ان کی توجہ کو اپنی طرف مبدول کرے صدقات و خیرات ماصل کرسکے ، یا بھر وہ مجرمانہ زندگی میں قدم رکھ لیتا ہے
تاکہ لوگول کا مال چھینے اور ان کے ای و ستقرار کوغارت کر دیے ، بہرحال ان دونوں ہی مالتول میں کرامت کی بربادی او شخصیت کی ذرت و سوائی اور عام ما تول کی فضا خواب ہوجاتی ہے۔

اس کے والدین اور تربیت کرنے والول کو چاہیے کہ وہ اس بات کا نوب خیال کھیں تاکہ وہ بیجان سکیں کہ اپنے بچول کو دنیا وی زندگی سے کے سال کھیں تاکہ وہ بیجان سکیں کہ اپنے بچول کو دنیا وی زندگی سے لیے سلام فرائض سے تیمل ہونے کا کورٹری بڑی ومر دارلوں اوراہم فرائض سے تیمل ہونے کا کس طرح اہل بناسکتے ہیں ۔ کاکس طرح اہل بناسکتے ہیں ۔

رئی مورت توسیب وہ جوان ہوتواسس کولیسے کا کا ج سکھا نا چاہیے جواس سے دائرے اور شخصیت سے مطابق دمزادیول مناسب ہول ،مثلاً جیسے اس کو آسے جل کرمال یا بیوی بنتا ہے تو اسے پیچے کی تربیت سے اصول اور گھر کی ذمردادیول سے متعلق امور ، اور سینا پرونا وغیرہ ایسی چیزیں سکھانا چاہیے جن کی اس کو ضرورت براسے گی ۔

سكن اسلام في اس كے علاوہ ولكرا ور ذمرداربول اور كامول مسے عورت كومعاف ركھا ہے۔

علی یاتواس کیے کہ یرکام وزمر واربال اس کی جہانی ساخت اور نسوانی طبیعت سے موافق نہیں ہیں مثلاً یرکہ وہ جنگ سے متعلق امور کی شق کرسے یا یہ کہ وہ تعمیر یالول کا کام کرسے۔

اوریاس کیے کہ یہ کام کاج اور ذمہ داریاں اس کی اس فطری ذمر داری وفریفنہ سے متعارض ہیں جس کے لیے اسے پیدائیا گیا ہے۔ پیدائیا گیا ہے مثلاً یرکہ وہ کارخانہ کی مزدور سہویاکسی دفتروغیرہ کی الازم ہو حالانکہ اس کا شوہرا ور نیکے اور گھر ہو۔

ا دریاا کسید که برگام و ذمه داریال این جی جن بربرطری برطری معاشرتی خرابیال مترتب بروتی برول مثلاً وه عورت ایسیاتول یا پیشیست متعلق بروجهال مردول اورعورتول کا مانمی اختلاط برقها برو

۔ بولوگ پخت عقول کے مالک اورامی بنیریت ہیں ان کی نظریں عورت کو ہوان جیزوں سے معاف رکھا گیا ہے ان میں عورت کا احترام مدِنظرہ ، اور اس کی نسوانیت کی مفاظمت ، اور اس کے مقام و مرتبہ کو بلند کرنامقصود ہے۔ ورندآپ ہی تبلاسیئے کہ کونٹنے ص اس بات کو لہند کرسے کا کہ عورت ایسے کامول میں مشغول ہو جواسے ان فرائفن سے روک دیں جن کے لیے اسے پداکیا گیا ہے ؟

اوریم بیں سے کون پرپ ندکر تا ہے کہ عورت کو الیے شکل وسخت کامول میں لگادیا جائے جن سے اس کے سم کونقصان پہنچے اور وہ انبی نسوانیت ختم کر جیٹھے اور اس کو بہت سی ہماریال اور امراض لگ جائیں ؟ سے مصرف سے مصرف شخصہ کے میں میں کہ میں میں میں میں میں میں میں میں ہماریاں کا میں میں کا میں میں میں میں میں م

اور نہم میں سے کوان خص پر بپند کر ہے گا کہ عورت اپنی مغلوط الازمتول کواختیارکریے حجراس کی عزت آبر د کے میں نہ ہون میں مثر افرید سے نواسے میں نرکان با منبی ہ

ملوث ہونے اورعزت و شرافت سے خراب ہونے کا ذریعہ نبیں ؟ اورکیا عورت سے لیے اس کی عزیت و آبروسے بڑے کرکوئی اور متی چیز سے ؟

لبذاتیم نے جو کھے بیان کیاہے اس کا خلاصہ پر کتا ہے کہ اپنے ہاتھ کا کا کا جا اور محنت مزدوری صلال ترین کمائی کے ذریعوں اوراعلی ترین اعمال ہیں سے ہے۔ النذائی اولاد کو اس طرف متوجہ کرنا چا ہیے اور ان کو اس پر مجروسہ کرنے کا عادی بنانچا ہیے، تاکہ وہ ابنی عزت وکرامت کی مفاظمت کر کیس اور اپنی شخصیت کو محفوظ رکھ سکیس، اور دنیا وی زندگی میں روزی کماسکیں ۔

۱- بیری فطری صلاحیتوں کا نیال رکھنا تربیت کرنے والول کوجن اہم امور کا ایجی طرح سے ادراک کرنا چاہیے اور ان کا خوب خیال رکھنا چاہیے اور ان کا خوب خیال رکھنا چاہیے اور ان کی طرف بوری توجہ کرنا چاہیے ان میں یہ بھی داخل ہے کہ بیر بھی جو لیا جائے کہ بھی سے کہ بھی جو لیا جائے کہ بھی سے کہ بھی ہے کہ بھی مناسب ہے ، اور زندگی کی کن آرزوں اور مقاصد کا وہ خواہاں ہے ۔
اس میں کوئی شک نہیں کہ نیکے مزاج ، ذکا وت طاقت اور رکھ رکھا و کے اعتبار سے آہی میں ایک دوسرے اس میں کوئی شک نہیں کہ نیکے مزاج ، ذکا وت طاقت اور رکھ رکھا و کے اعتبار سے آہی میں ایک دوسرے

سے مختف ہوتے ہیں الہذاسم عدار مربی اور عکیم باپ وہ ہے جو بچے کو اس جگہ ریکھے جو اس سے مزاجے سے موافق ہوا ورس ما تول پس اس کا رکھنا مناسب ہواس ہیں اس کو ہے جائے۔

لہٰذا بچہ اگر ذکی تسم کا ہوا ور اسے بڑھائی جاری رکھنے اور تعلیم کمل کرنے کا پورا ذوق شوق ہوتو مرنی کو چاہیے کہ اس کے لیے ایسے اسباب مہیا کر دسے جن سے وہ اپنی منزل مقصود تک پہنچ سکے اور اپنی خواہش و تمنا پوری کرسکے۔

اوراگربچینی وناسمجه موتومرنی کوجابسیے کراسے کسی ایسے کا ہمیں لگا دے جواس کی سمجہ کے مطابق اور اس کی الجبیت ومزاج سے موافق ہو بہی مطلب ہے حضرت عائشہ صدلقیہ رضی النّہ عنہا کے اس فرمان کا جسے امام سلم وابوداؤ دسنے اس طرح روایت کیا ہے کرمیس رسول ِاکرم صلی النّہ علیہ ولم نے بیکم دیا ہے کہ ہم سرخنص کو اس کا مقام دیں ۔

حتی کروه تعلیم قدرسین حمل کی طوف کچه اینی کلبیدت سیمه اعتبارسه ماکل بهوتا سیه او فیطرت و مزاج سیمه اعتبار سه اسے پ ندکر ما ہے اس میں تھی مزاج ، طبیعت ، اور رغبت ومیلان کا اختلاف ہواکر تاسید. لابنا ہو طبعا اوب ، شعروانشا ، پردازی کی طرف ماکل ہوگا وہ انجیئز نگ ، طب اور ریاضی میں کمال حاصل نہیں کرسکتا ، اور توشخص انجیئز نگ یافنون اور طب کی طرف مائل ہوگا وہ شعروا دب میں برتری مائل نہیں کرسکتا ۔

یہ بات کو کی ایسی آسان نہیں ہے کہ بچہ ہراس علم وضعمون میں برتری وتفوق ماسل کرنے جے وہ بڑے اور مال کرر آئے ہے لیکن یہ بالکل آسان ہے کہ بچہ ان مضامین میں تفوق حاسل کرنے نہیں وہ بندکر الہے اور جن کی طرف وہ ماکل ہے لیکن جو مصنا مین اسے نامین ہے ۔ مصنا مین اور جن سے اسے نفرت ہے ۔ وقعی رسول اکرم صلی اللہ علیہ وم نے بالکل بجا وورست ارشا وفر ما یا ہے جب یا کہ طبر ای مصنوب ابن عماس وضی اللہ عنہ اسے دوایت کرتے ہیں :

بیدی رغبت دمیلان کا خیال رکھنے اور اس سے مناسب حال برتاؤکر نے سے سلسلہ میں نبی کریم ملی النہ علیہ وکم کی ان ہدایات کو دیجھتے ہوئے تربیت اسلامی سے علار (جن سے سربراہ ابن سینا ہیں) نے بچھے کے لیے مہز فن یاتعلیم سے انخابسے وقت اس سے جذبات وفطری صلاحیتول اور بیں طاقت کا خیال رکھنے کا حکم دیا ہے۔ اور ابن سینا نے توصاف معاف کہا ہے کہ بچھے سے جذبات واصاسات کو خوب مجھ لینا چا ہیے ، اور انہی کو اس سے کسی جانب سکانے اور اس میں کمال بید کرانے سے بنیا دبنا ایجا ہے جن انجو وہ کہتے ہیں :

ہروہ کا جس کا بچہ قصدوا رادہ کرے وہ اس سے لیے اس سے موافق ومکن نہیں ہوسکا، بلکہ اس سے لیے آسان کون وہی کا ہوگا جواس کی طبیعت ومزائے سے موافق ومناسب ہو، اور اگر بالفوض علوم اورصنعت وحوفت مرضی وطلب سے تابع ہوتے اور اس میں مزاج ومناسبت کا کوئی خل نہ ہو تا تو بحرکوئی شخص بھی علم وادب سے بے بہرہ اور ہنرو پیٹیہ سے عاری نہونا، اس لیے اب جبکہ ہم دکیع رہے ہیں کہ تما کوگ اعلی ترین علم اور او پنجے سے او پاییٹ وحوفت اختیار کا باہت بی اور بعض او قات انسان کی طبیعت تم ام علوم وصنا عات و حرفول سے متنظر ہوجاتی ہے اور کی سے طبیعت جوڑ نہیں کھائی تو اس لیے بچے کے ذمر دارو بھران کو چا ہیے کہ وہ جب کی قسم کے علم یاصنعت و حرفت کا انتخاب کر ناچا ہے تو سب سے مطابق سے پہلے بچے کی طبیعت کو سیم اس سے مطابق سے پہلے بچے کی طبیعت کو سیم اس سے مراح کا اندازہ کرسے۔ اور اس کی عل قرم کے کا امتحال سے بہلے نہے کی طبیعت وحرفت کا نہ کر ہے ۔

اورشیخ عبدالرمن بن الجوزک المتوفی شود مینے نیچے کی فطری صلاحیتول کی اہمیت واضح کرنے اورکسی کا کی طرف اس ک رہنمائی کرستے وقت ان کاخیال ریجھنے کا بہت اہماً کیا ہے۔ بینا نچہ وہ کہتے ہیں کہ: ریاضت و مجاہرہ مجدا شخص ہی پر کارگر ہوسکتا ہے لیکن گرھے کو ریاضت کوئی فائرہ نہیں بہنچا سکتی ہے، اور درندہ کو اگرچہ کپین ہی سے تربیت دی جائے تب بھی وہ چیر مھیاڑ کونہیں مچھوڑ سکتا ہے

اس کا مطلب یہ ہواکہ بینے کی ثقافتی میدان میں شخصیت سازی اور علمی اعتبار سے تیاری میں اس کی کامیا بی وناکائی میں اس کی ذکاوت اور غباوت اور سیے وقوفی کا بڑا ہاتھ ہے۔ اور اللہ تعالیٰ رقم کرسے اس شاعر برس سنے و رجے ولی شعر کہا ہے؛ افغال میں انسان میں اللہ می

رِ السان عقلند پیدا نه جوا ہو توس کوبہت پہلے پیدا ہونا فائدہ نہیں بہنیا سکتا اگر انسان عقلند پیدا ہو

اس لیسمرنی کوچا ہیںے کہ وہ چھے کی نفسیات پہچا سننے اوراس کی غبادت و مجھاری کا اندازہ کرنے اورعلم وہز میں سے سی طرف اس کی طبیعت مائل ہے اس سے پہچا سننے سے لیکسی وسیلہ کوز ٹھوٹرے ۔

اورمرنی بیکرسکتاسیے کہ وہ بیمے سے بیے زندگی کاوہ داستہ کھول دسے جواس سے فائدسے کا ہوا وراس ک رعبت وطبیعت کے مطابق ہو، خواہ وہ علمی کمال سے علق ہو. یاصنعت و سرفت سے میلان ہیں ترقی سے۔اوران میں سے جوراستہ بھی اختیا رکیا جائے گااس سے لوگول کا فائدہ اور ملک کی ترقی ہوگی۔

مرنی اورخصوصًا باپ کوچا ہیے کہ وہ نیکے اور اس کی ان نوامشات سے درمیان رکا وٹ نہ سے جو وہ دنیا کی زندگی میں ماسل کرنا چاہتا ہولبٹ طبیکہ وہ خوامشات ایس ہول جن میں نیکے کا فائدہ ہوا ور ان سے نفع کی توقع ہو۔

اله مل حظه مومى عطيد الابرائشى كى كما ب التربية السلامية وفلاسفتها "وص - ١٩٤). عمد حواله بالا -

للذا اگر بچیلم مال کرنا چاہ تا ہے اور وہ ذکی وجھ دارہے توم تی کو چاہیے کہ وہ بچے اور اس کی اس نوائش کے درمیان دکا وٹ نہ بنے ہوا ہ اس سلمہ میں باپ ومرتی کو کتنا ہی نرج وانوا جات کرنا بڑی، اور ان شاراللہ وہ جاری اس کا بجل وشمرہ حال کرلے گا جب وہ اپنے نیچے کو عظیم مفکول ووانشو و ساور بھرے کا بل طا، کی صف ہیں دیکھے گا۔ اور اگر وہ بچہ کسی ہنروصنعت کی طرف واغب ہویا تجارت کرنا چاہتا ہو۔ توم بی ووالد کوچا ہیے کہ وہ اس کی اس اور اگر وہ بچہ کسی ہنروصنعت کی طرف واغب ہویا تجارت کرنا چاہتا ہو۔ توم بی ووالد کوچا ہیے کہ وہ اس کی اس ارز و فروائش کے درمیان دکا وسطی مذہب تا کہ وہ بچہ اپنی من اور خوائش کے درمیان کو بینے ، اس میں اقتصادی ترقی اور عمل و پیاوار کے میدان ہیں امت سے لیے قابل وشک میں ہوا میدیں وارزو میں وہ رکھنا ہے اور ہو مقصود حاصل ترقی صفحہ ہو ایک بات ہو ایک اور میں ہوائی ہو ہو گا۔ اور کرنا چاہتا ہے اس سے درمیان تجھری طرح حائل بن جائے گا تو بچہ نفسیاتی طور پر متصادم اور جو ماف طور پر متا تربی کا سب ہو اسے کرنا چاہتا ہے ، اور ان بی کرنا چاہتا ہے ، افر باتی اور دوگروائی شرح میوجاتی ہے جس کا سب وہ باب ہوتا ہے کہ دونوں سے درمیان قبلی ہوجاتی ہوتا ہے ہو دونوں سے درمیان قبلی ہوجاتی ہوتا ہے ، نافر باتی اور دوگروائی شرح میوجاتی ہو جاتے ہی دونوں سے درمیان قبلی ہوجاتی ہوتا ہے ، نافر باتی اور دوگروائی شرح میوجاتی ہے جس کا سب وہ باب ہوتا ہے ہو دونوں سے درمیان قبلی ہوجاتی ہیں دوایت کرستے ہیں ،

الله تعالی الیسے والد برحم کرسے جونیک کام میں اینے بیٹے کی مدد وا مانت کرسے ۔ ((بحسم الله والدّا أعان ولدوعلى برق).

۳- بیجے کو کھیل کود و تفریخ کاموقعہ دیٹا اسلام ایک واقعی و تقیقی زندہ ندہب ہے۔ جولوگوں سے ساتھ اس بنیا د پرمعالا کرتا ہے کہ وہ انسان بیس، ان سے کچھالی شوق، اور نفیائی خواہم شات، اور انسانی طبیعت ہوئی ہے، اس یے اسلام نے ان پریوفرض نہیں کیا کہ وہ ذکر اللہ کے علاوہ کوئی بات ہی ذکریں، اور خاموشی و فکر میں مصروف ہول، اور عبت و نصیحت سے یہ ہروقت غور وفکر ہو، اور تمام فارغ وقت عبادت میں صرف ہو، بکہ دینِ اسلام نے فطرت انسانی کے تقاضول بنوشی و سرور کھیل کود، مذاق و مزاح ہرا کے کو سیم کیا ہے۔ بشر کھیکہ یہ جیزیں ان مدود کے دائر سے میں ہوں جو اللہ سے دائر سے میں رہیں۔

نبی کریم کی التّد علیه ولم کے بعض ضحار کرام مِنی النّد عنهم میں و حانی بلندی و کمال اس درجہ کو پہنچے گیا تھا کہ وہ سیمے کے کہ بمیستہ عبادت میں سکتے رمبنا وروائمی التد کے مراقبہ کا استحفار ہی ان کی طبیعت وعادت بناچا ہیں۔ اورانہیں منیا کی خوشیاں اورانہیں و مارندیں و آسائٹیں بہر بیٹنت وال دینا چا ہیں ، اورانہیں نہمی نوش ہونا چا ہیںے نہ مرشار ، زکھیل کو دیس معروت ، ملکہ انہوں سنے یہ محاکدان کا تما کی وقت اور فارغ اوقات عرف آخرت کے امور میں صرف ہونا چا ہمیں ، اوران

کی دنیا کی زندگی ہیں مباح کھیل کود اور اعتدال سے ساتھ سنبسی خوشی کاکوئی حصریحی نہ ہونا چاہیے۔

یبجیے ہم آپ کو مصرت منظلہ اسپدی رضی النّدعنہ کی حدیث سناتے ہیں میں انہول نے اپنے بارسے ہیں ذکر کیاہے (جبیاکہ اسے امام سلم رحمہ النّدنے روایت کیا ہے):

حضرت حنظلہ کہتے ہیں کہ مجھے حضرت الو بجر صدلی رضی اللہ عنہ طے اور انہوں نے مجھ سے بوچھا: اے حنظلہ تمہا راکیا حال ہے ؟ ہیں نے کہا: حنظلہ تومنافق ہوگیا ہے ، حضرت ابو بجر نے فرایا : سبحان اللہ تم کیا کہ درہے ہوا بحضرت منظلہ فرایا کہ حب ہم رسول اللہ ملی اللہ علیہ وہلم کے پاس ہوتے ہیں اور آپ ہمیں جنت و دوزخ یا دولاتے ہیں تو ایس معلوم ہو ناہیں ہیں اپنی آنکھوں سے دیکھ رہے ہیں ، لین بھر حب ہم آپ سلی اللہ علیہ وہلم کے پاس سے معلوم ہو ناہیں دی خوا با مسلی اللہ علیہ وہلم کے پاس سے معلوم ہو ناہیں بھوی بجول اور زمینوں میں لگ جاتے ہیں تو بہت سی وہ باتیں بھول جاتے ہیں ، حضرت ابو بجر نے فرطایا : بخدایہ توہی محمول کرتا ہوں ، حضرت حنظلہ کہتے ہیں کہ بھر میں اور حضرت ابو بجر سول اللہ صلی اللہ علیہ وہم کہ فرطا میں حاضر ہوئے اور میں نے عوض کیا : اسے اللہ کے سول حنظلہ منافق ہوگیا ہے ، تو سول اکرم صلی اللہ علیہ وہم نے دریا فت فرطایا : اوروہ کیول ؟!

میں نے عرض کیا: اے اللہ سے رسول ہم جب آپ کی خدمت ہیں حاضر ہوتے ہیں اور آپ ہمارے سامنے جنت ودوزخ کا نذکرہ کرتے ہیں توالیا محسوس ہوتا ہے کہ گویا ہم اپنی آنکھول سے ان کامشا ہرہ کر رہے ہیں بھر حب ہم آپ سے پاس سے اٹھے کر چلے جاتے ہیں . اور اپنے بیوی بچول وزمینول میں مشغول ہوجا تے ہیں تو بہت ہی باتیں بھول جاتے ہیں . رسول اکرم صلی اللہ علیہ کے ارشاد فروایا ، قسم ہے اس ذات کی سس سے قبضہ میری جان ہے اگرتم ہمیشاہی کیفیت پر برقراد رہے جس کی میرے جونول اور دائول کی سب سے توفر شتے تم سے تمہارے بچونول اور دائول میں ملاقات کرتے ہیں جب اگری کے دہتے توفر شتے تم سے تمہارے بچونول اور دائول میں ملاقات کرتے بیکن اے منظار وقفہ وقفہ سے ۔ اور میکلمہ آپ نے مین مرتبہ دہ ایا ۔

ان وسأئل ميں سے وہ ہے جے طبرانی مسندج پر سے ساتھ رسول النُد صلی النُدعلیہ وسلم سے روابہت کرستے ہیں

### كرآب في ارشا د فرايا :

((کل شنی لیس من ذکرانه فهوله و اُوسه و برده چیز بس بن التُدکا ذکر نه بوده کمیل کود او یمول به الا اُربع خصال: مشی الرجال بین الغضین، سوائے چار چیزوں کے: انسان کا تیراندازی کے لیے دونو و سائد بیا، اور اپنے گمورسے کومش کوانا، و سائد بیا، اور اپنے گمورسے کومش کوانا، و تعلیمه المسیاحیة، در این بیوی کے ساتھ دل نگی، اور تیرنا سیمنا۔

ا وراس کتاب کی مختلف مباحدت ا ورمختلف مقامات پر ان و سائل ہیں سے بہت سے دسائل ہم ہیلے ذکر کر چکے ہیں ا اس لیے وہال پڑھ کیجیے تاکہ آپ کو اس دین کی ساحیت اور اسلام کی عظمیت بترمیل جائے۔

لهذا جب صاف تفراکمین، اورنفس کے بوجہ کوتم کرنا، اورجہانی تیاری وورزش مسلمان کے لیے لازمی امور میں الہذا جب صاف تفراکمین، اورنفس کے بوجہ کوتم کرنا، اورجہانی تیاری وورزشن مسلمان کے لیے لازمی امور میں بیس سے ہے تو بھران چیزوں کا پھے کے لیے جبکہ وہ جبوٹا ہو لازم ہونا اور زیادہ اولی ہے بس کی دو وجہبیں ہیں : ا - بیجے ہیں سیکھنے کی صلاحیت بڑھ سے ہونے کی بنسبت بچپن ہیں زیادہ ہوتی ہے چنانچہ بیتی وطہانی درج ذیل مدین روایت کرتے ہیں :

(دالعلم فی الصفر کالنقش فی الجس)، بین برتعلیم مامس کرنا ایسا ہے میساکہ تھر پنقش کرنا۔ ۲۔ بچہ حبب چھوٹا ہوتواس کو کھیل کو دہستیول اور سیرتفریح کا اس سے زیادہ شوق ہوتا ہے جواسے بڑے ہے تھے

ك بعد بوتا بد، اس ليك كرمنى نوادرالاصول من درم ذيل مدميث روايت كرت بين:

بي كالجمين مين كهيل كودا ورجاق وحوبند مونا برسم بوكر اس

(رعدامة الصبى فى صغرة ذيادة فى عقله فى كبرة ».

کے عقل ند ہونے کی ولیل ہے۔

ادرنبی کریم ملی التّٰدعلیہ وسلم جوہر جیزیں بہتری نموز وقت لڑی ہیں وہ نود کھی صحابہ کرام وضی التّٰہ عنہم سے بچول سے دل نگی فرایا کرتے تھے، اوران کی تفریح کا ساما ان بہم پہنچاتے ، اور ان کونوش کرتے، اوران سے ساتھ مزاح فراتے، اور ان سے مانوس ہوتے، اور صاحت تھے سے ایھے کھیل اور مباح تفریح پران کی ہمت افزائی فراتے تھے جس سے چند نمونے ذیل میں پیش کیے جاتے ہیں :

۲- ۱ در ابونعلی حضرت عمربن الخطاب رسی الندعنه سے دوایت کرسے بیں کہ اہبول نے فرمایا ہیں نے حضرت سن و حسین نو کسین نوی الندعلیہ وہم سے کا ندسے پر دیکھاتو میں سنے عمربی کا ندار سوار ہو۔ تونی کسین نوی الندع نہا کونی کریم ملی الندعلیہ وہم سے کا ندسے پر دیکھاتو میں سنے عمربی کا ندار سواری پرسوار ہو۔ تونی کریم علیہ الصلاۃ والسلم نے ارشاد فرمایا : یہ دونول شہر اربھی تو رہرت اچھے ہیں۔

فرارب تھے: بہترین اونٹ تمہارا اونٹ سے اوربہترین بوٹراتم دونوں کا جوٹرا ہے۔

۵-۱۵ ملم ملم مضرت انس بن مالک رضی الله عند مندے روایت کرنے ہیں کہ انہوں نے فرایا: رسول الته ملی الله علیہ اضلاق کے اعتبار سے لوگوں میں سب سے اچھے تھے . ایک روز آپ نے مجھے سی کا سے جیجا، توہیں نے کہا: بخدا میں نہیں جاؤں گا بی کریم صلی الله علیہ ولی سے بھا تو کی سے جیجا کہ میں ہوائی کا بی کریم صلی الله علیہ ولی سے بھا تو میں ہے تھے ، انجا نک جیم الکن را بھے لوگوں سے پاس سے بھوا بو بازار ہیں تھیل سے تھے ، انجا نک رسول الله علیہ وقتم نے بیچھے سے میری گدی مجھولی ، جب میں نے آپ کی طرف دیکھا تو آپ نس رہے تھے ، بھرآپ سے ارشاد فرطیا: اسے آپ کی طرف دیکھا تو آپ نس رہے تھے ، بھرآپ نے ارشاد فرطیا: اسے آپ کی طرف دیکھا تو آپ نس رہے تھے ، بھرآپ نے ارشاد فرطیا: اسے آپ کی طرف دیکھا تو آپ نس کے بال اسے الله دیکھی سول میں الله علیہ واللہ بول ، حضرت اُس ضی الله عند فرط تے ہیں ؛ بخدا میں نے نبی کریم سی الله علیہ والم کی فوسال تک فدرت کی ہے دیکن مجھے یا دنہیں کہ آپ نے یہ فرطیا ہو: تم نے ایسال میں الله علیہ والم کو آپ نے یہ فرطیا ہو: تم نے ایسال میں الله علیہ والم کو آپ سے دنہیں کیا اس کو آپ نے یہ فرطیا ہو: تم نے ایسال کی والیہ ہیں گیا ؟

۲- امیرالمؤمنین مصریت عمرین اتخطاب رضی الندعنه فراتے بین که اینے بچول کوتیرنا اورتیرانداری سکھا وَاورانہیں

حكم دوكه وه گهورول كى بېشت پراچىلنا وسوار سوناسىيكىيى.

نبی کریم الله علیہ ولم کی بچول کے ساتھ ول ملی اوران کے بوجھ کوختم کرنے کی تدبیری، اوران کے ساتھ المطفت ونرمی کو کیھتے ہوئے تربیت اسلامی سے علماء نے یہ تھریج کی سبے کہ نبیجے کو اسباق وکا ) کاج سے فارغ ہونے سے بعد کھیل کوواور سیرتنفریج

کی *ضرورت ہے۔* 

ادریسے برعبارت سمی لاحظه فرایسے جوام عزالی نے احیاراہلوم " میں اس سلسلہ میں تحریر کی ہے تکھتے ہیں کہ بے کومکتب و مررسہ سے والیس آنے کے بعد ایسے اچھے کھیل کودکی اجازت دے دینا چا ہیے بس کے ذراید کمتب و مرسم کی تکان اترجائے یکین اس مدتک کہ وہ کھیل کو دمیں اتنامشغول نہ ہو کہ اس میں تھی پچور چچو ہائے۔اس سلیے کہ بیچے کوشک سے روکنا وراس کو بہیشہ تعلیم میں شغول رہنے پرمجبور کرنا ہے کے دل کومردہ اور ذکا وت کوماندا ور زندگی کوسید مزہ کردیا ہے ا در بھزتیجہ بیز نکاتا ہے کہ وٹھلیم سے ہی چیٹکارا پانے کی کوششش ہیں مصروف ہوجا تا ہے۔

علامه عبدری نے میں کہاہے جوام کغزالی نے فرایا ہے کہ اسباق سے فراغت یا کا سے فارع ہونے کے لبعد

بحے کو کھیل کود اور طبعیت المی تھالکی کرنے کاسامان ہم پنجا یا صروری ہے۔

يكىلى بوتى بات بدكراس كهيل كودكى حكمت يرب كربجه جوتكان ، تنك لى اوربوج يحسوس كرما بداسيختم كزيا جائے اوراس میں نشاط وب تی اور ذہن کی صفائی تھرلوٹ آئے اوراس کا جم بیمار بول و آفتول سے فعظ ہوجائے ليكن مرفي كويطبيك كم كول مستحيل مين دواتم اموركا خيال رسكيد:

ا کھیل صورت سے زائد بوجھ اورمشقت میں مبتلا کرسنے والا نرمو ، اس سے کہ اس سے بران کو نقصال بہنچا سے ؛ وجبم كمز ورموما ما سيد، اورنبي كريم صلى التُدعلية ولم كاارشا دمبارك سيد كمه نقصان بهنجا وَنه نقصاك المُصاوَر

۲ - بیکھیل کود دوسرے ایسے فرائفن پاکامول کے اوقامت میں نربوجو وقت ان ذمرداربول پاکامول کے لیے موس سوداس ليدكه السعد وقت ضائع بوقاسيد اورمطلوبه فائدة ختم بوجا ماسيد اور نبى كريم ملى التدعلية وتم فرات مين:

(( احسوص على ما ينفعك و استعن بالله ولا اليسكاموں ميں لگونوتمہيں فائده پہنچا ئيں۔ اورالتدتعا فی

ستصعددولسب كرو اورعاجز نربنور

تعب ذ » • صبحت م

۲۰ - گفراور سبد وررسه می باهمی تعاون بیداکرنا میسیمی کمکمی وروحانی وجهانی شخصیت سازی سیم موثر عوامل میں سے يرتمى بيك كمر مرسدا ورسيدي قوى رابط وتعاون بيداكيا جائي.

ع یات ظاہر ہے کد گھرکی ذمر داری بیلیے نمبر رہ جمانی تربیت پر مرکوز ہوتی ہے ،اس لیے کہ تخص اسینے بچول کے حقوق خالع كرتا ہے اور ابل وحیال كى معیشت كاخیال نہيں ركھ او اخت گنابر گار ہوگا، اور ابوداؤدنبى كريم سلى الله عليه وسلم سے روايت كرسته بين كه آب فيدارشاد فرمايا:

انسان کے گنا بھار ہونے کے لیے اتنی بات کا فی ہے کروہ جن کا ومروار ب انهين منا نع كروسے ر

((كغى بالمسوء إشمَّاأنت يضيع مت يقوت)).

اور سلم کی روایت میں ہے کہ: (اکفی ما لمسرُ إِنْمَا اَن یجسس عنون

يملك قويته».

انسان کے گن سبگار ہونے کے بیے اتنی بات کافی ہے کہ دہ مجن کا کھیں ہے ان کی طرف سے ماتھ کھیٹے ہے ۔

کی نماز اور قرآن کریم کی تلاوت سے ایسے ربانی فیوش اور الله کی ایسی روحانی تربیت بیں مرکوز ہے اس لیے کہ جاعت کی نماز اور قرآن کریم کی تلاوت سے ایسے ربانی فیوش اور الله کی ایسی رحمتیں ہیں جوزختم ہونے والی ہیں پر منقطع ہوسکتی ہیں ، امام بخاری مسلم حضرت ابوہر رہے منی اللہ عند سے روایت کرتے ہیں کہ انہول نے فرایا: رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرایا ہے کہ:

الصلاة الرجل فى جماعة تضعف على صلاته فى بيته وفى سوقه خمساً وعشري ضعفاً، وذلك أنه إذا تسوضاً فأحسن الوضوء شمخرج إلى المبجد لا يعنوجه إلا الصلاة لم يخطخطوة إلا رفعت له بها دس جة . وحطت عنه بها خطيئة ، فإذ اصلى لم تزل الملامكة تعلى عديد فإذ اصلى لم تزل الملامكة تعلى عديد مادام فى مصلاة مالى عدث تقول : الله ما وحله الله ما دعه ، ولايزال فى صلاة ما انتظر العدلاة ).

انسان کاجماعت سے نماز پڑھنا ہی کا زسے جگری پڑھی جائے یا از دسی پڑھی جائے ہے۔ اور اس کا جہ بہ سے کہ جب انسان وخوکرتا ہے اور انجی طرح سے وخوکر کے مسجد کی جانب جلتا ہے اور اس کا مقعد نماذ ہی ہوتو وہ کو گئ فیم ہم ہم کے مسجد کی جانب جلتا ہے اور اس کا مقعد نماذ ہی ہوتو وہ کو گئ فیم نہیں اٹھا کا گربر کر اس کا ایک درجہ بلند کر دیا جا تا ہے ، اور اس کی ایک غلطی کو معاف کر دیا جا تا ہے ، چھرجب وہ نماز پڑھتا ہی توفر شخصے اس کے سئے اس وقت تھ دعاکرت رہنے ہیں جو تا جب بی کہ وہ اپنی نماز کی جگر ہر ہوتا ہے اور اسے اور سے ومنونہیں ہوتا ، جب تک وہ این نماز کی جگر ہر ہوتا ہے اور سے ومنونہیں ہوتا ، وسئے کہتے ہیں اسے انتداس ہر دھم کر اسے انتداس ہر دھم کر اور خسنے کہتے ہیں اسے انتداس ہر دھم کر اسے انتداس ہر دھم کر اور اسے انتداس ہر دھم کر اسے کا زبی کے حکم ہیں رہتا ہے۔ انسان جدب بھر ہم کر المان خار کی کے حکم ہیں رہتا ہے۔ انسان جدب بھر ہم کر اسے خار ہی کے حکم ہیں رہتا ہے۔ انسان جدب بھر ہم کر کر اسے خار ہی کے حکم ہیں رہتا ہے۔ انسان جدب بھر ہم کر اسے خار ہی کے حکم ہیں رہتا ہے۔ انسان جدب بھر ہم کر کر اسے خار ہی کے حکم ہیں رہتا ہے۔ انسان جدب بھر کر کر اسے خار ہی کے حکم ہیں رہتا ہے۔

و اورامام سلم حضرت ابوم رمره وشى التدعندسد روايت كرية بيل كرانهول في فرايا رسول التصلى التدعلية وسلم في ارشاد فرايا سيدكد:

((ومااجتمع قوم في بيت من بيوت الله تيلون كتاب الله ويتدارسونه بينهم إلا نزلت عليهم السكينة وغشيتهم الرحة وحفتهم اللائلة وذكرهم الله فيمن عندلا).

اورنہیں مجع ہوتی کوئی قوم اللہ کے گھروں میں ہے کسی گھریں ا تا وت کریں اللہ کی کتاب کی اور اسے بہیں ہی پڑھیں سکر یہ کہ ان پرسکینت نازل ہوتی ہے۔ اور رحمت ان کوڈھا ب بتی ہے اور فرشے انہیں گھیر لیتے میں اور اللہ تعالی ن کو یادکر آ ہے ان فرشتوں کے سامنے جواس کے ہاس ہیں۔

اور ده امورجن میں کسی بھی دوآ دمیول کا اختلاف نہیں ہوگا ان میں سے یعنی ہے کہ مدرسہ کی سب سے پہلی ذمرداری یہ ہوتی

ہے کے علمی تربیت ہو اس ہے کہ شخصیت سازی اورانسان کی کرامت وعزیت سے بلندکرنے میں علم کا بہبت بڑا ہاتھ ہو کہ ہے اس لیے دین اسلام کی نظریں علم کی بہبت نضیاحت ہے : عاصر ندی کا مد

علم سے فضائل میں سے یہ سیسے کہ :

جوشخص علم طلب کرنے کے راستے میں کا سہتے تووہ جب یک والیس نہ لوٹے اللّٰہ می کے راستے میں رسّلہے۔

(دمن خرج فی طلب العلم فیلوفی سبیل اللّه حتی پرجع)) . جامع ترمذی اللّه اوراس کے فضائل میں سے یہ سیے کہ :

بوشخص کی ایسے داستے پر ملک ہے میں میں وہلم کی الاش میں ہوتواللہ تعالیٰ اس سے بیے جنست کا داستہ اسال فرما

«من سلك طربيتًا يلتمس فيد علمًا سلمل الله لدطربيًّا إلى الجنة».

ميحسلم

ادراس کے فضائل میں سے یہ سے کواں کے اس کم طلب کی خوشی میں فرشتے طالب علم سے لیے اپنے پُریجھاتے ہیں اور عسام کے لیے اپنے پُریجھاتے ہیں اور عسام کے لئے وہ محنسلوق مغفرت کی دعاکرتی سہے جو آسسسمانوں اورزمینوں میں ہے تی کہ پانی کی مجعلیاں مجمی، دطاحظہ ہو ابوداؤد وترمیزی)۔

اوراس كے فضائل میں سے يہ سے كر :

عابدپرعالم کی فعنیلت اسی ہے جیسے کہ چاند کی فغیلت ووسر

لافضل العالب على العابد كغضل القرعلي

تماً /مستاروں پر۔

سائرالكواكب». سنن الجانودوترمذى

ہم جب یہ کہتے ہیں کدگھراور سم جدو مدرسہ میں باہمی تعاون ہوتواس کا مطلب یہ ہے کہ نیکے کی شخصیت کا مل دمکل ہوگئ ہے۔ اور وہ روحانی وجمانی وعلی اور نغبیاتی طور پڑکل ہو جیکا ہے، بلکہ وہ اپنی قوم کی ترقی اور دین کی سربلندی کے لیے عضو فعال بن گیاہے۔

نیکن نیہ باہمی تعاون وتعلق مکل طری<u>قے سے ا</u>س وقت تک تا کہنیں ہوسکتا حبب یک دو بنیا دی شرفیس تعقق بهول و

۔ کہ مدرسہ وگھرکی توجیہات ورہنہائی ہیں اپس میں ایک دوسرے سے تعارض واختلاف نہو۔ ۲ ۔ کہ یہ تعاول اس بیے ہوتاکہ اسلامی شخصیت کی تعییر میں توازن وکمال پیدا ہو،لئہذااگران مذکورہ بالا دو شرطول کے سے من میں باہمی تعاون ہوگا تو بچہ روحانی وجہانی طور سسے کامل وکھل وفقیلی ونفسیاتی طور پر کمال کو پہنچا ہوا ہوگا، بلکہ وہ ایک متوازن ا درمعتدل ابساانسان بن جائے گا ہے دیجھ کر لوگ متعجب ہول کے بلکہ اس کی طرف انگلیول سسے اشارہ کھا جائے گا۔ مرسه کے ساتھ تعاون سے میلان میں مَیں یہ چاہتا ہول کہ والدین ومربیول سے ساسفے درج ذیل حقائق پیشس کردول:

العن - ہمارے مدارس وجامعات سے اکٹر معلمین واساندہ وضیح تربیت سے بارے میں اس سے سواا ور پھنہ ہیں جانے کہ وہ دومرول سے انولاق وکردار کی نقالی اورا بل بورپ کی عادات واطوار کی نقل آبار نے کا نام ہے۔ اور مشرق یا مغرب سے اس سے بنیادی نظریات وعقائہ وافکار کی جھیک مانگنا ہے۔ اور آپ ان بوگول کوخود و کھیے لیجھے کہ مشرق یا مغرب سے اس سے بنیادی نظریات وعقائہ والمولئہ مغون نظام سکھاتے اوران کی تربیت دیتے ہیں، اس سے کہ ان سے کہ معرب ہونیات اور محوسے ولی اور فادر غ عقول گندے اور سے حیا یور پ اور کافر شیوعیت دکیوزم م سے دلادہ اور مادہ اور اس کے چمکدار ظاہر کی محبت میں غرق ہیں۔

ب دراس کی وه کتابی بوطلبه اسکولول و کالجول میں پرطست میں وه فریب و دھوکہ بازی بنظیک اور نداسب واریان پرسے میں اور کان پرطن آئی بھی اور کفروا لحاد کی دعوت سے بھری پردی ہیں۔ مثال سے طور پران ہیں سے تعبق ہم آپ کے ساسنے بیان کرتے ہیں ہٹ کی ٹانویر کا گوگری کی معاشر تی علوم کی تحاب میں لکھا ہے کہ ہروہ پروگرام جب کامقصد دینی اساس پرسای تنظیم بناناہو وہ بے وقوفی کاپروگرام ہے۔ اور سائنس کی کتاب میں ڈارون کے نظریہ کو علمی تعقیقت بناکرہ شن کیا گیا ہے۔ تاکہ اس کے دیون خات سب کو معلق مسے کہ تعقیق وعلم نے اس نظریہ کو باطل ٹا بہت کرسے ددی کی ٹوکری کی نذر کرویا ہے اور اوب کی کتاب میں اسلامی پردہ کو نشانہ بنایا گیا ہے اور ریا خالم کیا اسلامی تاریخ کو بھی نشانہ بنایا گیا ہے اور ریا خالم کیا سے کہ اسلامی تاریخ کو بھی نشانہ بنایا گیا ہے اور رہو بھی تاریخ ہے گئے ۔

"اریخ لوط مار جبروا سبراؤا ور آزا وی و بے اور اور کی گاریخ ہے ۔

"اریخ لوط مار جبرواسبلادا ورآزا وی وب یاه روگی تاریخ بینے یا۔

ج - طالب علم مارس میں جومضا مین برط صقاب ان میں دوسر سے علمی واد بی مضامین کے مقابلہ میں دینی تعلیم بنتا کہ مقداریں ہوتی ہے۔
کم مقداریں ہوتی ہے۔ اس لیے اگر مالت یہ ہوتو مسلمان کے لیے یہ برگرد ممکن نہیں کہ وہ قرآن کریم کی طاوت میں کمال پیا
کریے ،اور زیمکن ہے کہ وہ شراعیت کے احکام پر طلع ہو،اور نہ یہ وہ سیرت و تاریخ کے حقائق کا احاط کرے کیو کہ برورسہ
اس کو یہ معلوات ہم نہیں بہنچا اور اس لیے طالب علم حب مدرسہ واسکول سے بحل ہے تواس کی ثقافت محدود موتی ہے اور وہ اسلام کے نظام اور قرآن کے معلوم اور اپنے آباء واجداد کی تاریخ سمجھے سے قاصر ہوتا ہے۔

ٹ س نفریہ کا خدصہ یہ ہے کہ اٹ نااصل ہیں کیک زندہ جرٹومہ تھا چھرا یک صسسے دوسری صست کی طرف ترقی کرارہ یہ ں بککہ بندربز گیا ،ورمجھر س سے ترقی کر کے شان بن گیا ، طاحنطہ فرماسیے کتاب شہبات وردووٴ س ہیں اس نفریہ کی علمی طورسے تر دیدکی گئی سہے ،ورعلمی بجست و منافشتہ و تریحقیقاتی مطابعہ سے اس کو باطل و لغوفرار دیا گیا ہے ۔

ست و حفوفرواسیت بهاری کتاب او ورفته رانبیاء اوس - ۴۲) -

اس بیے اگرمرنی گھرٹی سیمی طریقے سے تربیت کی ذمرداری پوری نرسے تواکٹرالیا ہوتا ہے کہ بیے کا حقیدہ نراب ہوجا تا ہے اور افلاق جھ جا ہے ہیں بھرزاس بیے کی اصلاح رہنائی وتوجیہا سے ہوتی ہے اور ذکوئی اصلاح کی ترکیب اس کی نجی وٹیڑھے بن کو دورکر ہائی ہے۔

البذااسب کافلاصہ بے کلکہ اگر بچہ بحدیں روحانی اور مدرسہ یں بلی واعتقادی اور ثقافی تربیت تولیم مال کررا ہوتو گھریں باب سب سے پہلے ہے کی جہانی واضل تی تربیت کا ذمر دارہے بھی اگروہ ہوسوس کرتاہے کہ بجہ مدرسہ دا کول میں اسلامی عقید سے پہلے ہے کی جہانی واضل تی تربیت کا ذمر دارہے بھی گررا ۔ اور دینی تعلیم سے فائدہ بیں اشھار با ہے توباپ کو چا ہیں کہ برنوعیت سے اپنی پوری ذمرداری پورسے کرسے اور ہیے کی عقیدہ ، عبادت ، افلاق ووین اوسی مراس چیز کے اعتبار سے تربیت کر سے سے بالی اسلامی سے تعلق ہو بلکہ اس کو چا ہیں کہ دو چند کر دے ، اور اپنے مراس چیز کے اعتبار سے تربیت کر سے جو بی کے سے عظیم فائد سے اور بوری نیر کا ذرائیہ ہو، جبیا کہ باپ کو چا ہیں کہ ہے کہ تھے کہ اور اس کی اعتبار سے کہ بانی اور اچھے ساتھیول اور تمجدار شم کے دعوت تبلیخ کرنے والے افرادسے قائم کر دے ، اور اس کی سے تعلق میں مراد دوری کے تیجھے دورے کی دورے دورے کی اور تو کی اور تو کی کے تیجھے دورے کی ۔ کہ سے متا نز ہوگا داور کا دو کھر نے دورے کا دو کھر نے دی کھر نے کے دورے داکھ کے دورے کا در کھر نے کھر کے دورے کا در کھر نے کی کہ دی کہ کا دورے کی کھر نے کی دورے کی دورے کی دورے کی دورے کی دورے کا در کھر نے کھر کے دورے کی کے تیجھے دورے کی کے دورے کی کے دورے کی کھر کی دورے کی کہ دورے کی کہ دورے کی کہ دورے کی کہ دورے کی دورے کی کے تیجھے دورے کی کے دورے کی کہ دورے کی کے دورے کی کے دورے کیا کہ کو دورے کی کے دورے کی کے دورے کی کے دورے کی کے دورے کی کھر کی کھر دی کے دورے کی کے دورے کی کھر کے دورے کی کے دورے کی کے دورے کی کھر کی کھر کی کہ کہ کہ کی کھر کی کھر کی کھر کی کر دورے کی کہ کے دورے کی کھر کی کھر کی کر کے دورے کی کھر کی کھر کے دورے کی کھر کر کی کھر کی کھر کی کھر کی کہ کر کھر کی کھر کی کھر کے دورے کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کے دورے کی کھر کی کھر کی کھر کو کو کہ کو کر کے کہ کو کر کے کہر کی کھر کی کر کھر کی کھر کی کھر کے کہر کے کہر کے کھر کے کہر کی کھر کے کہر کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کے کہر کے کہر کی کھر کی کھر کی کھر کے کہر کے کھر کے کہر کی کھر کی کھر کے کہر کے کہر کے کہر کے کہر کے کہر کی کھر کے کہر کی کھر کی کھر کے کہر کے کہر کے کہر کی کھر کے کہر کے ک

٥- مرقی اور پیچے سے درمیان رابطہ کومضبوط کرنا کا علما نفس وتربیت ومعاشرت سے پہال تربیت سے تفق علیہ قوا عدواصولوں میں سے پیچے اور مربی سے درمیان رابطہ وتعلق کامضبوط وقوی کرنا بھی ہے تاکہ تربیتی اثرات اچھے طریقے سے پڑسکیں اورخوب عمدگی سے علمی ونفسیاتی واضلاقی تحمیل وتعمیر توسیحے۔

دوشن شمیراورا صحاب عقل وبھیرت سے یہاں یہ بات مطین دہ ہے کہ اگر شیجے ومرنی یا طالب م واسمتا ذہ سے درمیان بعد ونفرت ہوگی توکسی صورت ہیں نہ طالب کم مجھ حاصل کرستے گاا ور نہ اس کی تربیت ہوسکے گی ۔ اس سیا والدین ومربیوں پروا جہب ہے کہ وہ ایسے ایجا بی ذرائع ووسائل تائش کریں جن سے بیجے ان سے مجمت کرنے مگیں ، اوران کا باہمی تعلق قوی ہو ، اور آہیں ہیں تعاول کی فضا قائم ہو ، اور وہ شفقت محسوس کریں ۔

و ان دسائل میں سے یہ ہے کہ مرتی نیکے سے مسکرا ہرہ وا نبسا طسسے سے ۔اس لیے کہ امام ترمذی محفرت الوذرشی النّہ من سے درج ذل مدیث روایت کرستے ہیں :

لا تبسمك فى وجه أخيك صدقة > . تهال الين بمانى كم مليف كرنا صدقيه -

88 اوران وسائل میں سے پیھی سیسے کہ بچہ اگرا چھا کا کرسے یا پڑھائی میں سبقت لیے جائے تو ہریہ وانعام وے کر اس کی ہمت افزائی کرنا چا ہیںے،اک سیسے کہ طبرانی اپنی تحات معم اوسط میں سصرت عائث مینی التُدعنہا سے روایت کرتے

بی*ں کہ نبی کریم صلی الشہ علیہ وقع نے ارشا د فرمایا* :

آبس میں ایک دوسرے کو بدیہ وداو، باہمی محبت پیدا کراہ

((تحق دوا تحق ليوا))،

ور ان ذرائع میں سے پرجی سبے کہ بجبر کو یہ محسوس کرا دیا جائے کہ اس کا ابتقام کیا جارہا ہے اور اس سے مجست وشفقت برتی جاری ہے۔ اس ليه كنهيقى مضرت انس رضى الدعنه سے مديث مِرفوع نقل كرتے ميں:

((من أصبح فى يهتم بالمسمين فليس منهم)). بين في المسمين فليس منهم).

وران وسأل ميں سے پيھے کے ساتھ سن افلاق سے بیان اور الاطفت و نرمی کرنا بھی ہے اس ليے کہ ترندی ونسائی وحاکم حضرت ابوہر رہ وضی النّدعنه سے تقدراولول ہے یہ روایت کرتے ہیں کہ نبی کریم صلی النّدعلیہ وسلم نے

> (( كمل سؤمن يد إيمانًا أحسنهم خلقً وأنطف لهم بأهله ».

مومنول میں سب سے زیادہ کامل ایمان و لا و پخص ہے جوان سب سے زیادہ اچھے اخل ق کامانک اور اینے گھڑاوں

کےساتھ زم ہو۔

وران دسائل ہیں ہے مرنی کا پہلے کی خواہش کا پوراکرنامھی ہے تاکہ وہ اس کے ساتھ سن سلوک اورا مجھا برتا وُ كرسداس فيدكر ابواشيخ نى كريم على التُدعلية وم مصدر الريت كرسة بين كراب في العرايا:

الله تعالى اليسه باب پررهم فروئے جوابینے ساتھ نیک سوگھ پراپنے بیٹے کی مد وکرے ۔ العنی بچے سے ساتھ یہ بڑاؤ

الايجه الله والدّا أعسانت وله لا

كركيس سے وہ اس كے ساتھ سنوك برجبور موجائے :-

وں دسائل میں سے پیھی ہے کے مرتی بیھے کے ساتھ گھل مل جائے، اس سے بنسی مذاق کرے اور اس سے B ساتھ بچہ بن جائے .اس لیے کہ طبرانی مصرت جا بررضی النّدعنہ سے روایت کریتے ہیں کہ انہوں نے ضرایا میں نبی کریم صلى التّه عليه وم كى فدمت ميں حاضر بيوا تو دمكية أكه آب دونول باتھول يا وُول كے بل مِل رہے تھے اور آپ كى بيشت مبارك پر حضرت صن جسین سوار متھے اور آپ فرما رہے تھے کہ مہترین اونرے تم دو**نوں ک**ا اونرے اورمہترین ایک ساتھ سوار مہونے واسلع سائتى كم دونول بور

مرنی اول اورتمام بوگوں کے بیسے بہترین نمونه نبی کریم صلی الله علیہ وقعم ایسے صحابہ کرام . ساتھیوں اور تما می وہ لوگ جو اہل دعیال و بچول میں سے آپ سے علق تنصے آپ ان سب کسے ساتھ ان مثبت وسائل کے تطبیق وسینے میں شاندار

چنانچیمسکرلنے سے سلسلہ میں مصریت ابوالدردار دائی التّدیخنہ فرواتے ہیں : میں نے نہیں و مکیھا یا یہ فروایا کہ میں نے

یول النّه سلی النّه علیہ وم کوجی مجمی کوئی بات کرتے نہیں سنامگریہ کہ آپ کرائے۔

اوردريد ويض مح المالي يه آما به كونبي كويم صلى النه عليه والمم بديه قبول فرايا كرست مصاوراس كابرل بهى ديارت

بچوں برجم اوران کا خیال رکھنے اوران کے اوران کے اوران کو چوم ایکرتے سے اعتبار سے اگر دیکھاجائے تو یہ آئے ہے کہی کریم کی النّدعلیہ ولم بچوں کے سول پر ہاتھ بچیر سے تھے ، اوران کو چوم ایکرتے ستھے ، بخاری ولم میں مضرت عائشہ وشی اللہ علیہ ولم نے منہا سے مروی ہے وہ فرواتی ہیں کہ رسول اللہ علیہ ولم نے منے منہ کے منہ سے بیٹوں من کو بچوما، اس وقت آپ کی خدمت میں افرع بن حالب تمیمی وشی اللہ عنہ جی بیٹھے ہوئے ستھے ، اقرع نے کہا : میرے دس نے بیس میں میں نے میں ان میں سے کہی کو نہیں چوما ، تورسول اللہ علیہ ولم نے ان کی طرف نگاہ اٹھا کر دیکھا بھر فرمایا : کہ جو مخص رحم نہیں کہا تاس برجم نہیں کہا جا آ

ا ورطبراً نی مصرت عبداللّہ بن عباس مینی اللّہ عنہا سے روایت کرستے ہیں کہ نبی کریم ملی اللّہ علیہ وہم کی نعدمت مبارک ہی حبب درخت کابہ لاکھیل لایاجا آتھا تو اس مجلس ہیں جو بچے موجو د ہوتا تھا آپ وہ کھیل اسے دسے دیاکرستے تھے۔

اور بخاری مسلم حضرت انس منی الله عند سے روایت کرتے ہیں کہ نمی کریم ملی الله علیہ وہم نے ارشا د فرایا : میں نماز شروع کرتا ہول اور میرا ارادہ ہوتا ہے کہ فویل نماز بڑھاؤل کین میں پھے کے روسنے کی آواز سس کرنماز منقر کردیتا ہول اس سے کہ مجھے پتر ہے کہ اس کی مال کواس کا کتنا دکھ ہوگا۔

ا درآب لیالنه علیه وم کے بن اضلاق ا درا پنے صحابہ رضی الناع نہم المبعین کے ساتھ ملاطفت ونرمی کا بہاواگر دکھیں تو آل مفوع پر سیے شاراحا دریث میں ہیں :

الله بخاری ولم بین سفرت اس منی الله عند سے مردی ہے کہ انہول نے فرایا: میں سفنی کریم سلی الله علیہ ولم کی دی سال کا کہ خدمت کی ہے کہ میں اللہ علیہ ولم کی دی گام کیا تو اس کویہ ذوالا اور اگر میں نے میں کوئی کام کیا تو اس کویہ ذوالا کویہ ذوالا کا کہ ایسا کیول کیا اور اگر میں نے میں کوئی کام کیا تو اس کویہ ذوالا کہ ایسا کیول کہ ایسا کیول کہ اور البونعیم کی روایت میں یہ الفاظ میں کہ مصرت اس فریا تے ہیں: مجھے میں مول اکرم صلی اللہ علیہ تولم نے برامجال نہیں کہا، اور زمیمی مارا اور نہ عجوا کا ورند ناک میمول برطبھ الی اور نہیں اللہ علیہ تولم کے ایس کے میں اور اللہ کے میں اور اللہ کے میں اور آگریں سے کے میں کوئی کام کام کام کی تو آپ نے فرایا: میمور دوبات یہ ہے کہ دیک می جیز کام ونا اللہ کے پہال

مقدر کردیا جائے توہوکر ہی رہتی ہے۔

ه اور ابن سعد حضرت عائشه رضی النه عنها سے روایت کرتے ہیں کہ ان سے پومچاگیا: رسولِ اکرم صلی النه علیہ وہم جب تھر میں ہوتے تھے توکیاکرتے تھے؟ انہول نے فرایا : آپ نہایت زم مزاج ہوش اخلاق مسکرانے وا ہے تھے، آپ نے البینے ساتھیول اورصحابہ سے سلسنے معبی پاؤل درا زنہیں کیے . یہ آپ سے ظیم ادب اور کمال و فار کی علامت تھی معلی التّدعدیہ ولم ۔ 👟 اورترمندی ، ابنِ ماجہ اور بخاری" الادب المفرد" بیس حضریت علی کرم التّدوجہہ ۔۔۔ روایت کرتے ہیں : انہول نے فرمایا كر مصريت عمار منى التدعز سف نبى كريم صلى التدعلية ولم كى مورست مبارك بين عاصري كى اجازت بيا بى توآب في ان كى آواز ببجان لى اور فرايا: نوس أمبدير طيب (اليه) اورمطيب (باكيزو) كم يد

الم احمد حضرت اس رضی الندعند سے روایت کرتے ہیں کنبی کریم لی النّدعلیہ ولم جب کشخص سے ملتے تو فرواتے: فلانے تم کیسے ہو؟ وہ کہتے الحمدلتُدخیر رہت سے ہول، تونبی کریم ملی التّدعلیہ ولم ان سے فرواتے: التّدتعالی تمہیں خبر رہت می سریہ ابتد سکھ

ہی کے ساتھ رکھے۔

دورطبرانی مضرت جررین عبدالته بجلی دشی النّدعنه سے روایت کرستے ہیں کہ انہول نے فرایا : حب نبی کریم کی اللّه عليه ولم كونني بناياگيا تويم آب كى زورت ميں حاضر بوا: آپ نے پوچھا كيسے آنا بوا؟ يم نے كہا: ميں اسلام لا نے كينے خامر ہوا ہول ۔ تواب نے اپنی چا درمیری طرف وال دی اور فرایا : حب تمہار سے پاس کسی قوم کا شریف شخص آئے تواس کا

🔅 اورا الم مسلم حضرت ساک بن حرب سے روابیت کرستے ہیں کہ انہوں نے کہا ہیں نے صفرت جابر بن سمرہ رضی الندیمن سے پوچھا: کیآآپ رسول الٹدسلی الٹدعلیہ وم کی زرمت میں بیٹھاکرتے تھے ؛ توانہوں نے فرمایا : حی ہال ! بہبت ریادہ بیٹھا كرّا تها نبى كريم لى الله عليه ولم ابنى جگرسے اس وقت تكنبي المصفة تقے جب تك كه سورج زكل آئے بھر حبب سورج كل ۔ آ اتھا تواپ کھڑے ہوجا یا کرنے تھے صحابہ کرام فنبی التا پینم ہائیں کیا کرنے تھے، اور زمانہ جامبیت سے دور کی ہائیں تھی ا ورسنسا کرتے شعصے اور نبی کریم سلی الندعلیہ وہم صرف مسکرا دیا کرست ستھے۔

کے بخاری مسلم میں مصرت انس رضی اللہ عند سے مروی ہے کہ انہول نے فرطیا : نبی کریم کی اللہ علیہ وہم ہمارے ساتھ اشقتے بیٹھتے اورمزاح فرایا کرتے حتی کرمیرے ایک بھائی سے یہ فرایا کرتے تھے: اسے ابوعمی نیغیر مرز دسے کا کیا ہوا ان کے پاس ایک پرندہ نغیرتھا جس سے وہ کھیلا کرتے تھے وہ پرندہ مرکبا ، اس پرنبی کرم ملی اللہ علیہ وہم کو دکھ ہوا اور آپ نے ان

ے فروایا اے ابوعمیر تغیر کاکیا ہوا ؟

یہ وہ مثبت دسائل جونبی کریم ملی التّدعلیہ وہم اسپنے سحابہ رشی التّدمنہم اجمعین سے ساتھ اختیار کرتے ستھے، اورلوگول تی چھوٹول اور بچول سے ساتھ میں ہی معاملہ کرستے ستھے، آپ سے صحابہ کرام رضی التّدعنہم نے آپ سے بی مخلصانہ مجست کی،

اور آپ سے ہاتھ پرایمان لاکراپنی نفوس کو قربان کیا، اورالٹد سے ایستے میں اپنی جانوں کا ندراز پیش کیا، اور آپ کی مجست میں اپنی مالن کی بازی لگانی . اوروه ولیسے پی بن سکتے جیسے ان سکے اوصاف اللہ تعالیٰ سنے قرآن پاک میں بیان فرا سے چیں فرایا :

((ولا مِرغبول بأنفسهم عن نفسه). التوب-١٠٠ اورنيكاني جانول كوان كى جان سے عزيز ركھيں ـ

اوربيحضات نبى كريم صلى التعليه ولم كري كوتعي ترجيح نهبي وسيته تحطه

🗫 ال مصالبت صحابة كرام وضى الدُّعِنهم كى استجى يكى مخلصان مجدت كى تاكيد مصربت على كرم الدُّدوجه سيمه اس قول سے یونی بے جوانہول نے اس وفت فرایا حب<sup>ا</sup> ان سے پوچھاگیا کہ آپ حضارت کورسول الٹھ لی اللہ علیہ وقم سے کہیں مجست شهى ؟ انهول نے فرایا : رسول *اکرم م*لی انٹرملیہ وہلم بہیں اسپنے مالول، اولاد ، والدین ،ماؤل سب سے زیادہ مجوب شخص ا در پیایس کے وقت محصنات ہے انی سیسے جومحبت ہوئی سبے آپ ہمیں اس سے بھی زیادہ ممبوب تھے۔

🧇 اس مبت کی تاکیداس روایت سی موتی ہے ہوتی ہے جوہیقی وابن اسحاق روایت کرتے ہیں کہ ایک انصاری عورت کے والبرجمائی اور شومبر شہدیکر دیے گیے۔ برسب نبی کریم صلی الندعلیہ وہم کے ساتھ جنگ احد میں شریک تھے ، حب ان صاحبه كويه اطلاع دى تكى توانهول نے بوجھاكه رسول التّه على التّه عليه ولم كس مال ميں ميں بعيني آپ كى خيرمية معافيت درا فت كى ، انهيس بلايا گياكه الحمدلته وه مهيك بيس اور ويسيه بي جيدا آب چاستي ميس توانهول نے فروايا : مجعد آب صلی الله علیه ولم ک زیارت کرا دو تاکه میں آپ کو دیمیولول. اور بھر حبب انہول نے آپ صلی الله علیہ ولم کا ویلاد کرلیا توکہا ؛ آسیے

ہوستے ہوئے *ہرمعیبیت آسان س*ہے۔

🗫 ان کی اس بے لوٹ مبست کی تاکید اس سے بھی ہوتی ہے کہ وہ حضارت دنیا واخرت میں آپ کی بدائی برداشت نہیں كرسكة تتے بيناليح طرانی حضرت عائشه صدلقة رضى الله عنها سے روايت كرتے بي كدا يك صاحب (مضرت ثوبان دفنى الله عندمرادین ) نبی کریم صلی الته علیه و تم کی زرمت میں حاضر ہوئے اور انہول نے عرض کیا: اسے التہ کے سول آپ مجھے ميرسه ابل وعيال اورمال ودولت سب سه زيا ده عزيز بين اورمين حبب آپ كوبا دكرتا بول تواس وقت يك فيمين نہیں آیا جب یک آپ کی خدمت میں حاضری نددے لول بھر مجھے اپنا اور آپ کااس دنیا سے کوچ کرجانا یا د آیا توہیں نے يربقين كرلياكه آب توحنت ميل انبيام كرام عليهم السلام سحه ساته ملند درجات ميں بهول كيدا دراگريس وال معي بهوا تب بجي آب كووبال دىميەنىكول كاس براللەتعالى ئىددىچ ذىل آبىت كرىمىرنازل فىرائى:

﴿ وَمَنْ نَيْطِيعِ اللَّهَ وَ الرَّسُولَ فَأُولَيِّكَ مَعَ الَّذِينَ

اَنْعُكُمُ اللهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِينَ وَ الصِّلِينِيِّينَ

وَالشُّهَدَاءَ وَالصَّلِحِينَ وَحَسُنَ أُولَيِّكَ رَفِيْقًا ))اسار. 19

کے ساتھ ہیں جن ہرائتہ نے انام کیا کہ وہ بی اور صدلی اور شبیدا درنیک بخت میں اوران کی رفاقت اقیمی ہے۔

ا ور حوکولی حکم ما نے اللہ کا ورسس کے رسول کا سووہ ان

ميرني كريم صلى التّدعليه ولم في النصاحب كوالاكرية آيت بره حكرسنائى .

ان کی اس محست وسرشاری کی تاکیدنی کریمسلی النّدعلیہ ولم سے ندکرہ سے ان سے رفینے سے بھی ہوتی ہے جنانچہ ابن سعد عام میں النّدعلیہ ولم سے ندگرہ سے ان سے رفیی النّدع ہوتی ہے جنانچہ ابن سعد عام میں محدسے وہ اسپنے والدستے روایت کرنے ہیں کرانہول نے فرمایا ہیں نے ابن عمر ونبی النّدع ہاکوئھی بھی رسول النّدم اللّٰہ علی اللّٰہ ولم کا ذکرہ کرستے ہوئے نہیں سنا مگر یہ کہ ان کی انکھول میں بند اختیار آنسوا سکتے اور رہنے سکتے ۔

اُورابنِ سعد ہی حضرت انس نِنی التٰہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ اُنہوں نے فرمایا ؛ کوئی رات ایسی نہمیں گزرتی جس می م میں نہری مصل سلیمائٹ کر سے میں میں میں میں میں نہ سے انگری کے انہوں کے فرمایا ؛ کوئی رات ایسی نہمیں گزرتی جس

البنے مجبوب نبی کریم صلی الٹھ علیہ وہم کو دیمی تنا نہوں اور مجروہ روسنے سکتے ۔

اور ابن عما کرسند جدیکے ساتھ (جدیا کہ حافظ زرقانی نے تھریجی ہے) حضرت بلال مِنی اللہ عنہ سے روایت کرتے بیل کہ جب وہ (شام کے قریب ایک جگر) برای میں مخمر سے توخواب میں نبی کریم سلی اللہ علیہ ولم کی زیارت کی (یہ واقعہ آب ملی اللہ علیہ ولم کی وفات سے بعد کاسبے) اور دیکھا گہ آپ فرار سے بین: اے بلال یکسی سنگدل ہے بی تمہارے ہے اب سے بین وہ وقت قریب نہیں آیا کہ ممیری زیارت کرو؟ حضرت بلال نہایت خوف زردہ غم کی حالت میں بیدار ہوئے اور اپنی اور عنوب بی اگرم ملی اللہ علیہ ولم کے روضۂ مبارک پر حاصری دی تورف نے اور جب بی اگرم ملی اللہ علیہ ولم کے روضۂ مبارک پر حاصری دی تورف نے الکے اور اس پر جہرہ رکھنے ۔

ده ان کی اس ہے بناہ مجست کی تاکیداس سے بھی ہوتی ہے کہ حبب نبی کریم ملی النّدعلیہ وقم کی وفات ہوئی توصحا ہزکرام میں اعزیہ حمد پر سر سر سر سر سر میں میں میں میں اسٹر میں ہوتی ہے کہ حبب نبی کریم ملی النّدعلیہ وقم کی وفات ہوئی

رضی الندعنهم المبعین کی آه وبکاکی وجهست شور بندم وگیا۔

واقدی حضرت ام سلمہ رضی النّدعنہا سے روایت کوستے ہیں کہ انہوں نے فرمایا اس درمیان کہم بیٹے ہوئے رسولِ کم مسلی النّہ علیہ وم سے سانمۂ ارتمال پر آنسو ہہا دہے تھے اور رات بھرنہ سوسکے ، اس وقت رسولِ اکرم سلی النّہ علیہ وہم ہمآ ہے گھروں ہیں ہی موجود شتھے ، اور ہم آب کو آپ سے بلنگ پر دکمیوکر سلی عاصل کر دہ ہے تھے ۔ کہم نے سحری سے وقت کلہاڑی وبچا وٹرول کی آواز سنی جن سے زمین کھودی جا رہی تھی ، حضرت ایم سلمہ رضی النّہ عنہا فرماتی ہیں کہ ہماری چیج کل گئی اور تما کہ المِ پیٹ چلانے گئے، اور سال مدینہ منورہ بیک آوازگونج اٹھا، اور حضرت بلال رضی النّدعنہ نے فجرکی اذان دی اور روسنے لگے، کس سے ہماراغم اور بڑھ گیا، نوگول نے قبریک پینچنے کی کوشش کی توان کوروک دیا گیا ٹاکہ دنن کے وقت قبرمِبارک پر زیادہ بہوم نہ ہوجائے۔

مه المرب المسلمه رضى التدعنها فرماتی بین که تنی عظیم مصیبت تنهی ،اس حادثهٔ مهانکاه کے بعدیم پر حبب کوئی مصیبت ان پڑی تووه رسول التصلی التدعلیه ولم سے اس حادثهٔ فاجه کویا دکر کے آسان ہوگئی۔ شاعرا بوالعنامیاسی معنی کو اپنے اشعار میں اس انداز سے بیان کرتے ہیں :

واعلم بأن المرغير مخملد اصبركك مصيبة وتجدد برمعیبیت پرمبرکرد اور جوال مرد بن جادُ اوریہ بات سمحہ لوکہ انسیان کوددام کا کنہیں ہے أومسا تربحب أن المعائب جمسة وتسرى المنيئة للعباد برصد کیاتم نہیں دیکھتے کہ معائب بہت زیادہ میں اورتم دیکیھتے ہی ہوکرموںت سیدوں کی گھان میں بھی ہے من سم یصب مین تری بمحیبة هــــذا سبيـــل لست فيــه بأوحد یرایک ایسا راست ہے حبس میں تم اکیلے نہیں ہو جن کوتم دیکھے رہے بہوان میں کون الیا ہے جے کوئی معیسینی میں بھی ا ف ذ ڪر مصابك بالنبي محمد ف إذا ذكرت محدد المصابه تونبى كريم محدسلى الشدعلية وليم كصانحوا تحال كويا وكركسيب أكرو نم حبب محسسد اوراس سے سانی ارتحال کویا دکرو

م جب حسد اوران سے سائر ایمان بیان سے جن کی جانب بی کریم سی اللہ علیہ وہم نے رہائی کی ہے تاکہ لوگول کی الفت و م مبت ماصل ہوا وران سے مودت ودوی کے اسباب شخکم ہول ، اوران کے اہماً کی دنیال رکھنے کو وہموس کرلیں ، اور ان کے ساخہ بہمی تعاون کی روح پیلا ہو، ان سے ہرا تھویں رکھنے والے کے ساخہ بات کھل کرا جائی ہے کہ اسلامی شخصیت کی تعمیل وقت کی روح پیلا ہو، ان سے ہرا تھویں رکھنے والے کے ساخے یہ بات کھل کرا جائی ہے کہ اسلامی شخصیت کی تعمیل وقت کی اساس و بنیا دی ہے کہ مربی اور بیجے کی میں مجست مجائی چارگی فضائل پران کی تربیت اور ان میں اچھے انواز قل پیلا کرنے کی اساس و بنیا دی سے کہ مربی اور بیجے میں مجست مجائی چارگی اور ایک ووسرے کو شخصف کے اسباب کو مصنبوط کیا جائے۔ تاکہ ان سے درمیان وہ فائہ متحقق ہوجہ میں کی امید سے را ورا چھا اثر پڑھے ، اور مربی اپنی منت کا مجبل ماسل کرسکے ، اور اپنی کھیتی کو لہلہا ستے دیکھ سکے ورہی ویکھ سکے۔

اس کے اسے مرتی مخترم اگرآپ بیجا ہیں کہ آپ کا بٹیا آپ کی بات پرلبیک کیے۔ اور آپ کی نصیحت اور باتول کو کان لگاکرسنے تو آپ کو چاہیے کہ آپ اسلام کی ان برایات کے مطابق عمل کریں جو اس نے بیچے کو اپنے سے مانوس کرسنے اور لگاکرسنے تو آپ کو چاہیے کہ آپ اسلام کی ان برایات کے مطابق عمل کریں جو اس نے بیچے کو اپنے سے مانوس کرسنے اور لگاکہ پیدا کر سے سلسلہ میں دی ہیں ، اور آپ نبی کریم سلی اللہ علیہ ولم کی اتباع کریں اور جوطر لقیہ آپ نے اپنے معابر کرام منی اللہ علیہ ولم کی اتباع کریں اور جوطر لقیہ آپ نے اپنے معابر کرام منی اللہ عنہ مسلے مساتھ انتھا کہ کیا تھا اور جوشن معاشرت آپ نے اپنے ساتھ اسھے نبیٹے والول سے ساتھ ا

اضتیار کی تھی آپ بھی اسے اختیار کری، اگر آپ نے ایسا کر لیا تو آپ نے تربیت کا سیح اور مبترین راستہ اختیار کر لیا ہوگا اور بھرآپ اپنے بچے کے دل کے مالک ہوجائیں گے، اور آپ کی مجست اس کے دل میں ماریت کرجائے گی، وہ آپ کا گرویدہ ہوجائے گا، اور آپ کی کوششیں شمرونفع بخش کا گرویدہ ہوجائے گا، اور آپ اسے جونصیمت کریں گے وہ اسے قبول کرسے گا. اور آپ کی کوششیں شمرونفع بخش ہول گی۔

۲ - دن دات تربیتی نظام کے مطابق چلنا مربی کومن فرائفن داجبات کا بہت اہتا کم کرناچاہیے اور حن کے لیے بہت تگ و دوکرنا ضوری ہے ان بی سے یہ جی ہے کہ وہ نیکے کوشب وروز سطے شدہ تربیتی نظام کے مطابق چلائے تاکہ وہ اس کا عادی بن جائے، اور تدریجا اس پڑل کرتار ہے، اور تعقبل میں اس کو اینے اوپرنا فذکر نے کو ایک مانوس و عادی چیز سمجھے، اس لیے کہ یہ چیزیں اس میں ساریت کرچکی ہول گی، اور اس کے شعور ودل میں بیٹھ میکی ہول گی۔ و عادی چیزیں اس نظام کی تفصیلات عین اسلامی برایات کے مطابق آپ کے ساسنے پیش کی جارہی بی تاکہ اب سے کو ایک بیار کی مطابق عمل کرسکیں:

مربی محترم ایس نظام کی تفصیلات عین اسلامی برایات کے مطابق آپ کے ساسنے پیش کی جارہی بی تاکہ اب سے دوان لیں اور اس کے مطابق عمل کرسکیں:

الف مصبح كورت مرني كودرج ذيل نظام اينانا جاسية

مست میں است ہوگی کہ جب آپ خود اور آپ کا بیٹا نیندسے بیار ہوتوالٹدکانام کے سب کاطرافیہ یہ ہے کہ اتور ومنقول دعا پڑھی جائے جویہ ہے:

(( اَ لَحَدُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الل

سننوابي داود

ن الى داؤد بهت زياده وينے والے ميں .

استنجاء کے آزاب سکھائیں : استنجاء کے آزاب سکھائیں :

- الله آب اسے یہ تبلاسیئے کہ دائل ہوستے ہوئے پہلے ہایاں پاؤل آگے بڑھائے اور پھلتے وقت پہلے دایال پاؤل آگے بڑھائے اور پھلتے وقت پہلے دایال پاؤل آگے بڑھا کے اور پھلتے وقت پہلے دایال پاؤل آگے بڑھانا چاہیے اور حودومرسے تسم سے کا ہم سے کہ ہول ان ہو ھانا چاہیئے۔
  - اب نیکے کویہ تبلایک کہ جب وہ بیت الخلار میں وال ہونا چاسے تومسنون و عابر سے جویہ ہے ؛

    (ا اک اللّٰهُ مَّ إِنِّ اُحْدُو بِلِكَ مِنَ الْحُبُمَةِ وَالْحَبَائِةِ ) اے اللہ میں آپ کے ذریعہ سے مذکر ومؤنٹ شیامین سے اسٹہ میں آپ کے ذریعہ سے مذکر ومؤنٹ شیامین سے میں کا کہ میں بخاری وحم دفیرہ بناہ مانگھا ہوں ۔
- آب اسے یہ سکھائیں کہ وہ الی جا آب اینے ساتھ کوئی الی چیز ندے جائے سی بیں اللہ کا نام یا ذکر ہوائی سیے کہ سن کی کتابول میں حضرت انس وضی اللہ عنہ سے یہ مروی ہے کہ انہول نے فرمایا: جب رسول اللہ علی اللہ علیہ و ہم بیت اندار ہوائے اللہ علیہ اللہ علیہ و کی سیت اندار ہوائے اللہ علیہ علیہ علیہ اللہ علیہ و کے دوایت کیا ہے کہ آب اسے یہ تعلیم دیں کہ اگر کھلی جائے یا حبیل وغیرہ میں قضاء حاجب کے لیے جانا پڑسے تو توگوں کی نگاہ سے دور چلا جائے ،اس کے دور جل جانے ہوائی دور جس میں اللہ علیہ ولم جب ضورت کے جلا جائے ،اس کے دور جس میں اللہ علیہ ولم جب ضورت کے لیے جانے ،اس یہ کہ ایک داہوں و دور جلے جانے کہ کوئی آپ کونہ دیکھ سکے۔
- اتب اسے بہ الائم کر قبلہ کی طرف منہ یا پیچے کرے قضاء جاجت نرسے، اس بے کہ بخاری وہم حضرت ابوالیہ انصاری وہنی النہ عنہ سے دوایت کرتے ہیں کہ بی کریم علی النہ علیہ وہم نے ارشاد فرمایا ہے: جب ہم قضاء حاجت سے بے جائز توز تبلہ کی طرف مند کرو ربی ہے مشرق یا مغرب کو مند کر لیا کرو (یہ اہل مدینہ سے بیے جمنی کا قبلہ عغرب میں ہے انہ ہیں مغرب یا مشرق کی جانب نہ منہ کرنا چاہیے نہیں کہ میں ہوں ہے انہ ہیں مغرب یا مشرق کی جانب نہ منہ کرنا چاہیے نہیں کہ میں ہوں ہے انہ ہیں مغرب یا مشرق کی جانب نہ منہ کرنا چاہیے نہیں کہ میں ہوں اس لیے کہ ایس النہ علیہ وہم نے ارشاد فرمایا: ایسے کرائم مسلم واحمد حضرت ابوہ بریرہ و منی النہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ رسول النہ صلی التہ علیہ حکم نے ارشاد فرمایا: ایسے دو کامول سے بچو جو لعنت کا ذراجہ ہوں سے کا ذراجہ کون سے کا میں ؟ توآپ نے ارشاد فرمایا ہوں شخص جو تو گول کے راستے ہیں حضرورت سے فارغ ہویا سایہ دار حکم ہیں ؟ توآپ نے ارشاد فرمایا ہوں تو تو گول کے راستے ہیں صرورت سے فارغ ہویا سایہ دار حکم ہیں .
- کے آپ اسے تیلیم دیں کہ قضاء ما جہت سکے وقت ہالک بات ذکرسے اس کے کسلم وغیرہ حضرت ابن عمر دنسی النّدیم سے دوایت کرسے اس وقت آپ بیٹیا ب کرتہے تھے ان صاحب نے ان کے سلم کا دوایت نہیں دیا۔ ان صاحب نے آپ کوسلام کیا توائپ نے ان کے سلام کا جواب نہیں دیا۔
- ہ آپ اسے یہ تبلائیں کہ بیٹیاب سے ایمی طرح صفائی ماسل کیا کرسے اور نجاست وگندگی سے بیھے تاکہ اس سے کے انہ اس کے کیٹرسے یا بدن پرنجاست نہ سلگے ، اس بیے کہ مام طورسے عذابِ قبر پیٹیاب سے نہیےے کی دوبہ سے ہوتا ہے ۔ اس بیے کہ

دارهای مضرت ابوم رمیه وضی الله عندسے روایت کرستے ہیں که رسول التدعلیہ ولم سندارشا و فرایا ، پیشاب سنے بواس لیے کہ عام طورسے عذاب اسی کی ویہ سے ہو آہے۔

اوران کویہ تبلائیں کہ دائی ہاتھ سے استنجاء نرکرے اس بیے کہ بخاری وسلم میں مصرت ابوقیادہ رضی النہ بخنہ سے مردی ہے کہ بخاری وسلم میں مصرت ابوقیادہ رضی النہ بخنہ سے مردی ہے کہ نبی کریم سے النہ علیہ ولم نے ارشاد فرمایا : حب تم میں سے کوئی شخص بیشاب کرسے تواپنے مفتوم محصوص کو دائیں ہاتھ سے استنجاء کرسے اور نہ (یانی کے) برتن میں سانس ہے۔

ادراسے بالائیک کراستہ اور کے موقعہ پر طبیطے (یا ٹیشویا ٹوانگ بیپر ماذب کاغذ) اور پانی دونوں کا استعمال کے اس کے دونوں کو استہ اس کے دونوں کو استہاری دونوں کے سلسلہ میں دوایت کرتے ہیں کہ درسول التد تعلیہ والم سے قبار اللہ دونوں کو تمہاری تعرب استہار کرتے ہیں تو طبیطے اور پانی دونوں کو استہال کرتے ہیں تو طبیطے اور پانی دونوں کو استہال کرتے ہیں۔

اب است یر تبلاین کرحب وه بیت الخلار سے تکلے توبیعلے اپنا دایال پاؤل وہال سے باہر نکا ہے بھرید دعا پڑھے ، (خفض انگ ، سنن بی داؤ دو ترمنری اسے انتہ میں آپ کی مغفرت کا طلب گار ہول . (خفض انگ فی منفرت کا طلب گار ہول . (انگ فی منفرت کا طلب گار ہول . اسے استہ میں آپ کی مغفرت کا طلب گار ہول . (انگ فی منفرت کا طلب گار ہول . استفال فی کا فی منفرت کا م

و ی ی ی). ایک اور روایت میں درج ذلی دعام تھی آتی ہے :

(( اَلْحَاسُدُ دِلْهِ اللَّهِ عَلَى اَلَهُ اللَّهِ عَلَى اَلَهُ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللّ وَ اَبُعَ نُ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّ

أَخَاءُ ).

جکھانی ٔاور اس کی قوست مجھ میں باتی کھی ،اور اس کی گندگی ترکیلیف مجھ سے دورکر دی ۔

اس کویر کھائی کہ جب وہ بیت الخلار سے بھے توپانی اورصابی سے اپنے دونوں ہاتھ دھوسے، اس سے کہ نمائی مصرت بربر بن عبداللہ وضی اللہ عنہ روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرایا: میں نبی کریم کی اللہ علیہ وہم کے ساتھ مقاآب تغاہ ما جت سے دوایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرایا: میں نبی کریم کی اللہ علیہ وہم کے ساتھ مقاآب تغاہ ما جت سے استنجاد کیا ما جت سے استنجاد کیا اور معبر اینا ہاتھ زمین پررگڑا، آج مٹی میں ہاتھ رگڑے نے ہے ہے کے صابی سے صفائی ہوجاتی ہے۔

#### عيراس كووضور ناسكهائين:

اس کو دومنو مرکی فضیلت بتلایش اور یه که اس سے گناه معا حت بوستے بیں ،اس لیے کمسلم حضرت ابوہریرہ دخی انہ

عند سے روایت کرتے ہیں کہ رسول النہ ملی اللہ علیہ ولم نے ارشاد فرایا: جب لمان بندہ وضور کر ہاہے اور اپنے چہرے کودھوا اپنی یا باتی کے آخری قطر سے کے ساتھ اس کے چہرے دہ تما گئاہ معاف ہوجاتے ہیں جن کی طرف اس نے اپنی آئمھوں سے دیکھا ہوتا ہے۔ اور حب وہ اپنے دونوں پاؤل دھوتا ہے تو پائی یا باتی کے آخری قطر سے کے ساتھ اس کے وہ گئاہ وہ اس کی طرف وہ پاؤول سے بل کرگیا تھا، یہاں تک کہ وہ گئاموں سے باک صاف ہوکر کا ہے۔
گناہ وصل جائے ہیں جن کی طرف وہ پاؤول سے بل کرگیا تھا، یہال تک کہ وہ گئاموں سے باک صاف ہوکر کا ہے۔

اس کو وضور سے فارغ ہونے کے بعد کی مسئون وعاسکھا میں :

ال تووقتورست فارح ہوسے کے بعدلی مسلون وعاصلها میں الله الله کو تعدی مسلون وعاصلها میں اللہ اللہ کا میں ا

لَهُ وَأَشْهَدُأُنَّ مُعَالَدًا مُنْ مُعَالِمُ الْمُ الْمُ

نَّ مُعِدِ مِنْ مَعِدِ وَنَهِ مِن مَعِدِ وَنَهِ مِن مَعِدِ وَنَهِ مِن مَعِدِ وَنَهِ مِن مِن مِن مِن مِن مِن مِ صمیح مسلم ومسنداِحد کے بندے اور رسول جر

((اَللَّهُمَّ أَجُعَلُنِثُ مِنَ اللَّوَّابِيُنَ وَاللَّوَّابِينَ وَاللَّوَّابِينَ وَاللَّوَّابِينَ وَاللَّهُ المُنْطُ فِيرِينَ ».

ما مع ترمذی

ر سُبُعَانَكَ اللهُ مَ وَجِعَهُ مِكَ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَجِعَهُ مِلْكَ اللهُ اللهُ

سنن نسائی

میں اس بات کی گواہی دیتا ہوں کہ اللہ وصدہ لاشر کی لئے کے علا وہ کوئی معبود نہیں ہے ، وریے کہ محمد اللہ طبیہ وسم اللہ کا علا وہ کوئی معبود نہیں ہے ، وریے کہ محمد اللہ طبیہ وسم اللہ کے بندسے اور رسول ہیں ۔

اسے انتد یجھے الن ہوگول میں سے بنا دسے جومبہت زیادہ تو ہا کرسنے والوں میں کرسنے والوں میں سے نا ہ

سے اللہ آب کے لیے پاکی ہے اور تما کا تعرفیں ہیں ہیں گوائی ویتا ہوں اس بات کی کہ آپ کے سواکوئی معبودہیں میں آپ ہی سے معفرت کا طلب گارموں ، اور آپ کی طرف یہ جوع کر ایوں:

اسے یہ کھائیں کہ ہرومنوء کرنے سے بعد دورکھت نفل پڑھے اس لیے کہ سلم واحد حضرت عقبہ بن عامرجہ ہی وشی التدعنہ سے روایت کرستے ہیں کہ انہوں نے فروایا رسولِ اکرم ملی التّدعلیہ وقع کا رشاہ ہے کہ کوئی مسلمان ایسا نہیں جو وضور کرسے اورائی طرح سے کرسے بھر کھڑے ہے کہ وکر دو کھتیں پڑھے اورائ ہیں دل وہم سے ساتھ التّدی طرف متوج ہومگر یہ کہ جنت اس سے نسلے واجب ہوجاتی ہے گیے واجب ہوجاتی ہے گے۔

میرآپ اس کویہ تبلائی کہ دات کوئینی نماز بڑھ سکتا ہو بڑھ لیا کرسے:
اس لیے کہ سلم والوداؤد حضرت الوہ بریرہ وضی النّہ عنہ سے روایت کرستے ہیں کہ دسول النّہ مسلی النّہ علیہ ولم نے ارشا د
فرایا: جب تم ہیں سے کوئی شخص دات کو اٹھ جائے تونمازی ابتدار دو پھی میکی کھتوں سے کرنا چاہیئے۔
اور نماز تہج دیڑھ سے سے قبل تہج میک دعار پڑھ ہے اس ایسے کہ بخاری دسلم حضرت عبدالنّہ بن عباس رضی النّہ عنہا ہے

سنه مرنی محرم ؛ وهنود کاطریقِه وآده ب جا سننے سکے بید آپ نقه ک سی محلی کی طرف رجوع کرسکتے ہیں اوراس سنے فائدہ واستفادہ کرسکتے ہیں، مین میں آپ کومسواک کی سنست یا د والما، ہوں اس سیے کہ اس سے کہ اس سے میں سوسے زیا وہ حدیثیں حتی ہیں روايت كرية بي كرانهول نه فرايا : رسول التُرسى التُرعليه ولم حبب رات كوتهجد كم اليه المصة تور فرات :

اساللہ اسے ہمارسے رب مل تعرفیں آپ ہی کے یے پی ایپ اسمانوں اور رمینوں اور حوان میں سے سب کے تھا کر کھنے والے ہیں اورآپ ہی کے لیے تمام تعریفیں ہیں۔ آپ آسمانوں و مین اور حوکھیدان ہیں ہے سب کے روشن کرنے والے میں اور تمام تعریفیں آپ ہی کیلا یں آپ آسمانوں اور زمین اور کچھان میں ہے اس کے بدشاوین تمام تعرفین آپ بی سے لیے میں آپ می حق میں ، اور آپ کا ومدہ برتق ہے۔ آپ کی طاقات عق ہے ، ورآب کا فرمان برتق ہے ، اور دوزخ عق ہے ، اور تمام نبی برق بین ،اور محصلی الله علیه دیم مق بین، اور قبیا مست که مرح برحق ہے ، اے اللہ میں آپ ہی کے لیے اس م لایا اور آپ بی پر ایمان لایا اور آپ پری توکل داعهاد کیا ادر آپ سی کی طرف ریج ع کرتا ہوں ، ور آپ ہی کی مدد سے فی م<sup>مت</sup> كرّاً بول اورآب مي سيفيل كزاً بول ،آب ميرس الكي بجيبے سب گذاہ معاف فرماد يجبيه اور بوبرشديرہ سكيے بور ہی اوکھلم کھنا سکیے ہوئے بھی ، آپ ہی اَ سگے بڑھاسنے واساے ایل اور آپ کی پیچیے کرنے والے بیل سب سے سواکولی معبودنهیں، اور آب کے سواکوئی ضانہیں سے۔

اَللَّهُمَّ كَنَّبَا لَكُ الْحَمُدُ اَنْتَ قَسِيمُ السَّلْمُوَاتِ وَالْاَرُضِ وَمَرِبِ فَيَحِنَّ وَلَكَ الْحَرُثُ أَنْتَ نُوْرُ السَّمْوَاتِ وَالْرُضِ وَمَنْ فِسْبِلِنَّ وَلَكَ الْحَدُّهُ النُّتَ مَسِلِكُ الشَّمُواتِ وَٱلْأَمْضِ وَمَرِبُ فِي الْمِنْ وَلَكَ الْحِنْدُ. أَنْنَ الْحَقُّ وَوَعَـ دُكَّ حَقٌّ. وَلِمَّا قُلَكَ حَقٌّ. وَقُولُكَ حَقٌّ وَالنَّارُحُقُّ. وَالنَّبِينُّونَ حَقِّرِ. وَهُمَّتُكُ حَقُّ ، وَالسَّاعَةُ حَقٌ 'اللَّهُ مِّ لَكَ أَسُكُمُ ثُنَّ وَبِكَ آمَنْتُ وَ عَكَبُ لُكَ تَوَكَّلُتُ وَإِلَيْهُ لِكَ ٱنْيُتُ وَبِكَ خَاصَمُتُ وَإِلِيُكَ حَاكَمْتُ فَاعْفِرْ لِحِيْ مِنَا قَدَّمُتُ وَمَا أَخْرُتُ وَمَا أَسُرُنُ وَمِنَا أُعَلَنُكُ ، أُنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ اَلْمُؤَخِّدُ لَا إِلٰهُ إِلاَّ امَنْ وَلاَ إِلٰهُ غَــنُرُكَ...

صلاة الليل (رات کی نماز) سے ليے رکعات کی کوئی مخصوص تعداد متعین نہیں ہے جبنی سہولت وطاقت ہوائی نماز پر صناچا ہیں۔ پڑھناچا ہیے۔ نماز دودو کویت کرکے پڑھے (خواہ چارچا رپڑھے) اس لیے کہنجاری وسلم میں مصرت عبداللہ بن عمرشی اللہ عنها سے مروی ہے کہنجاری موسنے کا فرم ہوتو عنها سے مروی ہے کہنجاری اللہ علیہ والم نے ارشاد فروایا: رات کی نماز دو دورکعات ہے بھیر حب صبح ہو سنے کا فرم ہوتو ایک رکعت سے بھیر حب صبح ہو سنے کا فرم ہوتو ایک رکعت سے دربع الدی دوربع اللہ کا دربالو۔

 كها نا كھلا ياكرو ،اور دات كواليسى مالت ميں نماز روم صوكرلوگ سور بهت بول اور مبنت ميں عا فيبت وسلامتى سے ساتھ دال ہوياؤ. وج اس كفائل بي سعيم بي رات كونماز برصف والاالته تعالى كدربار مي واكرين بي سع لكمها جاما سعاس یے کہ ابودا فرحضریت ابوسعید *نصری داختی التدعنہ سے روابیت کرتے ہیں کہ انبول نے فر*ایا رسول التُدصلی التُدعلیہ وسلم کا ارشاد ہے: جبب انسان رات کوا پنے گھروالول کو برگائے اور دونول دورکھت پڑھ کی تودونول ذکر کرنے والول میں سکھے جاتے ہی 🤏 اوران کے فضائل میں سے پیمبی ہے کہ یہ اللہ کے قریب کرنے والی اور گناہوں کا کفارہ ہے۔اس لیے کہ امام ترمذى حضرت ابوامامه رضي التدعنه سعدروا ببت كرست بي كدر ول التوسلي التدعلية ولم سنه ارشا وفرمايا جمهي جاسيه كه رات سے قیام انہجد کی نماز) کولازم مجرور اس لیے کہ یتم سے پہلے گزرنے والے صالحین کی عادت سے اور تمہارے رب كك تقرب كا ذريعه اور برائيول كے ليے كفارہ اور گنا ہول سے روكے والى سے ـ

#### عصراس كوييتلا وكه وه فجركي نماز مسجد جاكر مرها كرات

🚓 اسے ا ذال کے بعد کی دعاسکھاؤیاس لیے کہ امام مسلم والبرداؤد وغیرہ حضریت عبداللہ بن عمروبن العاص منی اللہ عنہا روابیت کرتے ہیں کہ انہول سنے رسول اکرم صلی النّہ علیہ ولم کومناکہ آپ نے فرمایا : حبب تم مؤذن کو ا ذان دسیتے سنو تو وبى الفاظ دمباؤ جومؤذن كهرر بلب سيصم محدير درو دجيجو، السايك وتخص مجديرا يك مرتبه درو دنجيجة ابيدالتّداس بروسس رحتیں نازل فرما تا ہے بھیرمیرے لیے اللہ تعالیٰ سے 'وسیلہ 'مانگو،اس لیے کہ یہ ایک ایسامرتبہ ہے جو اللہ سکے کسی نیاص بندہ کے بیے ہی مناسب ہے ، اور مجھے امید ہے کہ وہ ہیں ہی ہول گا۔ لنبذا ہومیر سے لیے وسیلہ "طلب کرے گا اس سے یہ میری سفارش واجب ہوگی۔

ا ذان كے بعدانہی الفاظ میں دعامانگنا چاہيے ہوئيج سندے رسول اکرم سی النّه عليہ ولم سے مروى ہيں، چنانيہ امام بخاری وغیرہ حضرت جابر صنی الندعنہ سے روابیت کرتے ہیں کہ رسولِ اکرمصلی ابتدعلیہ وکم نے ارشا د فرمایا ؛ حوتحص ا ذان س کر یہ کامات کے تواس کے لیے قیامت سے روزمیری شفاعت واحب ہوجاتی ہے :

((اللهُ مَّرَبَّ هَذِهِ الدَّعُوَةِ التَّ مُّةِ ا ہے اللہ ہے پرورد گارہس کا مل وسمل دعوت اور قائم وداگم وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ آتِ تُعَدَّدَ وِالْوَسِيلَةُ وَالْعَضِيْلَةَ وَالْعَشْهُ مَعْسَامًا تَعْمُوْدِالَّذِي وَعَدُ تُدُ ﴾.

'نما 'رَکے ، عطا فراینے محداصی ، لتدعلیہ ویم ؛ کو دسیلہ فیٹیپلت دران کوبھیج دیجئے اس مقام محدودیں جس کا آپ نے ان سے وعده فراياسي.

سلے تینی جوانغا کم مؤذن کبررہ ہے وہی انغا کا دم در سوئے اس کے کہ حبب بؤڈن حی علی انصلاۃ ا درجی علی خلاح کیے توامس وقت سننے والا لاہول ولا توہ الا بالقد كجيرًا جبيه كراه مسلم في رويت كياب. اس سے سامنے میں جاکر جاعت سے ساتھ نماز پڑے سے کی فضیلت بیان کیجیے اس لیے کہ ابوداؤد و ترمذی حضر بریدہ رضی التدعنہ سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشاد فرمایا :

> «بشى المشئين فى الظيم إى المساجد بالنوبرات م يوم القيامة ».

بنيس تيامست سي روزكائل ومكس نورك بشارت وعدد يجيه

حولوگ رات کی تارکیور، مین سبد کی طرف چیں کرجا ہے ہیں

اور الم اسلم حضرت الوہر رہے دفنی النّدعنہ سے روایت کرتے ہیں کہ نبی کریم سلی النّدعلیہ وہم نے ارشاد فرمایا : حجف اپنے گھر ہیں وضور کرکے النّد کے گھرول ہیں سے کسی گھری جانب النّد کے فرائنس ہیں سے سی فریفنے کوا داکر نے کے لیے جاتا ہے تو اس سے ہرقدم ہیں سے ایک قدم ایک گناہ معاف کرا دیتا ہے اور دوسرا ایک درجہ البند کرتا ہے۔

اور بخاری مسلم مصرت ابن عمر مینی الندعنها سے روایت کریتے ہیں کہ رسول الند مسلم الند علیہ ولم نے ارشاد فرمایا : خات کی نما زیر اکیلے نماز بڑے صفے سے ستائیس درجہ زیا دہ تواب ملتا ہے۔

الركر لَهُ إِللَّهُ اللَّهُ وَحُدَهُ لَا لَهُ مِنْكُ لَهُ لَهُ اللَّهُ وَحُدَهُ لَا لَهُ اللَّهُ اللَّهُ وَهُوعَلَى كُلَّ وَلَهُ اللَّهُ اللَّهُ الْحُدُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْحُدُمُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ اللَّاللَّ اللَّهُ الللَّهُ اللَّا الللَّهُ الللَّا الللَّهُ الللَّهُ الللَّا الللَّا اللللَّهُ

تعربین ہیں ۔ وی زندہ کرتا ہے اور وی ما ۔ سے وروہ ہرجیز پر قادر ہے ۔ یہ کلمان دس مرتب بڑھے جائی گے۔ اے ، مقد مجھے دوارخ کی آگ سے مفود فرو ۔ سات مرتب سے اللہ میں آپ سے جنت کاسو ماکر ، ہوں ۔ سمع مقربیہ

التد وحده لاشركيه لاسب أس كے سواكو كى معبود نہيں

مکومت وملک اس کے میے ہے۔ ورسی کے سے تمس

(( اَلْلَهُ مَّ اَجْرُفِي مِنَ النَّارِ )) سِع مِن اَبِورَوَ (( اَلْلَهُ مَّ إِنِّ أَنْ الْكَ الْجَنَّةَ )) ثمالمرت وه وعاش جوير نماز كه بعد ثابت بين: (( اللَّهُ مَ اَنْتَ السَّدَوَمُ وَمِنْكَ اسْدَلَهُ مَ اَنْدَا الْجَدَلَ لِي وَالْإِحْدُولِ وَمُنْكَ اسْدَلَهُ مَا اللَّهُ اللْمُولِقُولُولَا اللَّهُ اللْمُولِلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُولِمُ اللَّهُ الل

ے انتدائی سلام بیں اور آب ہی سلامتی دینے و سے ہیں۔
سے ذوا ہوں وار کوام آپ برکت والے ہیں۔
اسے انتدمیری مدد فرط یئے اینے ذکر اور سٹ کو داکر نے
اور بہترین عبا دت کرنے ہے۔

سے میرے رب مجھے اپنے عذاب سے اس روز بچا لیجے حبس روز آپ بیٹے بندوں کو ٹھائی گے۔ اربِ عَنِى عَذَابِكَ يَيُومَ تَبُعَث عِبَاد ك). ميمسم

آیة الکرسی کاپڑھنا پھرقل ہوالتہ احداورمعوذ ہمین یعنی قل اعوذ برب الفلق اورقل اعوذ برب الناس کاپڑھنا،اورسُنجا ک التٰہ والحمُدُلِتُٰدِ وَالنُّهُ ٱلْبُرُکا بَنتیس مِنْسِب بِرُّھنا (صححمسلم) اور تَنُّولِدِ اکرسف کے سلیے ایک مِنْبِ لَاالدَّالِ اللَّهُ وَحُدُهُ لَاشْرِئِکِ کُهُ لَهُ الْلَّکُ وَلَدُ الْحُدُدُو بُہُوعَلَی کُلِ شَنْ قَدِیْرِ کا پڑھنا (صححمسلم) اور اس کے علاوہ دومری اور نوائیں۔

ور اس کویہ تبلائے کہ منج فجراور عمر کی نماز بڑھنے سے بودنوافل بڑھنامکروہ وہمنوع ہے۔ اس لیے کہ بخاری وسلم محفرت ابوسعید خدری وضی کے بیاری مسلم محفرت ابوسعید خدری وضی الندعنہ سے روا بہت کرتے ہیں کہ سول الندھلی الندعلیہ ولم نے ایشاد فرمایا ہے: جبح کی نماز بڑھنے سے بعد کوئی نماز نہیں جب یک کرسورج فروب نہا ہے۔ کوئی نماز نہیں جب یک کرسورج فروب نہا ہے۔

اب اس کویہ تبلائی کرسورج نکلنے اور زوال اورسورج غروب ہونے سے وقت کوئی سی مماز بڑھنا جا کوئی سی میں ہول نام اس لیے کوسلے من مورض التہ عند سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرایا: تین گھڑیاں اسی ہیں جن میں ہول نام صلی التہ علیہ وقر میں نماز بڑھنے سے منع فرایا کرتے ہے، اور یہ کہم اس میں اپنے مردول کو دفن کری اناز جنازہ مراوہ ہے) ایک اس وقت جب روال کا وقت ہو حب کے کہ ذوال نہ ہوجائے، اور اس وقت حب زوال کا وقت ہو حب کے کہ ذوال نہ ہوجائے۔ اور اس وقت حب زوال کا وقت ہو حب کے کہ زوال نہ ہوجائے۔ اور اس وقت حب سورج غروب ہونے لگے حب تک کہ غورب نہ ہوجائے۔

#### عمراس كومبح كے وقت بڑھے جانے والے ذكر تبلائيے:

نيزارشادفرايا ؛

((وَاذُكُونُ رَّبَكَ فِي نَفْسِكَ تَصَوَّعًا وَجِيفَةً وَدُوْنَ الْجَهْرِمِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْأَصَالِ وَلَا تَكُنُ مِّنَ الْغُفِ لِمِيْنَ )). الاعران - ١٠٥ نيز فرايا:

( آیَا یُنها الَّذِینَ امَنُوا اذْکُرُواللَّهُ ذِکْرًا كَثِنیرًا وَ اَللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّ

اوریاد کرستے دسیسے ا پنے دب کوا پنے ول میں گڑگڑاستے ہوسے اور ڈرستے ہوئے اور سیسی آولڈسسے بچوکہ پیکا رکرہ سنے سے کم ہوجیج کے وقرعہ ، ورٹ ایک دقت، وربے فہرست ہیںے

سے بیان و لواللہ کو خوب کٹریت سے یا دکھ و ورث م اس کی تسییح کرتے رہو۔

سلبه سوری شکلته اور زوال اورغواب کا ندره تقریب آوه گھنٹ سے۔

اورتبی کریم علیه الصلاة والسلام فی ارشاد فرمایا:

((كلمت ان خفيفتان على اللسان، ثقيلتان

فى الميزان ، حبيبان إلى الرحمن ، سبعان الله

وبتعملك سبعان الله العظيم) مبح بخارى ويحمسم

وبِحمٰدِهِ مُبْحَانَ التيرانُعَظِيمُ. که اور بخاری وسلم نبی کریم صلی الله علیه وسلم سے روامیت کریت میں کہ: اس خص کی مثال جواسینے رب کویا دکر آم مواور آس کی

شال جوابینے رب کوبا ونہیں کرتا ہو زندہ اور مردہ کی سی ہے۔

ورا فام منم مفرت ابوہر رہ وضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرایا: ایک صاحب نبی کریم کی اللہ علیہ والم علیہ ولم کی ندمت ہیں حاصر ہوئے اور عرض کیا ؛ اسے اللہ کے رسول مجھے گذشتہ لات بچھو کے کا منے سے خست بحلیف بنجی ، توآب نے فرایا که اگرتم دات کویہ بڑھ لیتے:

(( أَعُودُ بَكِلِمَاتِ اللهِ الثَّامَّاتِ مِنْ شَسِيْنَ

كم مين الشدتعال كركال وكل كارت ك ذريع يناه م تكابول مراس بيزك شرس بياكيا ہے.

دو کھے میں جوزبان پربہت کیکے اورمیزان وترزو) میں

بهبست بعاری بیل. اوراستر ( رحمٰن ) کومجوسب بیل اسْجُاكَ الته

تو وه تم كوكچه نقصان نه بهنچآنا ـ

🚓 اورابو داؤد وترمذی حضرت ابوہر رہے وہنی التّہ بحنہ ہے روایت کرتے میں کہ وہ سے کے وقت ورج ذیل کلمات برط ھا

((اللَّهُمَّ بِكِ أَصْبَعُنَا وَبِكَ أَسُينِنَا وَبِكَ نعيى وبِك نَعُومَتُ وَإِلْيُكَ النَّشُورُ» وإذاأمى تَال: (( اَللَّهُ مَ مِكَ أَمُسَيْنًا وَ بِكَ نَعَيُمَ وبكَ نَمُونُتُ وَإِلَيْكَ الْمَصِينُونَ الْمَ

اسے القدت ہی کے نام سے بم سے سیح کی در آپ بی کے نام سے شام کی اورآب ہی کفینل سے بم زندگی حاص کرستے ہیں اورآب بی کے مکم سے جم مرب کے اور آپ ہی طرف اوٹ کر جانا ہے داور ہ شام کرتے توفریاتے ) سے اللہم بہت کے نام سے شام کرتے ہی ، درآپ ہی کے ضل سے ندہ بیں۔ اور کیکے عکم ہے سے تری گے اور کپ کی افر

تهراس کوهبنا بوسکه قرآن کریم کی تلادت کاتکم دین:

اس لیے کہ قرآنِ کریم کی تلاوت کی فضیلت سے بارسے میں بہت سی احادیث وار د ہوئی ہیں:

ال مسلم حضرت ابوا مامہ دشی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرطیا میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ دم

ئه تحسس به کی کتاب المأوّدات" الاحقه فرایتے بس میں دعاؤں اور بیج وشام سے مسستند ا ذکار کامنسینے احادیث سے اچھامجوعہ

يد مناآب في مرايا:

قرآن كريم مرجعواس ليدكه ووقيامت ك روزا بخ برها والوں کے سے سفاشی بن کرآئے گا۔

((اقرءوا القسآن فبانه يأتى يوم القيامة شفيعًا لأصحابه))-

 اورام بخاری حضرت عثمان رضی الته عنه سے روایت کرستے میں کہ نبی کریم صلی الته علیہ وقم نے فرایا: تمیں ہے بہتر وہ تخص ہے جو قرآن کریم سیکھے، ورسکھا ۔

((خايكم من تعلم القرآن وعلمد)).

🚓 ا وراهم ترمذی مضرت عبدالتُدبن مسعو ودمنی التُدعند سے روایت کرتے ہیں کہ انہول نے فروایا : رسول التُدمسی التُدالمی وسلم نے ارشا دفرایا:

> ((من قدرأ حسرف من كماب الله فله حسنة، والحسنة بعيش لكثالها لا ُقول ، المسمّحسون

ولكن ألف حوف ولام حوف وميم حوت).

بوشخص التدكى كماب كاايك حرضهي يومقالب تواسيع ایک نی ملتی ہے اور ایک نیکی کا کوس نیکیوں سے برابر ثواب لمنا ہے۔ یں یہ نہیں کہاکہ اکستم ایک حرف ہے بکدا مف ایک مرف ہے اورالم ایک ترف ہے اورمیم ایک ترف ہے۔

آب نودهمی تلاوت کومذ حصور سیدا ورمزابیف بی کوهیور سف و تیجیا خواه روزانه چند آیتول کی پی لاوت کیول نه برورا در بہترین عل وہ ہے جس پر ملاومت کی جائے خوا ہ تھوڑا ہی کیول نہو۔

### 🗨 مجراس کے ساتھ ریاہ نت وورزش کی شقیں ٹروع کیجیے

تاكەالتە تبارك وتعالى كے درج ذيل فرمان مبارك برعمل موجائے:

اور تیاد کروان کی نوائی سے واسطے جو کھے میں کرسسکو

( وَ أَعِدُ وَا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ ثُوَّةٍ ».

کا تؤریومن بهترا درانترکو زیا دبهسندیه سے کمزوریومن

اور نبى كريم كى النه عليه ولم كاورج ذيل فرمان بورا بو: ((المؤمن التوى خير وأحب إلى اللهمان

سے اور دونوں میں معلائی وخیرہے۔

المؤمن الضعيف وفى كم خير). .

ا ورنشاط پیداکرسنے واسے وہ نموسنے اورخوش کن مواقعٹ اورخضیت ومردم سازی کے وہ بنیادی اصول جن کی نشاندې نبی کریم صلی التٰدعلیہ وسلم نے کے ہے اوراس دنیامیں ان کی عملی تطبیق کرسے بنائی ہے تاکہ ریم بیول سے لیے شعل راہ ونمونہ بن جائیں اوران کے سلسلہ میں انھی کچھ پیلے گفتگو ہومکی ہے۔

يشقيس ورزش ورياصنيت كى تمام اقسام كوشال بين مثلًا دورُنا ، جيلانك تكانا بمشتى كزنا بوعجه المفانا دغيره وغيرو

مرنی جب ان لوگول سے سیسے جن کی تربیت کی ذمہ داری اس پر سیسے عبادت اور جہاد .اور روحانی تقویت. اور قویت وطاقت سے وسائل کی تیاری اور حقیقت وواقع اور مزاج ودل لگی ، اور دین ودنیا اور آخرت سب کو جمع کر دیتا ہے توكتناعظيم وزبردست مرني بوياسه.

رسا کا اور انسانول اور الندکی نظری ایسامرنی کتناعظیم ہوتا ہے جوا پنے قول وفعل اور بدایات ور سنائی کے ذرایعہ اسلام کے تقیقی دواقعی دین ہونے اور عگر گوشول اور دل کے سکون کا ذرایعینی بجول سے لیے اس سے اچھے معاملہ کوظام کر البے۔

## مچھراس کے ساتھ نقافتی مطالعہ شرع کیجیے:

ماكه التدتعالي كيه فرمان مبارك ذبل برعل بو :

الوَقْتُ لُ رَّبِ زِدُ لِيُ عِلْماً ». لا ١٨٠٠

ا در آپ صلی الله علیه ولم کایه فرمانِ مبارکم تحقق ہو :

((ومن سدك طريقً يلتمس فيه عماً سهّل

منه له طويق ً إلى الجينة ). . ميخ مسم

بوشخص کسی ایسے راستے پرمیل ہوسیں میں وہیم کا طالب

ورآب كيے كه اسے ميرے برورد كاربرها نے ميرعم كو.

موتو، مقداس کے لیے جنت کا یک راستہ آس ن فرادیتے ہی۔

بچھر بچیا اگر طالب علم ہوتومطالعہ مدرسہ کی آباول کی نوعیت کا ہونا بیا ہیے، چنا کیہ مبتح سمے ابتدائی حصول میں اس کو وہ اسپاق یا دکرانا چا ہیے جواش سے ذمرنگا ئے گئے ہیں۔ اور جو بحثیں مطالعہ کی ہیں ان کامطالعہ کرایا جائے، اور ان میں بھی کوئی حرج نہیں ہے کہ اسباق کے مطالعہ کے ساتھ نقافت عامہ سے علی کتب کاتھی اسے مطالعہ کرایا جائے، تاکہ بیجے كى عقل پنجته ہواور تقافت سے میدان میں تکمیل كو پنجے .

ا دراگر بچپر کام کاج کرتا ہو تو معبرا<u>سے ت</u>قافت و تہزیب سے علق مطابعہ کرانا یا ہیںے. اور مبیح کے ابتدا کی محصول میں اسے ایسی کیابول کے مطالعے میں مصروف کرنا چاہیے جواسے علم سے حقائق اور ہنرسے فنون سے روشناس کر سکیں تاكه وه عقل كي نيتنگى او رُنقافتى سوجه بوجه او علمى حينتيت سيدايك مناسب معيارتك يېنج سكے م

اوراگرمرنی کے پاس ایسے پیھے کی ملمی ممیل اور تعلیمی و ثقافتی تیاری سے لیے وقت نه ہوا وروہ خود اس کی علیم داملاح ور بنانی کے لیے وقت روے سکے توال میں کوئی مصالقہ نہیں ہے کہ وہ دوسرے اساندہ یا براسے بچول سے یہ کام

# ت مجمراس كواشياق وجاشت كى نماز كى تعليم ربي :

اس كيه كداشراق وچاشت كى نمانى كى غاندى خى خائل بىيت مى تىجى اما دىيت مى واردېوستە بىر،

ام بخاری وسلم حضرت ابوم ریسه رسی الندعنه سے روایت کرستے میں کہ انہوں سے فرمایا محصے میرسے مجبوب سی کریم بلی النّٰدعلیه ویم نے تنین باتول کی وصیت کی ہے: ایک تومبرمہبینہ میں مین دن روزہ رکھنے کی، دوسرے چاشت کی دو رکعات نماز طرحصن کی دا ورتبیسرے اس کی کہیں سوسنے سیقیل وتر راج مدلیا کرول۔

🗫 اوراماً مسلم واحمد حفررت عائشه رضی الله عنهاسے روایت کریتے ہیں کدانہول نے فرمایا : نبی کریم کی اللہ علیہ ولم حایت کے وقت چار رکعات پڑھاکرتھ تھے اور جننی التٰہ توفیق دیتا اس سے بڑھادیا کرتے تھے۔

جهبورِ فقهار کے پہالِ نمازجا شت کی کم از کم دو رکعات اور زیادہ سے زیادہ اعظیر کعات ہیں،اور اس کا وقت سورج <u>نتکلنے کے ت</u>نقر بیباً اُدھ <u>گھنٹے کے قریب سامے تمروع ہو کرظہر</u>کی نمازے تقریباً پون <u>گھنٹے قبل تک رمتہا ہے۔</u>

#### 

مرتی کوچاہیے کہ کھانے پینے کے ان آداب کا اتہا م کرسے جوہم اس تحاب تربیۃ الاولاد کی قسم تانی میں کھاسے يينے كے آداب " نامى عنوان كے تحت ذكر كريكے ہيں۔

ب سے اور ب ان حوں مے حدت و مربی ہیں۔ بچول کو ان آواب کی تعلیم دینا چا ہیں تاکہ وہ کھانا کھاتے اور پانی وغیرہ بینے وقت ان کے عادی بنیں، اور بیان کی فطرت وعادت بن جائیں ،اس لیے اسے مربی محترم !آپ مذکورہ بالاعنوان والی بحث کا مطالعہ کر لیجے تاکہ جب لینے اہل وعیال اور بچول کے ساتھ آپ کھانا کھانے بیٹھیں تومرطہ واران آواب کو نافذکر سکیں۔

#### کھرسے کلنے کے آداب سے روشناس کائیں:

اب اس کوریت لائیں کہ وہ اسپنے کی طریع اور ایکس کو پیپننے میں پیپلے دائیں سے ابتدا کرسے اور آبادیت وقت چیلے بائیں سے آبادے اس لیے کمسلم حضریت ابوہرریہ ضی النّدعنہ سیے روایت کرتے ہیں کہ رسول اکرم صلی النّدعلیہ لیم نے ارشاد فرمایا: حبب تم میں سے کوئی تنخص جو تا ہینے تو ابتدار دائیں سے برسے اور جب جو تا اتار سے وہیلے ہائیں یا وُل کا آبارے ۔ 🗫 آپ اس کو گھرسے نکلنے کی و عاسکھا ہمیں اس لیے کہ ترمذی حضرت انس ضی الٹدعنہ سے روایت کریے ہیں کہ رسول اكر صلى التُدعلية ولم في ارشا وفروايا: حبب انسان اليف كمرسة يحلقه وقت بيه دعار يرط حماسة:

لا بِسُسِمِ اللّهِ تَقَ كَلُتُ عَلَى اللّهِ يَعَوّل السّركان الله كَرْكِل رؤ بول اورالتدريم في معروس كياب وَلَا قَدَّةً إِلَّا مِا لِلَّهِ إِلَّا مِلْهِ ﴾.

ورا متدتعالی کے سوا زکوئی برائی سے روک سکتا ہے اور ننیک

كام كى توفيق دے سكتا ہے۔

توال سے كهاجا ما ہےكر:

(احسبك حدیث وكفیت ووقیست وتنحی عندالشیطان)) .

کفایت کی گئی اورتم بچاہیے گئے اور کس سے شیطان کو دور کر دیاجا تا سبے ۔

اور حضرت مسلمه و فنى التُدعنها فراتى بي كررسول التُرسلى التُدعلية وتمم جب ال سے كھرسے نطقے تھے تويہ تے تھے :

التدكانا كى كركل د لإبون اورالتدري مجروس كربابور استدكانا كى كربابور السائد بين مجروس كربابور است كم المقابون الاست كم المراو بوجائي بالمراه بوجائي بالمراه بوجائي بالمراه بوجائي بالمراه بوجائي بالمراه بوجائي بالمراه كري ياجم بين وفائل المراه بوجائي المراي المراه بوجائي المراه المر

تمبارسه بيديكافى بداورتميس وايت وكالكن ورتموارى

#### مجراس كوراستے كے آداب سكھائيں:

آب اس کویہ تبلائی کہ وہ آرام سے بطے اس لیے کہ التہ تبارک وتعالیٰ ارشا وفرواتے ہیں:
 (اوَعِبَادُ الرَّحَیٰنِ الَّذِیْنَ یَنِیشُونَ عَلَے الْاَرْضِ

الوَعِبَادُ الرَّحْمَٰنِ الَّذِينَ يَنْشُونَ عُكَ الْأَرْضِ هَوْنًا وَّاذَا خَاطَبُهُمُ الْجِهِلُونَ قَالُوا سَلْمًا».

سُلُمُنَا))، فرقتی کے ساتھ بیلتے ہیں ، ورجب ان سے جہات سے ۔ ۱۳۔ وگ بات چیت کرستے ہیں تو وہ کہر دیتے ہیں خیر۔

آپ اس کویر تبلائیں کہ وہ ا بینے آپ کو اجنبی عور تول کو دیکھنے سے بچائے، نگاہ بست رسکھے اس لیے کہ التہ تبارک و تعالی فرائے ہیں :
 تبارک و تعالی فرائے ہیں :

القُلْ تِلْمُوْمِنِ بِنَ يَغُضُوْا مِنَ اَبْصَارِهِمْ وَ لَكُوْمِنْ فِلَ اللَّهُ وَمِنْ وَ لَكُوْمِنْتِ لَعُفَظُوا فُرُوْجَهُمْ مَ ... وَقُلْ لِلْمُؤْمِنْتِ لِغُضُضْنَ مِن اَبْصَارِهِنَ وَيَخْفَظُنَ لِعَنْ اَبْصَارِهِنَ وَيَخْفَظُنَ فِي النور - المُعَارِهِنَ وَيَخْفَظُنَ فَوْدُ جَهُنَا النور - المُعَارِهِنَ النور - المُعَارِهِنَ وَيَخْفَظُنَ فَوْدُ جَهُنَا النور - المُعَارِهِنَ النور - المُعَارِقِينَ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهِ اللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ ا

بت ایمان والول سے کبہ دیجیے کراپنی نظری نیمی گھیں ور ابنی شرم گامول کی حفاظت کریں ... . درآ ب کبہ دیجیے ایمان والیول سے کراپنی نظرین نجی کھیں اوراپنی شرم گامول کی حفاظت دکھیں ۔

علیکم السالم ورحمته النه و برکاته که که وه السالم علیکم ورحمته الندوبرکاته که کرسالم کیاکرسے، اورسالم کے جواب میں وعلیکم السالم ورحمته النه وبرکاته که کورکاته که کورکاته که کورکاته که کورکته که کورکته النه وبرکاته که کورکته کورکته کورکته که کورکته کورکته که کورکته که کورکته کورک

مرقی محترم !آداب سلام کی بحث پر مطلع ہونے کے لیے آپ اس کتاب کی قسم انی میں "سلام کے آداب" نامی بحث

كامطالعة كريبية تاكرآب بيحى ال كى طرف دينها فى كرسكيس اور است اس كاعادى بناسكيس به

سلام کے آواب بیں سے یہ سے کہ ہرکس وناکس کوسلام کرنا چا ہیے نواہ چہلے سے واقفیت ہویا نہ ہواس لیے کہ الم کاری وسلام کرنا چا ہیں ہے کہ اللہ عنہ کریم ملی اللہ عنہ کریم ملی اللہ عنہ کریم ملی اللہ عنہ معنی کے مسلم مصرت عبداللہ میں سب سے بہتر کیا چیز ہیں ؟ تواتب نے ارشا و فرطیا یہ کہ تم کھانا کھلاؤ، اور اللم کرواں کو جی سے کو تھا جانتے ہوا ور اس کو بھی جس کو تم نہیں جائے۔

اس کو پسکھائیے کر جب وہ اسپے مسلمان بھائی سے ملے تو اسے مصافی کرے اس کے کہ ابوداؤدو ترمذی سمجے سند سے حضرت بڑا ہن عازب ضی النہ عنہ دوایت کرستے ہیں کہ انہوں نے فرایا سول اکرم صلی النہ علیہ تیم نے ارشاد فرایا ہے : حب دوسلمان ملتے ہیں اور ایک دو مرسے سے مصافی کرستے ہیں اور النہ کی حمدو ثناء بیان کرستے ہیں النہ سے منفوت سے طلبگار ہوتے ہیں توان دونوں کی منفرت کردی جاتی ہے۔

ا ورایک روایت میں یہ آباہے کہ رسول النّد صلی النّد علیہ وہم نے ارشاد فرمایا : کوئی دوسلمان ایسے نہیں کہ دہ ایک دوسرے سے مل کرمصافحہ کریں مگر رکہ ان سے عدا ہونے سے قبل ان کی مغفرت کردی مباتی ہے۔

کو آپ اس کو یہ تبلائیں کہ وہ خطرہ کی جگہ پراحتیا طہسے پہلے اور وہ اس طرح کہ گاٹرلیوں سنے دوریسہے اور شرک پر سپلنے سے پیمے اس کیے کہ التد تعالیٰ کا ارشادِ مبارک ہے ؛

الوَلَا تُلْقُوا بِأَيْلِ يَكُمُ إِلَّ النَّهَاكِ فَي ) البقود ١٩٥٥ ، ورز والوالي جان كوطاكت ير.

ان ان کویم بھایئ که زمین پرکوئی اسی چیز نہ تھینگے جس سے لوگول کو ایزار درکلیف پہنچے ، مثل آسی پیزی بن سے انسان کے بھسلنے کا ڈر ہو۔ اس لیے کہ نبی کرم علیہ الصلاۃ والسلام کا دشاد مبالک ہے: نضر اسھا وَ من ضرب بنجا وَ اس طرح آ ب کوچا جیسے کہ آب اسے یہ بھی تعلیم دیں کہ وہ داستہ سے اسی چیزول کو ہٹا دیا کرسے جو چلنے والول کونقصال پہنچا نے والی ہول مثلاً بچر و تعلیم والی ہوں مثلاً بچر و تعلیم والی چیزی ، اس میے کہ امام بخاری مضرت ابوہ بریرہ دضی اللہ عذہ سے روایت کرتے ہیں کہ نبی کرم ملی اللہ علیم منا اللہ میں سب سے مالی لا الدالا اللہ کا کہنا ہے اور سب سے مرتر ایا آسان ترین ، دہ چیز کا ہٹا دیا ہے۔

که آپ اس کوراستے کے دومر سے موی آداب سکھائیں۔ اس لیے کہ بخاری وہم حضرت ابوسعید ضدری وہی اللہ عنہ سے روایت کرستے ہیں کنبی کریم میں اللہ علیہ وہم نے ارشاد فروایا: راستول میں بیٹے سے بچو، توانہ ہول نے عوش کیا اسے اللہ کے رسول راستول میں بیٹے کریم بائیں کریم علیہ العسلاة والسلام رسول راستول میں بیٹے کریم بائیں کریم علیہ العسلاة والسلام نے ارشاد فروایا: اگرتم بیٹے بیم مری ہوتو راستے کواس کا حق اداکر و صحابہ رضی اللہ عنہ منے عرض کیا: اسے اللہ کے دسول راستے کا حق اداکر و صحابہ رضی اللہ عنہ منے عرض کیا: اسے اللہ کا جواب دینا.

ور بھی بالول کاحکم دنیا ،اوربری باتول سے روکنا ،

وجہ اسے یہ سکھائیں کہ اگروہ مدرسے یا کارخانے جائے تواپنے ساتھی کے تن کوا داکر سے بین اس سے جب ملے تواسے سال کی بیمار بری کرے اور حب اس کو چین کے آجائے تواس برز شکٹ الند کیے اور مخلف مناسبتول براس سے ملاقات کرسے اور تابی و ختی میں اس کی اعازت کرسے اور جب وہ وعوت وسے تواس برلبیک کھے۔
مناسبتول براس سے ملاقات کرسے اور تنگی و ختی میں اس کی اعازت کرسے ، اور جب وہ وعوت وسے تواس برلبیک کھے۔
مناسبتول براس سے ملاقات کرسے ہیں اس کا میں گائی کی ساتھی سے حقوق "کی بحث میں درج کر سے بیں اس کا مطالعہ کرسیجے واس آپ کو مدال مفصل بحث مل جائے گی۔

ان کویہ تبلائی کہ وہ استاذ کے حقوق اوا کرے نواہ وہ مدرسہ کامدی ہویا کام کاج کااستا دہو، دونول سے توانسی وعاجری سے پیلائی کاج کااستا دہو، دونول سے توانسی وعاجری سے پیلی آئے، اور ال کوفرام کوشس نے کرے، اور المحری سے پیسے اور اس کے احسان کوفرام کوشس نے کرے، اور اگروکہ می وجہ سے خصہ ہوجائے تواس کی باتول پر تسبر کرے، اور اس سے سامنے باادب بیٹیے، اور اس سے پاس اجازے تلب کرے جائے، اور جب وہ بات کرے توکان لگا کواس کی طرف متوجہ ہو۔

ان حقوق کی مفصل بحث اس کتاب کی اس بحث میں کریج کے بین حسس کا کھی تذکرہ گزرا ہے لئبذا و ہاں شوام دا دارہے آراستہ مکل مفصل بحث ملاحظ کر لیجیے۔

اور اخیر میں اس کے جانے سے قبل آپ اس کویہ دسیت کریں کہ التدسے ڈیسے ، اور تقوٰی اختیار کرسے ، اور کھل کھل کھل کھل کھل کھل کھل کھی دونول حالتوں ہیں اسکے حاضر و ناظر ہونے کو نہ مجو سے ، اور کا زول کوان سکے اوقات پرا داکر سے اور نیک اور دنیار لوگول کے ساتھ ہی اٹھنا اختیار کرسے ، اور ایسی کوئی بات نے کرسے بس سے اس کی ہے ادبی یا باخل تی کا منطا ہرہ ہوتا ہویا جو اس کے وقار سے خلاف ہو۔

ب - اورشا كومرني اسس نظام ك اتباع كرسيه:

يركونشش كيجيكم تغرب وعشارك كازمسيوس دا مو:

اس کیے کر حدیث میں آباہے کہ جونماز جاعت سے پڑھی جائے وہ اس نماز سے ستائیس درجہ نیا وہ تواب والی سے بو اکیلے پڑھی جائے (بخاری وسلم)۔

ہ آپ ی*ے کوشنٹ کری گد*آپ کے بچے کا زکے اوقات میں اچھے اورصاف تھرے کپڑسے پنیں اسس لیے کہ رشادِ رمانی ہے :

الخُدُوا زِنْيَنْكُ عِنْدُكُ لِمُسْجِدٍ المعرف - ١١ كان على المعرف الم

ه اس کی کوشش کیجیے کہ حبب سبحد جانا ہو تولسن اور پیاز زکھائیں ، تاکہ توگول کوا پڑا، اور تسکیعن نہ پہنچے اس کیے کہ اما بخاری دسلم صفرت جابر دشی الدّی نہ سعے روا بہت کرتے ہیں کہ رسول النّدسلی النّدعلیہ وہم نے ارشا دفرمایا : حسب شخص نے ہن پاپاز

کھائی جوتو وہ ہماری مسجد سے دور رہے۔

سکین اگر بالفرض عورت مسجد مباما چلہ ہے تواسے خوشبونہیں نگانا چاہیے ،اس لیے کسلم کی حدیث میں آ کہہے کہ حبب تم میں سے کوئی عورت مسجد جائے تواسے چاہیے کہ وہ خوشبو ہزا گائے۔ تاکہ مردوں میں فتنہ کا احتمال پیدا نہو۔

﴿ حبب نماذے لیے کلوتو درج ذیل دعا پڑے لیاکرواس لیے کہ اما) احمدہ ابن ما جدا ورا بن نحزیم جھنرت ابوسعید خدی منی انتدی نہ سے دوایت کرتے ہیں کہ انہول سنے فرایا : ہیں نے دسول اکرم صلی الندیلیہ وہم کویہ فرملتے سناسے کہ آپ نے فرمایا : پنجنس اپنے گھرسے نمان کے لیے نکلے ہوئے یہ پڑھے۔

((اَللَّهُ مَّ إِنِى اَسُالُكَ بِعَقِ السَّائِلِينَ وَعِعْ خِنْ اَسَّائِلِينَ اللَّهُ اللَّهُ

ے التدیں آپ سے موال کرتہ ہوں اس حق کے فیل جو سنوں کا آپ برہے اور میرے آپ کی طرف جانے کے حق کے فیل حق کے طفیل ، آپ جانے ہیں کہ مجھے نہ تو تکبرنے نکا لا ہے خات اور نہ دکھا ہے ، اور ریا کا ری نے ، میں اپنے اس کن ہوں سے معاک کر اور جان چڑ سنے کے لیے آپ کی طف مگل ہوں ، میں آپ کی رحمت کی امید اور مذاب کے ور سے نکل موں ، میں آپ کی زار آگ کے ورسے اور دفا و فوشنو دی کے محصول کے لیے نکل ہوں ، میں آپ سے یہ سوال کرنا ہوں ، کہ آگ سے باہیں۔ مقصول کے لیے نکل ہوں ، میں آپ سے دوز نے کی آگ سے باہیں۔ آپ میے محصن اپنے ففل وکرم سے دوز نے کی آگ سے باہیں۔

اودا ما مسلم رحمدالتُدند يه الغاظ لقل كيم بن الأراك الله مسلم رحمدالتُدند يه الغاظ لقل كيم بن الأراك المنظم المجعَلُ فِي قَلْمِی لُوراً الله الله المنظم المجعَلُ فِي الله الله المنظم المنظم

اسے میرے القد میرے دل میں نور پیدا کر دیجے اور میری
زبان میں نور بیدا کر دیجے ، اور میرے کا نوں میں نور بیدا کر دیجے

اور میری آنکھوں میں نور بیدا کر دیجے ، اور میرے
پیچے می نور کر دیجے ، اور میرے آگے می نور کر دیجے ، اور میرے میں نور کر دیجے ، اور میرے آگے می نور کر دیجے ، اور میرے آگے می نور مقرد کر دیجے اور میرے نیچے می نور مقرد کر دیجے ا

جه بهرجیب سبجد بینی جائیک تومسجد میں وائل ہوتے وقت پہلے دائیں پا وُل کو آگے برُح جائیک اور بر دعا دبر حین بر الکھ فَدُ بِاللّٰهِ الْعَظِیْمِ وَلِوَجُلِهِ الْکُرِنِیمِ مِی مَعْمِ اللّٰد اور اس کے کریم دجہ اور قدیم سلطنت کے وَسُلُطَا فِلِهِ الْعَظِیْمِ وَلِوجُلِهِ الْکُرِنِیمِ وَسُلُطَا فِلِهِ الْعَظِیمِ وَلِوجَهِ اللّٰ اللّٰ مِی مِن اللّٰهُ مَا اللّٰهِ اللّٰهُ مَا اللّٰهُ اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مِلْ اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مِلْ اللّٰهُ مِن اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مِلْ اللّٰهُ مِن اللّٰهُ مِلْ اللّٰمُ مِلْ اللّٰمِ اللّٰمِلِي اللّٰهُ اللّٰهُ مِلْ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِلِي اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِلِي اللّٰمِلِي اللّٰمِلِي اللّٰمِلِي اللّٰمِ اللّٰمِلْ اللّٰمِلْ اللّٰمِلْ اللّٰمُ اللّٰمِلْ اللّٰمِ اللّٰمُ اللّٰمِلِي اللّٰمِ اللّٰمِلْ اللّٰمِلْ اللّٰمِلْ اللّٰمِلْ اللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ الل

ال سيدكر ابودا ودوسلم ونسائی وترمذی میں احادیث میں الیابی آیا ہے۔

وہ بینے سے تبار دورکعات تجیۃ المسجد پڑسے کا انہام کیجیے اس کیے کہ نماری وکم مضرت الوقیادہ رضی النّدی سے روایت کرتے ہیں کہ نبی کریم ملی اللہ علیہ وکم نے ارشاد فرمایا: حب تم ہیں سے کوئی شخص سجد میں آئے تواسسے چاہیے کہ بیٹے سے تبل دو رکھتیں پڑھے۔

الله جماعت کی نماز سے فارخ ہوکرا ہے ہول کے ساتھ وہ دعائی اور وظائف پڑھیں ہو پہلے ذکر سکے جاچکے ہیں جماعت کی میل میں جو بہلے ذکر سکے جاچکے ہیں جہ جہے جہاں ہے ہانا ہے جہاں ہے

، حبیر بیب بعب بدست ، رست من رسیب بیر لا اَللّهُ مَّ صَلِ وَسلِّمْ وَبَارِكُ عَلَى سَیْتِیدِ نَا نُحَمَّدُ،

اے القددرود وس لام بھیجے ہما سے سروار محدوسی القد علیہ ولم پر ۔

((مَرَبِ اغُفِرُ إِلَى ذُنُسونِ ، وَا فُستُعُ لِحُتُ الْمُرَبِ اغُفِرُ الْحُدِرِ الْمُدَابِ فَضُلِكَ ».

استدمیرست رب میرست گذاه معاف فرد دسیجیدا درمیرست

یے اہنے نفسل کے دروازے کمول دیکھیے۔ م

اس بیے آپ کوشش کریں کہ یہ دعائیں اور اذکار اپنے بچول کوسکھائیں اور ان سے بل آپ اپنے اوپرال کی طبیق کریں اورخود عل کریں ۔

🧇 آب یا کوشش کریں کہ بہتے مدیسہ سے تکھنے پڑھنے سے کام میج طریقے سے پورے کریں اور اٹھی طرح سے اسباق یاد کریں، اور مسائل طل كري اور اسباق سمعين ، اور آب ان كويم نعيمت كري كدوه است كام كائ عمدگ سد كري اوراني تعليم كوشا ناظريقي سد پوراكري تاكه نبى كريم ملى الله عليه ولم كايد درج ذبل فرمان مبارك پورا بروجسة پېقى مضرت عائشه فرى الله عنها سد دوايت مرسق يين كرسول التدخلي الترعليه ولم في فرايا:

التٰدتعالیٰ اس بات کولپسندفرائے جیں کہ جبتم میں سے كونى شخص كونى كأم كرسدتوا سيرعد كى ويختكى سيرسد. الإإن الله يحب إذا عسل أحدكم علا

ا *در اس میں کوئی حمدے نہیں ہے کہ بیچے سے سامنے علم اور طلب علم سے علق قرآنی آیات اور احا دمیٹ نبویہ اور ترفیبی* اقوال وقياً فوقياً بميشه ذكر كي جائي وربي قرآني آيات درج ذلي بي .

( هَ لَ يَسْنَوَ عَ اللَّذِينَ يَعْكُمُوْ نَ وَ الَّذِينَ لَا يَعْكُمُوْنَ)) الاروا م كياهم والمصاور بعلم كيس برابر بوسكة بين -

التندتم مي ايمان والول سے اور ان سے جنبيس علم عطابوا ہے درجے لبند کرے گا۔

((يَرْفَعِ اللهُ الَّذِينَ أَمُنُوا مِنْكُمْ ۚ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دُرَجْتٍ ١٪.

نيزفرايا :

اورآب كييكراسيميرس پروردگار فرحاوس ميريطم كو.

الاوَ قَلَ مُن بِي زِنْ فِي عِلْمًا ». له رسا

اور فرمایا :

الله الله المنافية والمنافية والمنافية والمنافية المنافية المنافية

ا (إِنْهَا يَخْشَكَ اللهَ مِنْ عِبَادِةِ الْعُكَمَةُ أَا) فاطرَمِهِ

#### اوراس سلسله کی احادیثِ مبارکه درج ذیل بیس:

امام ترمیزی حضرت ابوسرریره رضی الندعنه سه رواریت کرسته بین که رسول الندهم ماند علیه وقم نه ارشا د فرمایا : ونیا ملعون ہے اور جرکچھ اس میں ہے وہ بھی ملعون ہے سوائے اللہ کے ذکر سے اور حواس سے علق ہواور عالم اور واقعلم ۔ ا در ایم ترمذی حضرت انس رضی التُدعنه سے روایت کریتے ہیں که آپ سلی التُدعلیہ وقم نے ارشاد فرایا : جوشخص علم حال كرف مے بين كل اسب وہ حب تك وابس زلوت الله كے راست بى ماس شار بوتا ہے۔

ا در ترمذی مضربت ابوامامه منی الله عنه سے روایت کرتے ہیں که رسول اکرم مسلی الله علم سفے ارشا دفروایا : عالم كوعا بربراسي فضيلت ماصل بسيصبين كدمجعة تم مين سيادتي سيسا دفي صحابي بر، الندتعالي اوراس تحيفر شقة اور آسانول ا در زمین والے حتی کرچیونٹیاں اسپنے بلول میں اور مجھلیاں معبی اکشخفس کے لیے دعاکرتی میں حولوگوں کو نویر کی تعلیم دسسہ

#### 🕒 بیچے کوخیزخواہی اور نصیحت کے کاما کہتے رمنا :

شلاً مرنی بیجے سے کہے کہ دیکھوانسان کا مرتبہ علم سے بڑھا ہے۔ اور علم لوگول کو نظیم اور بڑسے لوگول کی صف مين كعراكر دتيا بيد، اورعلم مصانسان لوگول كي نظرين لمحترم اورمعاشريدي باعزت بتماسيد.

اورجهالت ،عزت وكرامت كى بيخ كنى كرتى كيد. اور جهل جا بلول كوسبے وزن بنا كاسب ايسے لوگول كى علا، وربيط کھھے توگول اوراصحاب دائش وککردامیلاے سے پہال کوئی قدروقیمیت نہیں ہوتی ہے۔ اور اللہ تعالیٰ رحم کرسے امی شافعی پر ہو فرات بین که دونیا حاصل کرنا چاہیے اسے چاہیے کہ علم حاصل کرسے، اور حوّا خریت کا طلب گار مو اسلیمی علم حاصل کرنا چلہیے درجو دمین و دنیا دونو*ن کا طالب مبوتو است هجی علم بی حاصل کرنا چاجیے ، اور ا*لته تعالیٰ حضرت علی \_\_\_\_ ہے اور است

سم كوصول كيلي مراس كابدل يتربعض كرو لوگ سايد كارساك اورسم و سے زنده بين

ا *در اس سے علاوہ اس قعم کی خیرخواہ*ی وہمت افزائی کی اور زرین بآ ہیں جوعلم براہجاری اور شوق دلامیک اور اس کا اللہ سے پہال جومرتب اور توگول کی نظرول میں جودرجہ سے اسے طاہر کریں۔

بیکے کوعلم اورعلماری فضیلت تبلانے کے سلسلد میں مرتی کووسائل کی کمی کی شکایت ، ہوگی خواہ ان دسائل کا تعلق وعظے ہو، یا واقعات میٹی کرنے سے ، یا ضرب مشل ہے بیان کرنے سے ، یا اشعار داقوال سعف صالحیین سے استشہاد کرنے ہے ، سرایک میم سے بے شار وسائل موجود ہیں ۔

المنظمة المنظمة المنظمة المنظمة المنطقة المنظمة المنظ بات يا نبى رئيم لى النُدعليه ولم كاكونى معجزه . يا ماريخى قصه ياعلمى صنمون تبلائي*ن، تاكه آپ كى اولاد آپ كى رمنهانى سيمست*فيد مو . س ا *در آیپ کے وعظ ونصیحت سیے متأثر ہو۔* 

اس سلسله مين مم آب كرساحة ايك مثال بيش كرست مين:

مسلمانول میں جب کوئی ایسا دل آئے سس میں کوئی عظیم واقعہ رونما ہو چیکا ہو جیسے مثلا اسار ومعارج والی رات توآپ کو چاہدیے کہ آپ اس روز ا پینے گھرکے لوگول کو جمع کر کے الن سے سامنے مندوجۂ ذیل متعالیّ بیان کریں:

#### ا - اسرارومعاج كاواقعه ايك يا دگارا بدى معجزه بهه:

حبس سے النہ تعالی نے ایک نہایت شکل وقبت اور کھن گھڑی اور تکلیف دہ ایسے موقعہ پر حبب کا فرول سنے آب كوسخت مساسخت منزا ديين كي تدبيرس تنروع كرس تحيير، اوراتب كيدينيا كا درجوت كامقا بدا وراب كي ساتهيول ا ورصحابکومنزا دینا شرم کردی تھی، ایسے موقعہ پرالتٰدتعالی نے اسل ومعارے کے دربعہ ہمارے نبی کریم کی التُدعلیک وم اکرام واعزاز کیا۔

ہجرت سے ایک سال قبل اسار معراج کا واقعہ مواتھا۔ یا بول کہیے کہ یعرست واکرام کا معا ماہیٹ آیا تھا، اور آپ صلی التہ علیہ وسلم کو آسمانوں وزمینول سے ملکوت کا دید*ار کراسنے سے سیے پیسفرمِبارک چین آ*یا تھا۔

#### ۲- امرارومعاج کے معنی کیا ہیں ؟

اساد سے مرادیہ سے کہ نبی کریم کی اللہ علیہ وہلم کا مکہ مکرمہ سے بیت المقدل کی جانب دات کو تپند کھات ہیں بہنچا۔
اوزمعارے سے یہ مراد سے کہ نبی کریم سلی اللہ علیہ وہم کا چند کھات ہیں ساتویں آسمان بحب بہنچ جانا۔
اسراء ومعارے دونول دوج وجم دونول سے ساتھ ہوئے شعے تاکہ ہمار سے علیم دسول سلی اللہ علیہ وہم کا یہ عجز بھی ان
بے شمار معجزول سے ساتھ لکھا جا سے جو آپ سے سیے نبی ہونے سے عقوس ادلہ اور آپ کی رسالت کی سچائی پر کھی ہوئی دلیاں ہیں۔
دلیلیں ہیں۔

-- اس مبارک فریس نبی کریم صلی الته علیه ولم نے ہو مناظر دیجھے۔ ان میں سے اہم مناظر کیا تھے ؟

طبرانی، بخاری، بیبتی اور بزار روایت کرتے بین که نبی کریم علیه الصلاً ق والسلام کا ایک آی قوم پرگزر بوا بوکاشت کریے علیه الصلاً ق و دوبارہ پہلے کی طرح ہوجاتی تقعی ہونی کریم سلی الله علیه سلیم فیصل الله علیه سلیم نے معزت جبریل علیه السلام سے بوجها: یک اقصہ سبے ؟! انہول نے فرایا: یہ الله کے داست میں جہاد کرنے والے میں جن کیلئے ایک سات سوگذ برط صادی جاتی ہے۔ اور وہ جو کھے تھی خرجی کرتے میں تواللہ ان کواس کا بدل وسے دیتا ہے اور وہ بہترین راق سے۔

مچراس سے بعدآب کاگزرایالسیں قوم پر ہوا تن سے سروں کوچٹا نوں سے کچلا جارہا تھا ، جیسے ہی ال سے سرکو کچلا جاآ وہ دوبارہ ویسا ہی ہوجا تا ہیں ایبلے تھا اور ال سے ساتھ اس معاطریں کوئی نری نہیں برتی جارہی تھی ، آب ملی التعظیم کے نے دریافت فرطیا : اسے جبرئیل یہ کیا ہے ؟ ! انہوں نے فرطیا : یہ وہ لوگ جن سے سفرض نمازوں سے بیٹے ہے ہے بیٹوبل تھے۔ بینی انہول نے نماز سے اعراض کیا۔

پھرآپ کاگزرایک کیی قوم سے پاس سے ہوا جن سے جم کے انگے مصول پڑھی پیوند تھے اور پیجھے جھے برکھی وہ اس طرح جررسید تھے بس طرح جو پاسیے جرستے ہیں وہ کا نول واسے جعام اور زقوم اور جہنم سے گرم چھر کھا دسید تھے ، آپ نے پوچیا یہ کون لوگ ہیں؟ انہوں نے فرمایا : یہ وہ لوگ ہیں ہواسینے مال ودولت کی زکاۃ نہیں دیا کرستے ستھے ،التہ سے ان پڑھلی ظلم نہیں کیا ہے اور آپ کارب بندول پڑھلم کرنے والانہیں ہے۔

سپھرآپ کاگزرایک ایس قوم پرسے ہواجن کے سلسنے پکا ہوا گوشت ایک ہائدی ہیں اور کھیا خسداب گوشت ایک ہائدی ہیں اور کھیا خسداب گوشت کھانے سکے اور پکا ہوا تھوٹر دیا، توآپ نے بوجیا ایس دوسری ہائدی ہیں رکھا تھا، اور وہ لوگ وہ نمزاب اور کیا گوشت کھانے سکے اور پکا ہوا تھوٹر دیا، توآپ نے بوجیا اسے جبرئیل یکون لوگ ہیں ؟! انہول نے جواب دیا: یہ آپ کی امت کا وہ فص ہے جب سے پاس ایک انھی ملال عورت نکاح میں ہوتی ہے لیکن وہ کسی فاحشہ عورت سے پاس جا کرمنے تک رات گزار آلہے، اور عورت کا شوہر ہوتا ہے اور وہ اس کے بچائے کسی دوسر سے برکردار خص کے پاس جا کرمنے تک رات گزارتی ہے۔

سیرآب کاگزرایک اسی قوم پرمواجن کی زبانی اور بوزف نوسے کی قینچیول سے کا سے جارسے تھے۔ اور صب بھی ان کو کا ٹا جا آ وہ دوبارہ ولیسے ہی شعبک شھاک ہوجائے، ان کے ساتھ اس سلسلہ میں کوئی نری نہیں برتی جاتی تھی، آپ نے پوچھا اے جبرئیل ، یہ کون ہیں ؟ انہول نے فرمایا کہ یہ فتنہ انگیز تقریم کرنے والے لوگ ہیں۔

ایک اور توم کے پاک سے گزر ہوا بن کے بہونٹ اونٹ سے بونٹول کی طرح تھے اوروہ الگارے کھارہے تھے ہو ان کے نیچے سے نکلتے جارہے تھے آپ نے حضرت جبرئیل سے پوٹھا یہ کون لوگ ہیں ؟ انہول نے کہا: یہ وہ لوگ ہیں جو یتمیول کا مال ظلماً کھا جاتے تھے ۔

ایک قوم سے پاس سے گزرسے جن سے پہلوکا گوشت کاٹ کران کو کھلایا جار ہاتھا، آپ نے حضرت جبریں علیہ السلام سے پوجھا: یرکون لوگ چیں ؟! انہوں نے کہا: یہ دوسروں کا مذاق الرانے والے اور عیب کلنے والے جی ۔
اور اس سے علاوہ اور دوسرے وہ مناظر جونبی کریم صلی التہ علیہ ولم کو اسرار ومعراج کی اُت مشاہرہ کرائے گئے تھے۔
نبی کریم صلی الشرعلیہ ولم سے صبیح روایات ہیں یہ وار دہوا ہے کہ آپ اس مبادک سفریں نبیوں اور رسولول سے ملے سنے سب نے آپ کوسلام کیا اور نوش آمد پر کہا ور آپ صلی الشرعلیہ ولم نے سب سے ساتھ مل کرم براقعنی میں جاعب سے خاذ رابطی تھی۔

ان واقعات ومناظرکوبیان کرسے مرفی پر کرسکتا ہے کہ ان سے نماز کی اہمیت کو تا بت کرسے ، اور جولوگ نماز کے بارے بی سے بی سے بی کرتے ہیں ان سے انجام بداوران کو جو سزا دعذا بہ گا اور ذالت ورسوائی کاسامنا کرنا پڑسے گا اسے وانسے کرے اور نماز اسرار ومعراج کی رات کو اس لیے فرصل کی گئی ہے تاکہ وہ سلمان کی روح کو خشوع وخصوع سے لمحات ہیں آسمان پر لے جائے ، اور مجیروہ وہاں الند کے دیار سے زندگی کا عزم ، اور جہاد کی روح ، اور تقوٰی کاشعور وا حساس عامس کرسے ، اور اس کے دراس کے دریار سے دریار سے دریا ہوئی وہائی طبح ولائے سے نبج جائے ۔

ذریعہ سے سلمان زندگی کے ڈھیلے پن اوٹس ا مارہ کے وساوس اور فانی ونیا کی طبح ولائے سے نبج جائے ۔

بیساکہ مربی ہے بیمی کرسکت ہے کہ زنا اور دوسرول کا نا جائز طریقے سے مال کھانے ، اور غیبت و خیل خوری ، اور

دوسروں کا مذاق اڑانے سے بچائے جس کا طریقہ یہ ہے کہ وہ مبراس برائی پرکھے رق کی افسے جونبی کریم سلی التّٰدعلیہ وم ا پنے اس مبادک سفرسے والیس آنے سے بعد مختلف مناظر دیکھے کر بیان کی تھیں ، تاکدان برائیوں کا انجام بدجان لینے سے بعد پیچے ان برائیوں اورگنا ہوں سے بچیں ۔

# ٧۔ مسجد حرام کا بحب إقصى سے کیا تعلق ہے؟

واکٹر مصطفی سباعی رحمہ النہ اسپنے ایک عنہ وان بی کیستے ہیں در سجد ترام کا مسجد آھئی سے تعلق ایک محترم ومشرف مجد کا دوسری محترم ومشرف جگہ کا دوسری محترم ومشرف جگہ کے سے جنانچہ مکم مکر مرکے رہنے والے تما) روئے ذہین کے سکان سے معزز ومشرف ہیں ۔ اس لیے کہ وہ حضرت ابراہیم علیہ السلام کے زمانے سے کعبہ کے محافظ اور رکھولہ بیس ، اور سجد اقتصی الشہ کے پیغام رسات کا مرکز اور جائے نزول اور تاریخ کے ایک طویل مصے تک انبیا ، کا مرکز اور جائے نزول اور تاریخ کے ایک طویل مصے تک انبیا ، کا مرکز اور جائے نزول اور تاریخ کے ایک طویل مصے تک انبیا ، کا مرکز ومور ہیں الکہ اور میں اس سے ہوایت ماصل کرسے اور تبران ویکٹون ان دونول مسجدول سے روانہ ہول تاکہ گمراہ عالم اس سے ہوایت ماصل کرسے اور تبران ویریشان انسان نیست نور ایمان اور اسلام کے بینیا م سے منور ہو ۔ اسراء کے اس واقعہ کے بعد چندسال نہا ہوت علمت سے گرد گئے ۔ اور بھرس ممانوں نے بادی دفائے بن کر ان کو ان اور معرکو ایک اسپی مملک ند بیں شامل کرلیں جہاں سے شکر کے مشکر کے مشکر اور جنوب وشال میں بھیل گئے تاکہ شام واقع کی دوائوں اور معرکو ایک اسپی مملک ند بیں شامل کرلیں جہاں سے شکر کے مشکر کے مشکر دیا کہ کے اطراف میں فاتھ بن کران کو آزادی دلائیں ۔

ن کا خواب اسرائیل دیکید رہاتھا، یہاں تک کہ وہ در ذاک صورتمال اور گھرای کالنادہ کی جنگ میں آہی گئی اور سبواقعسی اور مسار دمعاری کا شہر تروتازہ شکار کی شکل میں یہ و دکھ قبضہ میں آگیا، اسرائیل اور سبمارسے درمیان نونریز جنگ اب تک یا بیاری ہے۔ اور کھی نہیں کہا جا سکتا کہ آئیست منصوبوں کا کیا جہد نکھے گا اور میپودیوں سے توسیعی منصوبوں کا کیا بہام ہوگا ،

لهذاکیاا مراد کے واقعہ کا راز ہم نے جان ایا ؟ اور کیا اب ہم نے وہ ظیم مقصود تمجھ لیاتب پرینظیم معجزہ وواقعہ مشتمل ہے ؟ »۔

#### ۵ - فلسطين اور تقبوضه سجد كسلسله مين مسلمانول بركيا فرنفيه عائد بوتابيه

در حقیقت یہ ایک نہایت شکل وسخت فرنینہ ہے، بلکہ اللہ کے دربار، تاریخ ، آئدہ آنے والی اور موجودہ قوموں کے سامنے یہ ایک برطمی ذمرداری ہے۔

اس اسرار کے واقعے سے ذریعی رسول اکرم مسلی اللہ علیہ ولم نے ہم مسلمانوں کی گردنوں ہیں ایک عظیم امانت وال دی ہے۔ اور وہ یہ ہے کہ ہم سجد افسان اور اس کے اردگرد کو غدار ہی جو دیت سے پنجوں اور کینہ پرورم ہیونیت سکے دم سے آزاد کو ایس ایس اور میں اور میں اور میں اور میں کا ایک الیسا جزوجے مفاظمت کریں گویا کہ وہ ہما دسے عظیم اسلامی وطن کا ایک الیسا جزوجے مواظمت کریں گویا کہ وہ ہما دسے عظیم اسلامی وطن کا ایک الیسا جزوجی جو میں ہور میں اور جانوں کی بازی لگلتے رہیں تاکہ سرزمین امرار ومعاری کے جہیں ہوسک ، اور ہم مدا فعدت جاری رکھیں اور مرکشوں کی وظالموں کے پنجول سے آزاد کرائیں ۔

ی مسلمانول کوچا ہیے کہ وہ صلح سے ہرایسے مل کو مشکرا دیں حب سے قفیۂ فلسطین کے تصفیہ اوراسائیل سے ساتھ ملح سے پروگرام کی بواتی ہمو خواہ بیمل کھلا ہمویا در پر دہ ، اور خواہ بیمل برا ہِ راست بات جبیت سے ذریعے ہو یا منیوا کا نفرسو سے ذریعے۔

سے درسیے۔ مسلمانوں پریمی لازم ہے کہ وہ ہرائی خص کواپنے دین وطن اور قوم کے ساتھ خیانت کرسنے والاجمیس ہوتھ نے طین کنے تم کرسنے اور کس سے دستبردار ہونے کے دربے ہو۔ ملکہ الیاشخص قیامت تک التّدا ورلوگول اور تاریخ کی لعنت کا مستحق ہوگا۔ اس بیے کہ اس نے اپنے اور اپنے ملک کیکئے نوشی سے ذارت کولپ ندکیا ہے اور اپنے گنا ہمگار ہاتھول سے خیانت کی دستا ویزیر دیخط کیے ہیں .

ی دسادیر بردسته بینی این شخص پایا جائے جوا سرائیل سے ساتھ صلح کی دعوت دسے تومسلمان قومول کو چاہیے کہ خوابِ اوراگر آج کوئی ایں شخص پایا جائے جوا سرائیل سے ساتھ صلح کی دعوت دسے تومسلمان قومول کو چاہیے کہ خوابِ خفلت سے بدار ہوجائیں تاکہ غدر و خیانت سکے تخت کوختم کردیں، اور بھچروہ خودمقدس سرز مین کی آزادی سکے لیے اسلاکا کے جنگے شلے اللّٰداکم رکوشعار بناکر میلی پڑیں ۔ (اسرائیل ختم نہیں گا اور فلسطین آزا دنہیں ہوگا منٹرایسے سیھے بیکے دکوع وسجدہ کرسنے واسے امر بالمعرو مث اور نہی تمرینے واپیے مئومنوں کیے ذریعے جوالٹند کی حدو دگی حفاظیت کریتے ہوں ، ایسے سلمانوں کیے ذریعے جومیدان برنگ میں پاک صاف وبا وضوم ہوکر دخل ہوتے ہوں. یہ وہ لوگ ہیں جن سے سامنے رکوئی تھہرسکتا ہے اور نہ کوئی قوت ان کامقا بلرسکتی ہے یہ وہ لوگ ہیں جن میں اعلان کرسنے والیے نے الٹہ اکبر کانعرہ ملبند کیا ہے اور یہ کہا ہے کہ اسے حبنت کی ہوا تومیل بڑا وراسے

التدكى مدوتو قريب بوجاءاس حاملين قرآن قرآن كريم برعل كريك اسے زينت بخشور

یه وه لوگ بین جواس بات برایمان شیصته بین که وه اگرلوگون کی سرپرستی او رساست عالم کی مدد ونصرت اور حکومتول کی مسا عدست وامداد مسيم محروم ہو جائيں تب مجى الله مبل شانہ ان كے سائتھ سبے الله كارسازي كافى ہے اور وہى مدد كارسب اسی کی نصرت کافی وافی ہے ، اوروہ پرتقین سکھتے ہیں کہ التہ کے مشکران سے ساتھ ہیں ۔ اورالتہ کے نشکروں کی تعدا والتدسکے سوا اورکوئی نہیں جانیا ، بھی وہ لوگ جن کے ذریع فلسلین آزاد ہوگا اور سرزینِ اسال سے میہودی جرتومہ کو اکھاڑ مجدیکا جائے گا ان لوگول کامقصدسوائے الٹہ کے کلمہ کے بلند کرسنے کے اور کچیز ہوگا اور ان کاعنوان صروت اورصرف اسلام ہی ہوگا۔ ان کا شعاریہ موكاكر عبوديت صوف التدك ليه ب اوران كانعره صرف التراكبر موكاً) .

لهذا فلسطین کی آزادی کی جو کوششش تھی ان معانی اور اس شِعار سے خالی ہوگی بخداس سے نتیجہ میں سوائے رسوائی، شكست اورمېزىمىت كے اوركىچىدى بوگا،نىي كرىم عليدالصلاة واللى ارشا د فرماتے يى :

(( لا تزال طائفة من أمتى ظاهرين ميرى امت بن سيدايك جاوت بميشرى برقاتم به

على المحق لا يضرهم من خالفة محتى يأتى يا ب كونقم نابير بنبيات كا وه بوان كالفت كرك المحق المسل الله المحتى المحتى

ہم اللہ سے امیدر کھتے ہیں کہ اللہ اسلام کی سربلندی سے لیے اسی مؤمن جاعتوں کو پداکر وسے گا، جواس طالفہ سے تعلق رکھتی ہول جن کو اللہ نے اپنے دمین کی نصریت اور کلمۂ حق کی سربلندی اور اپنے راستے میں جہا د کے سیے منتخب

. بس اے وہ فص بسنے اسپنے آپ کوالٹر سے سیے نماص کیا ہے۔ اور اسے وہ فعص جس سنے اپنی دنیا کو آخرت کے بدیے میں فرونوت کردیا ہے اور اسے وہ خص جس نے اپنی جان کواس دن سے سیے سستاکردیا ہے جس روز پکائے والايريكادست كرجها دسكے ليسے آجاؤا سے حبنت كى نوشبوؤمه كمو، اسے التُدكى مدد قريب آجا۔

مرني كوچا بيدكه مناسب مالات مي اورسب معي موقعه عله بهيشدارض مقدس كي آزا دي سے بيے جہا دفي مبيل لنه سے مسألہ کو بچوں سے ذہن شین کر تارہے تاکہ بچوں سے نفس میں جہاد کی مجست ببٹیے جائے ۔ اورمسجدا قصٰی کومپرودی جنگل

سه الاحظه فرها كييداستاذ قرضا وى كى كتاب "وروس النكبة" -

۔ آزاد کرانے اور فلسطین کودھوکہ بازیہودیت کے ناپاک قدمول سے آزاد کرانے کا اپنیا درقوم کی ذرد داری ان کے دل میں دائے ہوجائے، ہمیشہ متوجہ کرستے رہنے کا بہت اثر ہوتا ہے اور شقل چکنے والا ایک ایک قطرہ بھی تجھریس سوراخ کو تیا ہے۔ اور اس طرح سے مربی روزان شا کو اپنے بچول کو ایسے امور کی طرف متوجہ کرسکے گاجوان کی اخلاقی اصلاح کے مناسب اور جوان کے معاشرتی واقع سے مرتبط اور ان کی فکری و ایخی ذبن سازی سے تعلق رکھتے ہول۔ مناسب اور جوان کے معاشرتی واقع سے مرتبط اور ان کی فکری و ایخی ذبن سازی سے تعلق رکھتے ہول۔ اور اس سلسلہ میں تفسیر و صدیث کی جدید و قدیم کتب سے استفادہ کرنے کے اقعات اور اسلام کے متنوع نظاموں سے ان کہ بول سے میں مدد لینا چاہے۔ اور مقیقت یہ ہے کرمیدھا راست دکھا نا اللہ جی کا کام ہے۔

#### عاندان اور گھر کی فضامیں انبساط وسرفرر پیالکسنے کی کوششش کیجیے:

ه جس کاطربیتریسی کرآپ بچول میں بامقصد کلمی وثقافتی مقابلے کرائیس جن کامقصد ذری کی تیزی اور بلند مہتی اور ثقافتی لحاظ سے بچنگی اور خاندان وگھر کی فضا ہیں خوشی کی لہر دوٹرا نا ہو۔

ه اورشاندارنکات اور بیارسے نطیفے اور مزسد دارکہانیال سنائیں جن کامقصد نشاط کی تجدیداورنفوس سے آزر دگی ویژمر دگی و تنگ دلی کوختم کرنا ہو۔

ه اورورزش کمیل کود. اورا دبی گفت و شنید، اورمعاشرتی و تاریخی ڈرامے بن کامقصدخون کی گردش کوتیز کرنا اور نواقی بنیا دول کی بنگی اورفکری ذہن سازی ہو۔

مرنی محترم اکس سے قبل آب پرارہ چکے ہیں کہ نبی کریم میں اللہ علیہ وقم معابر کرام کے سرطرح مزاح فراتے تھے، اور ب بحول سے سس طرح دل ملی کرتے تھے، اور آب نے بامقصد مباح کھیل کو کس طرح برقرار دکھا ہے۔ اس لیے آپ بھی نبی کریم اللہ علیہ وقتی وسرور پدا کردیں۔ اور ا پہنے بچول کی نفوس علیہ وقتی کی میردوڑا دیں۔ میں نوشی کی لہردوڑا دیں۔

ا آب یر گوشتش کیجے کرسب کے سب رات کومباری سوما یا کریں۔ اس لیے کردات کو دیرسے سونا صحت کے لیے 😵

ئە مىرى تجويزىكى مىلابق تىنسىرى تىلىمى يەجى : تىنسىرلەن كىثىرا ورىللال اتقران مسىرقىلىپ ك ر

ا و رحدیث کی کتب میں ترغیب وترہیب منذری کی اور ریاض احد تعین نووی کی۔

اورتزکیدُنفس سیستغنق اماً )غزالی کی احیا العلق اورا بنِ قدامه مقدی کی مخترمنها ج اتفاصدین اورمی کسی ک رسالة المسترشدین . , در سب دمی نقام وسیرت میں استاذ بوخی وخسسن الی کی فقدانسسیرة اور است د حبارت کی روح الدین الاسسومی ور ڈاکشسسیری صابح ک

النظم المسسل منيترر

مضرب اوراعصاب كونقصال ببنجاتاب، اورمبع سويه كى بركتول كا قاتل ب، اور فجركى نماز فوت بوسه كا ذراعيه اور اشے بربدان کے دھیلے دیوا ہے اورسست کرنے کا ذراجہ ہے۔ اور حلدی سونا اور حلدی اٹھنایہ دونول دین کی علامت ہیں ،اور نبی

كريم صلى الشعلية وم كاطرابقه اورتعليم سيد.

ریم کا انتہ عیہ وم کا فریعہ اور میم سید.

ملدی سونا اسلام کی نشانی وعلامت اس لیے ہے کہ نبی کریم علی اللہ علیہ وقم نے عشا، کی نما زسے قبل سونے اورعشاء کے بعد یات جیت میں شغول ہونے کو ناپ ندکیا ہے۔ اس لیے کہ امام بخاری مفرت ابو برزہ المی منی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ دسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم عشاء سے قبل سونے اورعشاء کی نما زسے بعد بات جیت کرنے (قصرکہانیوں)

یکن اگرعشام کی نمازے بعدات جدیت می فائدہ مندکا سے بیے ہویااتھی تربیت دسینے یا مفیلتعلیم کی نماطر ہوتو یہ جائز ہے۔ اس بیے کراماً بخاری واحمد صفوت عمرضی الٹرعنہ سے روایت کرستے ہیں کہ انہول نے فرمایا: رسول الٹرصلی التہ علیہ ولم حصرت ابو بجروشی اللہ عنہ سے پاکس رات کوات معرسلمانوں سے معاملات میں سے سی معاملہ کربات چیت کرستے تصے اور نیں ان کے ساتھ ہو گاتھا۔

ربي عشاءكى نما زسكه بعد گھروالول سكے ساتھ بات جييت تويہ مطلقاً جائز بسيسال ليسے كم الم مسلم حضرت ابن عباسس ضی التہ عنہا سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرمایا ہیں نے ایک رات حضرت میمونے ضی التہ عنہا کے گھرگزاری آگرمی مل اکرم سلی التہ علیہ ولم کی رات کی نماز وعبادت کامشا ہرہ کرسکول آل رات نبی کریم سلی التہ علیہ ولم بھی انہی کے یہال تھے وہ فرماتے میں کہ نبی کریم ملی اللہ علیہ ولم نے اپنے گھروالوں کے ساتھ کچھ دیر تک بات چیت کی بھر آپ صلی التہ علیہ وسلم ترام فی اب مع کشریں کا آرام فرا ہو تھئے ...) ۔

لیکن بے کارباتول ، غیبیت اور گنا ہیں رات گزار نا جیسا کہ آج کل لوگ غیبتوں اور پیمویش ک سے مش وگنا ہ سے پر مناظر دیکی مردات گزار تے ہیں تویہ شفقہ طور سے بالکل حرام ہے۔

ر باید کوسیح سوپرسے انتھنا نبی کریم ملی التہ علیہ ولم کی ہڑایات میں سے ہے تووہ اس لیے کہ طبرانی اپنی محالب معجم ا وسط " ين نبى كريم ملى التُدعلية ولم سع روايت كرية بين كراب نع فرايا:

(( مبور لٹ لاُمتحے فی بکورھا)). میری امت کے لیے ان کے دن سے ابتدا کی معے سیں برکٹ رکھ دی گئ ہے۔

وہ اہم امورجن کا مربی کے بیسے جا ننا ضوری ہے ان میں سے ریھی ہے ک<sup>ے ب</sup>یم کونیندا ورراحت کامناسب مصہ لمنا چاہیے تاکر وہ زندگی کے فرائفس ا ور ذمہ دا دلول سے بارکو برداشت کرسکے۔

اورخاص طورسے بیجے سے بارسے میں اس کی صحب اور نیند کا ہست نیال رکھنا چاہیے،اس لیے کہ وہ اس زمانے

میں جہانی وعقبی ونفسیاتی نمو وبڑھوتری کی عمر سے گزررہا ہوتا ہے۔ اس لیے دان ورات میں کم از کم اس کو آطھ تھنے سونا بالبيد ورنداس كاجهم كمزور ولاغرببوجائ كار

ا ورنبی کریم صلی النّدعلیہ وسلم چاشیت کی نما ایکے بعد قبلولہ سے بیے لیٹ جاتے تھے تاکہ دات سے میں جھے ہیں سر آرام ذکرسکے اس کی تلافی ہوجائے انبی کریم ملی اللہ علیہ ولم کی طرف سے امست سے بیے یہ ایک شاندار رسنائی ہے

تاكه والميمح البم اورقوى الهمة اورجاق وجوبندا ورحيت رسبع

۔۔۔ ں، ، ، ۔۔۔ ں، ، ہمہ ا درج ب دیوبد اور سیت رسیعے۔ کی آپ پر کوشش کیجیے کہ نیکے سوسفے سے بل اپنے مال باپ کے پاتھ چوش اور سنون دعا پرط ھے کرسوئیں اور سوستے یہ تا وقت تهجدا ورفجر کی نماز کے ایسے ایسے کے نبیت کر کے سوئیں، تاکہ وہ اپنا روز کا برنامج و پروگرام ا زمرنوٹر فرع کرسکیں. سنست یہ سبے کہ جب آب بستر برجائیں تواسے سی چیز سے جماولیں تاکہ اگر کوئی موذی و تکلیف وہ کیٹرامکورا بوتواتب اس كانشانه بنف <u>سس ب</u>يخ مائين مچربا دضوه بوكرايني دائين كروم بركيشين اوريكهين:

الأَلْحَسُدُ دِلْهِ الَّذِى أَ لَمُعَسَنَا وَسَقَانَا تَمُ تَعِينِينِ اسَ التَّرِيمَ لِيعِينِ بَسِن يَعِينِ مَلايا اور وَحَكَفَانًا وَآوَاتَ فَكُهُمِمِنَ لَأَكُافِي كُ وُكُا مُسؤُوحَك).

پلیا ورکفایت کی اور شمکار دیا .اس کیے کربہتے ہے ایسے لوگ بیں جن کا ذکوئی کفا بہت کرنے والسہتے خطفکا ز

بهرآية الكرسى يرسيسي اوراسين دونول بإنهول بريميو كي بمجرقل بوالتداحدا ورقل اعوذ برب الفلق اورقل اعوذ برب النائس بإهر ما تصول برمچو تکید بهربیم سے سے مصد برچیر کیس مجیریں اس طرح تین مرتب سیمیے (میمی مخاری دم)۔ عِيمَيْنتيس مرتبه سجان التُدرِدِ مي اورتينتيس مرتبه الحمدلة د. اورمينتيس مرتبه التُداكبريرٌ معيد (صحيح سلم). ميمرآب اينا دايال باته رخمارك ينج مكر بركيد:

الراكشهكم قِنِف عَدَابك يُوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ » نوت مرت (جامع ترمذى) اور اخیریں تھریہ دعا پڑھیے :

((باسْمِكَ اللَّهُمَّ أَحُبِيَ وَأَمْوُتَ)). صيح بخارى وم لا بِالْسِيكَ رَئِبِ وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ أَرُفَعُهُ إِنُ أَمُسَّلُتَ لَفُرِى فَ رُحَمُهَا وَإِنُ أَرْسَلُتُهَا فناخفظات يستتحفظ يبه

اسے التد مجھے ابینے عذاب سے اس روز بچا یہے گاتب روزآب اینے بندول کواٹھائیں گے۔ سین مرتبہ اے رفیں

اسدالله يس آب سي الم سدنده بوا بول اورمرا بول اے میرے رہیں نے آپ کا نام لے کراپنے پہنوکو ر کھا ہے۔ اور آپ کانا کے کربی است اٹھاؤل کا اگرآپ اس کوروک لیس تواس بریم فرایت گاا در اگرآپ اس کودبس

عبَادَكَ الصَّالِحِينَ.) .

صيمح بخارى دم

﴿ اَللَّهُمَّ رَبَّ التَّحَاوَاتِ وَرَبَّ الْأَرُونِ وَدَبَ الْعَرُشِ الْعَظِيْمِ، وَدَبَّ كُلِ شَيْءٍ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى، مُنْزِلَ التَّوُرَاءِ وَالْإِنْجِيُلِ وَالْقُرُولَٰ ، أَعُودُ بِكَ مِنْشَرِكُلِ دَابَاةٍ أَنْتَ ٱخِدْ بِنَا جِيَتِهِكَ » . صحيح مع وفيرو ﴿ اللَّهُ مُ كَانَّتُ الدُّ قُلْ فَلَيْسَ قَلْ لَكِنَ لَكُ شَيْئٌ \* وَأَنْتَ الآخِرُ فَلَيْنَ مَعْدَ لِيَ شَيُّ ، وَأَنْتَ الطَّاحِرُ فِلْكُيْسَ فَوْعَ لَيَ شَيُّئُ وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَكَشِنَ دُونَ لَيَ الْبَاشِيْ إقضى عَنَّاالدُّئِنَ وَأَغُنِنَامِرٍ ﴿ (( اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْلَمُتُ لَفُسِى إِلَيْكَ، وَوَجَّهُتُ وَيُجِلِىٰ إِلَيْكَ، وَفَوَحْسَتُ أَمُرِى إِلَيْكَ، وَأَلْحَانُتُ لَمُهُ رِئَى إِلَيْكَ دَغُبَةً وَّدَهُبَدَّةً إِيُّكَ ، لَا مَلْجَأُولًا مَنْجَأُ مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ آمَنُتُ بِكَتَابِكَ الْلِهِ لِحِسْب أَنُـزَلُتَ ، وَبِنَبِيُّكَ الَّـذِي أرْسَلُتَ».

صحيح بخارى وسلم

مبيجين توآب اس ك اس طرح حفاظت فرطيق گاجس طرح، پ الين نيك بندول كى عفا فلت فراست مين.

اسعالتٰد آسمانوں اور زین کے رب اور عظیم عرش كدرب اورم رجيز كرب، دانه الحمع لى كم معا وفي وال تودات اورانمیل سے نازل کرنے والے میں آپ سے ذراعیہ سے بناہ مانگآ ہوں براس بویا ہے سے ترسے بس ک بیشانی کوآب بچرشنه واسه میل ر

ے اللہ آپ بی اوّل بی آپ سے پیلے کوئی چنرنبی تھی اور آ ب بی آخریں آپ کے بعد کونی چیز نبیں رہے گی ، اور آپ بی اللهرد غالب بي آپ سے أور كوئى منبين ، اور آپ بى باطن بي آب سے ورسے کو تی برنبیں ہے آپ جارے قرضہ کو اداکر دیں اور مِیں فقرو فاقرہے بحالیں۔

اے اللہ میں نے اپی نغس کوآپ کے سپرد کردیا ہے ا در میں نے اپنے چہرے کوآپ کی طرف متوجہ کر دیا ہ اور اینے معاملہ کو آپ سے سپرد کردیا ہے، اورس نے این پشت آب کی فرف جمکادی ہے، آپ کی فرف رغبت اورآپ سے حوف کی وج سے ، آپ کے سوا نه کوئی المجأ سب نرنجات دسینے دالا، میں آپ ک اسس كتب برايان لايابون جوآب في نازل فروانك و

ام بی برحن کوآپ سے بھیجا ہیے۔

مهریہ نیت کرکے سومائیں کتہجدا در فجر کی نمازے لیے اٹھنا ہے. اور آپ دیکھے لیجھے گاکہ خدانے چاہا تو آپ کی انکمه ضرور کھل جا کے گی۔ اور اگرآپ کو بینے خوانی ہوجائے اور نیندنہ آئے توآپ مندرجۂ ذیل دعا پڑھیں انشاراللہ آت کونیندآجا سُنےگدامام ترمذی مصریت بریده دخی النّہ عنہ سے روایت کرستے ہیں کدانہول نے فروایا : مصرت خالدین ولید مخذومی دنسی الندعندسف دسول اکرم صلی الندعلیه ولم سے شکایت کی اور عوش کیا: اسے الند کے رسول میں راست کو بینوالی

کی و حب سے سوبہیں یا تاہول ، تونب کریم صلی الٹہ علیہ وسلم نے ان سے فروایا کہ حبب کم ا پنے بستر دِرجا وُ توبہ دعا. پڑھا کرو :

سن سے القد اسے ساتوں آسانوں اور جن پر وہ سایے مگن جی ان کے دب، اور اسے زمینوں اور جن کو انہوں نے اشیا کے دب، اور اسے زمینوں اور جن کو انہوں نے دکھا ہے ان کے دب، اور شیطانوں اور جن کو انہوں نے دکھا ہے ان کے دب، اور شیطانوں اور جن کو انہوں نے دکھا ہے ان کے دب، اپنی تمام محلوق کے شریعے کے دکھے پران میں سے کہ کے ایسے کے درجہ پران میں سے کوئی زیادتی یا ابنا وت کرسے، آپ کا پڑوی عزت وار ہوا، اور کے ایسے برای حمد دثن، والے بیں اور آپ کے سواکوئی معبود

الرَّالَهُ مُّ رَبِّ الشَّمَا وَاتِ السَّبِعِ وَمَا أَظَلَّتُ وَرَبَّ الشَّمَا وَاتِ السَّبِعِ وَمَا أَظَلَّتُ وَرَبَّ الشَّطِيرِهِ وَرَبَّ الشَّطِيرِهِ وَمَا أَقَسَّتُ ، وَرَبَّ الشَّطِيرِهِ وَمَا أَقَسَّتُ ، وَرَبَّ الشَّطِيرِةِ وَمَا أَخَلَقَ مَ مَنِيعًا أَنَ يَفَرُطَ مَسَيِّ خَلُقِ مُ جَمِيعًا أَنَ يَفُرُطَ مَسَرِّ خَلُقِ مُ مَنِيعًا أَنَ يَفُرُطَ مَسَلِّ خَلُقَ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ

نہیں ہے۔

مربی محترم اکب نے مشاہدہ کرایا کہ دن ورات کے اس تربیتی نظام نے ذکر وعباوت اور آواب اسلامی کوجم کولیا ہے۔ اور ربائی وتربیت کے مصوص پیلوں کا بہت اہمام کیا ہے۔ لہٰذااگر آب اس برمداومت کریں گے اور اس کی ملی طبیق دیتے رہی گے توجراس میں کو گئی شنہیں کہ آپ کی اولاد مہار وسن اضلاق پرنشون کما پائے گی ، اور تدریح ایسا کا مل وکل مسیط حقی ہے۔ اور اس کی ملی طبیعی کی بریوضتی دسہے گی ، اور آپ کا بچرا کی ایسا کا مل وکل مسوانی انسان بن جائے گا جو اللہ سے ظاہر گھی فررسے گا اور پوشیدہ تھی ۔ اور دہن ہن اور اسٹھنے بیسے تنسی اللہ کو جانس و ناظر سیمے گا ، اور آ قاممت وسفر دونوں حالتوں میں اسلامی آواب و توامد کا الترزام کرے گا جو اللہ اپنول کا کہ ایسان بحول کے لیے جو اس کے ساتھ اور اور محد میں اسور میں ایک اچھانمونہ اور معاملات اور عملی تطبیق میں اسورہ صند ہے گا ۔ اس لیے اسے مربی محترم آپ کوشش کیجے کہ ہلاکسی تنگ کی اور سستی دکا ہی کے آپ ان پرعمل ہیا ہوں تاکہ آپ اسپنے بچے اس مربی محترم آپ کوشش کیجے کہ ہلاکسی تنگ کی اور سستی دکا جمیم شکل نہیں ہے۔

### ليكن أب كوطيبي كرآب النظام بين منديم ولي امور كاخيال وي:

۱- آپ اپنے پیے کی سے وشا) اور دیگرا وقات میں رہنائی کرنے ہیں ان چیزول کی تطبیق دسینے کی کوشش کریں ہو "بیے کی تربیت کے تربیت کی ذمر داری "کی فصلول میں مذکور ہیں۔
۲- یہ تربیتی نظام ان بچول سکے لیے مناسب ہے ہوشعور کی عمر کو پہنچے چکے ہول یا اس سے کچھ زیادہ عمر کے ہول میکن ہو پہنے دس سال کی عمر سے کم سے مول تومر تی کو چا ہیں کہ ان سکے ساتھ تربیت کا دومرا نظام افتیار کرسے میں کا فلاصہ

دوجیزول میں ہے:

الف - ان کواسلامی عقائمکی بنیا دی باتیں اور عبادت سے ارکان خصوصًا نماز کی تعلیم دیں ۔

ب سالامی اخلاق کے بنیا دی اصول کی ان کو تقین کریں کہ وہ سچائی ، امانت ، اور والدین کے ساتھ سن سلوک کو اختیار کریں ، اور یہ تبال کی کہ جات ہے۔ ان کو حبوط، خیانت : مافراتی ۔

اختیار کریں ، اور یہ تبلائیں کہ بات ہیں ہے سے ایس ایسے انفاظ سے پابند دہیں ، ساتھ ہی آپ ان کو حبوط، خیانت : مافراتی میں اسلام یہ سر بری ۔ اور گالم گلوچ سے بیجنے کی تبنیہ کریں۔

البحول كى تربيت كايه دومرانظام بنيا دى طورىيال اصول كرساته ملتا بيد جودسول اكرم صلى التُدعلية ولم في مندرجهُ

ذیل فرمان مبارک میں مقرر کمیا ہے:

ہم انبیاء ک جاعت کوسے کم دیا گیاہے کہ ہم ہوگول سے ، ن ئى عقى كەمھابق گفتگوكرىي ـ

(( أصرنا معاشرالاً نبيد أن نعدث الناس

على قدىرعقولىلم) . منددلي

سو۔ روزانہ سے نظام میں ایک حصہ اس سے لیے بھی مخصوص کریں کہ اس میں آپ ان سے یہ دریافت کریں کہ وہ کیا برطھ ا ورسیکھ رہے ہیں بھیراگر آپ یہ دیجھیں کہ جو تعلیم و تربیت وہ مدرسے ہیں حاصل کر رسیمیں وہ اسلامی عقیدے اواسلامی آداب داخلاق کے خلاف ہے، تو تھے آپ کو چاہیے کہ ان کے افکاروخیالات کی اصلاح کریں ، اور انہیں برسے اور کمراہ اسا تذه وللمين سنه بچائيں ، اور دولوگ اسلام كے خلاف زہراگل رسبے ہيں اور فاصلانہ تربيت وسينے ميں نحيانت كے مزكب ہور ہے ہیں اور بچول کو گمرا ہی والحاد سے جال میں بھانس رہے ہیں ان سے خلاف مناسب کا روائی کریں۔

یه . آپ ہمیشہ ایسنے بچول کو انورت ومجبت اور تعاون واثیار سکے بنیا دی اصولول سے روشنا*س کر بے زیبی ،* تاکہب وه بر*لایے ب*ول توالیں ہیں مجست ورحم ان کی عادت وطبیعت بن جائے اوروالدین کی فرانبرداری اوران سے ساتھ ن سلوک نوشی ورصنا مندی سیسے کرسنے تکین، ملکہ ہانمی الفت ومجستِ اورحسنِ سلوک میں ان کوآپِ اعلیٰ ترین مثال ہائیں ۔ ۵۔ آپ جب بھی مناسب موقعہ پائیں توان کوتفریح سے بیے کی باغ یاسمندسے کنا رسے لے مبائیں اور آپ اس تربیتی حق میں ہرگزیمی کوتا ہی زکریں ، تاکہ ان سے جیم چاق ویچوبندا ورنفوس پُرنشاط رہیں ،اورریا صنت وورزش اور تیرنااور کھیں وغیرہ جوان سے رہ گیاہے اس کا تدارک کرلیں ۔

ہ ۔ جن دنول سےے دوزسے رکھنا ٹرعًامسنون ہیں ان دنول سے روزسے اسپنے بیوی بچول کے ساتھ دکھیں ، تاکیب ا فيطار سيه سيسة ب اوروه ايك دستر نوان پينهيس تووه آپ سيد بشاشت وخنده پينيانی وزم مزاجی كامشا به ه كريل. تاكه آب سے اس ایجھے نموز اور اعلیٰ اخلاق اور مبترین اسلوب کو دیکھ کروہ بھی اس سے عادی بنیں۔

، ۔ اس میں بھی کوئی مضالقة نہیں کہ آب اسپنے بچو*ل سے ساتھ تحفہ وہدایا کاطریقی*ہ اختیار کریں ۔ اوروہ مال یا ضرورت کی بین جیزدِل کی فرائٹش کریں آپ اسسے پورا کریں ،اور الٹد تعالیٰ ایسے باہی*پ پر رحم کریسے ج*واپنی اولاد کے سنِ سلوک کرنے ہر ان کی اعانت وامداد کرسے ،اورآپ پریہ بات قلعاً مخفی زہوگی کڑجادت پرالتزام ،اورمحنت کرسے یاامتحال ہیں کامیا بی پر ہے وتحفذوغیرہ سے ہمت افزائی کرنے کا بچہ پر ہمیت اتر ہڑتا ہے ۔

یہ وہ اہم تجاویز ہیں ہومیری رائے میں ون ورات سے تربتی نظام میں آپ کو مدِنظر رکھنا چا ہیں ،اس لیے اسے مربی محترم اآپ کوان کی تطبیق کی گوششش کرنا چا ہیے، تاکہ آپ بچول کی اس طرح سے تربیت کرسکیں جس کااسل آپ سے مطالبہ کرتا ہے۔ اور وہ آپ کی ذمر داری بھی ہے ،اور حقیقت یہ ہے کہ اللہ ہی توفیق وینے والا ہے۔ اسے مطالبہ کرتا ہے۔ اللہ جسے ہوبات سفتے ہیں اور اس ہیں سے ایمی باتول پڑھل کرتے ہیں اور ہمیں اسے فلیم سلطنت ونصرت ، اور مضبوط عزم اور قوی ادا دہ عطا فرائے آپ ہی ہترین امید گاہیں ۔ ایسے پاس سے فلیم سلطنت ونصرت ، اور مضبوط عزم اور قوی ادا دہ عطا فرائے آپ ہی ہترین امید گاہیں ۔

ميرے خيال ميں يه وسأل مندرج ذبل امور مي مركوزي ،

# ا۔ پیول کے لیے ایک الگ کتب نے مرتب کر ناجی میں مذرجہ ذیل قسم کی کتب موجود مہول: الف ۔ گھر کے ہرفرد و بچہ کے لیے کہ ایک خوبھورت واضح کامات واعزاب اللالگ الگ قرآن کرم کامونا۔ ب ۔ چھوٹی سور تول کی اسی تفسیر ہوجوس شعور کی عمر کے بچول کے ذہن فہم کے مطابق ہو۔ ج - قرآن کرم کی اسی تفسیر یوس شعور سے بوئی عمر کے لوگول کے ذہن فہم کے مطابق ہو۔ ک - احادیث ببارکہ سے علق اسی تا ہیں ہو بچول کی عمر علم فہم کے معیار کے مطابق ہوں ۔ کا - فقد اور فصوصاً عبادات سے علق اسی تا ہیں ہو بچول کی عمر سمجھ والم کے معیار کے مطابق ہوں ۔ ک - اسلامی عقیدہ سے علق اسی تا ہیں ہو موضوع کو قصہ یا سوال ہواب کے انداز برص کریں ۔ ف اسلامی عقیدہ سے علق اسی تا ہیں ہو موضوع کو قصہ یا سوال ہواب کے انداز برص کریں ۔ ف سیر سب نبوریا ور تا ریخ سے علق اسی تا ہیں جن ہیں اس موضوع پر پیارسے انداز اورآسان سی واضح زبان ہی فر

قلم اٹھایاگیا ہو۔ سے ۔ ایسی محزائگیز عمومی کما ہیں ہوئجوں کی عقل فہم سے مناسب و مطابق ہوں جن میں یہ ظاہر کما گیا ہو کہ اسلام ایک جا مے دمکمل اور بوری زندگی برمحیط نظام ہے۔ اوران اعتراضات دشہہات کو دور کیاگیا ہو جواسلام سے دمن اسلام کے خلاف

بھاس*تے ہیں*۔

کھ ۔ علمی، تاریخی، ادبی طبی ایک تابیں بو بخول کی سمجھ سے مطابق برول اوران کے معیار علم اور عمر سکے دائر سے سے باسرية بهول .

مرتی محترم! آب سے سامنے نمونہ سے لیے بیض وہ کتابیں ذکر کی جاتی ہیں جو آپ کے بچول کے لیے آپ کے گھر یں موجود ہونا چاہییں ، تاکہ آب ان کوخرید سکیں۔ اور بچول سے منتقبل سے لیے ذخیرہ و مدد گار ثابت ہول مرکماب کے ساتھ فس عمرے بیچے کے لیے وہ مناسب اس کا بھی تذکرہ کردیا گیا ہے، اور حقیقت یہ سے کہ اللہ ہی سیدھی راه د کھانے والا ہے :

ا- مسلمان سل كم ليه كما بول كاليك مم وعرجه اساذ يوسف العظم في مرتب كياب حبس كة محت بير حمّاين شائع ہومکی ہيں :

ا - براغم الإسلام (إسلام ك شكوف) تسم اول عقيده سي علق .

٢- براغم الإسلام فسم ثاني زند في سيتعلق.

٣- اناشيرواً غاريدللجيل المسلم ( مسلمان معاشرك كيداشعاروهميس).

٧ - أدعية وآداب للجيل المهلم المسلمان معاشرك كيديد وعالي اورآداب،

٥ - مشابد وآيات للجيل أسلم أمسلم معاشره سم سياط وآيات،

عمر: ، سے ۱۲ سال تک

٧ - مكتبة الطفل الدينيبة ٢٠٠١ قصه مؤلفه استأذم محرع طية الأبرائشي كتيه مصر

عمر: ، سے ۱۲ سال تک

مؤلفه استناذع دالحميد جودت انسحار مكتبه مصر

عمر و ١٢ سے ١٤ سال نک

سلسله فقسف الأنبيا عليهم السبلام سؤلفه استاذعبدالحميد جودت السحار بمكتبه مصر عمر: ۱۲ سے ۱۹ سال تک

مؤلفه استا وعبالحميد ببودت انسحار مكتبهمصر

عمر: ١٢ سے ١٩ سال تک

مؤلغه استناذ عبدالحميد جودت السحار مكتبهمصر ٧ - مجموعه السيرة النبوية

عمر: 11 سے 14 سال یک

ے - سلسلہ (الفدائيون في الإسلام) مؤلفہ استاذمحم على قطب دارالوراقة حمص عمر: ۱۲ سے ۱۹ سال تک م سلسله مسلمات خالدات مؤلفه استاذ محمرعلی قطب ا کمکتبته العصری بیروت ، صیدا عمر: ۱۲ سے ۱۹ سال تک 9 - سلسله غزوات النبي صلى الشعلية فيم مؤلفه استأذ محمل قطب المكتبة العصرية بيرست صيدا عمر: ۱۲ سے ۱۹ سال تک ١٠- سلسله القصص الديني مؤلفه واكثر محدروات قلعه جي طبع ملب عمر: ۱۲ ہے ۱۹ سال تک اا - محموعه أمهاست المؤمنين ١٤ عدد مؤلفه اشاذ محداحمد برانق دارالمعارف مصر عمر: ۱۲ سے سولہ سال تک کی لڑکیوں کے لیے ۱۱- مجموعة صص النبيين مؤلف استاذ الوائس الندوى مُحسسة الرسالة عمر: ١٢ ــے سوله سال تک ساد - قصص القرآن الكريم مؤلفه استاذ محد كامل الحسن المحام المكتب العالمي للطباعة والنشه عمر: ۱۲ سے سولہ سال تک ١٥١- سلسله أعلى المين مختلف مؤلفين كاتحريركرده مكتبدالمنار الاسلامير الكويت عمر: ۱۲ سے ۱۹ سال تک ١٥- سلسله الأبطال ٨٠ عدد مؤلفه استاد محمُّعلى قطب ومحمر الداعوق المكتبة العربيه بيرت عمر: ۱۲ سے ۱۹ سال یک ١٦- اناشيدالبراغم المؤمنة مؤلف شاعرمحمود أبوالوفا مؤسسسة الأقصى عمال عمر: ١٠ سال سے ١١ سال تک ١٤ - الخالدون مؤلف استاذمحرعلى قطب التجارية المتحدة بيروت عمر: ۱۵ سال اوراس سے زیادہ ۱۱ به أبطال ومعارك مؤلفه استناذ عبدالوهاب قاتم وأحمدالدعاكس مكتبةالبرلإل ممص عمر ، 10 سال اوراس سے نیادہ

 ١٩ ـ السلسلة الجامعة المختارة سؤلفه استناذ محد نبهان خباز مكتبة الغزالى حماه مجموعه أفسن التقسم عمر: ۱۵ سال اور اس سے زیادہ ۱- مجموعہ آفسن التقسم مؤلفہ استاذعلی فکری دارالکتب العالمیة بیروت عمر: ١٥ سال اوراس سے زیادہ ٢- سلسله قصص اسلامية مؤلف استادعبالرظنَ البنا مكتبه المناد الإسلاميس، الكويت عمر: 10 سال اوراس سے زیادہ ٢١. محموعه السيرة النبوير (الكبيرة) مؤلف استاذ عبدالحميد جودت السحار مكتبرمصر عمر: ١٥ سال اوراس سے زیادہ ۲۳ قصص فی البّاریخ مؤلفه استاذ محدّن حمصی دارالرسشید مشق عمر: ١٥ سال اور اس سے زیادہ ٢٨ - قصص الأستاذ نجيب الكيلاني دارا النفائس بيروت عمر: ١٥ سال اور اس سے زیادہ ٢٥ محموعه سير إسلاميه مؤلفه استاد محدعلی دولة داراتقلم مشق سيروت عمر : 10 سال اوراک سے زیادہ ۲۶۔ مشاہیرقادۃ الاسلام مؤلفہ استاذ بہام انعلی وارالنفائسس ہیروہت عمر : ١٥ سال اوراس سے زيادہ ٢٠ قصص وحكايات مؤلفه استاذ محمطى دوكة داراتقلم وشق سيروت عمر: 10 سال وال سے زیادہ وارائسلام حلب ۲۸- نشیدنا مؤلفه ابوالجود و فرقته زمنی تربیت كرسف والى كتب درج زل بين: ا - سلسله "من حدى الإسسالم" مخلف فتم كى توجيبى وتربيتى ابحاث جن كيم مؤلف مرث رتينح مكتبية الهذي ملب حول القلعة احمد عنرالدين البيانوني ميں ۔ عمر: ١٥ سال و آس سے زيادہ ٢ - سلسلة العقائد" و"العبادات "للمرحوم المرخدالشيخ احمدعزالدين البيانوني مكتبة البيكي حلب حول القلعة

عمر: 10 سال واسس سے زیادہ

۳۔ سلسلہ "ابحاث فی القمة " مخلف تیم کی دینی ابحاث جن کے لکھنے والے مختلف حضرات ہیں جن کے سررہ واکٹر محد سعید رمضان البوطی ہیں ۔ کتبہ الفارا بی وشق عمر ؛ ۱۵ سال واسس سے زیادہ معر : سلسلہ "کتے قیمتے " مؤتہ: قسم کی در رہی دینی وزیری اس نے مزتہ: وال قلہ سریش ا

۵ ۔ سلسلہ "بحوث السلامیۃ ہامۃ" مخلف اہل علم حُضائت کے قلم سے بن کے سربراہ اس کتاب کے مؤلف کے مربراہ اس کتاب کے مؤلف میں دارال ام حلب عمر: ۱۵ سال وال سے زیادہ مرع میں سرمہ مندوم سرم میں مرد میں مرد میں ماد میں مادی ما قلم یہ زمان م

مموعی طورسے اسلامی نظام سے بحث کرسنے والے شہور مؤلفین والی قلم درج ذلی میں :

- مجموعه رسائل أمشه بيد حسن البنائي

٢ - الاستاذ سيد قطبُ

٣ - الاستاذم محدقطب.

مم - الاستاذ الواسن الندوى ـ

۵ الاستاذعلى الطنطاوي.

٠ ـ الاساذنتي بكين ـ

٤ - الاساد سعيد حوى ـ

۸ - الدكتورمحدسعيدرمضاك البوطى -

و - الاستاذ يوسف أعظم.

۱۰ - الاستازمتوکی شعراوی به

مرتی محترم! آب اس سلسکه مین سمجه ارابل علم اور دعوت واصلاح کے مخلص علمبروارول سے بھی رہنائی مال کریے ہیں، تاکہ وہ ان کتب کی طف نشاند ہی کریں جو بیکے کی عقل و بھے اور عمر وعلم سے مناسب ہول اور ساتھ ہی اسلام نے زندگی . عالم . اور انسان سے علق جو نظریہ پیشن کیلیے وہ کتب اس سے متصاوم بھی نہوں ۔

ایک اور بات کی طرف اشارہ کرنا بھی مناسب علوم ہوتا ہے اور وہ یہ کہ اسلامی کتب خاندان فکری و توجیہی اور کی اور بہت کی طرف اشارہ کرنا بھی مناسب علوم ہوتا ہے اور وہ یہ کہ اسلامی کتب خان اور مجھے اب کا سے بارہ سال تک کی عمر کے بچول سے مناسب ہول . اور مجھے اب کا اس عمر کے بچول سے مناسب ہول . اور مجھے اب کا اس عمر کے بچول سے بارہ سال میں بیت سوائے استاذ یوسف غلم سے جنہ بول سے سلسلام" راحم الإسلام" کو نہایت آسان اسلوب اور سہل زبان میں بیشیں کیا ہے۔

میں سلمان اربابِ قلم کوقلم تیزکرنے اور بہت بلندکرنے کی دعوت دیتا بول تاکہ وہ اسلامی کتب فانے کو اسی ملمی کا کی اور رہاکتا ہول سے بھردیں جو بچول سے سامنے اسلام سے عالم ، زندگی ، اور انسان سے علق کا مل نقط دُنظرکو واضح کریں اور اسلام سے محیط عظیم نظام کا بیچے اسلامی تصور مبیش کریں ۔

### ۲ - مفته واری یا مام واری رسالول کاخست ریدار بننا:

اس پرسچ ورسائے کی درج ذیل خصوصبیات موناچامیس:

الف - وه پرحبه است اسلامی نقط دنظرا و مکمی بحث می معروف مو

ب ۔ اس کی تحریرات سے زیغ وانحراف مذچھ لکتا ہو۔

ے - وہ ایسے موضوعات برکام کرتا ہو ہوعور تول و مردول کے معیار کے مقلف ہونے کے باوجود دونول سے تعلق رکھتے ہوں ۔ تعلق رکھتے ہوں یہ

اس میں اسی تصویری شائع نه ہوتی ہوں جوافلاق وشرافت سے منافی ہولی۔

كا - ال ميں ايسے مفاين نرچينية بول بن بيں اسلام كے خلاف وسيسه كارى كى تى ہو۔

اس ليے اگرسى پرسچے كواك معيار كا بائيں تواسے گھرلاسكتے اور بچول اور پيول كوپڑستے كے اسے سكتے ہيں . اس قسم كے مفيدرسالول ہيں سے چيند درج ذبل ہيں :

"العضارة" شأم كا.اورالمجتمع" اور"الوعى الاسلامي كويت كے. اور" البعث الاسلامي" اندُيا كا ،اور" الدعوة" اور "الاعتصام" اور" الدعن الاسلامي " الاعتصام" اور "الاعتصام" اور "الازمر" مصركے . اور اس جيسے دوسرے اور برسچے جوعالم السلامي بيں شائع ہوستے رہتے ہيں (جيسے اُردو بيں پاکستان کے ماہنامہ بينات ،البلاغ ،الحق ،الفاروق وغيرہ)۔

سر۔ تخیلاتی مناظراو رفلموں سے ذریعہ فائدہ اطھانا:

تقافتی تعلیمی ان مفیدوسائل واسباب بین سے جو پیھے سے معیار کو بڑھاتے اور اس کی ثقافت کو شکم کر سے بی مربی کا گھری تغیلاتی مناظر وغیرو پرشتمل ایسی فلمیں دکھانا شامل ہے جن میں علمی مقائق اور ٹاریخی کارنامول اور صغرافیائی مواقع اور تربیتی راہ نما اصول بیٹیس کے گئے ہوں۔

جه بچه حبب خود اپنی آنکھول سے ملمی و تاریخی مقائق کاتفیقی روپ میں تحرک ورداضح صورتوں کی سکل میں مشاہرہ کرملہے تواس وقت وہ کتنا نومشن اور متنبہ و بدارا وربر از کہیف ونشا طربو تاہیے۔

لے یہ صاحب کتاب کی لئے ہے ور پخفتین مسینا ، تعبیش، وی سسی آر وغیرہ سب کونا جائز قراردیتے ہیں جُناہ ہرصورت میں گناہ ہی رہاہے نواہ آل سے مفصد کمچیم ہو

وہ تعلیمی بحث بچھے سے ذہن میں اس صورت میں کس قدر رائخ ہو جاتی ہے حبب وہ تلاّ جے سے مناسک کوشیقی رہ پ میں اپنی آنھوں سے دیکھ لیتا ہے کہ اس عبادت کو ٹروع سے اخیر تک اس طرح سے ان ان مقامات برا داکیا جائیگا اور اس طرح ان مناسک جج میں سے ہر عبادت کو وہ آل طرح مشاہرہ کرلیتا ہے کو یا کہ وہ وہیں موجود ہے اوریہ تصویر نہیں بلکہ ایک واقعی حقیقت ہے۔

کی بچہ اس وقت کس قدر نوٹوش ہوتا ہے جب وہ فلم کے ذراید اسلامی منکومتول اور ممالک کا مشاہرہ کرتا ہے بیس سے ان ممالک کا مشاہرہ کرتا ہے بیس سے ان ممالک ہے ایمانی جنہ اس بی استے ہیں اور اس کا صاحت تعالی ان کی طرف شمال ہوتا ہے اس لیے کہ ان ممالک اور اس بیجے سے درمیان عقیدہ کا اتحا دا وراسلامی انوت کا را بعد ہے۔

کی بچه جب علمی حقائق کوشیلیورنی ان کی اسکرین پراس طرح حقیقی را ب بین دیمیتا ہے گویاکہ وہ اس کے سامنے ہور ہا ہو تو اس وقت وہ اس کوکس قدر محفوظ کرلیتا ہے۔

اورمیراخیال ہے کہ یہ وسیلہ ان مفید و بڑے و سائل میں سے ایک ہے جو بیجے کی تعلیمی و نقافتی معیار کو لبند کرتا ہے اوران کو بیچے کے ذہن میں لاسخ کر دیتا ہے اور اس کے دل میں ان کی محبت بپدا کردیتا ہے۔

اس لیے مرقی کوچا ہیے کہ ان کی تیاری وصول کی مستقل کوشش کرتا یہ بے نواہ ان کو خرید ہے یا کرایر پر سے لیے یا عاریة کے کراس سے استفادہ کرہے۔

ایک بات کی طرف توجه دینا بهبت مذوری بیدی توبوگ اسلامی موضوعات پرکام کریسبے بیں انہیں چاہیے کہ وہ اس آبا کی پوری کوشش کریں کہ ایک ایسی کمپنی و توجہ دیس آئے تو ایسی علمی و تاریخی و تعبر افیائی و تربیتی فلمیس تیار کرسے تو بچول کی عمر وقتل کے مناسب ہول ، تاکہ وہ ہرگھر اور محلے وشہر یس پنجیبی اور ہاتھ ول ہاتھ لی جائیں ، اوریہ بات کوئی و حکی جیبی نہیں ہے کہ ان فلمول کا پیچے کی تعلیم اورخاندان کی ترقی و تقافت اور معاشرے کی اصلاح ہیں بہبت بڑا ہاتھ ہے۔

(مترجم كہتا ہے كہ ہما رے علما، وفقہا، كى اس بارے بن قطعی لئے يہ ہے كہ تصاویر د كيھناا وربنانا دونول ناجائز اورگناه ہيں اس ليے ان كونواكسى هي مقصد كے ليے استعال كياجا ئے يرگناه كناه ہى يہ ہے گا (دو إنها أكبرن نفعها)، ان كا نقصان فائدے سے نياده ہيں اور وى كى آرسولئے فلی بغذبات كقصان فائدے سے نياده ہے ، آج كسى جى معائر ہے ہيں چلے جائيے فلميں، ورامے اور وى كى آرسولئے فلی بغذبات كى كى كين ، اور نوجوانول كو بكاڑنے ، افلاق خواب كرنے كے اوركى كا نہيں آتے ، لوگ دن رات اس بفلمى اور خوب اخلاق منا كر كے اپنے شہوانی جذبات كى كئى كاسامان ہم بہنچا ہے ہيں ، آج خاندان سے خاندان اور علاقے سے علاقے اس ناسور كى وجہ سے دم بلب ہيں ، اس ليے الخير فيما اختارہ التد، صاحب تراویت نبى كريم ملى التد عليہ ولم نے سے چيز كوموام قرار دے دیا ہے وہ حرام ہى ، سے گی جيرا كوموام قرار دے دیا ہے وہ حرام ہى ، سے گی ، جيرا كرفتم فلات براس موضوع بردما حب كتاب خود لكھ چكے ہيں ) .

۳- ومنا مت کرنے والے دسائل سے استفادہ کرنا: بیجے کی تعلیم و ترقی میں فائد پخبش دسائل میں سے مرقی کاان وضاحت کنندہ دسائل کا اختیار کرنا بھی شامل سپے جو طابعلم سے لیے برشکل دقیق چیز کو واضح کردیں ا ورمشکل کو آسان کردیں اور اس کے سامنے ہر اِستہ آسان ہوجائے۔

## ميرانيال بيسبيكه به وسائل مندرج ذيل اموركيم ما تعفاس بي :

العن ۔ مغسافیا کی نقشے وگلوب وغیرہ جونبچے سے سامنے مصوصی طورست عالم اسلامی کوا ورعمومی طورسے پورسے مام س

ب أو اسلامى ممالك كے نقشہ جات جو بیجے سے سامنے ان علاقول كى آبا دیال ہسا جدو كارخانيں اور د مگر عمومى بيميزب واضح كرسكيس ـ

یہ پر میں سے ۔ ایسے نقشے جوسالقہ تاریخ ا ورگذشہ صدیول کی اسلامی نقافت و ترقی کو بیھے سے سلسنے کھول کردکھ دیں تاکہ وہ اپنی اسحمول کردکھ دیں تاکہ وہ اپنی اسحمول سے مقلم کے میدان سے میدان سے وہ کارنا ہے دیجے سے جواس سے منظیم آبا، واحب را دیے

ریب سے۔ ۵ - ایسے نقشے جو بیمے سے سِامنے اس راستے کوظا ہر کردیں جو ہر دورا ور ہرزما نے ہیں اسلامی فتوحات او سلام کی سربلندی ا وراس کی حکومست کی وسعست کا ذریعہ بناسیے۔

لا ۔ وہ نقشے جونیے کے سلسنے ان عبگی وسائل کوظاہر کریں جوان کے آبار واجدا دینے اپنی سابقہ فتوحات اور سرچی مدروں سے یے دریے جہاوا ور حجمول میں اختیار سمیے تھے۔

ہے جہاداور ، وں یں اسیارسیہ سے۔ و۔ دوسرے اور ایسے نقشے جو نیچے کے سامنے علم وادب اور آماریخ کی حقیقت کھول کررکھ دیں۔ اور اس سے علاوہ دوسرے اور نقشے جو نیچے کی تعلیم میں ممدومعاون ثابت ہول اور اس کی ثقافت کو البند کریں اور اس سے ذہن میں معلومات راسنے کرسکیں ۔

مری، رود می سے درمیت کرسنے والول کوچاہیے کہ وہ ان سکے حاصل کرسنے کا کوشش کریں اور بہیشہ ان کی الماش ہیں اس سلیے تربیت کرسنے والول کوچاہیے کہ وہ ان سکے حاصل کرسنے کا گوشش کریں اور ہمیشہ ان کی الماش ہیں۔ مصرون رہیں تاکہ وہ اپنی اولاد کوعقلی فلمی بھی سے مرتبہ پر فائز دکھیمیں اوراسلامی محیط ثقافت سے آراستہ پاپٹس۔

# وقِمّاً فوقياً عجائب گھروں كامعائن،

وہ اہم امور جن کی ہم مربول کونصیحت کرتے اوران پراہمارتے ہیں ان میں سے پیمی ہے کہ وہ آثارِ قدیمہ ویا دگار مقامات کا مخلف پردگرامول سے تحت معاشہ جاری رکھیں ، یہ معاشہ نواہ مربی سے اسپنے شہر میں ہویاکسی اوراسلام ملک

یں ، اور اس بی کوئی شکنیمی کدان عجائب گھول کی ہزیارت پیجے سے ساسنے علم ومع فرت اور صفارت و ترقی اور آئی تفافت سے نے آفاق کھول وے گی، اور ساتھ ہی پیچے کا رابطہ حقیقی عظمیت سے ان روابط سے بھی قائم ہوجائے گائی سیر ستونوں کو ان عظیم بہا درول نے مفہوط کیا تھا جن کا تاریخ میں زرین تروف میں تذکرہ ہے اور سرطیعے وہر دور میں ان کی عزت واحترام اور مرکانت و ممنزلت ہے، جیساکہ ان سے پیچے میں اس بات کا عزم کرنے کے نفسیاتی وقلبی امان کی عزب اور اسلامی دولت و مکومت سے قیام اور ترقی کی نبیادول کو دائے کوئے کی ای ای ای ماک کوشش کرے بی طرح اسلام سے گذشتہ روشن و شاندارا دواریس ہمارے علیم وبہا در آبار واجداد سنے کی تھی، اور یک مائنہ کی اور میں میں سے کے کہا دواریس ہمارے علیم وبہا در آبار واجداد سنے کی تھی، اور یہ کا انڈرکے لیے کی جم مشکل نہیں ہے۔

اس کے اسے مربی محترم آپ کوجا ہیے کہ آپ کو آثارِ قدیمیہ وعجائے۔گود کھانے ہیں ہمت وعزم سے کام لیس اوراس کے لیے وقت کالیس تاکران ہیں سرباندی وترقی کرنے کی جرأت وخوائش پیابو، اوران ہیں عزت وقوت اور ترقی کی حقیقت جاگزین ہو،الٹدرم کرسے اس شاع پرخس نے مندرجہ ذیل شعرکہا ہیے :

فانظروا بعددنا إلى الآمشار الدييمارسه بان كديدان آثار كود كيرين

ملک آشارت تدل علیت یہ ہمارے وہ آثار ہیں جوہم پردلا*ت کرتے ہی* 

### ٢ - حب مجى فرصت ملے عمومى كتب خانول كامعائنه كرنا:

و تعلیمی و تقافتی و سائل جومر بیول سے اہمام کو جا ہتے ہیں الن ہیں سے بیھی ہے کہ بچول کوعمومی کتب خانے دکھانے لے دکھانے لیے جانا بھا ہیں جب بھی فرصت اور موقعہ سلے اور حالات سازگار ہول، چاہے یہ کتب خانے قدیم ہول یا جدید، اور اس کا نتیجہ یہ نیکلے گا کہ بچول کو کتابول کو عاریۃ لینے یا مستقل خربیانے کی کیفیت وطریقہ معلوم ہوگا۔ اور اس کا تمرہ یہ بھی نیکلے گاکہ بہتے میں ادبی جرائت پدا ہوگ اور وہ عمومی مقامات اور علم و ثقافت سے ادار ل بیں جانے سے امول سے بھی واقف ہوجائےگا۔

یه اس سے علاوہ ہے ہوکتب خانوں کی زیارت سے علی وثقافتی فائدہ حاصل ہوتا ہے ،اورامتِ اسلامیہ نے ملی وفکری میدان میں جو کارنا ہے چھوٹر سے ہیں ان پرانسان طلع ہوتا ہے اور دنیا اور زندگی اورانسان سے علق اسلام کا کلی تقط ونظر معلوم ہوتا ہے ،اور تاریخ کے دفا ترا ورگذشتہ ا دوار میں امرت ِ اسلامیہ بسطمی وثقافتی ترقی سے گزری ہے اسس سے سلسلہ میں نئے نئے آفاق کھلتے ہیں ۔

اک کیے اسے مرفی محترم !آپ اینے بچول کے ساتھ مموی کتب نمانول کی زیادت کرستے رہاکریں تاکدان ہیں یہ ادصاف پیدا ہوں اوران کی نفوس ہیں یہ قابلِ قدر کارنا ہے جاگزین ہول ۔ لیکن اگرآپ کے اوقات میں إدھراُوھرکتب فانول کی زیارت کے جانے کے لیے گنجائش نہویا مالات اس کے مناسب نہول آگرآپ کے اوقات میں إدھراُوھرکتب فانول کی زیارت کے جانے کے ساتھ رہیں تاکروہ النسسے الن مقالم مناسب نہول تو ایس کے ساتھ رہیں تاکروہ النسسے الن مقالم میں جانے کے ساتھ دہیں تاکروہ النسسے الن مقالم میں جانے کے دیکھیے اور الن سے استفادہ کرسنے کے فن سے واقف ہول ۔

مرنی محترم! بیجے گفتگیمی و تُقانَتی شخصیت سازی اور اس کی علمی و نگری تیاری سے یہ فاکرہ غبن اہم علمی و تقافتی وسائل غیں۔ اس لیجے آپ ان کو مہیا کرنے گرفشش کریں تاکہ پرچیزیں ہمیشہ آپ سے بچول اہل وعیال کی بسترس میں رہیں ، اور آپ مستقبل قریب میں اسنے عبگر کوشول کو بخت عقل والا اور وسیع انظرف ، اور ثقافت میں روبتر تی اور علوم ومعارف میں بخت پائیں۔ اور ساتھ ہی عقیدہ و افکار سے اعتبار سے ان کا رابطہ اسلام سے ہوا ور جذبات وروح سے لمحا ظرسے اسلام تاریخ سے اور رہنائی اور شان و شوکت سے اعتبار سے اسلامی حصارت و ثقافت سے ، اور معرفت و تہذیب سے اعتبار سے جدید نفع بش علی سے تعلق ہو۔

**→** 

۸ - بیچے کومطالعہ کریے تے رہنے کا شوق دلانا اسلام نے بی شعار کو بلند کیا ہے تعنی (دو قُلُ تَرَ بِ ذِنْ يُعِلُماً )) اور کہ دیجے کہ اسے میرسے رہم بیرے کا شوق دلانا اسلام نے بی اور (دھل بَسْنَوی، لَذِیْنَ یَعْنَمُونَ وَالَّذِیْنَ لَایَعْلَمُونَ ) کیا وہ لوگ توعم رکھتے ہیں وہ اور وہ لوگ توعلم نہیں رکھتے برابر ہوسکتے ہیں ، اس کی وجہ سے۔

اور والدین اور مربیول کے ذھے اسلام نے فکری سوجہ بوجھ اور نجنگی پیدا کرنے کی جوابانت اور درمرداری لگائی ہے اس کومموس کرنے ہوئے ہراس شخص ہرجس کو بچے کا مواطہ فکری اور علمی و ثقافتی اعتبار سے اس کی شخصیت سازی کے بلے میں متفکر کریا ہے۔ اس پریہ وا جدب ہے کہ وہ بچے کو اس وقت سے ہی جب وہ ہوش اور یمجہ کی تمرکور ہی جائے یہ بتلا دسے کہ اسلام ایک ایسا دین ہے جو دین و دینا دو نول سے تعلق رکھتا ہے۔ اور یہ تبلا دسے کہ قرآنِ عظیم ایک کال ومکل نظام اور قانون شرویت ہے ، اور اسلامی تاریخ عزت وکرامت کا ذرایعہ اور تعتدا و رہنا ہے اور اسلامی ثقافت محیط اول متنوع اور کامل ومکل ہے۔

مسون «دره ب دره ب سبب». ا در بداس وقت یک ممکن نهیں سبے حیب یک سودج سمجکزا مجھا خاصا ایسامطالعہ نرکیا جائے جومندرج؛ ذیل امور پر مشتمل ومحیط ہو :

- س دسیھ ہو: دین اسلام نگرانگیزکتب کامطالعہ کرنا ہو بہے سے ساھنے دین اسلام سے ابری ہونے کوواضح کرسے ، اس لیے کہ یہ دین ایسے امور وقواعد پڑتل ہے حومحیط اور نومبنوا ورابری ہیں۔
- و این کاریخی کتب کامطالعہ جو بیجے سے سامنے اسلام کی گذشته ادوار کی عزیت ومکانت اور مسلمانوں سے سالقہ مقام و مرتبہ کو بیان کر ہے۔

این تحابول کا مطالعہ جوفکری جنگ سے تعلق کھتی ہول ،اور بیھے سے ساسنے ان ساز شول اور جابول کو کھول کر بیان کردیں جو اسلام سے تمن اسلام کے خلاف تیار کرستے دہستے ہیں نواہ مین صوبے میکار میجودیت کی طرف سے ہول یا می شروعیت کی جانب سے ، یا کہ یہ ہرورصلی بیت کی طرف سے ہول ۔

ادر تاریخ کے سابقة ادوار میں سلمانوں کے آباء واجداد نے حال کی کسس زبردست ترقی سے پردہ مٹا دیے جوگذشتر زائے ادر تاریخ کے سابقة ادوار میں سلمانول کے آباء واجداد نے حال کی تھی ۔

اس ہے ہمادے سلف مالے اس بات کا بہت نیال دکھ کرتے تھے کہ اپنے ہوں کوفکری و تاریخی و ثقافتی احتبار سے معنبوط و خوس بنیا د فراہم کریں، اوراس سے قبل معلی تربیت کی ذمر داری کی بحث ہیں ہم وہ اقوال تعلی کریکے ہیں ہواسلامی تربیت کے ماہر بن نے اس باب ہیں کہے ہیں کہ بیے کوفران کریم کی اور اما دین اور سیریت اور صالحین کی مثالی اور اچھے اشعار اور دیگول اور جہادکی تاریخ اور رسول الدُملی اللہ علیہ کم سے غروات کی تعلیم دینا نہایت منوری ہے اور یول الدُملی اللہ علیہ کول سے والدین اور مربیول سب برتعلیم اور نکری اور بیاری دیکھیں میں سے بچول سے والدین اور مربیول سب برتعلیم اور نکری دین سازی اور دارائ اسلامی عقیدے سے جے ہونے کی ذمہ داری ڈالی ہے، اور ال کور چکم دیا ہے کہ بجول کی نندگی سے ہرم تعلیم اور اس کا خیال رکھیں۔

لیکن اس تک پینچنے اور اس کومامسل کرسنے کا طریقیہ کیا سیے ؟ اس کا طریقہ یہ سپے کردنہائی ودیکھے بھال کے ساتھ ساتھ غور وفکر سکے سساتھ مطالعہ جاری رکھا جائے۔

اوربچەمطالعہ اس وقت تک نہیں کرسے گا اوراس کی رغبت اس کو اس وقت تک نہیں ہوگ جب تک ایسے امہا اختیار نہ سے جائیں جومطالعہ کو بچہ سے نزدیک مجوب جیز نہ نیا دیں ،اوراس میں اس کا شوق نہ پداکر دیں ۔

### میرانعیال برب که بیشوق مندر جر دیل نقاط میم تحصیر ب

ه هم اس سے سامنے علم اورجبل میں مواز نرکریں اور علما، اور جا بلول میں جو فرق ہیں وہ بیان کریں یہ مواز نرکزا اور دونوں کے فضل وفرق کو بیان کرنامطمئن کرنے اور دلیل وجہت قائم کرسنے کے سلسلہ قرآنِ کریم کا طرافیۃ ہے، اللہ تعالی ارشاد فرملتے میں :

وْنَ وَالَّذِينَ آب كِيكُم كِماعلم والعاور بعلم كبيس برابر جمى

(( قُلْ هَـُلْ يَسُتَوِكُ الَّذِينَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُوْنَ )). لَا يَعْلَمُوْنَ )).

ایت بی سویجی کرحب بیمے سے سامنے علما رکاعظیم سرتیہ اور اعزازا ورجا بلوں کی محرومی ونیمیبی کھل کرسا منے آجائے کی تو وہ کتنامطمئن اورمطالعہ ویڑسصنے پڑھاسنے کاکس قدر اہتمام کرسے گا؟ ا در حبب و ملم طلب کرنے والے کی بندحیثیت اور مکانت اور التد سے یہاں اس کو جوعظیم اجرو تواب اور لوگول کی نظریس درجہ ملتا ہے اسے سنے گاتواس کوعلم حاصل کرنے کاکس قدر شوق پیدا ہوگا ؟

ور مفرت معاذبن بل ضی التہ عنہ فرماتے ہیں کہ علم دلول کوجہالت سے نکال کرزندگی بخشا ہے۔ اور تاری ہیں نگا ہول کے سے لیے برن کی قوت ہے۔ یعلم انسان کو نیک صالح لوگول سے در مدبر بہنیا دیتا ہے، اور دنیا وا خرت ہیں درجاتِ عالیہ کے مصول کا ذراحہ ہیں غور وفکر روزہ سے برابراجر و تواب دلا اہمے ، اوراس کا ذاکرہ کھوسے ہوکرنماز پڑھے نے برابر تواب ولا اہمے۔ ای علم سے ذریعہ صلہ رحی کی جاتی ہے، اوراس سے درجو سال کا فرام کو برچانا جاتا ہے، علم امام ہے اور علی اس کا مقتدی ہے علم نیک بختول ہی کو دیا جاتا ہے اور اس سے بربخت محسر دم کر ویے جاتے ہیں۔ واس سے بربخت محسر دم کر ویے جاتے ہیں۔

اور علامه نصير الدين طوس البيني رسالة أ داب المتعلمين بيس الكهمة بيس كه :

کی بیون میں مقابلے کرانا: بعض مقابلے مبلدی پڑسف سے متعلق ہول اور بیض مقرہ وقت ہیں زیادہ سے زیادہ تعداد میں کتب کے مطالعہ سے بھیراس میں ان کا امتحال ایا جائے اور جو بوزشن حال کرلیں ان کی ہمت افزائی ہوا ور سفت کا شوق دلا نے کے لیے انہیں گرافقد را وزصوص انعامات دیے جائیں ، بیچے سے اکرام اور اجھے کا م) اور عمد افواق کے اظہار پراس کی ہمت افزائی ہی وہ طریقہ ہے حبس پراہ م غزالی نے بھی ابھار اسے اور اس کی رغبت دلائی سے جنانچہ وہ "احیار العلوم سے تبیرے برز میں لکھتے ہیں کہ بیچے سے جب کوئی اجھا کا زنامہ یا عمدہ افواق فلا ہم ہوں تومناسب سے جنانچہ وہ "احیار العلوم سے تبیرے اور اس کو ایسا انعام دیا جائے۔ اور اس کو ایسا انعام دیا جائے۔ اور اچھے افواق اور سے کہ اس براس کو شاباش دی جائے ، اور اس کو ایسا انعام دیا جائے۔ اور اچھے افواق اور

اله اس كتاب بين بهبت مسد مواقع بريم علم اورعهمارى فضيدت بيان كريكي بير.

مع يتينول اقوال محكسبى كرت برسالة المسترشدين مع ميسيك بين واستاذ شيخ عبدالفقاح ابوغده ك تفيق كرساته شائع مولى ب

ك حوالة بالأ-

م مندرجه بالاحواليه بـ

عمدہ افعال براس کوامھارنے کے لیے لوگوں کے سامنے اس کی تعربی بھی کردیا جاہیے۔

بچه کا اکرام و انعام، دربه یا اچهدالفاظ سے اسے نوازنا اور اس طرح سے اس کی ہمت افزائی کرنانبی کریم صلی تنہ عليه وسلم سے اس فرمان مبارك سيموافق سب جس ميں آپ سے ارشاد فرمايا:

( قبل ادوا تعابوا )) . معم طرانی تابس می دو اور محست بدا کرور

اور نبی کریم صلی السّعلیه ولم سے درج ذیل فرمان سے معابق سے جے ابوداؤد ونسائی نے ان الفاظ میں روایت کیا ہے: ((من اسدى إليكم معووفاً فكافئوة فإن يَخْص تَهارسه الته اصان كرسه اس كابدا دسه إكرواو.

اگر سکافاۃ نے کرسکو تواس سے بیے دعا ہی کرلیا کرو۔

بم تستطعيوا فادعواسه.

اوراس سے ساتھ مجی موافق ہے جے حضرت عبداللہ بن عمرضی الدّعنہما روا بہت کرتے ہیں کہ نبی کریم سلی اللہ علیہ ولم فے محورول سے درمیان رئیس کرائی ا ورسبقت سے جانے واسے کوانعام دیا (طاحظہ پوسنداحمد)۔

🧇 بچے کو بیمجا دینا اور با درکرانا کہ وہ ہوکچی علم نافع پڑھ رہا اور مفید چیزیں سیکھ رہاہے اگریہ سب انھی نیست اور نیک اراہے ے ہوتواس کوعبا دست گزاروں اورطویل نماز پڑھنے والول کا سا اجرمات ہے ، اس لیے کرنبی کریم علیہ انصلاۃ والسلام ارشاد فرات ين:

الإإنما الأعمال بالنيات ، وإنما تكل امرى تمام اعمال كا دارومدارنيت پر سے اور شيخص كودي منا ہے چواس نے نیست کی ہو۔

مانویی» . بخاری وسیم

اس مدیث سے فقہا وکرام نے جگم نکالا ہے کہ اہمی نیت کی وجہ سے عادت بھی عبادت بن جاتی ہے.

ا ور اس میں ذرہ برا برجی شکٹ بیل کہ جب نبیے کو بیمعلوم ہوگا کہ اسے مطالعہ کرسفے برا برسلے گاا ورعلم حامل کرنے اوس ثقافت و تہذیب سے آراستہ دونے برالتٰد مبل شانداس کو مزاء خیرعطا فرمائیں سمے تو وہ بلاسی سنی وکا ہی سکے کی طور پر بیسصفے پڑھانے

🗞 پرسکون آراحت بخش مها و مستھری فضا مربیداکر نابینی روشنی کافی ہوا ورمناظر خوش کن ہوں اور سکول مکل ہوا ورمزلول یس سردی سے بچلنے کامناسب بندولست ہوا ورگرمیول میں گری سے بچانے کامناسب انتقام ہو، یہ سب چیزی مطالعہ پرمتوم كرسف وداس كاشوق ولاسف ادراس كى مبت ببيلكرسف كا ذرايدنبتى بير.

🤏 پیے سے لیے مخلف قسم کی کما ہیں مہیا کرنا نواہ یہ کما ہیں گھر کے کتب فانے میں موجود ہوں یا مدد سے یا مسجد کے کتب خانىمى ياغام لائسرىرىول مى -

ا در اس میں کوئی شکنیمیں کے جب بچہ اپنے سا <u>منے اپنی پ</u> ندیدہ مطلوبر کماب پائے گاخواہ وہ کتاب قصبہ کہانی کی ہو یا شعروشاعری کی یا تاریخ کی ریا انوال کی تووه شوق سے اس کا مطالعه کرسے گاا وراس کتب نیازی طرف خوشی نوشی جائے گا۔ ورافیرس بات می بیکے کے دہن نشین کا دینا کہ وقت الواری طرح ہے اور فرائفن و ذمہ داریاں وقت سے بہت اور دین اسلام مسلمان کو بیکم ویا ہے کہ وہ اندا ہے کہ اور دین اسلام مسلمان کو بیکم ویا ہے کہ وہ اسلام و السلام فراتے ہیں کتم اسی چیزول کے حرفیس مہوجو مہمین فائد و بہجا کی اور اللہ تعالی سے مدوما بگواور عاجز مست بنو رہیج مسلم کی ۔

جیساکہ آب نے پیمی تھم دیا ہے کہ دنیا کی عزت اور آخرت کی کامیا بی و نجات کوماسل کرنے سے لیے فرصت کو غنیمت جانا جائے جسن نجسہ نبی کریم علیہ انصلاۃ والسلم فرطتے ہیں ؛ پانچ بیپزول کوپانچ سے پیلے غنیمت جانو:اپنی زندگی کوموت سے پہلے اورصحت کو بھاری سے پہلے ، اور فراغت کوشغول ہونے سے بل، اور حواتی کوبڑھا ہے سے پہلے ، اور مالداری کوفقرسے پہلے دالا نفہ ہومستدرک ما کم بسندھیے ۔

> اوراخیری به یا در کهناچا میکی مطابعے سے مطلور فوائداس وقت کس حاصل نہیں ہوسکتے جب تک درجے ذیل طریقے افتیار نکس حاصل کی میں موسکتے جب تک درجے ذیل طریقے افتیار نہ کیے جائیں :

ا ـ مىلمانعه ـ سے قبل نغسیاتی تیاری اوروه اس طرح که نیست کا ستے ضار رہے کہ وہ مىلمانعه اس بیے کررہاہیے تاکرتھافتی و علمی طور پر کامل کال بن جائے ، اور دعوت و تبلیغ کا فریعنہ اواکر سکے ، اور اسلام کا پنیام پینچا سکے ، اور اپنی امست و ملک کوفائدہ پہنجہ اسکے ۔

۲. مطالعه کے دوران ذہن کومرکوزرکھاجائے اوراس کاطریقہ یہ ہے کہ انسان جوکیے بھی پڑھے اس وقت ذہن اور مقل ونہم کوما منرر کھے تاکہ جوکیے پڑھے اسٹ کمل طورسے یاد رکھ سکے اور سیح معنول ہیں بچھی سکے۔

۱۳ ایم عبادات اور نبیادی باتول سے بنچے بینسل سے مکیر کھنچ دیناچا ہیں تاکہ جب اس بحث کو دوبارہ دیکھے توریمعانی اس سے ذہن میں داسنے ہوجائیں اور یہ بنیادی آمیں اس سے دل میں بیٹھے جائیں .

۷ دارای و بنیادی مناصر کوپینیسل سیصفی سے ایک کنارسے پر لکھ دینا چاہیے اگران عناصر کواچھی طرح سے یا د رکھا جاسکے۔

۵۔ موضوع کے اہم عوانات یا بہندیدہ ابحاث کے افکارکوڈوائری یا الگ کا بی بیں کمآب کے نام اورصفحہ کے ساتھ نوٹ کرلینا چلہ ہیے۔ تاکہ اگردوبارہ عزورت پڑسے تواسانی سے اس کرجع کی طرف دہوئے کرسکے ۔ 4۔ نوٹس اوریاد داسٹ تول کے تکھنے کے لیے ایک الگ کابی یا بڑا ترب ٹررکمنا بچاہیے تاکہ احادیثِ مبادکہ، ادبی لطا ، ورعکیماندا شعار، تاری واقعات ،علمی حقالق ، دینی مسائل و فقا وی بین سیے جوجیز براسطے والے کھیلی معلوم ہووہ اس بیس کھھ سلے۔

بلاشبه یه کاپی اور ندکره مختلف اوقات اورمختلف زمانول میں بہبت سی کتابوں سے منتخب کردہ نچور ہوگا ہو آئدہ علمی یا عملی زندگی میں بہترین مدد گار ثابت ہوگا۔

ں سہرن ہرج ہرج ہر ہوں ہے۔ ان کی دہنا ہی کوشش کریں کرآپ سے بیکے اس سے عادی بنیں اور آپ ان کی دہنا تی اس جانب کرتے رہیں تاکہ آئدہ جل کروہ عمل کرنے والے افراد اور تہذیب وتمدن سے آراستہ عناصراور سمجھدار پختہ عقل قوم ہیں شار ہوں جوالتہ کے لیے کچھ سمج کم شکل نہیں ہے۔

the second of th

9 - بیجے کو اسلام کی ذمردارال محکوس کران جن چیزوں کا انتمام کرسنے کوہم اہم اورلازم سمھے ہیں اور تربیت کرسنے والوں کی توجہ اس طرف مبندول کراستے میں ان ہیں سے پر بھی سبے کہ نیچے کو مندر جبر ذیل حقائق سکھانے وسمجھانے کی ہمیشہ کوشش جاری رکھنا چاہیے :

الف۔ (وہ مؤمن جماعت جس کی تربیت دارِار تم پس بوئی تھی اور بس کے ذریعہ دینِ اسلام کو نصرت وفتح عامل ہوئی وہ چندنو جوانوں کی جماعت تھی ، چنانچہ بیٹت کے وقت نبی کریم صبی اللہ علیہ ولم کی عمر حالیس سال تھی اور حضرت ابو بجر فری اللہ عند آپ سے بین سال بھوٹے تھے ، اور حضرت عمر استہ عند کی عمر سے بین سال تھی ، اور حضرت عمان رضی اللہ عند ہمر سے بیل سال تھی ، اور حضرت عمان رضی اللہ عند ہمر سے جو و شیح میں مال حضرت عبد الله عبد الله علیہ واللہ علیہ واللہ عند اللہ عند اللہ علیہ عمر اللہ علیہ اللہ علیہ اللہ علیہ عال حضرت عبد الله عند اللہ ع

دن ورات میں نہیں ہوابلکہ یے پنیتیں سال کے عرصے میں ہوا تھا۔

بنوامید کے نیانے میں ان کی سلطنت اور عبیلی اور ان کا تسلط وعملداری سندھ کے علاستے اور مہد کے بڑھے مقہ اس کے برا کس بہنچ گیا اور ترکستان بھی ان کے ماتحت آگیا، اور مشرق میں عبین کی صدود تک اور مغرب میں اندس تک بہنچ سکے اور پھر حب مسلمانوں کے ایک حکمران خلیفہ ہاروان الرشید نے پوری دنیا کے بیے عالم اسلامی کی وسوست کی تصویر شی کرنا جا ہی تو سوائے اس کے ایک می کوئے ہے سے جو بغیر برسے ان کے پاس سے گزرگیا تھا میں مولے اس کے ایک می کردیا ہے ایک میں براہے ہاں بھی لایا جا سے گارگیا تھا میں بھی کردگہا ، تم جہاں چا ہو جا کر برس لو اس سے گزرگیا تھا ہی اس بی لایا جا سے گائے۔

ہے ۔ معابر کرام ضی التعنہم المبعین کی جا عست کا یہ پہلا قافلہ اور ال سے بعد آنے واسے وہ صفارتِ تابعین جوال کے فتر پر چلے یہ سب سے سب عزت وعظمت اور بزرگ کی چوٹی پر دوعظیم باتول کی وجہ سے پہنچے تھے :

۱- انہوں نے اسلام کو عقیدہ وافکار ، قول وعمل اور حقیق قطبین ہراعتبار سے صفیق ، اوراس کا براہ انہیں فردست امداد ، فتح میں اور دین اور خدا کے شمنوں پرشا ندار کا میا بی شکل میں طا اس سے بغیر نہ فتح و نصرت ممکن ہے اور نہ یہ کرمزت وسیادت کی نگام کو اپنے ہاتھوں سے تھا کہیں ، تاریخ کی کمابول میں نکھا ہے کہ حبیہ صفرت عمرین الخطاب وہی اللہ عند نے مصرے فتح بوسنے میں تاخیر موسل کی توصیرت عمرو بن العاص کو (ہو اس کشکر سے قائم عمومی تھے ) ایک خط مکھا جس میں تحریر فرطایا ،

مدوننار کے بعد، کہنا یہ ہے کہ آپ لوگول کو معرفتے کرنے ہیں جو دیر لگ ری ہے اس سے مجھے بہت تعجب ہے آپ لوگ ان سے دوسال سے لوٹرسے ہیں۔ اس کی وجہ اس سے سواا ورکج نہیں کہتم لوگوں نے کچھنٹی چیزیں ایجا دکرلی ہیں ۔ اور دنیا سے وہی ہی مجست کرنا نثر وع کردی ہے جیسی مجست تمہا دیسے دمن کرستے ہیں اور یا درکھوکہ التہ تعالی سی قوم کی مددنہیں فرماستے گر ان کی نیست کے بیچے ہونے یہ ۔

اوراللہ تعالیٰ فلیفۂ عاول پر دم کرے فرمایا کرتے تھے کہ ہم تو وہ قوم ہیں جے التد نے اسلام کی برکت سے عزت دی ہے لہذا ہم جب بھی اس چیز کوچوڈ کرعزت بعا ہیں گے جس سے ذرید اللہ نے ہیں عزت دی تھی تواللہ ہمیں ذلیل کرنے گالمتد کو کا بازی میں ہوائی کی اللہ کہ اللہ کہ اس میں ہوائی کی اللہ کہ اللہ کہ اللہ کہ اللہ کہ اللہ کہ کہ اللہ کی فتوعات کا دائرہ مغرب کے اخیر ترک پہنچا گیا۔ اور حضرت عقبہ بن نافع محیط اللہ کی اسیام ندم کے کنادے پر کھوے ہوئے اور انہوں نے بانی میں گس کہ کہا : اے اللہ اسے محمصلی اللہ علیہ وکم سے دب اگر سیمندر نہ تو اللہ اللہ کہ کہ کہ کہ کہ مرطبندی کے لیے ساری دنیا فتح کہ لیا۔ اے اللہ آپ گواہ ورجیے گا۔

ان کی فقومات مشت کے اخیر اِک پہنچ گئیں، اور حضریت قتیب بالمی سرز مین جین میں دامل ہو گئے توان کے ایک ساتھی

له الاحظ فرائي بماري تماب بحثى ييلم الشبب ومن - 9 و١٠) .

نے ازرا و شفقت انہیں منبہ کرتے ہوئے کہا: اسے قتیب آپ تو ترکیوں کے شہریں کھس کے اور مادثات زمانے دول پر آتے جائے رہتے ہیں . تومعنرے قتیبہ نے ایمان سے سرشار ہوکران کوجواب دیا :الٹکی مدد ونصرت پر کامل لقین کی وجه مسترا کے برامها ہول ، اور حبب وقت آجائے گاتوتیاری واحتیاط کچھ فائدہ ہیں پہنچائے گی، جوصب ان کو ڈرا رہے اورمتنبه كررسيستقع جب انهول سندان كيعزم اور اعلاء كلمة التُدسك بيلي بخة ادا دسيكود مكيما توانهول سفان ك كها: ات تتيبه تم جهال جانا چاہتے ہوج جا وُال ليے كه يه ايسانبردست بخته عزم ب جيد الله كے علاوہ اوركوئي نہیں روک سکتا، اس قومتِ ایمانی اورعزم داسنے سے بغیرنہ روستے ذمین سے ایک بالشت کا مالک بنیامکن سبے اور ذبہ ممكن بي كه عالم ميل التدك دين كى نشروا شاعت بور

 تاج کل سے ہم مسلمان اگراپنے آبارا مداد سے اس نظام وطرز کوانتیار کرلیں جوانہوں نے اسلام کو صبوطی سے تعاہنے کے سلسلہ میں اختیار کیاتھا ،اور قربانی وجہا دا ورصبر وکل جماست قدمی وجوانمردی کے سلسلہ میں اپنے سلف مالع كيفش قدم برجلين توان شاءاليند بمارسد باتصول هي اسلام كوعزت نصيب بوكى اوربم اين دست وبازوس مسلمان تحومدت قائم کرلیں گئے اور الٹدکی مدد و تا ئیدسے تونت وعقمہت اور دوام دوبارہ حاصل کرلیں گئے، اوریم پیرسے وہ بہترین امت بن جائیں گے جولوگول کے فائر و کے لیے جو جوگئ ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ ہم بھی انسال ہیں اور ہما رہے سلف يمي انسان يقد اور التدتعالي في مردول كي عزم كي تعريف كي بي في أنجه فرايا:

الربِجَالُ صَدَ قَوْا مَاعَاهَدُوا اللهُ عَلَيْهِ وَفِينَهُمْ يَهِ لِي اللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ وَفِينَهُمْ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ وَفِينَهُمْ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ وَفَيْنَهُمْ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ وَاللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ وَاللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ وَاللهِ اللهِ عَلَيْهِ وَاللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ وَاللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ وَاللهِ اللهِ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ وَاللهِ اللهِ اللهِ اللهُ ال مَّنْ قَطْنَى نَحْبَهُ وَمِنْهُمُ مَّنَ يَنْتَظِرُ ۗ وَمَا بَتَّالُوْا تَبْيِايْلًا*۞*٣٠

الاحزاب -۲۳

اورفرایا :

((يِجَالُ ﴿ لَا تُلْهِيْمِ مِنْجَارَةٌ ۚ وَلَا بَيْءُعَنْ ذِكْرِ اللهووَ إِقَامِ الصَّلُوقِ وَإِيْتَآءِ الزُّكُوةِ \* يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوبُ وَالْاَبْصَارُكُ ) .

اسس میں سیسے اترسے سوان میں کچھ ایسے بھی ہیں ہوائی ندرپوری کریچکے ، اور کی ان میں سے داستہ دیکھ دہے ہیں اورانهول نے ذرافرق نہیں آنے دیا۔

ايسے لوگ جنہیں نہ تجارت مفلت میں وال دیتی ہے نہ دخریدو، فروخت النُّدکی یاد سعه ا درنساز پرشعنے سے اورزکاۃ دینے سے ، ووڈریے رہتے میں ایسے دن سے جس میں ول اور اکم میں الٹ جائیں گ

آج کے سلم معاشرے کو اس سے کیانقصال پہنچے گاکہ وہ ظاہری احتبار سے مردین جائیں اور معنوی اعتبار سے يباره، التدرهم كريك شاعراس لام محدا قبال بركت مين: فوق هامات النجسي منسامًا ستاروں سے سوں ۔ پر نارہ بناکر بلدکردی ساروا علی مسوج البحار بحسارًا دوسمندوں کی موجوں پرسسسندرین کرچلے

من خاال خی س فع السیوف لیرفع اسمك كون ہے وہ حبس نے آپ ایم للندكر نے كے ہے تواری كا فتو المجبال وربما كا فتو المجبال وربما وہ بہاڑوں میں بہاڑ بن جاتے ہے اور با اوقات سے میں میں کے دور کیا اوقات سے میں میں کے دور کیا دو اس

لا ۔ آئ تمام عالم سرس مادیت کی تاری میں سرگردان ہے۔ اور آزادی دیے راہ روی کی کیچر میں اسلے سیدھے ہاتھ پاکھ کا رہا ہے۔ اور افکار وآراء کی تاریکیوں میں پھیچا جا رہا ہے، اور یہ پاکھ کا رہا ہے۔ اور افکار وآراء کی تاریکیوں میں پھیچا جا رہا ہے، اور یہ ویجھے برای حکومتیں انسانی حفارت کو کھیا تھا کہ سے ایسے کوشی ہے گاڑر ہی ہیں، اور اپنی بغاوت وسرشی اور وقتی بن سے انسانی حفار نامول اور انبیا، ورسل سے پنجاموں کا کا گھونے رہی ہیں۔ اور انسان کو نمام بنا نے اور اسکی کو ای کو اندا مول کے دی کے میاں کو ایک مرزمین سے نکا لیے اور اس کے ملک سے مان کی وار کی سے اور اس کی میزمین ہے وانوں بور حول کے مان کی سرزمین سے نکا لیے اور اس کے ملک رہی ہیں۔ اور اسکی میں بچرں، جوانوں بور حول کے ساتھ ملک بدر کرنے ہے۔ حملے کر رہی ہیں۔

ان موادث وآفات اور بریشانیول اور تبامیول سے عالم اسلام کوکون بچائےگا ؟ کون ہے ہوانسانیت کواک فکری انحطاط اور اضلاقی ہے راہ روی سے بچائے ؟ یاال سے زیادہ واضح الفاظ ہور اضلاقی ہے راہ روی سے بچائے ؟ یاال سے زیادہ واضح الفاظ ہیں یہ کہیے کہ بچانے والی شق کون ک ہے ؟ اور مصیب سے امان کا کیا داستہ ہے ؟

کی تمام مشکلات مل کرسنے میں کامیا ب ہوجائے گا۔ اورانگریزمؤرخ ولیز اپنی کتاب موامع تاریخ الانسانیۃ \* میں <u>تکھتے ہیں کہ یورپ ا</u>ہینے دفتری وتجارتی تواہین سکے

برسے عصے کے اعتبار سے ایک اسلای تبرہے۔

للبذاآئ کے دور کے لوگ ال بات کے سئول ہیں کہ بشریت وانسانیت کو سکوس اوریت کی تاریکی اور تا رک البایت و آزادی کی موجوں اور تباہ کن حبول کی آندھیوں سے بچانے کے لیے اپنی بم سئولیت اور اپنا ترقی یا فتہ کروارا داکری اور یہ اللہ وقت تک نہیں بوسک جب سے کہ ساری دنیا ہیں از سرِ نواسلام کا ابری پیغام نہ بنچا یا جائے تاکہ نوٹھالی اکن واستقرار تمام کو سے نور ہوجائے ۔
واستقرار تمام کو سے زمین پر چھا جائے ۔ اور انسانیت ایمان کے نورا ور قرآن کریم کی شریعیت سے سنور ہوجائے ۔
یہ شریعیت اسلام ربانیت ، عالمیت ، عام وسب کو شائل ہونا ، جو دوعطا اور ابری ہونے کے ساتھ متصف ہے ۔
ربانیت سے اس لیے متصف ہے کہ یہ تمام افراد انسان کی شریعیت و قانون ہے ۔
عالمیت سے اس لیے متصف ہے کہ یہ تمام افراد انسان کی شریعیت و قانون ہے ۔
عالمیت سے اس لیے متصف ہے کہ یہ تمام انسانوں کی ضور ریات ہر دور یس اور ہر چگہ پوری کرتی ہے جو دوعط سے اب کہ یہ تمام انسانوں کی ضور ریات ہر دور یس اور ہر چگہ پوری کرتی ہے جو اب ایک اس اور طبیعت میں نمووترتی ہے اور یہ قیامت تک باقی رہے گی ۔
ابری اس لیے ہے کہ اس کی اس اور طبیعت میں نمووترتی ہے اور یہ قیامت تک باقی رہے گی۔
اور مسلمانوں سے فخروشرون اور دوام سے لیے یہ بات کافی ہے کہ اللہ تمائی ان سے بارے میں قرآن پاک میں اور مسلمانوں سے فور و شرون اور دوام سے لیے یہ بات کافی ہے کہ انٹر تعالی ان سے بارے میں قرآن پاک میں اور مسلمانوں سے فور و شرون اور و ام سے لیے یہ بات کافی ہے کہ انٹر تعالی ان سے بارے میں قرآن پاک میں اور شرف ذیات کی دور تیں و آن پاک میں و ارشاد فریات جیں و

اس سلیے اس امت کوالٹد کے حکم سے مطابق آئی ذمر داریاں پورٹ کرنے سے سلیے اسٹے کھوسے ہونا چا ہیئے تاکہ پردنیا سے ساستے ہا ہونا چا ہیئے تاکہ پردنیا سے ساستے ہا ہونا چا ہیئے تاکہ پردنیا سے ساستے ہا ہونکل کر آئے اور جا ساستے ابنزکل کر آئے اور جنگ بدر ، قادسیہ ، برموک اور طین کی فقوعات اوراسلام سے پہنیا اور قرآن کریم سے بنیا دی امولوں کو لے کرمیب دان میں آئے۔

لبندا مربیول کوچا جیئے کہ اپنے بچول اور طلبہ کی نفوس میں یہ مقائق جاگزین کریں۔ اور الن کویر حقائق ومعانی ہروقت سمجھائیں تاکہ وہ کمل طریقے سے اپنی ذمر داری محسوس کریں اور مطلوبر طربیقے سے اپنے فرییے کو ادا کرسکیں۔ اگرانہول نے ایسا کر لیا توعنقریب وہ اپنی اولاد کو ایسے سبچے بیکے دائی اوراسلام سے منلفس سپاہی پائیں سے جوالتہ کے سواکسی سے نوف وڈرمیوس نرکریں گے۔ اور ا پنے دب کی دعوت کی تبلغ کرتے ہول گے، اوراس سے داستے میں ہرقم کی تعلیف

سله ملاصفه كيجيد مه رى كما بيضى يعم الشبب وراس مي القرآن وستورنا كى بحث بطره ليجيد جبال آپ كواسلامى شراديت كافسوسيات و مزايا كے سلسله يس كافي ووانى بحث ل ماسئىگ

پریشانی اورمصیبت کوبرداشت کریں گئے ،اورالتٰہ نے پہا ہاتو انجام کارمین ظیم فتح اورشاندارعزت اورمطلوبرکرامت کومال کرلیس گے اور پرسب التٰہ کے بیے کیوم میشکل نہیں ہے۔

۱۰ - بیچے کے نفس میں جہادی دوئ کوماگزین کمنا وہ عظیم ممائل اورائم امور تن کامر نی کوبہت اہماً کر مل ہیں ان کی طرف اپنی پوری توجہ مرکوزر کھنا چاہیے ان میں سے بیچے کے نفس میں جہادی دوح کوغمیق کرنا اور عزم وصبر کے معانی اس کی کور قلب اور اصامیات میں دائے گرنا بھی ہے اور خاص کرائی جمارے دور میں جس میں اسلامی عمالک معانی کا کھنے تھے ہیں اسلامی کا کھنے تھے ہیں اسلامی کا کھنے تھے ہیں اگئی ہے ، اور اسلامی ممالک میں محکومت کی باگ ڈور ایسے لوگوں کے ہاتھ میں آگئی ہے جن کا اس سے سوا اور کوئی مقصد اور عرض نہیں ہے کہ وہ اسلام اور ندا کے ڈمنول کی ساز شول کو کامیاب بنائیں ، چاہیے یہ منصوب کمیون ٹول کے ہول یا ورغون کی ساز شول کو کامیاب بنائیں ، چاہیے یہ منصوب کمیون ٹول کے ہول یا موشوں کے بول اور کھراہ کوئی ختم کردیا گیا اور کس فرا ورکس اور ابا حیت و آزادی و بے داہ دوی کی آنہ حیول کے میکو ول اور کھراہ کوئی عقائدا ور مکرل و ناکس کے لیے ملح نظر بن معاشروں کو اکھا ٹر جو کی گار میں ممالک ہو خص کے لیے تھر ترا ور مرکس و ناکس کے لیے مطمخ نظر بن معاشروں کے معاشروں کو اکھا ٹر جو کی گار میں ممالک ہو خص کے لیے تھر ترا ور مرکس و ناکس کے لیے مطمخ نظر بن سے معاشروں کو اکھا ٹر جو کیا ۔ اور اسلامی ممالک ہو خص کے لیے تھر ترا ور مرکس و ناکس کے لیے مطمخ نظر بن سے کھی ہوں ۔

اس بیے مزیوں کوجا ہیے کہ اسپنے بچوں کوصبر وہمت سے کام نینے کامٹین کریں اوران کی نوس میں جہا دی روح دائخ کردیں ، تاکہ وہ اپنی جدوجہدا ورجہا دسکے ذربیلیے اسلام کی عزیت اور سلمان کی عنمیت دوبارہ والبس ہے سکیں ۔ لیکن سوچنے کی بات یہ ہے کہ جہا دکی وہ روح بچول کی نفوس میں جاگزین کرنے اور اس سے معانی ان سے جوارح واعضا ، اور ما تول میں داسے کرنے کے وہ کاصل کیا ہیں جنہیں مربول کو اپنے بچول سے ساتھ اختیار کرنا چاہیہے ؟

#### میرسے خیال میں اس سلسلہ میں مندوز دیل نقاط مفید بہول گے:

ا- بیکے کو بہیشہ بیا حساس دلاناکہ اسلامی شان وشوکت اور اسلامی عظمت اس وقت تکمتحقق نہیں ہوگئی جب کسی جب دار در اعلا پر کلمتراللہ کے لیے کوشش ومحنت نہ ہو۔ ارشا دِربانی ہے ؛

اسے ایمان والو ہوکوئی تم میں پھرے کا اپنے دین سے تو اللہ عنقریب لائے گا اسی قوم کو اللہ ان کو جا ہا ہے اوروہ اس کو چا ہتے ہیں ، نرم دل بین مسلمانوں پردبرد تیں کا فرول پردبرد تیں اللہ کی را ہیں اور ڈریتے

( يَا يُنْهَا الَّذِينَ امْنُوا مَنْ يَرْتَكَ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللهُ بِقَوْمٍ يُحِجَّهُمُ ويُحِبُّوُ نَ لَا اللهُ يَقَوْمِ يُحَجَّهُمُ وَ يُحِبُّوُ نَ لَا اللهِ عَلَمَ الْمُؤْمِنِينَ آعِزَّ قِ عَلَمَ الْكَوْمِ يُنَ يُجَاهِدُ وَنَ فِي سَبِيْلِ مالی جہاد؛ حسس کاطربقہ پر سبے کہ اعلاء کلمۃ النہ کے لیے مال خرجے کیا جائے بہی وہ حساس رگ ہے ہراس جہاد کے اسے جراس جہاد کے لیے جوامت مسلمہ زندگی میں کرنی ہے خواہ یہ جہاد تبلیغی ہویا تعلیمی ، اور خواہ یرسیاسی جہاد ہویا جنگی ۔ ارشاد ہے ؛

﴿ إِنَّ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الْمُوْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ اللهُ اللهُ

ا ورفرايا :

ررمن أنعنق نفقة ف سبير الله كتبت له بسيعائة ضعف».

اوربخاری مسلم ونمیره روایت کرستے بیں: (( من جل زغازیًا فی سہیں الله فقد غسزل، ومن خلف غان یًا فی اُهله

فقدغزا».

کلو ملکے اور بوسیل اور لاو اینے مال سے اور میں نے التدکی را ہیں ۔

بوشخص اللّٰدے راستے میں کوئی چیز خرجے کر ہاہے تو اس کو سات سوگذ ٹواپ لمباہے۔

جوشعنعس کسی فازی کوانند کے راستے کے بے سازوسال سے تیار کر اسے کے بے سازوسال سے تیار کی ، اور پیخفس کسی فازی کے گھریارک و کہے کہال کرنا ہے توگویا کس نے خود ہنگ کی .

على تبلينى جهاد ؛ أوراس كاطريقيه يه سب كه زبان سے اسلام كى تبليغ كى جائے اور كافروں ، منافقول ، كمحول اور منحرب توگول پر بير جبت ودليل قائم كى جائے كه دعوت اسلام حق سبے۔

ا درایمان دا بدمرد اورایمان دالی عوری ایک دومرے
کی مددگار ہیں کھلات میں نمیک بات اور منع کرتے
میں بری بات سے اور قائم رکھتے ہیں نماز اور دیتے
ہیں نہا ہ اور مکم پر جاتے ہیں اللہ کے اور اس کے دسول
سے ، وی اوگ ہیں جن برالتہ رقم کرسے کا بے شک اللہ زبرد

﴿ الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسُلْتِ اللَّهِ وَ يَخْشُونَهُ وَكُمْ يَخْشُونَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهُ ۗ وَكُفَّى بِاللَّهِ

نبى كريم عليه الصلاة واسدم ارشاد فراية بي : لانصوالله اصرأسيع منى شيسي فبلغيه كمسا سمعييه فسرب مبلغ أوعجب من سامع».

تمرندي ومسنداحدواين مبان اور آب صلى الله عليه ولم منصارشا و فرمايا: المن دعا إلى هدى كان لدمن الأبس مشل أجوبر من اتبعه لا ينقص ذلك ون أُجورهم شيئاً)). صحيح سلم واصحابنن

لا وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً مَلَوُلًا نَفَرَمِنُ كُلِّ فِرْقَاةٍ مِّنْهُمُ طَا يِفَةً ﴿ لِيَتَفَقَّهُوا فِي اللِّايْنِ وَلِيُنْذِرُوا قُوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُواۤ الَيْهِمْ ). التوبر ١٢١٠

کی جائے. اور دنیا اور زندگی اور انسان سے علق اسلام کامیحے کلی تصور پیس کیا جائے:

ا ورهبرانی مصرت این عباسس صنی الته عنها سے روایت کرتے میں کہ نبی کرم ملی الته علیہ وسم نے ارشا وفروایا : لا تناصعه وافى العله ف إن خديانة أحدكم فى علمه أشد من خيانته في ماله

وإن الله مسائلكم».

ایه وه لوگ بین جوالله کے پیامات پنجایا کرتے تھے اوراس سے ڈریقے تھے اور بجز الترکے کسی سے نہیں ڈرتے تھے اورالله حماب مح ليع كافي ب

التُدتعالى أستُ خص كوترو مانه انوش دخرم) يكه جومجه معدكاني بات سندادرا سه ویسه بی پینجادست جیسے اس نے سنی اس سے کربست سے وہ لوگ جن کک وہ بات بہنی کی ماے وہ سينن والے سے زيادہ مفاهت كرنے والے بوتے ہيں .

جو خص کی دایت ( معی بات) کی درف بلا پاست است اتنا ہی اجرملیا ہے بتینا ان توگوں کو ملت ہے جو س کی ہروی و تباع كرتے بيں اوراس سے ال كے اجروثواب ميں كونى كمي نهيں ہوتا ۔ 🗫 تعلیمی جهاد: اوراس کاطریقه به به که اسلامی معاشرول کوعلمی و نقافتی وفکری اعتبار سیسے تیار کرسنے کی بوری کوشش

اورمسلان ایسے تونہیں کہ سارسے کوئ کریں سوکیوں نہ نسكادان كے ہرفرقے میں سے ان كاليك حصر تاكم محد سيا كري دين ميں اور تأكراپني قوم كونتبر پنجائيں جب لوٹ كر *آئیں ان ک ح*رف ۔

علم کے بارسے میں فیرنوای ونصیحت کرستے را کروکس يے كرتم ميں سے سی خص كى اپنے علم ميں خيانت كرنا مال مي خیانت سے زیادہ بری چیز ہے۔ اور التد تعالی تم سے سوال

ا ور ابودا فدو ترمندی درج ول صریف روایت کرستے ہیں: ((من سئىل عون علم فكتمه ألجع بلعام

جس شخص سے علم سے اسسیں بوجیا گیاا وراس نے

اسے چھپا یا تواسے فیامت کے روزاگ کی گاکم بہنا ہی۔ ریم ص ناريوم العيامة».

بن جائے گی

الم الم المراد و المروه ال طرح كدام الم كالم بنيادى اصولول كى اسال اورعموى محيط قوا عد كے مطابق اسلام عكوت الله على اسال الم عموم محيط قوا عد كالم المراق الله محكومت ميں حاكميت صرف اور صرف التد وحده لا شركيب لذكى بود

الله وكا تَتَبِع الرس كرافر الله وكا الله وكا الله وكا الله وكا تَتَبِع الله وكا ال

(( وَ أَنِ الْحَكُمُ بَيْنَهُمْ بِمَنَا أَنْزَلَ اللهُ وَلاَ تَتَبِغُ الْهُوَاءَ هُمْ مَا فَكُمْ اللهُ وَلاَ تَتَبِغُ الْهُوَاءَ هُمْ وَاحْدُرُهُمْ اللهُ وَلَيْكَ مَ فَإِنْ تَوَلَّوْا بَغْضِ مَنَا أَنْزَلَ اللهُ الل

اوراہ مسلم صفرت عبدالندن مسعود صنی التدعنہ سے روایت کرتے ہیں کہ انہول نے فروایا: رسول الترصلی التہ علیہ ملے ملے ملے معرف معرف میں التہ ہے۔ مامت ہیں کی نہیں بھیجا مگریے کہ اس کے کھوس تھی وہواری اس کی ملت بیں سے ہواکرتے تھے بھران کے ابتدا لیے امت بیں سے ہواکرتے تھے بھران کے ابتدا لیے ناخلف لوگ آجا تے تھے جو اس کی سنت برعمل کرتے تھے ، اور اس کے حکم کی اقدا کرتے تھے بھران کے ابتدا سے ناخلف لوگ آجا تے تھے جو اسی باتیں کہتے تھے جو خود نہیں کرتے اور ایسے کا کرستے تھے جن کاان کو حکم نہیں دیا گیا لبذا موضی منوم نہیں ہے اور جوان کے ساتھ زبان سے جہاد کرسے گا وہ بھی منوم ن ہے ، اور اس کے بدا بیان کا ان کے برابر بھی کوئی تصنہ ہیں ہے۔ سے اور جوان کے برابر بھی کوئی تصنہ ہیں ہے۔ سے اور جوان کے برابر بھی کوئی تصنہ ہیں ہے۔ کھم اور اس کی دھورت کرسے جوانڈ ہمل شانہ کے ساتھ کی درمیان دشوار گزار گھائی بن کرکھوا ہوجائے . خوا ہ اس قسم کے طاقو میں ہوں، یا دار مکفر و دارا لے ب ہیں ورکس دارالا سے ہیں ہوں، یا دار مکفر و دارا لے ب ہیں

ور ن سے *دوستے ر*ہوہیاں ت*ک کہ نہ رسیے فسا د ، ور* مہوجا شے کھم سب ، متدکا ۔ ((وَقَا نِلْوُهُمْ حَتَّى لَا تَكُوْنَ فِتْنَفَّ وَّ يَكُوْنَ اللِّهِ يُنْ كُلُّهُ يَسِّهِ عَلَى . لا فعال - ٣٩ نيز ارشاد فرابل :

الْ قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا

لرطوان نوگول مستجوا يمان نهيس لاسته استدي ورزاخ ت

کے دن پر اور خرام جانتے ہیں اس کوسی کواللہ فے اور
اس کے رسول نے مزم کیا اور خبول کرتے ہیں دین سپی
ان وگوں میں سے جو کر اہل کتاب ہیں یہاں تک کروہ جزیہ
دی اپنے ہاتھ سے ذریل ہوکر۔

بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللهُ وَ رَسُولُهُ وَلَا يَكِينِيُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتْبَ حَتَّى يُغطُوا الْجِزْرِيَةَ عَن يَّكٍ وَهُمْ صَغِرُوْنَ ».

التوب - ٢٩

ای بات کوحفرت ربی بن عامرضی التُدعنه نے اس موقعہ پر ذکر کیا تھا جہب کمانوں کا اہلِ فارس سے مقابلہ تھا تو انہوں نے فارس کے قائدرتم سے کہا: التُدتعالیٰ نے بہیں اس لیے بھیجا ہے۔ تاکہ ہم لوگوں کو بندوں کی عبادت سے التُد کی عبادت کی طرف ، اور دنیا کی تنگی سے فراخی کی طرف ، اور مذا بہب وادیان کے ظلم سے اسلام سکے عدل وانصب اف کی طرف نکالیں ۔

مرنی حبب بیجے کو جہا دکا میمفہوم محسوس کرا دسے گا۔ اور اس کی اقسام وانواع اور اس سیصت فرع ہوسنے والی اقسام بتلا دسے گا تو پھر بچے مکمل عزم وقورت سے ساتھ جہا دکی طرفت بڑسھے گا۔ اس سیسے کہ جہا د دعورت سے ہرعمل کو محیطسہ بشر لم یکہ نیت انڈ کے کلمہ کو لبدکرنا اور روستے زمین ہراس کے دین کو پھیلانا ہولیہ

۱۰ دو ان کی افتدا کریں اور ان سے طرز وطریقے سے مطابق مبلیں اور لیجے ان ہیں سے بول سے سامنے ہمیشہ بیان کرتے دہا ، تاکہ وہ ان کی افتدا کریں اور ان سے طرز وطریقے سے مطابق مبلیں اور لیجے ان ہیں سے بعض آپ سے سامنے بیش سے جاتے ہیں ؛

الف - جب کمان جنگ احد سے سے خطے تو نبی کریم صلی انتہ علیہ وقع نے ان ہیں سے جے جھوٹا سمجھا اسے واپس کردیا جن صفرت کو واپس کی اللہ عنہ ما بھی سے بھی کر صفرت رافع مواسے مواس سے مواس سے حضرت رافع کو سے اجابی ان میں مصرت سے مواس سے کہا کہ دسوت ہے واپس کو بہ تبلا یا گیا کہ یہ ہے تھے تیرانداز ہیں ، یہ دیکھے کر صفرت سے واپس کو واپس کو

ب حب بنی کریم ملی الله علیه وی اور آپ کے ساتھی حضرت الویکر مینی الله عند مدینه منورہ کی جانب ہجرت کرنا چاہی تو دونول حضرت غارِ توریس تین دن تا کہ مقیم سب ، اور حصرت الویکر کی صاحبراد یول حضرت عائشہ و حضرت اسمار فنی اللہ فہا نے دونول حضرات کے لیے زاور اہ تیا رکیا ، اور حضرت اسمار نے اپنے ازار بندوالی پوگیا ، اور حضرت الویکر منبی اللہ عنہ کے صاحبرا دسے حصر منبی کے مند کوباندہ دیا ، اسی لیے ان کا نام "فات النطاقین " یعنی دوازار بندوالی پوگیا ، اور حضرت الویکر منبی اللہ عنہ کے صاحبرا دسے حصر عبداللہ مکر کی خبر رہے ان دونول حصرات تک بہنچا تے ستھے ، چنا نجہ وہ قریش کے سب منصوب یا خطرناک پروگرام کو سنتے وہ لے مربی مختری ان دونول حصرات تک بہنچا تے ستھے ، چنا نجہ وہ قریش کے سب منصوب یا خطرناک پروگرام کو سنتے وہ لے مربی مختری ادار من کی مختری داؤل ع بردا فی شافی بحث ہے گا۔ یا در که کر است کوان دونوں حضارت کو تبلادیا کرنے تھے ،اور بررات کوان حضارت کے ساتھ رہتے بھی تھے اور تحرکے وقت یہاں سے والیس برجاتے تھے ،اور مبح مکے کے قریش کے ساتھ کرتے اور میز کما ہر کرتے گویا کہ انہوں نے رات مکر میں ہی گزاری ہے۔اور یہ بات یا در ہے کہ حضرت عائشہ وحضرت عبداللّٰداس وقت نا بالغ تھے۔

سے۔ کتب تا ریخ میں مذکورسے کہ ایک نومن لوگا اپنے والدسے یہ درخواست کرتا تھاکہ وہ اسے اطراف عالم میں جانے اور دور وصوب کی اجازت وسے دیں تاکہ وہ عزت وکرامت کی جوٹی پر پہنچ جاسے سے

سلسر و قسرطسه اللجاما ، ور بس كو گام كا ، يجي سحب وناويني الحسب ما اور بجه ميا الحسب ما اور بجه ميا السن و ي علم المال السن و ي علم المال السن و تم كي ين سمب موشش من مرد كا الحمام كي سمب موت مي تريب مرد ي الحمام يا بهد موت مي قريب مرد ي

ا وراس قسم کی مزیدا در مثالیں جوصاحب دیمصا چاہیں انہیں چاہیے کہ اس کتاب کی تم ٹانی کی 'خوف کی عاد<sup>ت'</sup> کی بحث ولاحظ فرمالیں وہال کافی شافی بحث مل جائے گی ۔

الم بینج کومورهٔ انعال ببورهٔ توب اورسورهٔ اخراب بیاد کرانا اوراس کے علاوہ جباد کے علق قرآن کریم کی دو سری اور آیات اوران کا منان نزول اوران کے معانی کی شرح ، اور شجاعت کے ان مواقف کا بیان کرنا ہونبی کریم ملی الد علیہ وہم اور صحابہ کرام شی النه علیہ وہم اور وہند ق و حنین دغیرہ میں اختیار کیے منتے ، اس لیے کہ واقعۃ بیر ایسے موقف ہیں ہو اصابسات و شور حرکت میں لے آئیں گے اور اس کوابی اجری و بہاور و آگے کی طوف بڑھنے والا انسان بناویں گے جو اعلا بھٹر اللہ کے مراست میں کسی ملامت کرنے والے کی طامت کی پروائی میں کرے گا جگوئے جہا دکی طرف متوجہ ہوگا۔ اور اللہ کے راستے میں شہادت کی اس طرح تمنا کر سے گاجس طرح اس کی تمنا اسکے آباء واجداد اس سے قبل کر چکے ہیں۔ اور الن سے قبل اس کی تمنا اسس امریخ میں مرقوم سیٹے۔

امریت محدید کے پہلے قافلہ والے کر چکے ہیں جو فصل طریقے سے تاریخ کے صفحات میں مرقوم سیٹے۔

امریت محدید کے پہلے قافلہ والے کر چکے ہیں جو فصل طریقے سے تاریخ کے صفحات میں مرقوم سیٹے۔

ے سے مربی کویں پرنفیجت کریا ہوں کہ وہ اپنے بچوں سے ساسنے موبانا یوسف کا نیملوک کی موج قا انھی ہے۔ ورنٹ رکی کہ ب «شہدا ہ الاسلام فی عصرالنبوۃ " برطعاکرے۔ ۵۔ بیج میں تضار دقدر کے عقیدہ کوراسخ کرنا تاکہ اس کو جومسیبت ہونچے وہ بیفین کامل رکھے کہ وہ اس سے دور نہیں ہوسکتی تھی۔ اور اگر ساری اُمت بھی مل کراس کو کچہ فائدہ بہنچا ناچا سے تب بھی اتنابی فائدہ بہنچا سکتے ہیں ہوسکتی تھی۔ اور اگر ساری اُمت بھی مل کراس کو کچہ فائدہ بہنچا ناچا ہیں قائدہ بہنچا سکتے ہیں جوالنہ نے اس کے بیے لکھ رکھا ہے۔ اور اگر سب کے سیے لکھ رکھا اس کے بیے لکھ رکھا نہ ہے اور مون اللہ سجانہ ہی سے۔ اور بات یہ سبح کرجب الن کا وقت مقردہ آجا ہے گا تو وہ نہ ایک گھڑی آگے ہوگا نہ جھے۔ اور صرف اللہ سجانہ ہی زندہ کرنے اور مار نے والے اور عزت و ذالت دینے والے اور میں برچیز پر قادر ہیں ۔ ہیں۔ انہی کے دست قدرت میں ہرچیز کو کم میں جیز پر قادر ہیں ۔

ان معیانی سے سیسے میں سلف صالحین نے جو اشعار سہے میں ان سے استشہا دکرسے میں کوئی حرج نہیں معلوم ہوتا ہے

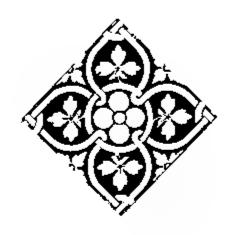
> أى يومى من الموت أفر ي افي موت ك كون سد دو دفول سريماكم بو ي افي موت ك كون سد دو دفول سريماكم بو يوم لا يقسد الاأم هبست حب دن موت مقرنهين به الله سي درانهين بو

يوم لا يقدر أم يسوم قديم اس دن معرفر و المالية المردن المقدد و المعدد و المعدد و المعدد و المعدد المعدد و المعدد المدين و المعدد المدين المعدد المعد

فلا تقنع بسادون النجسوم توبعرستا وسد كم براكتن دكسر، كطعه الموت في الموعظيم اليابى بوتاب جياكه موت كا مزوعظيم الرص إذا غدا مسرت فحنب شرف مروم جبتم معلویرت و شرف الکرنے کے بیے میپلائگ مگادد فعط عسم المدوست فی اکس حقایر موت کا مرو حقیر و معول کام می

من الأبط ال ویعث لن تواعی کتا ہوں تجد پرانس ہے مت وراورمت گھرا علی الدی مل الشج کم الذی کا ملک الدی مل الشج کا الذی کا الذی کا توثیری آنہیں، فی جلنگ فی مسانی المسل المخالف کے المدی کے اس کی جات ہیں المخالف کی کے ہوئی کا جات ہیں کے ہوئی ہیشہ کی زندگ کسی کے ہوک کا جات ہیں

اُف ول للسا وق ل طارت شعاعاً یں اپنے نغس کو دیب دہ بباددوں کے نوف نے مجرف گلتے ف انگ کسو سالت بقا ریسوم س بیے کر تو اگر اپنے مقدر وقت سے کیک دن فصبراً فی محیال المسوت صابراً المبذا موت کے میدان میں باربار مبرسے کا کہ کے اے مربیانِ کرام! بہتے ہیں جہاد کی وح راسنے وہمیق کرنے کے اہم نقاط و مراصل یہ تھے، آگ سے آپ ان کواصیار کریں اور اپنے بچول کوال کی تلقین کریں تاکہ وہ جب جوانی کی عمر کو پہنچیں اور جہا د کے لیے پکار نے والا پکارے تو وہ عزت و کراست سے میدان ہیں بہادری و ب باک سے مجا ہرب کرنگلیں ، اور اللہ کے سواکسی سے نظریں ، اور مجہ وہ ہر وہ میں کہ اسال کا حجاد اللہ مسلح وتیا رہیں گے اور جہا واورا علام کلمۃ اللہ سے قطعاً پیچے نہ رہیں گے ، حب کہ وہ یہ نہ دیکھ لیس کہ اسال کا حجاد الرائب ہوگیا ہے۔ اور فتح کا جھن کہ اللہ کی اسال کا حجاد اللہ کی مدد ونصرت سے نوٹ س بول گے ، اللہ جس کی چا ہتا ہے مدد کرتے ہے اور وہ غالب اور دم کرنے والا ہے۔



# فأتم

اس کتاب اسلام اور تربیتِ اولاد " میں اس سے قبل ہم نے توقعیں بحث کی سے اس سے بلکی شک ہشہ کے آپ کے سلمنے نہایت واضح طور سے بہات آگئ ہوگی کہ دین اسلام کا پیھے کی ایمانی واضلاقی تیاری اور نفسیاتی و عقلی تعمیرا و رحبمانی و معاشرتی تربیت کے سلسلہ میں اپناکال و کمل منہج و نظام اور ممان طریقیہ او مینفرد اسلوب ہے تاکہ وہ بچہ متعقبل میں ایک متوازل قسم کا سجے ، نیک صالح انسان سنے ، جو ایک عظیم عقیدہ ، اضلاق و بینیام کا مالک ہو، اور ذری خدر دارای کو سنبھا ہے اور ان کا بوجھ اسمائے ، اور آخر کا راصل مقصدو غایت بین انتد تعالی کی مضا و رجنت کی کا میا بی اور دوئی سے نیات کو حال کرسے ۔

علما یافلاق واجهاع اور تربیت تعلیم کے افراد کاال پرتقریباً اجماع واتفاق ہے کہ مرفی خواہ علم ہویا باب یا مال یا
پیرمرٹ دجب وہ اپنی پوری کوشش صرف کرے گا اوراس ربانی نظام کونا فذکر نے کا پورا اہما کی کرے گا جے اللہ تعالی نے
نازل فرمایا ہے۔ اور اس نظام کی تطبیق کی کوشش کرے گا جس کے اصول وفروع شریعیت اسلام سے لیے گئے ہیں، تویہ
یعنی بات ہے کہ بچہ ایمان و تقوی میں نشوونما پائے گا . اور فضیلت و اخلاق میں تدریجاً آگے برط متنا سے گا، اور
معاشرے سے سامنے اس بہترین شکل وصورت میں آئے گا جس میں پختہ عقل ، کال اخلاق ، ومتواز ل کردا یا وراچھے
معاشرے کے سامنے اس بہترین شکل وصورت میں آئے گا جس میں پختہ عقل ، کال اخلاق ، ومتواز ل کردا یا وراچھے
معاطے والا اور بہترین سیرت اور اچھے رہی بہن کا مالک انسال ظاہر ہوتا ہو۔

لیکن تعبض مرتی ووالدین <sub>اسین</sub>ے بچول سے انحواون باان کی سکڑی و نا فرمانی کی جوشکامیت کرستے ہیں تو اس کا اصل سبب خود و ہی ہیں ۔

ب بنلائیے کرنے کی مالت کی صورت میں کب درست ہوسکتی ہے حب باپ اس کو گندسے اوربرسے ساتھیول کے ساتھ بیٹینے کی اجازت دیتا ہو؟ ساتھیول کے ساتھ بیٹینے کی اجازت دیتا ہو؟

۔ اور عموی طورسے بچہ کیسے بیمجے اور سیدھا ہوسکہ اسے جب کر مربی نے اسلام کے تربیتی اور شخصیت سازنظام الار بچول کی ذہن سازی کے نظام پڑل زکیا ہو! اور حضرت عمر نے اس وقت کتنا چھاکیا جب انہیں میعلی ہواکہ ایک باب نے اپنے بچے کے حق کو پوانہیں کیا اس معنی کرکہ اس کی مال کا میچ انتخاب ہیں کیا ، نہاں کا اچھا نام رکھا نہ اسے قرآن کریم کی تعلیم دی توحضرت عمر نے ان فعالی سے فرایا : تم میر سے پاکس اسپنے بیٹے کے نا فرمان ہونے کی شکا بہت لائے ہو ، حالانکہ تم نے اس کی نافرمانی اس وقت کی تھی جب اس نے تمہاری نافرمانی نہیں کی تھی ، اور تم نے اس کے ساتھ اس وقت براسلوک کیا تھا جب اس نے تمہاری کیا تھا جب اس نے تمہارے ساتھ براسلوک کیا تھا جب اس نے تمہارے ساتھ براسلوک نہیں کیا تھا ۔

لهذا حضرت عمروضی التدعند نے باپ کو بی بیھے کے انحراف ونا فرمانی کاافسل ومدوارٹھہرایا، اس لیے کہ اس نے لینے بیچے کی سیمی تربیت وا دب سکھا نے کہ پوری کوشش بیچے کی سیمی تربیت وا دب سکھا نے کہ پوری کوشش کرلی بیکن ان کی اولا دبھر بھی نا فرمان و فراب کی بیف فور کے بیٹ میں کہ انہوں ہے ، اس لیے کہ اگر ہم اس کا سبب ملاش کرلی تو بہیں معلوم ہوگا کہ اصل سبب والدین خود ہی ہیں ، یا تواس لیے کہ انہوں نے اپنے کہ انہوں نے کہ انہوں نے اپنے کہ انہوں نے اپنے کہ انہوں نے اپنے کہ انہوں نے کوئی الیا بی چھوڑ دیا ہو ۔ اسلام نے ان پر لازم اور فرض کیا تھا۔ اسلام نے ان پر لازم اور فرض کیا تھا۔

اسی طرز کا وہ واقعہ سے جوا دب کی کم ابول میں لکھا ہے کہ ایک دیہاتی نے اپنے بچول کی ٹا فرانی کی شکایت کی اوس اس کے سواا در کوئی چارہ کا زہمیں یا باکہ ان کی مذہرت درج ذیل اشعار سے کرے ہ

ابرهم أو لا هسم بسبب المراده المراده المراده المرادة المرادة

اِن بخت کہ ہے کالکلب میری ،ولاد سب ک سب کتے کی طرح ہے کے سری ،ولاد سب ک سب کتے کی طرح ہے کہ سب کے مین عضاری اور ایسے نیجون کرون کرون کرون کی میں تعلیم اور ، دب دینے اور اریف نے کچون کرون کرون کا میں نامیس کاش کر میں نغیر ، دلاد کے مردا ،

ا درکسی کو کیامعلوم ہے ہوسکتا کے کہ وہ اعرانی خود اپنے والدکی نا فرمانی کرتا ہو میں کا انتقام اللہ نے اسے اس طرح لیا کہ اُک کی اولاد نے اس کی نافرمانی کی ؟ اس بارسے میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وہم ارشاد فرماتے ہیں ؛

نیکی پرانی نہیں ہوتی اور گناہ بھلایا ہمیں جاتا اور براسینے والی ذات مرسے گئنہیں ، لہذاتم جیسے چاسپے بن جاؤ تم جنیا کروگے تمہارسے ساتھ بھی دسیا ہی کیا جائے گا۔ سے روابیت کرستے ہیں کہ نبی اکرم سلی الٹی علیہ وہم نے ارشا د فرایا :

((البر لا يبلى والنذنب لاينسى والديان لا يمسوت ، فكن كعا شئت فكما تديب تداك)) . ، ، ، بونعيم ودلمي وابن عدى اوسطيراني وحاكم حضرت عبدالله بن عمروني التدعنها تم ہے والدین کے سات وسن سلوک کروتمہاری اولاد تمہار سات کے سات وسن سلوک کروتمہاری اولاد تمہاری میں ساتھ سن رہوتو تمہاری توزیں

لابروا آباءكسم تبوكهم أبناؤكم، وعفوا تعف نسباؤكم ».

مجی ایک دان رہیں گ۔

کمیں اس قاعدہ کے خلاف بھی ہوجاتا ہے اور مربی ابنی پوری کوشنش صرف کرتا ہے اور اسلامی تربیت کے تمام طریقے اختیار کرتا ہے۔ ایک نظرت نوح علیہ اسلام کے بیٹے اختیار کرتا ہے۔ بیک بھیری اولاد بھر جاتی اور خرف ہوجاتی ہے ، جیسا کہ اللہ تعالی بعانہ نے ہمیں حضرت نوح علیہ اسلام کے بیٹے سے بارسے میں تبلایا ہے کہ اس نے ہوارت اور نہوی تربیت کے قبول کرنے سے انکارکیا، اور مرا بنا تکبر کیا، اور کا فردل کو ساتھی بن گیا ، توالٹ دقالی نے ان کے ساتھ اسے بھی بچروکر غرق کردیا اور سازے کے سازے کا فرد بودے گئے ۔
کا ساتھی بن گیا ، توالٹ دقالی نے ان کے ساتھ اسے بھی بچروکر غرق کردیا اور سازے سے مارسے کا فرد بودی کردی اور لینے اسی صورت میں مربی اللہ کے درباد میں معذور سمجھا جائے گا اس لیے کہ اس نے بنی تمام ذمرداری پوری کردی اور لینے مفوضہ واجبات و فرائفس اداکر نے ہے۔

التدتعالي فيم فروا \_ حضرت عمرضى التدعنه برفروا ت ين :

ونفرت کا اِستہے۔

ہم ایک ایسی قوم بیں کہ جسے اللہ تعالیٰ نے اسلام کے ذریعہ عزت بنتی ہے ہم حب بھی اس کو چیوور کرعزت جاہی<sup>کے</sup> صس سے فریعہ التد نے ہمیں عزت بختی سہے توالتہ ہمیں دلیل ہی کرسے گا استدرک حاکم)۔

ا ور بالكل سيح فرايا سب رسول اكرم صلى التدعليه و لم سف :

((... ولاحكم أمراؤهم بغيرماأنزل الله إلا سلط عليهم عدوهم فاستنف دوا وسنة نبيد إلاجعل اللهب أسهم

بعض ما في أيديهم . وماعطلواكتاب الله

بينهم،،

اورفيها نبيس كياان كه امراد في التدكم نازل كرده ا قرآن وسنست ، کوچپودگرمنگریکہ الٹہنے ان پران سے ۔ شمنول کومسلیل کرد<sub>ی</sub> ، ا ورانہول نے ان کے یکس جوتھوًا بهبث تما وچیس بیا، اورنهس معطل کیالوگول نے التدکی کآب. وراس سے نبی کی سنت کومگریہ کہ التدنے ۔ ن کو

ببهعى وحاكم

سیادت ونصرت تک پہنچنے کا فرایعہ ہے کہم انی اصلاح سے ابتداکری، بھراسینے خاندان کی اصلاح کریں، اورخاندان کے افراد کی اصلاح اس وقت تک نہیں ہوسکتی جب تک ہم اپنے بجول اور بچیوں کی تربیت سے لیے اسلامی نظام وطریقے کونداینائیں،اس کیے کفردکی اصلاح فاندان کی اصلاح کا ایک قدرتی وطبیعی فرامیہ ہے،اور کھیراس کا اثریہ بوگا کہ معاشرے ک اصلاح ہوجائے گی اور تھے اِسلامی معاشرول ہیں مسلمان مخلصین ومجا ہدین کی ایک مصنبوط جاعست تیا رہوجا ئے گی جن کے ذرسیعے اسلامی تعکومت قائم ہوگی، اوران سے مصبوط عزائم شیے سلمانول کوعزت فیشوکت نصیب مہو گید

اسے دالدین اور اسے ترببیت کرسنے دالوبیہ ہے بچول کی تربیت کااسلامی نظام اور ان کی اصلاح وہدابیت کافیجیح راسته، لهٰذا آپ ابنی ذمه داریال پوری کیجیے ، اور اسپنے فرائفن ادا کیجیے ، ماکرمسلمان معاشرے میں آپ کی اولا داورخاندانوں کی اصلاح متحقق ہوسکے، اور امست محدیہ میں جہاد وفتح کے شکھر تمان مول. اوروہ پویسے عالم کو گمرا بی بھا ہمیت اور ما دیت سے بچاف اورحق کے نوراوراسلام کے پیغام کی جانب مابیت دسینے ہیں اپناکروارا داکرسکیں:

(( وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيْرَ لَهُ عَمَلَكُمْ وَ رَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ ، وَسَتُرَدُّونَ إِلَى عَلِمِ الْغَيْبِ وَ الثُّمَهَادَةِ فَيُنَتِئِكُمْ بِمَا كُنْنُوٰتَعْبَهُوْنَ ﴾ لَمُّ

اورآب كه ديجيه كمل كيع جاذي آك الترد كمه في كاتبار كاكوا وراس كارسول أوركمان اوتم حلدلوثا ديدجاؤكه أسكيس بوتا میں اور کھی چیزوں سے وا ہے تعبروہ جادے گانم کو توکیع کمے تھے۔



قرار کرام ہے یہ درخواست ہے کرمصنف ،ومترجم)کو دعاؤل میں یاد کھیں ،سٹ پرائندہ شاع ربار میں دعامی کا کا اجائے۔

اورالتُدتال ميرے والده في سعيدعوان (اورمترجم كے والدكيم محرم قارش ورمالته) بريم كيسے جن ك علم اوردعوت بليغ كے ميدان ميں لگائے بوت بودول ميں سے ايک پودا ميں بول الته تعالى ان كوائي رقمت سے وصائب ہورائي ان كوائي وصديقين وشهداء سے وصائب ہيں ان كے ساتھ انبيا، وصديقين وشهداء وصائبين كے مع ميں اپنے يہال كي فرائ ، ان لوگول كى رف قت بست بى عمده واقعى رفاقت ہے ۔ والحد وصائبين كرم على الله وصعبه أجمعين دعوان أن الحدمد والله وصعبه أجمعين والسده معلى خورخ لقد محدد واله وصعبه أجمعين ورغت من ترجمته صبيعة يوم النيس ٧٠٥٠ م ١١٠١٠ والد وصعبه الم البراسون المحدمة والله وصعبه المحدمة واقعى وصفيه دائماً البراسون المحدمة والمحدمة والحدد الله والحداثة والسدة والسده مال والد وصعبه دائماً البراسون المحدمة والمدن والحدد الله والحداثة والدلام على جيبه و نجيه وصفيه دائماً البراسون المحدمة المحدمة والمدن والحدد الله المحدمة والمدن والمحدمة والحد والمدن والحدد والمدن والحدد الله والمدن والمدن و المدن و المدن والحدد الله والمدن والمدن والمدن والمدن و المدن و المدن والمدن و المدن و



# اتم مراجع ومصادر

مصتنعن

نام ڪتاب

محمد فارس بركات الوعيدالتدمحدالقرطبي ابوالفدار اساعيل بن كشير سستبد قطب يشخ محمدلي الصالوني محدعلى الباليسس ابومكرالجصاص ابوبكرمحمدالمعروف بابن العربي محسنين مخلوف عبدلعظيم المنذري علامب مناوي محد شو کانی صنعياني حا فظ ابن حجرالعتقلاني مام نووی سماعل عجلوني محمد لوسعف كاندهلوي تحقيق محرعلي دولة ابن الجوزي تحقيق الكتورقلعيجي والفانحوري

ا - قرآنِ كريم ٢ - المرست دلة ياست القرآن الكريم ٣ ـ الجامع لأحكام القرآن الكريم ۴ - تفسيرابن كثير ٥ ـ في طلاك القرآن الكريم ٧ ـ تفسيرآيات الأحكام ٠ - تفسيرآبات الأحكام ٨ أحكام القرآن الكرم 9 - أحكام القرآن الكرم ١٠ - صفوة البيان في تفسيرانقران اا - الترغيب والتربيب ١١ - فيض القدير سلابه نسيب ل الأوطار سى السلام السلام ۱۵ ۔ فتح الباري في ١٤ - رياض الصالحين ١٤ ـ كشف الحفار ١٨ - حياة الصحابه وا - صفوة السفوة

مصنف

#### نام کشیاب

عبدالته سائ الدين واكثرمحد سعيدر مفيال البوطي د اکٹر مصطفی سے باعی داکٹر مصطفی سے باعی كمال الدين ابن الهام الحنفي علارالدين الكاساني ابن قدامة تحقيق محمو دعبدالوماب فاير علامه ابن عابدين عبدالرثمن الجزيري على اتفاري تحقيق الشيخ عبدالفيّاح أيوغده جمة الاسكام الغزالي محابى ستحقيق الشيخ أبوغده حمدين قدامة المقدى عبدالتدين مبارك محدث فيم الجوزبير احمدعبدالغفورالعطاد والبسي ذاكشراً حمد فؤا دالا موائي واكثر محداسعطلس محب تبدع طيته الابراش . . . واكثر محداثين المصرى عبدالرحمن انتحلاوي واكظر محمدعبدالنه وراز واكثر توسف القرضاوي واكثر توسف القرضاوي

۱۰ محمدرسول النّد (تعلی النّه علیه ولم) ۲۱ - فقه السيرة ٢٢ - السبيرة النبوبة ٢٣ - شرح فتح القدير ٢١٠ ـ بدائع الصنائع ٢٥ ـ المغنى ۲۶ به حاشیه ردالمحارملی الدرالمخیار ٢٤ - الفقه على المذابب الاربعة ٢٨ . فتح ياب العناية ٢٩ - إحيا علوم الدين ٣٠ ـ رسالة المسترشدين ٣١ ـ مخقومنهاج القاصدين ۳۲ - تخاب الزيدوالرقائق ٣٣ ـ تحفة المودود بأحكام المولود ١١٨٠ - آداب المتعلمين ٢٥ ـ التربية الاسلامية ٣٧ - الشربية والتعليم في الإسلام ٣٤ - التربية الإسلامية ٢٨ - التربيّه الإسلامية وفلاسفتها وس وسائل التربية الإسلامية ، ٨٠ السس التربية الإسلامية ام - مبادئ علم الأخلاق Mr - الحلال والخرام ٣٧ - الإيمان والحياة .

مصنف

نام کت ب

واکثر بوسف القرندادی و اکثر بوسف العزیز الخیاط و اکثر عبدالعزیز الخیاط محمدها لی محمدها لی محمدها لی محمدهای البی العلاء مرحوم ستید قطب مسید قطب اکدام مصطفی سبای الکدام مصطفی سبای

فتحى ملين

سندخ ابوغده عقاد وعطار داکش نبیه الغبره داکش مبدالرمکن صبنکه محمدالغزالی عیب رحوی

حدالباقی دمضون محدادیب کلکل محمودمهری استانبولی طاکٹرنورالدین عتر طاکٹرنورالدین عتر ۲۷ ـ وروک النكبته الثانية ۲۵ ـ المجتمع المتكافل فى الإسلام ۲۷ ـ عمل المسلم فى اليوم والليلة

۷۷ ـ حدميث الإسلام ۲۸ ـ العدالة الاجماعية

وم - الإسلام والسسلام العالمي

٥٠ ـ أخلاقنا الاجتماعية

٥١ - عظماؤنافي البّاريخ

۵۲ ـ هكذاعلمتني الحياة

۵۳ ـ كيف ترعوإلى الإسلام

۵۷ به مشكلات الدعوة والداعية

٥٥ ـ محاضرة "الرسول المعلم"

٥٧ - المشيوعية والإسلام

٥٠ - المشكلات النفسية

۵۸ ـ مكا مربهودية

٥٥ - خلق المسلم

٧٠ - الإسلام له أجزار

الا- الشر

44 - الرسول ٢ جزء

٩٣ ـ جندالله ثقافة

١٩٧ - خطرالتبرج والاختلاط

٩٥ - حكم الإسسام فى النظر

٢٧ - تحفة العروس

٧٤ ـ ماذاعن المرأة ؟

| <u> </u>                       | نام کتاب                                |
|--------------------------------|---|
| ومبى سليمان الغادي             | ٩٧ - المرأة المسلمة                     |
| فاكثر ليسعف القرضاوي           | ٩ ٩ - شريعيّة الإسلام                   |
| ستيقطب                         | . ٤ - دراسات إسلامية                    |
| عبب دالله علوان                | ١٧ - التكافل الاحتماعي في الإسلام       |
|                                | ٤٧ ـ تعدد الزوجات في الإسلام            |
| 4                              | ۲۶ ـ شبهات وردود                        |
| 11 4                           | مه، به حتی تعیلم النب باب               |
| " "                            | ه، - حكم الإسلام في وسائل الاعلام       |
| " "                            | 4، معتبات الزداج                        |
| * "                            | ٥٠ - إلى كل أب غيور                     |
| " "                            | ٨٧- إلى ورثنة الأنبيار                  |
| تاب کے مختلف صفحات بردرج میں . | ا وران سے علاوہ اور دوسرے مراجع جواس کا |
|                                |   |

#